

मौर्यवंशीय महाराज चन्द्रगुप्तके सोलह स्वप्न ।

नूतन वर्षमां प्रवेश रात्रि अने दिवस करतां करतां समय तो पाणीना रेलानी माफक जोतजोतामां व्यतित थई जाय छे तेम आ पत्रने आठ वर्ष पुरां थयां छे अने महावीरनिर्वाण संवत्‌ना नवीन वर्षनी शरुआतमां आ पत्र पण नवीन **नवमा वर्षमां प्रवेश करे छे.** गत वर्षना सचित्र अंकना समयमां अने आ समयमां घणोज फेरफार थयो छे एटले लडाईने लीधे कागळो वगेरेनो भाव एटलो बधो वधी गयो छे के आवो अंक प्रकट करवानुं नज परवडे, छतां पण ग्राहकोनी वधती जती आतुरता अने ग्राहकसंख्या तरफ आधार राखी आ अंक पण भारे खर्च करीने नवीन सुधारा वधारा साथे प्रकट कर्यो छे, अने तेमां विशेष ए जणाशे के आटलां वर्षो थयां आ पत्र बीजा प्रेसमां छपातुं हतुं त्यारे हवे हमेश मोटा पाया ऊपर 'जैन विजय' नामनुं एक प्रेस खोल्युं छे अने तेमांथी तैयार थईने आ अंक प्रकट थयो छे जे जाणी अमारा दि. जैन बंधुओने आनंद थया विना नहिंज रहे के दि. जैनोमां एक सारा प्रेसनी खोट हती ते आथी पुराइ छे.

वीरनिर्वाण अंक. पश्चिमना मुलकोना वर्तमानपत्रोनी स्थीति तरफ नजर करतां जणाय छे के ए पत्रकारो एवी स्टाईल उपर काम करे छे के जेथी तेनी ग्राहकसंख्यामां दिनप्रतिदिन वधारो थतो जाय छे. आमांनी एक स्टाईल ए छे के दरवर्षे वर्षनी शरुआतमां के कोई टांकणा ऊपर तेओ पोताना पत्रनो सचित्र खास अंक महाभारत खर्च करी लाखोनी संख्यामां प्रकट करे छे, जेथी ते पत्रनी लोकप्रियतामां वधारो थाय छे. आनुं अनुकरण हिंदना केटलाक सार्वजनिक पत्रकारो केटलांक वर्षोथी करे छे, पण जैनोमां तो आवो प्रयास चार वर्षथीज थवा मांड्यो छे तेमां अमने जणावतां आनंद थाय छे के आ पत्रनो वीरनिर्वाण सचित्र खास अंक चार पांच भाषामां अनेक चित्रो सहित प्रकट करवामां आवे छे त्यारथी एनी लोकप्रियतामां पण वधारो थयो जाय छे. आ अंकमां हिंदी, गुजराती, अंग्रेजी अने मराठी भाषाना १७५ पृष्ठना कुल्ले ४० लेखो अने कविताओ तथा जाणीता त्यागीओ, तीर्थो, श्रीमानो, विद्वानो, उपरांत जाहेर संस्थाओना ग्रुपो तथा प्राचीन जैन साहित्यनां चार चित्रो मळी कुल्ले ३२ चित्रो रजु थाय छे जेमां तीलोकसार ग्रंथना पृष्ठो, अने त्रण लोकनो नकशो ए एटलो जोवा, जाणवा अने समजवालायक छे के एथी जैन सिद्धांतनी उत्कृष्टता अने उपयोगीतानुं भान थाय छे तेमज आपणा जाणीता विद्यालयोना केटलाक ग्रुपो आ अंकमां जणाशे जेथी आपणी संस्थाओ केवा पायापर शुं शुं कार्य करी रहेली ते जाणवानुं बनी आवशे तेमज जयपुरनी समीतीनो एक ग्रुपफोटो तो अतीव आकर्षणीय छे. ज्यारे केटलाक खास अंकोमां कृत्रिम अने मोहक चित्रो रजु थाय छे त्यारे आ अंकमां एवुं एक पण चित्र नथी के जे मात्र मनने मोह पमाडनारुं होय पण आ अंकनां चित्रोथी वांचकोने घणुंज जाणवानुं जोवानुं अने मनन करवानुं मळी शकशे.

खासअंकना लेखो. गत वर्षे ज्यारे ७ भाषाना लेखो प्रकट कर्या हता त्यारे आ वर्षे चार भाषाना लेखो प्रकट करवानुं कारण एज छे के संस्कृत, प्राकृत, अने ऊर्दु लेखोनी उपयोगिता

वधु न होवानो केटलाक भाईबंधोनो अभिप्राय मल्यो हतो जे वास्तविक लागवाथीज आ अंक हिंदी, गुजराती, अंग्रेजी अने मराठी ए चार भाषाना लेखोथी विभूषित कर्यो छे जेमां इंग्लिश लेखो माटे आ वखते ४० पृष्ठो रोकवामां आव्या छे तेनुं कारण एज जे के ए अतीव महत्वना, जैनधर्म अने जैनसमाजनी प्राचीन अर्वाचीन स्थितिने जणावनारा तेमज जैनसिद्धांतनो सार समजावनारा छे अने एथी अजैन विद्वानोपर जैनधर्मना संबंधमां सारुं अजवालुं पाडी शकाशे. इंग्लिश नहीं जाणनारा वांचकोने आ लेखोथी कंटाळो आवशेज, पण एमांना पण चार उत्तम लेखोनो अनुवाद हवे पछीना अंकोमां प्रकट करीशुंज एटले ए विषयो पण सर्वेने सारी रीते समजवामां आवशेज.

❁ ❁ ❁ ❁

जैन कोमने कलंक! दोढ वर्ष थयां जैनकोमने माथे नाहकनुं भारे कलंक चोंटेलुं छे ते मांथी जैन कोम क्यारे छुटकारो मेळवशे ए कही शकातुं नथी, केमके जैन तेमज अजैन पत्रकारोए पोकार उठाववामां बाकी राख्युं नथी छतांपण जैन कोमने जीवन अर्पण करनार बाबू अर्जुनलाल शेठीने विना न्याये विना अपराधे जयपुर राज्ये केद करी मुकेला छे तेनो कंई खुलासो थशे पण जयपुर राज्य प्रकट करतुं नथी. वळी आपणा श्रीमानो तथा वकील बारिस्टरोने अनेक वखत लख्युं, पण कोई आगळ पडी एक डेप्युटेशन लई जवाने बहार पडता नथी ए अतिशय शोचनीय छे. छेवटनो रस्तो डेप्युटेशननोज छे, अने ते कामनां श्रीमानो पाछी पानी करता होय तो हवे अने शिक्षना वकील बेरीस्टरोए मळी एक मीटींग करी एक खास डेप्युटेशन नामदार जयपुर नरेश पासे घणीज त्वराए लई जवुं जोईए अने तेमां निराशी मळे तो पछी नामदार वायसरोय पासे पण जातोजात डेप्युटेशन रूपे जई ए बाबत खुलासो मांगवो जोईए.

❁ ❁ ❁ ❁

आभार. एकले हाथे कंई मोटुं कार्य पार पडतुं नथी ते मुजब आवो खास अंक प्रकट करवामां कुमार देवेंद्रप्रसादजी, ब्र. शीतलप्रसादजी, बाबू ज्योतिप्रसादजी पं. पन्नालालजी बाकलीवाल, मी. मणीलाल एच. उदाणी, पं. नाथूरामजी प्रेमी, मास्तर गीरधरलाल डुंगरशी शेठ वगेरे, सुज्ञ बंधुओए योग्य सलाह पुरी पाडी अमोने आभारी कर्या छे तेमज *आ अंकमां जे जे संस्थाओए तथा श्रीमानोए* अमारी सूचना मुजब चित्रो मोकली *आप्या छे तेमनो तथा जुदा जुदा लेखो लखी* मोकलनार सर्वे बंधुओनो अमो आ स्थळे *आभार मानीए छीए अने* सौथी मोटो आभार आपणा न्यायी, शांतिप्रिय अने प्रजाप्रिय ब्रीटीश राज्यनो छे के जेनी छत्रछाया हेठळ दरेक धर्मवाळा पोतपोताना धर्मनो प्रचार बाधे तेवी रीते छूटथी करी शके छे अने ए राज्य कोई पण धर्मनी लागणी जरा पण दुखवतुं नथी. छेवटमां एटलुंज इच्छीशुं के युरोपमां चालता महाभारत युद्धमां लाखोनी संख्यामां नरसंहार अने अबजोनी संख्यामां द्रव्यसंहार थई रह्यो छे तेनो अतीव तार्कीद नीवेडो आवी तेमां आपणी मायाळु अने न्यायी ब्रिटिश सरकारनो विजय थाओ तेमज जैन कोममां नवा दानवीरो उद्भवो जैन कोमनी उन्नतिनां बधु कार्यो थवा पामो तेमज आ बाळकनुं आ नवमुं वर्ष पण निर्विघ्ने पूर्ण थई ए बाळक जैन कोमनी बधु अने बधु सेवा बजाववा पगभर थतुं रहो.

❁ ❁ ❁ ❁

आ अंक जोतांनी साथेज वांचकोने,
जणाशे के ए तैयार करवा
ग्राहकोनी आतुरता. पाछळ केटली वधी ज्हेमत उठाववी पडी हशे! जो के अमोए कार्तक सुद १५ सुधीमां आ अंक प्रकट करवानुं प्रकट करेलुं हतुं जेथी आ अंक प्रकट थतां सुधीमां अमारापर ए माटेनी मांगणीनो गंजावर पत्रव्यवहार आवी पड्यो छे, जेथी एटलुं तो स्पष्ट जणाय छे के खास अंक जोवा अने वांचवानी आतुरता घणीज छे पण ए माटे अमारे एटलां बधां साहित्यो एकठां करवानां हतां तेमज अमोए खोलेला नवीन प्रेसमां अनेक प्रकारनी गोठवणो करवानी हती, जेथी पुष्कळ उतावळ करवा छतां पण आ अंक प्रकट करतां कार्तक वद १२ थई छे अने, जो, वधाज ग्राहकोनुं लवाजम मळी गयुं होत तो ए दिने वधाने रवाना थई जात, पण मात्र २००-३००, ग्राहको अने मेम्बरोनुं लवाजम वसुल आवेलुं छे तेमने ए दिने आ अंक रवाना थयो छे अने बाकीना मेम्बरो तथा जुना नवा आशरे १६००-१७०० ग्राहकोने पोस्ट ओफिसमां थयेली खास सगवड मुजब चार पांच दिवसमां आ खास-अंक वी. पी. थी मळी जशेज. आ अंक माटे मळेला घणा लेखोने स्थानाभावने लीधे अमे आ अंकमां प्रकट करी शक्या नथी तेने अवकाश आपवा तथा मासिकनी नियमीतता साचववा माटे मार्गशीर्ष मासनो अंक छुटो बहार नहिं पडतां मार्गशीर्ष अने पौष मासनो संयुक्त डबल अंक बराबर पौष सुद १ उपर बहार पडशे.

● ● ● ●

हिन्दी ग्राहकोंको निवेदन. प्रिय हिन्दी पाठकगण! यद्यपि 'दिगंबर जैन' गुजरात प्रान्तसे प्रकट होता है और हमारी मातृभाषा भी गुजराती है तौभी हमने चार वर्षसे इस पत्रमें हिन्दी भाषाके लेख लिखने और प्रकट करनेकी कोशिश की है जिससे हमको और हमारे गुजरात-दक्षिणके पाठकोंको हिन्दी भाषाका परिचय होता जाता है। हम इतना अवश्य कहेंगे कि हमारी मातृभाषा गुजराती होनेसे हिन्दीके लेखों लिखने और प्रकट करनेमें भाषाशुद्धि और प्रुफ संशोधनमें कुछ त्रुटियां रही होंगी जिसकी ओर आप ध्यान न देकर इस लेखोंमेंसे सार ग्रहण करके हमारे उत्साहको बढ़ावेंगे ऐसी हमें पूर्ण उम्मेद हैं। गत वर्षसे इस अंकमें हिन्दी लेखोंकी विशेषता की गई है और आगामी अंकोंमें भी हिन्दी भाषाके लेख विशेष रूपसे प्रकट होते रहेंगे और गुजराती लेखों भी बहुत करके देवनागरी लीपिमें छपते रहेंगे क्योंकि 'दिगंबरजैन'की ग्राहक संख्या सारे हिन्दुस्थानभरमें बढ़ती जाती हैं इसलिये देशकी सर्व सामान्य हिन्दी भाषा और देवनागरी लीपिको प्राधान्यपद देना हमारा कर्तव्य है। इस वर्षके ग्राहकोंको भी हिन्दी-गुजराती भाषाकी २-२ रु. के मूल्य की ५-७ पुस्तकें उपहारमें मिलेंगी जिसमें हिन्दी भाषाकी पुस्तकें ही विशेष होंगी और यह उपहारकी पुस्तकें तैयार होनेपर क्रमशः भेजी जांयगी।

महासभाना कार्यकर्ताओ बदलाया— मथुरामां मळेली महासभामां श्रीमंत शेठ मोहनलालजीनुं राजीनामुं स्वीकारइ महामंत्री तरीके लाला जंबुप्रसादजी नीमाया छे अने श्रीमंतशेठने जैनजातिभूषणनी पदवी अपाई छे. तेमज 'जैन गजट'ना संपादक पार्श्वगम अने प्रकाशक शेठ दामोदरदासजी (मथुरा) नीमाया छे, जेथी हवे जैन गजट मथुराथी प्रगट थशे एम मनाय छे.



निर्ग्रंथ मुनि श्री चन्द्रसागरजी महाराज।

(गत वर्षमेंही दि. मुनि हुए हैं और झालरापाटनकी पास निवास करते है।)

"Jain Vijaya" Printing Press-Surat.



जैनधर्मका महत्व:-प्रकाशक बाबू दयाचन्द्र गोयलीय बी. ए. बेकनी खंदक-लखनउ। मूल्य ०)- और ५] सैंकड़ा। इस नामका एक लेख 'दिगंबर जैन' के कई अंकोंमें छप चुका है उसीको पुस्तकरूपमें प्रकाशित किया है। इसके पढ़नेसे जैनधर्ममें क्या २ उत्तम बातें हैं उसका अच्छी तरह ज्ञान होजाता है। दातारोंको चाहिए कि इसकी सौ २ पचास २ प्रतियां मंगवाकर जैनियों तथा अजैनोंमें बांटें। मुफ्त प्रचारार्थ ४) सैंकड़ा। प्रकाशकसे प्राप्य।

गुरु घंटालका व्याख्यान-प्रकाशक-आत्मानंद जैन ट्रेक्ट सोसायटी-अंबाला शहर। मूल्य ०)०॥ इस ट्रेक्टमें व्याख्यानके रूपमें वेश्यागमन और द्युत आदि व्यसनोंके भयानक फलोंका चित्र खिंचते हुए लेखकने देव गुरू और धर्म एवं शिक्षाके संबंधमें भी बड़े मार्मिक शब्दोंसे सद्बोध दिया है।

सार्वधर्म चार्ट-आगे विश्वतत्वचार्ट नामका नकशा पं. दीपचंदजी द्वारा तैयार होकर कुमार देवेन्द्रप्रसादजी द्वारा प्रकट हुआ था इससे दूना बड़ा यह नकशा भी प्रकट किया है जिसमें सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्रके सभीभेदउपभेदोंका वंशावली-के रूपमें चित्र खिंचा गया है। यद्यपि यह नकशा संग्रहणीय और बड़ा उपयोगी है तौभी बहुत ही बड़ी साईझका होनेसे संग्रह करनेमें दिक्कत पड़ेगी। कांचमें जड़ा रक्खे उतनी ही साईझ होनी चाहिये। मूल्य चार आना। मिलनेका पता-कुमार देवेंद्रप्रसाद जैन-आरा।

The Sacred Literature of the Jainas-इसे नामका एक बड़ा भारी सुशोभित नकशा कुमार देवेंद्रप्रसादजी (आरा) ने प्रकट किया है जिसमें अंग्रेजी भाषामें आजतक प्रकट हुए और प्रकट होनेवाले सभी जैन पुस्तकोंका विज्ञापन और चौवीस तीर्थंकरोंके नाम, २४ लांछन, जन्मस्थान, मोक्षस्थान आदिका ब्यान है। प्रकाशकको लिखनेसे विनामूल्य मिलता है। अंग्रेजी पढ़े लिखे भाईयोंको यह विज्ञापनका नकशा अवश्य मंगाना चाहिए।

मांसभक्षणपर विचार (दयामय ट्रेक्ट नं. १६)-प्रकाशक बाबू दयाचंद्र गोयलीय जैन-लखनउ। पृ. ३२ और मूल्य ०)०॥ और २॥) सैंकड़ा। इसमें मांसभक्षणके गैर-फायदे योरपके नामी विद्वानोंके मत लिखकर दर्शाये गये है।

ऋषिमंडलयंत्रपूजा:-(भाषाटीका सहित) लेखक पं. मनोहरलाल शास्त्री और प्रकाशक-जैनग्रंन्थउद्धारककार्यालय, चंदावाडी, बम्बई, पृष्ठ ४२ मू. ०।-)। श्रीमद् गुणनंदी आचार्यविरचित यह ऋषिमंडलयंत्रपूजामें पूजा कराने-चडानेवालाका लक्षण, पूजाकी विधिके आचार्यका लक्षण, यंत्र बनानेकी विधि, ऋषिमंडलस्तोत्रपाठ, मंत्र बनानेकी विधि और उसके अक्षरोंकी संख्या, सर्प आदिकी रक्षाके श्लोकमंत्र, मंत्रसाधनकी विधि, और जापकी संख्या आदि विषयोंके श्लोक हिन्दी भाषाटीका सहित है। और साथमें ऋषिमंडलयंत्रका

अलग नकशा भी दिया गया है। ऋषिमंडलका माहात्म्य सबसे बड़ा है इसलिये यह ग्रन्थ हरएकको अवश्य संग्रहणीय है। प्रकाशक और दि. जैन पुस्तकालय सूरतसे प्राप्य।

जैनविवाहपद्धतिः—संग्रहकर्ता पं. गौरीलाल जैन शास्त्री वैयाकरण और प्रकाशक श्रीयुत् जगन्नाथ जौंहरी, मंत्री मिथ्यातिमिरनाशिनी दि. जैन सभा, धरमपुरा देहली। पृ. ६४ मू. चार आना। इस पुस्तककी यह दूसरी आवृत्ति है जिसकी छपाई सफाई अच्छी है। विवाहविधिके लिये यह पुस्तक अवश्य खरीदना चाहिए। प्रकाशकसे प्राप्य।

जैनतीर्थयात्राविवरणः—लेखक डाह्याभाई शीवलाल—करमसद [केरा] पृ. ६४ और मूल्य छह आना। इसमें भारतके सभी जैन तीर्थोंकी सूची, अनुक्रमणिका, समेदशिखरजीका विस्तृत परिचय, रेल्वे लाइनोंका परिचय, प्रसिद्ध शहरोंका परिचय, रेल्वे संबंधी आवश्यक नियम आदि यात्राके लिये कई उपयोगी विषयों हैं। हिंदुस्थानका नकशा (तीर्थोंके निशान सहित) और समेदशिखर तथा गिरनारजीका चित्र भी दिया गया है। जैनग्रन्थउद्धारककार्यालय [बम्बई] और दि. जैन पुस्तकालय सूरतसे प्राप्य।

મુંબઇ) આ સંસ્થા જીવદયાને લગતાં લાખો પુસ્તકો પ્રકટ કરી રહી છે જેમાંનું આ એક નવું પુસ્તક છે જેમાં વનસ્પતિખોરાકના અગત્ય ગુણો મોટા મોટા વિદ્વાનોના અભિપ્રાયો ટાંકીને બતાવેલા છે તથા વનસ્પત્યાહાર અને માંસાહારમાં રહેલાં તત્વોનું પૃથક્કરણ દર્શાવનારો કોઠો રજુ કરેલો છે તેમજ એક ચુસ્ત વનસ્પત્યાહારી મી. એચ. ઇ. બાઇનીંગનો ફોટો પણ છે. દરેકે આ પુસ્તક વાંચવા લાયક છે જે પ્રકાશકને લખવાથી તદ્દન મફત મળે છે.

ઉપલા ફંડ તરફથીજ ગૌસંતાન બળદનું મહત્વ દર્શાવનારૂં ચિત્ર પ્રકટ થયું છે જેમાં બળદ, ૧૩ જાતના કયા કયા કામોમાં ઉપયોગી છે તે સચિત્ર દર્શાવેલું છે, જે પણ મફત મળે છે.

આદર્શ જીવનઃ—લીંબડીથી વાડીલાલ મુળજીભાઇ સંઘવીદ્વારા પ્રકટ થતું ત્રિમાસિક પત્ર. પૃ-૨૪ વાર્ષિક મૂલ્ય આઠ આના. આ માસિકનો આ બીજો અંક છે, જે જોતાં લેખો ઉપયોગી જણાય છે અને ઉત્તેજનને પાત્ર છે.

"હિંદુસ્થાન"નો ખાસ અંક-મુંબાઇથી હિંદુસ્થાન અને અખબારે સોદાગર નામે રોજીંદું વર્તમાનપત્ર હિંદુ માલિકી હેઠળ બેએક વર્ષ થયાં પ્રકટ થાય છે તેનો આ ૧૦૦ પૃષ્ઠનો ખાસ સચિત્ર અંક છે, જેમાં આશરે ૨૫ નાનાં મોટાં ચિત્રો અને ૬૪ ઉપયોગી વિષયોનો સમાવેશ છે. છપાઇ સફાઇ સારી છે તેમજ છુટક મૂલ્ય ૦॥= કંઇ વધારે નથી. મળવાનું સ્થળ-મેનેજર હિંદુસ્થાન, કોટ-મુંબઈ

ટુંકીવાર્તાઓ ભાગ ૩જોઃ—અનુવાદક-કલ્યાણજી વિઠ્ઠલભાઇ મહેતા અને પ્રકાશક સસ્તું સાહિત્યવર્ધક કાર્યાલય-અમદાવાદ. આ સંસ્થા તરફથી પ્રકટ થતી વિવિધગ્રંથમાળાનું આ ૬૦ મું પુસ્તક છે જેમાં કુટુંબબોધક ૨૩ ટુંકા ગૃહચરિત્રો છે, જે રસીલાં અને બોધદાયક છે. છુટક કિ. ०।=

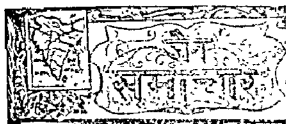
साहित्यसेवा—લેખક અને પ્રકાશક મહેતાજી છોટાલાલ કહાનદાસ પટેલ, મહીધરપુરા, છાપરીયા શેરી–સુરત. કિ. રૂ૦ ०| કવિ નર્મદાશંકરે ગુજરાતી સાહિત્યની શું શું સેવા બજાવેલી તેને લગતો નિબંધ અત્રેની સાહિત્ય પરિષદમાં વંચાઇ રૂ૦ ૫૦)નું ઇનામ પ્રકાશકને મળેલું તેજ નિબંધ સારા રૂપમાં આ પુસ્તકરૂપે પ્રકટ થયો છે, જે સાહિત્યસેવાના શોખીનોને અવશ્ય વાંચવાલાયક છે.

લાકરોડા પુસ્તકાલયનો રિપોર્ટ:—સ્વર્ગીય દાનવીર, જૈનકુલભૂષણ શેઠ માણેકચંદજીના સ્મરણાર્થે લાકરોડાના ભાઇઓએ એ શેઠના નામનું એક પુસ્તકાલય ખોલ્યું છે. જેનો આ પ્રથમ રિપોર્ટ જોતાં જણાય છે કે એક વર્ષમાં અને વળી નાના ફંડમાં આ સંસ્થાએ ઉત્તમ યોજનાથી સારૂં કામ બજાવ્યું છે અને પુસ્તકોનો ઠીક સંગ્રહ કર્યો છે. વાર્ષિક મેમ્બર ફી માત્ર ચાર આના છે. એ વિભાગના ભાઇઓએ આ પુસ્તકાલયના મેમ્બર થઇને અવશ્ય લાભ લેવો જોઇએ. સેક્રેટરી રેવચંદ હેમચંદ કોટડીયા ઘણાજ ઉત્સાહી છે.

પ્રાંતિક હિતવર્દ્ધક સભાનો રિપોર્ટ:- આ સભાનો ૧૯૭૦–૭૧નો આ રિપોર્ટ જોતાં જણાય છે કે આ સભા પણ નિયમિત કામ કરી જાય છે પણ જે જે સુધારાઓ જ્ઞાતિમાં કરવા માટે એ સભા ભાષણો કરી ઠરાવો કરે છે તેનો અમલ થતો જણાતો નથી એ શોચનીય છે, માટે એકસરખા ઉત્સાહ અને સંપથી ઓરાણ પ્રાંતિજના આખા ચોખલાએ એક સ્થળે મળી જ્ઞાતિ સુધારાઓનો ફરજ્યાત ઠરાવ કરવો જોઇએ તોજ કરેલા ઠરાવોનો અમલ થઇ શકશે. મેમ્બરો ૧૧૪ છે અને ઉઘરાણી રૂ૦ ૩૮०) છે માટે મેમબરો તથા બીજાઓએ નીકળતી રકમ ભરી દેવી જોઇએ કે જેથી કાર્યકર્તાઓનો ઉત્સાહ ભંગ ન થાય.

વ્યાખ્યાન સાહિત્ય સંગ્રહ ભાગ ૧લો:—સંશોધક અને વિવેચક (શ્વે.) મુનિ વિનયવિજયજી અને પ્રકાશક–દેવચંદ દામજી શેઠ, માલિક, જૈન–ભાવનગર. પૃ. ૫૫० પાકું પુંઠું અને કિં. ૩–૨–૮–० આ પુસ્તકમાં ૭ પરિચ્છેદોમાં ૧૧૯ વિષયોમાં ધાર્મિક અને વ્યવહારિક વિષયોનું દાખલા દલીલો સાથે તથા અનેક ગ્રંથોના શ્લોકો તેના અર્થ અને સમજ સહિત વિવેચન છે. એકંદરે આ પુસ્તક દરેકને વાંચવાલાયક અને ધાર્મિક બાબતોથી ભરપુર છે.

जैनतत्त्वप्रकाशक:—जैनतत्त्वप्रकाशिनी-सभा इटावाकी तरफसे बाबू चंद्रसेन जैन वैद्य द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र। वर्ष ३ अं. १। इस नवीन अंकसे यह पत्र पुस्तकाकार हुआ है। छपाई सफाई भी ठीक है और १७ विषय-के उपयोगी लेख है जो हरएक जैनी मात्र और अजैन भाईओंको भी पढ़नेयोग्य है। मूल्य डांकव्यय सह सिर्फ १) है और ग्राहक हो जानेसे सभाका मेम्बर भी विना मूल्य बना देते हैं और इससे भी अधिक कुछ पुस्तकें भी उपहारमें देते हैं। ऐसे उपयोगी और सस्ते मासिकपत्रका ग्राहक होनेके लिये हम सभी भाईयोंको खास सिफारश करते हैं।



काशीमें ब्रह्मचर्याश्रम और जैन स्पोर्टस क्लबका अधिवेशनः-खास निमंत्रण होनेसे श्रीऋषभब्रह्मचर्याश्रम ता. ११-१०-१५ को काशीमें पधारा था जिस वख्त श्रीजैनस्पोर्टसक्लबकी ओरसे मैदागिनी मंदिरकी धर्मशालामें ठहराकर अच्छा स्वागत किया गया था और श्री स्या. महाविद्यालयमें भी आश्रमको खास निमंत्रित करके एक सभा कराई गई थी जिसमें ब्र. अतीन्द्रने 'ब्रह्मचर्य्य', देवेन्द्रने 'शिक्षा' और ब्र. दिग्विज्यसिंहजीने ब्रह्मचर्य्य तथा संतानपालनपर अत्युत्तम और प्रार्थारूप व्याख्यान दिया था और तीसरे दिन एक आम सभा डॉ. प्रियवरुण बी. ए. (India) एम. ए. पी. एच. डी. (U. S. A.) प्रिंसीपल अक्सफोर्डकेम्ब्रिज कालेज बनारसके सभापतित्वमें हुई थी जिसमें ब्र. दिग्विजयसिंहजी, पं. मजलालजी, पं. तुलसीरामजी आदिने बहुत उत्तम व्याख्यान देकर यह दिखलाया कि ब्रह्मचर्य्यहीसे आत्मकल्याण, बुद्धकी वृद्धि, संतानवृद्धि, इत्यादि हो सकते हैं और इससे मोक्षको भी प्राप्त कर सकते हैं। चतुर्थ दिन आश्रमके ब्रह्मचारी कर्मचारियों तथा क्लबके मेम्बरोंका फोटो लिया गया और आश्रमने मेरठको प्रस्थान किया था।

सहायता मिलीः-छिंदवाडाकी दि. जैन पाठशाला ठीक तौरपर चल रही है जिसको सवाईसिंघई खेमचंदजीकी धर्मपत्नी श्री मानेयाबाईजीने रु. ४००) प्रदान किये हैं।

ग्रन्थोंकी सूची चाहिएः-अपने जैनसाहित्यभरे लक्षों ग्रन्थ नष्टभ्रष्ट हो गये और होते जा रहे हैं इसका कारण यही है कि हमने उनकी संभाल करना छोड़ दी, न अब रहेसहे ग्रन्थोंकी ही संभाल करते हैं। सहस्रों प्राचीन ग्रन्थ दीमकके ग्रास बन रहे हैं। अतः आवश्यक है कि ग्रन्थोंकी संभाल रक्षा व खोज की जाँच इसके लिये मालवा प्रां. सभाके सरस्वतीभंडारविभागसे शास्त्रभंडारोंकी सूची संग्रह करनेका कार्य वर्तमानमें चल रहा है अतः धर्मोत्साही भाइयोंको निवेदन है कि अपने २ यहांके शास्त्रभंडारोंकी सूची उक्त कार्यालयमें भेजकर अनुगृहीत करें। सूची लिखनेके फार्म भी निम्नलिखित पतेपर मिल सकते हैं-
मंत्री, श्री सरस्वतीभंडारविभागकार्यालय, नशियां,-इन्दौर।

ગોનાસણમાં કાર્તક સુદ ૧૧ ને દિને શ્રી વીરનિર્વાન પુસ્તકાલયની સ્થાપના થઇ છે;

ભગુના સ્મરણાર્થે રૂ. ૪૦૦) નું દાનઃ—(ભિમાંગનિવાસી મેતા ચતુરસિંહ શામ-

ચંદના સ્મરણાર્થે રૂ. ૪૦૦) કાઢવામાં આવ્યા છે, જેમાંથી કેટલાક તીર્થોમાં તથા શ્રાવિકાશ્રમ, બ્રહ્મચર્યાશ્રમ, સ્યા. મહાવિદ્યાલય, સોલાપુર-પાંજરાપોળ-બોર્ડિંગ-ચતુર્વિધિદાનશાળા વગેરેને રૂ. પચ્ચીસ પચ્ચીસ અને કુંથલગીરી તીર્થને રૂ. ૫૦) ની મદદ આપી છે. આ સાથે શાસ્ત્રદાન માટે પણ એક રકમ કાઢી હોત તો કેવું સારૂં થાત?

લાકરોડામાં પાઠશાળા માટે ફંડ:— ઉપદેશક પીતાંબરદાસજીના ઉપદેશથી લાકરોડામાં પાઠશાળા ખોલવા માટે ત્યાંના ભાઇઓએ આસો વદ ૪ની સભામાં રૂ. ૨૨૮૧) નું ફંડ કર્યું હતું જેમાં ૧૩ ૨) કોટડીયા સોમચંદ ઉગરચંદ, રૂ. ૨૫૧) કોટડીયા રવચંદ વહાલચંદ, ૧૬૧) કોટડીયા હાથીચંદ ચતુરદાસ, ૧૫૧) કોટડીયા હેમચંદ ચતુરદાસ, ૧૦૧) દોશી અમીચંદ ગુલાબચંદ, ૧૦૧) શા. કાળીદાસ કીશોરદાસ અને બીજી નાની રકમો ભરાઇ હતી તથા વદ ૬ ની સભામાં રૂ. ૧૮૧) વધુ ભરાયા હતા. લાકરોડાના ભાઇઓ ઘણાજ ધર્મોત્સાહી છે તેથી આશા રહે છે કે એ પાઠશાળા તાકીદે ચાલુ થઇ એના ફંડમાં પણ વધારો થવા પામશે.

वड़वाहमें ता. ४–१०–१५ को दि. जैन पाठशालाकी पुनः स्थापना हुई जिस वख्त पं. सोनपालजीका एक अच्छा व्याख्यान हुआ था।

સોલાપુરમાં લાયબ્રેરીની સ્થાપના અને વ્યાયામશાળાનું ફળ:— સોલાપુરમાં વિજયાદશમી નિમિત્તે જૈન વ્યાયામશાળા તરફથી મર્દાની ખેલનો જલસો થયો હતો જેમાં વિદ્યાર્થીઓએ અનેક કસરતો કરવા પછી અમીચંદ સખારામ નામે ૧૮ વર્ષના વિદ્યાર્થીની છાતીપર ૭૦૦ પૌંડ વજનનો પથ્થર મુકી તે ઉપર ભીંને પથ્થર ફોડવામાં આવ્યો હતો તેમજ એજ વિદ્યાર્થીની છાતીપરથી માણુંસ બેઠેલી બળદગાડી લઇ જવામાં આવી હતી. આ બાલક વિદ્યાર્થી હાલ નાથારંગજી બોર્ડિંગમાં ભણે છે, જેને શેઠ મોતીચંદ રાવજીએ ખુશ થઇને રૂપાનો ચાંદ આપ્યો હતો તથા દોશી રાવજી સખારામનું ભાષણ પણ થયું હતું. વળી એ દિને સવારે ત્યાં ભોજરાજ જૈન પ્રાઇવેટ લાયબ્રેરીની સ્થાપના પં. વંશીધરજીને હાથે થઇ છે.

वार्षिक मेला—हस्तिनापुरमें कार्तिक सुदी ८ से पूनम तक बडा भारी मेला हरएक वर्षकी भांति हुआथा जिसवख्त श्री ऋषभब्रह्मचर्याश्रमका चतुर्थ वार्षिकोत्सव भी बडे समारोहके साथ हुआथा जिसका संक्षिप्त रिपोर्ट आगामी अंकमें प्रगट किया जायगा।

झालरापाटन केम्पमें श्री जैन कुमार सभाका कार्य बहुत तरक्कीके साथ चल रहा है और सभा, पाठशाला, पुस्तकालय और मुफ्त औषधालयकी स्थापना उक्त सभाने की है।

सहायताकी आवश्यकता:—बबीनासे बाबू खूबचंदजी लिखते है कि झांसी जिलेभरमें ५–७ सालसे करीब १०–१२ पाठशालायें थीं परंतु सभी बंद हो रही हैं जिसका विशेष कारण द्रव्यका अभाव है इसलिये हमारे भाइयोंको ऐसे विद्यादानके कार्यमें सहायता देकर सभी पाठशालाएँ बंद न रखना चाहिए। जो भाई इसके लिये सहायता भेजेंगे उनका नाम प्रकट किया जायगा और पाठशालाकी तरफसे ज्ञानपचासा

पुस्तक भेट मिलेगी । रुपये भेजनेका पता– सिंघई दीपचंद व बाबू खूबचंद-जैन बबीना (झांसी.)

અમદાવાદ બોર્ડિંગનો મેળાવડો:– શેઠ પ્રે. મો. દિ. જૈન બોર્ડિંગનો બારમો વાર્ષિક મેળાવડો કાર્તક સુદ ૮ની સવારે ૮। વાગતે શેઠ રા૦ રા૦ મગનભાઇ ચતુરભાઇ બી. એ. બેરિસ્ટર એટ લૉના પ્રમુખપણાનીચે બારે દાહેમાઠથી થયો હતો જે પ્રસંગે મુંબાઇ, આમોદ, અંકલેશ્વર, વડોદરા, સોનાસણ, સોજીત્રા એરણુ પ્રાંતિજ વગેરે ગામોના ભાઇઓ જેવાકે શેઠ નવલચંદ હીરાચંદ, શ્રીયુત લલ્લુભાઇ લક્ષ્મીચંદ ચોકશી, શ્રીયુત્ લલ્લુભાઇ પ્રેમાનંદદાસ એલ, સી. ઇ., શેઠ રતનચંદ પ્રેમચંદ, શ્રીયુત હરજીવન રાયચંદ, રા. છોટાલાલ ઘેલાભાઇ વગેરે તથા અમદાવાદના પ્રતિષ્ઠિત ગ્રહસ્થો જેવા કે **પરમ દેશભક્ત મહાત્મા શ્રી મોહનલાલ કરમચંદ ગાંધી** વગેરે મળી ૩૦૦ની સંખ્યા હાજર હતી. પ્રથમ વિદ્યાર્થીઓએ મંગલાચરણ કરવા પછી રા. લલ્લુભાઇ પ્રેમાનંદદાસની દરખાસ્ત અને શેઠ હરજીવન રાયચંદના ટેકાથી પ્રમુખપદ અપાવા પછી સને ૧૯૧૩-૧૪નો બોર્ડિંગનો રિપોર્ટ શેઠ ચંદુલાલ માનચંદે વાંચી સંભળાવ્યો હતો, જે પછી રા. હરજીવનભાઇ રાયચંદે બોર્ડીંગના સ્થાપક મર્હુમ શ્રીમતી રૂપાબાઇ તથા બોર્ડિંગોના પિતા મર્હુમ દાનવીર જૈનકુળભૂષણ શેઠ માણેકચંદ **હીરાચંદ જે. પી.** ના સ્વર્ગવાસથી જૈન કોમને અતિશય અને કદિ પણ ન પૂરાય તેવી ખોટ ગઇ છે તે માટે બોર્ડિંગ તરફથી દિલગીરી દર્શાવવાનો ઠરાવ મર્હુમના અપૂર્વ ગુણોના વિવેચનપૂર્વક મૂકતાં તેની પુષ્ટિમાં શા. છોટાલાલ ઘેલાભાઇ ગાંધીએ વિવેચન કરવા પછી વિદ્યાર્થીઓએ પણ એ ઠરાવને શોકજનક કવિતાના રૂપમાં ટેકો આપતાં સર્વાનુમતે પસાર થયો હતો, બાદ પ્રસિદ્ધ દેશભક્ત મી० ગાંધીએ તથા બીજા જાણીતા વક્તાઓએ બોર્ડિંગની ફતેહ અને વિદ્યાર્થીઓની ચારિત્રની રીતથી સંતોષ જાહેર કર્યો હતો અને તે પ્રમાણે ચારિત્ર કરવા બોધ આપ્યો હતો. એ પછી વિદ્યાર્થીઓએ મર્ચંટ ઓફ વેનીસ નામનું ડાયલોગ ઘણાજ જોશભેર અને જોઇતા પોશાકમાં અંગ્રેજી ભાષામાં સારી રીતે કરી બતાવ્યું હતું જેથીશ્રોતા જનોએ વિદ્યાર્થીઓની ઘણી તારીફ કરી હતી બાદ પ્રમુખસાહેબે બોર્ડિંગના કાર્યો તરફ સંતોષ બતાવી ઉપયોગી સૂચનાઓ કરી હતી અને ડાયલોગ કરનારા વિદ્યાર્થીઓને સુપ્રીન્ટેન્ડંટ માસ્તર ગંગાશંકર કરૂણાશંકર તરફથી રૂ. ૫)નું ઇનામ આપવાનું જાહેર થવા બાદ ફુલ, પાન અત્તર ગુલાબ લઇ ૧૧ વાગતે મેળાવડો વિસર્જન થયો હતો. અને એજ દિને રાત્રે વિઝીટર્સ કમીટીની બેઠક શેઠ નવલચંદ હીરાચંદ ઝવેરીના પ્રમુખપણા નીચે થઇ હતી જે પ્રસંગે કમીટીના સેક્રેટરી શા. ચીમનલાલ જેશીંગભાઇએ ચાલુ સાલનો દશ માસનો રિપોર્ટ વાંચી સંભળાવ્યો હતો બાદ કેટલાક વક્તાઓએ બોર્ડિંગની વ્યવસ્થામાં સુધારોવધારો કરવાની જુદી જુદી દરખાસ્તો રજુ કરી હતી પણ તેને ટેકો નહિ મળવાથી તેનો મેનેજીંગ કમીટીથી વિચાર કરવા જણાવવામાં આવ્યું હતું. એ પછી વિદ્યાર્થીઓએ સરસ્વતિચંદ્ર અને ચંદ્રકાંતનું ગુજરાતી ડાયલોગ ઘણી સારી રીતે કરી બતાવ્યું હતું જેને ઉત્તેજન આપવા ખાતર ઑ. સેક્રેટરી માસ્તરે રૂ. ૮)નું ઇનામ આપવા જાહેર કર્યું હતું. બાદ હારતોરા લઇ રાત્રે ૧૦ વાગતે મીટીંગ બરખાસ્ત થઇ હતી અને બીજે દિને મેમ્બરો અને 'દિગંબર જૈન'નાં ગ્રાહકો બરાબર હતા અને મેળાવડો નિર્વિઘ્ને થયો હતો.

चित्रोंका संक्षिप्त परिचय।

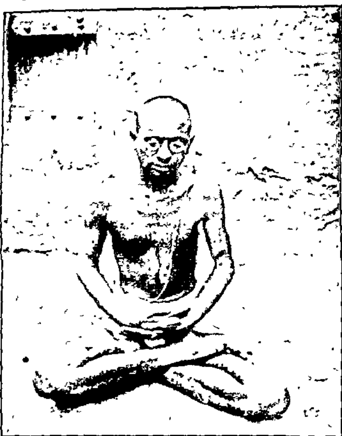
इस सचित्र खास अंकमें जिनर त्यागी, तीर्थक्षेत्र, बोर्डिंग, विद्यालय, महोत्सव, प्राचिन जैन साहित्य, श्रीमानों और विद्वानोंके चित्र प्रकाशित किये हैं, उन सबका परिचय देना अत्यावश्यक है इसलिये हम यहांपर उनका संक्षिप्त परिचय प्रकट करते हैं जो हमारे पाठकोंको अतीव रुचिकर और उपयोगी होगा।

महाराज चंद्रगुप्तके सोलह स्वप्न (रंगीन चित्र)--

अंतीम श्रुतकेवली श्रीभद्रबाहुस्वामीके समकालीन मौर्यवंशीय महाराज चंद्रगुप्तने जो १६ अशुभ स्वप्न देखनेपर ही उनके फल भद्रबाहुस्वामीसे पूछकर तुर्तही अपने पुत्र बिम्बिसारका राज्याभिषेक कर दीक्षा ली थी वही सोलह स्वप्नका सचित्र परिचय जो हरनाथ त्रिवेदी काव्यतीर्थकृत कावतीरुपमें 'जैनसिद्धांतभास्कर' किरण ४ में प्रकट हुआ है वह निम्न प्रकारका है--

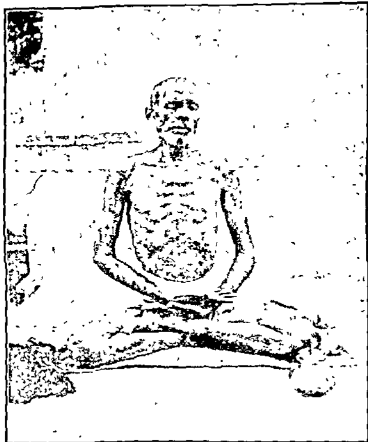
इस अनुपम अभिराम चित्रकी छटा निराली है भाई!
आज पूर्व भारतकी महिमा क्या इसने है झलकाई?
चित्र, चित्रकर, चन्द्रगुप्त की करूं प्रशंसा मैं बहुबार।
जिनके कृपालेशसे अब भी भारत है गुणगरिमागार॥
हे इतिहास विज्ञवर! बुधजन! चन्द्रगुप्त हैं यही महान।
जिन्हें सभी भारतवासीने अपनाया है मान प्रधान॥
बौध बुद्ध जिन जैन सनातन हिन्दू इनको कहते हैं।
पर साधक बाधक प्रमाण भी मिलकर खूब झगड़ते हैं॥
जैन सिद्ध कर दिखा दिया है भास्कर ने गत किरणोंमें।
*शिला लेख बहु लेख प्रमाणित प्रकटित हैं गत किरणोंमें॥
श्रावक कुल चुडामणि थे ये भद्रबाहु के शिष्य प्रधान।

"प्रभाचन्द्र" दीक्षित इनका था नाम सभी करते थे मान ॥
हा ! जब यह पददलित हुआ था भारत खूब सिकन्दर से ।
किया गया उद्धार उसी क्षण इस जिन धर्म्म धुरन्धरसे ॥
सुमन वाटिकामें सुदीर्घ है स्फटिक-वेदिका एक पुनीत ।
शीतलता सुन्दरता जिसकी लुभा रही है सबका चित्त ॥
शय्या परम रम्य उसपर है बिछी हुई यह सुखमागार ।
ग्रीष्मकालकी सुभग रातमें बहता पवन परम सुखकार ॥
मगधाधिप श्रीचन्द्रगुप्त सम्राट् उसीपर निद्रित हैं ।
पर निज प्रजा हेतु सर्वत्र सुचिन्तित और विनिद्रित हैं ॥
वीर अङ्गरक्षक शय्याके पास लगाकर वीरासन ।
दृढ़ सन्नाह पहनकर करमें असि लेकर होकर दृढ़ मन ॥
निर्निमेष होकर करता है रखवाली मगधेश्वर की ।
निज कर्त्तव्यपरायण पर ही कृपादृष्टि होती सबकी ॥
शयन भवनके एक कोनमें वही पुराना भारतका ।
दीपक जलता है तम नाशक ज्ञान प्रकाशक भारतका ॥
रात गयी अब उषःकाल की छवि सरसाती आती है ।
दीप ज्योति भारत विभूति सी धीमी पड़ती जाती है ॥
उसी समय में चन्द्रगुप्तने देखे सोलह स्वप्न विचित्र ।
खैंच गये मानो ललाटमें भारतके कुसमय का चित्र ॥
निम्न लिखित हैं फल समेत ये स्वप्न निराले ही भाई ।
जिन्हें देख कहना पड़ता अब समय गया वह सुखदायी ॥
"होते अस्त सूर्य्यको देखा" द्वादशाङ्गविद् रहे न एक ।
"रत्नराशि रजमें" देखी अब यतियों में हो फूट अनेक ॥
"सुरतरु की शाखा टूटी" अब जिनव्रत धरें न क्षत्रिय लोग ।
"सीम रहित जलनिधि" देखा नृप देंगे नहीं नीतिमें योग ॥
"द्वादश फणी व्याल" है बारह वर्षों तक अब पड़े अकाल ।
"सुर विमान उलटा" भारत में आवें नहीं देव यह हाल ॥
"उष्ट्रारूढ़ राजसुत" देखा कहो और इससे क्या शोक ?



जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी
संपादक "जैनमित्र"–बम्बई.
(जैनसमाजकी उन्नतिके लिए अहर्निश जीजानसे अटूट परिश्रम करनेवाले ब्रह्मचारी.)





स्वर्गीय शिवलालजी महाराज–इन्दौर।
(समाधिमरण सं. १९६० भादों कृ. ८–रतलाम.)

जिनव्रत छोड़ कुपथगामी होवेंगे भारतके नृप लोक ॥
"कृष्ण युगल हाथी लड़ते हैं" होगी वृष्टि समयपर अल्प ।
"रथवाही गोवत्स" युवावस्था ही में हो धर्म्म अनल्प ॥
"गजारूढ़ कपि" को देखा क्षत्रिय सेवक हो नीच नरेश ।
"प्रेत नाचना है" कुदेव की पूजा हो अब हाय विशेष !!
"स्वर्णपात्र भोजी कुक्कुर" धनसे धनिकोंके हो दुष्कर्म्म ।
"जुगुनूकी है चमक" अल्प उद्योतक ही अबसे जिन धर्म्म ॥
"शुष्क सरोवर" दक्षिण-दिशि वर्षण होते थोड़ा देखा ।
जिनवृष अबसे उसी देशमें होगा फल सबने देखा ।
"रजमें कमल खिला" अजैन हों भूसुर जैन वैश्य धनवान् ।
छिद्रयुक्त शशि" देखा जिन मतमें हों भेद प्रभेद महान् ॥
यही स्वप्न इस सुभग चित्रमें चित्रित है अति विशद पवित्र ।
जिसे देख सबको भ्रम होता है यह है सजीव या चित्र ?
वीर चतुर्विंशति सो चालिस सम्वत्में यह हुआ प्रकाश ।
होवे इससे भरतक्षेत्रके जनका अविरत बुद्धि विकाश ॥

उपरोक्त सोलह स्वप्नके नाम और उसका फल निम्न लिखित हैं—

(१) सूर्य्य अस्त हो रहा है। फल—द्वादशांगका जाननेवाला कोई नहीं रहेगा।

(२) रत्नोंका ढेर धूलमें पड़ा है। फल-यतियोंमें एकता नहीं रहेगी।

(३) कल्पवृक्षकी डाल टूट गई। फल-क्षत्रिय जिनधर्मको नहीं मानेंगे।

(४) समुद्र मर्य्यादारहित हो गया। फल-राज्य नितिपटु नहीं होंगे।

(५) बारह फणका सर्प। फल—बारह बारह वर्ष तक अकाल पड़ेगा।

(६) देवताओंका विमान उलट गया। फल—देवता भारतभूमिपर नहीं आवेंगे।

(७) राजपुत्र ऊंटपर चढ़ा हुआ है। फल—राजा मिथ्यात्व धर्म्मके अनुयायी होगा।

(८) दो काले हाथी आपसमें लड़ रहे हैं। फल—समयसमय वर्षा कम होगी।

(९) गायके छोटे २ बछेरे गाड़ीमें जोते गये हैं। फल—तरुणावस्थामें ही धर्म्म होगा।

(१०) बन्दर हाथीके ऊपर चढ़ा हुआ है। फल—क्षत्रिय नीच वृत्ति करेंगे तथा शुद्र राजा होगा।

(११) प्रेत नाच रहा है। फल—कुदेवकी पूजा अब अधिक होगी।

(१२) सोनेके पात्रमें कुत्ता खीर खा रहा है। फल—धनिकोंके धनसे दुष्कर्म अधिक होगा।

(१३) जुगनू देदीप्यमान हो रहे हैं। फल—अब जिन धर्म अपना प्रभाव बहुत कम उद्योत करेगा।

(१४) तालाब सूख गया है। फल—दक्षिण देशमें वर्षा बहुत कम होगी और जिन धर्म अधिक माननीय वहीं उसी देशमें होगा।

(१५) धूलमें कमल खिला हुआ है। फल—ब्राह्मण अजैन होंगे और वैश्य जैन।

(१६) चन्द्रमामें कई छिद्र हो गये हैं। फल—जिनमतमें भेदप्रभेद होगा।

(२) **निर्ग्रन्थ दिगम्बर जैन मुनि श्री चन्द्रसागरजी महाराज**—इस विकराल पंचम कालमें नग्न दिगम्बर वीतराग मुनियोंके अभावकी पूर्ति करनेको श्री चन्द्रसागरजी महाराजने चैत्र शुक्ला ३ सं. १९७२ को झालरापाटनमें महाव्रत धारण किये और उसही दिन केशलोंच किया था। इस देशकी उज्वलता देखकर झालरापाटनसे चारों दिशामें ३२ बत्तीस माईल ग्रामोंमें जहां जैनियोंकी बस्ती हैं वहां विहार करनेका प्रमाण कर इस हदसे बाहर गमनके त्याग कर दिये हैं। वैशाख अषाढ़ तक झालरापाटन छावनी, शहर, गुन्दारा, भागपुर आदि ग्रामोंमें विहार कर अभी वैराग्य मुनिसे भव्य जीवोंके कर्मकलंक धोकर चातुर्मास शहर झालरापाटनमें किया था और अभी ही मार्गशीर्ष कृष्ण ११को सुनेरामें केशलोंच किया था जिस वक्त बड़ी भारी प्रभावना हुई थी।

आपका जन्मस्थान **फलटन** (जिला सतारा) राजधानी बापूसाहब निमाड़कर बहादुरकी है वहां **केशवचन्द्र** हूमड, गोत्र खेरजो श्रावककी श्रीमती वालूबाईके पद्मसी उर्फ पुरुषोत्तम नामके पुत्रका जन्म मगसर सुदि ९ विक्रम संवत १९१७में हुआ था। हमारे चरित्रनायकका ग्रहस्थाश्रमका नाम पद्मसी उर्फ **पुरुषोत्तम** है। इनके दलूचन्द नामके भाई जिनका अवदेहान्त हो गया और बहिन माणिकबाई जो अभी विधवा हैं हुए। पुरुषोत्तमजीका विवाह हरीचन्द गंगाबाईकी पुत्री जमनाबाईके साथ विक्रम संवत १९४०में हुआ जिनसे चार पुत्र और चार पुत्री हुई जिनके नाम इस मुजब हैं—

भाईचन्द, रामचन्द, नेमचन्द, गुलाबचन्द, अनुक्रमसे इक्कीस, सतरह, बारह और आठ वर्षकी अवस्थाके अभी मौजूद हैं और पुत्री मथुराबाई विधवा अट्ठाईस वर्ष, नवलबाई १५ वर्ष, हीराबाई तेरह वर्ष और जतनबाई ८ वर्षकी विद्यमान हैं। पुरुषोत्तमजीके पितामहका नाम माणकचन्द उम्रचन्द भार्या राजबाई तत्पुत्र केशवचन्दजी हमारे चरित्रनायकके पिता हैं। ये फलटनमें अच्छा

व्योपार करते रहे। सं. १९२९ के वैशाखमें केशवचन्दजी फलटनको छोडकर अपने कुटम्ब सहित पोंडसिरस ग्राममें जाकर किराने और कपडेका व्योपार करने लगे। सं. १९३५ में केशवचन्दजीका देहान्त हो गया और सब कुटम्बके भरणपोषणका भार पुरुषोत्तमजी जो उस समय १८ वर्षके थे चलाने लगे। इस समय तक पुरुषोत्तमजीने केवल महाराष्ट भाषा ही पढ़ी थी। पिताजीका परलोकवास होजानेसे पढ़ना छोड़कर किराना कपडेका व्योपार करने लगे। सं. १९४० में अपना विवाह कर इसही वर्ष अपनी माता, बहिन, भाई और भार्या सहित श्री सम्मेदशिखरजीकी यात्रा की। इनकी धर्मपत्नी भी बड़ी धर्मात्मा हैं, गृहस्थाश्रममें बहुतसे व्रत विधान किये और तीन वार सम्मेदशिखरजीकी यात्रा की।

दिक्षाका कारण–सोलापुरमें श्रीयुत् अहिलक पन्नालालजी महाराजके सदुपदेशसे पुरुषोत्तमजीने श्रावकके व्रत लिये और एक महिने साथ रहकर पञ्चाणुव्रत पालन किये, श्रीआत्मानुशासनकी स्वाध्याय की और आहिलकजी महाराजकी आज्ञा लेकर फलटन आये। वहां दो महिनेमें अष्टान्हिक व पुरंदरव्रत तथा सोलहकारण व्रत किये और अपने कुटुम्बसे स्नेह त्याग क्षमा मांग वैराग्य धारण करनेका विचार प्रगट किया। फिर वैशाख कृष्ण ९ सं. १९६९ जिसको करीब ३॥ वर्ष हुए कुरुन्दवाड़ ग्राम (जिला सोलापुर) में नग्न दिगम्बर मुनि श्री १००८ श्री जिनप्पास्वामीके समीप क्षुल्लकके व्रत धारण किये। दश महीने क्षुल्लकव्रतीमें रहे। फिर सं. १९७० के वैशाख वदि ९ को परण्डा ग्राममें श्रीआदिनाथस्वामीके मन्दिरमें वेदीउत्सव हुआ था उससमय सोलापुरवाले पंडित पासु गोपाल शास्त्रीने श्रावककी ग्यारह प्रतिमाका व्याख्यान किया उस समय हमारे क्षुल्लक पुरुषोत्तमजीने वैराग्यमें दृढ़ हो एक कोपीनके सिवाय सर्व परिग्रहका त्याग कर केशलोंच किया और श्रीगुरु जिनप्पास्वामीके समीप गये वहां १२ महने रहे और ३ केशलोच उनके समक्षमें किये। और गिरनारजीकी यात्रा की। चातुर्मास पूर्णकर गुरुकी आज्ञासे पालीताना गये और पोष कृष्ण ३ सं. १९७० को पालीताना (सेत्रुंजय तीर्थ) में केशलोंच किया फिर विहार करते २ चातुर्मास धुलेव श्रीकेसरियानाथजीमें किया और अष्टान्हिकाके ८ उपवास किये। और सोलहकारणजीके एकान्तर उपवास किये। और बाकी चातुर्मास भी एकान्तर उपवाससे ही व्यतीत किये। और अश्विन कृष्ण ८ सं. १९७१ में धुलेवमें केशलोंच किया। और विहार करते हुए सोनागिर पहुंचे वहां अषाढ सुदि ३ को केशलोंच किया। उससमय झांसीके श्रावक पंचोंने बहुत प्रभावना की और

चातुर्मास आगरेमें पूर्ण किया। और मगसर सुदि ९ सं. १९७१ में श्रीसम्मेदशिखरजीमें केशलोंच किया। फिर विहार करते हुए चैत्र शुक्ल ३ सं. १९७२ को झालरापाटनमें केशलोंचके समय कुंवर दिग्विजयसिंहजी तथा ब्रह्मचारी गेंदनलालजी आदि उपदेशकों और पंडितोंका समागम हुआ उससमय अहिल्क पदसे महाव्रत धारण किये और अषाढ शुक्ला ३ सं. १९७२ को शहर झालरापाटनमें केशलोंच किया और चातुर्मास यहां बड़े आनन्दसे हुआ है। और दशलक्षणीपर्वमें आपने दस अपवास किये थे। आपकी सेवामें हर समय दोचार विद्वान बने रहते हैं। दिनभर अपने षडावश्यक और गोचरीके समयके उपरान्त धर्मध्यान शास्त्रज्ञानमें सब समय व्यतीत होता हैं। इस समयमें ऐसी कठीन परिषह सहन कर दिगम्बर धर्मकी महत्वता प्रगट करके वैराग्यमार्गकी पुष्टता करनेमें अग्रेश्वर श्रीचन्द्रसागर महा मुनिका दर्शन भव्यजीवोंको अवश्य करना चाहिए। अब महाराज मूलाचार, समयसार, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, पुण्याश्रव, द्रव्यसंग्रहकी स्वाध्याय कर रहेहैं। रत्नकरण्डके संस्कृत श्लोकोंको कंठाग्र धारण भी कर लीये हैं। अब संस्कृत श्लोक और नागरी भाषाका बोध और अभ्यास बहुत अच्छी तरह हो रहाहै। महाराजकी वैयावृत्तिमें ९ महनेतक ब्रह्मचारि उग्रमचन्दजी आगरावालेभी रहे। आजकल ब्रह्मचारी भोलारामजी और बिहारीलालजी मुनिमहाराजके पास ध्यानाध्ययन कर रहे हैं। भोलारामजी ध्यानमें घंटों खडे या बैठे रहते हैं। बडे उत्तम शीलस्वभावी उत्तम पात्र हैं। झालरापाटनमें बाहरके श्रावक लोगभी आकर सत्पात्रोंके आहारदानकी योग्यता प्राप्त कर पुण्योपार्जन कररहे हैं यह समय निराकुलताका तो नहीं है देशओर विदेशमें अनेक आकुलता लग रही है परन्तु ऐसे दुःखके समयमें संकटसे बचानेवाले श्रीगुरुके दर्शन और वैय्यावृत्ति तथा सदुपदेश ग्रहण करनेसे सब आकुलता मिटती है। प्राचीन कालमें तो नगर नगर और ग्राम २ में मुनियोंका विहार और चातुर्मास हुआ करता था। अब दिगम्बर गुरुओंके दर्शनही अलभ्य हैं ऐसा विचार करके धर्मात्मा सज्जन गुरुभक्तोंसे सविनय प्रार्थना है कि झालरापाटन पधारकर अवश्यमेव गुरुके दर्शन कर अपना कल्याण करें। जैसे सिद्धक्षेत्रोंकी वन्दना करनेको जातेहैं वैसेही महात्माके दर्शन करनेको पधारना चाहिए और निर्विकार वैराग्य बालकवत निर्भयगमन करते हुए आहार विहारमें गुरु परम्पराके दर्शानेवाली जंगम प्रतिमाके दर्शन कर पुण्योपार्जन करना चाहिए * ।

---

(३) ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीः– आपसे तो सारी जैनसमाज अच्छी तरहसे परिचित है और आपका सचित्र परिचय आगे प्रकट हो चुका है इसलिये आपके बारेमें ज्यादे लिखनेकी आवश्यकता नहीं है तौभी हम इतना अवश्य कहेंगे कि आजकल जैनधर्म और जैनसमाजकी उन्नतिके अनेक मार्ग दृष्टिगोचर होरहे हैं वह आपके ही अटूट परिश्रमका फल है। बम्बई दि. जैन प्रां. सभाका पाक्षिकपत्र "जैन मित्र"का संपादन आपही योग्यतापूर्वक करते हैं और उसको साप्ताहिक बनानेकी आपकी तीव्र आकांक्षा है। आपका यह चित्र सोलापुरमें गत् वर्षमें ध्यानावस्थाके समय खिंचा गया था। ऐसे ही स्वार्थत्यागी विद्वान और जैनसमाजकी उन्नतिके लिये अहर्निश परिश्रम करनेवाले ब्रह्मचारियोंकी आजकल आवश्यकता है।

(४) स्वर्गीय त्यागी शिवलालजी महाराज-ईन्दौर-आप सिरसी (झांसी) निवासी बालब्रह्मचारी थे और सं. १९४८ में आपने अष्टमी प्रतिमा धारण की थी। आपको ध्यानकी सिद्धिता विशेष थी। आसनकी अचलता तो ऐसी थी कि कभी २ शामके ४ बजेसे सुबहके ८ बजे तक एक आसनसे तिष्ठे रहते थे। आपका अंतीम चातुर्मास रतलाम (रत्नपुरी) में हुआ था और वहीं सं. १९६०। में सच्ची उदासीनतापूर्वक आपका समाधिकरण हुआ था जिस वख्त रतलाममें बड़ा उत्सव होकर उपदेशसभाएं भी हुई थीं।

(५) श्रीमान् सेठ सुखानंदजी साहवः– अपनी समाजमें कुछएक अगुआ भी समाजकी उन्नतिके लिये कटिबद्ध हैं उन्हीं अगुओंमेंसे कीर्तिअनिच्छुक अतएव गुप्त रूपसे समाजके सहायक फतेपुरनिवासी श्रीमान् श्रेष्ठिवर्य्य श्री गुरुमुखरायजीके सुपुत्र श्री सेठ सुखानंदजीभी एक अगुआ हैं और बम्बईकी दि. जैनसमाजके मुखिया हैं। आजकल बम्बईके व्यापारीवर्गमें आप असाधारण व्यापारी समझे जाते हैं और इतने बड़े व्यापारी तथा समाजप्रतिष्ठित होकरभी आपके मानकषायका लेश भी नहीं है तथा दीनदुःखी और अशरणोंको शरणभूत भी हैं। आपकी उदारता, कृतज्ञता, शिष्टता, सुविचारता तथा लोकप्रियता देख आपके श्रीमान् महाराज श्रीसीकरनरेश एच. एच. १०८ माधवसिंहजी महाराजने कहा कि मैं तुम्हें अपने राज्यका भूषण समझकर बहुत प्रसन्न हुं इसलिये मेरेसे जो चाहिए सो मांग लो। इसपर सेठजीने यही कहा कि महाराज, मुझे क्या चाहिए? आपकी कृपासे मेरे सब कुछ है फिरभी आपका आग्रह है तो मैं यही चाहता हुं कि भादों सुदी ५से १४ तक तथा प्रत्येक मासकी चतुर्दशीको सीकर, लछमनगढ, फतेपुर और रामगढ इन चार शहरोंमें कोइ भी जीव हमेशहके लिये न मारा जाय।

बस यही मेरी चाहना है। ऐसे वचन सुन महाराजा साहब अत्यंत विस्मय और हर्षको प्राप्त होते हुए विचारने लगे कि सेठ सुखानंदजीने स्वार्थपर लात मारकर परार्थ ही चाहा है इसलिये ऐसे परार्थनिष्ठ दयालु पुरुषोंको तो जो मांगा है वह देना चाहिए। ऐसा विचार करके आपकी इच्छा सादर स्वीकार की और उपरोक्त चारों शहरमें पर्युषण तथा प्रत्येक चतुर्दशीको जीवहिंसा नहीं करनेका हुकुम हमेशहके लिये जारी है। बम्बईमें नवीन और विशाल सुशोभित मन्दिरकी पूर्ति अभी एक वर्ष हुए आपके ही अपूर्व प्रयास और दानसे हुई है। नवीन मन्दिरके लिये डेढ़ लाख रुपयेका मकान ७५०००) रुपया कर्ज देकर एकदम खरीदना और उसमें २८०००) रुपयाकी सहायता देना तथा मन्दिरकी प्रतिष्ठा होकर बहुत अच्छी व्यवस्था होना यह सब आपके ही अपूर्व प्रयासका फल है। इसीतरह अपनी अनेक संस्थाओंमें आप वार्षिक मासिक सहायता देते रहते हैं और बम्बई दि. गु. जैन बोर्डिंगमें चैत्यालय, रथयात्रा निमित्त रथ, दानवीर सेठ माणिकचंदजीका स्मारकफंड आदि अनेक कार्योंमें आपने हजारों रुपये दान दिये हैं तथा खुद भी अगुआ बनकर अनेक धार्मिक कार्यों करते हैं। आपका द्रव्य लौकिक तथा पारमार्थिक विद्यादानके निमित्त भी खर्च होता है जैसे-हालमें आपहीके द्रव्यसे फतेहपुर नगरमें आपके पूज्य पिताजी श्री गुरुमुखरायके नामसे स्कूल जारी है उसमें धार्मिक तथा इंग्लिश वगैरः लौकिक विद्याका ज्ञान दिया जाता है। इसमें कुछ भी शंका नहीं है कि आप एक उदार अनुकरणीय और आदर्श पुरुष हैं। आपके देशमें जिससमय दुष्काल पडे थे उससमय आपने सस्ते भावसे अनाज दिया था और बहुतोंको तो बिनामूल्य दिया था उससमय आपकी दयालुतासे अनेक प्राणियोंके प्राण बचे थे। ऐसे दयालु स्वभावसे आपके देशमें आपका बहुत ही आदर है और महाराज भी आपसे बहुत प्रसन्न हैं। आपकी अनिच्छा होनेपर भी आपका यह चित्र हमें एक दिगम्बरी बंधुसे प्राप्त हुआ था जिसको प्रकट करनेके लिये हम सेठजीसे क्षमाप्रार्थी हैं।

[६] **ब्रह्मचारी श्री पार्श्वसागरजी** महाराज:-आप कई वर्षोंसे क्षेत्र श्री कुंथलगिरिमें निवास कर रहे हैं और वहां बड़ी भारी कोशीश करके कुलभूषण दि. जैन विद्यालय और बोर्डिंग स्थापित किया है जिसका स्थायी फंड न होनेपर भी आप मासिक वार्षिक यातो एकमुष्टी सहायता प्राप्त करके विद्यालयका कार्य अच्छी तरहसे चलाते हैं।

(७) **श्री सनत्कुमार ब्रह्मचारी:**-आप भी श्री कुंथलगिरिमें रहते हैं। आपकी आयु १०० वर्षसे भी अधिक होनेपर आप शरीरके मजबुत हैं और दांत भी मौजूद

है। पूर्ण ब्रह्मचर्य पालनेकाही यह फल है।

(८) मुनि श्री चंद्रकीर्ति गुरुमंड्या-जैनविद्रिः–कोशीश करनेपर भी आपका परिचय हमें नहीं मालम हुआ है। यदि किसी महाशय लिख भेजेंगे तो आगामी अंकमें प्रगट किया जायगा।

(९) सिद्धक्षेत्र श्री मांगीतुंगीजीः– यह तीर्थ बी. बी. सी. आई. रेल्वेकी टाप्टी-वेली लेनमें चींचपाडा स्टेशनसे ३५ मिल और नासिकसे ५० मिलपर है। इस क्षेत्रका अतिशय बहुत बड़ा है और इसतीर्थसे राम, हनु, सुग्रीव आदि ९९ करोड मुनि मुक्ति पधारे हैं। यह चित्र दोशी हीराचंद मलुकचंद–सोलापुरद्वारा प्राप्त हुआ है।

(१०–११) तीलोकसार ग्रन्थके दो पृष्ठः–इस चित्रोंका परिचय समयपर न मिलनेके कारण अभी नहीं प्रकट कर सकते।

(१२) दि. जैन प्राचीन साहित्यः– गत वर्ष सूरतमें गुजराती साहित्य परिषदके प्राचीन साहित्यके प्रदर्शनमें हमने करमसदके शास्त्रभंडारसे लाकर सचित्र सोनेरी यशोधरचरित्र, सचित्र रवीवारकथा, मोती माणेकसे जड़ा हुआ कींमती गत्ता और सूरतके भंडारोंसे सचित्र भक्तामर कथा, सचित्र शांतिनाथचरित्र आदि ग्रन्थ रखे थे उसीका यह ग्रुप है।

(१३) सिद्धक्षेत्र श्रीभातकुलीः– यह अतीशय तीर्थक्षेत्र अमरावती (वराड़) के पास है। दोशी हीराचंद मलुकचंदद्वारा प्राप्त।

(१४) सिद्धक्षेत्र श्रीसोनागिरिः– यह सिद्धक्षेत्र श्री नंग अनंगादि साढ़ेतीन कोड मुनिकी मोक्षभूमि है। इस पहाडपर बहुतसे मंदिरों देखने योग्य हैं। जी. आई. पी. का सोनागीर स्टेशनसे जाया जाता है। हीराचंद मलुकचंद दोशी द्वारा प्राप्त।

(१५) जैनसाहित्यः–सूरतमें साहित्यपरिषदके प्रदर्शनमें रक्खे गये चित्रों– ऐरावत हस्ती (१०८ सूंढवाला), जंबुद्वीप, ढाईद्वीप, शुकनावली, रूषभनाथ और नेमनाथके जीवनकालके चित्रों, तीर्थंकरके सोलह स्वप्न, चंद्रगुप्तके सोलह अशुभ स्वप्न, अकबर बादशाह और हिरविजयसूरीका तख्ता आदि हैं। महुवा और सूरतसे प्राप्त।

(१६) प्राचीन पटः–यह श्री गोमटस्वामी तथा जैनविद्रिके मंदिरोंका पट, सं. १५५०में चित्रित समवसणका रंगीन पट, समेदशिखरजीका पट, लक्षणयुक्त दो घोडेके चित्र, कालभैरव आदि हैं जो भी उक्त प्रदर्शनमें रखा गया था और पं. माणेकलालजी मोहनलालजी (महुवा)से प्राप्त हुआ था।

(१६) तीन लोकका नकशाः–यह बड़ा भारी, प्राचीन हस्तलिखित जीर्णशीर्ण नकशा पं. माणेकलाल मोहनलालजी (महुवा) से प्राप्त कर उसका जीर्णोद्धार करके उक्त प्रदर्शनमें हमने रखा था, जिसमें एक तरफ संसारवृक्षका और दूसरी तरफ षट्लेश्या

स्वरूपका चित्र है और बीचमें ऊपरसे लेकर अनुक्रमसे (१) सिद्धगतिमें जीवका जिस अवस्थासे गमन होता है उसकी अवगाहना, (२) पांच अनुत्तर विमानका दृश्य, (३) जघन्य, मध्यम और उत्कृष्टके भेदसे नव ग्रैवेयकका दृश्य, (४) सोलह स्वर्गका दृश्य, (५) मध्य लोकका दृश्य, (६) सातों नर्कका दृश्य और (७) निगोदका दृश्य है।

(१८) प्रोफेसर सरच्चंद्र घोशाल एम. ए. बी. एल. सरस्वति काव्यतीर्थ, विद्याभूषण भारती-कलकत्ता:-आप बड़े भारी नामी विद्वान हैं और अंग्रेजी भाषामें जैन ग्रन्थों (Sacred Books of the Jains) के संपादनका कार्य आपको ही सुपुर्द है और द्रव्यसंग्रह ग्रन्थका अंग्रेजीमें अनुवाद आपनेही तैयार किया है। आपको जैनधर्मसे बहुत प्रेम है। इसी अंकमें आपका अंग्रेजी लेख जो 'गोमट्टसार' के विषय पर छपा है वह बहुतही महत्वका है जिसका हिंदी अनुवाद आगामी अंकमें प्रकट किया जायगा।

(१९) बाबू जुगमंदरलाल जैनी एम. ए.; बेरिस्टर-एट-लो, जज्ज हाईकोर्ट-इन्दौर:-आपसे तो हमारे पाठक अच्छी तरहसे परिचित हैं। जैनियोंमें सबसे पहले आपही बेरिस्टर और हाईकोर्ट जज्ज हुए हैं। आपने तत्वार्थाधिगमसूत्र, पंचास्तिकाय-समयसार, भद्रबाहुसंहिता आदि तीन चार ग्रन्थोंका अंग्रेजी अनुवाद तैयार किया है जो कुमार देवेंद्रप्रसादजी द्वारा शीघ्रही प्रकट होनेवाला है। इस अंकमें आपका एक अंग्रेजी लेख Light of Truth 'सच्चाईका प्रकाश' इस विषय पर बहुत ही योग्यतापूर्वक जैन शास्त्रोक्त प्रमाणोंके आधारपूर्वक लिखा गया है, जो हरएकको पढनेयोग्य है। यह आपका चित्र हाईकोर्ट जज्जके ड्रेसमेंही प्राप्त करके प्रकट किया है।

(२०) बाबू चम्पतराय जैन बेरिस्टर-एट-लो-हरदोई:-आप भी जैनधर्मके अच्छे जानकार और अनुभवी हैं और आपने ही अभी अंग्रेजी भाषामें एक बड़ा भारी ग्रन्थ कि जिसका नाम Key of Knowledge 'ज्ञानकी चाबी' है और मूल्य दश रुपया है तैयार किया है।

(२१) स्व. श्रीमान् शेठ तीलोकचन्दजी इन्दौर:-इन्दौरनिवासी श्रीमान् दानवीर रायबहादुर शेठ कल्याणमलजीसे सारी जैन समाज अच्छी तरहसे परिचित है। क्योंकि आपने ही अपने पिता शेठ तीलोकचंदजीके नामसे इन्दौरमें दो लक्ष रुपये लगाकर तीलोकचंदजैनहाईस्कूल खोला है। और यही शेठ तीलोकचन्दजीका यह चित्र है।

(२२) श्रीमान् लाला जग्गीमलजी साहब जैन रईस देहली:-आपके पिताका नाम लाला घमंडीलाल है। यह देहलीके बड़े रईसोंमेंसे थे। आपने अपना जीवन जैनधर्मकी उन्नतिके लिये अर्पण कर रक्खा है। आप देहलीमें कपड़ेके बड़े भारी व्यौपारी गिने जाते हैं और आपको जिनवाणीसे बड़ा अनुराग है। कुछ वर्षोंसे ही आप श्री स्याद्वादमहाविद्यालयके सभापति और जैन



श्रीमान् श्रेष्ठिवर्य गुरुमुखराय सुखानंदजी साहब-फतेपुर निवासी,
[बम्बईकी दि. जैन समाजके मुखिया, और दानी नररत्न.]

Jain Vijaya Printing Press Surat

प्रचारिणीजैनपाठशालाके नामसे छोटे रूपमें इसकी स्थापना हुई थी और दो ढाई वर्ष तक एक अध्यापकद्वारा १५-२० विद्यार्थी धार्मिक शिक्षा पाते थे परंतु अभी नाम और स्थान परिवर्तन हुआ है। ६ श्रेणिमें ९० विद्यार्थियोंको ६ अध्यापक पढ़ाते हैं। लाला मोहकमलालजी मंत्री होनेपर भी प्रबन्धका सारा काम करते हैं और आपने ही इसका बीज बोया था।

(३१) यज्ञोपवित् संस्कारका दृश्य:- गत ज्येष्ठ शुक्ल ८को रामपुर (रियासत) में श्रीजैनधर्मसंरक्षणीसभा अमरोहाकी तरफसे कराये गये १६ बालकों व बडोंके यज्ञोपवित् संस्कारका यह दृश्य है। अमरोहाकी यह सभा श्रीमान् मास्टर पं. विहारीलालजीने स्थापित की है जो बहुतही अच्छा कार्य कर रही है। स्थानिक सभाओं तो ऐसेही कार्य करनेवाली होनी चाहिए।

सच्चा साधु!

[१]

सच्चे दिलसे पर कारजमें जीवन स्वयं बिताता है।
जैन जातिको लख प्रसन्न मन जिसका दिल हर्षाता है
प्यारी जैन-जातिकी दुर्गति जिससे सही न जाती है।
श्री समन्त अकलंक देवकी यशकी सुधि आ जाती है

[२]

जैन जातिकी मूरखताले हृदय जिन्होंका दुखता है।
कैसेकर सज्ञान प्राप्त हो यही रात्रि दिन रटता है॥
निज भाई सम सर्व कौमको सत उपदेश सुनाता है।
अरु कुपंथसे उन्हें बचाकर ठीक राह ले जाता है॥

[३]

निज निन्दा सुन क्रोध कुवचन जिह्वापर नहिं लाता है
निज सुधर्महित दुष्ट जनोंकी लाखों गाली खाता है।
जिसके हृदय बीच स्वारथका रंच मात्र भी लेश नहीं
सच्चा साधु उसे हम कहते पक्षपातका लेश नहीं।३।

दुलीचंद सीँघई, हीराबाग-बम्बई.

हवे जागो तमे व्हाला!

(पं. અર્જુનલાલ સેઠીના મહેંદ્રકુમાર નાટક ઉપરથી)

(ગઝલ)

ઉષા ઉગી છે પ્રગતિની, હવે જાગો તમે વ્હાલા!
વધાવો જ્ઞાન-રવિ-જ્યોતિ, હવે જાગો તમે વ્હાલા!
કળા કૌશલ્ય પંખીડા, સુણાવે શબ્દ મનહારી!
શીખો આધ્યાત્મિક વાણી; હવે જાગો તમે વ્હાલા!
અવિદ્યાનું તિમિર આજે, જગતથી જાય છે ચાલી!
જુવે છે ચીન પણ જાગી, હવે જાગો તમે વ્હાલા!
સ્વગૃહને જાળવો પહેલાં, જગાવો સુપ્ત ભારતને!
હતો સહુ દેશનો ગુરૂ એ, હવે જાગો તમે વ્હાલા!
શું હિન્દુ ને શું મુસલમાન, જૈની, બૌદ્ધ, ઇસાઇ!
કરો સહુ સંપ આપસમાં, હવે જાગો તમે વ્હાલા!
ધરાના અન્ન પાણીથી, બન્યું તન આપણું એથી!
કરો કુરબાન સહુ તે પર, હવે જાગો તમે વ્હાલા!
ભરો આલાપ સાહસના, ઉઠાવો મંત્ર લક્ષ્મિના!
રચી પીણા સુવિધાની, હવે જાગો તમે વ્હાલા!
જગાવી કર્મદેવીને પ્રયત્નો શ્રેષ્ઠ સેવીને!
પ્રજા પાશ્ચાત્ય જેવી જે, હવે જાગો તમે વ્હાલા!

• સરૈયા-સૂરત.

able hints for the attainment of self-realisation and Moksha—the goal of evolution.

It consists of the following Chapters:—

I. The Ideal. II. Creation. III. God. IV. The Fall. V. The Redemption. VI. The Kingdom of God. VII. Yoga. VIII. Resurrection. IX. The Holy Trinity. X. The Siddhanta. XI. The Coming of the Messiah. XII. The Law of Karma. XIII. The Reconciliation. XIV. Summary and Conclusion. XV. Glossary of foreign words. XVI. Index, etc.

The Volume is printed on high-class paper, Luxurious Binding in gold letters. Price Rs. 10 or 16s.

JUST READY! JUST READY!

The Library of Jaina Literature, Vol. I

THE PARMATMA PRAKASH

of

SREE YOGINDRA ACHARYA

Translated into English with Valuable Notes by RIKHAB DASS JAIN, B.A., *Vakil, High Court, Meerut.*

WITH AN INTRODUCTION

by CHAMPAT RAI JAIN,

Bar-at-Law, Hardoi.

Printed on high class paper with a Symbolical Title Page. Size, Royal 8vo. Price, Rs. 2 or 3s. 6d

Dravya-Samgraha, of Nemichandra Siddhanta Chakravarti—Translated into English with 13 plates by the Genl. Editor, Mr. S. C. Ghoshal, M.A., B.L., Saraswati, Kavyatirth, Vidyabhushana, Bharati. English Edition, Rs. 4 or 6s. Also translated into Chinese by Mr. Wan Hui, a Buddhist Scholar from China.

Husn-i-Avval (in Urdu).—An original work on Jainism, by Mr. Jineshwar Dass Jain, late Editor, 'Zuban', Delhi. Price Rs. 1-8 or 3s.

Life and Works of Sri Nemichandra Siddhanta Chakravarti and Chamundaraya, in Hindi, with 12 plates by Kumar Devendra Prasad of Arrah.

Thiru-Nuttarandhati.—Translated into English by Mr. C. S. Mallinath, Manangudi. (Price Re. 1.)

Nyaya Karnika.—A Primer on Jaina Logic translated into English with introduction by Mr. Mohan Lal D. Desai, B. A., LL. B., Editor, Jaina Swetambara Conference Herald, Bombay. (Price Re. 1.)

Bhadra Vahu Samhita (Jain law of Inheritance).—Translated into English by J. L. Jaini, M. A., with original Text. Ready.

Outlines of Jainism.—A compendious treatise on Jainism by J. L. Jaini, M.A., Bar-at-Law, and Judge High Court, Indore. Price Rs. 2. Ready.

Jainism is not Atheism, and the Six Dravyas of Jaina Philosophy by Mr. H. Warren, Honorary Secretary, Jain Literature Society, London. Price 2As. or 2d.

Samayak-Path (or Pure Thoughts for Morning and Evening Meditation) by Saint Amitgati Acharya.—Translated into English by Mr. Ajit Prasada,

M. A., LL.B., of Lucknow.

Price, 2 As. or 2d.

OTHER JAINA PUBLICATIONS ON SALE.

1. *An Insight into Jainism,* by Rickhab Dass Jain. Price 4 annas or 4d.

2. *Full Text of the Address on Jainism* by Dr. T. K. Laddu, B.A. (Cantab), Ph. D. English Edition. Price 2 annas or 3d.

3. Do. Sanskrit Edition. Price 2 annas or 3d.

4. *A Peep Behind the Veil of Karma,* by Mr. C. R. Jaina, Barrister-at-Law. Price 2 annas or 3d.

5. Occult Biology.—5 annas or 6d.

6. The Karma Philosophy, by Mr. Gandhi.—Price 6 annas or 6d.

7. The Jaina Philosophy. Price Rs. 1-8 or 2s.

8. The Yoga Philosophy. Price 6 annas or 6d.

PICTORIAL PUBLICATIONS.

1. *Samsar Vriksha* or the Allegory of the struggle of Life and Death, in tri-color. Price, 4 annas or 5d.

2-3. *Sati Smarak Upahar.*—In two parts, tri-color, with gold finish. Reproduced from original painting, over 275 years old.

" Are excellent pictures—the idea illustrated is the triumphal success in the self-imposed ordeal by fire through which " Sita the Chaste " emerged gloriously out. "—*Jaina Gazette.* Price, 4 annas each or 5d.

4. *Bhakti Smarak.*—Printed in beautiful colours. " The blending of hues is exquisite, and " devotion " is well portrayed. "—*Jaina Gazette.* Price, 4 annas or 5d.

5. *The Sacred and Mystical Symbol of the Jainas.*—Specially designed by Kumar Devendra Prasad for the Sacred Books of the Jainas. Price, 2 annas each or 3d.

6. Lord Chandra Gupta's sixteen Dreams in color—Price, As. 4 or 4d.

JAINA MOTTO CARDS.—No. 1—Pure Thoughts.—Price, one anna, No. 2—Ten Observances.—Price, one anna.

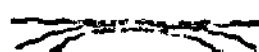
THEOLOGICAL CHARTS—

Chart No. 1.—Vishwa Tattwa—Price, 3 As. or 3d Chart No. II—Sarwa Dharma—Price, 4 As. or 4d.

IN THE PRESS—(1) Purushartha-Sidhyupaya, (2) Atmanushashan, (3) Atmakhyati—Samayasara, (4) Praman Mimansa, (5) Jainism, (6) Chhah-Dhala, (7) Arhan-Niti, (8) Tattwarthadhigama, (9) Munisuvrita Kavya, (10) Nyaya Vinis-chavalankara, (11) Panchastikaya Samayasara, (12) Pravachanasara, (13) Vipak-Sutra, (14) Gem Jaina Dictionary in English with Sanskrit, (15) Adi-Purana

Book your orders from now to avoid disappointment.

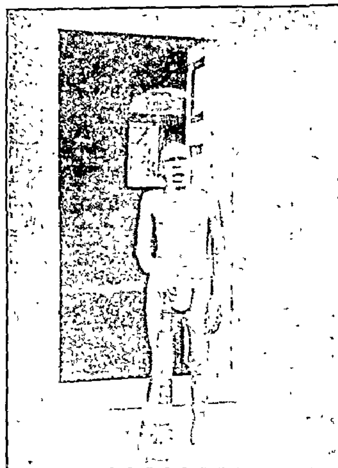
Kumar Devendra Prasad Jaina,
The Central Jain Publishing—
—House-ARRAH (INDIA).



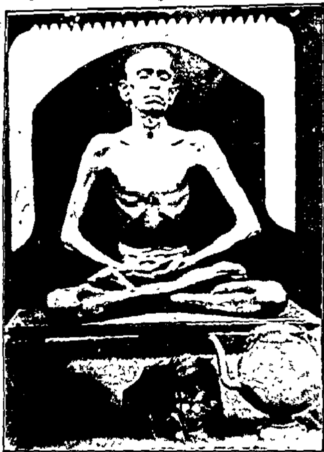


ब्रह्मचारी श्री पार्श्वसागरजी महाराज-कुंथलगिरि
(श्री कुलभूषण दि. जैन विद्यालय व बोर्डिंगके स्थापक और संचालक)

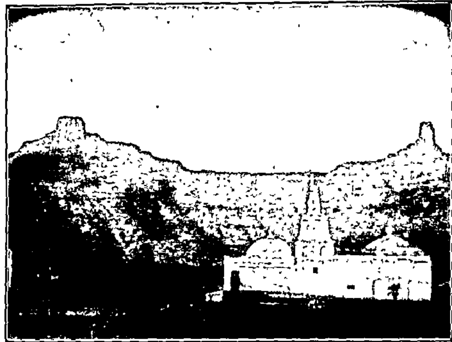




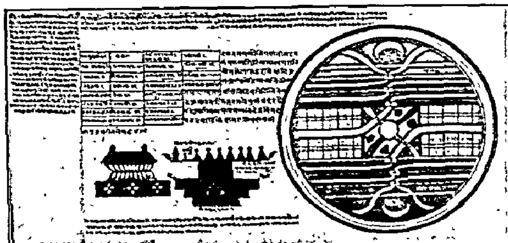
श्री सनत्कुमार ब्रह्मचारी-कुंथलगिरि
(आपकी आयु अभी १०० वर्षके उपर हो चुकी है)



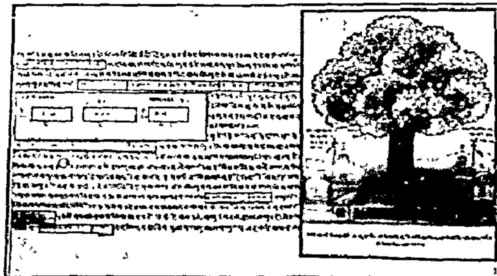
मुनिमहाराज श्रीचंद्रकीर्तिजी गुरमंड्या-जैनबिद्री।



सिद्धक्षेत्र श्री मांगीतुंगीजी।







तीलोकसार ग्रन्थके देखनेयोग्य दो पृष्ठ।
(कुमार देवेन्द्रप्रसाद जैन–आराद्वारा प्राप्त।)

OLD GUJARATI & OLD WESTERN RAJASTHANI.

[By—*Dr. L. P. Tessitori (Italy)—Jodhpur.*)

It is obvious that to obtain a correct idea of the nature and origin of a language, whichever language it may be, and be able to define it properly and fix the right place it occupies amongst the other languages related to it, a mere knowledge, however extensive of the language in question is not sufficient. It is only through comparing that language with the other languages, those from which it has sprung, and those with which it shares the same origin, that its nature and characters can be correctly understood and estimated. This is in accordance with the modern tendency, which requires the philologist, and even the compiler of an ordinary grammar, to be more or less a linguist, at least within the compass of the languages, connected with the one he is dealing with.

Applying the above remark to the particular case of what has been hitherto called Old Gujarati, it may be said that the key to the right understanding of this language from the linguistical point of view, cannot be had from a mere knowledge of the same and of the Modern Gujarati, but only from a comparative study of all the characteristic elements in it, and in the languages connected with it, chiefly Apabhramsa and Marwari. It is from such a comparative study of the so-called Old Gujarati language that in my "Notes" published in the "Indian Antiquary" I have come to conclusions which are somewhat different from those of Indian Scholars who have studied that language in itself, without paying much consideration to the languages cognate to it. The most apparent of these differences is my substitution of the term "Old Western Rajasthani" for "Old Gujarati", a point on which some Indian scholars have not been agreeing with my views. Though in my notes just mentioned, I have shown the reasons for the introduction of the new term "Old Western Rajasthani", yet it will not be improfitable hereto return to the same subject, which is one of no little importance in the history of the languages, literature and ethnology of Western India.

The starting point for a methodical study of the languages in question, is given by the Saurasena Apabhramsa, a language of which we have got few but valuable documents in Hemchandra's Prakratvyakarana, IV, 329–446. It was spoken over the greatest part of Western India and its spreading was largely effected, it seems, through the emigration of the Gurjaras and other tribes into the ancient Supadlaksa and hence into Rajputana and Gujarat. When this language began to prevail we cannot say with certainty, but we can approximately fix the nearest limits of its

existence between the 10th and 12th century A. D. The Apabhramsa quotations in Hemchandra's Grammar evidently belong to a literature at *least two three centuries anterior to* his time (12th century A. D), and the rules given by him may likewise be explained as referring to a literary form of the language, older than that actually spoken in Hemchandra's days. The Apabhramsa of the Prakrta-Pingala exhibits a still later stage of developement, and it represents for us the latest document we possess of the Apabhramsa.

As far as the Apabhramsa goes, from its earliest documents to the stanzas in the Prakrta-Pingala, we are still dealing with the Prakrta stage of the Indo-Aryan Languages. But between the 13th-14th century A. D., Apabhramsa appears to have undergone an important developement, in consequence of which it can no longer be classed as a Prakrit language, but only as a member of the Neo-Prakrit *or Neo-Indian Vernaculars. The chief* characteristic of this developement which is quite in contrast with the principles governing Prakrit Grammar, is a phonetical change i. e. the simplification of double consonants and compulsory lengthening of the --- dofferent *Prakrit* vernaculars, marked by the above mentioned phonetical peculiarity. In Wertern India the Saurasena Apabhramsa was succeeded by that form of language which I have chosen to call Old Western Rajasthani, and others old Gujarati. This was in use *over the whole of* Gujarat and Western Rajputana and flourished till about the end of the 16th century A. D., *when it finally* developed into two distinct vernaculars, Modern Gujarati and Modern Marwari.

The reason for which I have preferred the term Old Western Rajasthani to the customary term Old Gujarati, is clear from the above. If this language was spoken over an area which greatly outreached the limits of Gujarat and if it is the stock from which both Gujarati and Marwari originated, we cannot apply to it a term like Old Gujarati which is one-sided and therefore incorrect. It would be just as wrong as calling *the language Old Marwari. Gujarat* is geographically a part of Rajputana and hence the term Old Western Rajasthani may seem a rather appropriate one.

That modern Marwari bears to Old Western Rajasthani the same relation as Modern Gujarati, has been ignored and denied, and the reason is that all the inquirers into the grammar and literature of the Old Western Rajasthani, at least as far as I know, were Gujarati scholars and as such had no particular concern

with the Marwari language. On the other hand the average Marwari scholars, pandits and bards, have been completely ignoring the connection of their mother-tongue with the Old Western Rajasthani, and whenever they have come across some specimens of the latter language, they have been explaining it as Gujarati or as a Jargon of the Jain Jatis, The latter denomination, though incorrect, contains a great truth, and it is that the Jains deserve particularly the credit of having preserved with the most singular faithfulness this form of language which others have been contributing to obliterate by an unwise practice of modernizing old texts and altering all that appeared to be unusual and antiquated. *The accuracy and critical sense of Jain copyists is proverbial*, and I need not insist on it. Quite different are the methods followed by other copyists, especially the bards, who generally seem to possess no idea of what a critical text is and how it should be preserved unaltered when correct, or corrected when corrupted. Each bard considering himself a professional poet and consequently an authority in the interpreting of poetical texts will never resist the temptation of making some alterations or, as he will call them, improvements in any old text he may undertake to copy. This explains why most of the old bardic poems have come down to us in a form which is almost indentical with the vernacular spoken to-day and except for the employment of some unusual and poetical words-hardly retain any feature of the old language in which they were originally composed. It is no wonder therefore, that the bards now-a-days ignore and deny the connection of Dingala—the poetical language of the bards—with the old Western Rajasthani, and seeing the latter preserved only in Jain M S S., consider it as a language peculiar of the Jain writers.

It is a fact that in the Old Western Rajasthani, even as early as the 15th century A. D., we can distinguish two different tendancies or currents of speech, which seem to prelude to the branching out of the two distinct vernaculars of *Gujarati* and *Marwari*, which definitely took place about the 17th century A. D. But the differences between these two currents are so slight that they appear only as local variations of a unique language, and by no means entitle us to class the two currents as two separate languages or vernacvlars. In my "Notes" alluded to above, I have grouped the chief characteristics which in the old Western Rajasthani distinguish the Marwari current from the Gujarati, as follows:—

(1) The common substitution of इ for अ, as in : किमाड़ for कमाड़, खिण for खण, पिणि for पणि, पण,

(2) The employment of the genitive (oblique case) for the instrumental and vice versa, as in: सगलैं ही दुक्खे (Inst. plur).

(3) The use of the prepositions; रहइँ > न्हइँ > रइँ, रउ; तँाई;

The pronomial forms: डंदे for डुम्हे, अम्हाँ, तुम्हाँ for अम्ह, तुम्ह; तीआँ, जीआँ for तेह, तीह, जेह, जीह;

(5) The substitution of the compound pronouns जि–को, ति–को, for जे, ते;

(6) The forms दो, तीन of the cardinals 2, 3 instead of बे, त्रिणि;

(7) The substitution of आप, आपे for Gujarati आपण, आपणे, when used to give the meaning of the first personal pronoun plural, including the person addressed;

(8) The substitution of the pronomial adverb कदी for कही;

(9) The ending °आँ of the first person plural of the present indicative instead of °अउँ;

(10) The ending °इसी of the second and third person singular of the future indicative, instead of °इसइ, °इसिइ;

(11) The substitution of the feminine for the neuter with past participles of verbs of saying or asking, used without any object expressed, as in पूछी "(He) asked."

To these we may add the preference for the weak form of the conjunctive participle, which becomes a more and more marked feature of Marwari, the more we get down with the times. Now, it is obvious that the above differences do not afford a sufficient ground for claiming for the two currents of speech a separate place as different languages. Otherwise, we might distinguish in the Old Western Rajasthani two different vernaculars, namely Old Gujarati and Old Marwari.

I have printed out the elimination of the hiatus in the vocalic groups अइ and अउ as the chief characteristic of the passing of the old Western Rajasthani into the modern vernaculars of Gujarati, and Marwari. When अइ and अउ are contracted into ऐ and औ, the Old Western Rajasthani period is practically finished, and we find ourselves in the modern period of the Neo-Indian vernaculars. I have already said that the definite change took place about the end of the 16th century A. D. Of course, the process was effected gradually and slowly, but it seems that it was about that time अै and औ came to be generally substituted for अइ and अउ in the writing of the two vernaculars, which thus branched out from the Old Western Rajastani stock. Gujarati apparently kept more faithful to the old Western Rajasthani traditions, whilst Marwari differentiated for some peculiarities which, though ultimately unimportant, yet are responsible for all the difference one nowadays notices between Gujarati and Marwari. One of these peculiarities is the substitution of the genetive preposition रौ for नौ (< नउ) that is the ruling force in the Gujarati and was also prevailing in old Western Rajasthani. Evidence is available that the रौ preposi-

tion has come into general use only at a much later period than नौ, and in some parts of Rajputana has superseded the latter only in comparatively recent times. To quote only one instance, नौ appears to be still the ruling preposition in an inscription on a bavari at Sejaota, three miles from Rutlam, in Malwa, dated in the year Samvat 1727. In the same inscription, we also find the auxiliary—substantive verbal form छै, instead of है, and old M S S. show that even in Marwar, छै remained in use at least as far as the end of the 17th century A. D.

I know that most if not all the Gujarati scholars will still feel some hesitation in accepting my new denomination of the language they have been used to call old Gujarati and regard as exclusive of their own country. But my object was not one of having my new term adopted and sanctioned. It was simply of throwing some light on what is the real state of things, and though people may continue using the term Old Gujarati, I will still consider to have attained my object, if they only recognize that they are using an improper term and realize the common origin of the Gujarati and Marwari language.

Note:—This article was read at the Fifth session of "The Gujarati Sahitya Parishad" held at Surat in the month of May this year.

पता लिखवाकर तीनों ग्रंथमालाओंके जबर ग्रंथ तैयार हों सूचना पातेही वी. पी, से मगालिया करें। ऐसे पक्के ग्राहकोंको चुन्नीलालजैनग्रंथ-मालाके सब ग्रंथ आधी न्योछावरमें और अन्य दो ग्रंथमालावोंके सब ग्रंथ पौणी कीमतमें भेजे जांयगे। परंतु इस भावसे प्रत्येक ग्राहकको एक एक प्रतिही भेजी जायगी और ऐसे ग्राहक भी हम ४०० से अधिक नहिं बना सकेंगे क्योंकि यह संस्था धर्मप्रचार करनेके लियेही स्थापित हुई है। रुपया कमानेको नहीं। ग्रंथोंकी कुल १००० प्रति छपैंगी उनमेंसे १५० प्रति तो पचास २ सौसौ रुपये देकर स्थायी मेंबर बननेवालोंको विना मूल्य भेजदी जांयगी। ४०० प्रति पक्के ग्राहकोंको आधी वा पौणी कीमतमें भेजनेसे लागतकी रकम उठ आवैगी जिससे दूसरा ग्रंथ छपाना शुरु करदिया जायगा। शेष नफेमें बची हुई ४५० प्रतियां रजिष्टरमें दर्ज हुये अजैनी विद्वान् विद्यार्थी व पब्लिक लायब्रेरियों (पुस्तकालयोंमें) पोष्ट मात्र के वी. पी. से रवाना कर दी जांयगी। जो महाशय १) रु. भेजकर पक्के ग्राहक नहिं बनेंगे वे अर्थप्रकाशिका वगैरह दोतीन ग्रंथोंके सिवाय अन्य किसीकी भी कोई प्रति दूनाचोगुना दाम देनेपर भी नहिं पा सकेंगे इसीलिये हम कहते हैं कि-इस संस्थाके द्वारा प्रकाशित हुये उत्तमोत्तम ग्रंथोंकी स्वाध्याय वा संग्रह करना हो तो इस सूचनाके बांचतेही १) रु. भेजकर पक्के ग्राहक बन जाइये। ४०० ग्राहक होने बाद फिर यह सुयोग हाथसे निकल जायगा।

इस वर्षमें छपने प्रारंभ होनेवाले ग्रंथोंके नाम—

अर्थप्रकाशिका—भाषा वचनिका सदासुखजीकृत आदिपुराणजी सरीखे साइज और बडे टाइपमें, तथा त्रिभाषा कविराज स्वर्गीय पंडितवर्य महाचंदजीकृत **जिनेंद्र-मतसार**—चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग प्राकृत, संस्कृत, भाषा पद्यमय व वचनिका सहित, **समयसार कलसे**—संस्कृत टीका और भाषा टीका सहित। **अमितगतिश्रावकाचार**—भाषा टीका सहित। **तत्त्वार्थसार** (अमितगतिकृत) भाषा टीका सहित, **सुभाषितरत्नसंदोह**—(अमितगतिकृत) भाषा टीका सहित, **क्षत्रचूडामणि काव्य**—भाषानुवाद सहित, **स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा** नवीन भाषानुवाद सहित, **पुरुषार्थसिद्ध्युपाय**—हिंदी बंगानुवाद सहित, **द्रव्यसंग्रह**—हिंदी बंगानुवाद सहित, **मोक्षशास्त्र**—(तत्त्वार्थसूत्र) हिंदी बंगानुवाद सहित, **गोमट्टसारजी त्रिलोकसारजी** संस्कृत टीका व टोडरमलजीकृत वचनिका सहित, **सर्वार्थसिद्धि**—नयी वचनिका सहित, **संस्कृतप्रवेशिनी**—भाषानुवाद सहित, **धर्मपरीक्षा**—केवल भाषा वचनिका। पद्मपुराणजी व हरिवंशपुराणजी मूल।

रुपया और पत्र भेजनेका पता—

श्रीलाल जैन काव्यतीर्थ—
मंत्री, भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनीसंस्था
९ नं. विश्वकोश लेन बागबाजार—कलकत्ता.



नवा समाचार.

શ્રાવિકાશ્રમનો મેળાવડો:—મુંબાઇના શ્રાવિકાશ્રમનો વાર્ષિક મેલાવડો શેઠ હીરાચંદ ગુમાનજી જૈન બોર્ડિંગના કમ્પાઉંડમાં કાર્તિક વદ ૧ની બપોરે શેઠ નવલચંદ હીરાચંદ ઝવેરીનાં સૌ. પત્નિ શ્રીમતી પરસનબાઇના પ્રમુખપણા નીચે સારા ઠાઠથી થયો હતો જે પ્રસંગે દિગંબરી તથા અન્ય કોમની બ્હેનો મળી ૨૦૦ ની સંખ્યા હાજર હતી. પ્રથમ બાળાઓનું મંગલાચરણ થવા પછી શ્રી. યશોદાબાઇએ ૧૯૧૪–૧૫નો રિપોર્ટ વાંચી સંભળાવ્યો હતો. બાદ આશ્રમની શ્રાવિકાઓના સંસ્કૃત, હિંદી, ગુજરાતી અને અંગ્રેજી ભાષામાં સંવાદો થયા હતા. જેમાં શ્રીમતીઓ ગરગટે, કારકા, આપ્ટે, પ્રભાવતીબ્હેન, શ્રીમતીબ્હેન, કમળાબ્હેન તથા જ્ઞાનમતીબાઇએ સારા પાઠ ભજવી સભામાં અનહદ ખુશાલી ઉત્પન્ન કરી હતી. બાદ ગંગાસ્વરૂપ બાજીબ્હેને સ્ત્રીઓનું કર્તવ્ય અને આવા આશ્રમની જરૂરીઆતો માટે લંબાણુ અને અસરકારક ભાષણ કર્યું હતું. જે પછી પ્રમુખે જણાવ્યું કે આપણી દિગંબર જૈન કોમમાં અત્રે આ એકજ સંસ્થા છે તેનો આ મેલાવડો અને શ્રાવિકાઓના સંવાદો જોઇ મને ઘણો આનંદ થયો છે વગેરે જણાવી આવતા વર્ષે ઇનામ વેંચવાને રૂ૦ ૫૦) ની રકમ આપવા ઇચ્છા દર્શાવવા પછી આશ્રમની શ્રાવિકાઓને પુસ્તકો વગેરેના ઇનામો વેંચાયા હતા અને જૈનમહિલારત્ન શ્રીમતી મગનબાઇએ સર્વેનો આભાર માનવા પછી મેળાવડો વિસર્જન થયો હતો.

બોર્ડિંગનો મેળાવડો:—શેઠ હી. ગુ. જૈન બોર્ડિંગના ધાર્મિક પરીક્ષામાં પાસ થયેલા વિદ્યાર્થીઓને ઇનામ આપવાનો મેળાવડો પણ કાર્તિક વદ ૧ની સાંજે શેઠ સર વસનજી ત્રીકમજી નાઇટના પ્રમુખપણા નીચે થયો હતો.

વૃદ્ધવિવાહ માટે મનાઈ હુકમ:—માઢા (સોલાપુર)ના દશા હુમડ જ્ઞાતિ શા. મોતીચંદ કસ્તુરચંદે પોતાની ૧૧ વર્ષની છોકરી ફુલબાઇનો વિવાહ આશરે રૂ૦ ૭૦૦૦) હજાર લેવાના કરીને લીંમગાવના દોજી વાલચંદ નામના ૬૦ વર્ષના બુઢ્ઢાકાકા સાથે કરવાનું નક્કી કરેલું અને આવતા માસમાં લગ્ન પણ કરી નાંખવાનો હતો જેની ખબર છોકરીના મામા માણેકચંદ જયરામને પડતા તેણે સોલાપુરની કોર્ટમાં અરજ કરતાં તરતજ મોતીચંદ ઉપર નોટીસ નીકળી છે અને લગ્ન ન કરી નાંખે તે માટે સરકાર તરફથી મનાઇ હુકમ નીકળ્યો છે. કોર્ટ તો અજ્ઞાન બાળાને રક્ષણ આપશેજ પણ એ જ્ઞાતિએ આ માટે સખ્ત પગલાં લઈ એવા બનાવો ન બને તે માટે ફરજ્યાત ઠરાવ કરવાની જરૂર છે.

रथोत्सव और केशलोचः—सुनारामें भारे ठाठथी रथयात्रा महोत्सव कार्तक सुद १५ थी वद ११ सुधी थयो हतो, जेमां वद ११ नी सवारे मुनि श्री चंद्रसागरजी महाराजे संसारनी असारता प्रकट करी सर्वे समक्ष केशलोच कर्यो हतो.

बलिदान बंधः—उपदशेक मौजीलालजीके उत्तम प्रयास और उपदेशसे घटावदा, अजलेपुर, बरोदिया, रामगढ, इन्दार, अटराई, ढाटी, गनेशखेडा, माढ़ा, खेरे, बिजरा, चामोर, आफाझरी, गुरकुदवाओ, परोढा, रत्नोद आउन, बीनागंज और नीमखेडी इन ग्रामोंमें देवीदशेरा विजयादशेरा और अपाडी परमेंढा, बकरा, और मरघाका होता हुआ पशुवध बिलकुल बंद हुआ है और लेखित ठहराव कराया है।

कि जो कोई ऐसा बलिदान चढावेंगे तो उनसे रु. ५०) जुरमाना श्रीगोपालजीके मंदिरमें देना होगा। उपदेशका फल अपूर्वही है। विना परिश्रम किये कुछ भी नहीं होता इस कार्यके लिये उपदेशक मौजीलालजी अतीव धन्यवादके पात्र हैं।

जैनहितैषीका कायापलट।

नये वर्षमें नया आकार, नयारूप, नईवात।

अभीतक जैनहितैषी छोटे साइजमें निकलता था; परन्तु यह वात वहुतसे लोगोंके खटकती थी, और भी उसमें कई त्रुटियां थी। इसलिये अब नये वर्षसे वह नये ही रूपमें और नये ही आकारमें निकलेगा। उसका साईज वर्तमान साइजसे दूना करदिया जायगा और पृष्ठ संख्या डेढ़ गुनीसे भी अधिक कर दी जायगी। इस वातकी भी कोशिश हो रही है कि प्रत्येक अंकमें कुछ चित्र भी रहें। चित्र यदि रहेंगे तो वे वहुत ही महत्त्वके होंगे। कवरपेज वहुत ही सुन्दर और मनोरम होगा।

इसतरह ऊपरी वातोंमें उन्नति होनेके साथ भीतरी वातोंमें भी उसकी उन्नति होगी। प्रत्येक अंकमें सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक और नैतिक लेखोंके सिवाय शिक्षाप्रद उपन्यास, गल्पें, मनोविनोद और महापुरुषोंके जीवनचरित्र भी रहा करेंगे। ऐसा कोई अंक न होगा जिसमें कोई जीवनचरित्र और उपन्यास न हों। स्त्रीयोपयोगी लेखोंके लिखवानेका भी प्रवन्ध किया गया है। कवितायें भी अच्छी अच्छी निकलेंगी। गरज यह कि हमने इसे जैन समाजका सर्वोत्कृष्ट पत्र वनानेका विचार किया है। अभितक जैन समाजमें जिस वातकी कमी थी वह इस पत्रसे पूरी होगी।

आशा है कि जैन समाजसे हमें इस कार्यमें पूरी सहायता मिलेगी और हमारा यथेष्ट उत्साह वढ़ाया जायगा। प्रत्येक शिक्षितको इस पत्रका ग्राहक वनना चाहिए और अपने मित्रोंको वनाना चाहिए।

उपहारमें इस वर्ष एक वहुत ही अच्छा, शिक्षाप्रद, हृदयद्रावक उपन्यास दिया जायगा जिसका मूल्य एक रुपया है। उपहारका मूल्य कुछ नहीं रहेगा। पत्रका वार्षिक मूल्य तीन रुपया रक्खा गया है—जो खर्चके लिहाजसे वहुतही कम है। पहला अंक तीन रुपये एक आनेके वी. पी. से भेजा जायगा।

पहला अंक जनवरीमें निकलेगा। जनवरीसे ही नया वर्ष शुरू होगा।

जो महाशय ग्राहक होना चाहें शीघ्र सूचना दें। क्योंकि कापियां केवल उतनाही छपाई जावेंगी जितनेकी आर्डर आजावेंगे। ग्राहक वर्षके प्रारंभसे ही वनाये जाते हैं वीचमें नहीं।

मैनेजर—जैनग्रंथरत्नाकरकार्यालय,
गिरगांव—वम्बई।

The Substance of Religion.

by *Manilal H. Udani* M. A. LL. B., F. L. L. C.
Vakil, High Court, Bombay.

How many wars, how many persecutions, how many disturbances, how many quarrels, and what an amount of unrest is created in the world in the holy name of Religion? How much time is lost in disputes in the name of religion and what an amount of money and energy is wasted by different religionists for an artificial attempt to maintain its superiority over others? Oh! innocent Humanity and holy name of religion! what a phrenzy has overtaken you; what evil surrounds you, so as to keep you in darkness! what intoxication has worked on your high imagination, so as to separate the Self from right thinking? How is that you are bewildered and benighted and search for water when a large well is already before you and why do you continue your fights only to establish upon your fellow-brothers the wrong belief that the same water will quench the thirst only if drunk from your particular cup. Oh wise individuals, sound thinkers and learned philosophers, you laugh at this phrenzy of men, you wonder at this horrible ignorance of your brothers, you feel for them, you want to remove from them the influence of intoxication of wrong thinking and you try to instill into them your spells of right maxims *to remove the evil influence*. But before your books and chants may succeed in showing them the light, again they are lost in their habitual drug of intoxication. You want to show then practically the taste of water from different cups and to convince them that the taste of water is the *same whether drunk from a gold*, or silver, or copper, or brass cup, or an earthen pot or even in the *fold* of hands, or in a cup of green leaves. But the leaders of different religions, to whose interests it is that flocks of people may belong to their fold, try to keep them all under a belief that water would become poison if tasted from any other cup but the cup ordained by them for their order and even from their cup also hardly allows any one to drink pure water so as to fully quench his thirst and with *many*, keep the cup at a distance and hypnotise them to the belief without

giving them any practical insight into the truth.

So to speak in plain terms, truth is one and one only and if any society wants to keep you under a belief that there are more truths than one and *wants to insist upon you that* his truth is the only truth and others are falsities without giving you practically the taste of it, you may conclude, that what he says is not true and meant to lead you astray from the reality.

Religion is the chord that binds man to man, soul to soul, and the *humanity with the infinite*: in its original state it has no name, no form, no dogma, no distinction. It is a strong chord of love, binding men & creation to God in the name of His Holy Love and which is the only way to realize God and Infinity. The Chord has no concern with colour, whether a man be white or black, or *brown or yellow, the chord is not* concerned with the clothing, the chord has no regard for the distinction of class or caste or sect; it has a general function to do: it binds all equally without any regard to caste, colour, creed or sect, with holy love : it unites all in His holy name & being bound by one chord of harmony draws you nearer to Almighty, to deserve His Love and blessings.

All Differences in religions are our own creations & have no origion in *truth or nature*. If truth would be received universally as truth, there would be no fighting for words & theories & all would accept the same chord of love to each other by which they are mutually linked in the name of universal religion and there would be no disunion & discord in the world. There can be no greater calamity upon humanity but the *fact that* religion which would in ordinary course grant peace & harmony to people, which would be a ladder to lead to heaven & the holy abode, which would be the resort of all men, so as to cut off all sorts of distinctions & which in a word would give happiness to soul wherever it may find it, has now *lost its* true denomination & is preached to the aspirants, not in its natural shape, but mingled with theories, & forms & totally transformed, so as to escape recognition of truth.

Religion is the chord that binds you with truth : religion is the light that dispels the darkness : and it is the ladder that leads you to heaven : *it is the way to happiness and bliss* : in short if religion promulgates truth, *it must lead you to divinity* : Hence in its true state there can be no deception in religion if preached in its true form. It becomes a danger and myth when mingled with untruth. If religion may have been preached by different persons and at different times there can be no alteration in truth. Truth is one & the same at whatever time & from whatever person it may have been promulgated and appears pure & clear when placed on the touchstone of conscience.

The true *function of religion* is to

lead life to eternal happiness & to free it from the trammels of life & death: there is no religion but one, which consists of truth unalloyed, pure & simple truth & which practically teaches the way to cut off राग (attraction) & द्वेष (hatred) & thus distinguishes the spirit from matter & leads it to eternity. Religion or we may call it " Universal Religion " is the genus & the different names of religion under which it exists in the present state of society, are the species; If the class of species has all the qualifications of the genus, it is as good as the genus, but if it constitutes only a part of it or a mixture of truth & untruth, the species does more harm than good. Besides the spirit of religions which is universally followed by all species is never harmful; on the other hand the moral of all the religions is the same & forms its main part

If religion would be divested of theories, forms and dogmas, all the quarrels and disputes in the holy name of religion would cease and there would consequently prevail peace and harmony everywhere which is the goal of every individual.

In the present state of society theology is confounded with religion; and forms and formalities have taken the place of religious knowledge and devotion. So long as people will follow the old practice of keeping up forms and distinctions, so long as they will remain under the sway of illiterate spiritual guides who have an interest in taking their followers to a wrong path and so long as they will not learn to think independently of their own religious belief by a study of comparative philosophy, they will remain the same as they are to-day.

What we want now is a substance and not a shadow: whereas we are habitually practiced to consider the shadow as a substance. With the advent of civilization and the reformed ways of deception, that people have found out for their selfish interests in the name of religion, the noble spirit of religion is fading away everyday, materialism is taking a firm grip over us and unless we wake up and realize the spiritual self and the function of religion to convey to us the knowledge of the self, its connection with the great self, and the brotherhood of men in the name of the same self, running through everyone of them, we are in the great danger of losing ourselves to the true spirit of religion.

Religion is no seeker of caste and God is no respecter of persons. Wherever the soul realizes itself, it becomes able to see through the veil of Maya (illusion) and feels divine love everywhere: mind becomes in tune with the Infinite and then pleasure and pain are no pleasures or pains for him: He receives success as well as misfortunes with equal mind and feels divine bliss within. Any person can experience this stage by a practical insight into the true spirit of religion.

Religion is the sap of the tree, of which all the functions of life are

mere twigs, branches, or leaves, and so long as we do not get this harmony of mind and self-control, life appears to be a trouble and a burden. Every religion is a way to lead life to its final goal of liberation in the cycle of evolution and one that is perfect and can take the follower in a short space of time, is mere admirable and beneficial. Religion is the only solace of life, a comfort to the distressed, relief to the poor, and the only support of all.

By making disputes in the name of religion we are degrading it and working our own ruin; true functions are neglected and time is being wasted away in useless discussions, and *adoptations* of some form or ritual. Thus in the fight for the selection of vestment, we forget to supply food to the body and the body perishes out of neglect.

Call God and religion by whatever name you like, but if you give them their proper attributes and virtues, you are in the right path of evolution, if not you are lead astray, and need *a spiritual doctor*. To whatever caste, creed, or colour you may take your denomination, by whatever name you may call yourself, if you make the substance of religion your own and feel the chord with which you are connected with humanity and consequently universal love and the love of God, you are on the right path. Remember that the love of God is the only chord which connects us so closely with *Him*, as well as with His creation. When we touch that common chord the waves of its vibrations produce equal feelings in all hearts connected with the same chord. What a harmony of sound can we experience when we play on this common chord by realizing unity in this world consisting of the diversity of forms and by practically feeling universal love towards all the creatures in the world as images of the great Father.

Worship of various deities, imaginations about different gods and godesses, superstitions which have crept into humanity for years past, hypocrisy of religious preceptors, a habitual *fondness of forms* pompous rituals and devotion, a disregard for leaving the beaten path, huge ignorance about truth, have kept us far away from understanding the true spirit of religion and the more we go nearer to the theories, the more we go further from the practical side of religion and thus we are pursuing the shadow, and neglecting the substance.

After giving this general defination of the substance of religion we will inquire how far Jainism has succeeded in fulfilling them. For an impartial decision on the question, we may narrate the attributes of religion: Morality which is regarded as the handmaid of religion, forms the primary part of every faith: wherever morality is not fully adopted as the basis of life the faith is not only imperfect, but misleading. Thus Harmlessness

(अहिंसा), truth, non-stealing and celibacy (ब्रह्मचर्य) are the four essential seeds of every faith. The soul is connected with the body for time immemorial and having assimilated with the body has forgotten its true form and thus the attempts to separate the mind from the attractions of the world by self-control and self-denial, lead life to a higher stage till finally the soul by right knowledge, right faith and right conduct gets a peep into divine knowledge and then becomes free from the nets of Karmas; the soul prepares for the acquisition of this knowledge by stern austerities and hard devotions and at last when after a sound study of philosophy, and the beautiful arrangement of nature, it receives intuition and divine wisdom, the soul loses all sorts of attraction or repulsion and becomes steady and positive and feels harmony everywhere. Then the soul commences to preach to the younger brothers in humanity the truth which it has realized and passes the life only for the welfare of the people and for their spiritual uplift. Such a life is most noble and wherever truth is preached in such a way it is the surest and the shortest way to heaven. Compare these attributes with those of Jainism, and you will find perfection everywhere. Most noble faith of Jainism has come unto us as a legacy from Lord Mahavir and we are neglecting the substance and fighting for shadow.

In the name of this most holy and liberal religion, Oh blessed leaders of the Jain community, wake up before it is too late. Remove the spell of ignorance which has been cast over us by interested workers. Open your impartial mind to the truths and return to the truth by adopting practically the utility of unity and the strength of brotherhood. You are not alone. The whole world is yourself; feel for others co-operate with others; love them as your own self, and everything will be at your hands. Don't waste any more time in useless internal disputes for forms or rituals, and now decide to use your energy to useful purpose. All divisions and separations weaken communal strength, weaken your body. You have a great many things to do in this span of life and you have to answer several responsibilities. Improve the body of the Jain community: for you cannot expect to have a sound mind without a sound body and then the sound mind will be able to drink the spiritual nectar of the faith of Jainism. Improve the social, industrial, commercial state of the community; spread education amongst your brothers and give them the means of support in the name of the holy faith. Just consider how much you have lost by this habit of continual divisions and sub-divisions, castes and sub-castes, creeds and sub-creeds, sects and sub-sects; how much you have gone down in strength and numbers by enclosing yourself in circles and by this narrowness of conception. Widen your wings and realize the beauty of unity even in diversity: that is the only way to lessen the calamities of our bretheren and the substance and pith of a true religion. 4-9-15

ॐ तत् सत्

THE CULTIVATION OF PEACE OF MIND BY THE SUPPRESSION OF GREED.

(*By-Alexandar Gorden, Secretary, Mahavir Brotherhood, Cheshire, England.*)

The controlling of anxious and turbulent thoughts is the first step to take in order to overcome that state of mind which intensifies all forms of greed. This process of clarifying *the mind of harmful thoughts is* absolutely essential if any progress is to be made on the Path to Peace of mind.

The root of all selfishness is greed, and those who choose to eliminate selfish desires from the mind will shatter all manifestations of greed, and their eyes will be opened to the pearls of TRUTH to be found embodied within the three bright jewels of Jainism, namely:-

RIGHT FAITH, RIGHT KNOWLEDGE, AND RIGHT ACTION

To arrive at a perfect understanding of the above THREE ESSENTIALS, is the attainment of the HIGHER WISDOM. This can only be done by a process of conscious intuition called Meditation-a mental procedure requiring incessant perseverance and unlimited patience. Those who are prejudiced in thought - slaves to certain philosophical, atheistical, or theological ideas,-cannot cultivate that calmness of mind necessary to every seeker of the Higher wisdom, the attainment of which leads a full comprehension of Jainism. But such a realization can only be achieved by those who have conquered their lower nature (passion, greed, hatred, and the like); consequently those souls who aspire to evolve to higher spiritual planes of existence must seek to know that pu*rity of thought is a necessity before* they will be able to obtain power to control the mind. It is utterly impossible to approach the Hall of Wisdom without having possession of the mystic key of Purity, and it is beyond all doubt that admission to the Holy of Holies-the Inner Sanctuary of one's own heart-cannot be gained without its counterpart, as Purity is the instrument wherewith an introduction to the Kingdom of Peace is effected.

The only eternal reality is Purity because it is Truth, and those who are capable of fully comprehending Truth are always self-possessed. The real thing that counts is the wealth of spiritual thought one possesses, and this implies the shutting out of the mind all other thoughts antagonistic to Truth.

Earnest seekers for Truth gradually reach a calm state of mind which reveals the power of self-conquest latent within oneself. Excitement, fear, anxiety, and hurry are not manifested by those whose minds have become purified. Emotions and passions are finally

controlled when this state of mind has been reached, and thus it becomes clear to any souls who have overcome 'the enemy within the gate' that spiritual strength is our greatest asset.

The power to overcome 'the enemy' can only be obtained by daily effort to eliminate all ideas of greed from the mind, because persons who are mentally disturbed do not know what it is to enjoy a purified intellect on account of their thoughts having been centred upon personal ends. Hence, working along the lines suggested is the only method whereby a grasping disposition can be obliterated and the way become paved for the further steps that have to be taken in order to gain a greater perception of TRUTH.

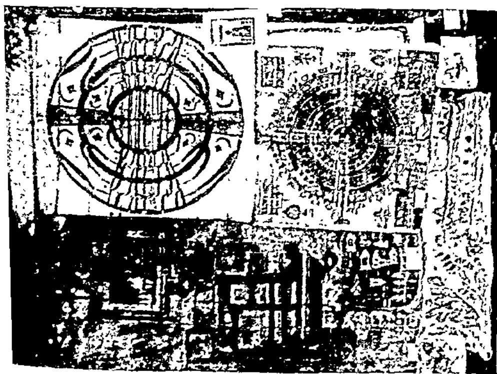
Many sacrifices have to be made by the true disciple. Sense-gratification in relation to self-indulgence, hatred lust, covetousness, vanity, pride, and greed, must be entirely renounced. The slightest indulgence in any of these things hinders the soul's progress and creates fresh subtle forces which retard spiritual growth and inevitably set in motion wrong modes of action most difficult to overcome as time goes on. How can the mind become purified when it is enveloped by self-created sorrows and sufferings the results of hatred, lust, greed, and self-indulgence? No calmness of mind can be experienced when one's thoughts are concentrated upon selfish ends, therefore it behoves all students of the 'Higher Thought' to take stock of their spiritual thought. And in so doing, the lesson must be learnt that all thoughts which do not lead to a belief in Absolute Justice (or the Law of Cause and Effect) must be banished from the mind. When such an achievement has been accomplished, steadfastness in the purpose of knowing and acting the Truth will be attained. Such attainment implies the possession of patience, and consequently there will be no undue excitement in the performance of one's duties. When action takes place, humility will shine forth through the good done because those thoughts which are the embodiment of selfishness will not find lodgment in the purified mind. Then the motive of all action will be pure, and goodness shall reign with power to comprehend the knowledge which leads to holiness and wisdom. Such an one will manifest deepest compassion and no actions will occur to hurt any living beings. This is the Jain ideal (DAYA), the realization of which will ultimately bring Peace and Joy together with the real meaning of the text.

"LOVE IS THE FULFILLING OF THE LAW".

Then will come a serenity of mind which will always lead to the performance of good deeds, and a life of purity and peace will be made known among men. Seeing the Truth can only be brought about by practice, and the knowledge that Truth is invincible will be perceived, and the result will manifest into the acquirement of an unalterable calmness of mind, the ultimate end of which will be spiritual strength so powerful that the only title such a conqueror needs will be the term "JAIN".

"BLESSED IS HE THAT OVERCOMETH."

જૈન સાહિત્ય—ઐરાવત હાથી, જંબુદ્વીપ, અઢીદ્વિપ, શુકનાવળી, ઋષભનાથ અને નેમનાથનાં જીવનકાળનાં ચિત્રો, તીર્થંકરના સોળ સ્વપ્નો, ચંદ્રગુપ્તનાં સોળ અશુભ સ્વપ્નો, અકબર બાદશાહ અને હિરવિજયસુરી વગેરે.



ગોમ્મટસ્વામી તથા જૈનબિદ્રીનાં મંદિરોનો પટ, સમવસરણ પટ, સમેદશિખરનો પ્રાચીન પટ, અઢીદ્વિપનો નકશો વગેરે હસ્તલિખિત પ્રાચીન દિ. જૈન સાહિત્ય.

two others, is both substantial cause and instrumental cause, each acts upon the others and is itself acted upon by the others. Each has the power of originating new states, destroying old ones, and keeping itself permanent. This power is called "satta." It is not a separate entity existing outside these six realities, it is a power inherent in them and inseparable from them. It is not an extra-cosmic, individual person creating and controlling the universe; it is an attribute of each of the six substances, not a being at all either intelligent or non-intelligent. Thus power which creates and [illegible]ys things is not extra[illegible]de the above named [illegible] power is inherent in [illegible]hemselves, and is found intelligent and in the non-[illegible] realities. This power is not [illegible], in Jainism. That is the [illegible]n and it is thoroughly sound.

[illegible]e next consideration is with [illegible] to the belief in a creator con[illegible]ting to the virtuous conduct of [illegible] and to his salvation. To wor[illegible] a creator does not necessarily [illegible]r contribute to virtuous conduct [illegible]d to salvation, the final goal [illegible] (moksha). There are five [illegible]t principles of virtuous conduct [illegible] are recognized by most reli[illegible] they are:—not to kill or hurt [illegible]iving being, that is to say, to [illegible] and let alive; not to tell [illegible]oods, that is to say to [illegible]thful; not to steal, but to be [illegible]; not to commit adultery, but to control the sex passion; and finally detachment from worldly objects and sensual pleasure.] Now the belief in a God who is regarded as creator leads men to think that God has created all things for men's use and so he indulges in the free use of such things as meat and wine. Such men do not act much upon the first fourth, and fifth of the above principles and the violation of these often leads to the violation of the remaining two, truthfulness and honesty. Further, it is agreed by most religions that for the attainment of salvation it is necessary to control the passions and desires, and to sever one's worldly connections, and people who believe God to be a creator argue that as God has given them these passions and desires, why should man try to suppress them,and having been sent into the world why should man try to sever his connection with it or live an unworldly life? So that, it is obvious that the worship of God as creator does not necessarily lead to a virtuous life or to salvation (moksha). Thus we have additional reason why the Jains do not attribute to Deity the quality of being a creator, regard God as a pure and perfect being, omniscient, happy, all-powerful, and eternal, who neither creates other things or beings, nor rewards nor punishes.

Another argument sometimes put forward by those who believe that the Deity is the creator, is with regard to punishment and reward; it is said

there is an image of Bahuvali also called Gommata established by Bharata. Hearing this the devout Chamundaraja resolved to visit the shrine of this image and going home revealed his intentions to his mother Kalika whereupon the latter also expressed her desire to go with him. Chamundaraja then went to his spiritual preceptor Ajitasena and made a vow that he will not drink milk till he sees the image of Bahuvali. Accompanied by his preceptor Nemichandra and his mother Kalika, Chamundaraja started on his pilgrimage followed by a large retinue and reaching Vindhyagiri in Sravana Belgola halted there for the night. In that night Nemichandra, Chamundaraja and Kalika dreamt that Goddess Kusmandi (the Yaksini attendant or Lord Neminatha, the twenty-second Tirthankara) appeared before them and told that it was very difficult to go to Pandanpuri as it was far away but that in that very hill (Vindhya-giri) there was an image of Bahuvali formerly established by Ravana which will become visible if the mountain be cleft by a golden arrow. In the morning Chamundaraja stood on the hill facing the south and let loose a golden arrow from his bow which struck the mountain which was immediately cleft in twain and an image of Bahuvali also called Gommata became visible. Chamundaraja built a temple and established the image on Sunday-the fifth day of the bright lunar fortnight in the month of Chaitra in Kalki era 600. This corresponds to Bikram Samvat 735. Large properties were alloted by Chamundaraja from the income of which daily worship of the image was to be regularly performed. King Rajamalla being extremely pleased with the action of Chamundaraja bestowed upon him the tike of Raya from which the minister became famous as Chamundaraya.

From this legendary account we can gather that an image of Gommata also known as Bhujabali, Bahuvali and Gommateshwer was erected by Chamundraya and Nemichandra his preceptor consecrated the same image and was engaged in the worship of it. That all this is not a myth is clear from the actual existence of a colossal image nearly 70 feet high called Gommateshvar on Vindhyagiri at Sravan Belgola in Mysore. There is an inscription at the bottom of this image in Marathi, Canarese and Deva-nagari characters that it was erected by Chamundaraja and that the temple was built by Ganga-raja. Numerous temples were erected an arious images were established subsequently on this hill by various kings, ministers and rich men who were devout followers of Jainism and these temples and images have made Sravana Belgola famous not only to the people of India but to all travellers from the West. Chamundaraja and Nemichandra flowrished in the 10th century A. D. and gangaraja mentioned above was alive in the 12th Century A. D. Within this period various temples and images adorned Vindhya-giri.



प्रोफेसर सरचंद्र घोशाल एम. ए. बी. एल.

सरस्वति, काव्यतीर्थ, विद्याभूषणभारती–कलकत्ता.

Surat-chandra Ghosal M. A. B. L. Saraswati, Kavya-Tirth, Vidyabhushan Bharti, Editor "Sacred books of the Jains" and Prachin Bharatiya Granthavali", Translator of "Dravya Sangrah", Vayu Purana", "Vedant Paribhasa" Author of Varuni &c. &c.

" Jain Vijaya " Printing Press–Surat.

By the establishment of the image of Gommateswar Chamundaraya himself was called Gommata or Gommataraya by the people and Nemichandra also has named his work Gomata-sara being in connection with this image. Verse 968 Karmakanda of Gommatasar is as follows :

गोम्मटसंगहसुत्तं गोम्मटसिहरुवरि गोम्मटजिणो य ।
गोम्मटरायविणिम्मियदक्खिणकुक्कडजिणो जयउ ॥

i. e. " Let the compendium of Sutras called Gommata-(Sara), Gommata-jina (i. e. the image Gommatesvar) on the summit of Gommata hill (i. e. Vindhya Giri) and [the image] called Daks'ina Kukkut Jina established by Gommataraya (i. e Chamundaraya) be victorious. " This shows that from the name of the image Chamundaraya the work of Nemichandra and even the bill took the name of Gommata. In verse 971 Karmakanda also Chamundaraya is again called Gommata as follows:

जेणुब्भियथंभुवरिमजक्खतिरीटग्गकिरणजलधोया ।
सिद्धाण सुद्धपाया सो राओ गोम्मटो जयउ ॥

In Verse 733 Jivakanda we have "Let that King Gommata be victorious whose preceptor is Ajitasena the preceptor of the Universe "

अज्जज्जसेणगुणगणसमूहसंधारिअजियसेणगुरू ।
भुवणगुरू जस्स गुरू सो राओ गोम्मटो जयतु ॥

It is needless to quote other passages to the same effect.

Chamundaraya himself wrote a commentary of Gommatasara in Kanarese. This is evident from the last verse of Gommatasara: " Let that King surnamed Vira-Martanda be long (victorious) by whom (known as Gommata--raya) (a commentary) of Gommat Sutras was written in the popular dialect."

गोम्मटसुत्तल्लिहणे गोम्मटरायेण जा कया देसी।
सो राओ चिरं कालं णामेण य वीरमत्तंडी ॥

This commentary of Chamundaraya seems to have been lost but quotations from it are found in another commentary known as Kesava--varniya Vritti which acknowledged its debt to Chamundaraya's commentary in the opening verse as follows:

नेमिचन्द्रं जिनं नत्वा सिद्धं श्रीज्ञानभूषणम् ।
वृत्तिं गोम्मटसारस्य कुर्वे कर्णाटवृत्तित: ॥

In the second line in the above verse it is expressly said " I write the gloss of Gommatasara from the Karnata Vritti " There is another commentary of Gommatasara called Mandaprabodhika written by Abhayachandra Siddhanta--Chakravarti the opening verse of which is as follows:

मुनिं सिद्धं प्रणम्याहं नेमिचन्द्रं जिनेश्वरम ।
टीकां गोम्मटसारस्य कुर्वे मन्दप्रबोधिकाम् ॥

Todarmalla has written a commentary in Hindi of Gommatasara by following the above-mentioned commentaries.

Gommatasara is said to have been composed by Nemichandra at the request of Chamundaraya. It is also called Pancha-Sangraha. [श्रीमच्चामुण्डरायप्रश्नानुरूपं गोमट्टसारनामधेय-पञ्चसङ्ग्रह-शास्त्रं प्रारभमाण:'' M. commentary by Abhayachandra] The significance of the name of Pancha-sangraha may be understood when we mention that in Gommatasara the following five subjects are

treated: (1) Bandha (Bondage) (2) Badhyamana (that which is bound) (3) Bandhaswami (that which binds) (4) Bandh-hetu (the cause of bondage) and (5) Bandh-bheda (the varieties of bondage). The work consits of 1705 Prakrit gathas and is divided into two parts, Jivakanda consisting of 733 verses and Karmakanda consisting of 972 verses.

The Jainas assert that after the Nirvana of Lord Mahavira, the knowledge of secred works of the Jainas known as Angas prevailed for 683 years. But after this period, the knowledge of the Angas became scarce. Only Bhadra babu Svami had a knowledge of Astronomy. A terrible famine at this time caused the Jain Sadhus to deviate from strict rules of life and conduct whereupon Dharsena, the pupil of Bhadrabahu Swami taught the Jain tenets to his pupils Bhutabali and Puspadanta. The latter composed aphorisms called Shatkhands, and subsequently commentaries to this shatkha-

In Jivakanda it is said that there are twenty Prarupans, fourteen of which treat of Marganas, and the rest of Gunasthanas, Jivas, Paryapti, Prana, Sanja and Upayoga.

गुणजीवापज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणाओ य ।
उवजोगोवि य कमसो वीसं तु परूवणा भणिदा ॥

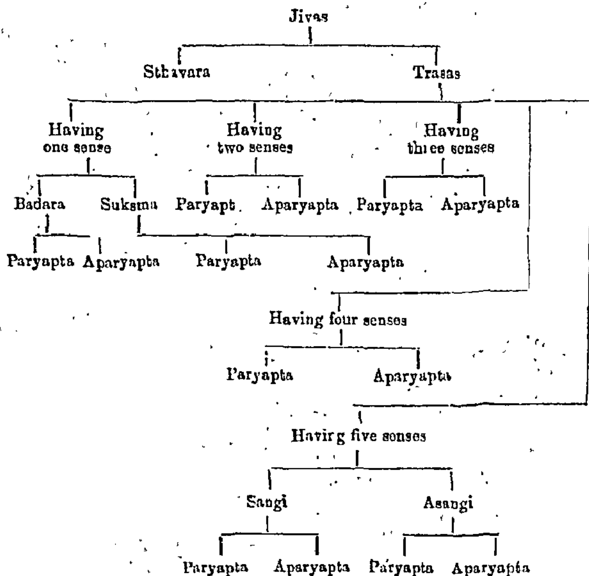
(Verse 2 Jivakanda.)

The fourteen Gunasthanas are Mithyatva, Sasadana, Misra, Avirata-Samyaktva, Desavirata, Virata, Pramatta, Itara, Apurva, Anivritta, Suksma, Upasantaksinamoha, Sayoga-kevalijiva and Ajogi. These are the *gradual steps by which one becomes* Siddha. First of all these are described in Jivakanda.

मिच्छो सासण मिस्सो अविरदसम्मो य देसविरदो य ।
विरदा पमत्त इदरो अपुव्व अणियट्ठ सुहुमो य ॥
उवसंतखीणमोहो सजोगकेवलिजिणो अजोगी य ।
चउदस जीवसमासा कमेण सिद्धा य णादव्वा ॥

(Jiva-Kanda 9, 10.)

Next follows a description of the varieties of Jivas.



बादर-सुहुमेइंदिय बितिचउरिंदिय असण्णिसण्णी य।
पज्जत्ताऽपज्जत्ता एवं ते चोद्दसा होंति ॥

[Jivakanda, Verse 72]

Then follows a description of Paryapti. We find that Jivas are complete and incomplete as the things i. e. rooms, jars etc. are full or empty.

जह पुण्णापुण्णाइं गिहघडवत्थादियाइं दव्वाइं।
तह पुण्णिदरा जीवा पज्जत्तिदरा मुणेयव्वा ॥

[Jivakanda. Verse 118.]

The next subject taken up is Prana. Pranas are said to be ten in number, the five Indriya-pranas, mind, speech, body, respiration and life.

पंचवि इन्दियपाणा मणवचिकायेसु तिण्णि बलपाणा।
आणापाणप्पाणा आउगपाणेण होंति दस पाणा ॥

(Jivakanda, Verse 130.)

Then the author treats of Sanga.

The Sangas are four: Ahara, Bhaya, Maithuna and Parigraha.

After these the greater portion of the work deals exhaustively with the fourteen Marganas and their sub-divisions. The Marganas are: Gati, Indriya, Kaya, Yoga, Veda, Kesaya, Gnana, Samyama, Darsana, Lesya, Bhavya, Samyaktva, Sangi and Ahara.

गईइंदियेसु काये जोगे वेदे कसायणाणे य।
संजमदंसणलेस्साभवियासम्मत्तसण्णि आहारे।

Pastly, Upayogas are said to be of two kinds Sakara and Anakara

सो दुविहो णायव्वो सायारो चेव णायारो ॥

These are in brief the headings under which various subjects connected with jivas are treated in Jiva-kanda of Gommatasara.

In the second part called Karma-kanda there are nine secitons called Prakriti-samutkirtana, Bandhodaya-Satva, Sattvasthanabhanga, Trichulika, Sthanasamutkirtana, Pratyaya, Bhavachulika, Trikarana-chulika and Karma-sthiti-rachana. The eight varieties of Karma Viz. Gnanavaraniya, Darsanavaraniya, Vedaniya, spiritual advancement which is the aim of every system of religion & philosophy is the aim which the author always keeps in his view and the precepts of the Jaina Acharyas in this respect will be found summarised in Gommata-sara.

From this brief account it will be clear why this work is so much appreciated by the Jainas. It comprises in very brief limits most of the important tenets of Jaina philosophy and proceeds to lay down the ways and means to liberation after a warning as to the hindrances and obstacles to the same. The verses it must be confessed are very terse and one can fully grasp their meaning only with the help of commentaries but the importance of the subject and the thoroughness of treatment induce us willingly to undergo the *labour of mastering these brief and* succinct gathas. We hope to present to the English knowing readeres a translation of this work in a future volume of the sacred Books of the Jainas.

24-9-15

THE LIGHT OF TRUTH.

By *Jugmandar Lal Jaini* M. A. Bar-at-law, Judge High Court, Indore; President, All India Jain Association &c.

The Illumination Festival once more! Joy in people's heart; lovely lights inside and outside their houses: The pious Jaina is looking forward to the early morning hours before *sunrise when his heart will thrill* with the memory of the Sacred Event, 2442 years ago—namely, the attainment of Liberation by *Lord Mahavira* in 527 B. C.!

The multi-coloured lights of the world remind the enlightened Jaina *of the one light of the spirit. It is the* light which blinds the mundane soul. The mundane soul is a partnership between soul and matter. This light eternal is *anti-material. It is of the* soul and matter cannot bear it. When the vision of this light is clear, matter simply falls off dead, lifeless as is its essential nature. Or to put the statement in the other words this light can not be seen, till the soul has shed off all its material manacles. This light is *identical with the soul, i. e.*, with the liberated soul. This is the light of Truth. Even the slightest and the purest admixture or shadow of matter is a hindrance to the attainment of this vision. Hence the great Kundakundacharya says in his *Panchastikaya Samayasara* ;

जस्स हिदयेणुमत्तं वा परदव्वम्हि विज्जदे रागो ।
सो णवि जाणदि समयं सगस्स सव्वागमधरोवि ॥

१६७

"Or in whose heart there exists the slightest attachment to the non-self substratum, he, even if he has the knowledge of all the scriptures, does not attain self--absorption."

This is an unequivocal, absolutely clear postulation of the great bed-rock essential of Truth: the self-contentment *of the soul.* The self is independent *only in its full self--realisation.* Its perfection is a potent germ within itself. The evolution of the germ is *liberation. The* attainment of this perfect evolution is the highest goal. It is Truth itself. It is identical with the self; it consists in an absolute absorption of the soul in itself. It is the absolute itself. obviously it is neither *extinction nor* stultification of the soul. It is the soul's recognition and realisation of its Eternal identity *with Itself.* This is the hieghest and the most positive development of the soul. It is the Light of Truth.

Let us spend a moment in trying not uderstand this Light, although its realisation is not vouchsafed to us

matter-bound, mundane souls. At the outset we must understand clearly that this Light is nothing more than the soul itself. Eveybody's soul is this light; only covered with a very thick and persistent darkening globe of matter, to understand the true character of this Illuminition which is in us all, we must, therefore, understand (1) the true character of the soul and (2) the nature of its union with matter. To these two I shall attend in this little paper.

Take the last first. *What is the nature of the soul's union with matter.* A few propositions will command universal acceptance. I enunciate them. (1) Everyone seeks Happiness and avoids Pain. This is a matter of universal experience and needs no demonstration The pleasure of asceticism is merely an instance of the extremes meeting. The hot and quick pursuit of happiness in asceticism, makes the ascetic take pleasure in bearing pain. So that the extreme is such that pain is pleasure to the ascetic. He pursues pain as *pleasure* and not as pain. So asceticism is not an exception to the first principle of the Universal Pursuit of Happiness. (2) There are 2 indisputable facts in life: the '*I*' and the '*non-I*.' I am and others are. I am not the non-I. The non-I is not me. This again is a matter of direct observation and feeling. It needs no proof. Everyone can see for himself that he is distinct, different from his friends, from his clothes &c. He also notices that he is conscious; his friends are equally so. But that his clothes as also his friend's clothes and boots are devoid of thought or consciousness. He also notices, when he reflects a little more deeply, that his body is also not himself really. The material composition of the body is proved by the sciences of chemistry, physiology &c. The phenomenon of life is not yet explained by science. It is dealt with confidently & clearly by the science of Wisdom, by Religion in the modern and ancient worlds. Life is what makes the body living. It is what constitutes the consciousness and feeling and thinking of the human machine. Its existence is inferred from the inevitable absence of consciousness and thought in a dead body.

(3) Life is never founed in its pure, unalloyed condition. It manifests itself only in conjunction with non-living matter. Let us go further into this phenomenon: the union of the living with the non-living. This is the basic bifurcaution of Jainism into the two mighty and indisputable categories of *Jiva* and *Ajiva*. Under *Ajiva* fall the constituent but great categories of Time, Space, Motion and Rest. These four with Matter (which is *Ajiva*, of course) and with soul make the Six Substances (Dravyas) of Jainism. The slightest consideration proves the irrefutable correctness of the first division of the Non-living. The sub-division of the universe into living and Non-living into matter, Time and

Space & Motion & Rest is as useful as it is observable and true. The soul, the I, is united with the non-I, with matter. The union relates to some point in Time and in Space. And it is characterised by Motion or Rest, actual or possible.

But what is this union of the soul with matter? It is an universal phenomenon and it behoves us to analyse and see what it is. Soul or Life alone is conscious. Matter is devoid of Consiousness. Soul is living. Matter, non-living. No antithesis could be more marked, and yet the two are together. This has led some very great thinkers to focus their attention on the one so long and with such single-mindedness, that they have asserted the absolute negation of the other. The materialists made life only a characteristic of matter; and denied the very existence of the soul. The spiritualists apotheosised the soul; identified it with the Universal soul; making matter an unreal, unsubstantial shadow of the light of this One Soul. But this is going to the extreme. This is leaving unexplained one half of the proposition. We find both matter and soul in the Universe. Negation of one is no explanation of either. If, in our hurry to get at the absolute Truth, we do not discard the real Truth which so to speak lives at the very doorstep of our mental inquiry, we can never run to the extreme point where we commit the suicidal error of denying the very existence and reality of soul or of matter. Thus the third proposition; Life is never found in its pure, unalloyed condition, strengthens the second proposition, that the 'I' and the non-I exist; and at the same time it points to the character of the Happiness, which according to the first proposition is an object of Universal Pursuit. The inter-relation and inter-dependence of the three propositions is thus patent.

The union of the soul with matter is thus a hindrance to Happiness. It is the cause of our imperfection. It is undesirable. It is to be conquered. It is to be annihilated. That is, the aim of Religion, the Ideal is the permanent separation of the soul from its material copartner in life. How can this be achieved?

At the outset, we must have a clear, steady belief in this soul and in the non-soul with which it is intermingled. Doubt is the parent of stagnation. The settlement of doubts is a preliminary condition to achieve any kind of progress. Before we can gain Truth, we must know as a matter of inner conviction that the point from which we have started is the first point in the direction of Truth. This stage or experience is technically called सम्यग्दर्शन *samyagadarsana* or right belief in Jaina philosophy.—Having made certain that we are on the right path, we follow it along the twofold lines of right knowledge and conduct. This is obvious. Knowledge is essential. As the Persian poet says:

"Without knowledge it is not possible to know God."

Also, this knowledge is useless if our practice is not based on it. The same poet *Sa'adi* says: "However more you acquire knowledge, if you do not practice it, you are ignorant." Or, in the words of Frederick Harrison: we must learn to live and not live to learn. The whole position is summed up in Jainism by saying: सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥

[तत्त्वार्थसूत्र १ ॥ १ ॥]

right belief, knowledge and conduct together are the path to liberation.

A few ignorant persons think that *Moksa*, Liberation is, annihilation or the soul's anxiety to get away from the world, which is Evil. Therefore they condemn all Eastern religions and peoples. They say the Easterns are dreamy, inactive, and pessimistic. This is the hugest possible mistake. It is mainly the westerner's incapacity to appreciate the faith of others is, in the eyes of the same christian, a deadly sin, indexing inexcusable ignorance in the non-christian believer. Not that there are no enlightened liberal minded, Truth seeking *christians, but they* are so few and far-between. The western peoples condemn the caste-system of India. But their own class system and various kind of colour, creed and race prejudices show indisputably that the eye which is awake to the mote in its neighbour's is blind to the beam in its own eye! These remarks are to some extent suggested by the book, *Heart of Jainism* by Mrs. Sinclair-Stevenson. It is an eloquent proof of the writer's industry, method & thoroughness. We are told that she studied Jainism with 2 Jaina Pandits for about 8 years. It is very admirable of an Oxford lady to bestow so much attention on an alien philosophy. Her *admiration of this philosophy* is patent, sometimes almost beyond her wishes. But alas! the conclusions are erroneous. And how can they be otherwise?



बाबू जुगमंदरलाल जैनी एम. ए., बेरिस्टर एट लो, जज्ज हाईकोर्ट (इन्दौर) आदि।

(जैनियोंमें सबसे पहले हाईकोर्ट जज्ज)

Babu Jugmander Lal Jaini M. A., Bar-at-law; Judge High Court-Indore

President, Bharat Jain Mahamandal &c.

" जैन विजय " प्रिंटिंग प्रेस-सूरत.

to dwell for a minute in this glory and Illumination of Truth.

The lovely *Dravyasangraha* thus gives us the character of the soul.

जीवो उव ओगमओ अमुत्ति कत्ता सदेह परिमाणो ।
भोत्ता संसारत्थो सिद्धो सो विस्ससोड्गई ॥ २ ॥

"(The soul is) Living; has conscious Attention; is immaterial; doer (of karmas); coextensive with its body; enjoyer (of the fruit of karmas); mundane; Liberated; and has a natural upward vertical motion."

Thus the soul has 9 characteristics:

(1) Life, (2) Conscious attention, (3) immateriality; (4) Karmic activity, (5) enjoyment of the fruition of karmas; (6) coextension with its body; (7) mundaneness, (8) liberation; and (9) an upward vertical motion.

(1) Let us consider these 9 qualities separately. The first is *Life.* In reality the soul is one and identical with Life. But in practice it has 4 distinct kinds of life or vitalities. These are the sense vitality; the strength vitality; the age vitality; and the respiratory vitality. Really these are ten kinds of vitality—5 for the 5 senses 6th for the mind, 7th for the body as a whole; 8th for speech [note that speech is rightly distinguished from the tongue which as a sense has to do with *taste* only]; 9th for respiration, and 10th for age we have said above that in reality the soul's only vitality is consciousness. This consciousness, however, functions in a mundane, impure soul in 10 ways and they are the vitalities

Himsa e. g giving a man. a debilitating potion, or obstructing his free exercise of the power of his body, mind or speech is as hurtful as mutilating any of his sense-organs or killing him right out by destroying his age-prana,

(2) Then *Conscious Attention.* The soul full of Vitality is gifted with *Upayoga, i. e.,* it has the faculty of being attentive to objects of which it has consciousness and knowledge. The attentiveness generally is called उपयोग or *Upayoga.* It is of 2 kinds: when it relates to consciousness *i. e.,* mere दर्शन *Darsana* conation; or to ज्ञान Jnana, knowledge. Conation attentiveness is of 4 kinds, as it relates to ocular, non-ocular, visual or perfect conation knowledge attentivness is of 8 kinds, as it relates to 8 kinds of knowledge: right and wrong kinds of sensitive, scriptural and visual knowledge; mental and perfect knowledge.*

(3) The next point is the souls *Immateriality.* That is soul is not mere matter. We saw that the Universe was divided into *Jiva* and *Ajiva* that which is Living, is conscious and that which is non-living, has no consciousness. This is from the point of view of *Jiva.* But looking at matter. the greatest sub-division of *Ajiva,* the others being Time, Space, Dharma and Adharma, we can say that soul is not matter. *i. e.,* like Time, Space, Dharma and Adharma, the soul does not have the following 4 groups of qualities which are characteristic of Matter. It has no Colour, Taste, Smell or Touch. Jainism mentions 5 colours white, yellow, red, indigo and black; 5 Tastes: pungent, bitter, acid, sour and sweet; 2 smells; pleasant and and unpleasant; and 8 kinds of Touch: hot and cold; smooth and rough; soft and hard; heavy and light. The soul is free from all these kinds of material qualities.

(4) The soul is the Doer. It is responsible for all kinds of activity. It is plain from the fact that soul alone is conscious. No responsibility can attach to inert, dead, unconscious matter or the other unconscious substance or Existences as space, Time, Dharma & Adharma. The purest soul does or causes only its own thought-nature; the impure or mundane soul causes its own thought-activity, which is attentive to the non-soul. This attentiveness brings about the Union of soul and non-soul matter; from this point of view the soul may be said to be the doer of Karmic matter also.

(5) The soul is the Enjoyer of the fruit of this Karmic matter. As he is the doer, so he is the enjoyer. As he has sown, so must he reap. In its purest condition, the soul, of course, enjoys its own pure & perfect condition of all-knowledge bliss and power.

(6) The soul which is manifested in the above 5 kinds of characteristics is always an embodied soul. As

* For details of these terms &c. see the present writer's English translation of *Tatvarthsutra.*

a lamp fills a box, or a small or a big room completely with light, wherever it chances to be put, so the soul completely fills with itself a small or a big body in which it chances to incarnate. It is *Coextensive with its body*. It is large or small, being capable of contraction or expansion. It is not limited, in reality, consisting of innumerable *pradesas* or spatial units. One soul fills the body of an elephant. The same soul reborn as an ant, fills the body only of an ant; and so on. This is necessary & obvious from the mundane soul being found co existing with a body.

(7) Roughly speaking of the above 6 *things, the first* 3 *will be found* in all souls, the last 3 in mundane souls only, remembering always that a perfect soul will retain *a very slightly smaller* size than that of the body of its last incarnation. But of the remaining three mundaneness is found only in mundane souls; & Liberation & upward vertical motion in Liberated souls.

(ii) according to their mind they are *Samanaska* or rational and *Amanaska* or irrational.

(iii) Again from the point of view of समास *Samasa* souls are of 14 kinds. The bodies are of 7 kinds as follows: Gross one-sensed; fine one sensed; 2 sensed; 3-sensed; 4-sensed; irrational 5-sensed; rational 5-sensed. A soul may or may not acquire any of these, or rather the germs of any of these in its transition from one incarnation to another. The acquisition is called पर्याप्त, *paryapta*; & the non-acquisition अपर्याप्त, *aparyapta*. Thus there are 14 kinds. These 14 are called *Jiva Samasa*.

(iv) The mundane souls are found in 14 *Marganas* also. These are their: 1 *Gati*, condition of existence, e. g. as men, animals &c; 2 *Indriya*, senses; 3 *Kaya* body; 4 *Yoga*, the 3 kinds of vibratory activity of mind, body and speech; 5 *Veda* masculine, feminine or neuter sex; *Kasaya*, passions of anger, pride, deceit and

(v) There are 14 stages through which the mundane soul evolves to its perfect, non-mundane condition. These are called the spiritual stages or *Gunasthanas* of Jainism. They are:

1. मिथ्यात्व When the soul is in *Delusion* stage.

2. सासादन When the soul having risen from the first stage falls once more down into it. This is the *Downfall* stage.

3. मिश्र When there is a *mixed* condition of belief and non-belief.

4. अविरत सम्यक्त्व When the soul has belief and has *no vows*.

5. देशविरत Where there are *partial vows*.

6. प्रमत्तविरत *Slightly imperfect vows*.

7. अप्रमत्तविरत *Perfect vows*.

8. अपूर्वकरण New thought-activity.

9. अनिवृत्तिकरण Advanced thought-activity.

10. सूक्ष्मसाम्पराय Slightest delusion.

11. उपशान्तमोह Subsided delusion.

12. क्षीणमोह Delusionless.

13. सयोगकेवलि Vibrating perfect soul.

14. अयोगकेवलि Non—vibrating perfect soul.

8. The soul in its pure condition is the *Liberated* soul. It has 5 characteristics:

1. It is free from karmic matter of 8 kinds.
2. It is possessed of 8 qualities of
   i. Right belief.
   ii. Right Knowledge.
   iii. Conation.
   iv. Power.
   v. Fineness.
   vi. Interpenetrability.
   vii. Neither light, nor heavy.
   viii. Undisturbable bliss.
3. It is slightly less in size than the last body from which it attained Liberation.
4. It is Located in Steadiness at the summit of the Universe:
5. It is full of perpetual self-modifications.

9. The liberated soul has a natural, *upward, vertical motion*. What keeps the soul down in the world, is its union with material karmas. When that is dissolved, it must rise up and away from its captors, till it reaches the end of the Universe, symbolised by the extreme limit where *Dharma* and *Adharma*, the media of motion and rest, are found. Therefore it can go no further, and its upward tendency keeps it from coming down. Therefore it remains ever-steady at the end of the Universe.

Having considered *Jiva* as above, we may glance at *Ajiva* before we conclude. *Ajiva* is obviously dead, *unconscious* matter; that pure matter-substance which is devoid of soul. This is called *Pudgala* in Jainism. But consciousness is absent from Time and Space; also from the media or principles of Motion and Rest. Therefore *Kala*, *Akala*, *Dharma* and

Adharma are also called Ajiva. To illustrate from the histrionic art: soul and matter are the chief actors, space is the stage, Time the duration and Motion and Rest the necessary poses of the actors and thus the play of mundane tragedy and comedy is carried on from eternity by the 6 substances or Existences of Jainism, namely, *Jiva*, soul, *Pudgala*, matter, *Dharma*, motion, *Adharma*, Rest, *Kala*, Time and *Akasa*, Space.

The seeing of the drama in its true light, *i. e.*, as it is going on from beginningless Time to endless Eternity can be done only is the Light of Truth. When the true sight is obtained the vision itself is the Light of Truth. A complete fusion of the seer, the sight and the thing seen occurs. Self-absorption is attained. The self is then attended by Infinite conation, Infinite knowledge, Infinite Power, Infinite Bliss!

May the feet of all wanderers in *Samsara* be directed to this Bliss, to this Eternal Light of Truth!

24-9-15.

THE ASCENDENCY OF THE JAIN CHURCH IN MEDIAEVAL INDIA.

(750-1300 A. D.)

(By *Motilal* Jain Assistant Master Govtt. High School, AGRA.)

I. INTRODUCTION.

Researches in Indian history have clearly brought out the fact that the Jain Church exercised a powerful influence in Mediaeval India from 750 to 1300 A. D., such as was not witnessed since the days of *Kundakund Acharya*. This influence was felt throughout India except the extreme east and north. It gained ground not through the instrumentality of the sword, but on account of the peaceful policy and the unselfish attitude of its propagators as well as the popularity of the doctrines of Jainism. The period during which this influence lasted may be fitly called *the period of Jain revival in Mediaeval India,* since it brought with it a substantial prosperity of the Jain Church, which has left its marks on the institutions and literature of the period. In this period we find that many kings of India--some of them being very powerful princes--were converted to *Jainism* and the Jain faith was patronised even by those kings, who did not actually embrace it. Some of the highest posts in the different courts of India were conferred upon the Jains. Some of the

greatest Jain monks flourished and preached in this period. Many illustrious Jain scholars contributed to the religious and secular literature both in Sanskrit and Prakrit; nor did the vernacular escape their notice. Many renowned specimens of architecture and monumental fabrics were erected by the votaries of Lord Mahavira. The Jains, as a trading class flourished and a great deal of trade, including foreign commerce, passed through their hands, as it does even at the present day. In short, the Jain Church attained a wide popularity among the masses as well as the enlightened classes. This revival was fatal to Buddhism, which began to lose its hold upon the people. It was only towards the end of the 13th century that Hinduism, specially Sivism, and the new Lingayat sect stubbornly and vigorously reacted against the Jain Church and contributed to the decay of the latter.

II. STATE PATRONAGE AND POPULARITY.

Our period opens with the brilliant career of Akalanka Deva, who flourished about 750 A. D, and the decay of the Buddhism, which was set afoot in *southern* India. Aklanka Deva ranks among the most renownd Jain saints and scholars He is said to have received education in the Buddhist *College at Pontaga* and was well-versed in Buddhist lore. His fame rests chiefly on having defeated the Buddhist *antagonists* in a great religious controversy held at *the* court of the Buddhist king Him Shitala of the Pallava dynasty, who ruled at Kanchi (Conjeevaram). An inscription at Sravanbelgola also alludes to this victory. The effect of this great victory was a decided augmentation of the prestige of the Jains, while the Buddhists were excommunicated from the court to a distant place, Candy, in Ceylone. Hieuen Tsang, who visited Kanchi as early as 640 A. D. notices that Jainism enjoyed full toleration under the Pallava Government; this victory of Aklanka Deva gained for the Jain Church a more solid footing and a more fervent patronage of the Pallava kings. Close to their kingdom was the Pandya kingdom, where the Digambar Jains were present in multitudes even in the days of Hieuen Tsang. Some of the early Pandya kings were Jains. Among them the name of Kuna, Sundara *or* Nedumaran Pandya, who was afterwards converted to the Shiva faith, is mentioned. His exact date is not known, but he reigned just before the period with which we are dealing. About the same time Dantidurga, a chief of the Rastrakuta (Rathor *or* Ratta) clan was establishing a kingdom for himself at Nasik. He began his reign by overthrowing *the Western* Chalukya kingdom, *which was* completely subdued by his uncle and successor, Krishna I. It should be noted that the *great* Jain monk, Aklanka Deva, already referred to, was the preceptor of Krishna I, otherwise known as Subha Tunga. In fact, Aklanka Deva was the son of

the king's prime minister, Purushottam. Several kings of the Rastrakuta Dynasty were great patrons of Jainism. In the year 814 Amoghvarsha I (Nriptunga) succeeded to the Rastrakuta throne. He removed his capital to Manyakheta (now reduced to a small village, Malkhed, in the Nizam's dominion), which soon grew up to be one of the most important towns of India. Amoghvarsha (814-877) ruled over the whole of the central and western Deccan, both north and south of the Vindhyas, Besides, many contemporary princes of northern India did homage to him. Foreigners, specially the Arabs, visited his court, which was reputed far and wide. The merchant, Suleman, who was followed by many other merchants and travellers of repute, visited Amoghvarsha's kingdom in the middle of the ninth century and has left us records of his observations. Amoghvarsha's wealth was enormous and he ranks as one of the greatest monarchs of his age. We cannot pause here to describe the glory of his reign. The following note from Mr. V. A. Smith will suffice, "The Rashtrakuta Kings," writes that eminent authority on ancient India, "acquired great power and were regarded as the leading princes in India by Mohammadan writers of the ninth and tenth centuries. In fact Amoghvarsha, who reigned in the ninth century for more than sixty years, was reckoned to be the fourth among the greatest kings of the world, the other three being the Khalif of Bagdad, the Emperor of China and the Emperor of Constantinople (Rum). The rank and power of the Rastrakuta prince were largely due to his immense wealth, acquired apparently by commerce. The members of the dynasty were always on the best of terms with the Arab rulers of Sind with whom no doubt the Indian kingdom did profitable trade." Hence the conversion of this great monarch to Jainism was no small matter. He embraced Jainism under the influence of Jin Sena, the part author of Adipuran, who enjoys unquestioned preeminence among Jain authors; and there is reason to believe that Amonghvarsha abdicated in favour of his son, Krishna II, and passed the remaining years of his life in devotion to ascetic practices as prescribed by the Jain cannon. Jin Sena was helped and soon followed by other eminent Jain monks, who carried on missionary work and have much to do with the progress of Jainism in the ninth and tenth centuries. Jin Sena and some of the later monks "enjoyed the favour of more than one monarch."

Mysore has been the home of the Digambar Jains for many centuries. This is borne out by the Jain architecture of Mysore and the history of the different dynasties, which ruled in Mysore during the period of which we are speaking. Most of the kings of Mysore belonging to the Western Ganga family were adherents of Jainism and had Jain preceptors. Singhanandi

was the preceptor of tne founder of the Western Ganga dynasty. Among the kings of this dynasty the name of Rachamalla (about 977 A. D.) stands prominent. He had a learned and war-like minister in Chamunda-Raya, who has rendered his name immortal by setting up the colossal image of Gomata at Sravanbelgola. Both Rachamalla and Chamunda-Raya were devoted worshipers of Jinas and had Ajitsena Acharya as their preceptor. Many Jain monks and scholars including the celebrated Nemichandra Sindhanta Chakravarti, flourished at the court of Rachamalla. Chamunda Raya, the king's minister, was not only a brave general and a great statesman, but also a great writer. Rakkasgang-Raja (984-994), Permada Deva and other kings, who succeeded Rachamalla, were likewise Jains. The kings, who had preceed Rachamalla, for instance Avinita (Konganivarman) were also Jains. Chittala Devi, the Ganga princess, erected a beautiful temple at Humuch and made grants to it (1077 A. D.).

About the middle of the eleventh century the Hoysalas, a feudatory family of Dorasamudra, the modern Halebad, came to the front and the kings of this family acquired considerable power during the twelfth and thirteenth centuries. Many early kings of this line down to Vishnuvardhana were followers of the Jain religion. Among them we may mention Vinayaditya, who was a noted warrior, and Ereyana. The most notable sovereign of this dynasty Vishnuvardhana (Bittiga or Biltideva), who ruled about 1117, was however, converted to Vishnuism. But his wife Santal Devi and his various ministers continued to be Jains and highly favoured Jainism. Gangraja, the most famous of his ministers, restored the Jain temples, which had been destroyed by the orthodox Chola invaders. Even the later Hoysala kings continued to favour Jainism. Padmanabh, the minister of Vir-Ballal (1191 A. D) was a Jain, while Vir-Ballal himself favoured the Jain poet Nemi Chandra. The war-minister of this king was Shankara, the father of the well known Jain poet, Janna (1209).

The Kadambas of Banwasi and Hangal were also Jains. The early Kadamba princes, namely, Kakusthavarman, Mrigesavarman, Ravivarman, Harivarman, and Devavarman made many grants to the Jains. These grants are preserved in the various incriptions of the south. An inscription found at Halsi states that Kakusthvarman granted land to his general Shrutkirti. Another inscription recently found in the Mysore country mentions that three boulders were brought near the "Kauchin Dode" tank at Sravanbelgola by the order of a Kadamba prince. The Rattas of Saudatti also followed the Jain religion. Among them the names of Merad, his son Prithvi Ram, Kartivirya (1202-1220) and Lakshmi Deva may be mentioned. Parshwa Pandit,

a Jain author of repute, flourished at the court of Kartivarya, who had also a Jain preceptor, Muni Chandra. Kartivirya's son Lakshmi Deva was also a Jain and Muni Chandra was his preceptor, as well as minister. He also favoured the Jain poet, Nemi Chandra. Some princes of the Kongalva family were either Jains or favoured Jainism. Two inscriptions recently discovered in the Mysore country mention the names of two kings of this dynasty and credit each of them with the erection of a Jain temple. The names are Duddamallaras (1085) and Vir-Kongalva deva (1115). Names of preceptors and other facts are also mentioned in the inscriptions. Another family which *ruled at Humuch in the Mysore* country, had Jain princes, who were devoted adherents of Jain monks.

At the biginning of the thirteenth century the Yadavas of Deogiri established an independent kingdom. Their most powerful king was Singhana (1210-1247), son of Jaitugi (1191-1210). He defeated the kings of Gujrat and Malwa and his general Vichana subdued the Hoysalas, Silhars, Rattas and the Kadambas of Goa. "Singhana established," remarks Mr. Smith, a *short-lived kingdom almost* rivalling in extent the realms of the Chalukyas and the Rastrakutas. The poet Kamalabhava (about 1235) notes that this king was a Jain, his preceptor being the Jain saint Vinaya Chandra. Some of the Chalukya princes of Kalyani were also Jains or at least they favoured Jainism. Among them the names of Perma-Jagdekamalla II (1139-1149) and one or two of his predecessors may be mentioned. Naga varma, the general of *Perma-Jagdeka-malla's army*, is known as a famous Canarese author. He was a Jain. Attimabbe, the wife of Nagadeva, the prime minister of Abbavamalla (997-1008) was a devotee of Jainism and is credited with the erection of a thousand Jain temples at an immense *expense*. Trilokamalla or Somesvara I (1044-1068) had a Jain wife, *Ketal Devi*, who is credited with having built hundreds of Jain temples. Her son Kirtivarma was a reputed physician and a writer and was of the same faith as his mother.

We have already noted that Jainism was the prevailing religion in the Pandya and the Pallava kingdoms. Further south in the Tamil country down to the southern extremity *of India* Jainism enjoyed much greater popularity ever since the days of the Jain pontiff, Bhadrabahu, who together with numerous Jain monks migrated to the south to avoid a terrible famine that threatened northern India. That Jainism continued to enjoy the same popularity in the period with which we are dealing is borne out by the *fact that almost all* the great Tamil authors, who flourished *during this period were Jains*, and even at the present day their works are the masterpieces of Tamil literature and are highly prized by scholars

all over the world. "The beginning of Tamil literature proper," writes Dr. Grierson, "was due to the labours of the Jains, whose activity as authors in this language extended from the eighth or ninth to the thirteenth century." Exactly the same may be said of the canarese literature. "Kanarese literature, originated, like Tamil literature in the labours of the Jains", as we shall hereafter show.

Having done with the Deccan and the Far South, we now turn our attention to central and northern India and Gujrat. What is now known as Bundelkhand was formerly called Jejakbhukti and the old kingdom of Chedi corresponded nearly with the present Central Provinces. In both these countries Jainism was very popular in the period of which we are speaking. The numerous Jain temples of Bundelkhand built in that period, most of which are now in ruins, bear testimony to the wide popularity of the Jain faith. Certain kings, who ruled here were no doubt Jains. Among them we may mention Bijjal of the Kalchur dynasty, who usurped part of the Chalukya kingdom in 1136. His dynasty lasted until 1183. A line of Tamara Rajpoot Jains ruled about the same time at Gwalior and continued for a century more. The Jain temple of Parswa Nath built by them inside the fort Gwalior in the twelth century may still be seen and the ruins of another temple are clearly visible near it. The colossal Jain images in the same *fort* were, however, caved about three centuries later. Shishupala, the ruler of Chanderi near Lalitpur, was a Jain. Mathura was a great sanctuary of the Jain faith even as early as the sixth century B. C. The Jain stupa excavated there by Dr. Tuhrur has been regarded as the oldest known building in India by Mr. Smith. Mathura had at least one Jain stupa and two Jain temples, the site which is now represented by the Kankali Tila and there were certainly many Jain temples and images in the suburbs. Images have been excavated from Mathura which are dated just before the sack of Mathura by Mamud of Gazni (1018). These images escaped the club of the iconoclast We may now safely say that Mathura as a Jain centre had not lost its importance even as late as the eleventh century.

In Malwa although we hear of no Jain kings in this period, yet the Jains enjoyed full toleration at the hands of the state. The Parmars of Malwa were great patrons of letters and Jain authors flourished at their courts. The Jain scholar, Dhanpal, brother of Shobhan, and the celebrated Jain monk and scholar Amitgati graced the court of Munja (974--995). The celebrated Raja Bhoja (1018--1060) had a Jain general, Kul Chandra, who succeeded in subduing the reigning king of Anahalwara. According to an inscription at Sravanbelgola (1115) Bhoja touched the feet

of Prabha Chandra, a Jain Acharya. According to another inscription a religious disputation was held at the court of Bhoja, in which Shanti Sen Jain defeated hundreds of his antagonists. Dhanpal graced the court of Bhoja also. At the court of Narvarma Deva (1104-1107) also a great religious controversy was held between the *Jains* and the *Hindus*. Yashovarma Deva had a Jain minister, Jain Chandra, whom he appointed to govern Gujrat. The famous Jain scholar, Ashadhar, was patronized by Vindhyavarma (1155). He was highly praised by Bilhana, the king's foreign minister.

In Rajpootana the Jains commanded great influence and respect. The archives of Jessulmere and Jaipur are packed up with Jain manuscripts, which testify to the taste of learning of the Jains of those days. The chiefs of Rajpootana appointed the Jains to high posts in their service and gave them full religious toleration by respecting their views. A grant was made to this effect by the celebrated Rana Raja Singh, "the gallant and successful opponent of Aurangzeb"; it should be borne in mind that the Ranas were not Jains but followers of Siva. Colonel Todd translates the grant thus:—

MAHARANA SRI RAJA SINGH COMMANDING.

To the *Nobles, Ministers, Patels, Patwaris*, of the ten thousand (villages) of Mewar (*dusuches Mewar-ra*), according to your stations—read!

1. From remote times the temples and dwellings of the *Jains* have been authorized; let none therefore within their boundaries carry animals to slaughter—this is their ancient privilege.

2. Whatever life, whether man or animal, passes their abode for the purpose of being killed, is saved (*amara*).

3. Traitors to the state, robbers, felons escaped confinement, who may fly for sactuary (*sirna*) to the dwelling (*upasra*)[1] of the *yatis*[2], shall not there be seized by the servants of the court.

4. The *kunchi*[3] (handful) at harvest, the *muti* (handful) of *keranoh*, the charity land (*doli*), garlands, and houses, established by them in the various towns, shall be maintained.

5. The ordinance is issued in consequence of the *Ric*[4] *Manoh*[5], to whom is granted fifteen *bigahs* of *adhan*[6] land, and twenty-five of

1. Schools or colleges of the Yatis.

2. *Priests of the Jains.*

3. *Kunchi* and *muti* are both a handful; the first is applied to grain in the harvest time; the other to such edibles in merchandise as sugar, raisins, etc. collectively termed *Keranoh*.

4. *Ric* is an ancient title applied to the highest class of priests.

5. Name of a Jain Yati or priest.

6. *Adhan* is the richest land lying under the protection of the town walls; *mal* or *malaiti* land is land not irrigated from wells.

malaiti. The same quality of each kind in each of the districts of Nimbahaira.—Total in three districts, forty-five *bigahs* of *adhan*, and seventy-five of *mal*[1].

On seeing this ordinance, let the land be measured and assigned, and let none molest the Yatis, but foster their privileges cursed be he who infringes them—the *cow* to the Hindu—the *hog* and corpse to the Musulman.

(By command)
SAH DYAL (Minister)
Samvat 1749, *Mahsud* 5th,
A. D. 1693.

Although this grant is dated 1693 A. D., yet it serves to throw light upon the period, with which we are dealing. The words "*From remote times*" and "*this is their ancient privilege*" occuring in the first clause of the grant clearly show that this grant is only a conformation of the old privileges of the Jains, as Colonel Todd himself remarks. "It is well known", continues he, "that the first law of the Jains, like that of the ancient Athenian lawgiver Triptolemus, is, "*Thou shalt not kill,*" a precept applicable to every sentient thing. The first clause of this edict, in conformity thereto, prohibits all innovation upon the cherished principle; while the second declares that even the life which is forfeited to the laws is immortal (*amara*) if the victim but passes near their abodes. The third article defines the extent of *sirna*, or sanctuary the dearest privilege of the races of these regions..." Colonel Todd gives us the translations of two more grants, one of which is dated in 1649 A. D., issued by the Ranas in favour of the Jains, but we have no space to reproduce them here. These grants or edicts "engraved on pillars of stone in the towns of Rasmi and Bakrole, further illustrate the scrupulous observances of the Rana's house towards Jains; where, in compliance with their peculiar doctrine, the oil-mill and the potter's wheel suspend their revolutions for the four months in the year (rainy season) when insects most abound. Many others of a similar character could be furnished, but these remarks may be concluded with an instance of the influence of the Jains on Rajpoot society, which passed immediately under the author's (Todd's) eye. In the midst of a sacrifice to the god of war, when the victims were rapidly falling by the scimitar, a request preferred by one of them for the life of a goat or a buffalo on the point of immolation, met instant compliance, and the animal, become *amara* or immortal, with a garland thrown round his neck, was led off in triumph from the blood-stained spot." Colonel Todd gives another grant dated 1161 A. D. made to the Jains of Sandera Gatcha for the maintenance of a Jain temple, dedicated to Mahavira, by Alan Deva, the Chohan prince of

1. In all a hundred and twenty bigahs, or about forty acres.

Nadole (near Ajmer). There is an elaborately sculptured Jain pillar of uncertain date at Chittore full seventy feet high, which is dedicated to Parshwa Nath. The population of the Jains in Rajpootana was very large and they were divided into several communities, such as the Oswals. The Jains were appointed to high posts in the different states. Sometimes whole villages were proselytised by the Jain monks. Jain monks of the *Svetambar Church, most* of whom were desciples of the celebrated Acharya, Hema Chandra (*1088-1172*), abounded in Rajpootana. Many Jain inscriptions of the twelvth and thirteenth centuries found in different parts of Rajpootana bear evidence to the wide prevalence of the Jain faith in Rajpootana. These facts are sufficient to show the importance of the Jains in Rajpoot society.

While the Digambar Church had thus extended its *jurisdiction* over southern India, the Deccan, Malwa, Bundelkhand, Gwalior, Mathura and Rajpootana, the Swetambar Church was bringing Gujrat (*Kathiawar*) under its sway. There arose in Gujrat a genius in the person of Hemachandra Acharya (1088-1172), th Jain encyclopædist. Gujrat was then ruled by the Solanki princes of the Chalukya family. The seventh king of this line Siddharaja (1093-1143), was succeeded by Kumarpal (1143-1172), the most celebrated monarch of his line. His dominions were very extensive. He ruled over a large territory stretching as far as the Ganges to the east. He had conquered Malwa, overrun the Punjab and compelled the chiefs of Sapadlaksha and *Northern Konkan to recognise* him as his overlord. An inscription (dated 1057 A. D.) given by Colone Todd mentions that Kumarpal compelled the lords of Sacambhari to bow at his feet, carried his arms to Sewaluk makin g the mountain lords bow before him, and conquered the city of Salpoori, the capital of the Jita princes in the Punjab. No Indian prince could vie with Kumarpal in greatness and splendour. Gujrat was at that time one of the richest kingdoms of India. Baroach was a very important seaport in those days and through it wealth flowed into Gujrat. Kumarpal was converted to Jainism by Hemchandra *Acharya* in 1159 and from that time the king took up the doctrine of sanctity of animal life and inflicted punishments on those who did not abide by it. Under his firm rule Jainism made rapid progress in Gujrat, Malwa and even in Rajpootana, Kumarpala and his various Jain ministers are credited with the erection of numerous Jain temples. *Kumarpala* bestowed the highest posts in the state on the Jains. He bestowed highest honours on his preceptor Hemchandra, and when the latter breathed his last (1172), the king felt such a shock that he could not survive him for more than a few months. Hemchandra exercised greater influence on

the heart of this monarch than Abul Fazl did on that of Akbar. Kumarpal was a great patron of arts and letters and tried his best to enrich the Jain literature. He opened a copying department containing several hundred copyists, who copied the existing works on Jainism. He requested learned men to write original works and opened libraries. We may close this with the remark of Mr. Kennedy, who writes, "The king of Gujrat were the protectors and perhaps the converts of the Jains; Jain authors flourished at their courts, Jain generals and ministers of state were their chief officials; and Jain temples on Mount Abu, at Girnar and Palitana, and throughout Southern Rājpootana as far as Khajraho, attest the prevalence of the creed and the wealth of its devotees." Many kings, who preceeded and followed Kumarpal were also great patrons of Jainism, for instance Bhimadeva (1022–1060) and Virdhavala (1230).

III. ARCHITECTURE.

Jain architecture attained its highest perfection and numerous beautiful and splendid Jain temples and images were erected in this period. We shall briefly examine some of the famous places of Jain pilgrimage.

The finest structure of the Jains are the two Jain temples at Mount Abu. One of them, namely the temple of Adinath, was built in 1031 by Vimalshah, the wealthy minister of king Bhimadeva (1022-1060) of Anhilwad-Patan and the other which is dedicated to Neminath was built by Tejpal, the minister of King Viradhavala of the Chalukya line in 1230 A. D. These temples are built of white marble and reveal such exquisite workmanship that one cannot but say with Mr. Smith that "the beauty of the Jain temples of Mount Abu, built in the eleventh and twelfth centuries, is unsurpassed..." Tejpal and his brother Vastupal are credited with having built hundreds of Jain temples, images, tanks, hospitals, poor-houses, etc. at different places.

Palitana (Shatrunjaya) in Gujrat is known as "the city of temples", since it contains no less than three thousand Jain temples. Some of these temples were built in the period with which we are dealing; but most of them are of a later date, while some, indeed, lay claim to a hoary antiquity. This city situated at the base of a mountain, contain both Digambar and Swetambar temples. At Anhilvad Tribhuvanvihar, the famous Jain temple dedicated to Neminath was erected by Kumarpal (1143-1172), who named it after his father.

The most famous Jain temples on Mount Girnar (Kathiawar) were built by King Kumarpal and the brothers Tejpal and Vastupal. Several other temples at Girnar also belong to the same period.

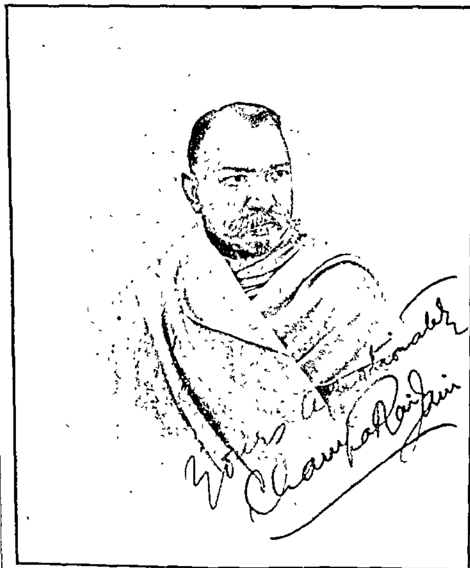
Bundelkhand is studied with Jain images and temples, of the eleventh and twelfth centuries. Ruins of many temples may be seen at Khujraho and

other places. In the dominion of Sindhia several places contain Jain temples belonging to the same period. We have already mentioned that the Jain temple *inside the fort* of Gwalior is a production of the twelfth century, but the colossal Jain images there seem to have been built two centuries later. At Sonagiri there are Jain temples of the thirteenth century. At other places also, such as Chanderi, we meet with Jain temples of the same period. We have already alluded to the importance of Mathura, as a Jain sanctuary.

In southern India hundreds of Jain temples were erected in this period and we have no space to describe them here. We may once more allude to the colossal image of Gomat, similar to those found at Venur, Karkul and Gwalior, which was erected by Chamund Raya (born 973) at Sravanbelgola some of the Jain temples there probably belong to the same period. Many inscriptions recently discovered show that this Jain sanctuary was visited by many a man in the ninth and tenth centuries.

IV. LITERATURE.

To the same period we owe some of the highly erudite scholars of both the Digambar and the Swetambar sects. Works of real merit flowed from their pens. Numerous Sanskrit works were written on different subjects. A few may be mentioned. Among poetical works we may mention Jin Sena's masterpiece, the Parsvabhyudaya Kavya, a production of the most exquisite kind in which every line of Kalidas's 'Cloud Messenger' is so placed in an original stanza as to convey and altogether different sense. To the same author we are indebted for a part of the Adipurana, which was brought to completion by his spiritual descendent Gunbhadra. Munisovrat Kavya by Arahaddas, Parsvanatha Charitra and Yashodhara Charitra by Vadiraj Suri (1026), Trisastisalaka-purus Charitra and Dvasarayamaha-kavya by Hemachandra (1108-1172), *Nagkumar-kavya by Mallisena* (1047) and many other excellent poetical works belong to the same period. Hemchandra was a copious writer. He wrote works also on grammar such as Sabdanusasan, works on rhetoric such as Kavyanusasan, works on logic such as Yogasastra, lexicons such as Abhidhan-chintamani and Anekarth-sangraha. To the same period belongs the well-known Yasastilaka Champu (959) by Somadeva Suri. Mahavira Acharya, who flourished in the ninth century (probably in the reign of Amoghvarsha) wrote his celebrated work on mathematics, Ganitsar-sangraha. Amitagati Suri (1016), author of the well-known works Jambudvipaprajnyapti and Chandraprajnyapti wrote on astronomy and astrology. Nemichandra Sidhanta chakravarti, author of Dravyasangraha, wrote on metaphysics. Aklanka Deva, author of Astasati and Nyayavinischaya, Vidyananda (circa 800), author of Aptamimansalankriti and



बाबू चम्पतराय जैन बेरिस्टर-एट-लो–हरडोई (यु. पी.)

Champat Rai Jain, Barrister-at-law.

Editor, The Key of Knowledge &c. Hardoi (U. P.)

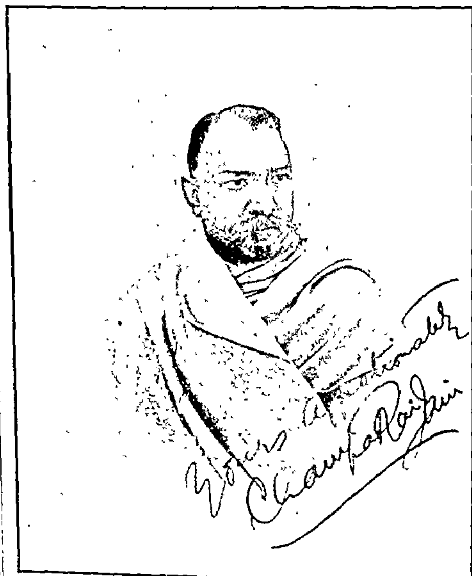
" जैन विजय " प्रिंटींग प्रेस-सूरत.

other places. In the dominion of Sindhia several places contain Jain temples belonging to the same period. We have already mentioned that the Jain temple inside the fort of Gwalior is a production of the twelfth century, but the colossal Jain images there seem to have been built two centuries later. At Sonagiri there are Jain temples of the thirteenth century. At other places also, such as Chanderi, we meet with Jain temples of the same period. We have already alluded to the importance of Mathura, as a Jain sanctuary.

In southern India hundreds of Jain temples were erected in this period and we have no space to describe them here. We may once more allude to the colossal image of Gomat, similar to those found at Venur, Karkul and Gwalior, which was erected by Chamund Raya (born 973) at Sravanbelgola some of the Jain temples there probably belong to the same period. Many inscriptions recently discovered show that this Jain sanctuary was visited by many a man in the ninth and tenth centuries.

IV. LITERATURE.

To the same period we owe some of the highly erudite scholars of both the Digambar and the Swetambar sects. Works of real merit flowed from their pens. Numerous Sanskrit works were written on different subjects. A few may be mentioned. Among poetical works we may mention Jin Sena's masterpiece, the Prasvabhyudaya Kavya, a production of the most exquisite kind in which every line of Kalidas's 'Cloud Messenger' is so placed in an original stanza as to convey and altogether different sense. To the same author we are indebted for a part of the Adipurana, which was brought to completion by his spiritual descendent Gunbhadra. Munisovrat Kavya by Arahaddas, Parsvanatha Charitra and Yashodhara Charitra by Vadiraj Suri (1026), Trisastisalakapurus Charitra and Dvasarayamahakavya by Hemachandra (1108-1172), Nagkumar-kavya by Mallisena (1047) and many other excellent poetical works belong to the same period. Hemchandra was a copious writer. He wrote works also on grammar such as Sabdanusasan, works on rhetoric such as Kavyanusasan, works on logic such as Yogasastra, lexicon such as Abhidhan-chintamani and Anekarth-sangraha. To the same period belongs the well-known Yasatilaka Champu (959) by Somadev Suri. Mahavira Acharya, who flourished in the ninth century (probably in the reign of Amoghvarsha) wrote the celebrated work on mathematics Ganitsar-sangraha. Amitagati Su (1016), author of the well-know works Jambudvipaprajnyapti and Chandraprajnyapti wrote on astronomy and astrology. Nemichandra Sidha chakravarti, author of Dravya-graha, wrote on metaphysics. Akla Deva, author of Astasati and Nyaya-nischaya, Vidyanand (circa 8 author of Aptamimansalankriti



बाबू चम्पतराय जैन बेरिस्टर-एट-लो–हरडोई (यु. पी.)

Champat Rai Jain, Barrister-at-law.
Editor, The Key of Knowledge &c. Hardoi (U. P.)

1167 A. D. Thus we see that persistent persecutions were directed against the Jains; and to the credit of Jainism be it spoken that it never attempted to use the sword against other religions. For more than five centuries, as we have seen, Jainism continued to make rapid progress, inspite of these persecutions. But these persecutions were supplemented by the appearance of Hindu reformers on the field of religious conflicts, and this combined force was more than the Jain Church could withstand. Among the several distinguished Hindu reformers Ramanand flourished in the South at the close of the eleventh and the first half of the twelvth century and popularised the worship of Vishnu. Ramanand, Kabir, Nanak and Chaitanya followed later. Shankara Acharya, who flourished towards the end of the eighth century, was a great foe of Buddhism and Jainism. The rise of the new Lingayat sect produced a great religious revolution, and retarded the progress of Jainism. Numerous men from the trading classes enlisted themselves as members of this new sect.

These are not the only causes which mark the decay of Jainism. There was reaction from within the Jain Church itself. The monastic system, which was so important a feature of the Jain Church and had given so much stability to it, lost its organization. The Digambaras suffered much more in this respect than the Swetambaras. The obvious result of this was that the number of Digambar monks to-day is nil. Several chisms, which exist to-day, were later on made in the main Church. Jain population began to decrease consequently.

VII. CONCLUSION.

The notes given here are by no means exhaustive. The subject allows of being treated at a far greater length. But we believe, that even these short notes are sufficient to show what important part was played by the Jain Church for more than five centuries in the mediaeval history of India. A deep study of Jain literature and the existing inscriptions belonging to the period will further conform this evidence and will throw great light on the history of India in general and of medieval Jainism in particular.

BIBLIOGRAPHY.

Vincent A. Smith—Early History of India (revised edition)—Oxford Students' History of India (revised edition)—The Jain Stupa and other Antiquities of Mathura.

A. Guerinot—Eessai de epigraphie Jaina—Paper on Jaina Inscriptions and Indian History.

N. R. Premi—Vidvadratna-mala—Digambar Jain Authors and their Works—Canarese Jain Poets, (all in Hindi).

Lieut—Col. James Todd—Annals and Antiquities of Rajasthan. Satish Chandra—History of the Mediaeval School of Indian Logic. Imperial Gazetteer of India, Vol. II.

Report of the Archælogical Survey of Mysore.

Catalogue of the Archaelogical Museum at Mathura.

प्रतिज्ञापत्र पाणि.

(લેખક-હાથીચંદ માણેકચંદ શાહ-સોનાસણ.)

મહારાજની મોહજાળ—

પંચ મહાવ્રત ધારી, દિવસમાં એક અહારી,
વરૂ નહિ કોઇ નારી, ગુરૂજી બનાવોને.
જૈનનો પ્રકાશ કરી, જ્ઞાતિ વાત દીલ ધરી,
તીર્થોનાં તોફાન અમે, દેશપાર કાઢશું !
દેશો દેશ જ્ઞાન આપી, દીન તણાં દુઃખ કાપી,
જ્ઞાન પાઠશાળા સ્થાપી, વિજય કરી આપશું !
મંત્ર, તંત્ર. જંત્ર, જાણું, જાદુ કેરી વિદ્યા જાણું;
ચૌદ રત્ન નવ નિધિ, રિદ્ધિ સિદ્ધિ આપશું ! ૧

⚜ ⚜ ⚜

વ્હેમી મહાજનજનો—

સાંભળી મ્હાજન ભાઇ, ગળુ મળ્યા પડાકમી,
ગાડીએ બેસાડો ગુરૂ, પડ રૂડું આપીએ.
ટોઇ નહી આપણને, જાડીમાં કેનાર બીજો !
સવારક સાહી ઊંચ, આપણીજ કાઢીએ.
છોકરાંના કાન મહિં, ફું મંતર દેવડાવી,
આયુષ વધારે હજો, એવું કેરાવીએ.
કથે હાથીચંદ આવા, અજબ જ્યાં આગેવાન;
જ્ઞાતીનો ઉદ્ધાર કરી, શા રીતે દેખાડીએ ! ૨

⚜ ⚜ ⚜

નવીન સીસ્ટમના જનો—

છર નૉન છર્ ગુરૂ, નથી માનવાના અમે,
ઢોંગી ધૂર્ત ધૂતવાને, ઢોંગ આ મચાવે છે.
મીઠી મીઠી વાતો કરી, અંતરમાં ઝેર ભરી;
આગેવાનો સાથે મળી, સંઘને બનાવે છે.
પંચમાંહી પડો પાડ, ગારી મેખ ઘડયો ધાટ,
"સુરત મુંબાઇ સોલા-પુર શું દેખાડે છે ?
આ જમાને જહાંગીરી, કાયદાનું કામ શું છે;
ગાદીએ બિરાજે ધૂર્ત, ધર્મને ડુબાવશે. ૩

⚜ ⚜ ⚜

મહાજનજનો—

જુવાનીના મદ માંહી, જરાતો જણાતું નથી;
મુંઆશ્ની પાસ ગાદી, તાજા ધણા દામ છે.
તે કારણે લખી લેખ મનુષ્યોને બરમાવે;
નાખી મુખોજ હમો, જગમાંહી આવીએ.
પ્રથમથી ગાદી ચાલી, હાલમાં પડેલી ખાલી;
મોતી મળ્યું મહેનતે, ગાદીએ બેસાડીએ.
કથે હાથીચંદ બીન, પાયાદાર વાતો કરી;
જુવાનીઆ બરમાવ્યા, કોનો દોષ કાઢીએ. ૪

⚜ ⚜ ⚜

મહારાજશ્રીની મનોભાવના—

ખડે જાઓ મ્હેરબાન, કામદાર છડીદાર;
પોલીસોની પ્રેટરેટ, ગાડી ઘોડા રાખીએ.
મેના પાલખી ને વળી, તામ જામ, નોબતને;
જરી તણાં વસ્ત્ર ધરી, રોફ ખૂબ રાખીએ.
અત્તરથી છટકોરી, વાળ બેશ હોળી ચોળી;
બની ઠની હવા માટે, બગીચે સીધાવીએ.
નારીઓના ત્યાગી અમે, દ્રવ્યના રાગી બની;
એકાન્તે બોલાવી, દોરા ચીઠ્ઠી કરી આપીએ. ૫

⚜ ⚜ ⚜

શીરો અને શેવ પુરી, દૂધપાક પુષ્ટ પાક;
માખણુ મલાઇ ને, બદામ મેવા ચાખીએ.
પરીગ્રહ ત્યાગી અમે, પરીગ્રહ રાખી પુરો;
પુછે કોઇ પ્રશ્ન ત્યારે, ચક્રી વાત કાઢીએ.
શીયલના દોષ દશ, અષ્ટ સ્હસ્ત્ર ગ્રંથે ગણ્યા;
નવ વાડ શીયલની, છેદી અમે ચાલીએ.
ઑરોમ્હાર દીલમ્હાર, માલતી ને હીનામ્હાર;
સ્વચ્છને મુંવાળું તન, રાખવા મંગાવીએ. ૬

⚜ ⚜ ⚜

સેકન ને ફ્રૂસ ડ્રેસ, ખાખી ડ્રેશ બહુ ડ્રેશ;
પ્હેરાવી પોલીસ મેથ, ભભકો દેખાડીએ.
કેટ ચાહ કોકો અને, કાશી તણા ઠંડીઆઓ
બિસ્કીટો મીજમાની માટે, શહેરથી મંગાવીએ.
ભરી ભાવનાઓ સારૂ, ખટપટ ખૂબ કરી;
લોકને જમાડી જમી, દામને કઢાવીએ.
પીન્લકોડ એક્ટ કે, હિંદુ લોનું ભાન નહિ;
કાયદાનો ભંગ ત્રાસ, દેહ સપડાવીએ. ૭

⚜ ⚜ ⚜

કલમે બહાદુર કોઇ, ગામતણા આગેવાન;
બોલાવીને પાસ આશ, માન પાન આપીએ.
જહાનમમાં જાય જ્ઞાતિ, ધર્મ જાય પાતાળમાં;
થી પડી અત્યારે ધીરી, વાનને સંભારીએ.
એવા એવા અનાચારો, અનેક કરીને હમે;
ઉડતાં પંખીને પુરા, પિંજરામાં પાલીએ.
કથે હાથીચંદ હજુ, જાગવાનું ઘણું પણ;
રોનાર જોનાર નીજુ, કોને ને દેખાડીએ ! ૮

Aptapariksha, Manikyanandi (circa 800), author of Parikshamukha and Prabhachandra (circa 825), author of Prameya-kamal-martanda, the well-known commentary on Parikshamukha, wrote on logic. Other famous logicians were Abhayadeva Suri (about 1000), author of Vadamahanava, Anantavirya (about 1139), author of Prameyaratna-mala, Deva Suri, author of Praman-naya-tatvalokalankar and Ratnaprabha Suri (1181), the author of Syadvad-ratnavatarika. Popular works such as Upmitibhava prapanchakatha by Sidharisi Suri (887) were written. Besides these quite a large number of works on religion, philosophy and ethics were also written. The Jains still wrote works in Prakrit. Among them we may mention Indranandi (833), author of Indranandi-sanhita and Muniprayaschitta, Deva Sena (833), author of Jnan-Sagar, Bhava-sangraha and Darasanasar, Mallisena (912) and others.

We have already stated the view of Dr. Grierson that the Jains were the chief writers of Tamil and Canarese in this period. These writers, like those of Sanskrit, are too numerous to mention here. However, we may mention some of the most famous canarese writers. They are King Amoghvarsha, who wrote Kavirajamarga (and also Prasnottar-ratnamala in Sanskrit), Adi-Pumpa (born 902), the poet-laureate and minister of the Chalukyan king, Arikesari and author of Adipuran and Bharat Champu, Ponna (950) the protege of the Rastrakuta king Krishna III and author of Santipurana and Jinaksharmala, Chamunda Raya (born 978), author of Chamundaraya-purana, Naga Chandra (1105), author of the Canarese Ramayana, Rajaditya (1120), the poet-laureate of Vishnuvardhan (1104-1141) and a great mathematician, Nemi-Chandra, the author of Lilavati and Neminathapurana, and Keshiraja (1260), the greatest authority on Canarese grammar.

The Gujrati literature also originated in the labours of the Jains.*

V. MONESTICISM.

In the Deccan and the Far South monks of the Digambar Church were numerous. It is strange to note that the Swetambar Church never exercised sway over these regions. The Swetambar Church, however, gained favour in Gujrat, Rajpootana and the Punjab. The desciples of Hemchandra Acharya wandered over these regions and most of the trading communities of these regions possess the Swetambar faith to this day. Some of the great writers we have mentioned were also great monks. It was chiefly through them that learning was diffused among the laity. They roamed about the country preaching the gospel and tried to reform the lives of the people by inducing them to act according to the doctrines of Jainism, for instance the twelve vows. The work of converting people to the Jain faith was fast going on. We have said how Jina Sena, Hemachandra and other monks proselytised certain kings and ministers and what important part

*A full account will be found in "Milestones in Gujrati Literature," published at Bombay.

they played at the courts. A very large number of the people was also converted at different places. "The mercantile and the trading classes, who formed the great stronghold of Buddhism, seem to have turned to the *allied Jain system, specially in Central* and Southern India," remarks Mr. Smith.

The Digambar Church consisted of four principle *Sanghas* or monastic orders, namely, Nandi, Sena, Deva and Singha. The establishment of these orders is dated as far back as 173 A. D. Each of these orders was divided into *ganas* or branches, such as Punnata, Balatkara, Kotia and each of these branches was subdivided in gachhas or sub-branches, such as Pustaka, Saraswati and others. These divisions were sharply marked in the period of which we are speaking. But they were mere classifications and inspite of them the unity of the Digambar Church was preserved The order known as the Kasta-sangha, founded in 831 A. D. by Kumara Sena of the Sena Gachha is often regarded as a chism in the Digambar Church; but later on the works composed by the members of this order got so mixed up with those of the other orders that the chism may be regarded as almost healed by this time. The Swetamberas were classified into eighty four gachhas or divisions, such as Khartar, Tapa, Kamala, Sandera and others. At several places there were the Bhattarakas or custodians of temples and the archieves attached to them. They were held in high respect by the laity. Unlike the depretiated Bhattarakas of to-day, they were learned men and their morals were of a high order. We may mention here one or two of the most famous ones. Prabha Chandra (1259 A. D.) was a profound scholar of Sanskrit and Prakrit and composed no less than twenty-six voluminous works such as Astapahur-tika, Adipurana-tika, Yashas-tilakakavya-tika, etc. Aklanka Deva (not the same as the monk Aklanka Deva) flourished about 1199 A. D. and composed Aklankasanhita and Sravakaprayashchitta.

VI. REACTION FROM WITHOUT AND WITHIN.

In the later mediaeval days Jainism began to lose its hold upon the people. The reaction of Hinduism, specially Sivism has much to do with its decay. There were terrible persecutions of the Jains. One of them which took place just before the period with which we are dealing is mentioned by Mr. Smith. Various inscriptions and records go to prove that the Pandya king, Sunder, who was converted to the Siva faith inflicted on no less than *eight thousand innocent* Jains a horrible death by impalement. "Ajayadeva, a Shiva king of Gujrat (1174-76) began his reign by a merciless persecution of the Jains, torturing their leaders to death.*" A new sect called the Lingayat sect or the Vira Shaivas, originated in the twelfth century. It is said to have *been founded by Basava, the Brahmana minister of the Jain king,* Bijjal The men of this sect assassinated Bijjal in

*Archael. S. W. I., Vol IX, p. 16

यदि कोई मनुष्य स्नानादि कर वस्त्राभूषणोंसे लदकर कुकर्म हिंसा चोरी आदिके विचारोंमें मग्न वैठा हो तो वह बाह्यमें साफ सुथरा होनेपर भी महा मलीन अपवित्र है क्योंकि उसके पास मानसिक पवित्रता नहीं है।

सदैव उदारचित्त रहना, परोपकार करनेकी चित्तमें वासना रखना, सब जीवोंसे प्रेम रखना, ये बातें मानसिक पवित्रताकी सखी हैं। जो हृदय द्वेष—फूट-कलह—व्यसनानन्दादिसे अलग है वही पवित्र है।

इसी तरह परनिन्दा रहित चुगली असत्य रहित हितमित वचन बोलना पवित्र वचन हैं।

झूंठ बोलना, कठोर वचन बोलना, गाली देना इत्यादि बातें वाचनिक पवित्रताको नाश करती है। पवित्रताके इच्छुक जीव कदापि अपने वचनोंको मलीन नहीं होने देते।

इसी तरह तीसरी क्रियाजन्य पवित्रता वह है जो उत्तमोत्तम कार्योंके करनेसे आती है। पाप रहित प्रवृत्ति ही वास्तवमें पवित्रता है।

बहिनों, हमें अपने मन वचन कर्म्म सदैव पवित्र रखने उचित है।

जो स्त्री मायाचार रखती है, हर बातको पति पुत्रादिसे छिपाती है तथा अन्यान्य कुटुम्बियोंसे ईर्षा द्वेष करती है वह पवित्र हृदयकी भागी नहीं है। ऐसा न कर अपना मन स्वच्छताकी ओर खींच निर्मल रखना चाहिये।

समय पर भोजन, समय पर पान, यथासमय पर सर्व कार्य्य कर बचे समयको परोपकार्य्यके विचारमें—उपायमें लगाना चाहिये। जो मनुष्य गृहस्थीकी ही उलटा-पुलटीमें निर्बल मलीन हो जाता है और जो मनुष्य धार्मिक तथा परोपकारिक कार्योंमें थोड़ा भी अपना समय लगाकर हृदयको पवित्र वायुसेवन करा देते हैं उनका हृदय पवित्र रह सक्ता है। इस लिये बहिनों! आपसकी फूट मिटा एकताका प्रचार करना चाहिये। कुभोजन, रात्रीभोजन, बाजारका अपवित्र भोजन छोड़ स्वहस्तसे बनाकर स्वच्छ ऋतु अनुकूल भोजन करना चाहिये। इसीतरह स्वच्छ वस्त्र धारण कर उज्वल शरीर रख बाह्य पवित्रता पर ध्यान रखना चाहिये।

यह पहले लिखा जा चुका है कि पवित्रताका संबंध एक बातसे नहीं है वरन् प्रत्येक कर्म्मसे है अतः हरएक कामपर ध्यान रखना उचित है जैसे बरतनको माजकर पवित्र रखना, गृहको झाड़कर पवित्र रखना, भोजनको शुद्धतासे बनाकर पवित्र रखना, इसी तरह धनको दान कर पवित्र रखना चाहिये। यदि गृह झाड़ा पौंछा न जाय तो गन्दा हो जाता है उसी तरह यदि धन केवल भोगोपभोगमेंही लगा, व गाड़-

कर रक्खा जाय और दानमें न लगाया जाय तो गन्दा हो जाता है अतः हमको चाहिये कि पवित्रताके हेतु दानमें खूब रूचि रक्खें— इसी तरह बल भी वही पवित्र है, जो दुःखी जीवोंकी रक्षामें लगाया जाय। ज्ञान भी वँही पवित्र है जो शान्ति सुख देनेवाले विद्या, शिक्षा, परोपकार्य्य और स्वात्मकल्याणके विचारमें खर्च किया जाय।

प्रिय पाठिका बहिनों! आज हम भारतवासियोंका हृदय विषयबासनाके मेघोंसे घिर गया है—अपवित्र हो गया है इसी कारण धनधान्य-धर्म-कर्म सबका ऱ्हास होता जाता है। यदि अब भी हमलोग पवित्रहृदयी होकर स्वार्थको हवन करके अपने धनका अधिकांश हिस्सा विद्याप्रचारमें, धर्म प्रचारमें तथा शिल्पशिक्षामें लगावें तो उद्धार हो सक्ता है अन्यथा नहीं। देखो, विदेशी लोग अपने धनको दे डालना कैसी छोटीसी बात समझते हैं—करोड़ों रूपया लगाकर गरीब भाइयोंको कारखाने खुला देते हैं और कीमतसे कम पर बिकवाकर रोजगार बढ़ा स्वयं घाटा सह देशवासियोंका कल्याण करते हैं। यह जो विलायती सक्कर यहां इतनी सस्ती मिलती है—कोई ख्याल करे कि योरोपमें मट्टीकी तरह जहांतहां पड़ी हो सो नहीं है वरन लाखों रूपयेका घाटा सहकर योरोपीय रियासतें स्वयं यहां भारतमें लागतसे कम कीमत पर बिकवाती हैं और भारतमाताके सुपुत्र सस्ती समझ देशी मंहगी सक्करको लात मार इसे रूचिसे खरीदते हैं।

कहिये कहां तो विदेशियोंका स्वदेशप्रेम—धनत्याग और कहां हम लोगोंका लोभ! एक क्या संपूर्ण वर्ताव हमारे अपवित्र हो रहे हैं। ऐमरीकाके धनिकोंके हजारों स्कूल—कौलिज भारतमें स्वधर्म प्रचारार्थ चल रहे हैं—सैकडों कन्याशालायें चल रही हैं—देहरादूनमें—लखनऊमें—कलकते—बम्बई-लाहोर सब प्रान्तोंमें—२—२—४—४ हजार मासिक व्यय हो रहा है। उनके पठनालयमें जाकर देखो तो क्रिश्चियन पोसाक, क्रिश्चियन वर्ताव, स्वधर्मका गुणानुवाद सर्वत्र नजर आता है, कहिये बहिनों, यह उनके स्वार्थत्याग और दानका ही फल है कि उनके धर्म और यशका डंका बज रहा है—परन्तु हम लोग जो कि धनको, तनको अपवित्र रखनेवाले धनको जमीनमें गाड़ व ब्याजपर देकर गद्दे तकियों पर दिन निकालनेवाले हैं उनका उद्धार कैसे हो? बस उद्धारका एक यही मार्ग है कि अपने तन—मन—धनको उत्तमोत्तम ढंगोंकी तरफ झुका पवित्र कर डालो। तनको परसेवाके लिये, मनको भगवद्भजन और धनको दानके लिये समझो, स्वार्थकी आहुती दे डालो, स्वयं विद्या प्राप्त कर जगतको सुखी—शान्त करनेके लिये उपाय निकालो।

स्त्री-शिक्षाका धर्मसे सम्बन्ध।

जितनी अच्छी बातें हैं सब धर्म शब्द के अन्तर्गत हैं। अन्य भाषाओं में कोई ऐसा शब्द नहीं है जो धर्म शब्द के अर्थ को पूरे तौर पर प्रकट करसके। यदि धर्म और नीति को मिला भी दें तो भी धर्म का अर्थ पूरे तौर पर प्रकट नहीं होता। भारतवर्ष के सब सुधारकों ने अपनी अपनी योग्यता के अनुसार धर्म के प्रचार पर बहुत जोर दिया। कुछ लोग उनके कहने पर चले; परन्तु बजाय इसके सब लोग धर्मात्मा बनजाते, जत्थे और थोकबन्दियां होकर परस्पर विरोध बढ़गया। हमारी समझ में आता है कि जिनकी आत्मा में प्रेम का प्रकाश अधिक है वह धर्म पर अधिक चलते हैं। साधारण तौर पर देखने से पाया जाता है कि पुरुषों की बनिस्बत स्त्रियों में प्रेम अधिक होता है। यदि धर्म के सुधारक स्त्रियों की ओर अधिक ध्यान दें तो धर्म की जड़ अधिक दृढ़ हो सकती है। बावजूदे कि स्त्रियों में मूर्खता के जहां कहीं धर्म का प्रकाश है वह स्त्रियों में ही अधिक देखा जाता है। पुस्तकों का धर्म तो अवश्य पुरुषों में अधिक होता है, कविता में पुरुषों का प्रेम बहुत जोश के साथ सुनाई पड़ता है; परन्तु दूसरों के लिये जान दे देना पतिव्रता पत्नी का ही काम है।

आजकल हरसाल, सालके खतम होने पर सोशल रिफार्म की कान्फ्रेन्स में स्त्रीशिक्षा के रेजोल्यूशन भी पास हुआ करते हैं परन्तु उनपर अमल बहुत कम होता है। यह दो तीन दिन का जोश दुमदार सितारे के समान हुआ करता है कि कुछ दिनों की चमक दमक के बाद फिर गायब होजाता है। हमारे सुधारकों को जब अपने घरों में सुधार का मौका मिलता है तब घर की स्त्रियां नहीं मानती हैं। क्योंकि उनको अच्छी शिक्षा नहीं मिली। बचपन का ब्याह, जातपात के झगड़े, आपस की अनबन, मिलकर काम करने की आदत का न होना, और बहुतसी बुरी रस्मों के कारण, सुधारकों का उनपर बस नहीं चलता। परन्तु जो लोग अपने घर का इन्तजाम आप नहीं कर सकते। वह इस योग्य नहीं हैं कि वह अपने शहर अथवा देश का प्रबन्ध अच्छी तरह से कर सकें। घर का सुधार बिना स्त्रीशिक्षा के नहीं हो सकता। अतएव हरएक देशप्रेमी का कर्तव्य है कि सबसे पहले वह अपने घरका सुधारक बने। जिन स्त्रियों पर उसका प्रभाव पड़ सकता है उनको हर तरह पर शिक्षा में मदद दें। अपने देश के अनपढ़ लोगों को नीच समझना और उनसे घृणा करना, इसका परिणाम यह हुआ कि अच्छे घरों में भी स्त्रियां नीच काम करने लगीं। सभ्य देशों में जो काम कलों और कम वेतन के नौकरों से लिया जाता है वह काम भारतवर्ष में अच्छे घरों की स्त्रियां करती हैं इस कारण उनको अच्छी शिक्षा का अवकाश ही नहीं मिलता।

जिस समय को लोग सतयुग कहते थे उसमें स्त्रियां और पुरुष दोनों ब्रह्मचर्य धारण

करके विद्या सीखते थे। विवाह के योग्य होने पर विवाह करते थे। इसी कारण उनकी सन्तान बलवान, बुद्धिवान और पराक्रमी होती थी। खान पान और रहन-सहन ऐसी अच्छी थी कि जिसके कारण उनको अपनी शक्ति और बुद्धि बढ़ाने का अवकाश मिलता था। नीच इच्छायें न पुरुषों में होती थीं और न स्त्रियों में और न उन्हें इस बात का डर था कि यदि बचपन में विवाह न हो जायगा तो सन्तान बिगड़ जायगी।

भाग्यवान ग्वालियर राज्य में श्रीमंत महाराजा माधवराव की बदौलत हर बात में उन्नति हो रही है। स्त्रीशिक्षा में भी यह राज्य और जगहों से पीछे नहीं है। यद्यपि अभी दिल्ली दूर है, तो भी प्यारी मेरी कमला राजा के मुबारिक जन्मदिन से स्त्री-शिक्षा के प्रेमियों की उम्मेदें ज्यादा कामयाबी से पूरी होती जाती हैं। यूरोप में लड़ाई शुरू होने के बाद से कन्याधर्मवर्द्धिनी सभा, स्त्रीशिक्षा की ओर अधिक ध्यान दे रही है। यह यह बात समझती जाती है कि कस्बा और शहर वही अच्छा है जहां के घर अच्छे हों परन्तु अच्छा घर वही कहलायेगा कि जहां सुघड़ स्त्री हो। बिना सुघड़ स्त्री के अच्छा घर नहीं रह सकता। इसलिये अच्छा घर बनाने के लिए स्त्रीशिक्षा की आवश्यकता है। अतएव हमें स्त्रीशिक्षा की ओर अधिक ध्यान देना चाहिये।

'नयाजी प्रताप'





[लेखक:—एक जैन महिला।]

मानव जीवनका पवित्रता एक बड़ा भारी मुख्य अङ्ग है। धर्म—अर्थ—काम-मोक्ष सबके साधनमें प्रथम इसीका आदर करना पड़ता है अतः इस पवित्रता पर हमारी सुज्ञ बहिनोंको कुछ विशेष विचार करना चाहिये। हमारे जैनाचार्योंने प्रत्येक नियम ऐसे निर्धारित किये हैं जिनमें पवित्र भाव कूट२कर भरे हुये हैं परन्तु वर्तमानमें हम लोगोंने मात्र स्नान, लेपन, साबुन लगाना इत्यादि २ बातोंमें ही इस पवित्रता देवीको शेष कर रक्खा है यह हम लोगोंकी बड़ी मूर्खता है। पवित्रता यथार्थमें कुछ और वस्तु है—मनुष्यके प्रत्येक वर्तावमें नियमानुकूलता और सदाचरण ही पवित्रताकी जड़ है। पाप रहित सद्गुण सहित परिणमनका नाम ही पवित्रता है, यह तीन मार्गोंसे मनुष्यमें प्रवेश करती है। मन द्वारा—वचन द्वारा—कर्म द्वारा। कोई एक मार्ग सूका रह जाय तो पवित्रता अधूरी रह जाती है। इसमें भी मानसिक पवित्रता अन्यान्य बाह्य पवित्रताओंकी जननी है, इस लिये सबसे पहले मनुष्यको 'हृदय सरल रखना चाहिये।

भारतवर्षकी संगीत विद्या.*

ભારતે સંગીત વિદ્યામાં બહુ ભારે ઉન્નતિ કરી છે. નાદ અને ધ્વનિનું જ્ઞાન જેટલું ભારતે પ્રાપ્ત કર્યું છે તેટલું કોઈ પણ દેશે કર્યું નથી. સંગીત પણ એવુંજ છે અને તે પરમાનંદનો ભંડાર ખોલવાની કુંચી છે.

સંગીતની ઉત્પત્તિ સાત સ્વરોથી થઈ છે. એ સાત સ્વર આદ્યક્ષરની અનુસાર સ० રિ० ગ० મ० પ० ધ० નિ० કહેવાય છે.

સંગીતરૂપી સુંદર પટ-વસ્ત્રમાં એ સાતે સ્વર સમાઈ જાય છે. એ સ્વર એક બીજામાં અનેક પ્રકારે મળે છે અને એ મેળથી અનેક પ્રકારની મનોરંજક રાગણીઓ કે જે પોતપોતાના રૂપમાં પૃથક પૃથક છે તે ઉત્પન્ન થાય છે. સાતે સ્વરોના વિશેષ રીતે મળવાથી ૭ રાગ ઉત્પન્ન થાય છે. પ્રત્યેક રાગની પાંચ પાંચ રાગણીઓ છે, તેમાં પોતપોતાનાં રાગના સ્વર પ્રધાનરૂપે હોય છે. આ પ્રકારે રાગ અને રાગણીઓની સંખ્યા ૩૬ છે, અને એજ મુખ્ય રાગ-રાગણીઓ કહેવાય છે. તેમનાં સ્વર પરસ્પર મળવાથી અનેક નાની નાની રાગણીઓ બને છે. દરેક જાતની રાગણીઓનું જ્ઞાન વધારે થાય એટલો હેતુથીજ તેના નામ જુદાં જુદા રાખવામાં આવેલા છે.

રાગ-રાગણીઓમાં વિલક્ષણતા એ છે કે, તે પોતપોતાની ઋતુ અને પોતપોતાના સમયેજ ગવાય છે. પ્રત્યેક રાગ-રાગણી ગાવાનો સમય અને ઋતુ જુદી છે. આ નિયમ મનંકલ્પિત નથી પરંતુ શબ્દ-શાસ્ત્રના ગૂઢ આશયોના આધારવાર તેનો નિશ્ચય થયો છે. શબ્દ-મંડળમાં જે અનેક લહેરો ઉત્પન્ન થાય છે તેના પ્રવાહનું રૂપ પૃથક પૃથક ઋતુઓ અને સમયમાં કેવું થાય છે તે શબ્દશાસ્ત્રવેત્તા બતાવી શકે છે. પદાર્થવિદ્યા બતાવે છે કે, પ્રકાશ અને અંધકારનો પ્રભાવ શબ્દોની લહેરોપર જુદા જુદા પ્રકારનો થાય છે. કેટલીક શબ્દ તરંગો એવી થાય છે કે જેની સહાનુભૂતિ પ્રાકૃતિક પદાર્થોની સાથે થાય છે, અને એટલા માટે તે સુગમતાથી સંભળાય છે. કેટલીક એવી થાય છે જે સહાનુભૂતિના અભાવથી કઠીનતાથી સંભળાય છે. ગાવામાં ઋતુ અને સમયનો વિચાર આ સૂક્ષ્મ કારણો માટેજ કરવામાં આવ્યો છે. આ વિષય પદાર્થવિદ્યાદ્વારા નક્કી કરવા યોગ્ય છે. આ સંબંધમાં એ પણ યાદ રાખવું જોઇએ કે, દરેક ઋતુ બબ્બે મહિનાની હોય છે. અર્થાત્—

વસંત	ચૈત્ર-વૈશાખ
ગ્રીષ્મ	જ્યેષ્ટ-આષાડ
વર્ષા	શ્રાવણ-ભાદ્રપદ
શરદ	આશ્વિન-કાર્તિક
હેમન્ત	માગસર-પોષ
શિશિર	માહ-ફાગણ.

મુખ્ય મુખ્ય રાગો અને રાગણીઓના નામ તથા તે ગાવાની ઋતુ અને સમય નીચે પ્રમાણે છેઃ—

રાગ. રાગણી.	ઋતુ.	સમય.
૧-ભૈરવ	શરદ	પ્રાતઃકાળ.
૧-ભૈરવી	શરદ	પ્રાતઃકાળ.
૨-બૈરાડી	,,	દિવસનો છેલ્લો વખત
૩-મધુમાધવી	,,	દિવસનો ચોથો ભાગ
૪-સૈન્ધવી	,,	,,
૫-બંગાલી	,,	,,

* "સરસ્વતી" માં કન્નોમલ, એમ. એ. એ લખેલા હિન્દી લેખનો અનુવાદ.

२–માલકોશ	શિશિર	રાતનો ચોથો ભાગ.
૧–ટોડી	,,	મધ્યાનકાળ.
૨–ગૌરી	,,	દિવસનો ચોથો ભાગ.
૩–ગુણકલી	,,	દિવસનો પહેલો ભાગ.
૪–ખંભાતી	,,	રાતનો ત્રીજો ભાગ.
૫–કુંભિકા	,,	રાતનો ચોથો ભાગ.
૩–હિન્ડોલ	વસન્ત.	દિવસનો પહેલો ભાગ.
૧–રામકલી	,,	રાતનો ચોથો ભાગ.
૨–વૈશાખી	,,	દિવસનો પહેલો ભાગ.
૩–લલિતા	,,	,,
૪–બિલાવલ	,,	,,
૫–પટમંજરી	,,	દિવસનો બીજો ભાગ.
૪–દીપક	ગ્રીષ્મ.	મધ્યાનકાળ.
૧–દેશી	,,	,,
૨–કુમોદિની	,,	,,
૩–નટ	,,	દિવસનો ચોથો ભાગ.
૪–કેદારા	,,	મધ્યાન કાળ.
૫–કાન્હરા	,,	રાતનો પહેલો ભાગ.
૫–શ્રીરાગ	હેમન્ત.	દિવસનો ચોથો ભાગ.
૧–માલશ્રી.	શરદ	મધ્યાન કાળ.
૨–મારૂ.	હેમન્ત	દિવસનો ચોથો ભાગ.
૩–ધનાશ્રી	,,	મધ્યાન કાળ.
૪–વસન્ત.	વસન્ત	દિવસનો બીજો ભાગ.
૫–આશાવરી.	હેમન્ત	મધ્યાન કાળ.
૬–મેઘમલાર	વર્ષા	રાતનો ચોથો ભાગ.
૧–ટંક	,,	,,
૨–મલાર	,,	રાતનો પહેલો-ત્રીજો ભાગ.
૩–ગુર્જરી	,,	પ્રાતઃકાળ.
૪–ભૂપાલી	,,	રાત
૫–વિભાસ	,,	રાતનો ચોથો ભાગ

આમાંથી પ્રત્યેક રાગ-રાગણી પોતપોતાના રૂપમાં અતિ સુંદર, મનોહર અને મધુર છે, સાંભળનારના ચિત્તને તે બહુજ વિલક્ષણતાથી આકર્ષિત કરે છે. તે આત્માના સુપ્ત અને શુભ ભાવોને જાગૃત કરી પરમાનંદના સમુદ્રની લહેરોમાં ચિત્તને પરોવી દે છે તથા ઇંદ્રિય સુખને, આત્માનંદનો પણ ચમત્કાર બતાવે છે. તે સમયે એવો ભાસ થાય છે કે, સ્થૂળ શરીરના બંધનો જેનાથી આત્મા જકડાયલો છે તે ધીમે ધીમે નાશ થતા જાય છે અને તે એટલે સુધી કે સચ્ચિદાનંદનો અનુભવ થવા લાગે છે.

આ રાગ-રાગણીઓમાં એક બીજી વિલક્ષણતા એ છે કે, પ્રત્યેકનું માનુષી સ્વરૂપ વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે. ઉદાહરણ તરીકે ભૈરવ રાગની ભૈરવી રાગણીનું રૂપ આ પ્રમાણે છે–

ભૈરવી ગૌર-વર્ણ, વિશાળ નેત્રવાળી એક તરૂણ સ્ત્રી છે. તેણે સફેદ સાડી અને લાલ રંગની કંચુકી (કાંચળી) પહેરેલી છે. ચંપાના ફૂલોની માળા તેના ગળામાં છે, સ્ફટિક શિલાના આસનપર બેસી તે મહાદેવજીના મુકુટની પૂજા કરી રહી છે અને તાલ આપી આપી ગાવામાં મશગુલ છે.

મેઘમલારની રાગણીઓમાં મલાર રાગણીનું રૂપ આ પ્રકારે વર્ણવ્યું છે–

મલાર રાગણી અતિ કોમળાંગી, ગૌર-વર્ણ તરૂણ સ્ત્રી છે. તેના હાવ, ભાવ, કટાક્ષ અતિ મનોહર છે. તેનો કંઠ સુંદર અને વાણી બહુજ મધુર છે. વિયોગ-દુઃખના ઉદ્વેગને મોટી ધીરતાથી સહેતી, હાથમાં વિણા લઈ તે બજાવી રહી છે. પોતાના પ્રિયતમના સદ્ગુણોનું સ્મરણ કરતી કરતી મુખનો અશ્રુધારાવડે અભિષેક કરી રહી છે.

સામાન્ય મનુષ્યોને આ વર્ણન કપોળ-કલ્પિત લાગશે, પરંતુ જેઓને સાહિત્ય શાસ્ત્રનો અનુભવ છે તેમને આ વર્ણન ગંભીર અર્થના દ્યોતક જણાશે. આ રૂપ-વર્ણનોના આધારપરજ સાહિત્ય અને સંગીતનું સમ્મેલન થયું છે. સંગીતનું ગૌરવ સાહિત્યના ગૌરવથી પણ અધિક છે.

સાહિત્ય વિદ્યા તે છે કે જે સમસ્ત ભાવ-મંડળની સમાલોચના કરી પ્રત્યેક ભાવ-

અને રસની સીમા બાંધે છે તથા જે જે રૂપ અને દશામાં ભાવો અને રસોનો પ્રાદુર્ભાવ થાય છે તેનું નક્કી કરે છે. રસની સંખ્યા ૯ છે. અર્થાત્ (૧) શ્રૃંગાર. (૨) હાસ્ય. (૩) કરૂણા. (૪) વીર. (૫) શાંત. (૬) અદ્‌ભુત. (૭) ભયાનક. (૮) રૌદ્ર અને (૯) બીભત્સ. આમાંથી દરેક રસનો પ્રાદુર્ભાવ થવા માટે પાંચ કારણો યા ભાવોની આવશ્યકતા છે– અર્થાત્ (૧) સ્થાયીભાવ (૨) વિભાવ (૩) અનુભાવ (૪) સાત્વિકભાવ અને (૫) સંચારી ભાવ. આ ભાવોથી પ્રત્યેક રસનો પ્રાદુર્ભાવ પુરૂષ અથવા સ્ત્રીમાં થાય છે. જેઓને સાહિત્યનો સારી રીતે અનુભવ થયો છે તેઓને તરતજ માલુમ પડી જાય છે કે આમાં કયો ભાવ અને રસ પ્રધાન છે.

સાહિત્ય વિદ્યાની સહાયતા વડે વિચાર કરવાથી એ માલુમ પડી જાય છે કે કયા રાગ અને રાગણીમાં કયો રસ પ્રધાન છે તથા તે રસ પ્રધાનતાના કારણે કયો વિષય તેમાં ગાવા યોગ્ય છે. જુઓ—

ભૈરવી રાગણીના રૂપ–વર્ણનથી, સાહિત્ય–દ્વારા એ માલુમ પડે છે કે તે એક તરૂણ સ્ત્રી છે અને તેનો પતિ પરદેશમાં છે. અર્થાત્ તે પ્રોષિત–પતિની નાયિકા છે. જે પતિવિયોગના સમયને મહાદેવજીની આરાધના કરી જેમ તેમ વ્યતિત કરી રહી છે. તેના ભાવ શાંતિપૂર્ણ અને દેવપૂજા-વિશિષ્ટ છે, એટલા માટે આ રાગણીમાં શાંત રસજ પ્રધાન છે. અતએવ જે કાંઇ તેમાં ગાવામાં આવે તે શાંત–રસ સૂચકજ હોવું જોઇએ. કદાચ શ્રૃંગાર, વીર ઇત્યાદિ રસોની કોઇ ચીજ તેમાં ગાવામાં આવે તો રસાભાસ યા રસ–વ્યત્યાસ થઇ જશે.

મલાર રાગણીના વર્ણનથી પણ તે એક [illegible] અને તરૂણ પ્રોષિત–પતિની નાયિકા [illegible] પોતાના વિયોગ [illegible] કરતી નથી કે જેવી રીતે ભૈરવીના વિષયે કહેવામાં આવ્યું છે. તે પોતાના પ્રિયતમના વિયોગથી માત્ર અત્યંત વ્યાકુલ છે. અતઃ તેમાં શાંતરસ પ્રધાન નથી પરંતુ વિયોગ દુઃખથી જે રસ ઉત્પન્ન થાય છે તે રસ પ્રધાન છે. એવા રસને સાહિત્યવેત્તા વિપ્રલમ્ભ-શ્રૃંગાર રસ કહે છે.

આથી સિદ્ધ છે કે જે ચીજો મલાર રાગણીમાં ગાવામાં આવે તે વિયોગદુઃખ સૂચક હોવી જોઇએ. કદાચ કોઈ બીજા રસની ચીજ તેમાં ગાય તો તે ઠીક લાગશે નહિ.

આથી સ્હમજાયુંજ હશે કે, રાગો અને રાગણીઓના જે સ્વરૂપ વર્ણન કરવામાં આવેલાં છે તે નિરર્થક નથી પરંતુ ગંભીર અર્થથી ભરપુર છે. તે દ્વારા રાગ–રાગણીઓનો પ્રધાન રસનો નિર્ણય થાય છે અને એ જાણવામાં આવે છે કે તેમાં કઇ ચીજ ગાવાથી સારી લાગશે.

રાગ–રાગણીઓથી સંબંધ રાખનાર રસ અને તેને લગતી ચીજોનું જ્ઞાન પ્રાચીન ભારતના સંગીતજ્ઞોને અવશ્ય હતું, કેમકે તે સમયે સંગિત વિદ્યા ઉન્નતિના શિખરપર પહોંચેલી હતી. હવે તેની અવનતિ છે, એટલા માટે આજકાલના ઘણાજ થોડા ગવૈયાઓને એનું જ્ઞાન છે; અને તેથીજ તેની મનોહરતા અને ગૌરવમાં ઘણીજ ન્યુનતા આવી ગઈ છે. જ્યાં સુધી રસ અને ભાવ વિગેરેની અનુકુળતાનું જ્ઞાન થાય નહિ ત્યાં સુધી સંગીતવિદ્યાનો સુધારો થઇ શકશે નહિ એટલા માટે દરેક દેશ–હિતૈષીઓએ આ બાબતમાં ખૂબ વિચાર કરવો ઘટે છે. એ બાબતનું જ્ઞાન કોને નહીં હોય કે, આજ કાલ રાગણીમાં પ્રાયઃશ્રૃંગારરસની ચીજો ગાવામાં આવે છે, અને એવીજ દશા બીજી રાગ રાગણીઓની છે.

સાથે એ પણ યાદ રહેવું જોઇએ કે જે ચીજો આજકાલ ગાવામાં આવે છે તે પ્રાયઃ ભાષા અને વ્યાકરણના વિચારથી બહુધા તિર

સ્કાર કરવા યોગ્ય હોય છે, કારણકે મૂર્ખ ગવૈયાઓએ મનગમતી ચીજો બનાવી ગાવા માંડી. આથી પ્રાચીન પવિત્ર હિન્દુ સંગીતને મોટો ધક્કો પહોંચ્યો છે એ દુઃખની વાત છે, માટે એનો ઉપાય થવો જોઇએ.

સારાંશ એ કે, પહેલાં રાગો અને રાગણીઓના પ્રધાન રસને અનુકુળ ગાવાની ચીજો હોવી જોઈએ. બીજું એ કે, તે ચીજો શુદ્ધ અને સાસંકાર હોવી જોઈએ કે જેથી માત્ર કાનનેજ આનન્દ ન થાય પરંતુ અર્થ વિચારથી મન અને આત્માને પણ આનંદની પ્રાપ્તી થાય. સુરદાસ અને તુલસીદાસના પદો સંગીત વિદ્યાના આદર્શ રૂપ છે માટે તેને જેમ બને તેમ વધારે જાહેરમાં લાવવા જોઇએ. સંગીતના સુધારાનો આ એક બહુજ સરળ ઉપાય છે.

આશાભાઈ અમુલખ શાહ.

नवीन—मराठी जैन ग्रंथ.

सागारधर्मामृत—पंडित आशाधरजी कृत संस्कृत टीका मराठी अर्थ सहित कापडी बायंडिंग, यांत उत्तम रीतिनें श्रावकाचाराचें वर्णन केले आहे. कि. २ रु.

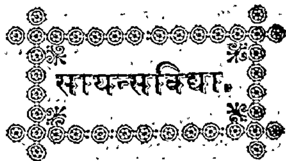
अमितगति श्रावकाचार—मूळ श्लोक मराठी अर्थसहित किंमत रुपये १॥.

आत्मानुशासन—गुणभद्राचार्यकृत मराठी अर्थ सहित ग्रंथाचे आकारांत गते वेष्टन सहित किंमत रुपये २.

बाळबोध जैन धर्म भाग २ रा व ३ रा—मराठी किंमत चार आणे. टपाल खर्च निराळा.

या शिवाय मराठी, हिंदी, संस्कृत मोरेची जैनधर्मी पुस्तक आमचे कडे मिळतात.

जैन बुक डेपो—सोलापुर.



(લેખક—શા. નાનચંદ પુંજાભાઇ બી. એ. વડોદરા.)

આજનો જમાનો સાયન્સનો ગણાય છે. સાયન્સ એટલે વિદ્યા. પણ અંગ્રેજીમાં સાયન્સ શબ્દથી અનેક જાતની વિદ્યા સૂચિત થાય છે. જેમકે ફીઝીક્સ, કેમીસ્ટ્રી, બૉટની, ઝુલૉજી, વિગેરે ઘણી છે. ગયાં પચાસ સો વર્ષથી તાર, વરાળયંત્ર, ફોટોગ્રાફી, ફોનોગ્રાફ, ટેલીફોન, એરોપ્લેન, માર્કોની, વાયરલેસ ટેલીગ્રાફી વિગેરે અનેક શોધો થઇ છે તે સાયન્સનાજ પ્રતાપ વડે. આવી અગત્યની વિદ્યાથી ફક્ત ગુજરાતી ભાષા જાણનારા ઘણા અજ્ઞાત રહે છે તેથી દુનિઆ ઉપર શી શી નવી શોધો થાય છે તે તેમના જાણવામાં આવતું નથી તથા દુનિઆની પ્રગતિની સાથે ન રહેતાં તેવા સોકો બસેં ત્રસુસેં વરસ જેટલા જ્ઞાનની બાબતમાં પાછળ રહે છે. જો કોઇ નવીન વસ્તુ જોવામાં આવે તો ચમકી, અજાયબ પામી મોં પ્હોળું કરી જોયા કરે છે તોપણ ખરો ભેદ સમજી શકતા નથી. ઘોડા વગરની ચાલતી ટ્રામ જુએ છે તો બોલી ઉઠે છે કે " આવા બળદીઆ વગર આ ગાડી ચાલે છે જોતો ખરો " !!! ત્યારે બીજો કહેશે "અરે આવા મારી હાદરી એમ કરી દેતી હશે !!! વિગેરે અજ્ઞાનતાનાં સેંકડો ઉદાહરણો આપી શકાય. અનેક જાતની સાયન્સની શાખાઓમાંથી પ્રથમ આપણે કેમીસ્ટ્રીનાં કેટલાંક મૂળતત્વોનો વિચાર કરીશું. કેમીસ્ટ્રીમાં [illegible] વિગેરેના ગુણદોષ [illegible]

પ્રથમ આપણે હવાના વિષે વિચાર કરીશું.

હવા હવા શું છે, તે કેમ ઝેરી બને છે, ઝેરી હવા રહેવાનો સંભવ ક્યાં હોય છે એવી બાબતો નહીં સમજનારાઓમાંના ઘણા અકાળ મૃત્યુ પામે છે, કરોડો પ્રાણીઓ મોતને આધીન થાય છે. માટે હવા એ સૌથી અગત્યનો વિષય છે. વાંચનાર, કદાચ હું તમને સાયન્સના ઉંડા ગૂઢ તત્ત્વોમાં ઉતારું તો કંટાળો લાવશો નહિં, કદાચ અટપટાં નામ યાદ રાખવા પડે તો ગભરાશો નહિં. હવા એને ઇંગ્રેજીમાં air. (ઍર) કહે છે. આપણી પૃથ્વીનો ગ્રહ નીચે ઉંચે ચાળીસ પચાસ માઇલ સુધી વાતાવરણથી ઘેરાયેલો છે. જૈનશાસ્ત્ર પ્રમાણે ઘનવાત, તનવાત અને મનવાત એવા ત્રણ જાતના વાયુથી પૃથ્વી ઘેરાયેલી છે. હવા કે જેને આપણે આંખે જોઇ શકતા નથી, સ્પર્શથી આપણને આટલી બધી કોમળ માલુમ પડે છે તે કેટલીક વખતે એવું પ્રચંડ રૂપ ધારણ કરે છે કે ઝાડનાં ઝાડ ઉખેડી નાંખે છે. મુસાફરોને તોબા પોકરાવે છે. નાનાં હોડકાંને ડુબાવી દે છે અને દરિયામાં અનેક જાતના દેખાવ બતાવે છે. ત્યારે હવા એ નામ મટી તેને લોકો પવન કહે છે. પવનની મંદમંદ લહેરો ઘણી સારી લાગે છે પણ વાવાઝોડાના રૂપમાં પવન પ્રાણી માત્રને ગભરાવી નાંખે છે. સ્થીર સ્થીતિમાં હવા કહીએ છીએ. ગતિમાન સ્થીતિમાં પવન કહીએ છીએ. હવાની ગતિ ઉત્પન્ન થવાનું મુળ કારણ સૂર્ય છે. સૂર્યના તાપથી ઉની થયેલી હવા ઉંચે ચડે છે અને એ ખાલી પડેલી જગ્યાએ ઠંડી હવા દાખલ થાય છે. આવી રીતે જગ્યાની ફેર બદલી કરતાં પવન ગતિમાન આપણને માલુમ પડે છે.

હવા એ એક મિશ્ર પદાર્થ છે. તેની સમાંઆ ઓક્સીજન (પ્રાણવાયુ), કાર્બોનીક (પાણીવાયુ), (જૈ...), નાયટ્રોજન, એમોનીઆ વરાળ, વગેરે નામનાં આઠ નવ વાયુદ્રવ્યો ભળેલાં છે. જેમ જેમ સાયન્સમાં નવી નવી શોધો થાય છે તેમ તેમ વાયુદ્રવ્યોની સંખ્યામાં વધારો ઘટાડો માલુમ પડે છે. હવાની અંદર દરેક 'દ્રવ્યનુ' સેંકડે પ્રમાણુ નીચે મુજબ છે.

ઑક્સીઝન	૨૦
કાર્બોનીક ઍસીડ ગ્યાસ	•૦૪
નાયટ્રોજન	૭૯
વરાળ	•૯૬
	૧૦૦•૦૦

અને બીજાં દ્રવ્યો બહુ સૂક્ષ્મ પ્રમાણમાં છે. દરેક વાયુદ્રવ્ય પોતાને માટે નિયત થયેલા ભાગ પ્રમાણેજ ભળેલા રહે છે. જો આમાંથી એકાદ દ્રવ્ય ઓછા વધારે પ્રમાણમાં થઇ જાય તો પ્રાણીમાત્રને આ દુનીઆની હવા દમમાં લેવાનું કામ ઘણું મુશ્કેલ થઇ જાય બલ્કે મરી પણ જાય.

વરાળ. જુઓ વરાળનો સો ભાગનો એક ભાગ પણ પૂરો નથી. પણ એથી ઓછી થઇ જાય તો આપણી ચામડી જે સુંવાળી લાગે છે તે બરડ થઇ અંદર ચીરા પડે, પાણીનો શોસ બહુ પડે. જ્યારે હવાની અંદર વરાળનું પ્રમાણ ઉનાળામાં બહુજ વધી જાય છે ત્યારે વરાળનાં વાદળાં ઠંડી હવા લાગવાથી પાણી થઇ જાય છે અને વરસાદ રૂપે આપણને દેખાં દે છે. વરાળ એ નજરે જોઇ શકાતી નથી. તપેલીમાં જે વરાળ જોઇએ છીએ તે ઠંડી હવા લાગવાથી ઝીણાં ઝીણાં બિંદુ થયેલાં જોઇએ છીએ. વરાળની વધારે માહીતિ જ્યારે અગ્નિ બાબત વિચાર કરીશું ત્યારે થશે.

ઑક્સીજન. ઑક્સીઝન એ પ્રાણવાયુ છે. પ્રાણનું રક્ષણ કરે છે, તેમજ અગ્નિનું પણ રક્ષણ કરે છે. જ્યાં આ દ્રવ્ય હોય નહિ ત્યાં પ્રાણ કે અગ્નિ પણ હોય નહિ એમ સમજવું.

ખાસ આ ઑકસીઝન હવા બનાવી શીશામાં ભરી સળગતી મીણબત્તીનો કટકો ઉતારીશું તો માલુમ પડશે કે તે બહારનાં કરતાં વધારે ઝગઝગાટ રીતે બળે છે. અંદર ભરાયલું કોઇ જીવ જંત ઘણા વખત સુધી જીવી શકે છે. પણ જો આપણને શુદ્ધ ઑકસીઝન હવામાં મળે તો કામનો નથી. જો હવા એકલા આ દ્રવ્યની બનેલી હોત તો આપણો શ્વાસોશ્વાસ એટલી ઝડપથી ચાલત કે આપણે જીવી શકીએજ નહિં. એટલા માટે જેમ કોઇને દુધ વાયડુ પડે તો ગંઠોડાની કાંકરી નાંખે તો માફકસર થઇ જાય છે તેમ પૃથ્વી ઉપરના જીવો માટે કુદરતે કરૂણા કરી હવાની અંદર નાયટ્રોજન નામનું દ્રવ્ય પુષ્કળ જથામાં ભેળવેલુ છે.

कार्बोनीक एसीड ग्यास. આ બધાં વાયુદ્રવ્યોમાં માણસ જાતે કાર્બોનિક એસીડ ગ્યાસથી બહુ સંભાળવાનું છે. તેનું નામજ પ્રાણહર વાયુ છે. હવામાં તેનું પ્રમાણ જુઓ કેટલું બધું થોડું છે! જો કદી વધારે થઇ જાય તો પ્રાણી માત્રની કમબખ્તી સમજવી. નાક વાટે આપણે શ્વાસ લઇએ છીએ તે હવા ફેફસામાં જાય છે. પછી થોડીવારે આપણે પાછા નાક વાટે જે ઉચ્છ્વાસ કાઢીએ છીએ તેમાં વરાળ અને ઘણા જથામાં આ ઝેરી દ્રવ્ય હોય છે આપણા ઉચ્છ્વાસમાં વરાળની ખાત્રી કરવી હોય તો કાચના તકના ઉપર અથવા સ્લેટ ઉપર તમારો ઉચ્છ્વાસ કાડશો તો પાણી થઇ ગયેલી દેખાશે. ઉનાળે ચોમાસે આપણે જે હવા કાઢીએ છીએ તેની વરાળ શુદ્ધ વરાળ રૂપેજ હોવાથી નજરે દેખાતી નથી પણ શીયાળામાં જુઓ કેવા નાક મોં વાટે ગોટેગોટા નીકળે છે તે શું છે? તે વરાળ નીકળતાં નીકળતા ઠંડી હવા લાગવાથી પાણીનાં બિંદુ રૂપે બદલાઇ જાય છે તેથીજ દ્રષ્ટીગોચર થાય છે. કાર્બોનીક એસીડ ગ્યાસ બધાં વાયુદ્રવ્યો કરતાં ભારે છે. જ્યારે પવન હોતો નથી અને બારી બારણા સજડ હોય છે ત્યારે માણસના ઉચ્છ્વાસમાંનો કાર્બોનીક એસીડ ગ્યાસ તથા દીવા દેવતામાંથી નીકળતો ભોંયતળીએ એકઠો થયાં કરે છે. તેટલા માટે તથા ભેજ ન લાગે તે સારૂ પણ ખાટલાપર સૂવું તંદુરસ્તી માટે ઘણું સારૂ છે. આ કાર્બોનિક એસીડ ગ્યાસથી કોઇ પ્રાણી કે અગ્નિ બચી શકતું નથી. જો આપણે મોટા શીશામાં મીણબત્તીનો કટકો સળગાવીએ તો થોડીવારમાં તે હોલાઇ જશે. કારણકે મીણબત્તી પોતે કાર્બન નામનો પદાર્થ કાઢે છે તે હવાના ઓકસીઝનની સાથે મળી જઇ કાર્બોનિક એસીડ ગ્યાસ પેદા કરે છે. આવીજ રીતે જ્યાં જ્યાં કંઇ બાળવામાં આવે છે ત્યાં ત્યાં તે બને છે. જો આ કાર્બોનિક એસીડ ગ્યાસવાળા શીશામાં કોઇપણ સળગતી મીણબત્તીનો કટકો અંદર મુકીએ તો તે હોલાઇ જશે. જેમ મીણબત્તી હોલાઇ જાય છે તેમજ કોઇ નાનું જંતુ જોગ જોગે અંદર પડે તો તે પણ મરી જાય. આ ઉપરથી તમારા સમજવામાં આવ્યું હશે કે પ્રાણ તેમજ અગ્નિનો બચાવ કાર્બોનિક એસીડ ગ્યાસ કરી શકતી નથી. આ હવા ભારે હોવાથી ટાંકા, સાંકડા હવડ કુવા, મોટા વહાણના ભોંયરા, ખાણો વીગેરેમાં ભરાઇ રહે છે. માટે કોઇ માણસને ટાંકામાં ઉતરવું હોય તો પ્રથમ દીવો ઝગઝગાટ બળ્યા ન કરે ત્યાં સુધી ઝેરી હવા ભરાયલી છે તેમ સમજવું. આપણાં ઘરોમાં અને કારખાનાનાં હમેશાં અગ્નિથી કાર્બોનિક હવા પેદા થાય છે. પણ હવામાં એકદમ મળી જવાંથી માણસને નુકશાન કરતી નથી.

વળી હવા ઝાડપાન દ્વારાએ પણ શુદ્ધ થાય છે. ઝાડ પોતાના જીવનને માટે હવામાંથી કાર્બોનિક હવા ખેંચે છે. અને દિવસે એટલે સૂર્યના તાપથી અંદર આવેલો કાર્બો... રૂપે ...વાથી પુષ્પકરસ થઇ કાર્બન ... છુટો પડે છે. આ

ઝાડની અંદર રેસા લાકડાં વીગેરે બને છે. અને ઑક્સીજન પાંદડાં વાટે બહાર નીકળ્યા કરે છે. આ ક્રિયા સૂર્ય હોય ત્યારે હમેશાં થયા કરે છે. માટે દિવસે ઘર આગળ ફુલઝાડ રાખવાથી હવા શુદ્ધ મળે છે. રાત્રે સૂર્ય નહિ હોવાથી ઝાડની અંદરનો કાર્બોનિક છુટો પડી શકતો નથી તેથી કાર્બોનિક ઍસીડ ગ્યાસ પાંદડાં વાટે નીકળ્યા કરે છે માટે રાત્રે ઝાડ પાન સારાં નથી. દિવસે ઝાડ ઑક્સીજન કાઢે છે તે પ્રત્યક્ષ જોવું હોય તો એક મોટા શીશામાં ડાંખળીવાળાં પાંદડાં નાંખી પાણી ઠેઠ સુધી ભરવું. એક પણ પરપોટો રહે નહિ પછી કાચનો દાટો મારી તડકે મુકશો તો થોડી વારમાં મથાળે હવાના પરપોટા એકઠા થવા માંડશે. જો આની અંદર કોઇ જીવ જંત હોય તો તે મરી નહીં જતાં જીવ્યા કરશે. કારણ કે જે હવાના પરપોટા થશે તે ઑક્સીજન હવા છે તેની પરિક્ષા પાછળ જણાવ્યા પ્રમાણે કરવી.

વેસ્ટ ઇંડીઝ ટાપુ જેવા પ્રદેશની હવા ખરાબ ગણાય છે, કારણ કે ત્યાં ઝાડપાલો જલદીથી ઉગી નીકળે છે તેથી જોઇએ તે કરતાં વધુ પ્રમાણમાં કાર્બોનિક હવા તેમની અંદર દાખલ થાય છે. અને આ વધારેની હવા કાર્બોનિક ઍસીડ ગ્યાસ તરીકેજ દહાડે પણ બહાર નીકળે છે માટે આવા પ્રદેશની હવા માણસ જાતને માફક આવતી નથી.

(અપૂર્ણ)

खुली चीठी

भारत माताकी सेवामें

(लेखक:-पं. लोकमणि जैन-गोठेगांव C. P.)

श्रीमती पूज्यनीया वीरजननी 'भारतमाता' की सेवामें नमस्कार!!! भारतमाता! आपकी सेवामें यह दास पत्र रूपमें उपस्थित होता है। आशा है आप हमारी परिस्थितिको ध्यानसे सुनेंगी और पत्रोत्तर देनेमें भी अपनी उदार कौमुदीको न संकोचेंगी।

आप हमारी माता हैं, सच्ची जननी हैं हम आपके बालक हैं; माताके समक्ष बालकोंको अपना दुःख सुख सुनाना यह अनादिकी परिपाटी है यह नियम आधुनिक न होकर बहुत प्राचीन है। प्राचीन होनेसे ही इसमें महत्व है। माताके ही समक्ष दुःख सुख निवेदन करना इसमें भी एक प्रबल कारण है वह कारण यहांपर तो इतनेमें ही समझिये कि माताका जितना घनिष्ट सम्बन्ध सन्तानसे होता है उतना और किसीका नहीं होता। दूसरा कारण यह भी है कि 'पुत्र कुपुत्र हो जाता है, पर माता कुमाता नहीं होती, माताका सन्तान पर कृत्रिम प्रेम न होकर वास्तविक प्रेम होता है, भरतको उनकी माता द्वारा राज्य दिलाना उस समय राम, लक्ष्मणको राज्यत्याग जंगलमें वास

करना, अपने पुत्र भरतको राज्यलक्ष्मीसे विभूषित देख माताका परम प्रसन्न होना। यह मातृवात्सल्यताका एक माननीय उदाहरण है। और सत्य है!

माता! हम तुम्हारी गोदमें ही बैठे२ दुःखी हैं। आप हमारी परिस्थिति अच्छी तरह जानती हैं पर जो हम आपके समक्ष दुःख रोनेके लिये प्रस्तुत हुए हैं वह सिर्फ इस लिये कि 'बालक जबतक न रोवे—माता दूध नहीं पिलाती,' माता! यद्यपि आपकी दृष्टि हमारे प्रति जैसी की तैसी सौम्य बनी हुई हैं वह आपका निर्व्याज वात्सल्य आज भी हमारे रोम२ में झलक दे रहा है। पर कई प्रबल आवरण माता! उसे प्रकट नहीं होने देते। वे आवरण आपसे छुपे नहीं हैं। पर हम अवश्य उन्हें जान नहीं सकते या जिन उपायोंसे हम जान सकते हैं। वे उपाय हमारी 'कूपमण्डूकबुद्धि' से, कोसों दूर निवास करते हैं।

माता! आपको हम पत्र लिख रहे हैं इसका कारण तुच्छ और हेय नहीं है। तुच्छ और हेय के न होनेमें एक प्रमाण है, जो कि आप आद्योपान्त पत्रावलोकनसे जान सकेंगी।

माता! कल तक तो हम मायामयी निद्रामें परम लीन थे तुम्हारी ही गोदमें सो रहे थे। आधिरात्रिका समय था जिसमें भी सावनकी रात्रि, फिर भला ऐसे समयमें चर्मचक्षु देखही क्या सकते थे! ठीक इसी समय हमें निद्रा-देविने अपनी पर्यंकमें लिटा लिया। उस समय हे भारत माता! हमें तुम्हारे दर्शन हुए। तुम्हें हमने पहिले कभी देखा नहीं था इसलिये हम न जान सके कि आपही हमारी पूज्य जननी हैं। पर आपकी सौम्य मूर्ति उस समय ऐसी विचित्र थी कि हम शीघ्रही समझ गये कि आप हमारी जननी हैं। आपके चौंसठ करोड़ करकमल और इतनेही पादपद्म तथा बत्तीस करोड़ शिर देखते ही हमारे होश हवास उड़ गये. हम अवाक् हो गये तब आपने दो हाथोंसे हमें उठा लिया हम उस समय आपका वास्तविक स्वरुप न देख सके आप थोड़े ही समयमें अन्तर्धान हो गई। हम वहीं पड़े रहे।

प्रातःकाल हुआ संसार आज हमें विचित्र रूपमें दृष्ट पड़ा। माता! जैसी हमने आपकी पूर्वमें प्रशंसा सुनी थी, जैसा आपको लोगोंने महत्व दे रक्खा है, माता, हम उनमेंसे एक भी सत्य नहीं जान पड़ा, इस समय आपके मुखपर कान्तिकी झलक भी नहीं दिखाई दी, शायद यह हमारे चर्मचक्षुओंका ही दोष हो। जो कुछ भी हो पर हमारी दृष्टिमें आप इस समय अनेक रोगोंसे पीड़ित हैं। आपका चहरा बिलकुल उदास है, आपका शरीर कल्पनातीत दुर्बल है, आपका उदर हम नहीं जान सके क्यों इतना क्षीण हो गया, आपके शरीरमें वस्त्राभूषण वैगे एक भी नहीं हैं जिनसे इस समय आप किसी प्रतिष्ठित घरानेकी गृहिणी हैं



स्वर्गीय श्रीमान् सेठ तीलोकचन्दजी-इन्दौर.

जन्म सं. १९०३ मृत्यु सं. १९६८







श्रीमान् लाला जग्गीमलजी साहब जैन रईस-देहली.

(सभापति, श्रीऋषभब्रह्मचर्याश्रम प्रबंधकारिणीकमीटि.)

ऐसा हम अनुमान कर सकें। आपका ओज गुण भी अब कहां चला गया ? इस समय आपको कोई अनेक प्रमाणोंसे भी सिद्ध नहीं कर सकता कि आप पूर्वमें वीरजननी थीं। माता ! हम कहां तक कहें आपकी काया सर्वथा पलट गई। आपने इससमय क्यों इतना भयंकर स्वरूप धारण कर लिया ? माता ! तुम्हारा यह कल्पनातीत विचित्र रूप देखकर हम डरते हैं। हमें अत्यन्त भय लगता है।

क्या माता ? आपको शुष्क रोग हो गया है, ? माता तुम्हारी चौसठ करोड़ भुजा आज इसीसे सूख गई ? इनमेंकी वह शक्ति क्या इसी रोगने नष्ट कर दी? आप अपनी एक भुजासे बड़े २ पर्वतोंको जो पहिले उठा लेती थी, आज जो उससे मुंहकी मक्खी भी नहीं उड़ाते बनती, क्या इसी रोगका माहात्म्य है ?! माता ! पहिले दशों दिशाओंमें तुम्हारी भुजाएँ अपना अलौकिक पराक्रम दिखानेमें समर्थ थीं, अब आपने उनको सुकेड़ कर अपने मस्तकपर रख ली, इसका भी कारण क्या यह रोग ही है। ? हे माता ! यही है क्योंकि इसी रोगमें प्राणीकी यह हालत होती है अन्य रोगोंसे प्राणी इतना साहसहीन और शुष्क नहीं हो सकता।

माता ! आपकी दशा जब हमने कुछ वैद्योंसे प्रकट की तब उन्होंने आपको कई रोगोंसे ग्रसित बतलाया उन्होंने शुष्करोगका नाम भी न लिया, उन्होंने कहा—भारतमाताको पांच असाध्य रोग उत्पन्न होगये हैं। उन्होंने पांचों रोगोंके नीचेलिखे अनुसार नाम तथा उनसे होनेवाली हानियां बतलाई— उन्होंने वात, पित्त, कफ इनमेंसे किसीका भी नाम न लेकर एक विचित्र ही प्रकारके पांच रोग निरूपण किये। उन्होंने ज्ञानाभाव, वात्सल्याभाव, दुर्भिक्षकावेग, खेतीकी दुर्दशा, और धूर्तसाधुओंकीबाढ़ इन पंच रोगोंका आपके अ.२ में व्याप्त होना निश्चय किया और बड़ी२ लम्बी चौड़ी इनकी व्याख्या भी कर डाली। अब भारतमाता ! हम इन पांचों रोगोंसे पिड़ित आपकी दशाका चित्र खींचते है लिखकर आपकी सेवामें भेजते हैं आप विचार किजियेगा कि हमारा लिखना कहां तक तथ्य और श्रद्धेय है।



माता ! आपकी सन्तान इस समय कुछ कम बढ़ बत्तीस करोड

ज्ञानाभाव है पर तुम्हारा मुख उज्वल करनेवाली बिरली ही हैं या हैं ही नहीं। हो भी कहांसे, इनको ज्ञात ही नहीं है कि हमारी माता इस समय कितनी विपद्ग्रस्त एवं क्षीणशरीरी होगई हैं। अथवा यह कह लिजिये कि इनके पास वह शक्ति ही नहीं है जिससे आपकी अवस्थाको याथातथ्य जान सकें ! 'जब तुम्हारा मुख उज्वल था जब तुम प्रशान्त चित्त थीं' उस समय तुम्हारी गोद ज्ञानियोंसे भरी हुई

थी उस समय तुम्हारी सन्तान कर्तव्यनिष्ठ और धर्मपरायण थी। धीरे२ समय बदल गया स्वार्थके तूफान चलने लगे तुम्हारी सन्तान स्वार्थके तूफानसे उड़कर अज्ञान कूपमें गिरने लगी कुछ सन्तानोंके अज्ञानकूपस्थ होनेसे तुम्हारी सर्व सन्तान भेड़की तरह अज्ञानकूपमें गिर पड़ी इस समय वह पड़ी२ चिल्लाती है दूसरोंका अवलम्बन चाहती तथा उसमेंसे निकलनेके लिये अपने२ करोंको पसारती है रोती है विलाप करती है अज्ञान कूपमें ही यहांकी वहां दौड़ भाग मचाती है पर वह अनेक मबल निठुर पत्थरोंकी ठोकर खा अपने घुटने टोड़ती फिरती है। नरक जैसी वेदना उस कूपमें सह रही है इस समय उनकी अवस्था वचनागोचर है आध सेर दाना पापी अपने पेटके लिये नहीं दे सकती।

माता! तुम्हारे वे सद्ज्ञानवर्द्धक विद्यालय जिनमें ऋषि पढ़ाया करते थे कहां चले गये? वे तुम्हारे छात्र जो जंगलोंमें फल पुष्पोंसे उदरपूर्ति करते और तुम्हारी प्रेम गोदमें बैठे२ ज्ञानार्जन करते थे वे कहां विलीन हो गये! ये तुम्हारी बालिकाएं जो अटूट परिश्रमसे विद्यालाभ करके पतिभक्ती एवं तुम्हारी परिचर्यामें ही लगी रहती थी एकाएक किस कोनेमें खिसक गई! जिन्होंने सद्ज्ञानके प्रभावसे अपना नाम अजर अमर कर लिया, और तुम्हारी कीर्ति दिगदिगान्तरमें विस्तृत कर दी थी और तुम्हें जगत पूज्य बना दिया था, और जो निरन्तर धीर पुरुषोंको उत्पन्न करती थी, जिन्होंने अपने सच्चरित्रसे पुरुषोंसे प्रथम नाम अंकित करा लिया वे विदुषी आज दिन कहां चली गई? आपके वे प्राकृतिक मकान जो पर्वतोंमें प्रकृतिने बनाए थे, और जिनमें प्रकृतिप्रेमी सदा वास करते थे, जो निरंतर तत्वान्वेषियोंसे भरे रहते थे। जिनमें ऋषिलोग आत्मतत्वका बैठे२ विचार किया करते थे, जो निरन्तर ज्ञानियोंकी वाग्वाणीसे प्रतिध्वनित होते रहते थे. माता, वे तुम्हारे परम प्रकाशी 'ज्ञान' चन्द्र कहां चक्कर लगाने लगे? जो तुम्हारे रोम२में अंग प्रतिअंगमें ज्ञान कौमुदी वितरण करते थे। जिनको नीच ऊंचका विचार न था वे सर्व तुम्हारी सन्तानोंको अपनी ज्ञानकिरणोंसे स्पर्श करते थे, जो सबके हृदयोंसे अज्ञानान्धकार विलीन करते थे, जो सबको स्वाधीनताका पाठ पढ़ाया करते थे, जो निरन्तर तुम्हारी प्रदक्षिणा देते रहते थे, जो मोक्षाभिलाषियोंको रास्ता बतलाते थे। जो सबको सत्पथमें चलाते थे। जो अंगसे सबको चुपकाते थे। जो तुम्हारी सन्तानोंको परोपकारमें लगाए रहते थे। जो तुम्हारा पूज्य नाम लोगोंसे कमसे कम दिनमें एकबार पूज्यभावसे उच्चारण कराते थे। जिन्होंने अन्य देशीय विद्याभिमानियोंका मद गलित किया था। जिन्होंने जगतसे तुम्हारे पादपद्म स्पर्श करवा लिये थे। माता! जिनके रहते तुम्हारे बहुमूल्य रत्नमानोंको कोई स्पर्श भी न कर सकता

था। जिनके रहते तुम्हारे सन्तानोंको कोई तिरछी निगाहसे न देख सकता था। और अधिक क्या कहें माता! जिनके रहते ही तुम गौरव प्रकट कर सकीं और अपनी कीर्ति देवलोक तक पहुंचा सकीं।

माता! 'ज्ञान' चन्द्र चले गये, हमारी सद्बुद्धिको भी साथ ले गये, हमारी आंखोंमें पट्टी बांध गये, हम अब बिलकुल अन्धे हो गये, अब हमारे सत्पथ समन्ततःकण्टकाकीर्ण प्रतीत होने लगे, अब हमें पद पदपर आपत्तिएं सताने लगीं। हम अपना अभीष्ट रास्ता भूल गये, हमें समन्ततः दुर्बुद्धि, असाहस, भीरुता, मत्सरता तथा विवेकशून्यता आदि प्रबल महा नीच शत्रुओंने अपने पंजेमें फंसा लिया। अब ये हमें द्वार२ फिराते हैं। इनके वश हुए माता हम सत्वहीन होते जा रहे हैं। निरन्तर ईर्ष्या आदि भावोंकी सम्मृद्धि होती जाती है हम मानव जातिसे पतित हो रहे हैं। माता! यह ज्ञानाभाव हमें सांसारिक सुखोंसे वंचितकर परलोकगत सुखोंमें बाधक हो रहा है। माता! हम तुम्हारे अंग हैं और आपके अंगमें यह बीमारी है तब जो दुःख हमें हैं वे आपके ही अंगमें हैं। आप इस रोगसे विमुक्त होगी तब हम परम सुखी और तुम्हारा मुख उज्वल करनेवाले होंगे। दूसरा रोग है आपको—



माता! इन्द्रधनुष अति मनोहर लगता है नाना तरहके रंगोंसे वात्सल्याभाव। अपनी अलौकिक शक्ति दिखलाता है। इसका कारण क्या है? इसका कारण है सिर्फ प्रेम, वात्सल्य,। जिस समय जलकण एक विचित्र पवनको ले सूर्यकी आराधना करते हैं तब सूर्य प्रेमके वश हो उनसेकर मिलाता है, अपने किरण कर पसारता है उस समय उनके परम वात्सल्यसे यह अद्भुत धनुप बन जाता है। वास्तवमें प्रेम ऐसी ही शक्ति है जो संसारमें सबको पराजित कर देती है जिसके हृदयमें यह महाशक्ति वास करती है। आपत्तियां उससे कोसों परे रहती हैं। प्रेम एक तरहकी आकर्षणशक्ति है। संसारको अपनी ओर खींच लेती है। प्रेमरहित हृदय सर्व सुख रहित हृदय है। प्रेमविहीन हृदय अकेला हृदय है, उसका साथी कोई नहीं है, उसके दुःखमें दुखित और सुखमें सुखी होना किसीके भाग्यमें नहीं है।

भारत माता!!! आपने चकवा चकवीके प्रेमको प्राकृतिक प्रेम बना दिया उसको प्रथक् करनेवाला कोई नहीं है। कमलका सूर्यसे कमलिनीका चन्द्रसे जो प्रेम है उसकी भी रजिष्टरी आपने करादी। आपने प्रकृतिके अनेक पदार्थोंको प्रेमका निश्चल पाठ पढ़ा दिया, जिससे वे तुम्हारी आज भी शोभा बढ़ाए हुए हैं। माता! प्रेमपाठ पढ़ानेसे हमें क्या वंचित रक्खा? क्या? इसीलिये कि

हम उसे पाठकों उपस्थित न रख सकते। खैर माता! आपने किसी भी कारणसे जो हमें प्रेमका पाठ न पढ़ाया उससे आज हमारी बड़ीही बुरी हालत हो रही है। आज हमारे भीतर प्रेमका अभाव है हम एक दूसरसे हृदय नहीं मिलाना चाहते। माता! हम आपकी संतान परस्पर ईर्ष्या कलह आदिकी प्रचण्ड ज्वालासे जले जा रहे हैं। पारस्परिक फूट अब बहुत भयंकर रूप धारण करती जा रही है। फूटने घर२का नाश कर दिया, अदालतोंमें रुपयोंके ढेर लगवा दिये, वकील बैरिष्टरोंकी संख्या प्रमाणाधिक कर दी, हमारा भाई२का पिता पुत्रका पुत्रपिता तथा माता-पुत्रका हृदय इसने अपनी तीक्ष्ण छुरीसे खंडित कर माना! इसने यह प्राचीन लोकोक्ति सत्यरूपमें सम्हने लाकर रखदी कि—

खेतमें उपजे सब कोई खाय,
घरमें उपजे घर वह जाय।

माता! वात्सल्यका अभाव हुआ, हमारी सम्पत्ति भी समुद्रपार चली गई। संसारको नीचा दिखानेवाली हमारी शक्ति यही थी। उसका सर्वथा लोप हुआ। मतमतान्तरोंने भी हमारा पारिस्परिक प्रेम नष्ट कर दिया. सच्चे सुखका मार्ग एक ही होसकता है मोक्षका मार्ग एक ही होना न्याय संगत है। पर उसके मार्ग भी परस्परकी फूटने अनेक शास्त्रों में उल्लेखित करवा दिये इसी लिये हम सुख चाहते पर दुःख प्राप्त होते हैं। माता!!! फिर भी क्या! हमें वे दिन देखने मिलेंगे जब हम 'सत्वेषु मैत्री' की पूर्ति करेंगे। हम जातिगत मैत्रीको मैत्रीपद न दे विश्वगत मैत्रीको मैत्री समझेंगे। हम सब तुम्हारे सन्तान हृदयसे हृदय मिलावेंगे और सबही समान भावसे तुम्हारी गोदमें स्वतंत्रता पूर्वक खेलेंगे। माता! यदि योग चिकित्सक आप पैदा करें और अपनी चिकित्सा करावें तो संभव है आप रोगमुक्त हों और हम सब सात पांच मिलकर बारह होजावें।

माता! आपके तीसरे रोगका नाम है—
दुर्भिक्ष दुष्टने जबसे माता तुम्हारी
गोदमें सिर रक्खा है
दुर्भिक्षका वेग तबसे माता हम तुम्हारी
सन्तान कल्पनातीत दुःखोंसे साम्हना करते हैं। हमें पद पदपर आपत्तियां सताती हैं। माता! यह तो हमें मालूम नहीं कि दुर्भिक्षका बीज भारतमें कौन लाया तथा लाकर किस तरह बोया गया और नर निर्दय संहारक अल्प दिनोंमें ही इसको किसने बना दिया। पर माता! इतना अवश्य कहेंगे कि माता! यह दुर्भिक्षका घाव हमारे शरीर में बहुत दुःख देने लगा। माता! अब यह किसी तरह भी सहा नहीं जाता। घाव पुरने के कोई उपाय दृष्ट नहीं पड़ते। हे माता! इस दुर्भिक्ष से हमारी रक्षा करो. इसका बीज वापिस भेज दो। माता इसने आपकी करोड़ों सन्तानोंको यमलोक पहुंचा

दिया। माता दुर्भिक्षरुपी भार में तुम्हारी अगणित सन्तानें चटपटा कर भुँन मरी।

माता! पहिले इसका बीज भारत में न था। १९ वीं सदीमें इसका यहांपर जन्म हुआ। जन्मसे ही माता इसने नर संहार किया और उसमें सफलता प्राप्त की। फल यह हुआ कि इसने १८०१ ई० से १८२५ ई० तक तुम्हारे दश लाख दीन पुत्रोंको भक्षण कर लिया। पर इसकी कुक्षि तब भी न भरी और इसने दिन प्रति-दिन अपना भयंकर रूप धारण किया। थोड़े ही समयमें अर्थात् सन १८५० ई० से सन १८७५ ई० तक भारतमें इसने छ वार प्रवेश किया इस समयमें इसने पचास लाख भार-तवासियोंको भारतमाताके गोदसे उठाकर फेंक दिये वे यमपुरीमें जाकर गिरे। माता! जिसप्रकार किसीकी किसी एक कार्यमें सफलता हो जाती है तब उसका उत्साह दिन दूना रात चौगुना बढ़ता चला जाता है। इसका भी इसी तरह दिन दूना रात चौगुना भारतमें प्रसार हुआ। इसने अब अपना रूप और भी भयंकर बनाया इसने लपलपाती जिह्वा दिखाकर तथा तीक्ष्ण दांतों-से अगणित प्राणियोंको चबा खाया। माता! १९ वीं सदीके अन्तिम २५ वर्षोंमें इसने भारतमें १८ वार उपद्रव मचाया और प्रायः चार करोड़ मनुष्योंको समूचा निगल गया।

हे भारतमाता। क्या हम सदा इसीके पंजेमें फंसे रहेंगे। माता! तुम अपनी चिकित्सा न कराओगी। माता! जब तक तुम इस रोगसे मुक्त न होगी तब तक माता हम भारतकी पूर्व दशाका चित्र नहीं देख सकेंगे। हम अपने व्यापार आदि भी तब तक विस्तृत न कर सकेंगे। अच्छा माता! तो हम सब ही भारतवासी एक स्वरमें कहते हैं कि भारत माता! इस भयंकर रोगसे तुम्हारा पिंड शीघ्र ही छूटे।

माता पांचवां अन्तिम रोग भी आपको शान्ति नहीं लेने देता। उसका नाम है—

खेतीकी दुर्दशा

सुना जाता है माता! कुछ दिन पहिले भारतमें ८० सेर एक रुपयाका गेहूं और रुपयाके १०० सेर चने आतेथे यह बहुत दिनकी बात नहीं है। आजसे ७० वर्षकी है। रुपयाका पांच सेर घृत तथा उपरोक्त भावके अनाज खानेवाले अब भी मौजूद हैं। माता! इसका कारण समझमें नहीं आता। पहिले बोया थोडा जाता था और लुना अधिक जाया करता था। आज इससे विपरीत ही दृश्य दिखाई दे रहे हैं। जितनी भूमि भारतकी आज बोनेके लिये छिन्नभिन्न की गई है। पूर्व समयमें इससे शतांशसे भी कममें बीजारोपण होता था। माता! तुम्हारी भूमिकी वह शक्ति कहां चली गई? खेतीके सुधार का भार किसानोंके ऊपर है। वेही इसके सुधारनेमें शक्ति भर प्रयत्न करते हैं। पर माता! आज बिचारे किसान हाथ पर हाथ धरे रो रहे हैं। विलाप कर

रहे हैं। उनके पास बीज नहीं है। खेतों क्या बोवें। घरमें खानेको दाना नहीं है। कहांसे खेतोंको सुधारें? बिचारे भूखकी ज्वालासे जले जा रहे हैं, हाड़ चामही शरीरमें अवशेष रह गया है। बैल उनके पास नहीं है रुपया उनके पास नहीं है। भोजन घरमें नहीं है। शान्ति तनमें नहीं है। उनका सहारा एक खेतोंसे था उनका खर्च इतना अधिक है कि वे एक सेर दाना भी पापी पेटके लिये घरमें नहीं रख सकते।

माता! अब हम अधिक क्या लिखें लिखना मात्र ही है। हमारे चर्मचक्षुओं में समन्ततः वज्रपटलकी दीवारें नजर आती हैं। दुःख दिखाई दे रहे हैं। युद्धमें जितना नरसंहार नहीं हो रहा है उतना उपरोक्त कारणोंसे मनुष्य तथा पशुओंका संहार हो रहा है। माता! आप रोगमुक्त होओ हमें शान्ति दो। सुबुद्धि राजाप्रजाको दीजिये जिससे संसारमें सुखके मार्ग दिखाई देने लगें। माता! अब हम इतना ही दुःख रोकर लेखनीको विश्राम देते हैं। माता! भारतमाता!! वीरजननी!!! तुम सच्चा स्वरूप दिखाओ। यही हमारी अन्तिम प्रार्थना है। इस समय इतना ही।

समाजसुधार।

प्रिय पाठको, इस में तो किसी प्रमाणकी आवश्यकता नहीं कि आपकी समाज, आपकी जाति, आपका राष्ट्र, आपका धर्म दिनप्रतिदिन अवनतिको प्राप्त होता जाता है। संख्यामें सहस्त्रोंका ह्रास, आपुसमें फूट और अनेकताका साम्राज्य, धर्म कर्म और पूजा पाठके लिये मंदिरोंमें चार चार रुपये मासिकके पुजारियोंका नियत होना, शास्त्रोंको अलमारियोंमें बंद रखना, धूपतक न देना, साठ साठ वर्षके बूढ़ोंका विवाह होना, निर्धन युवकोंका कुंवारा रहना, बालविधवाओंका दिनदिन बढ़ना, धनिकोंका स्वार्थ और अभिमान, निर्धनोंका अपमान, विद्याकी कमी, विद्यार्गोंकी न्यूनता, व्यर्थ व्ययकी वृद्धि, विद्यादानसे अरुचि, पत्रोंका टोटा, काम करनेवालोंका घाटा, ब्रह्मचर्यका अभाव, व्यभिचारका सद्भाव, निर्धनताका बढ़ना, शक्ति और धनका घटना, निंदित होना, कुकर्म करना, दूसरोंका हंसना और लज्जित करना किंतु तनिक भी असर न होना, अमीरोंका धनके नशेमें चूर रहना, गरीबोंका मारे मारे फिरना, घर घरकी ठोकरें खाना, परोपकारियोंका कारागारमें सड़ना, रईसों और उपाधि धारियोंकी परवा न करना, ज्ञानके भूखोंको ज्ञानका न मिलना, धर्मके प्यासोंको धर्म न मिलना, पंडितोंका मान करना, खानपानमें बिगड़ना इत्यादि बात यह स्पष्ट प्रगट करती हैं कि अभी जैन समाज समयकी गतिसे बहुत पीछे है। यद्यपि गत १५, २० वर्षोंमें उन्नति

उन्नतिके शब्द सुननेमें आते हैं परंतु अभी पहलाही दिन है। हजारों लेख निकले, सैंकड़ों व्याख्यान हुये परंतु कुछ भी असर नहीं हुआ। न परस्परमें प्रेम बढा, न शिक्षाका प्रचार हुआ और न समाजका सुधार हुआ, वही हाल बेढंगा जो पहले था सो अब भी है।

मित्रो, ऐसा जीवन भी भला कोई जीवन है? ऐसा समाज भी कोई समाज है? ऐसे जीवनसे मृत्यु अच्छी है। ऐसे समाजसे बेसमाज रहना अच्छा है। जीना उसीका भला है जो दूसरोंके लिये जीता है। पेटका गड्ढा तो दुनयामें कुत्ते और बिल्ली भी भर लेते है। जो पैदा हुआ उसे खानेको मिल ही जाता है चाहे हंसकर चाहे रोकर। धनके नशेमें बे सुध रहना, अपनीही अपनी चिंता करना, दूसरोंके दुख दर्दकी परवा न करना, यह जीना नहीं मरना है। कारण कि धन उसीको कहते हैं जो समाजके काम आये, जिससे जातिका हित हो, देशका भला हो। जमीनमें जो गड़ा रहता है वह पाषाण है। उसे धन कहना भूल है। रुपया स्वयं कोई सुखदायक वस्तु नहीं है। हां, रुपयेका सदुपयोग यदि है कि गरीबोंके काम आये, दुसरोंको लाभ पहुंचे। यदि केवल रुपयेवालोंकी प्रतिष्ठा होती और रुपयेसे ही दुनयामें नाम रहता तो सहस्रों मारवाड़ियोंके नाम याद होते परंतु हमें एककी भी याद नहीं आती। रुपया उनके यहां अपरिमित है परंतु किस कामका। हुआ न हुआ बराबर है। इसके विपरीत जो लोग अपने रुपयेको परोपकारमें खर्च करते है, शिक्षामें लगाते हैं उनका घरघरमें गुणानुवाद गाया जाता है। उनके मरनेपर लोग उनके नामको याद कर करके रोते हैं। दानवीर सेठ मानिकचंदजीका उदाहरण लीजिये हिंदुस्तानके जैनियोंमें कोई ऐसा अभागा घर होगा जिसमें सेठ साहबका नाम लिया न जाता हो। बचे बचेकी जिव्हापर आपका नाम है। किस कारणसे? क्या इस कारणसे कि आपके पास धन था और आप उसे स्वयं ही भोगते रहे? नहीं, किंतु इस कारणसे कि आपके पास धन था और आपने उसे जातिके काममें लगाया। जहां जरूरत समझी दससे बीससे तीससे सौसे हजारसे लाखसे संकोच नहीं किया। स्थान स्थान पर स्कूल बोर्डिंग खोले।

मूर्खता और अज्ञानतामें पड़े रहना भी मरनेके तुल्य है। जिस मनुष्योंको ज्ञान नहीं, जिसमें अच्छे बुरेकी पहिचान नहीं, जिसको अपने देश और समाजकी अवस्थाका ज्ञान नहीं उसका जीना भी मरनेके तुल्य है। ऐसा मनुष्य एक दिन पैदा हुआ, एक दिन मर गया, न कुछ साथ लाया और न कुछ ले गया, न कुछ किया और न कुछ छोड़ गया, जितने दिन जीवित रहा देश और समाजको कलंकित करता रहा, जातिके अज्ञानियोंकी संख्याको बढाता रहा। अपनी अज्ञानताके प्रभावसे अपने कुटुम्बको, अपनी संतानको, अपने पड़ोसियोंको मूर्ख बनाता रहा। इन्द्रियोंका दास बना रहा, क्रोध मान माया लोभ आदि कषायोंके कारण रात दिन अशुभ कर्मोंकी संख्या बढाता रहा, आत्माको दिन दिन सन्मार्गसे पीछे हटाता रहा।

प्रिय मित्रो, आज जातिकी यही दशा है। जातिमें जीवन नहीं, मृतक है। इसका

कारण आपही है; आपके सिवा कोई अन्य नहीं, आपसे ही जाति बनी है। जब आप मृतक हैं तो जाति आपसे पहले मृतक है। क्या आप इस दशाको पसंद करते है ? क्या इस दशासे आपको संतोष है ? यदि नहीं तो फिर क्यों मौन धारण कर रक्खा है, क्यों निद्रामें अचेत हैं ? समस्त जातियां जाग उठीं, सचेत हो गयीं और सब कार्यक्षेत्रमें प्रवेश करके कर्तव्य पालनमें दत्तचित्त हो गई। केवल आप ही बेसुध पडे हैं। इस आलसने अबतक हानि पहुंचाई। अब आलस करनेका समय नहीं है। काम करनेका समय है। आलसको त्यागकर कार्यक्षेत्रमें प्रवेश करो, साहस करो। दूसरी जातियों को देखो, उनके कितने स्कूल और कालिज खुले हुये हैं। कितने उपदेशक उपदेश देते फिरते हैं, कितने पुस्तकालय और वाचनालय हैं। कितने पत्र निकलते हैं। कितने अनाथालय और औषधालय हैं। उनकी सामाजिक व्यवस्था कैसी है। परन्तु आपकी समाजमें इन सब बातोंकी कमी है। विद्याका नाम नहीं, सुधारकी गंध नहीं। आप रूढियोंके दास हैं और पुरानी लकीरके फकीर हैं।

अतएव आपका सबसे पहला कर्तव्य यह है कि शिक्षाकी कमीको दूर करो और समाजमें जिन सुधारोंकी जरूरत है उन्हें पूरा करो। शिक्षाके लिये प्रत्येक ग्राममें जिसमें ५ घर भी जैनियोंके हों पाठशाला स्थापित करो। सबके घरोंमें फंड करके पाठशालाके लिये रुपया जमा करो। धनिकोंको उचित है कि उन ग्रामोंमें पाठशालायें स्थापित करायें, जहांके भाई निर्धन हैं जो पाठशालाका खर्च नहीं उठा सकते। जैनियोंमें ऐसेऐसे धनिक सैंकडों हैं जो दस दस छोटी पाठशालाओंका खर्च उठा सकते हैं। पाठशालाके साथ साथ एक पुस्तकालय हो जिसमें समाचारपत्रोंके अतिरिक्त सौ पचास धार्मिक पुस्तकें और सौ पचास नीति, चरित्र और इतिहासकी पुस्तकें हों। प्रतिदिन पूजापाठ और शास्त्र-सभा हुआ करे। आठवें दिन सभा हुआ करे जिसमें व्याख्यान हों, पत्र पढेजाएँ, धर्म-चर्चा हो। सब भाईयोंमें परस्पर मेलमिलाप हो, सबकेसब सच्चरित्री और सदाचारी हों। परस्परकी फूट और शत्रुताको परस्पर मिलकर दूर किया जाय, स्थानीय झगड़े सभामें ही तै होजाया करें, न्यायालयोंमें जाकर व्यर्थ व्यय-करनेकी जरूरत नहीं है। जितने जैनी हों सब एक सूत्रमें बंधे हुये हों और वह सूत्र प्रेमका हो। सब एक दूसरेकी उन्नतिके हृदयसे इच्छुक हों और एक दूसरेके सुख दुखमें काम आनेवाले हों। निर्धन भाइयोंको काममें लगावें, कुंवारोंका विवाह करावें, बुरी रीति-योंको बंद करावें, मिथ्यात्वको छुड़ावें, व्यर्थ-व्ययको रोकें, ४० वर्षसे अधिक अवस्थावालोंकी शादी न होने दें और उन्हें शादीके विचारको छोड़कर धर्मध्यानमें लगनेकी सलाह दें, छोटी उमरकी शादियां एकदम रोकदें और उसी शादीको शादी समझें जो शास्त्रानुसार योग्य अवस्थामें हो जिसमें वर और कन्या दोनों इस बातके समझनेकी योग्यता रखते हों कि शादी क्या चीज है। जाति पांतिके झगड़ोंको मिटाकर जैनी मात्र परस्परमें खानपान और विवाह आदि सम्बंध करनेलगें। धार्मिक बातोंके लिये हरएक आदमी अपनी आयका कुछ भाग निकाला करे और हरएकके यहां धर्म खाता खुला हुआ हो। सरकारी माल

लड़कियोंको भी शिक्षा दी। उनको घरके कारोबारमें खाने पकाने सीने पिरोने कसीदा वगैरह निकालनेमें विशेष रूपमें शिक्षा दी जाय। शादी विवाहादि कार्योंमें व्यर्थका आडम्बर न करके थोड़ेमें काम निकाला जाय। शादि विवाहोंमें खर्च करनेकी इतनी जरूरत नहीं है जितने बच्चोंकी शिक्षामें खर्च करनेकी जरूरत है। शादीमें चाहे लाख खर्च करदो सब खाक है परंतु शिक्षामें यदि एक पैसा भी लगाओगे तो वह भी फल देगा।

हमें आशा है कि यदि प्रत्येक गाममें इस प्रकार कार्य होने लगे तो उन्नति आज ही जाय और जैनियोंकी संख्यामें भी लाखोंकी बढती हो जाय। आजकल संख्यामें जो ह्रास हो रहा है उसके कारण योंतो बहुतसी बातें हैं जिनका हम ऊपर उल्लेख कर चुके हैं परंतु विशेषकर यों हैं। एक बालविवाह दूसरा वृद्धविवाह। ये दोनों प्रकारके विवाह प्रायः धनिकोंमें होते हैं। अत एव यह कहनेमें हमें तनिक भी संकोच नहीं होता कि धनी लोग ही जातिकी उन्नतिमें बाधक हैं। धनिकोंके दूध पीते मूर्ख पुत्र भी विवाहे जाते हैं और साठ साठ वर्षके बूढे भी विवाहे जाते हैं। इन दोनों प्रकारके विवाहोंका परिणाम यह होता है कि समाजमें विधवाओंकी संख्या दिन दिन बढती जाती हैं। धनिक लोग विवाहोंमें बे पूछे मन माना खर्च करडालते हैं, निर्धन लोग जिनके पास इतना खर्च करनेको नहीं होता उधार लेते हैं और जीतेजीके लिए अपने सिरपर बोजा रखते हैं परंतु जिन्हें उधार नहीं मिलता वे बेचारे अपने लड़कोंका विवाह नहीं कर सकते। अत एव निर्धन लोग भी संतान उत्पन्न करनेसे वंचित रहे और धनिकोंके यहां बालविवाह और वृद्धविवाहके कारण विधवाओंकी संख्या बढ़ी। परिणाम यह हुवा कि उत्पत्ति कम हुई और संख्यामें कमी आई। इसका ही परिणाम है कि कितनी ही जातियां संसारसे नष्ट होगईं और कितनी ही जातियोंमें गिने चुने आदमी रह गये। एक जातिका दूसरी जातिमें कोई सम्बंध नहीं, हरएक जाति अलग और पृथक्। इस पृथकताने बहुतसी जातियोंको ऐसा पृथक् करदिया कि अब वे सदाके लिये अलग हो गईं और उनका नाम केवल इतिहासके पत्रोंपर रह गया।

यदि विधवाओंकी संख्यामें कमी की जाए, बालविधवाओंके दुखको दूर किया जाय और जाति पांतिके झगड़ोंको मिटाया जाय, जैनी मात्र परस्परमें रोटीबेटीका व्यवहार प्रचलित करदें तो सारी कमी पूरी होजाय। घटतीके स्थानमें बढती दीख पड़े। विधवाओंकी संख्यामें कमी करनेके लिये केवल एक उपाय है और वह यही कि हरएक गांवमें पंचायत करके यह निश्चित कर लिया जाय कि १६ वर्षसे कम उमरके लड़के और १३-१४ वर्षसे कम उमरकी लड़कीका विवाह नहीं किया जायगा और न ४० वर्षसे ऊपरकी अवस्था होनेपर विवाह हो सकेगा, यदि कोई करेगा भी तो वह जातसे निकाल दिया जायगा चाहे धनी हो चाहे निर्धन।

हम बलपूर्वक कहते हैं कि यदि ऐसा न किया जायगा तो विधवाविवाह होना रूक नहीं सकता। आग लगे और धुवां न हो यह कदापि नहीं हो सकता। आप लाख चिल्लाईये, लाख उद्योग कीजिए, प्रकृतिके

नियमको आप नहीं तोड़ सकते। जब पुरुष इतने स्वार्थी और विषयलम्पटी हैं कि मुंहमें दांत न होते हुये, जबड़ाका जबड़ा खाली होते हुये, बालोंके एक सिरेसे दूसरे सिरे तक सुफेद होते हुये, पांच पांच बच्चे और पोते तक रखते हुये भी दुलहा बननेकी इच्छा रखते हैं और हल्दीसे हाथोंको पीला करनेकी चाह रखते हैं, फिर यह कैसे सम्भव है कि उनकी युवा विधवा बेटियां और पुत्रवधुयें अपने शीलव्रतको कायम रख सकें। जब पुरुष अपनी विषयकामनाको एक दिनके लिये भी नहीं रोक सकते और बुरा उदाहरण बन कर दिखलाते हैं तो यह कभी भी सम्भव नहीं कि ये अबला जिनमें न ज्ञान है न जिन्हें कोई उपदेशदाता है बल्कि जो नित्य प्रति बूढ़े बाबाओंको विषयासक्त देखती हैं, शीलव्रतको स्थिर रख सकें। आज समाजमें शीलव्रतका अभाव देखनेमें आता है और अच्छे अच्छे घरोंसे बुरेबुरे समाचार सुननेमें आते हैं ये केवल पुरुषोंके स्वार्थके कारण। न्यायशील पाठको! क्या यह पुरुषोंका स्वार्थ नहीं है कि स्वयं तो बूढ़े होकर भी विवाह कर लेवें, किसी प्रकारकी कोई रोकटोक न हो और ये अबला निःसहाय जब जरा होश सम्भाले बोलना चालना सीखें तो अपने माता पिता सासससुरसे यह सुनें कि "तेरा सुहाग जाता रहा, तू यह कपड़ा मत पहिन, यह जेवर तेरे लिये नहीं है" हा, जिस अबला कन्याको अभी यह भी ज्ञात नहीं कि कब मेरा विवाह हुआ, कौन मेरा पति था और क्यों मेरा विवाह हुआ, उसके लिए तो स्वार्थी पुरुष जातिजाके लिए रंडापेका हुक्म निकाल दें और अपने लिये हर समय दस बीसबीस शादियां करनेकी स्वतंत्रता रक्खें और इसकी पुष्टीमें शास्त्रोंको व्यर्थमें दोष लगावें। हमने माना कि शास्त्रोंमें विधवाओंके विवाहकी आज्ञा नहीं है, हम भी इसपर वादविवाद नहीं करते परंतु शास्त्रोंमें यह कहीं भी नहीं लिखा है कि ऐसी उमरमें शादी कर दी जाए कि जब वरकन्याको विवाहका ज्ञान न हो। शास्त्रोंके अनुसार वरकन्याको विवाहके समय अपनी२ प्रतिज्ञाओंको स्वयं कहना और समझना चाहिये। दोनोंमें इतनी योग्यता होनी चाहिये कि वह समझ सकें कि हम क्या प्रतिज्ञा कर रहे है, हमारा परस्परका सम्बंध कैसा सम्बंध है। आजसे हम दोनों एक सूत्रमें प्रोए गए, हमारा गठजोड़ा होगया, अब जीवनपर्यंत एक दूसरेका साथ निबाहना, धार्मिक रीतिसे जीवन व्यतीत करना, गृहस्थमें प्रवेश करके सदैव एक दूसरेके सुखको बढ़ाना हमारा परम धर्म है। शास्त्रोंमें कहीं भी बालविवाहके उदाहरण नहीं मिलते और न कहीं ऐसे ही उदाहरण मिलते हैं कि एक स्त्रीके मरनेपर किसी धर्मात्माने दूसरी शादी की हो और दूसरी शादीकी स्त्री भी यदि मर जाए तो तीसरीसे शादी की हो। जहां तहां ऐसे उदाहरण मिलते हैं कि जब कभी ऐसा हुआ तो दोनों पुरुष, स्त्री संसारको असार क्षणभंगुर जानकर विषयवासनाओंको तिलांजली देकर दीक्षा ले लेते थे और शेष जीवन धर्मध्यानमें व्यतीत करते थे। आज कलकी समान रंडवोंकी शादियां नहीं होती थीं।

मित्रो, याद रक्खो, मैं विधवाविवाहका प्रचारक नहीं हूं परंतु हां यह कहनेके लिये अवश्य तैयार हूं कि यदि आपको विधवा विवाहसे समाजको बचाना है तो स्वयं उदा-

रण बनकर दिखलाओ। शीलधर्मकी साक्षात् मूर्तियां बन जाओ। अपने विचारोंसे अपने शब्दोंसे अपने कार्योंसे संसारको यह दिखलादो कि शील क्या वस्तु है। आपको देखकर ही विधवाएँ अपने शीलव्रतको कायम रख सकेंगी और धर्मपर आरूढ़ रहेंगी परंतु जब वे बेचारियां उन्हीं जेठ सुसरके विवाह होते देखती हैं, उन्हीं सासोंके बच्चे पैदा होते देखती हैं, कि जो बड़े धर्मात्मा बनते हैं, जप तप करते हैं तो यह कब सम्भव है कि वे अपने शीलव्रतको रख सकें। जब जेठ सुसरोंसे धर्म कर्मको जानते हुये एक दिन भी अपनी इन्द्रियोंको वशमें नहीं रक्खा जाता तो बतलाईये उनका बेचारी अज्ञान अवस्थामें पड़ी हुई अबलाओं पर क्या प्रभाव पड़ सकता है।

प्रायः लोग कहा करते हैं कि विधवाओंको ज्ञान दो, शीलव्रतकी महिमा दिखलाओ। प्रिय पाठकों, ये सब बातें उसी समय उपयोगी और लाभदायक हैं कि जब विधवाएँ उन घरोंमें जिनमें वे रहती हैं पुरुषोंको शीलधर्मको पालन करते हुये देखें। इसके लिए पुरुषोंको अपनी इंद्रियोंको वशमें करना होगा। जिस घरमें कोई विधवा स्त्री हो उसमें पुरुषोंको उचित है कि विषयवासनाओंमें प्रेषित न रहें। अपनी स्त्रीसे अधिक समय तक एकांतमें वार्तालाप न करें। स्त्रीको उचित है कि बहुत बढ़या चमक दमकके कपड़े या जेवर न पहने। भावार्थ--कोई काम ऐसा न करें कि जिससे विधवापर बुरा असर पड़े। बस अब इस विषयपर अधिक न लिख कर हम केवल इतना ही कहेंगे कि अब समय निकट आ गया है। घड़ा भरकर ही डूबता है। अब तक भर रहा था परंतु अब भर चला है। अभी समय है कि आप बचा लें। यदि वास्तवमें आपको सुधार करना है तो स्वयं नमूना बनकर दिखलाओ। अनमेलके विवाहोंको एकदम बंद करदो इससे विधवाओंकी संख्यामें कमी होगी।

दूसरी कमीको रोकनेके लिये जाति पांतिका झगडा दूर कर दीजिये परंतु याद रहे जबतक इन बातोंपर अमली कार्यवाही न होगी तबतक कोई लाभ नहीं है। कहनेवाले आज बहुत हैं परंतु करनेवाले बहुत कम हैं। यदि जितने कहनेवाले हैं करनेवाले होजाएँ और जातिमें उदाहरण बनकर दिखलायें तो कोई भी कठिनाई न रहे। आजकल प्रायः सभा सोसाइटियोंका इसी कारणसे प्रभाव नहीं पडता कि उनके कार्यकर्ता और अधिकारीगण अधिकतर धनिक और प्रतिष्ठित लोग होते हैं और वे स्वयं उदाहरण बनकर दिखलाते हुये हिचकते है। जब साधारण लोग कार्यकर्ताओंको ही पीछे हटते हुये देखते हैं तो फिर उसका साहस कैसे हो सकता है? अतएव आवश्यकता है कि हम सब मिलकर काम करें और नमूना बनें। जो काम अच्छा है उसके करनेमें कोई भय नहीं। भय बुरे कामसे करना चाहिये। अच्छे कामको निडर होकर करना चाहिये। इसमें संदेह नहीं कि बहुतसे लोग तुम्हारा विरोध करेंगे, अग्रवालोंको खंडेलवालोंकी साथ विवाह करते हुये और खंडेलवालोंको जैसवालोंकी साथ खातेपीते देखकर पहलेपहल बहुत हुल्लड मचेगा परंतु विश्वास रखिये यह सब धीरे धीरे दब जायगा, अच्छेसे अच्छे कामका शुरूमें विरोध होता

है। इतिहास इस बातका साक्षी है परंतु काम करनेवाले विरोधमें ही काम करते हैं। अंतमें उन्हींके सिर जाति उन्नतिका सहरा बंधता है। वही समाज जो पहले उनका द्वेषी था और उनकी निंदा करता था बादमें हितैषी हो जाता है और प्रशंसा करने लगता है। आज विद्यासागरका नाम बंगालके घर घरमें आदरसे लिया जाता है परंतु यह वही विद्यासागर है जिसका हजारों बंगाली एक दिन विरोध करते थे। जिन सर सैयद एहमदखांको आज मुसलमान लोग अपना पथप्रदर्शक और गुरु मानते हैं उन्हीं सर सैयदको एक दिन मुसलमान नास्तिक कहते थे। सुधारकरनेवालोंको लोग बुरा कहा ही करते हैं। प्रत्येक देश और प्रत्येक युगमें सुधारकोंका विरोध हुआ है। यह कोई नवीन बात नहीं है। परंतु सुधारक लोग विरोधकी परवा नहीं करते। वे कामकी धुनमें रहते हैं। उन्हें इतना अवकाश ही नहीं मिलता कि जो बुराइयोंको सुनें।

अतएव युवको, जातिके शुभचिंतको, तुम भी विरोधकी परवा मत करो। विरोधको अपने पैरोंके तले कुचल दो फिर देखो किस तरह काम होता है। यदि ऐसे विचारोंके १० युवक भी कार्यक्षेत्रमें आजाएँ और समाज-सुधारको ही अपने जीवनका उद्देश्य बना लें तो फिर बातकी बातमें उन्नति होजाय। हमें आशा है कि हमारे नवयुवक जिनपर समाजकी उन्नतिका भार है समाजकी दुर्दशाको देखकर इस आवश्यक सुधारकी ओर ध्यान देंगे और कुछ करके दिखाएँगे अन्यथा याद रक्खो अबला बालविधवाओंकी गगनमंडलको फाड़देनेवाली आहसे सारी जातियां एक एक करके धीरे धीरे कालकी ग्रास होजायगी और इस समाजका कहीं नाम को ढूंडे न मिलेगा।

सुधारक—

दयाचन्द्र गोयलीय-लखनउ.

कर्मथी छूटवानो सहेलो उपाय.

(श्री महावीरस्वामी अने तर्कनाथ पंडितनो संवाद).

(લેખક—અમૃતલાલ મુંદરજી પડિહાર. મુંબાઇ.)

મહાત્મા શ્રી મહાવીરસ્વામી પોતાના કઠીન તપની અવસ્થામાં એક દિવસ ભીક્ષા માટે એક નગરમાં ગયા હતા, ત્યાં તર્કનાથ નામે એક પંડિત સાથે તેમનો મીલાપ થયો, એ બ્રાહ્મણ પંડિત જુદા જુદા પંડિતો સાથે તથા સાધુઓ સાથે અને જુદા જુદા ધર્મવાળાઓ સાથે વિવાદ કરવા માટે બહુ જાણીતો હતો. શ્રી મહાવીરસ્વામીની ભવ્ય આકૃતિ તથા તેમના મુખ ઉપર તપનો જે મહાન પ્રભાવ હતો, અને પવિત્રતાનું જે અદ્ભુત તેજ તેમના ચહેરા ઉપર છવાઈ રહ્યું હતું, તેથી અચંબો થઇને એ પોતાની વિદ્યાના અભિમાનવાળા પંડિતને મહાવીરસ્વામી સાથે વાદ કરવાનું અને તેમને હરાવવાનું મન થયું, તેથી તેણે મહાવીરસ્વામીને કહ્યું.

તમે કર્મનેજ મુખ્ય માનો છો, એ શું સાચી વાત છે?

મહાવીર સ્વામીએ કહ્યું, એમાં શક શું? દરેક પ્રકાર કર્મથીજ બને છે, અને દરેક

કર્મનો, દરેક જીવોને જવાબ દેવો પડે છે, કર્મનો કાયદો કદી પણ કોઇને છોડતો નથી."

તર્કનાથે કહ્યું–"જો એ પ્રમાણે હોય તો કદી પણ કોઇ પણ જીવનો મોક્ષ થઈ શકેજ નહિ, કારણકે, જે જે કર્મ કરીએ એ દરેક કર્મનો જો બદલો ભોગવવોજ પડતો હોય તો જે કાંઇ સારૂં કર્મ કરીએ તેનું સારૂં ફળ ભોગવવું પડે, એ ફળની જાળમાંથી કેવી રીતે છુટી શકાય? અને કેવી રીતે જીવને મોક્ષ મળી શકે?"

મહાવીરસ્વામીએ કહ્યું–" ત્યારે તમે શું કોઇ એવો રસ્તો જાણો છો કે, જેથી કર્મ ભોગવ્યા વિના કર્મના બંધનોમાંથી છુટી શકાય?"

તર્કનાથે કહ્યું–" હા, અમે બ્રાહ્મણો એમ માનીએ છીએ કે, જ્ઞાનથી કર્મ બળી જાય છે, જ્યારે આત્માનું સત્ય જ્ઞાન થાય છે, ત્યારે કોઇ પણ જાતનું કર્મ ટકી શકતું નથી આત્માના જ્ઞાનની આગળ અનેક જન્મના કર્મ એક નિમિષ માત્રમાં ભસ્મીભૂત થઇ જાય છે. અમે તમારી કર્મની જાળને માનતા નથી."

મહાવીરસ્વામીએ કહ્યું–" પણ આત્મજ્ઞાન કરવા માટે પ્રથમ કાંઇક કર્મ કરવાં જોઇએ કે નહિ? અને આત્મજ્ઞાન એ પણ કાંઇક શુભ કર્મનુંજ ફળ છે કે એ સિવાય અધરથીજ આત્મજ્ઞાન આવી પડે તેમ છે!"

તર્કનાથે કહ્યું–" એવી રીતે કર્મની અસર માનવામાં અમને કાંઇ અડચણ નથી, પણ હું એમ કહેવા માગું છું કે, જૈનો જે એમ માને છે કે, દરેક કર્મોનાં ફળો ભોગવવાંજ જોઇએ, અને કર્મના કાયદામાંથી છુટતાં બહુજ મુશ્કેલી પડે છે, અને અનેક જન્મો વીતી જાય તે પછીજ મોક્ષ થાય છે એ વાત અમે માનતા નથી, પણ એને બદલે અમે એમ માનીએ છીએ કે કર્મના બંધનો બહુજ સહેલાઇથી તોડી શકાય છે, અને જો કોઇ માણસ ધારે તો આ ભવની અંદરજ મોક્ષ મેળવી શકે છે, એટલુંજ નહિ પણ અને-ક જાતના કર્મ કરતા છતાં તેને કર્મનું બંધન નડતું નથી, આ વાત તમે માની શકો છો કે નહિ?"

મહાવીર સ્વામીએ કહ્યું–"પંડિતજી, કર્મના બંધનમાંથી છુટવાની સહેલી સહેલી કુંચીઓ છે એમ હું માનું છું. તેમજ જીવન મુક્તિનાં સુખો ભોગવી શકાય એ વાત પણ હું માનું છું, પણ અનેક જાતના કર્મ કરતાં છતાં કર્મનું બંધન ન થાય એ વાત હું માની શકતો નથી અને ઉપલી બે વાત જે હું માનું છું તે પણ કર્મના ચોકસ નિયમોને આધારેજ માનું છું એ વાત ધ્યાનમાં રાખજો

તર્કનાથે કહ્યું–"કર્મના બંધનમાંથી છુટવાની સહેલી કુંચીઓ છે એમ તમે કબુલ કરો છો, એમ જાણીને મને બહુ આનંદ થાય છે, કારણકે આજ દિવસ સુધી મેં ઘણા જૈન પંડિતોની સાથે આ બાબત સંબંધી વિવાદ કરેલો છે, અને તે સૌ એવીજ હઠ કરવાવાળા મળેલા છે કે કર્મ ભોગવ્યા સિવાય કર્મના બંધનમાંથી છુટવાનો બીજો કોઇ પણ સહેલો માર્ગ નથી. અને બદલે તમે આવા ઉદાર વિચાર ધરાવો છો, એમ જાણી તમારા માટે મને માન ઉત્પન્ન થાય છે, તેમજ જીવન મુક્તિની સ્થિતિ વિષે તમે જાણો છો, એ પણ ખુશીની વાત છે, કારણકે, તમારા લોકોમાં ઘણા સાધુઓને મેં એવી સ્થિતિમાં જોએલા છે કે તેઓ બહુ ત્યાગી હોય છે, બહુ નિરાભિમાની હોય છે, બહુજ ભલા સ્વભાવના હોય છે, બહુજ સહનશીલતાવાળા હોય છે, અને બહુજ કઠીન તપ કરનારા હોય છે, પણ જીવનમુક્તિનો આનંદ ભોગવનારા હોતા નથી, અતી તપના ક્લેશમાં તેઓ જીવન-મુક્તિનો આનંદ ખોઈ નાંખે છે, અને કર્મના બંધનોની બીકમાં ને બીકમાં તેઓ એટલા બધા દબાઇ દબાઇને ચાલે છે કે, આત્માને સ્વતંત્ર રાખવાથી જે આનંદ મળે છે, તે

આનંદ તેઓ અનુભવી શકતા નથી, જો કે એ આનંદ ભોગવવાની તેઓમાં યોગ્યતા આવેલી હોય છે, કારણકે તપથી તેઓનાં પાપ કપાઇ ગયેલાં હોય છે, અને તેઓનો વિકસીત થએલો આત્મા બહાર નીકળવા માટે અંદરથી ઉછાળા મારી રહેલો હોય છે, છતાં પણ તેઓ અતી વધારે પડતા તપથી આત્માની સ્વતંત્રતાને દાબી નાંખે છે, અને કર્મના બંધનની બીકને લીધે તથા નવાં કર્મ ઉત્પન્ન થઇ જવાની ધાસ્તીને લીધે જીવનમુક્તિના આનંદ ભોગવવામાંથી બાતલ થઇ જાય છે, એ માટે મને તમારા સાધુઓની દયા લાગે છે, કેમ ! મારી આ વાત ખરી છે કે નહિ ?”

મહાવીરસ્વામીએ કહ્યું,—“ પંડિતજી, તમારી વાત કેટલેક દરજ્જે કેટલાક સાધુઓ માટે ખરી છે, એમ હું કબુલ કરૂં છું, પણ તેની સાથે તમારે આ વાત પણ જાણવી જોઇએ કે, જીવનમુક્તિને નામે ઘણા સંન્યાસીઓ પોતાનો સંન્યાસી ધર્મ ચૂકી જાય છે, અને એક જાતની વધારે પડતી મોજમાં તથા એક જાતના પ્રમાદમાં એ હાથમાં આવેલી મહાન તક ગુમાવી દેવાની સ્થિતિમાં આવી પડે છે, એ વાત તમો જાણો છો કે નહિ ? એવી દશા થાય અને હાથમાં આવેલો હીરો ગુમાવવો પડે, તથા કિનારે પહોંચેલાં વહાણને ડુબી જવું પડે, તે કરતાં એવા આનંદથી દૂર રહેવું એમાં શું એક જાતની ખૂબી નથી ? અને એમાં શું એક જાતની સલામતી નથી ?”

તર્કનાથે કહ્યું—“બેશક એવો ભય તો ખરોજ. જીવનમુક્તિની ઉંચી દશામાંથી પડી ગયેલા ઘણા સન્યાસીઓને મેં જોયેલા છે, પણ એવી બીકને લીધે અને એવા કોઇક દાખલાને લીધે એવું મહાન સુખ લોકે છોડી દેવું એ શું વ્યાજબી છે ? ખચીત જીવનમુક્તિનો આનંદ ભોગવી શકે એવા સાધુઓને પણ હું જ્યારે તપના ભાર નીચે કચરાતા જોઉં છું, અને નાના છોકરાંઓ જેમ પોતાના પડછાયાથી ડર્યા કરે તેમ એવા ત્યાગીઓને પણ હું જ્યારે કર્મના બંધનોથી ડરતા જોઉં છું, ત્યારે મને તેઓની બહુ દયા લાગે છે.”

“મહાવીરસ્વામીએ કહ્યું—” અને એજ પ્રમાણે એટલા બધા ઉંચા છેવટના શીખર ઉપર ચડયા પછી જરાકવાર આનંદ ભોગવવાની ખાતર પડી જવું પડે, એ જોઇને મને તેઓની તમારા કરતાં પણ વધારે દયા લાગે છે.”

તર્કનાથે કહ્યું-“પણ મુનીરાજ, તમારે જાણવું જોઇએ કે, જીવનમુક્તિની દશામાં જે આનંદ ભોગવાય છે, તે આનંદ કાંઇ તાણી તોડીને મેળવેલો હોતો નથી કે એ આનંદ કાંઈ બહારની સ્થૂલ વસ્તુઓનો સ્થુલ આનંદ હોતો નથી, પણ એતો આત્મિક આનંદ હોય છે, અને એવા સ્વાભાવિક આત્મિક આનંદને ખોટા ખોટા ભયને લીધે દાબી નાંખવો અગર વગર જરૂરના તપના જોરથી બાળી મૂકવો એ શું વ્યાજબી છે ?”

મહાવીરસ્વામીએ કહ્યું-“પંડિતજી, તમે કહો છો તેવા આત્મિક આનંદને દાબી નાંખવો એ ખોટું છે એમાં કાંઇ શક નથી, પણ એ આત્મિક આનંદ કેટલીકવાર પછી ધીમે ધીમે સ્થુળ આનંદનું રૂપ લેતો જાય છે, ક્રમે ક્રમે તેમાંથી આત્મિક આનંદની વીજળી ઓછી થતી જાય છે, ધીમે ધીમે તેમાંથી આત્મિક આનંદની જ્યોતિ ઘટતી જાય છે, અને તેને બદલે ઉંચી જાતનો ઇંદ્રિયોનો આનંદ આવતો જાય છે પણ જીવનો અનંતકાળ થયા એવો સ્વભાવ થઇ ગયો છે કે, તેને એવી જાતના આનંદો સ્વાભાવિક રીતેજ ગમે છે અને બહુ ઉંચી સ્થિતિએ પહોંચ્યા પછી પણ આપણામાં કેટલાક એવા સૂક્ષ્મ સંસ્કારો રહી જાય છે, કે જેને લીધે એ આનંદ આપણને ગમ્યા કરે છે અને પછી આગળ જતાં એવું બની જાય છે કે, બીજી જાતના આનંદને પણ આપણે આત્મિક આનંદ સમજવા

કરીએ છીએ, અને આવી ભૂલ થાય તેમાં કાંઇ નવાઇ નથી, માટે એવું જોખમ ખેડવું તે કરતાં તપની દશામાં રહેવું, એ વાતને અમે વધારે પસંદ કરીએ છીએ, કારણ કે, એમાં જોખમ નથી, માત્ર થોડાક મહિના કે થોડાક વર્ષ થોડાક આનંદ ન ભોગવી શકાય એટલીજ ખોટ ખમવી પડે છે. પણ એના બદલામાં મોક્ષની જામીનગીરી મળે છે."

તર્કનાથે કહ્યું—"તમે બહુ ઉંડા ઉતરીને જવાબ આપો છો, એમાં કાંઇ શક નથી, તપથી બળી રહેલા સાધુઓમાં આટલું બધું જ્ઞાન હોય એમ હું જાણતો નહોતો. સાધુજી, તમારી આટલી બધી સ્વાભાવિકતા જોયાં છતાં, અને તમારા સિદ્ધાંતોનું ઉંડાણુ સમજ્યા છતાં હજી પણ મને એમ લાગે છે કે, આત્મા જ્યારે પૂર્ણતાએ પહોંચે, આત્માનું જ્યારે ખરૂં સ્વરૂપ સમજાય, અને જ્યારે તેના બધી જાતનાં બંધનો કપાઇ જાય, ત્યારે એવા મહાત્માને આત્મિક આનંદ તો થવોજ જોઇએ, અને તે આનંદનો કાંઇક ભાગ તેણે આ જીંદગીમાંજ ભોગવવો જોઇએ, એમ હું માનું છું."

મહાવીરસ્વામીએ કહ્યું—"તમારી એ વાત બરોબર છે, એમાં કાંઇ શંકા જેવું નથી, હું પણ એમજ માનું છું.

તર્કનાથે કહ્યું—"પણ ત્યારે તમારા સાધુઓના જીવનમાં એવો જીવનમુક્તિનો આનંદ અમોને કેમ દેખાતો નથી ?

મહાવીરસ્વામીએ કહ્યું—"પંડિતજી, તમે માત્ર અમારા તપની સ્થિતિની સામેજ જોયા કરો છો, અને એને લીધે તમારી દષ્ટિ કાંઇક બહારની બહાર રહે છે એટલે તમને અમારા સાધુઓનો આનંદ દેખાતો નથી, પણ હું તમોને મારા પોતાના જાતિ અનુભવથી ખાત્રી આપું છું કે, અમે જ્યારે ધ્યાનની દશામાં હોઇએ, અમે જ્યારે એકતાની સ્થિતિમાં હોઇએ, અમે જ્યારે સ્વરૂપાકાર વૃત્તિમાં હોઇએ, અને અમે જ્યારે મુક્ત દશામાં હોઇએ, ત્યારે તે ક્ષણોમાં અમારો આનંદ તમો કહો છો તેવોજ હોય છે, અને એ પછી પણ તે આનંદની અસર કેટલીકવાર સુધી રહે છે, પણ એ વખતે વાતો કરવાનો સમય હોતો નથી કે એ આનંદ બતાવવાની કે વર્ણવવાની ઇચ્છા હોતી નથી, તેમજ એવીજ સ્થિતિ વખતે તમારા જેવા વિદ્વાનોનો મીલાપ થતો નથી, પણ એ પછીની તપની દશામાંજ અમે તમને મળીએ છીએ, એટલે તમે અમારો એ આત્મિક આનંદ જોઇ શકતા નથી."

તર્કનાથે કહ્યું—"ત્યારે જીવનમુક્તિના આનંદની બાબતમાં આપણે સંમત થયા છીએ. હવે મને કહો કે, **કર્મની જાળમાંથી છુટવાની સહેલામાં સહેલી કુંચી કઇ છે ?"**

મહાવીરસ્વામીએ કહ્યું—"કર્મના બંધનમાંથી છુટવાની સહેલામાં સહેલી કુંચી **તપ** છે, ગમે તો એને સહેલામાં સહેલી કુંચી સમજો, અને ગમે તો એને મુશ્કેલમાં મુશ્કેલ કુંચી સમજો, પણ તપ વિના પાપનો ક્ષય થતોજ નથી.

તર્કનાથે કહ્યું—"અમે એમ માનીએ છીએ કે, સત્ય પશ્ચાતાપથી અનેક પાપો બળી જાય છે, જે પશ્ચાતાપ અંતઃકરણના ઉંડાણનો હોય, જે પશ્ચાતાપ નવું જીવન આપનારો હોય, જે પશ્ચાતાપ આત્મિક શ્રદ્ધાવાળો હોય; જે પશ્ચાતાપ શબ્દોથી કહી શકાય તેવો ન હોય અને જે પશ્ચાતાપનો અગ્નિ બધી જાતના પાપને બાળીને ભસ્મ કરી નાંખનારો હોય, તથા જે પશ્ચાતાપ આખી જીંદગી સુધી એવીને એવી વિશુદ્ધ રખાવી શકે તેવો હોય તે પશ્ચાતાપથી થોડાક વખતની અંદર કરોડો કર્મ બળી જાય છે, એમ અમે માનીએ છીએ. એ માટે તમારો શો વિચાર છે ?"

મહાવીર સ્વામીએ કહ્યું—"બેશક એવી જાતના પશ્ચાતાપથી પાપના પૂંજ કપાઇ જાય એમાં કાંઇ શક નથી. કારણકે, એવો જે

પશ્ચાતાપ થવો તે પણ એક ઉત્તમમાં ઉત્તમ અને સખ્તમાં સખ્ત પ્રકારનું તપ છે એટલે એવી જાતના પશ્ચાતાપથી કહો અગર તપથી કહો પણ તેથી પાપ કપાઇ જાય તેમાં કાંઇ નવાઇ નથી, પણ પંડિતજી યાદ રાખજો કે, એવી જાતનો પશ્ચાતાપ કાંઇ લુંટમાં પડયો નથી. એવો સાચો પશ્ચાતાપ પણ ઘણી જાતનાં તપ કર્યા પછીજ થઇ શકે છે."

તર્કનાથે કહ્યું—"ઘણી જાતનાં કર્મો ભોગવ્યા વિના રહી ગયાં હોય છતાં પણ આત્માના સત્ય જ્ઞાનથીજ બધાં કર્મ બળી જાય છે, અને એ પછી પ્રારબ્ધ સિવાય બીજું કોઇપણ કર્મ ભોગવવાનું બાકી રહેતું નથી, એ વાત તમે માની શકો છો કે નહિ? અને એવું જ્ઞાન કોઇ કોઇનેજ બહુજ ટૂંક વખતમાં થઇ જાય છે, એ માટે એમ કહેવાય છે કે,— "બાપાઇ રંગ ને બ્રહ્મ ઉપદેશ" એ વાત તમે માનો છો કે નહિ?"

મહાવીરસ્વામીએ કહ્યું—"પંડિતજી, આવી સ્વાભાવિક વાતો અમે શા માટે ન માનીએ? તે હું સમજી શકતો નથી. જ્ઞાનથી કર્મ બળી જાય છે, એ વાત હું બરોબર રીતે માનું છું, પણ એમાં એટલું યાદ રાખજો કે, કેટલાક વિદ્વાનો જે જાતનું જ્ઞાન કહે છે તેવા ઉપલકીઆ જ્ઞાનને માટે આ વાતો નથી, પણ જે જ્ઞાનથી દિવ્ય ચક્ષુ મળી જાય, જે જ્ઞાનથી અંતરના પડદા ઉપડી જાય, જે જ્ઞાનથી હૃદયની ગાંઠો કપાઇ જાય, જે જ્ઞાનથી અભેદપણું આવી જાય, અને જે જ્ઞાનથી આત્મા સત્ય અને જગત ક્ષણિક એમ સમજાઇ જાય તે જ્ઞાનથી મોક્ષ થાય છે, પણ એવું જ્ઞાન થવું એ બહુ દુર્લભ છે, એવું જ્ઞાન થવું એ અનેક જન્મના શુભ કર્મનું ફળ છે, જો કે એવું જ્ઞાન બહુજ ટુંક વખતમાં પણ થઇ શકે છે, છતાં પણ એ માટેની તૈયારી તો અનેક જન્મોની હોય છે."

તર્કનાથે કહ્યું—"ત્યારે હવે તમારી અને અમારી વચ્ચે વાંધો શું રહ્યો? તે કંઇ હું સમજી શકતો નથી, કારણકે જે સિદ્ધાંતો અમે બ્રાહ્મણો માનીએ છીએ, તેજ સિદ્ધાંતો તમે જૈનો પણ માનો છો, અને તેમ છતાં બંને વચ્ચે જુદાઇ શાં?"

મહાવીર સ્વામીએ કહ્યું—"શબ્દોની જુદાઇ છે, બહારની ક્રિયાઓની જુદાઇ છે, કાંઇ મોક્ષના સિદ્ધાંતોની જુદાઇ નથી."

તર્કનાથે કહ્યું—"હજી એક સવાલ બાકી રહ્યો અને તે એ કે, અમારામાં કેટલાક લોકો **ઇશ્વરની કૃપાને** માને છે અને તેની કૃપાથી મોક્ષ મળી જાય એમ માને છે, એ બાબતમાં તમારો શું અભિપ્રાય છે? મારી કહેવાની મતલબ એવી છે કે, અપવાદ તરીકે કેટલાક માણસો એવા હોય છે કે, જેણે આ જન્મમાં કોઇપણ જાતની ખાસ મહેનત કરેલી હોતી નથી, જેમકે, જ્ઞાન માટે તપ માટે, અગર પશ્ચાતાપ માટે કાંઇ પણ કરેલું હોતું નથી, અને તેમ છતાં તેઓને બહુજ રહેલાઇથી મોક્ષનો માર્ગ મળી જાય છે, અને તેની રહેણી કરણી ઉપરથી તથા તેના આચાર વિચાર ઉપરથી આપણને પણ એમ લાગી જાય છે કે, આ માણસ ઉત્તમમાં ઉત્તમ પ્રકારના સાધુ થવાને લાયક છે, પણ એવો થવા માટે તેણે કાંઇ ખાસ અજબ જેવી મહેનત કરેલી દેખાતી નથી, એ વખતે અમે ઇશ્વરકૃપા કહીએ છીએ, આવી સ્થિતિ માટે તમે શું ધારો છો?"



जैनसिद्धान्तोद्धारक बालब्रह्मचारी पं. पन्नालालजीका सोलापुरमें स्वागत (दौरेके समय)

(१). श्रीयुत् रावजी सखाराम दोशी. (२) पं. मुन्नालालजी काव्यतीर्थ. (३) पं. पन्नालालजी बाकलीवाल. [४] पं. गजाधरलाल न्यायाचार्य, न्यायतीर्थ. [५] पं. वंशीधरजी शास्त्री.



श्रीदिगंबरजैनस्याद्वादमहाविद्यालय-काशीके कार्यकर्ता, अध्यापक और विद्यार्थीगण।

"Jain Vijaya" Printing Press-Surat.

છે, અને સૃષ્ટિ ચક્રના અદૃષ્ય નિયમોજ તેમાં હોય છે. એ વિના એમ બની શકતું નથી, હવે તમે વિચાર કરો કે આમાં વધારે વાસ્તવિક તમને શું લાગે છે !"

તર્કનાથે કહ્યું–"જે ચીજને તમે **કર્મ** કહો છો તેનેજ અમે **કૃપા** કહીએ છીએ. શબ્દો જુદા છે, પણ બન્નેનું પરિણામ તો એકજ છે."

મહાવીરસ્વામીએ કહ્યું–"પંડિતજી, અનેક જાતના કર્મ કરતાં છતાં કર્મનું બંધન ન થાય તે કેવી રીતે ? એ સમજાવવાની કૃપા કરો. એ વાત હું સમજી શકતો નથી."

તર્કનાથે કહ્યું–"જ્યારે સંચીત બધાં કર્મ બળી જાય છે, અને તેમ છતાં પ્રારબ્ધથી આયુષ્ય ભોગવવાનું બાકી રહી જાય છે, ત્યારે જીંદગી ટકાવવા માટે અગર કર્તવ્ય બજાવવાને માટે જે કર્મ કરવાં પડે છે તે કર્મ એવા મહાત્માને બંધનરૂપ થતાં નથી કારણકે એવી દશા થયા પછી તેનો પોતાનો કોઇપણ જાતનો ખાનગી સ્વાર્થ હોતો નથી, પણ જે કાંઇ કરવામાં આવે તે પ્રારબ્ધના યોગથી થાય છે, અગર દૈવઇચ્છાથી થાય છે, અગર કુદરતના નિયમોને લીધે થાય છે, એટલે આવી બાબતોનો દોષ તે મહાત્માની ઉપર આવી શકતો નથી, તેથી તે એવી દશામાં કર્મ કરતાં છતાં પણ નિર્લેપ રહી શકે છે. જેમ એક ગાડીને, હિંડોળાખાટને કે ભમરડાને એક વખત ગતી આપી મૂકી હોય એ પછી પાછી ગતી બંધ કરી દેવામાં આવે, તોપણ તે ગતીના જોરના પ્રમાણમાં થોડીકવાર સુધી ચાલ્યા કરે છે, તેમ મહાત્માઓએ **કર્મની** ગતિ બંધ કરેલી હોય છે છતાં પણ અગાઉ જે ગતી મળી ગએલી છે તેને લીધે કેટલીક જાતના કર્મો થયાં કરે છે, અને તેમ છતાં એ કર્મોનું કે તેઓને બંધન લાગતું નથી કારણકે, એ કર્મો પોતાની સ્વતંત્ર ઇચ્છાથી કરેલાં હોતાં નથી, માટે આવી દશામાં તેઓ કર્મ કર્યા છતાં પણ કર્મોના બંધનમાં બંધાતા નથી, શું આ વાત તમે માની શકો તેવી નથી ?

મહાવીરસ્વામીએ કહ્યું–"તમારા કહેવાનો હેતુ હું સમજી શકું છું અને તમે કહો છો તે પ્રમાણે સહેજ ફેરફાર સાથે હું માનું છું જો કે એમાં કેટલીક બારીકીઓ છે, પણ એ બધી બારીકીઓ સાથે અત્યારે આપણને કામ નથી. એકંદર તમારા વિચારો સાથે હું મળતો થાઉં છું છતાં પણ મને લાગે છે કે, એ સિદ્ધાંત સ્થાપીત કરવાથી તેનો દુરૂપયોગ થાય એવો ભય છે, માટે અમારા ઘણા સાધુઓ એ સિદ્ધાંત માન્ય રાખે તેવો સંભવ નથી છતાં પણ હું જ્યારે વધારે ઉંડાણથી જોઉં છું અને નાની નાની બારીકીઓને દૂર હડસેલી મૂકું છું ત્યારે હું તમારા મતને મળતો થઇ શકું છું."

તર્કનાથે કહ્યું–"ચાલો ચાલો સાધુ મહારાજ, **ત્યારે આપણે શા માટે જુદાઇ રાખવી જોઇએ, આજે મારી ઉપર કૃપા કરો, અને મારા ઘરની ભિક્ષા સ્વીકારવાની તસ્દી લો. ભલે મારી નાતવાળાઓ ને મારા સમોવડીઆ પંડિતો કહે કે, તર્કનાથ જૈન બની ગયો છે, પણ એવી રીતના જૈન બનવામાં મને તો ઉલટું માન મળેલું હું સમજું છું અને તમે પણ રોજ રોજ જૈનોના ઘરનું તો જમતા હશો, પણ આજ એક બ્રાહ્મણના ઘરની ભિક્ષા કરી તો જુઓ.**" એમ કહી તર્કનાથ પંડિત બહુ વિનયથી મહાવીરસ્વામીને પોતાને ઘેર ભોજન માટે તેડી ગયો.

नवुं वर्ष आत्मकर्तव्यतामां जागृत थवानुं सीग्नल आपे छे !

(લેખકઃ-વાડીલાલ મૂળજીભાઇ સંઘવી-લીંબડી)

તુમારે લેવું હોય તે લેશો, સહુ છે ત્હમારૂં;
મ્હારે લેવું હશે તે લઇશ સહુ છે મ્હારૂં;
રાજી ખુશીથી લેવું અને આપવું-હૃદયના
સંકોચ વિના; અને તે સાધુત્વ-તે યોગીપણું.

વ્હાલા વીર તનુજો! જયવીર! જયવીર! જયવીર! કેમ તમે મને ઓળખો છોને? ગત વર્ષે મ્હારો અને તમારો સંયોગ થયો હતો, પણ મ્હારી અને તમારી વચ્ચેની તે વખતે નવી ઓળખાણ હતી. મેં તમને મહાત્માઓના ચરિત્રોની વાતો કરી હતી તમે તે સપ્રેમ સાંભળી હતી. યાદ આવે છે ને? ભૂલી તો નથી ગયાને? "દિગંબર જૈન"નો આ ખાસ અંક પ્રગટ થાય છે અને તેને દિવાળીનો ખાસ અંક એવું નામ આપવામાં આવ્યું છે. આજે દિવાળીનો દિવસ છે. દિવાળીનો દિવસ આપણને કેવો આનંદ આપે છે. પહેલી ચોપડીનો પહેલો પાઠ શીખનારા બાળકો પણ એ દિવસને ઉદ્દેશી ગાય છે કે —

દીવાળીના દિવસમાં, ઘર ઘર દીવા થાય;
ફટાકડા ફટ ફટ ફુટે, બાળક બહુ હરખાય."

પણ એ હરખ એકલાં બાળકોનોજ નથી. ન્હાનાં, મ્હોટાં, સ્ત્રી, પુરૂષ સર્વ કોઇના હૃદયમાં એ દિવસોએ હર્ષ વ્યાપી રહે છે. વસ્ત્રાભૂષણ સજીને કંઇક અભિમાન સાથે આમતેમ ફરતા છોકરાઓ જુઓ! નપુરનાં ઝંકાર કરતી, ઘુઘરીવાળા ઘાઘરીઓના ગજગઝાટ સાથે લટકમટક ચાલતી હરખની ન્હાની ન્હાની છોકરીઓ જુઓ! રંગબેરંગી સાડીઓ પ્હેરીને પિયરથી સાસરે જતી અને સાસરેથી પિયર જતી યુવતિઓની પ્રફુલ્લ મુખમુદ્રા નિહાળો! હમંગથી સાસરે જમવા જતા ન્હાનકડા જમાઇરાજ તરફ દ્રષ્ટી ફેંકો! કામની ધમાધમમાં પણ એકાન્ત શોધતાં નવ પરિણીત દંપતીની વિશ્રંભ કથાઓ તરફ લક્ષ ફેરવો! ક્યાં આનંદ નથી? મનુષ્યનો મ્હોટામાં મોટો આનન્દ તે દીવાળીના આનન્દ સાથે સરખાવાય છે. ત્હમે કોઇ મ્હોટી પરીક્ષામાં પસાર થયા હો, ત્હમને કોઇ સારી નોકરી મળી હોય, ત્હમને કંઇ વેપારમાં લાભ થયો હોય, ત્હમારે ત્યાં કોઇ સારો પ્રસંગ હોયતો તેનો આનંદ "**દિવાળીના જેવો**" ગણાય છે. એ રૂડા દિવસો તે શ્રમ લેવાના દિવસો નથી. પણ હમેશાંના શ્રમથી મુક્ત થઇને, રોજનું ગદ્ધાવૈતરૂં છોડી દઇને નિત્યની મગજમારી ખસેડી નાંખીને વિશ્રાન્તિ લેવાના અને આનંદમાં રહેવાના મજાહ મારવાના મોજ ઉડાવવાના દિવસો છે.

નવું વર્ષ બેસી ચુક્યું છે. આપણે ગત વર્ષે જેને નવું કહેતા હતા તે આજે જુનામાં ગણાયું અને નવું પણ જુનું થશેજ. એ ઉપરથી આપણને આપણી ક્ષણભંગુરતા કેવી યાદ આવે છે!!! યુવાવસ્થા ગાળતા હશે તેની બાલ્યાવસ્થા જુનામાં ગણાઇ ગઇ અને વૃદ્ધાવસ્થા ગાળતા હશે તેની બાલ્યાવસ્થા અને યુવાવસ્થા જુનામાં ગણાઇ. આપરથી આપણને સ્વાભાવિક થાય છે કે **જન્મ્યું તે મરવા માટે અને ખીલ્યું તે ખરવા માટે.**

આ પરથી આપણા જીવનની કર્તવ્યતાનું આપણને કેવું ભાન થાય છે? પણ આ વિચારો આપણા મગજમાં લાંબા વખત સ્થાયી રહેતાજ નથી. આપણા મગજના પરમાણુઓ સાથે આવા ઉચ્ચ વિચારના પરમાણુઓ લાંબા વખત મૈત્રી કરી રહેતા નથી. સ્મશાનમાં આપણા સગાવહાલાં કે મિત્રની દહનક્રિયા કરવા જઇએ અને તેની દહનક્રિયાનો તાદશ દેખાવ જોઇએ છીએ તે વખતે આપણું માનસિક જગ કેવું આરિસા જેવું નિર્મળ થાય છે-તે વખતે

આપણુને કેવા વિચારો આવે છે? અરે! આ ગયા ને આપણે પણ જવાના! અને આપણા ક્ષુદ્ર શરીરને માટે આપણે જે અનિષ્ટ કાર્યો કરીએ છીએ, છળ કરીએ છીએ, પ્રપંચ કરીએ છીએ, કોઇ નિર્બળ આંત્માઓ ઉપર આપણે જુલ્મ વર્તાવીએ છીએ આપણી પ્રતિભા પાડવા શોર કરીએ છીએ તે ક્ષુદ્ર શરીરનું રૂપાંતર રાખ જેવું પામવાનો બનાવ તાદૃશ જોઇએ છીએ ત્યારે આપણુને કેવું લાગે છે? આપણા વિચારો કેવું સ્વરૂપ ધારણ કરે છે અને કેટલા બદલાઇ જાય છે, પણ આ સ્મશાનનો વૈરાગ્ય છે તે સ્થાયી રહેતા નથી. તે દેખાવને વિત્યા એક બે કલાક થાય છે કે આપણે તે સર્વ ભૂલી જઇએ છીએ અને આપણે તેના તે.

નવું વર્ષ આપણુને જુનાની વિસ્મૃતિ કરાવે છે—સિંહાવલોકન કરાવે છે- નવું સરવૈયું તૈયાર કરાવે છે—જાગૃત થવાની સુચના કરે છે. કદાચ આ સુચનાથી આપણે થોડીવાર ટટાર થતાં હઇશું, પણ પછી આપણે તેના તેજ. મિત્રો! તમને લાગશે કે આ નવા વર્ષે રૂડા રૂપાળા દિવાળીના દહાડામાં આવા રોદણા રોવાની વાતો કયાંથી કાઢી!? પણ બંધુઓ, આતો આપણા જીવનની પહેલી ફરજ છે અને **નવું વર્ષ આત્મકર્તવ્યતામાં જાગવાનું સીગ્નલ આપે છે.** કેમ આપને કંટાળો તો નથી આવતો? આવે એ સ્વાભાવિક છે. આપણુને પુદ્‌ગલિક મોહ બહુ લાગેલો છે અને તે મોહના પરમાણુઓ એટલા બધા વજ્રલેપ થઇ ગયા છે કે નવા શુદ્ધ પરમાણુઓ દાખલ થતા નથી અને થાય છે એવા શુદ્ધ વાતાવરણમાં આપણે સદ્‌ભાગ્યે જઇએ છીએ અને એ નિર્મળ પરમાણુઓ આપણે મેળવી શકીએ છીએ, પણ તે નવા પરમાણુઓ અને જુના પરમાણુઓમાં વૈરભાવ ઉત્પન્ન થાય છે. જુનાનું પ્રબળ વધારે હોય છે તેથી નવાને દાખલ થવા દેતાજ નથી.

આટલી વાત તો કરી, પણ મથાળે લખેલા કાવ્યનું સ્પષ્ટીકરણ કરવું ભૂલીજ ગયા. અહા! એ કાવ્યમાં કેવો અદ્‌ભુત ચમત્કાર સમાયેલો છે? બંધુઓ, આપણુને તે રૂચશે? આપણુને નાટકો જોવા, સીનેમેટાગ્રાફો જોવા, સારી સારી સૌંદર્યવાન સ્ત્રીઓના વદનો નિહાળવા, મધુર સ્વાદિષ્ટ ભોજનો આરોગવા બહુ ગમે છે, પણ આ વાતતો આપણુને રૂચતી નથી. કોઇ સારૂં મજાનું નોવેલ હોય, કોઇ પેપરમાં મનો-વાર્તા આવી હોય તો તે આપણે સર્વથી પહેલાં વાંચી લઇએ છીએ અને ફીલસુફીની વાતના પાનાં તો ફેરવતાજ જઇએ છીએ. આપણુને એમ લાગે છે કે પેપરમાં આવી વાતો ભરી નકામા ટાયલાં કાં ભરતા હશે? બંધુઓ, આપણુને એ ટાયલાં લાગે છે અને એ ટાયલાં આજે મારે તમને કહેવા છે. તમારે તે સાંભળવા પડશે, નહિ સાંભળો તો મિત્રતાના દાવાએ પણ સંભળાવીશજ! મૈત્રી શામથી થાય છે? આપણે એક નવો મિત્ર કરવો હોય છે તો આપણે તેને આપણા ઘેર બોલાવીએ છીએ, તેને આદર સન્માન આપીએ છીએ; ચાહ, પાન, સોપારી આપીએ છીએ રસ્તામાં મળેતો સલામ કરીએ છીએ અને જેમ બને તેમ ઉપકારના બોજા નીચે દબાવતા રહીએ છીએ, તેના સ્વભાવના અનુસરનારા થઇએ છીએ, તેના વીચારોને માન આપનારા થઇએ છીએ ત્યારે મૈત્રી થાય છે. મૈત્રી શામથી નથી થતી હોં!!!

લ્યો, ત્યારે સાંભળો! દિવાળીના દિને આપણા મહાન્ પિતા **મહાવીર દાદાને નિર્વાણ** પદ મળ્યું હતું. નિર્વાણપદ એટલે મોક્ષમાં ગયા હતા; જન્મ ... ત્યજી અજર, અમર થયા ... સ્વામીને કેવળજ્ઞા... આપણે વીરને ... સર્વે ...

તે જયંતિનું નવું વર્ષ એવું છે, પણ તે જયંતીની ઉજ્જ્વળ અને અમર કીર્તિને આ પિતા શી રીતે પામ્યા? તેનો ટુંકા શબ્દમાં ઉત્તર આપું તો કહીશ કે યોગપણાથી. યોગ એટલે શું? હૃદયની સમતુલતા અને વિશાળતા. "તમારૂં અને મારૂં જુદું નથી". એ ફીલસુફી? અહા! *આર્યાવર્તમાં ચીરોની આ ફિલસુફી હૃદયને* આનંદમાં રસબોળ કરે છે' તમારૂં અને મારૂં જુદું નથી-હું અને તમે એક છીએ. અહો! આ શબ્દોમાં કેવો અદ્વિતીય પ્રભાવ લાગે છે!! આપણી પ્રાચીન ફીલસુફીનો આ એક મુખ્ય પાઠ હતો. ગૌરવ હજી છેક ગુમ થયો નથી! પણ ત્યારે તે ક્યાં છે? જૈન બંધુઓમાં-હૃદયમાં હજી તે વારસો છે, અને વિશેષે કરીને આધુનિક જ્ઞાનમાં નથી, પણ અજ્ઞાનમાં તે છે: તમે સમજ્યા? થોડાજ અપવાદ બાદ કરતાં જૈન બંધુઓમાં એ તત્વજ્ઞાન નાશ પામ્યું છે, અથવા શુન્યવત્ થયું છે, પણ તેના ખેદકારક અવસાનની નોંધ લેવાને હજુ વાર છે. જમાના સાથે અને કહેવાતા સુધારા સાથે 'મ્હારૂં અને ત્હારૂં' એ બેનું પ્રથમ પુરૂષ પષ્ઠી અને દ્વિતીય પુરૂષ પષ્ઠીનું પ્રબળ હદ ઓળંગીને વધી ગયું છે. વ્યાકરણની ભાષામાં એ બે પદોમાં જેટલી ભિન્નતા અને દૂરતા એટલીજ ભિન્નતા અને દૂરતા તે પદોને ચોકસાઇથી વધારે શુદ્ધિથી મ્હારૂં-ત્હારૂં વાપરનારાઓમાં વધી પડેલ છે! અસ્તુ! કાળનું પરિવર્તન તેમાં જલદી સુધારો કરશે.

લેવું અને આપવું-"*to loose and to give*" એ વ્યવહાર અનાદિ કાળથી ચાલ્યો આવે છે. વર્ધમાન સાથે ચડતા ઉતરતા ત્રાજવા સાથે જુઓ! નપુરનાં ઝંકારો બાર વધી જાય ગણીઓના ગણગણાટ સાથે ... થાય છે ... નાની નાની છોકરીઓ ... રંગબેરંગી સાડીઓ પહેરીને પિયરથી ... જતી અને સાસરેથી પિયર જતી યુવતિઓનાં પ્રફુલ્લ મુખમુદ્રા નિરખો! કુમકુમથી માથે આકાશ તરફ ઉંચું ચડે છે! "મારૂં તે મારૂંજ, તમારૂં તે ગાંડ, ગાંડ તમારૂં-હું મારૂં સંભાળું છું, તમો તમારૂંજ સંભાળો. અને ફોડી લો" એ કાયદાની બારીકી જાણનાર સુધરેલા સમાજનું તત્વજ્ઞાન છે! હાલ તો એમ મનાય છે કે હું લઉં તે મારૂં અને આપું તે બીજાનું! *પ્રાચીન સમયમાં આ ફીલસુફી એથી જુદી* હતી. **'હું આપું એજ મારૂં અને લઉં તે મારૂં નહિ-બીજાનું.'** આપણને જે મળે છે, તે આપવાના બદલા તરીકે મળે છે, અને જેમ વધારે અપાય તેમ તેમ વધારે મળે છે, આ સિદ્ધાન્ત હાલમાં ભૂલી જવાય છે. જેઓનો આપણે શક ગણીએ છીએ અને આનંદોપથી જેઓના નામ આપણે લઇએ છીએ તે મહાપુરૂષો આપવામાંજ બહાદુર હતા, લેવામાં અને લૂંટવામાં નહિ!

મહાપુરૂષોની જયંતી-જન્મ દિવસના દરેક ઉત્સવમાં પ્રત્યેક મહાપુરૂષના ગુણાનુવાદ કરવા અને એમના ગુણો ગ્રહણ કરવાની પ્રતિજ્ઞાઓ લેવી એજ મુખ્ય હેતુ છે. દિવાળીનો ઉત્સવ તો કર્યો અને મિષ્ટાન્ન પાન ઉડાવ્યાં, પણ કાંઇ કર્તવ્યનો વિચાર કર્યો? મિત્રો! દરેક દિવાળીનો ઉત્સવ એવું ચેતાવે છે કે આપણા આયુષ્યમાંથી એક વધારે વરસ ઓછું થયું આપણે ઉમરમાં વધતા નથી, પણ ઘટીએ અથવા ઉમરે વધીએ છીએ એટલે આયુષ્યમાંથી ઓછા થઇએ છીએ.

આપણે અહિં (આ દુનિયામાં) શા માટે આવ્યા છીએ અને આપણું શું કર્તવ્ય છે તેનો દરેક માણસે શું વિચાર નહિ કરવો? અને વિચાર કરવો, તો ક્યારે કરવો? વર્ષ ઉપર વર્ષ પસાર થતાં જાય છે, અને કરવાનું રહી જાય છે; આ વાતનો નિત્ય વિચાર કરો, અને આજ શું કર્યું અને કાલે શું કરવું, તેનો રોજ હિસાબ કરો, તો તો ઘણુંજ ઉત્તમ; પણ કદિ રોજ ન બને તો બાર મહિને એક વાર તો તેનો

બે કલાક એકાંતમાં બેસીને વિચાર કરો અને ગયા વર્ષમાં શું સારાં ખોટાં કર્મો કર્યાં તેનો હિસાબ મૂકીને હવે આવતા વરસમાં શું કરવું જોઇએ, તેનું બજેટ નક્કી કરો! સત્કર્મો અને દુષ્કર્મોનું સરવૈયું કાઢીને તપાસો કે આમાંથી કયાં કર્મો વધે છે?

આ જીંદગી સત્કર્મો માટે છે–બીજા પ્રાણીઓને ઉપયોગી થવા માટે છે. ડાહ્યા માણસો એટલા માટે લાંબા આયુષ્યને ઇચ્છે છે, અને વડીલો પોતાથી નાનાંઓને "ચિરંજીવ" એટલે લાંબું જીવો એવો આશીર્વાદ આપે છે. તે પણ એટલા માટે કે લાંબું જીવીને સારાં સત્કાર્યો કરો, દીર્ઘાયુની કિંમત ઘણી મોટી ગણેલી છે, તે દુષ્કર્મો માટે નહિ, પણ સત્કર્મો માટે! વળી એમ પણ સિદ્ધ થયું કે સત્કર્મો કરનારાઓનું આયુષ્ય સરાસરી વધારે લાંબું હોય છે.

માટે મિત્રો! ભાઇઓમાં, મિત્રોમાં જૈન અને જૈનેતર બંધુઓમાં પરસ્પર પ્રેમ વધે, હૃદયના સંકોચ વિના એટલે ઉદાર દિલથી એક બીજાના સુખદુઃખમાં ભાગ લેવાનો નિર્મળ વ્યવહાર વધે, એવા વર્તનને અંગીકાર કરીને નવા વર્ષનો આરંભ કરો! જુવો, આનંદ તો જુવો! બીજાઓને મદદ કરવામાં અને બીજાઓનું કલ્યાણ કરવામાં તમારૂં અંતઃકરણ કેવું પ્રફુલ્લિત થાય છે, કેવું આનંદમાં રહે છે તે તપાસો અને બીજાઓને દુઃખ દેવામાં, બીજાઓનાં સુખો લુંટી લેવામાં અને બીજાઓના સ્વાર્થો લુંટી લેવામાં તમારૂં અંતઃકરણ અંદરથી કેટલું બળે છે, તેનો તોલ કરો! તમો તમારા કાર્યોમાં તમારા અંતરાત્માને પૂછીને આગળ વધો. એ અંતરાત્મા એમજ કહે છે કે સર્વમાં હું એકનો એકજ છું–જુદો નથી.

લ્યો, હવે તો બહુ વખત થયો છે–નવા વર્ષે ગમ્મતને બદલે બહુ કંટાળો આપ્યો છે. કેમ તે સર્વ મને માફ કરશોને? નવું વર્ષ તમને તથા 'દિગંબર જૈન'ના ઓનરરી તંત્રી સાહેબ શ્રીયુત્ મુળચંદભાઇ કે જેઓ આપણે આના વિષયો છુટથી ચર્ચવા સગવડ કરી આપે છે તેમને મુબારકબર્યું ઇચ્છું છું. આ વર્ષમાં તમારા સર્વ મનોરથો પૂર્ણ થાઓ એમ ઇચ્છું છું. જીવતા રહીશું તો આવતા વર્ષે પુનઃ મળીશું. લ્યો, જયવીર!



कार्तिक वदी अमावस (कु. वदी) दीवालीको रात्रिके आठ बजे दो मित्र अपने अपने बच्चोंकी उगलियां पकड़े हुवे, परस्पर वातचीत करते जा रहे थे, मालूम होता था कि कदाचित वे दीवाली की जगाजोत (रोशनी) दिखाने के लिये ही अपने अपने बच्चोंको लिये जा रहे थे। जिस प्रकार दोनों मित्र परस्पर बातचीतमें निमग्न थे, तैसे ही बच्चे भी परस्पर हंसते कूदते और बीच बीचमें अपने अपने पितावों की वातोंमें विघ्न डालनेमें कमी नहीं करते थे, वे बार बार दद्दा दद्दा, यह किसकी हवेली है? यह क्या हो रहा है? लोग यहां क्यों इकट्ठे हो रहे हैं? आज जगाजोत क्यों लगी है? ये लोग सुरईया और मीनहच्य, भौंरिया इत्यादि क्या कह रहे हैं? झंडी झंडी क्या कहाती है? इत्यादि कह कर अपने बालस्वभावका परिचय दे रहे थे।

इतनेहीमें टेकचंद झुंझला पडे बदमाश कहीं के नाकों दम कर रखा है, मारे पर्यो कौन और क्याके कान फौरे डालते हैं, खबरदार अब बोले तो। चुप रहो, नहिं तो अभी घर छोड़ आऊंगा।

जयचंद-भैया घबरावो नहीं, ये बच्चे हैं, इनका स्वभाव चंचल होता है, इसी प्रकार इनके मनमें तर्क उत्पन्न होनेसे उनका ज्ञान बढ़ता है। इनको चुप करना उचित नहीं है किन्तु इनके प्रश्नोंका बुद्धिपूर्वक उत्तर देना चाहिये।

टेकचंद-इसके लिये आपहीको फुर्सत है सो बैठे बैठे बका करो, मुझसे तो सिर फोड़ी नहीं होती है।

जयचंद-चिंता नहीं, मैं ही कर लूंगा, (बच्चोंको पुंचकार कर) बेटा, रोवो मत, आवो हमसे पूछो, हम बताएंगे, परंतु देखो बेटा-कोई जब बात करता होवे, तो बीचमें नहीं बोलना, देखो इसीसे तुम्हारे दद्दा नाराज हुवे हैं। समझे देखो, बीचमें बोलना कैसा बुरा होता है।

बच्चा-हां, अब न बोलेंगे।

टेकचंद-क्यों भाई आज प्रातःकाल मंदिरजी और और सालोंसे कुछ कम आदमी मालूम होते थे न? और देखो-जगा जोत भी इस साल कम ही मालूम होती है, और तो क्या कई मकानोंमें तो सफेदी भी नहीं हुई है, इसका क्या कारण है?

जय०-आदमी तो अवश्य कम थे और रोशनीभी कम ही है। इसका कारण मुझे तो यही मालूम होता है कि लोगों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, जब घरमें खानेको न हो तो फिर धर्म कर्म कुछ नहीं सूझता, न टीमटाम ही सुहाता है।

टेकचंद—भाई बात बिल्कुल ठीक है, मेरे गले उतर गई। मैं अपनी ही बात कहता हूं कि जिसदिन १०) बीस रुपयाका बिक जाता है उसदिन बड़ा आनन्द मालूम होता है और दो पैसा खर्चनेको भी जी चाहता है! परंतु जिस दिन कुछ नहीं बिकता है, उस दिन बहुत झुंझलाई छूटती है, और कुछ भी अच्छा नहीं लगता, उस दिनसे (मौजीलालकी हंसीभरी कटाक्षसे) तुम्हारी भौजाईके चित्तपर भी बड़ा प्रभाव पड़ा है, वह तो नयी स्त्री हो गई है, कभी चूं चपाट नहीं करती है, नं गहना कपड़ा मागती है, मैं जो लेकर दे देता हूं प्रेमसे पहिरती ओढ़ती है और जो चीज़ ला देता उसे सम्हालकर रखती खाती बनाती है, माताजी भी प्रसन्न रहती हैं, इसीसे आजकल मैं प्रसन्न रहता हूं। परंतु यह तो बतावो आर्थिक दशा क्यों बिगड़ती जाती है?

जय०—भाई साहेब, समय बदलाता है, वैसे ही लोगोंके रीति रिवाज भी बदलते हैं तब आवश्यकताएं भी नई नई बढ़ती हैं, सो ऐसी अवस्थामें जो समयके अनुकूल उद्योग नहीं करता है, वह अवश्यही घाटा उठाता है। देखो, किसी समय हमारा देश कृषिपूर्ण देश कहलाता था, इस देशमें भांति भांतिके अनाज, फल, मेवे, साग, मिष्टान्न, घी, दूध, उत्पन्न होते थे, उस समय यह देश इन्हीं पदार्थोंके कारण धनी मानी और बलिष्ट था, लोगोंकी रुचि उन दिनों बाहिरी बनाव (लिफाफा) पर नहीं था, उन्हें केवल दिखाऊ काम पसंद न था, जो कुछ भी काम करते वह सच्चे दिलसे ही करते थे, शरीरको बलिष्ट, और मनको सहनशील गंभीर बनाना ही उनका उद्देश्य था, जब लोग खूब खाते थे तो चोरी चपाड़ीका डर भी न रहता था, क्योंकि भूखा आदमी चोरी करता है, उन दिन बाहिरी चमक दमक अच्छा नही समझा जाता था, सब मोटा सोटा कपड़ा पहिनकर ही लज्जा रख लेते थे यदि, चार पाई न भी हो तो जमीन पर विना बिछाने भी सो जाते, पैरमें जोड़ा तो कदाचित ही कोई पहिरता और छाता (छतरी) तो राजा महाराजावोंके ही यहां रहती थी, दशवीस कोश चलनेको कुछ चलना नहीं कहते थे, न मन आधा मन बोझ ले जाना कुछ सभ्यताके बाहर था, एक जोड़ा धोतीका १९ महिने चलता और फिर फट जाने पर गूदड़ा (कथरी) बनाई जाती जो बर्सों ओढ़ते, एक दीवेमें सब घर उजेला हो जाता, आग तो घरमें सदा अंगीठीमें बनी ही रहती थी, एक अंगरखा घरभरको काम देता था, पढना लिखना यातो ब्राह्मणोंमें कोई जानते या वैश्योंमें जानते थे, पाठशाला ब्राह्मणदेवताका ही घर था, और आटा दाल घी आदि सीधा शिष्योंसे प्राप्त कर लेना ही उनकी फीस व पगार (वेतन) थी, न रेल थी न तार था, न पोष्टद्वारा पत्र

भेजनेका कोई प्रबन्ध था, चिट्ठियां आदमी (हल्कारा) के द्वारा जातीं और बणजारोंके द्वारा प्रान्तोंकी वस्तुयें अन्य प्रान्तोंमें पहुंचती थीं, यहां लाखा (एक एक लाख बैल रखनेवाले) बणजारे थे, इत्यादि इत्यादि।

अब समयने पल्टा खाया तो सब बातें बदल गईं, अब पश्चिमी सभ्यताका उजेला हुवा है, आपका अंतरंग आप जानें, परंतु बाहिरी लिफाफा (ढोंग) बढ़ रहा है, अब चाहे खानेका न हो, घरमें चूहे बिल बनाते हों बच्चे और स्त्री भुखके मारे पुकारते हों, परंतु बढ़िया अचकन, चपकन, टोपी, कोट, कमीज, कलफदार पाजाभा, चुरुट, जूते, छड़ी, कंघी कामनिया तेल और हेंड बेग यह तो चाहिये ही। खानेका न हो तो परंतु चाहका प्याला तो आवश्यक है, पानीके बदले लेमनेट, सोडावोटर बर्फ, कुलफीमलाई और रम ह्विस्की आदि बिना काम नहीं चलता है, रहनेका घर न हो पर होटलमें तो अवश्य ठहरेंगे, तरह तरहके कपडे, मोजे, गुलूबन्द, बनियान, ओवरकोट, बास्कट, कमीज, गौन, साडी, इत्यादि चल पडे हैं, अब पीढ़ापर बैठनेसे चूटड़ (नितंब) छिलते हैं, इसलिये कुर्सी आरामकुर्सी कौन चाहिये, सेरभर बोझके लिये कुली और १ फर्लांग चलनेके लिये गाड़ी तांगा बाइसिकल, मोटर बिना काम नहीं चलता है, इत्यादि इत्यादि अनेकों बातें चल पड़ी हैं जिनका रोकना कष्ट साध्यही नहीं असाध्य ही समझना चाहिये, हो रहा है।

सो भाई, ऐसे समयमें यदि आप खद्दा (गोड) का जोड़ा और पाग अंगरखा लेकर बेचने बैठो तो भला कौन छुवेगा, १ मनुष्यको तो आवश्यकता है पानीकी और तुम देते हो घी या मिर्च या मलाई तो क्या उसके पानीकी चाहके आगे आपके घी इत्यादिका मान होगा? कभी नहीं २। ऐसे समयमें जो लोग चेते, उन्होंने इस समयकी आवश्यक वस्तुएं तैयार की और उनसे आपके देशको भर दिया, उनके बदले उन्होंने द्रव्य कमाया। ठीक है "जिन ढूंढा तिन पाईया पानी गहरे पैठ" यही कारण कि तुम्हारा देश और तुम कंगाल, दरिद्र, निरुद्योगी, निर्बल, निस्तेज होते जा रहे हैं, और दूसरे देश मालामाल होते जाते हैं। तुम्हारा व्यापार गिरता जाता है और विदेशी लोगोंका बढ़ता जाता है।

टेकनंद–तब क्या जो जैसा चले उसे वैसा चलने देना चाहिये? हमलोगोंको यह शौकीनी पसंद नहीं है, इसीसे इसे उत्तेजन नहीं देते हैं।

जयनंद–भाई तुम भूलते हो। जब बांध टूट जाता है तो रोकनेमें कौन समर्थ होता है तुम्हारी क्या ताकत है? जो किसीको रोक सको, और उत्तेजन न देनेका पाठ पढ़ा करो, बहांपर वे अपनी आवश्यकताओंकी पूर्ति विदेशोंसे करते जाय, बस फिर रोना

करो कि व्यापार नहीं रहा, आजकल तो खर्चेको भी टके नहीं आते इत्यादि। हां यदि तुम बाह्याडंबर (शौकीनी) यथार्थ में नहीं बढ़ाना चाहते हो, तो तुम सादे बनो, अपनी संतानको सादी बनावो, सादे बननेके लिये शिक्षा देते रहो, परंतु व्यापारको मत खो दो, जब लोग तुम्हारे पवित्र उद्देश्यको समझ जावेंगे, तो वे आप हीं फिरेंगे, और तब तुम्हारा व्यापारका ढंग भी फिर सकेगा।

टेकचंद–तब क्या करना चाहिये जिससे व्यापार बढ़े ?

जयचंद–हम लोगोंको पहिले देखना चाहिये कि वर्तमानमें किन वस्तुवोंकी आवश्यक्ता हैं, लोगोंका चित्त किन वस्तुवोंपर आकर्षित हो रहा हैं, विदेशोंसे कौनसी वस्तुवें अधिक हमारे देशमें आती हैं, इत्यादि। फिर क्या वे वस्तुवें हमारे यहां तैयार हो सक्ती है ? यदि तैयार हो सक्ती है, तो हम विदेशोंकी अपेक्षा कितनी सस्ती उन्हें बेच सक्ते हैं, और कितनी बहुतायतसे तैयार कर सक्ते हैं, हमारी बनाई वस्तुएं कितनी उपयोगी और टिकाऊ (बहुत समय चलनेवाली) तथा देखनेमें सुहावनी (fine) बन सक्ती हैं, क्या हमारी बनाई हुई वस्तुवें हमारे देशके सिवाय विदेशोंमें उपयोगी हो सकेंगी इत्यादि। इसके पश्चात् यदि अनुकुलता हो तो अपने आपही अथवा कंपनी (सांझ) द्वारा बड़े बड़े कारखाने (उद्योगशालाएं) खोले और उनके द्वारा बहुत सस्ते दामोंपर सुन्दर और उपयोगी पदार्थ तैयार कराकर देशविदेशमें प्रचार किया जाय, कला कौशल्य देशमें बढ़ाया जाय, आजकल हरकोई आदमी नौकरी (गुलामी) के लिये मुंह फैलाये डोलता है, यदि यह शिल्पविद्या, दस्तकारी, हुन्नर इत्यादिका काम बढ़ जायगा तो फिर यह शिकायत भी मिट जावेगी और व्यापार भी खूब चमक उठेगा,

टेकचंद–भैया देखो, शिल्प आदिका धंधा तो शुद्रोंका है, वह उच्चवर्ण द्विजाति कैसे कर सक्ते हैं ?

जयचंद–ऐसा समझना भूल है, प्रत्येक प्रकारका धंधा, की जिसमें जीवहिंसाकी बाहुल्यता न हो, कर सक्ता है, यदि तुम शिल्पादिको शूद्रोंका धंधा बतावेंगे, तो बतावो नौकरी (सेवकाई) यह फिर किसका धंधा होगा, शोक तो इसी बातका है की हम सेवावृत्ति को तो, जो केवल पराधीन ही है, जिससे आत्मा दीन और पतित हो जाता है, अच्छी समझते हैं, और स्वाधीन वृत्ति शिल्प उद्योग हुन्नरादि व्यापारोंको बुरी दृष्टिसे देखते हैं। स्मरण रखो कि देशका दारिद्र सेवकाईसे नहीं किन्तु व्यापार व उद्योगसेही दूर होगा, जापानने जो अपनी गणना उच्च देशोंमें करा ली है और जर्मनी जो ब्रिटिश सिंहके सन्मुख लड़नेको तैयार हुवा है (चाहे वह हार क्यों न जाय) इसका कारण केवल यही

प्रतीत होता है कि इन्होंने प्रथम अपने देशमें कलाकौशल्यकी वृद्धि की और अपना आर्थिक बल बढ़ाया है। जब कि हमारी ब्रिटिश सरकारने हम लोगोंको अनेक प्रकारके रेल, तार, स्टीमर, आदि के द्वारा एक देशसे दूसरे देशोंको जाने आने माल भेजने और मंगानेका इतना सुभीता कर दिया है, और हम लोग इतनेपर निरुद्यमी आलसी बने रहें, और कमाकर न खायें तो हमारे ही भाग्यका दोष है या हमारा ही दोष है। इस विषयमें हम्हें विदेशोंसे उद्योगादि विषयों होड़ा होड़ी (कि देखें कौन कितना अच्छा, उपयोगी, सुन्दर और सस्ता माल बनाता है) करना चाहिये, न कि उनसे द्वेष कर कोसना चाहिये, किसीको कोसनेसे हमारा कोष नहीं भरेगा, किन्तु उद्योग करनेसेही भरेगा।

टेकचंद–भाई, बहुत कंपनी खुली परंतु चली तो कोईभी नहीं, प्रायः सभी दिवाला साफ कर बैठीं, सो ठीक है जब कि लोग विदेशी वस्तुएंही पसंद करते हैं, तब देशी कंपनीयां कैसे चल सकी हैं ?

जयचंद-नहीं, यह बात मिथ्या है, लोगोंको आवश्यकताओं पूर्तिसे प्रयोजन है से तो येन केन प्रकारेण अपनी इच्छित वस्तुएं चाहते हैं चाहे वे स्वदेशी हों चाहे विदेशी, पर हों उपयोगी सुन्दर और और सस्ती, उनपर यह मिथ्यारोप करना अनुचित है कि " वे विदेशी वस्तुओंपर मोहित हैं " हां यह बात अवश्य है कि उन्हें अभी स्वदेशी वस्तुवोंका पक्ष नहीं है, वे अपने आपको इतना सहनशील व धीर बना सके हैं कि स्वदेशी पदार्थ चाहे कीमती हो, विशेष उपयोगी न हों, सुन्दर भी न हो तोभी वे उन्हेंही खरीदें इत्यादि। रही कंपनीयोंके दिवालेकी बात सो यों है कि वे कंपनियें जिनका दिवाला निकल जाता है सच्चे ढंगपर काम नहीं चलातीं, आरंभमें तो अच्छा माल तैयार करती हैं या सचाई दिखाती हैं, और ज्योंही कार्य चल पड़ता है, त्योंही वे धोखेकी टट्टी लगाकर सच्चे मालके बदले नकली झूठा माल चलाने लगते हैं यह अतिशय लोभही उनके नाशका कारण होता है, बस लोगोंका विश्वास उठ जाता है और फिर कंपनियां दिवाला साफ करती हैं, चौबे छब्बे होने जाते हैं पर दुबेही रह जाते हैं, जिस समयसे स्वदेशीका आन्दोलन हुवा उसी समयसे लोगोंने खूबही ओटमें चोटें उड़ाईं, मेनचेष्टरके बने मालपर अपनी छाप लगाकर स्वदेशी कहकर दूने चौगुने किये, स्वदेशी चीनीकी मिठाई कहकर मोरसकी बनी मिठाई स्वदेशीके भावमें बेची और बहुत धूर्त अब भी ऐसा करते हैं। फल यह हुवा कि अब लोग अपनी प्रतिज्ञाको तोड़कर खुले मैदान विदेशी वस्तुओंका भोग उपभोग करने लगे, अब कहिये दोष किसका है ?

टेकचंद–यह बात तो ठीक है। एक बार मैं भी एक हलवाई [कंदोई] के यहां गया और स्वदेशी चीनीकी मिठाई दो आना पावके भावसे लेकर चला, थोड़ीही दूर चलकर अपने एक मित्रसे बातें करने लगा, कि इतनेहीमें देखता क्या हूं कि वही ≈) पावकी मिठाई उसी थालमेंसे ‑।) सवा आना पावमेंही मोरसकी कहकर वही हलवाई बेच रहा है, बस मुझे घृणा हुई और वह मिठाई एक भिखारीको देकर चला आया। पर यह तो बतावो कि इस समय हम्हें किस प्रकार देशमें कलाकौशल्य बढ़ाना चाहिये नाकि देशका दरिद्र दूर हो और धर्मरुचि भी बढ़े ?

जयचंद–भाई, हम लोगोंको उद्योगशालाएं (हुन्नरशालाएं) खोलना चाहिये, जिनमें प्रत्येक बालकको किसी न किसी हस्तकला आदिकी शिक्षा आवश्यकीय रक्खी जाय। बॉर्डिंग हाउस (छात्रालयों) में भी आधा घंटा कमसे कम किसी भी कलाकौशल्यके काम सिखानेमें लगाना आवश्यक है, जैसे धर्मशिक्षा बोर्डिंगके समस्त छात्रगणोंको लेना नित्यावश्यकीय है वैसे एक विषय यह भी रहे, इससे व्यायाम, मनोरंजन, और उद्योगिक शिक्षा ये तीनों कार्य साथ होंगे, सीना, बुन्ना, लकड़ीका काम करना, चित्रकारी करना, ये तो बिलकुल मामूली बातें हैं, परंतु इनके सिवाय भी अनेक प्रकारके उद्योग ऐसे हैं, जिनमें अल्प पूंजीसे मनुष्य बहुत कुछ कमा सक्ता है। देखिये जापान कैसे छोटी छोटी चीजोंसे धन कमा रहा है, हर्ष हैं कि मालवा दिगम्बर जैन प्रांतिक सभाने अपने वड़नगरवाले जल्सेपर इसका भी एक प्रस्ताव रक्खा था, जिसका कार्य कुछ अंशोंमें श्रीमान दानवीर सेठ हुक्मचंदजी इंदौरकी चालू संस्थावोंमें आरंभ हो हुवा है, सीना, मोजे आदि बुन्ना, यह काम तो उन्होंने चलाना स्वीकार भी कर लिया है और इस विषयमें अनुमान १००) मासिक खर्चकी भी स्वीकारता कर दी है।

टेकचंद–वाह ! धन्य है यदि हमारे जातिके गण्यमान्य सेठ इसी प्रकार ध्यान देने लगें तब तो बहुत शीघ्र लाभ हो।

जयचंद–हम लोगोंका कर्तव्य है कि स्वयम् कुछ उद्योग करते रहें और इसी प्रकार लोगोंको सुझाते समझाते रहें तो अवश्यही कभी सफलता होगी।

प्रकाश–दद्दा, चलो नींद आती है।

जयचंद–अच्छा बेटा चलो, अच्छा जुहारु भैया टेकचंदजी।

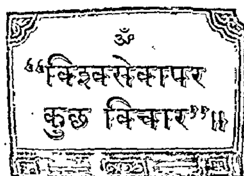
टेकचंद–जुहारु भैया जुहारु।

कहकर दोनों मित्र अपने अपने घर गये, मैं भी जाता हूं। जुहारु।

जाति सेवक–

मा. दीपचन्द परवार–नरसिंहपुर.(C.P.)





(१)

यदि तुम दूसरोंकी सेवा करनेकी इच्छा रखते हो, जिसमें उन लोगों की भलाई है और तुम्हारी कुछ हानि नहीं है, तो तुम्हें निम्न लिखित तीन नियमोंपर अवश्य ध्यान रखना चाहिये—

(क) विश्वसेवा करना ही तुम अपने मनका सर्वोत्तम आनन्द जानो।

(ख) अपनेको तुम उस महती बली-यसी शक्तिसे प्रेरित होता हुआ समझो जो तुम्हें विश्वसेवा करनेको प्रेरित करती है।

(ग) तुम दूसरोंमें भी उसी दैवी प्रकृति का विकाश अनुभव करो जो स्वयं तुममें भी है।

(२)

स्मरण रखो कि जो कुछ तुम दूसरे के विषयमें कहते या सोचते हो, सम्भव है कि पहलेहीसे दूसरा भी तुम्हारे विषयमें उसी प्रकारकी बात कह या सोच चुका हो॥

(३)

यदि तुम्हें कोई कष्ट दे तो जानलो कि कष्ट देनेवाला पीड़ित प्राणीसे कहीं अधिकतर दुःख उठाता है।

(४)

अपने प्रेमकी शक्तिद्वारा अपनी तथा दूसरेकी मानसिक स्थिरता विचलित न करो। तुम्हारी सेवा दिन दूनी रात चौगुनी बढ़नी चाहिए न कि घटनी।

(५)

सेवा करनेमें दूसरेकी अधिक शक्ति देखकर जीमें कुढ़ो मत बल्कि प्रसन्न हो कि ऐसा भी पुरुष विद्यमान है जो उन लोगों की सहायता कर सकता है जिन्हें तुम्हारी परिमित शक्ति सहायता नहीं पहुँचा सकती।

(६)

जब कुछ दान करो तो इस आशा से नहीं कि पानेवाला ही उसे लेकर सुखी हो। तुम्हें उस समय अधिक आनन्द अनुभव करना चाहिये। जब तुम यह देखो कि तुम्हारे दान देनेसे दानपात्र ही नहीं बल्कि दूसरे भी आनन्दित हो सके हैं।

(७)

जब तुम दूसरेकी सहायता करने लगो तो ठीक उसी आदर्शपर अपनेको बनावो जिससे तुमने सेवा करनेकी शक्ति पाई है। इससे तुम अपने आदर्श तक पहुँच सकोगे और सहायता भी खूब अच्छी तरहसे पहुँचा सकोगे।

(८)

देखो—सेवाकी रीति सीखो। विश्वकी सेवा करनेहीसे चन्द्रमाका मुख उज्ज्वल है—गंगाका शीतल सलिल है—मेघका खजाना अपट है।

(९)

यदि सच्चा सेवी बनना चाहो तो निष्काम सेवा करो अर्थात् अपनी की हुई सेवाके बदलेकी आशा न रखो। धन्य पुरुष

के कृतज्ञतासूचक वचन सुनने की कामना न करो। समझो—जिस प्राणी की तुम सेवा करते हो—उसके शरीरकी नहीं वल्कि उसकी अन्तरात्मा की सेवा करते हो। यद्यपि सेव्य पुरुषके होंठ भी नहीं हिलते तथापि वह शुद्धान्तरात्मा अपनी कृतज्ञता गुप्त रीतिसे तुमपर जता रही है।

(१०)

जिसे तुम प्यार करो—उसके प्यार की इच्छा न रखो। यदि तुम्हारा प्रेम सच्चा होगा तो आज ही या कल उसके अन्तःकरणमें ध्रुवमेव प्रवेश कर जायगा और उसका प्रेम झट तुम्हारे प्रेमके गलेका हार बन जायगा। अगर तुम्हारा प्रेम चन्दरोज़ा हो तो भला होगा कि यह रहस्य तुम उसपर कभी प्रगट न करो जिसमें तुम्हारे श्लाघ्य प्रेमके टूटजानेसे किसी दिन उसे मर्मवेदना अनुभव न करना पड़े।

(११)

स्मरण रखो—चेतलो—जो अपनेको संयत नहीं रखता, व कभी विश्वसेवा नहीं कर सकता। सेवा किये मेवा मिलता है अतएव माना गया है कि सेवा भवसागरकी नौकाका +खेवा है—वैकुण्ठके बटोहियोंका कलेवा है।

(१२)

सच्ची सेवा वही है जो भार (बोझे) को हलका कर दे—यह नहीं कि उसे एकदम हटा ही दे।

(१३)

तुम तभी औरोंकी पूरी सहायता कर सकोगे, जब तुम उन्हें अपनेर आदर्शपर गठित हुआ समझकर स्वीकार करोगे।

(१४)

मनुष्यमें जो उत्तम गुण है उसीसे वह दूसरेकी सेवा सहायता करनेमें समर्थ है। सेवाकी उतनीही भाँतियाँ संसारमें हैं जितने साहाय्यापेक्षी मनुष्य हैं।

(१५)

सुरभित सुन्दर सुमनोंका सौरभ लेकर सर्व साधारणको प्राणामोद पहुंचानेवाली हवाको—ग्रीष्मातपक्रान्त तृषार्त्त पथिकको सुखाश्रय देनेवाले शीतलजलान्वित कूपको गोदीमें लिये हुए सघनविशाल वटवृक्षदेवको—इन दोनों सेवापथके पान्थोंको—आदर्श बनाकर चलो।

(१६)

विचारो—दिनका एकर मुहूर्त सत्सेवाके लिये है कारण यद्यपि प्रतिक्षण दयापूर्ण कार्य्य करनेका अवसर नहीं प्राप्त हो सकता है तथापि दयार्द्रभाव बनाये रखनेका शुभ अवसर हरघड़ी सामने रहता है।

(१७)

मनुष्य जितनाही अपने [सुखके] विषयमें कम विचार करेगा उतनाही वह अपनी उन्नतिका सहायक हो सकेगा। सेवाका छोटा से छोटा कार्य्यभी—सेवीके समक्ष—विश्वसेवक भावकी उत्तरोत्तर वृद्धिके रूपमें दिखाई देता है।

(१८)

यदि कोई मनुष्य तुम्हारी सेवा उस रूपमें अङ्गिकार नहीं करता है जिस रूपमें तुम देना चाहते हो तो कोई दूसरी [नई रीति] राह निकालो। तुम्हारी मनोकामना

+खेवा-भाड़ा, नावका किराया।

तो यही रहनी चाहिये किसी प्रकार सेव्य पात्रकी उचित सेवा बन पड़े। उसके प्रति तुम्हें यह कदापि प्रगट न करना होगा कि किस प्रकार तेरे द्वारा उसकी योग्य सेवा की जायगी।

(१९)

किसीकी सेवा करनेमें लज्जित मत हो। चाहे वह तुम्हारा परिचित हो वा अपरीचित। उसकी आवश्यकता [चाह–दरकार] तुम्हें उस का भाई बना देती है किन्तु तुम्हारी लज्जा एक प्रकारका मोहमय गर्व है जो उसकी आवश्यकता पड़नेपर एक सहायकसे उसे वंचित कर डालती है।

[२०]

अपने मनमें कभी ऐसी भावना न आने दो कि तुमने आज औरोंकी कुछ सहायता की है बल्कि यही सोचते रहो कि तुम और अधिक सहायता किसीको पहुंचा सकते हो या नहीं। सायही साथ यह भी ध्यान रखो कि इस प्रतारणामूलक संसारके कितने प्राणियोंका कष्ट निवारण करनेमें तुमने सहायता पहुंचाई है अर्थात् तुम्हारी सेवा द्वारा कितने दुःखी जीव सुख प्राप्त कर सकते है।

(२१)

जो लोग सद्गुरुके सच्चे शिष्य हैं वे ही लोग [समाजके] नेता हो सकते हैं क्योंकि जो आज्ञा–पालन करना नहीं जानता वह कदापि दूसरेको अपनी आज्ञाका वशवर्ती नहीं बना सकता।

(२२)

यदि किसी मनुष्यको तुम अपनी भलाइ माननेको बाध्य करना चाहते हो तो पूर्ण ही से तुम स्वयं उसके सदुपदेशोंके अनुसार चलने लग जाओ।

[२३]

निष्कलङ्क एवं अनवद्य कार्य्य तुम तभी सम्पादन कर सकते हो जब तुम अपनी प्रशंसा या कीर्तिका विचाराङ्कुर अपने मानसक्षेत्रसे एकदम ध्वंस कर दोगे। संसारमें अमर होना चाहो तो विना किसी लागलपेट वा स्वार्थके अपनी सेवा व्यय करते जाओ। यदि सज्जनोंद्वारा अपने अच्छे कार्य्य और विचारों के बदलेमें तुम अपनी प्रशंसा चाहते हो तो दूसरोंके अच्छे कार्य्य और विचारोंपर अपनी हार्दिक हर्ष और प्रशंसावादिनी सम्मति प्रकट किया करो। अपनी भलाई चाहते हो तो दूसरोंकी भलाई करनेका दृढ़ व्रत धारण कर लो।

(शेष फिर।)

कुमार देवेन्द्रप्रसाद जैन–आरा

जैन माताकी पुकार।

गज़ल।

होते होते ऐ मेरे वीरो! ज़माना हो गया।
जीतेजीके वास्ते आंसू बहाना हो गया॥
हिम्मत करो, बांधो कमर, चेतो जरा आगे बढ़ो।
पीछे हटते किसलिए, क्यों तुम दवाना हो गया॥
क्यों नहीं करते हो जा करके मेरी फरियाद तुम।
वेगुना लख्ते जिगरको, कैदखाना हो गया॥
ऐसे जिने पै तुम्हें धिक्कार! हे पुत्रो! मेरे।
एक भाईको तुम्हें मुश्किल छुड़ाना हो गया॥
जार्ज पंचम राजमें, जब शेर बकरी संग रहें।
किसलिए अन्यायका, जैपुर ठिकाना हो गया॥
श्री मार्चोनिहो लार्ड हार्डिजसे मेरी है इल्तिजा।
कैद करने पुत्रके क्या क्या बहाना हो गया॥
ताकि पन्नाकी कदूरत साफ हो जावे समां।
रोते रोते हाय! मेरा दिल दिवाना हो गया॥

पन्नालाल जैन–अलवर।

જૈન મહિલાનું શુભ ભવિષ્ય કેમ થાય?

(લેખક=શ્રીમતી લલિતાબાઇ, શ્રાવિકાશ્રમ-મુંબઇ)

અરે મારી અજ્ઞાનના સડાથી ક્ષીણ થતી બ્હેનો તથા નિરાધાર બ્હેનોનો ઉદ્ધાર કરવામાં સમર્થ ભાઇઓ આજે મારા હૃદયમાં 'જૈન મહિલાનું શુભ ભવિષ્ય કેમ થાય' એ વિષે કંઇ થોડા વિચાર ઉદ્‌ભવ્યા છે તે આપની સમક્ષ રજુ કરૂં છું, એ ઉપર આપ પુરતું ધ્યાન આપીને ક્રિયામાં મુકવા જેવી વાતોને ક્રિયામાં મુકશો એવી આશા રાખું છું. અતીતકાળમાં કેવી કેવી દેવીઓ થઇ ગઇ કે તેમનાં ગુણોનું ચિંતવન કરતાં તે પ્રમાણે આપણે આચરણ કરવાને શીખીએ તો એક આદર્શ રૂપ બનીએ, એમાં કાંઇ પણ શક નથી. એક મેનાસુંદરીનોજ વિચાર કરો તો તેમના પિતાએ તેમને નાનપણમાં કેટલો અભ્યાસ કરાવ્યો હતો? એ બાઇનું નાનપણમાંજ લગ્ન કર્યું નહોતું, પણ ધાર્મિક, વ્યવહારિક, ગૃહવ્યવસ્થા વિગેરે કળામાં નિપુણ થયા બાદ લગ્નનો વિચાર કર્યો હતો. તેમના પિતાને કર્મોદયથી ગર્વ પ્રાપ્ત થયો અને એક દુર્ગંધી કોઢીયા સાથે લગ્ન કરવાનો નિશ્ચય કર્યો તે વેળાએ પણ આ કર્મના ફળને સારી રીતે જાણનાર તત્વના સ્વરૂપને ઓળખનાર ધીર, વીરબાળા મેનાસુંદરી દુઃખી થઇ નહોતી તેનું કારણ શું? તેનું કારણ એજ કે કર્મ અને આત્મા અર્થાત્ દેહ અને આત્માને ભેદવિજ્ઞાનની દ્રષ્ટિથી ભિન્ન જાણતી હતી, અને તેને સત્યાર્થજ્ઞાન વ્યવહારિક સાથે હતું. આ ઉપરથી નિશ્ચય થાય છે કે જેને સત્યાર્થ જ્ઞાન પ્રાપ્ત કર્યું હોય છે તેને કોઇપણ અવસ્થામાં દુઃખ નથી અને તેથીજ જ્ઞાનીઓ કહે છે કે દુઃખનું મૂળ અજ્ઞાન છે. જ્ઞાનથીજ મેનાસુંદરીએ નાના પ્રકારની શુભ ભાવના ઓ રાખી અરિહંતપૂજા કરીને પોતાના પતિનો તેમજ બીજા સાતસો સુભટોનો કોઢ દૂર કરાવ્યો અને પોતાના પતિને એક દેવ મૂર્તિ સમાન જોઇ સુખી થઇ હતી.

વર્તમાનમાં પણ જ્ઞાનથીજ રેલ ગાડી ચાલે છે, જ્ઞાનથી મીલો વગેરે સાંચા ચાલે છે, જ્ઞાનથીજ સેંકડો કોશપર તાર એક કલાકમાં સંદેશો લઇ જાય છે, આપણે જોઇએ છીએ કે ક્ષત્રી, કાયસ્થ, પારસી વગેરે જેઓ જ્ઞાનમાં આગળ પડતો ભાગ લે છે તેઓ તેટલે દરજ્જે ઉન્નતિના માર્ગમાં આવી સંસારીક સુખનો અનુભવ લઇ રહ્યા છે. મારે અફસોસની સાથે જાહેર કરવું પડે છે કે આપણી કોમ કેટલી પછાત છે? કેટલીક બ્હેનો તો અક્ષરશૂન્ય જોવામાં આવે છે. તેમને જ્ઞાન લેવાનું કહીએ તે એક ભયંકર દુઃખ લાગતું હોય એમ દેખાય છે, કેટલીક ગામડાની વિધવા બ્હેનોને ગામમાં ભણવાની જોગવાઇ હોતી નથી, તેઓને કહીએ કે તમારે માટે મુંબઇ આશ્રમ તથા ઇંદોરનું આશ્રમ ખુલ્લું છે તેમાં રહો અને સારી રીતે અધ્યયન કરી દેશસેવા બજાવો, તો તેમને જાણે એમ લાગે છે કે એ કામ કરવું, પરદેશ રહીને ભણવું તે હીનપદ જેવું જાણે દેખાતું હોયની તેમ ભાસે છે; પણ મારી વ્હાલી બ્હેનો, તમે યાદ રાખજો કે—આપણે જ્યાં સુધી પ્રથમ દુઃખ વેઠીને વિદ્યાદેવીની ઉપાસના કરીશું નહીં, આપણે નીતિજ્ઞાન, વ્યવહારિક, અને ધાર્મિક જ્ઞાનમાં નિપૂણ થઇશું નહીં ત્યાંસુધી આપણું શુભ ભવિષ્ય થનાર નથી માટે—

બ્હેનો! તમારે જો તમારી પ્રજાને ઉન્નત માર્ગે ચઢાવવાનો વિચાર હોય, જો તમારે જૈન ધર્મનો ડંકો વગાડવો હોય, તો ડરને છોડો અને જયાંથી વિદ્યા પ્રાપ્ત થાય તે સ્થળે જઇને નીતિમાર્ગમાં સ્થિત રહીને વિદ્યા શીખો અને બીજી બ્હેનોને શીખવો! તમે એમ ન સમજશો

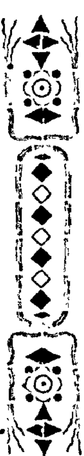


श्रीजैनशिक्षाप्रचारकसमिति–जयपुरके श्रीवर्धमानविद्यालयमें स्वर्गीय दानवीर जैन कु.

सेठ माणिकचन्दजीके स्वागतका ग्रुप. ता. २१–१०–१०

आगे बैठेहुए–[१] लाला जमनालालजी. [२] लाला चीमनलालजी लुहाड्या. [३] कुंवर भोजराजसिंहजी, सभापति. [४] ब्र. शीतलप्रसादजी. [५] स्व. दानवीर सेठ माणिकचन्दजी जे. पी. [६] मूलचंद किसनदासजी कापडिया–सूरत. [७] सेठ बनजीलालजी जौंहरी. [८] पं. चन्द्रलालजी पाटणी. [पीछे खड़े हुए महाशयोंमें बीचमें पीछौडी ओढ़कर खड़े हुए महाशय इस समितिके संस्थापक और जैनसमाजसे चिरपरिचित श्रीयुत् **बाबू अर्जुनलालजी सेठी** है।]





श्रीजैनसिद्धान्तविद्यालय-मोरेनाके संस्थापक और अधिष्ठाता स्या.वा. न्याय-वाचस्पति पं. गोपालदासजी बरैया, अध्यापकों और विद्यार्थीओंका ग्रुप।

"जैन विजय" प्रिं. प्रेस-सूरत

एकज गोत्रमां—
लग्न थाय के नहिं ?

(લેખકઃ-છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા-સુરત.)

ગોત્રીય ચર્ચા ઉપસ્થિત થવાનું મૂખ્ય કારણ શ્વેતાંબર સ્ટેટમાં કોઈ ઠેકાણે છ૭ સાતસાત અને કોઇ ઠેકાણે ચાર એમ, માનું, નાનીમાનું, પુત્રની વધૂનું, અને પોતાનું વગેરે ગાઓનાં ગોત્રો ટાળવામાં આવે છે, તેથી ઘી કન્યાઓને યોગ્ય વર ન મળવાથી ઉદ્ભવ્યું છે. આ ગોત્રીય ચર્ચા 'સત્યવાદી', 'ખંડેલ-વાલ હિતેચ્છી', 'જૈન મિત્ર' અને "જૈન હિતેષી" માં પ્રગટ થઇ છે, પરંતુ એ વિદ્વાન શૈનજ જૈન સિદ્ધાંતોથી ભૂષિત પત્રકારોએ પોતાનો ચોક્કસ મત દર્શાવ્યો હોય એમ જણાયું નથી ને પહેલાં આમોદનિવાસી મી. હર-જીવન રાયચંદ શાહે "જૈન મિત્ર" ના લેખનું ભાષાંતર કરી તે ઉપર પોતાના વિચારો અને દલીલો આ પત્રના ગત વર્ષના ૨-૩ અંકમાં જણાવી છે, તેમાં છ૭ અને સાતસાત ગોત્રના બંધનને વિસારી એક ગોત્રને પણ નષ્ટ કરી ગોત્રીય લગ્ન કરવાની હિમાયત કરવામાં આવી છે!

છોકરી સાથે ઘણે ભાગે વિવાહ થતો હતો." આ ફકરોપરથી સ્પષ્ટ સમજાય છે કે એક ગોત્રમાં વેવિશાળ કરવા, એ જૈન દર્શનના પારંગત એડિટરે કહ્યું નથી, પરંતુ ઉપર જણાવેલા સગાઓના ગોત્રમાં વેવીશાળ નથી થતું તેમાં કાપકુપ કરવી જોઇએ, નહિ કે બધા સગાઓના ગોત્રમાં લગ્ન સંબંધ જોડવો. પરંતુ કયા કયા ગોત્ર ટાળવા જોઇએ તેનો ખુલાસો કર્યો હોત, તો વિશેષ હિતસાધક થઈ પડત.

આચાર્યોએ તો સ્વગોત્રમાં વેવીશાળ કરવા મના કરેલી છે અને તે એટલે સુધી કે પતિ સમાગમ થયા પહેલાં સ્વગોત્ર માલુમ પડે તો તે વેવીશાળનો નિષેધ કરવો. શ્રી સોમસેન આચાર્યકૃત ત્રિવર્ણાચારમાં કહ્યું છે કેઃ—

प्रवरैक्यादि दोषाः स्युः पतिसङ्गदधो यदि ॥ दत्तामपि हरेद्यादन्य स्मा इति केचन ॥ १७४ ॥

કેટલાક ધર્મજ્ઞો એવો મત ધરાવે છે કે તેણીને પતિ સમાગમ થવા પહેલાં જો તેણીના પિતાને જમાઇનું અને પોતાનું એકજ ગોત્ર હોવાનું માલમ પડે તો તેણે દાન કરેલી એવી કન્યા બીજા વરને આપવી. વળી—

पुत्री मातृभगिन्याश्च स्वगोत्रजाणिताऽपि वा ॥ श्वश्रूस्वसा तथैतासां वरीता पातकी स्मृतः ॥ ३८ ॥

પોતાની માતાની બહેન (માશી) ની પુત્રી, પોતાના ગોત્રમાં ઉત્પન્ન થયેલી છોકરી અને પોતાની સાસુની બ્હેન, એ કન્યા સાથે વિવાહ કરનાર પાતકી સમજવો.

समबन्धो गोत्रमुच्चार्य दद्याद्विकन्यकां पिता ॥ हस्ते पितुर्वरस्याथ ताम्बुलं साक्षतफलं ॥ ४६ ॥

"વેવીશાળ કરતી વખતે કન્યાના પિતાએ સંબંધ અને ગોત્રનો ઉચ્ચાર કરી અક્ષત, તાંબુળ તથા ફળ વિગેરે સામગ્રી સહિત તે કન્યાને વરના પિતાના હાથમાં આપવી."

વળી યાજ્ઞવલ્કય સ્મૃતિમાં એક ઠેકાણે લખ્યું છે કેઃ—"असमानार्षगोत्रजां" આમ કહીને જેનું સમાન પ્રવ-ગોત્ર હોય તેની સાથે વિવાહ કરવાનો નિષેધ કરે છે.

વ્હાલા વાંચકવૃંદ! ઉપરના પ્રમાણોથી ત્હારી ખાતરી થઇ હશે કે સ્વગોત્રીય લગ્ન, વર્ણશંકર પ્રજા ઉત્પન્ન કરી દેશ, સમાજ અને માનવ જન્મની દુર્દશા કરે છે. આવા શંભુમેળાનો નિષેધ એમાં તેમજ આદિપુરાણના કર્તા શ્રી જિનસેનસ્વામીકૃત ત્રિવર્ણાચારમાં, મનુસ્મૃતિમાં વગેરે ઘણા શાસ્ત્રોમાં કરેલો છે, જેમાંથી ઉપરના આધારો બતાવવામાં આવ્યા છે.

હવે આપણે મી. શાહની દલીલો તરફ નજર કરીએ. તેઓ જણાવે છે કે, "આજકાલ ઘણે ભાગે એમ જોવામાં આવે છે કે એક ગોત્રમાં પરસ્પર વિવાહ થતો નથી. પરંતુ એક ગોત્રમાં વિવાહ સંબંધ નહિ થઇ શકવાનું ખાસ પ્રબળ કારણ દેખાતું નથી". ઘણે ભાગે ગોત્રમાં વિવાહ નથી થતો તો શું થોડે ભાગે થાય છે? કારણ વગર કાર્ય ઉદ્ભવેજ નહિ. જો એને કલ્પના કે કલ્પિત માનીએ, તો તો એ ગોત્રનું બંધારણ બંધાવાનું કારણ અવશ્ય કરીને હોવુંજ જોઇએ. પછી ભલે શ્રેષ્ઠ યા કનિષ્ટ હોય! આપણા પરમપૂજ્ય ધર્માચાર્યો અને ધર્મપ્રવર્તકો કંઇ આપણા જેવા અલ્પજ્ઞાની, વચનભ્રષ્ટ, કે આજના વિજ્ઞાનવેત્તાઓના જેવા ટેલીફોનથી ખબર મેળવનારા નહોતા પરંતુ ત્રિકાળ જ્ઞાનના જ્ઞાતા-દ્રષ્ટા હતા કે તેઓને કંઇ સત્યાભાસ થયા વગર શાસ્ત્રોમાં ઉલ્લેખ કરે, જેનું ચોક્કસ નિરિક્ષણ કર્યા સિવાય કહેવું કે કારણ દેખાતું નથી એ આંખે પાટા બાંધી કુવામાં ઝંપલાવવા જેવુ છે. ગર્ગઋષિનો ઉપદેશ માનનાર ગાર્ગીય કહેવાય છે, કેટલાકની ઉત્પત્તિ વ્યાપારથી થઇ છે જેમકે સોની, લુહાર, ઇત્યાદિ"

હવે જો આપણે ગામના નામથી ગોત્રની ઉત્પત્તિ માનીએ તો એ ગોત્રકલ્પના આધુનિક લગભગ ૨૦૦-૪૦૦ વરસની ઉપજ કહેવાશે, કારણ કે અસલના શહેરોના નામ નિશાનના આજે ઠેકાણાજ નથી. જો એ આધુનિક હોય તો જિનસેન અને સોમસેન આચાર્ય પોતાના ગ્રંથમાં ગોત્રમાં લગ્ન નહિ કરવાનો ઉપદેશ કેમ કરત? તેમજ વળી એ ગ્રંથો, પૂર્વાચાર્યોના ગ્રંથોને આધારે લખાયા છે તેમ ત્રિવર્ણાચારમાં શ્રી સોમસેન આચાર્યે કહ્યું છે કે એ શાસ્ત્રો લખાયાને આજે ૮૦૦-૧૦૦૦ વર્ષ થયા હશે. વળી મનુસ્મૃતિ તો એથી પણ પ્રાચીન કહેવાય છે. વળી ગામના નામપરથી ગોત્રો બંધાયા હોય તો; પટણી ઘાંચી, પટણી મોઢ, પટણી ખડાયતા વગેરે કંઇક જાતિઓ પાટણના રહીશ તરીકેનો દાવો ધરાવે છે તો તે બધાના ગોત્ર શું એક હશે! જો તેમજ હોય તો અત્યારે તો ભિન્ન ભિન્ન માલમ પડે છે! આનો જવાબ એમ મળે કે તે તો ઇતર કોમ છે; પરંતુ આપણા આચાર્યોએ તો ગામના ગામો જૈન બનાવ્યા છે અને એક ગામવાળાઓનું એકજ ગોત્ર સ્થાપ્યું છે, પછી ભલે સમયાનુસાર ભ્રષ્ટ થવાથી ઇતર ધર્મમાં ભળી ગયા, પણ ગોત્ર તો એક રહેવું જોઇએ. આતો ગામના નામથી અટકો પડી હોવી જોઇએ અને તે ઉપરોક્ત જ્ઞાતિઓના ઉદાહરણથી સત્ય પણ માનવા જોગ છે.

જ્યારે જિનસેન આચાર્યના ઉપદેશથી ખડેલા અને એના પ્રાન્તવર્તી ગામના રહેવાવાળા જૈન થયા ત્યારે ગામના નામપર તો ખડેલવાલ-જાતિનું નામ સ્થાપિત થયું અને જે ચોર્યાસી ગામ હતા તેમના નામપર ગોત્રોની કલ્પના થઈ" જો એ લૌકિક કહેવત સત્ય હોય તો કહેવું પડશે કે વાસ્તવમાં ગોત્રોનું અસલ સ્વરૂપ' કંઇજ નહોતું અર્થાત્ ગોત્રો અસલ હતાજ નહિ.''

ઉપરના લેખથી સ્હમજાય છે કે આ આ ઇતિહાસિક બીના લૌકિક માન્યતાને આધારે લખાઇ છે, પરંતુ જિનસેન આચાર્યે નહિ, પણ તત્વાર્થસૂત્રના કર્તા ઉમાસ્વામીએ ગોત્રો નહિ પણ ચોરાસી જાતિઓ સ્થાપી છે, એવી સત્તાવાળું હસ્તલિખિત લખાણ એક સ્નેહીએ કોઇ પુરાણા હસ્તલિખિત ગ્રંથમાંથી ઉતારી લીધેલું મને બતાવ્યું છે તેને સાદ્યંત અત્રે ઉતારૂં છું.

ઉમાસ્વામી વિક્રમ સંવત ૨૭૦ માં પાટ બેઠા. તેમને ચોરાસી જાતિ મહાજન નાગદહ પાતનીમેં ૩૧૩ માં થાપયા. તત્ત્વાર્થજીના કર્તા.

"૧ શ્રી શ્રીમાલ, ૨ ઓસવાલ, ૩ મેદવાલ, ૪ પલિવાલ, ૫ પડરવાલ, ૬ જેસવાલ, ૭ બાઘમડ, ૮ હરસોલા, ૯ ડોંડ, ૧૦ ટીડુવાલ, ૧૧ બઘરવાલ, ૧૨ નાઇન્યા, ૧૩ ખડેલવાલ (જિનસેન મહાપુરાણના કર્તાએ સ્થાપ્યું), ૧૪ શ્રીમાલ, ૧૫ પોરવાલ, ૧૬ અગરવાલ, ૧૭ ભટનાગર, ૧૮ સોહરા, ૧૯ આરોડા, ૨૦ હુંસર, ૨૧ ભવેરા, ૨૨ નીચા, ૨૩ ધારક, ૨૪ પીચા, ૨૫ નાયરાય, ૨૬ હરિયા, ૨૭ નાગર, ૨૮ હૈવર, ૨૯ સંડડ, ૩૦ મોટ, ૩૧ ડિલવા, ૩૨ જલહરા, ૩૩ ખયડા, ૩૪ કપોલ, ૩૫ નરસીધોરા, ૩૬ નાગદ્રા, ૩૭ સૌદા, ૩૮ શ્રીગોડ, ૩૯ ગહરાડા, ૪૦ નામડાપોરવાલ, ૪૧ પાંડદ્રમા, ૪૨ ડસૌરા, ૪૩ કૈરવાલ, ૪૪ રાઇકવાલ, ૪૫ જેસવાલ, ૪૬ સાહરવાલ, ૪૭ ધનોરા, ૪૮ કાંથદ્રા, ૪૯ સુરિવા, ૫૦ સરહિયા, ૫૧ ડાલા, ૫૨ વરહિયા, ૫૩ લબધા, ૫૪ વસેસુ, ૫૫ પોરવાડ, ૫૬ પદ્માવતી પોરવાડ, ૫૭ મોરવાધા (ચોરવાલ), ૫૮ દશાપોરવાડ, ૫૯ ગોલારાડા, ૬૦ ગોલસિંઘાડા, ૬૧ અજોધાવે, ૬૨ રબાડ, ૬૩ ગોલાપૂર્વે, ૬૪ અઠસાયા, ૬૫ ચોલસા, ૬૬ જાસુપુરા, ૬૭ સગપુરા, ૬૮ લચિતવાલ, ૬૯ નાણવાલ, ૭૦ માડકરા, ૭૧ કડનેરા, ૭૨ કોરદવાલા, ૭૩ કરહાયા, ૭૪ અલહારા, ૭૫ હલદરા. ૭૬ જેહરાણા, ૭૭ ગોઇલવાલ, ૭૮ જાઇલવાલ, ૭૯ કરણસધા, ૮૦ કેલપુરા, ૮૧ સિયોદા, ૮૨ અકઇબા, ૮૩ વૈસકમકનટિ ૮૪ હુમડ [હલદકીર્તિએ સ્થાપ્યા], ૮૫ નરસિંગપરા **[રામસેને સ્થાપ્યા.]**

આ ઉપરથી સાફ જણાઈ આવે છે કે જિનસેન આચાર્યે ખડેલવાલ જાતિ સ્થાપી છે, પરંતુ ચોર્યાસી ગોત્રો સ્થાપ્યા નથી અને ગોત્રો નહિ પણ જાતિઓ ઉમાસ્વામીએ સ્થાપી છે. આ જાતિઓનું શુદ્ધ કરેલું સૂચીપત્ર ટૅાડકૃત રાજસ્થાનના ઇતિહાસમા 'વાણિજ્ય કરનારી ચોર્યાસી જાતિઓની સૂચી' ને નામે પ્રસિદ્ધ થયુ છે. પૃષ્ઠ ૭૨૮.

ગર્ગઋષિનું નામ જૈનશાસ્ત્રોમા હજુ સુધી આ લેખકના વાંચવામાં આવ્યું નથી કે કોઇને મોઢે શાંભળ્યુ પણ નથી; પરંતુ વૈશ્નવ સંપ્રદાયમાં એ ઋષિનું નામ સંભળાય છે ખરૂ, અને તેમને પણ આજે હજારો વર્ષ થયા એમ કહેવાય છે. જૈનોમાં ગર્ગઋષિ નહોતા ત્યારે ગાર્ગીય ગોત્રનું નામ એમના નામપરથીજ સ્થાપિત થયું હોય એમ કેમ માની શકાય? આ એક મહત્વનો વિષય છે. એ ગોત્રીયો પહેલાં એ ઋષિનો ઉપદેશ માનનારા શું વૈશ્નવ હતા? અને પછી જૈન તો ન થયા હોય! જો જૈન થયા હોય તો એમના ગોત્રો પણ ફેરવાવા જોઇએ. એ ઉપરની કિંવદન્તી-કહેવતથી

સિદ્ધ થાય છે. તેમજ વળી જૈનો અને ઇતર ઉચ્ચવર્ણોના ગોત્રના નામોમાં ફેર છે.

ત્રીજું કારણ વ્યાપારનું છે, 'સોની લુહાર, ઇ.' એટલે કંદોઇ, કંસારા, સુરગડ, ખરાદી, વગેરે નામો પણ ખરા કે ? સોની આદિ ધંધાઓ શું એકેક જ્ઞાતિ કરતી હતી ? તે માની શકાય તેમ નથી. જો માનીએ તો ગોત્ર આધુનિક ઠરતા નથી કારણ કે જે વખતે ચાર વર્ણોનું અસ્તિત્વ અને સંઘટન હતું તે વખતે કહોતો માની શકાય, પરંતુ તેમાંથી અનેક વિભાગો ઉભા થઇ ચાર વર્ણોનું અસ્તિત્વ તુટયાને ઘણાં વર્ષો થઇ ગયા છે. એટલે એ કલ્પના આધુનિક મનાશે નહિ, પરંતુ એ બધી પોકળ વાર્તા લાગે છે. એકનું ગામથી, એકનું ઋષિથી, એકનું વ્યાપારથી એમ જુદા જુદા સંસ્કારણોથી ગોત્રોના નામો પડવા એ અસંભવિત છે, માટે બીજાં પણ ગોત્રના નામો કઇ રીતે બંધએસ્તા આવે છે કે નહિ તેની પણ શોધ થવી જોઇએ છે. બે ચાર નામો બંધબેસતા આવ્યા તે ઠોકી બેસાડી સમાજના અભણવર્ગને ગભરાવી મારવો એ વિદ્વાસંપન્નોને ભૂષણ રૂપ નહિ કહેવાય ! સોની, લુહારની તો આખી જ્ઞાતિની જ્ઞાતિઓ છે, તો શું બધાએ એ પ્રમાણે વ્યવહાર ન કરવો જોઇએ કે સોનીએ લુહારને અને લુહારે સોનીને કન્યાઓ આપવી લેવી જોઇએ ? તેતો બનતુંજ નથી. સોની લુહારને નીચા માને છે. હજુ એટલું માની શકાય કે ગામ, વ્યાપાર, કે ઋષિના ઉપદેશથી પંથ, મહાજન, જ્ઞાતિઓ, અટક સ્થપાય પરંતુ ગોત્ર માનવું તો અતિશયોક્તિ ભરેલું કહેવાય ! ગોત્રનું બંધારણ અનાદિ લાગે છે, કારણકે એકેક ગોત્રને અંગે એકેક દેવીઓનું અધિષ્ઠાત્રી તરીકેનું પદ હોય એમ વિદિત થાય છે. આપણે ત્યાં આવતા લગ્ન પ્રસંગે અમુક ગોત્રની અમુક દેવીની સંજ્ઞા દાખલ ગોત્રજ સ્થાપના થાય છે અને ત્યાં પૂજા આદિ ક્રિયાઓ પણ થાય છે. અને તે સ્વ૦ સાક્ષર ભગુભાઇ ફતેહચંદ કારભારીના અનુવાદ કરેલા 'શત્રુંજય માહાત્મ્ય નામના ગ્રંથના એક ફકરાથી વિશેષ માનવાને કારણ પણ મળે છે– "મેં તારી સંપૂર્ણ ચિકિત્સા કરી છે. હું અંબિકા નામની તારી કુળદેવી છું જ્યારે ધર્મ સાધવાનો સમય પ્રાપ્ત થશે ત્યારે પાછી હું તારી પાસે આવી અવશ્ય કહીશ, એટલું કહી કુળદેવી અદ્રશ્ય થઈ. અરે ! હજી મારૂં સદ્‌ભાગ્ય ઉદયને પામતું જણાય છે; કારણ કે મારી ગોત્રદેવી મારા સમક્ષ આવીને મ્હારૂં હીત ચ્હાય છે" આ પેરેગ્રાફપરથી ગોત્ર, કુળ, કુટુંબ એકજ છે એ પણ નક્કી થાય છે.

વળી આગામી કહે છે કે; "શું આજકાલ એક ગામના રહેનારા પોતાનાં સંતાનોના વિવાહ નથી કરતા ?" જો એક કોમના એક ગામમાં કરે છે એમ કહો તો માન્ય થાય ખરૂં નહિતો સ્વપ્નું પણ એવું ન આવે. વાણીયા, બ્રાહ્મણ, ક્રિશ્ચિયન, મુસલમાન, ચમાર, ભંગી, વગેરે એક ગામના રહીશો કંઈ પોતપોતાના પુત્રપુત્રીઓનો વિવાહ સંબંધ નથી કરી શકતા, અરે ! ખુદ જૈનો જૈનોનેજ નથી આપતા, આપણા દિગંબરીઓમાં નૃસિંગપરા, મેવાડા, દશાહુમડ, વીસહુમડ, કોણ આપે લે છે ?

"એકજ ગુરૂનો ઉપદેશ માનનારા પોતાનાં પુત્રપુત્રીઓના પરસ્પર લગ્ન નથી કરતા ?" એતો શાસ્ત્રોક્ત ફરમાનજ છે, અને તે પ્રમાણે વ્યવહાર પ્રચલિત પણ છે; પરંતુ આપ જે ઉદ્દેશથી કહો છો તેમ નથી થતું જેમકે કેટલાક જૈનો, વૈષ્ણવ, થીઓસોફીકલ, આર્યસમાજ અને શ્વેતાંબર જૈનો પણ ધર્મ પાળે છે અને કેટલાક અન્ય ધર્મીઓ જૈનધર્મને પાળે છે પરંતુ તેઓ પોતાના છોકરા, છોકરી ને ધર્મના અનુયાયીઓમાં 'આપ લે' કરતા નથી. વખતે કોઇને આપવું ઓરખાપબુવાળું અને પારખું ગોળમટોળ લાગતું હોય અને સુધારાનો હુડકવા

લાગી જ્ઞાતિ મનપરથી ઉતરી ગઈ હોય તો તેમાં ભંગી જઈ ધર્મદ્રોહી બની શંભુમેળો કરે ખરા; બાકી તો નહિ.

"એજ વ્યાપાર કરનારા પોતાના છોકરાંનો લગ્ન-સંબંધ નથી કરતા ?" જો અહીં પણ એક કર્મિ ધર.નો, તો માન્ય થઇ શકે, નહિ તો સ્વપ્ને પણ નહિ મનાય. મોતીનો વ્યાપાર જૈનો અને આરબ વગેરે લોકો પણ કરે છે અથવા એક વેપાર એક કોમના હાથમાં છેજ નહિ તો પછી 'કરે છે' એમ કેમ કહી શકાય?" આનો ઉત્તર અમારા મોટા પુરૂષો કરતા આવ્યા છે એમ અમે કરીએ છીએ." અમારા એ ઉદ્‌ગારો અમારા પૂર્વજો પ્રત્યેના માન અને પ્રેમની લાગણીથી ઓતપ્રોત ભરેલા છે, અને એજ શબ્દો અમને શીરસાવંદ્ય છે, કારણ કે એમના કથેલા વાક્યો સત્યાંશથી ભરેલા છે. તેમજ એ શુભ નિષ્ઠા છે. હાલના વિજ્ઞાનવેત્તાઓ કરતાં અમારા એ મહર્ષિઓ ત્રિકાળજ્ઞાની હતા અને મહર્ષિઓના કથેલે માર્ગે વહન કરવાથી આર્યાવર્તની શીળવતી ગુણસુંદરીઓએ સમગ્ર પૃથ્વીપર ભારતને પ્રથમ સ્થાને મુક્યું છે. એજ સનાતન ધર્મની વિજય પતાકાના દુંદુભિ સ્વરો એજ મહર્ષિઓના વાક્યોથી આજે પ્રાશ્ચાત્યમાં અતિ આલ્હાદપૂર્વક શ્રવણ થાય છે. એજ એજ કથેલા શાસ્ત્રોમાં રહેલું સત્ય જોઈ પ્રાશ્ચાત્ય ફીલસુફો આશ્ચર્યમાં ગરકાવ થઈ ગયા છે. અને વેદોના ઉચ્ચારો ત્યાંના મીશનરીના દેવળોમાં થવા લાગ્યા છે. એજ મહાનુભાવીઓના સત્ય કથનો ગ્રહણ કરી હજારો પ્રાશ્ચાત્યો વેજીટેરીઅન થયા છે, અને થતા જાય છે એજ મુનિઓના વચનોપર શ્રદ્ધા રાખી અને તે પ્રમાણે વર્તી ચાલવાથી અમારો આર્ય સંસાર સ્વર્ગતુલ્ય બને છે. આત્મીક સુખ પ્રાપ્તિ એજ ઋષિઓના કહેલે માર્ગે પ્રમાણે કરવાથી થાય છે એ સર્વ કોઈને કબુલ કરવું પડશે". શું આપણા એ શાસ્ત્રકારો અને ધર્મ ગુરૂઓ કે જેઓએ પોતાનું અમુલ્ય જીવન આપણે સંસારી જીવોને આધ્યાત્મિક ઉન્નતિનો માર્ગ બતાવવામાં વ્યતિત કર્યું છે તે શું આપણને ફસાવવા માટે અસત્ય લખી ગયા હશે? એ શાસ્ત્રકારોને થઇ ગયાને આજે હજારો વર્ષ થઇ ગયાં છે અને આપણે એમના વચનાનુસાર ચાલવાને માટે આજે યુગાન્તર પછી પેદા થયા છીએ તો શું આપણે અને તેમને દુશ્મનાવટ હતી કે જેથી તેઓ આપણને ફસાવવાને માટે હજારો વર્ષ પહેલાથીજ અયોગ્ય નીતિનો સિદ્ધાંત કરી લે ? જો એ વાત સત્ય માનીએ તો તે મહર્ષીઓ આપણા પર કયા કારણથી અન્યાય કરી ગયા છે? તે મહાનુભાવીઓને હમને કુપંથગામી બનાવવાનું કારણ શું હતું? ઉત્તર સ્પષ્ટ છે; આપણને આડે માર્ગે દોરવામાં તેઓને શો લાભ? એ મહંતોનો અમને આડે માર્ગે દોરવાનો ઉદ્દેશ કદી હતોજ નહિ.'

વળી સુચન કરે છે કે;—"આ તુચ્છ લેખકની વિનંતિ છે કે આ **ગોત્રકલ્પનાને નષ્ટ કરવી જોઈએ** અને કોઇપણ જેની—પછી ગમે તે જ્ઞાતિ અને ગમે તે ગોત્રનો હોય તો પણ-**પોતાનાં કુટુંબનો ન હોય તેવા માણસ સાથે જરા અડચણ વિના વિવાહ કરી શકે એમ થવું જોઈએ.**"

આમાં એક વાત એ મહાશય ભૂલી ગયા લાગે છે તે એ કે શ્રેણિક **મહારાજ** જેમ શુદ્ર ભિલ જાતિની કન્યા પરણ્યા હતા તેમ આજના ગુણીયલોના નામની માળા જપી સમાજપર હજારો નિશાસા મુકી તેની લાલસામાં સ્વર્ગગમન કરનારા અને એ લાલસાથીજ ધર્મ ભ્રષ્ટ થનારા વાંઢાઓ શુદ્ર જાતિની કન્યાઓ કેમ ન લાવી શકે? આ શાસ્ત્રોક્ત ફરમાન કોણ જાણે વિસરી ગયા હશે! અરે! અત્યારે પણ કેટલાક જોડાઓ આવી રીતના બંધાયેલા છે અને તેઓ જૈન ધર્મ પણ કાળજીપૂર્વક પાળે છે, પોતાની દરેક ક્રિયામાં જૈન વિધિ કરાવે છે

છતાં તેઓને કોણ જાણે ન્યાતવાળાઓ સાથે સઘને કેમ જમતા નથી.

સમગ્ર જૈન સમાજમાં ઐકયતા બંધાય અને વેવીશાળ જેવું કાર્ય પ્રવર્તે એ આશા હાલ તો સ્વપ્નવત્ છે. ખુદ તમારા ધર્મગુરૂઓજ કે જેઓનું અધિપત્ય સમાજપર વિશેષ પ્રવર્તે છે તેઓજ શ્વેતાંબરી સાથે દિગંબરીને અને દિગંબરી સાથે શ્વેતાંબરીને ભાગ લેતા અટકાવે છે તો પછી પુત્ર પુત્રીના વેવીશાળની તો વાતજ ક્યાં રહી? આપણા ધર્મ ગુરૂઓમાં એવા સદ્ભાવો તો ઉત્પન્ન થવાદો, અનેક તીર્થો પર મહાવીર પિતાના એક પુત્રો સાથે થતી મારામારી, અને પોતાના બાંધુને પિતાની પૂંજીમાંથી હાથ ધસાવવાની દાનતોથી થતી લાખો રૂપીઆની હોળી તો ઐકયતા કરી અટકાવો? વડા પહેલા તેલ પિલાવાની વાતો શા કામની! અને તે ઐકયતામાં બે પાંચ સુધારકનો ઝુંડો ઝાલી બહાર નીકળ્યા તેમાં કંઇ સમાજનો શુક્રવાર ન વળે, ઐક્ય સાંધવાની વાતો મ્હોડે મ્હોડે કરવી એ સહેલ છે પરંતુ તેનું બંધારણ થવું ઘણુંજ મુશ્કેલ છે અને અમલ થવો તેથી પણ વધારો દુર્ઘટ છે. જ્ઞાતિઓના બંધારણો તોડી મહાવીરપ્રભુનો ઉપદેશ માનનારી સમગ્ર જૈન સમાજ એકત્રીત થાય એ ખરેખર સુભાગ્યની વાત છે ત્યારે સનાતન જૈન ધર્મનો દિગ્વિજય પૃથ્વીપર થતા વારજ ન લાગે. "વો દીન કબ કે મીયાં કે પાંઉમેં જુતિયાં" ઐકયતાની હીમાયતીઓએ આજના પુત્રીના માબાપોની અધમ દાનતપર ઘણોજ ગંભીર વિચાર કરવો પડશે, કારણકે તેઓ પૈસાનેજ મહાપ છે, શ્રીમંત ઘરજ શોધે છે, પછી ભલે અક્કલના બુઠ્ઠા, ધર્મને નામે મીંડાવાળા, રોગીષ્ટ કે ઉમરનું પ્રમાણ જોયા મુક્યા વગર દુનિયાનો જન્મારો રગડોળે છે. ગરીબવર્ગની કન્યા લેનારા શ્રીમંતો પોતાની પુત્રીઓને માટે તવંગરજ ઘર શોધે છે આમ બન્ને તરફથી આપણા રંક ઘરના યુવાનો મંડાતા રહી જાય છે. અત્યારે પ્રવર્તી રહેતી આવી અધમ લાલસાઓ છે તો ઐકયતાથી શું વૃદ્ધિંગત નહિ થશે અને ત્યારે જે જ્ઞાતિબંધારણને લીધે ગરીબ વર્ગ મંડાય છે તેનો લાભ દરેક જ્ઞાતિમાંના બબ્બે પાંચ પાંચ હજારોની કે તેથી પણ વધારે થેલીના મોં છોડનારા શ્રીમંતો નહિ મળશે? અને આ પગલું ભરતા કૃપણ વર્ગને કન્યા નથી મળી શકતી તે દુઃખ ઓછું થશે કે વૃદ્ધી પામશે તે નીચે આપેલા એક સત્ય બનેલા બનાવથી વિદિત થશે.

" રા. વાડીલાલ મોતીલાલ શાહ જેવા ધુરંધર સુધારકે પોતાના સ્થાનકવાસી સમાજમાં કાઠીઆવાડમાંથી અમદાવાદના શ્રીમંતોને ત્યાં ઘણીજ કન્યાઓ આવતી હતી, જેના પરિણામે કાઠીઆવાડના યુવાનો (ગરીબ સ્થિતિના) કન્યા વગર રખડતા હતા, એથી રા. શાહના હૃદયમાં એ કનિષ્ટ દશામાં રહેલા સ્વધર્મી બન્ધુઓની સ્થિતિ વિષે ઘણુંજ લાગી આવતું હતું અને આખરે તે લાગણીએજ અતિ ઘણો શ્રમ વેઠીને કાઠીઆવાડમાં ગોળનું બંધારણ કરાવ્યું. કે જેના પરિણામે ઘણાજ ગરીબ સ્થિતિના મનુષ્યો એ ગોળના બંધારણથી સંસાર માંડી તેનાં અમૃતસમ મીઠાં ફળ ભોગવે છે. બીજી તરીકે મી. શાહને હું પૂછું છું કે અત્યારે જે આપણામાં સુરતના ચોરાની કન્યાઓ ૫૦-૭૫ વરસે અમદાવાદ જીલ્લામાં આવવા પામી છે તે જ્ઞાતિબંધારણ ન હોત તો આવતે ખરી કે? અને જેઓ ગરીબ ઘરના કહેવાવાથીજ કન્યા વગર રહી ગયેલા તેઓને કન્યા મળત ખરી કે! એ શું જ્ઞાતિ બંધારણને આભારી નથી?

(અપૂર્ણ.)

बिगड़ेका सुधार।

(लेखक:–गोपीलाल गोधा–लश्कर।)

दोपहरका समय था, लायकचंद कालेजसे पढ़कर आ-गया था, सुशीला अपने सर्व गृहकार्योंसे निवृत्त हो अपने कमरेमें बैठी हुई धार्मिक पुस्तकादि पढ़ रही थी कि लायकचंद रसोई-से निपट सुशीलाके पास जा बैठा और दोनों बातें करने लगे। इनका सदैवका यही नियम था। आज जो इन्होंमें बातें हुई वे हम पाठकोंके हितार्थ लिखते हैं।

लायकचंद–क्यों मा! मौसाजी मूर्खानंदको पढ़ाते क्यों नहीं?

सुशीला–बेटा! उनकी समझ है। वह यह समझते हैं कि अपने पास धन बहुत है अगर मूर्खानंद पढ़ैगा भी नहीं तो उसके खानेपीनेके लिये बहुत है और यही कारण है कि उसको लाड़प्यारमें बिगाड़ दिया है।

लायक–केवल मूर्खानंद ही पर क्या सारी जैनसमाज ही शिक्षासे शून्य है. इसका क्या कारण है?

सुशीला–बेटा! इसके कई कारण हैं। (i) धनवान तो अपने धन दौलतके घमंड-से अपनी संतान आप बिगाड़ देते हैं, (ii) बीचवाले जो हैं वे स्वयं शिक्षित नहीं इस-लिये वे अपनी संतानकी तरफ ध्यान नहीं देते। (iii) और जो बिचारे गरीब हैं वे अपनी संतानको पढ़ा नहीं सकते।

लायक–क्यों मा! तो क्या सभीकी आंखोंपर पड़दा पड़ गया है जो वे अपनी समाजकी भलेबुरेकी तरफ ध्यान नहीं देते?

सुशीला–नहीं बेटा! ऐसा तो नहीं है; पर अधिकांश ऐसा ही है। जिनके घरमें पुरुष या स्त्री कोई भी शिक्षित है उनके घर ऐसे नहीं, उनकी संतान भी अच्छी और शिक्षित है।

लायक–तब यह शिक्षित अपनी स-माजके अविद्याप्रेमियोंको चेताते क्यों नहीं?

सुशीला–बेटा, शिक्षित तो विचारे तन, मन, धन तीनोंही अर्पण कर समाज-सुधार करते हैं पर लकीरके फकीरवाले पुरुष इन्होंके कार्यमें विघ्न खड़ा कर देते हैं जिससे कि बिचारोंका किया कराया मटिया मेट होजाता है और यह इसलिये विघ्न पटकते हैं कि अगर वे ऐसा न करें तो उनकी बात कोई न पूछे।

लायकः—मा! खैर इनका तो यह कारण है पर अपनी जैनसमाजके बालक कमजोर क्यों दिखाई पड़ते हैं?

सुशीलाः—बेटा इसके भी कई कारण हैं। आजकल अपनी अविद्याप्रेमी समाज-में बाल्यविवाह, वृद्धविवाह आदिकी कुरीतियोंकी अधिक प्रबलता है। देखो! बाल्यविवाहसे अव्वल तो संतान होती ही

नहीं अगर कोई कर्मयोगसे होगई तो कमजोर रह जाती है। दूसरे आजकलके पुरुष धनके लोभी अधिक हैं सो उन्होंने कन्याविक्रयका एक रोजगार खड़ा कर लिया है। वे विचारी कन्याओंको, किसी बुड्ढे बाबाके साथ रुपये ले व्याह देते हैं सो उनसे जो कोई कारण पा संतान होजाती है वह कमजोर होती है। इसीसे अपनी समाजके बालबच्चे कमजोर होते हैं। और यह नियम है कि कमजोरका किसीभी कार्यमें दिमाग (mind) काम नहीं देता। यही कारण एक अपनी समाजके आलसी भी होनेका है।

लायक—मा! आजकल अपनी समाजमें विधवाओंकी बढ़ावरी क्यों है?

सुशीलाः—बेटा! मैं पहले ही तुझसे कह चुकी हूं कि अपनी समाज कुरीतियोंकी प्रेमी है। और इन्हीं कुरीतियोंके कारणसे अपनी समाजमें विधवाओंकी अधिकता है। क्योंकि बेटी वेचनेवाले महात्मा विचारी कन्याओंको चलते नगाड़ेवाले बुड्ढे बाबाओंको विवाह देते हैं और जब बुड्ढे नौ दूल्ह चल बसते हैं तो विचारी अबलाएं अनाथ रह जाती हैं। इससे अधिकांश कुचलनी भी हो जाती हैं जो समाजको कलंकित करती हैं। यही कारण है कि अपनी समाजमें विधवाओंकी अधिकता है।

लायकः—मा! आजकल अपने मंदिरों, क्षेत्रों, तथा विद्यालयों आदिकी भी कुव्यवस्था हो रही है। कोई जीर्ण हो रहा है। किसीकी आर्थिक आमदनी ठीक नहीं। कहीं २ के प्रबंधकर्त्ताओंमें अनबन है। कहीं कुछ है और कहीं कुछ है।

सुशीलाः—बेटा, मैं पहले ही तुझसे कह चुकी हूं कि अपनी समाज अधिकांश अविद्याप्रेमिनी है। पुरुष अपनी संतानोंके विवाह आदिमें जहन्नुममें लेजानेवाली रंडियोंको बुलाकर नाच कराते हैं वह उन्हीं रुपयोंको लेजाकर जीवहत्या करती है जिससे पापका बंध होता है, फुलवाड़ी आतिशबाजी आदिमें बर्बाद करते हैं। अगर किसीने बेटी बेची हो या किसीने रुपये दिये हों तो वह पंचोंका मुंह भरनेके लिये उनको मिठाई उड़वाता है या अगर ऐसा न हुआ तो धनवान अपनी मूर्ख समझकी नामवरीके लिये ज्योंनार आदि करते हैं अगर उस समय किसीसे कहा जाय कि आप कुछ धर्ममें भी दीजिये तो थोड़ा बहुत शरमागरमी दे दिवा कर कह देते हैं कि बस साहब! हमारी श्रद्धा तो इतनी ही है। अधिक हमको मत दबाओ। तब, बेटा तुम्हीं कहो कि मंदिरों, विद्यालयों आदिकी आर्थिक आमदनी ठीक कहांसे हो और उनका खर्चा ठीक कहांसे चले! ये पुरुष नुकता आदि (मरेका जीमन) में हजारों रुपया खर्च कर देंगे पर उनसे कहा जायगा कि साहब! अमुक क्षेत्र अथवा मंदिर जीर्ण हो रहा है आप कुछ

उसका जीर्णोद्धार करा दीजिए, तो कह देंगे साहब! मेरी इस समय श्रद्धा नहीं, आजकल मेरा हाथ तंग है। बेटा! देखो! इनकी छली बातें कि नुकतेके लिये तो रुपया आ गया पर जीर्णोद्धार तथा धर्मकार्यके लिये नकार, अब बताओ बेटा कि जीर्णोद्धार तथा धर्मकार्य होवै कहांसे? रही मंदिर तथा प्रबंधकी बातें सो आपसकी फूटको लेकर पंचायतीमें पटक देते हैं आपसमें लड़ने भिड़ने लग जाते हैं। आपसमें ऐक्यता नहीं रखते और पंचायती पर ध्यान नहीं देते इसीसे और भी कुरीतिएं जड़ पकड़ गई हैं। जैसे विवाह आदिका अन्य पद्धति द्वारा कराना मंगलमें बकने खराब गीत स्त्रियोंको गाने देना आदि। देखो बेटा! इस फूटपर एक नीतिकारने क्या अच्छा कहा है:—

फूट यह पंचोंमें मांची, करैं पक्षका न्याय
बात नहिं बोलें कुछ सांची।
पूरव, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर नजरोंसे जांची,
सबके यहां पर नीर भरंता बात न कहैं
सांची ॥ फूट यह ॥ १ ॥
अपना दोष कहें न किसीसे परनिन्दा राची।
धर्मकाजमें धन खरचंता है खैंचा
सांची ॥ फूट यह ॥ २ ॥

लायकः—क्यों मा! यह सब बिगड़ तो रहा है पर अब इस बिगड़ेका सुधार कैसे हो सो बताओ।

सुशीलाः—बेटा, इस अवनतिका मूल कारण पहले देखना चाहिये। मेरे ख्यालसे सारी अवनतिका मूल कारण केवल अनैक्यता है। इसलिये पहले ऐक्यता धारण करो अगर पुराने लकीरके फकीर तुम्हारा साथ न दें तो तुम सब युवा पुरुष आपसमें ऐसी ऐक्यता रखो कि अगर एकका जहां पसीना गिरे दूसरा वहां अपना खून गेरनेको तैयार होवे। फिर इस ऐक्यताको रखते हुए जात्योन्नतिके उपायमें पहिले स्त्रीशिक्षाका प्रचार करो।

लायकः—क्यों मा! स्त्रीशिक्षासे पहले क्या लाभ होगा?

सुशीलाः—देखो! बेटा! मनुष्यको मनुष्य बनाना स्त्री परही निर्भर है। जबसे बच्चा पैदा होता है तबसे लेकर ज्यों ज्यों वह बढ़ता जाता है त्यों त्यों वह अपनी माकी सारी आदतोंको सीखता जाता है; सो अगर माता शिक्षिता होगी तो पुत्र भी वैसा ही आदर्श पुरुष बन सकैगा नहींतो कोरमकोरा रहेगा। इसलिये स्त्रीशिक्षा प्रथम ही प्रथम आवश्यक है। अपनी पुत्रियोंको आदर्श, शिक्षित माताएं तैयार करो जिससे आगेकी जड़ जमें क्योंकि देखो कहा भी है:—A girl is a mother of man.

लायकः—तो स्त्रीशिक्षाका प्रचार कैसे हो?

सुशीलाः—बेटा, स्त्रीशिक्षाका प्रचार होना कोई कठिन नहीं। मेरे अनुमानसे

होना चाहिये जिससे सर्वसाधारणको जैन धर्मका उच्चकोटिरहस्य मालूम पड़े और वे अहिंसाधर्मपर चलें पर अमूल्य शास्त्र तभी प्रकाशित हो सकते हैं जब यह भट्टारक लोग, पदवीधारी अपने अमूल्य भंडारोंके दर्शन करावें और जहां २ शास्त्रोंके भंडार हों उनके मुखिया दर्शन करावें ...एक संस्थामें करेंगे तो उनको ... जावे जिससे औसत और फिर उनकी स्त्रियोंने इतनी पुस्तकें-हो जावें और जहां संस्थाएं नहीं वहांके शास्त्र ...पुरुष अपने यहां उपयोगी धार्मिक पुस्तकें-ग्रंथ मंगाकर रखें और वे पुस्तकें स्त्रियोंके पास भेजें। इस तरह स्त्रीशिक्षाका प्रचार हो सकता है। रहा अनपढी स्त्रियोंके लिये सो यातो उनको श्राविकाश्रमोंमें पढ़नेको भेजा जाय या वेही वहांकी पढ़ी-लिखी स्त्रियें अपना कुछ समय निकालकर मंदिर तथा कोई ऐसी जगह जहां सब एकत्रित होसकें अनपढ़ी स्त्रियों तथा कन्याओंको पढ़ाया करें, तो बहुत सहजमें स्त्रीशिक्षाका प्रचार हो सकता है। कन्याओंके लिये अगर कन्यापाठशालाएं भी हों तो बहुत अच्छी बात है।

लायकः—हां मा! यह उपाय कोई कठिन नहीं। इससे प्रचार बहुत अच्छी तरह हो सकता है। अब और उपाय बताइये।

सुशीलाः-बेटा! अब बालकोंकी शिक्षाके लिये एक सेन्ट्रल जैन कालेज तथा हाई

सुशीलाः—हां बेटा। चलो देखो! आज अपनेको कितनी देर होगई? अब उठो निबटकर ब्यालू करें क्योंकि समय अब थोडाही है।

लायकः—मा! कोई चिंताकी बात नहीं। आज मुझे आपके उपदेशसे बड़ा भारी ... है, और मैं समझ भी गया कि नहीं हो सकती? अपनी ... ...नी आवश्यक नंगी भूखी नहीं। अपने यहां अ... भी करोड़पती तक मौजूद हैं।

लायकचन्द्रः—मा! यह तो ठीक पर अपने तीनों फिरकोंमें ऐक्यता होना कठिन है क्योंकि अपने दिगंबरी तेरहपंथी भाई तो उनसे द्वेष रखते हैं फिर जैन कालेजके लिये चंदा इकट्ठा कैसे हो सकता है?

सुशीलाः—बेटा! तुमने कहा सो तो ठीक। अपने तेरहपंथी भाईयोंने पूजन प्रकरणका कोरा फूल इत्यादिकका रिवाज निकाला है और इसीसे समाजमें अनबन भी है और यही कारण भी है कि अनेक क्षेत्रोंसे दिगंबरियोंका हक्क बिल्कुल उठ गया है और श्वेताम्बरी हक्क है और जहां केवल दिगंबरियोंहीका हक्क है वहां तेरहपंथी अपना हक्क जमानेको लड़ते हैं और बीसपंथी अपना। आपसमें फिजूल लड़भिड़ कर रुपया बर्बाद करते हैं। वह यह नहीं समझते कि यह समय लड़ने भिड़नेका नहीं, अपनी जैनसमाज कुल इनीगिनी रह गई है, अपनको इस समय पक्ष लड़ाई छोड़ अहिंसा

श्री शंकराचार्यजीकी सप्तभंगी विषयक जानकारी।

(लेखक:–पं. उमरावसिंहजी, सुप्रीन्टेन्डेंट स्याद्वाद महाविद्यालय–काशी।)

यह बात पाठकोंको भली प्रकार मालूम होगी कि वेदान्तमतके अनुयायी श्री स्वामी शंकराचार्यका आसन वेदान्त ग्रन्थकारोंमें सबसे ऊंचा है। यदि उक्त स्वामीजीको वेदान्तमतके प्राण कहा जाय, तो कुछ अत्युक्ति न होगी, इसके अतिरिक्त वैशेषिक, न्याय, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त इन छः दर्शनोंमें वेदान्त दर्शनको प्रायः संपूर्ण ही वेदानुयायी अधिक महत्व देते हैं, इसी कारण हमारी इच्छा भी वेदान्तदर्शनको देखनेकी हो रही थी, तथा श्री स्वामी शंकराचार्यके निर्माण किये हुए श्री शंकरभाष्यको देखनेके लिये और भी चित्त उत्कंठित हो रहा था। आज हमको उस ग्रन्थके देखनेका अवसर मिल गया है। इस ग्रन्थमें स्वामीजीने जैनोंके माने हुए सप्तभंगीन्यायके विषयमें जो अपने विचार प्रगट किये हैं, उसी विषयको हम आज पाठकोंकी भेट करना चाहते हैं। स्वामीजीने जैनोंके माने हुए १ स्यादस्ति, २ स्यान्नास्ति, ३ स्यादस्ति च नास्ति च, ४ स्याद्वक्तव्यः, ५ स्यादस्तिचावक्तव्यश्च, ६ स्यान्नास्तिचावक्तव्यश्च, ७ स्यादस्तिच-नास्तिचावक्तव्यश्च, इन सात भंगों (विकल्पों) को पूर्वपक्षमें दिखाकर इनके खंडनमें "नैकस्मिन्नसम्भवात्" इस वेदान्त सूत्रकी व्याख्यामें शांकरभाष्य पत्र ४८२ में लिखा है कि "नायमभ्युपगमो युक्त इति। कुतः। एकस्मिन्नसम्भवात्। नह्येकस्मिन्धर्मिणि युगपत् सदसत्त्वादि विरुद्धधर्म समावेशः सम्भवति शीतोष्णवत्"। इस स्वामीजीके संस्कृत वाक्यका यह अर्थ है कि "जैनोंका यह सिद्धान्त ठीक नहीं है!!! क्योंकि एक वस्तुमें अस्तित्वादि सात धर्मोंका रहना असम्भव है। एक धर्मीमें एकसाथ सत्त्व और असत्त्व आदि विरुद्ध धर्मोंका समावेश होना सम्भव नहीं है, शीतोष्णकी तरहसे।

अब हम यहां यह दिखाना चाहते हैं कि स्वामी शंकराचार्यजीने जैनोंकी सप्तभंगीमें जो विरोध बताया है, वह विरोध वास्तवमें सप्तभंगीमें नहीं आता, बल्कि स्वामीजीने जो सप्तभंगीका स्वरूप समझकर विरोध दिखाया है–वही "सप्तभंगी तरंगिणी" नामक ग्रन्थमें पूर्वपक्ष दिखाकर खंडित किया गया है।

स्वामी शंकराचार्यजीका सप्तभंगीके विषयमें यह वाक्य है कि "नह्येकस्मिन् धर्मिणि युगपत्सदसत्त्वादि विरुद्धधर्मसमावेश सम्भवति शीतोष्णवत्। अर्थात्–एक धर्मीमें शीत–उष्णकी तरह परस्पर विरुद्ध सत्त्व असत्त्वादि धर्म नहीं रह सकते।

यही पूर्वपक्ष सप्तभंगीतरंगिणीके ८१ वें पृष्टपर स्वयं ग्रन्थकारने किया है।

ननु–अनेकान्तवादे विरोधादयोऽष्ट दोषाः सम्भवंति तथाहि–एकत्रार्थे विधि प्रतिषेध-रूपावस्तित्व नास्तित्व धर्मो न संभवतः शीतोष्ण-योरिव भावाभावयोः परस्परं विरोधात्।

अर्थात्–अनेकान्तवादमें विरोध, वैय-धिकरण्य, संकर, व्यतिकर, अनवस्था, संशय, अप्रतिपत्ति व अभाव ये आठ दोष आते

हैं, इसीलिये अनेकान्तवाद ठीक नहीं है। जिनमेंसे एक पदार्थमें शीतोष्णकी तरह विधि-प्रतिषेधरूप अस्तित्व-नास्तित्व नामक परस्पर विरुद्ध धर्म न रह सकनेके कारण विरोध दोष आता है। इसी प्रकार और दोष भी दिखाकर उत्तर पक्षमें विरोध दोषके तीन भेद करके सबका निराकरण इस प्रकार किया है। सप्तभंगीतरंगिणी पत्र ८७—

"विरोधस्तावत् त्रिधा व्यवतिष्ठते, वध्यघातकभावेन, सहानवस्थात्मना वा, प्रतिबध्यप्रतिबन्धकरूपेण वा। तत्राद्ये त्वहिनकुलाग्न्युदकादिविषयः। स चैकस्मिन् काले वर्त्तमानयोस्संयोगे सति भवति संयोगस्यानेकाश्रयत्वात् द्वित्ववत्। नासंयुक्तमुदकमग्निं नाशयति, सर्वत्राग्न्यभावप्रसंगात्। ततस्सति संयोगे बलीयसोत्तरकालमितरद्बाध्यते। नहि तथाऽस्तित्वनास्तित्वयोःक्षणमात्रमप्येकस्मिन्वस्तुनि वृत्तिरस्तीति,भवताभ्युपगम्यते, यतो वध्यघातकभावरूपो विरोधस्तयोः कल्प्यते। यदि चैकस्मिंस्तयोर्वृत्तिरभ्युपगम्यते, तदा तयोस्तुल्यबलत्वान्न वध्यघातकभावः। नापि सहानवस्थानलक्षणो विरोधः स चैकत्र कालभेदेन वर्त्तमानयोर्भवति, यथा आम्रफले श्यामत्वपीतत्वयोः, उत्पद्यमाना हि पीतता पूर्वकालभाविनीं श्यामतां नाशयति। नहि तथाऽस्तित्वनास्तित्वे पूर्वोत्तर कालभाविनी, यदि स्याताम्—अस्तित्वकाले नास्तित्वाभावाज्जीवस्यामर्त्यं सर्वे प्राप्नुयात्, नास्तित्वकाले चास्तित्वाभावाद्बन्धमोक्षादिव्यवहारविरोधमनुषज्येत। सर्वथैवासतः पुनरात्मलाभाभावात्, सर्वथा च सतः पुनरभावप्राप्त्यनुपपत्तेर्नैतयोस्सहानवस्थानं युज्यते। तथाऽस्तित्वनास्तित्वयोः प्रतिबध्यप्रतिबन्धकभावरूप विरोधोऽपि न सम्भवति। यथा—प्रतिमणिरूप प्रतिबन्धके वह्निना दाहो न जायते इति, मणिदाहयोः प्रतिबध्यप्रतिबन्धकभावोयुक्तः, नहि तथाऽस्तित्व काले नास्तित्वस्य प्रतिबन्धः स्वरूपेणास्तित्वकालेऽपि पररूपादिना नास्तित्वस्य प्रतीतिसिद्धत्वात् इति।

अर्थात् वध्यघातकभाव, सहानवस्थान व प्रतिबध्य प्रतिबंधकके भेदसे तीन तरहका विरोध होता है, इन तीनोंमेंसे पहिला वध्यघातक नामक विरोध एक कालमें वर्त्तमान दो पदार्थोंके संयोग होनेपर उत्तरकालमें बलवानके द्वारा निर्बलका नाश होनेसे माना जाता है।

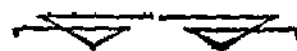
जैसे कि सर्प व नकुलका अथवा अग्नि व जलका विरोध है क्योंकि पहिले सर्प व नकुलका, और अग्नि व जलका संयोग होता है पीछेसे नकुलके द्वारा सर्पका और जलके द्वारा अग्निका नाश हो जाता है। इस प्रकार जब अस्तित्व व नास्तित्वका क्षणमात्र भी एक पदार्थमें एक साथ रहना शंकराचार्यके मतसे संभव ही नहीं है, तब अस्तित्व व नास्तित्वका परस्पर वध्यघातक विरोध नहीं बन सकता क्योंकि जब सर्प व नकुलकी तरह अस्तित्व व नास्तित्व पहिले एक स्थानमें रहें, पीछेसे नकुलके द्वारा सर्पके नाशकी तरह अस्तित्वके द्वारा नास्तित्वका अथवा नास्तित्वके द्वारा अस्तित्वका यदि नाश किया जाय तब इन दोनोंका परस्पर वध्यघातक विरोध बन सकता है किन्तु शंकराचार्यके मतसे इन दोनोंका एक पदार्थमें रहना ही असम्भव है, फिर वध्यघातक विरोध कैसा?

यदि इसके उत्तरमें अस्तित्व व नास्तित्वका एक पदार्थमें एकसाथ रहना सम्भव माना जायगा तो प्रश्न यह उठेगा कि जब

अस्तित्व व नास्तित्व एक पदार्थमें एकसाथ रह गये, और इन दोनोंमेंसे कोई किसीसे कमज़ोर है नहीं; तब न अस्तित्व, नास्तित्वका नाश कर सकता है और न नास्तित्व, अस्तित्वका ही नाश कर सकता है। इसलिए एकसाथ मानकर भी अस्तित्व व नास्तित्वमें वध्य-घातक विरोध नहीं बन सकता।

यदि अस्तित्व व नास्तित्वका परस्पर सहानवस्थान विरोध माना जायगा, तो वह भी ठीक नहीं, क्योंकि एक पदार्थमें कालभेदसे रहनेवाले दो धर्मोंमें ही सहानवस्थान विरोध हुआ करता है, जैसे कि एक आमके फलमें क्रमसे होनेवाली हरियाली व पीलेपनमें अर्थात् जैसे आमके फलमें पीलापान उत्पन्न होकर पूर्वकी हरियालीको नष्ट कर देता है, उसी प्रकार अस्तित्व उत्पन्न होकर नास्तित्वको या नास्तित्व उत्पन्न होकर अस्तित्वको यदि नष्ट कर देवे, तो इन दोनोंका सहानवस्थान विरोध माना जा सकता है, परन्तु एक पदार्थमें अस्तित्व और नास्तित्व पूर्व व उत्तर कालमें क्रम२से नहीं उत्पन्न होते। यदि "अपने पक्षकी पुष्टिके लिये थोडी देरके लिये मान भी लिया जावे तो जीवके अस्तित्वकालमें जीवके नास्तित्वका अभाव होनेसे संपूर्ण पदार्थ जीवकी सत्ता मात्रही हो जावेंगे। "और ऐसा होता नहीं" और जीवके नास्तित्व कालमें जीवकी सत्ता (अस्तित्व) का अभाव होनेसे जीवके आश्रयसे जो बंध मोक्षादि व्यवस्था होती है उसका व्यवहार नष्ट हो जायगा।

इसके अतिरिक्त जब नास्तित्व कालमें जीव सर्वथा असत् हो गया, तब फिर कभी जीवकी सत्ता भी संसारमें न रह सकेगी—क्योंकि जो एक कालमें सर्वथा असत् होता है उसका कभी प्रादुर्भाव नहीं हो सकता। इसी प्रकार जब अस्तित्वकालमें जीवकी सर्वथा सत्ता मौजूद है, फिर कभी नास्तित्व कालमें जीवका विनाश भी नहीं हो सकेगा। क्योंकि सत्का कभी अभाव नहीं होता, इसलिये अस्तित्व व नास्तित्वका एक पदार्थमें पूर्वापरकाल भाव न बन सकनेके कारण सहानवस्थान विरोध भी इन दोनोंमें सिद्ध नहीं हो सकता। रहा मणि व दाहकी तरह प्रतिवध्य प्रतिबन्धक विरोध। वह भी अस्तित्व व नास्तित्वमें नहीं बन सकता। क्योंकि जैसे चन्द्रकान्त मणिरूप प्रतिबन्धक रहते अग्निमें दाह नहीं होती, इसलिए यह माना जाता है कि अग्निकी दाह शक्तिके होनेमें चन्द्रकान्त मणि प्रतिबन्धक हो गई है, उसी तरह अस्तित्वके द्वारा नास्तित्वका अथवा नास्तित्वके द्वारा अस्तित्वका प्रतिबन्ध नहीं देखा जाता क्योंकि स्वरूपसे वस्तुमें अस्तित्व भी रहता है और पररूपसे नास्तित्व भी अर्थात् जीव अपने स्वरूपकी अपेक्षासे अस्तिरूप है, और पुद्गलादि पर पदार्थोंसे भिन्न होनेके कारण नास्तिरूप भी है। सारांश यह है कि देवदत्त अपने स्थानपर देवदत्तरूपसे है, यज्ञदत्तकी अपेक्षा नहीं है, इस प्रकार जब अस्तित्व व नास्तित्वमें प्रतिवध्य-प्रतिबन्धक विरोध भी न बना, तब श्री शंकराचार्यका अस्तित्व व नास्तित्वको परस्पर विरुद्ध धर्म बताना कहांतक संगत है, इस बातपर पाठक स्वयं विचार कर सकते हैं।



अजैन विद्वानोंकी जैन धर्मके विषयमें सम्मतियां।

(श्रीमान् पं. बिहारीलालजी बी. ए. जे. सी. टी. बुलन्दशहरी, सभापति "श्रीजैनधर्मसंरक्षणी सभा" अमरोहा, द्वारा संग्रहित।)

श्रीयुत महामहोपाध्याय डाक्टर सतीशचन्द्र विद्याभूषण, एम. ए. पी. एच. डी. एफ. आई. आर. एस. सिद्धान्तमहोदधि, प्रिंसपिल संस्कृत कालिज कलकत्ता.

यह महाशय अपने २७ दिसम्बर १९१३ को काशी (बनारस) नगरमें दिये हुवे व्याख्यानमें नीचे लिखे वाक्य सहर्ष पब्लिकके सन्मुख प्रस्तुत करते हैं:—

(१) जैन साधु........एक प्रशंसनीय जीवन व्यतीत करनेके द्वारा पूर्णरीतिसे व्रत, नियम और इन्द्रिय संयमका पालन करता हुआ जगतके सन्मुख आत्मसंयमका एक बड़ा ही उत्तम आदर्श प्रस्तुत करता है।

[२] एक गृहस्थका जीवन भी जो जैनत्वको लिये हुये है इतना अधिक निर्दोष है कि हिन्दुस्तानको उसका अभिमान होना चाहिये।

(३) जैन साहित्यने न केवल धार्मिक विभागमें किन्तु दूसरे विभागोंमें भी आश्चर्यजनक उन्नति प्राप्त की। न्याय और अध्यात्म विद्याके विभागमें इस साहित्यने बड़े ही ऊंचे विकास और क्रमको धारण किया........

[४] न्याय दर्शन जिसे ब्राह्मण ऋषि गौतमने बनाया है अध्यात्म विद्याके रूपमें असंभव हो जाता। यदि जैन और बौद्ध अनुमान चोथी शताब्दिसे न्यायका यथार्थ और सत्याकृतिमें जो अध्ययन न करते।

(५) जिस समयमें जैनियोंके न्यायावतार, परीक्षामुख, न्यायदीपिका आदि कुछ न्यायग्रन्थोंका सम्पादन और अनुवाद कर रहा था उस समय जैनियोंकी विचार-पद्धति, यथार्थता, सूक्ष्मता, सुनिश्चितता और संक्षिप्तताको देखकर मुझे आश्चर्य हुआ था और मैंने धन्यवादके साथ इस बातको नोट किया है कि किस प्रकारसे प्राचीन न्यायपद्धतिने जैन नैयायिकोंके द्वारा क्रमशः उन्नति लाभ कर वर्तमानरूप धारण किया है।

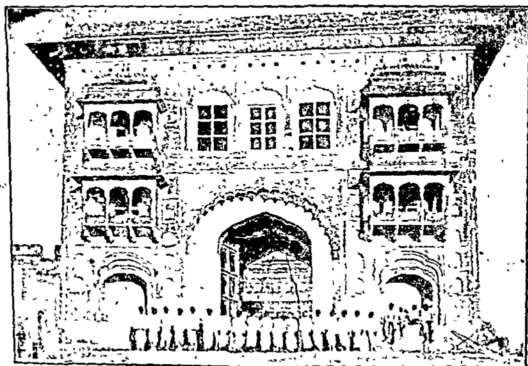
(६) जो मध्यमकालीन न्यायदर्शनके नामसे प्रसिद्ध है वह सब केवल जैन और बौद्ध नैयायिकोंका कर्तव्य है। और ब्राह्मणोंके न्यायकी आधुनिक पद्धति जिसे नव्य न्याय कहते हैं और जिसे गणेश उपाध्यायने १४ वीं शताब्दीमें जारी किया है यह जैन और बौद्धोंके इस मध्यमकालीन न्यायकी नलकढमें उत्पन्न हुई है।

(७) व्याकरण और कोशरचनाविभागमें शाकटायन, पद्मनन्दि और हेमचन्द्रादिके ग्रंथ अपनी उपयोगिता और विद्वत्तापूर्ण संक्षिप्ततामें अद्वितीय हैं।

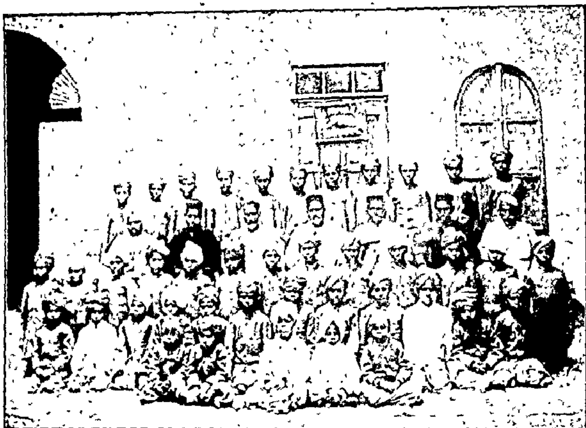
(८) छन्दशास्त्रकी उन्नतिमें भी इनका (जैनियोंका) स्थान बहुत ऊंचा है।

(९) प्राकृतभाषा अपने सम्पूर्ण मधुमय सौन्दर्यको लिये हुये जैनियोंकी रचनामें ही प्रकट की गई है।

श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम–हस्तिनापुरके अधिष्ठाता ब्र. गेंदनलालजी, ब्र. भगवानदीनजी आदि और ब्रह्मचारीगण।



श्रीहस्तिनापुरक्षेत्रके प्राचीन विशाल मंदिरके दरवाजाका दृश्य।



जैन अनाथाश्रम-देहली के कार्यकर्ता और विद्यार्थीगण।

"Jain Vijaya" Press-Surat.

(१०) ऐतिहासिक संसारमें तो जैन साहित्य शायद जगतके लिये सबसे अधिक कामकी वस्तु है। यह इतिहास लेखकों और पुरावृत्त विशारदोंके लिये अनुसन्धानकी विपुल सामग्री प्रदान करनेवाला है।

(११) यदि भारत देश संसारभरमें अपनी अध्यात्मिक और दार्शनिक उन्नतिके लिये अद्वितीय है तो इससे किसीको भी इन्कार न होगा कि इसमें जैनियोंको ब्राह्मणों और बौद्धोंकी अपेक्षा कुछ कम गौरवकी प्राप्ति नहीं है।

(२)

श्रीयुत महामहोपाध्याय, सत्यसंप्रदाचार्य सर्वान्तर पं० स्वामी राममिश्रजी शास्त्री भूत प्रोफेसर संस्कृत कालिज, बनारस

यह शास्त्रीजी महोदय अपने मि० पोष शु० १ सं० १९६२ को काशी नगरमें दिये हुये व्याख्यानमें कहते हैं:-

(१) वैदिकमत और जैनमत सृष्टिकी आदिसे बराबर अविछिन्न चले आए हैं और इन दोनों मतोंके सिद्धान्त विशेष घनिष्ट संबन्ध रखते हैं जैसा कि मैं पूर्वमें कह चुका हूं अर्थात् सत्कार्यवाद सत्कारणवाद परलोकास्तित्व आत्माका निर्विकारत्व मोक्षका होना और उसका नित्यत्व जन्मान्तरके पुण्यपापसे जन्मान्तरमें फल, भोग, व्रतोपवासादि व्यवस्था प्रायश्चित्त व्यवस्था महाजनपूजन शब्दप्रामाण्य इत्यादि समान हैं॥

(२) जिन जैनोंने सब कुछ माना उनसे नफरत करनेवाले कुछ जानतेही नहीं, और मिथ्या द्वेष मात्र करते हैं।

(३) सज्जनों! जैनमतमें और बौद्धमतमें जमीनआसमानका अन्तर है। उसे एक जानकर द्वेष करना अज्ञ जनोंका कार्य है।

(४) सबसे अधिक वह अज्ञ हैं जो जैनसम्प्रदायसिद्ध मेलोंमें विघ्न डालकर पापभागी होते हैं।

सज्जनों! ज्ञान वैराग्य शांति क्षान्ति अदम्भ अनीर्षा अक्रोध अमात्सर्य अलोलुपता शमदम अहिंसा समदृष्टिता इत्यादि गुणोंमें एक एक गुण ऐसा है कि जहां वह पाया जाय वहांपर बुद्धिमान पूजा करने लगते हैं। तब तो जहां ये पूर्वोक्त सब गुण निरतिशयसीम होकर विराजमान हैं उनकी पूजा न करना अथवा ऐसे गुणपूजकोंकी पूजामें बाधा डालना क्या इनसानियतका कार्य है।

(५) पूरा विश्वास है कि अब आप जान गए होंगे कि वैदिकसिद्धान्तियोंके साथ जैनोंके विरोधका मूल केवल अज्ञोंकी अज्ञता है।

(६) मैं आपको कहां तक कहूं बड़े २ नामी आचार्योंने अपने ग्रन्थोंमें जो जैन मत खंडन किया है वह ऐसा है जिसे सुनकर देखकर हंसी आती है॥

(७) मैं आपके सन्मुख आगे चलकर स्याद्वादका रहस्य कहूंगा तब आप अवश्य

जान जायंगे कि वह एक अभेद्य किला है उसके अन्दर वादी प्रतिवादियोंके मायामय गोले नहीं प्रवेश कर सके। परन्तु साथही खेदके साथ कहा जाता है कि अब जैन-मतका बुढ़ापा आ गया है अब इसमें इने-गिने साधु गृहस्थ विद्वान रह गए हैं।

(८) सज्जनों, एक दिन वह था कि जैनसम्प्रदायके आचार्योंके हुङ्कारसे दशों दिशाएं गूंज उठती थीं....

(९) सज्जनों! जैसे कालचक्रने जैनमतके महत्वको ढांक दिया है वैसेही उसके महत्व-को जाननेवाले लोग भी अब नहीं रहे।

(१०) 'रज्जब सांचे सूरको वैरी करे वखान' यह किसी भाषाकविने बहुतही ठीक कहा है।

सज्जनों! आप जानते हैं मैं उस वैष्णव सम्प्रदायका आचार्य हूं यही नहीं मैं उस स-म्प्रदायका सर्वतोभावसे रक्षक हूं और साथही उसकी तरफ कड़ी नजरसे देखनेवा-लेका दीक्षक भी हूं तोभी भरीमजलिसमें मुझे यह कहना सत्यके कारण आवश्यक हुआ है कि जैनियोंका ग्रंथसमुदाय सार-स्वत् महासागर है। उसकी ग्रंथसंख्या इतनी अधिक है कि उन ग्रंथोंका सूची-पत्र भी एक महा निबंध होजायगा........उस पुस्तकसमुदायका लेख और लेख्य कैसा गम्भीर युक्तिपूर्ण भावपूरित विषद और अगाध है। इसके विषयमें इतनाही कह देना उचित है कि जिन्होंने इस सारस्वत समुद्रमें अपने मतिमन्थानको डालकर चिर आन्दोलन किया है वेही जानते हैं.....

(११) तब तो सज्जनों! आप अवश्य जान गए होंगे कि जैनमत जबसे प्रचलित हुआ है तबसे संसारमें सृष्टिका आरंभ हुआ।

(१२) मुझे तो इसमें किसी प्रकारका उज्र नहीं है कि जैनदर्शन वेदान्तादि दर्शनोंसे भी पूर्वका है।

(३)

भारतगौरवके तिलक इतिहासज्ञ माननीय पं. बालगंगाधर तिलक भूत सम्पादक 'केशरी'के ३० नवेम्बर सन् १९०४ के बडोदा नगरमें दिये हुये व्याख्यानसे उद्धृत-

(१) जैनधर्म विशेषकर ब्राह्मणधर्मके साथ अत्यन्त निकट सम्बन्ध रखता है। दोनो धर्म प्राचीन है।

(२) ग्रन्थों तथा सामाजिक व्याख्या-नोंसे जाना जाता है कि जैनधर्म अनादि है यह विषय अब निर्विवाद तथा मतभेदरहित है और इस विषयमें इतिहासके दृढ़ प्रमाण हैं।

(३) इसी प्रकार जैनधर्ममें "महा-वीरस्वामी" का शक (सम्वत्) चला है जिसे चलते हुये २४०० वर्ष हो चुके हैं। शक चलानेकी कल्पना जैन भाईयोंने ही उठाई थी।

(४) गौतमबुद्ध महावीरस्वामी जैन (तीर्थंकर)का शिष्य था जिससे स्पष्ट जाना जाता है कि बौद्धधर्मकी स्थापनाके प्रथम

जैनधर्मका प्रकाश फैल रहा था। चौवीस तीर्थंकरोंमें महावीरस्वामी अन्तिम तीर्थंकर थे इससे भी जैनधर्मकी प्राचीनता जानी जाती है। बौद्धधर्म पीछेसे हुआ यह बात निश्चित है। बौद्ध धर्मके तत्व जैन धर्मके तत्वोंके अनुकरण हैं।

(५) श्रीमान् महाराज गायकवाड़ (वड़ोदा) नरेशने पहिले दिन कान्फ्रेंसमें जिस प्रकार कहा था उसी प्रकार "अहिंसा परमो धर्मः" इस उदार सिद्धान्तने ब्राह्मण-धर्मपर चिरस्मरणीय छाप मारी है। पूर्व कालमें यज्ञके लिये असंख्य पशुहिंसा होती थीं इसके प्रमाण मेघदूतकाव्य आदि अनेक ग्रन्थोंसे मिलते हैं....परन्तु इस घोर हिंसाका ब्राह्मणधर्मसे विदाई ले जानेका श्रेय (पुण्य) जैनधर्महीके हिस्सेमें है।

(६) ब्राह्मणधर्म और जैनधर्म दोनोंमें झगड़ेकी जड़ हिंसा थी वह अवनष्ट हो गई है और इसी रीतिसे ब्राह्मणधर्मको जैनधर्मनेही अहिंसाधर्म बनाया है।

(७) ब्राह्मणधर्मपर जो जैनधर्मने अक्षुण्ण छाप मारी है उसका यश जैनधर्मकेही योग्य है। अहिंसाका सिद्धान्त जैनधर्ममें प्रारंभसे है और इस तत्वको समझनेकी त्रुटिके कारण बौद्धधर्म अपने अनुयायी चीनियोंके रूपमें सर्वभक्षी हो गया है।

(८) ब्राह्मण और हिन्दुधर्ममें मांस-भक्षण और मदिरापान बन्द हो गया यह भी जैनधर्मका प्रताप है।

(९) महावीरस्वामीका उपदेश किया हुआ धर्मतत्व सर्वमान्य हो गया.....

(१०) पूर्वकालमें अनेक ब्राह्मण जैन पंडित जैनधर्मके धुरन्धर विद्वान हो गए हैं।

(११) ब्राह्मणधर्म जैनधर्मसे मिलता हुआ है इसकारण टिक रहा है। बौद्ध-धर्म जैनधर्मसे विशेष अमिल होनेके कारण हिन्दुस्थानसे नामशेष होगया।

(१२) जैनधर्म तथा ब्राह्मणधर्मका पीछेसे कितना निकट सम्बन्ध हुआ है वह ज्योतिषशास्त्री भास्कराचार्य्यके ग्रंथसे विशेष उपलब्ध होता है उक्त आचार्य्यने ज्ञान, दर्शन, और चारित्र (जैनशास्त्रविहित रत्न-त्रयधर्म) को धर्मके तत्व बतलाए हैं।

(४)

सुप्रसिद्ध श्रीयुत् महात्मा शिवव्रत-लालजी वर्म्मन् एम. ए. सम्पादक "साधू," "सरस्वतीभंडार," "तत्वदर्शीमार्तंड," "लक्ष्मीभंडार, सन्तसन्देश" आदि उर्दू तथा हिंदी मासिकपत्र, रचयिता विचार-कल्पद्रुम, विवेककल्पद्रुम, वेदान्तकल्पद्रुम, कल्याणधर्म, कबीरजीका बीजक आदि ग्रन्थ तथा अनुवादक विष्णुपुराणादि, इन महात्मा महानुभावद्वारा सम्पादित "साधु" नामक उर्दू मासिकपत्रके जनवरी सन् १९११ के अंकमें प्रकाशित "महावीर-स्वामीका पवित्र जीवन" नामक लेखसे उद्धृत कुछ वाक्य जो न केवल "श्री महा-वीर स्वामी" के लिये किन्तु ऐसे सर्व जैन

तीर्थंकरों जैन मुनियों तथा जैन महात्माओंके सम्बन्धमें कहे गए हैं:—

(१) "गए दोनों जहान नजरसे गुजर तेरे हुस्नका कोई वशर न मिला।" (२) यह जैनियोंके आचार्य गुरु थे, पाक दिल, पाक खयाल, मुजस्सम पाकी व पाकी जडी थे....हम इनके नामपर इनके कामपर और इनकी वे नजीर नक्स कुशी वारियाज़तकी मिसालपर जिस क़दर नाज़ (अभिमान) करें वजा (योग्य) है।

(३) हिंदुओं! अपने इन बुजुर्गोंकी इज्जत करना सीखो........तुम इनके गुणों-को देखो उनकी पवित्र सूरतोंका दर्शन करो उनके भावोंको प्यारकी निगाहसे देखो। यह धर्मकर्मको झलकती हुई चमकती दमकती मूर्ति हैं........उनका दिल विशाल था वह एक बेपायां कनार समन्दर था जिसमें मनुष्यप्रेमकी लहरें ज़ोरशोरसे उठती रहती थीं और सिर्फ मनुष्यही क्यों उन्होंने संसारके प्राणीमात्रको भलाईके लिये सबका त्याग किया, जानदारोंका खून वहाना रोकने लिये अपना जिन्दगीका खून कर दिया यह अहिंसाकी परम ज्योतिवाली मूर्तियां हैं। वेदोंकी श्रुति "अहिंसा परमो धर्मः" कुछ इन्हीं पवित्र महान पुरुषोंके जीवनमें अमली सूरत इख्तियार करती हुई नजर आती हैं। ये दुनियांके जबरदस्त रिफार्मर जबरदस्त उपकारी और बड़े ऊंचे दर्जेके उपदेशक और प्रचारक गुजरे हैं॥ यह हमारी कौमी तवारीख (इतिहास) के कीमती (बहुमूल्य) रत्न हैं। तुम कहां और किनमें धर्मात्मा प्राणियोंकी खोज करते हो इनहीको देखो इनसे बहतर (उत्तम) साहवे कमाल तुमको और कहां मिलेंगे! इनमें त्याग था इनमें वैराग्य था इनमें धर्मका कमाल था यह इन्सानी कमजोरियोंसे बहुतही ऊंचे थे इनका खिताव "जिन" है जिन्होंने मोहमायाको और मन और कायाको जीत लिया था। यह तीर्थंकर हैं इनमें बनावट नहीं थी, दिखावट नहीं थी, जो बात थी साफ़साफ थी। ये वहलासानी (अनोपम) शख़ सीयतें होगुज़री हैं जिनको जिसमानी कमजोरियों व ऐबोंके छिपानेके लिये किसी ज़ाहिरी पोशाककी ज़रूरत लाहक नहीं हुई क्योंकि उन्होंने तप करके जप करके योगका साधन करके अपने आपको मुकम्मिल और पूर्ण बना लिया था इत्यादि २।

नोट—जिन सत्यके खोजी महाशयों-को इन उपरोक्त अजैन महात्माओंके पूर्ण व्याख्यानको पढनेकी रुचि हो वह पहिले तीन व्याख्यान, बाबू चन्द्रसेन जैनवैद्य इटावासे या श्रीजैनधर्मसंरक्षणी-सभा अमरोहासे तलब करें और चौथा मैने-जर "साधू" दिहली या लाहौरसे तलब करें॥ इति॥



આર્થિક અને પારમાર્થિક ઉન્નતિના ઉપાયો.

(લેખક—શા. કોદરભાઇ હીરાચંદ-તલોદ.)

પૂર્વકાળમાં જૈનોની આર્થિક સ્થિતિ ચક્રવર્તી, નારાયણ સુધીની હતી અને પારમાર્થિક સ્થિતિ મોક્ષ સુધીની હતી. સુબાનંદકુમાર, સુકુમાલ આદી મોટા મોટા શેઠીઆ ધર્મ, અર્થ, કામ અને મોક્ષ એ ચારે પુરૂષાર્થ સાધવાવાળા હતા. સઘળી વસ્તી જૈનધર્મી હતી, હિંદુસ્તાનનો કુ વ્યાપાર જૈનીઓનાજ હાથમાં હતો, અને વ્યાપાર માટે હંસદ્વીપ આદી સ્થળે કમાવા જતા; આવી તેમનામાં હિંમત હતી અર્થાત્ પૂર્વકાળમાં જૈન રાજાઓ લડવૈયાઓ, કવિઓ, કરોડોપતિ, વ્યાપારીઓ, અધ્યાત્મિક શાસ્ત્રીઓ સાહિત્યશાસ્ત્રીઓ, શિલ્પશાસ્ત્રીઓ આદી હતા. એવું જૈનીઓનું **પ્રથમાનુયોગ શાસ્ત્ર** પોકારીને કહે છે, પણ કાળની ગતિ વિચિત્ર છે, કે હાલ તેથી ઉલટી સ્થિતિ થઇ રહી છે, અર્થાત્ આજકાલ હમારાં બાળકો દિવસના આઠ દશ આના પણ કમાઇ શકતા નથી, તે આપણે સર્વેને શરમાવા જેવું છે. હવે આવી સ્થિતિમાંથી સારી સ્થિતીએ લાવવા માટે નીચે બતાવેલા ઉપાયો યોજવા જોઇએ—

બ્રહ્મચર્ય

હાલના જુવાનોમાં બળ મુદ્દલ નથી. તેમના મુખનાં ચાડાં મરી ગયેલાં દેખાય છે, તેનું કારણ બ્રહ્મચર્ય પાળતા નથી તે છે. આગલા જમાનામાં બ્રહ્મચર્યના પ્રતાપથી ભિષ્મપિતામહ, અર્જુન, કર્ણ, રામ, લક્ષ્મણ, રાવણ, બળદેવ, આદી જે પ્રતાપી પુરૂષો થઇ ગયા, તે બ્રહ્મચર્યના પ્રતાપથીજ તેમજ હાલના જમાનામાં પણ મી૦ રામમૂર્તિ જેવા જે આશ્ચર્યકારક બળ બતાવે છે તે બ્રહ્મચર્યના પ્રતાપથીજ છે. બ્રહ્મચર્ય ન સાચવાવવાનું કારણ **બાળલગ્નજ** છે. ગવર્નમેન્ટે (સરકારે) પાકો અનુભવ કરી જાહેર કર્યું છે, કે ૧૮ વર્ષ પુરાં થયા વિના બાળકોને પુરૂષમાં ગણવાં નહિ, પણ આપણા શેઠીઆ લોકો બાર વર્ષના કુમળા બાળકોને પરણાવી જગ૦ જીત્યું માને છે, તેથી પાયમાલી થાય છે, માટે **વરકન્યાનું** સગપણ કરતી વખતે **પાંચ વરસનું અંતર** રાખવું એટલે દશ વર્ષની કન્યા હોય તો પંદર વર્ષનો વર જોઈ વેવીશાળ કરવો આથી કન્યાની અછત મટશે અને શ્રીમંત, મધ્યમ તેમજ ગરીબ સર્વેને કન્યા મળશે.

વરસો વરસ નવું વસ્તિપત્રક થવાની જરૂર.

કોઈ **શ્રીમતને** પુછવામાં આવે કે ન્યાતિમાં કન્યાઓની અછત છે કે છત છે ત્યારે કહેશે કે ઘણી છત છે. જ્યારે હું રાંડયો ત્યારે ડઝન બે ડઝન માણસો મારે ત્યાં વિવાહ કરવા આવ્યા હતા. પછી **મધ્ય સ્થિતિવાળાને** પૂછયું ત્યારે તેણે કહ્યું કે બહુ છત નથી, તેમ બહુ અછત પણ નથી. હવે **ગરીબ સ્થિતિવાલાને** પૂછયું ત્યારે તે કહે કે ભાઇ, મારા જેવા પચાસ, સો જણ કુંવારા ફરે છે, માટે કન્યાઓની છત હોય તો એમ બનેજ નહિ. આવી રીતે જેને જેવો અનુભવ થાય તેવું કહે છે, પણ ચોકસ સંખ્યાની કોઇને ખબર પડી શકતી નથી, માટે જૈનોનું વરસો વરસ નવું વસ્તીપત્રક થવાની ખાસ જરૂર છે.

તેમાં પરણેલા કેટલા, વિદ્યાઅભ્યાસ કરતા કેટલા, વર્નાક્યુલર ફાઇનલ પાસ કેટલા, ઇગ્લિશ ભણેલા કેટલા, બાળવિધવાઓ કેટલી, વૃદ્ધવિધવાઓ કેટલી, છોકરાઓ કેટલા, કન્યાઓ કેટલી આદી સઘળાં ખાનાંવાળાં ફોર્મો

છપાવવાં જોઇએ. અને તે દરેક ગામના શેઠ ઉપર મોકલી ભરી મંગાવવાં એ પછી આવેલા સઘળા ફોર્મોનો જ્ઞાતિવાર જેવી કે હુમડ, મેવાડા, નૃસિંહપુરા આદિ જુદા સરવાળા કરી નવા વર્ષમાં કોઇ બહોળા ફેલાવાવાળા જૈન પત્રમાં છપાવવા જોઇએ. તેના ઉપરથી જે બોધ ગ્રહણ કરવાનો હોય તેની નોંધ પણ તે એડિટરે આપવી જોઇએ. જ્યારે આમ કરવામાં આવશે ત્યારેજ શેઠીઆ લોકોની આંખો ઉઘડશે. **આમાં પૈસાની બહુ જરૂર નથી, પણ મન અને તનશકિતનું કામ છે,** માટે મારા યુવાન નવા વિચારના બંધુઓ! આ કામ તમારે ઉપાડી લેવું જોઇએ. વગર પૈસે પુણ્ય કરવાનાં ઘણાં કામો છે, તેમાંનું આ પણ એક છે. બંધુઓ! એક માણસથી આ કાર્ય થઇ શકે નહિ, ઘણાં મનુષ્યોની મદદ મળે ત્યારેજ થઇ શકે. કહેવત છે કે **'ઝાઝા હાથ રળીઆમણા'** આપણા શેઠીઆ લોકો ત્રિરાશી, પંચરાશી, ચક્રવૃદ્ધી વ્યાજ આદીમાં ભૂલતા નથી પણ કોણ જાણે આ બાબત કેમ ભૂલી ગયા છે તે સમજાતું નથી.

વિદ્યા

આપણે કેળવણીમાં એટલા પછાત છીએ કે તે લખતાં મારી કલમ પણ ચાલતી નથી અને તેનું ખરૂં કારણ માબાપોની બેકાળજી, અને નિશ્ચયનયે પુત્રના પક્ષ શત્રુપણા સિવાય બીજું કાંઇ નથી. દાખલા તરીકે કેટલાક માબાપોને પોતાના પુત્ર ઉપર પ્યાર ઘણો હોય છે, તેથી તેને લાડમાં ચઢાવે છે, અને દેશની પ્રચલિત ભાષા ભણાવે છે. દેશમાં ચાલતી ભાષા પણ પુરી ન ભણી રહ્યો હોય, એટલામાં તો તેનાં લગ્ન કરી નાંખે છે. હવે લગ્ન એ શું છે તે તો એ બાળક બિચારો સમજતો નથી, છતાં લોકો મારફતે પરણાવી દે છે તે બાળક પરણ્યા પછી મોહમાં ફસાઇ વિદ્યા અભ્યાસ છોડી દે છે આ વખતે **વરવધુનું વીર્ય અપરિપકવ** હોવા છતાં કામસેવન કરે છે, જેથી ઘણા દરદોનો ભોગ થઇ પડે છે. આપણા દેશમાં હજારો બલ્કે લાખો **વૈદ્ય ડોકટરોનો ધંધો આ બાળલગ્નથી થતાં દરદો ઉપર ચાલે** છે. જુના જમાનામાં આટલા વૈદ્યો કે ડોકટરો નહોતા, તેમ તે વખતે આવા ભયંકર રોગવાળા દર્દીઓ પણ નહોતા. આ સઘળું બાળલગ્નથીજ થયું.

સારાંશ એજ છે કે આપણી અવનતિ અબ્રહ્મચર્ય તથા અવિદ્યાના પ્રભાવથીજ થઇ છે, તેને દૂર કરી ઉન્નતિ કરવા માટે સ્કોલરશીપ ફંડો, પાઠશાળાઓ, બોર્ડિંગો, કોલેજો આદી સાધનોની ઘણી જરૂર છે. જો જૈન કોમને આ વખતે કોઇ બાબતની જરૂર હોય તો તે આજ બાબતની છે. આવી સંસ્થાઓ સ્થાપવી એ દાતારોનું કામ છે. આપણા દેશ જેટલું દાન કોઇ પણ ધનાઢય દેશના દાતારો પણ કરી શકતા નથી, પણ માત્ર **દાનની દિશા બદલવાની જરૂર છે.** બંધુઓ! દાનની દિશા બદલવાના વિષયમાં હું બહુ ઊંડો વિચાર કરી, વિદ્વાનોનો મત લઇ, શાસ્ત્રોને જોઈ તેના ઉપર મનન તથા અનુભવ કરી કહું છું કે તમો હાલ જે દાન કરો છો જેવાં કે ચોખર્યા, ન્યાતો, પાખીઓ, વરઘોડા, વાસણના લ્હાણાં ઇત્યાદી, તેમાં બહુ વિચાર કરવાની જરૂર છે અને હવે આપણે ક્યા પ્રકારનું દાન કરવું કે જેથી બહોળા પાયા ઉપર આખી કોમ તથા આખા દેશનું જીંદગીભરનું કલ્યાણ થાય. આ સંબંધી પુખ્ત વિચારવાળાં પુસ્તકો બહાર પડવાની જરૂર છે.

ગામડાંઓમાં બાળકોને ભણાવવાનું કહેવામાં આવે છે ત્યારે તેમના તરફથી મળતા ઉત્તરો—

શ્રીમંતવર્ગ તરફથી—અમારા બાળકોને વિશેષ શા પ્રયોજને ભણાવવા? અમારા પરાક

ત્રણ ચોપડી ભણ્યા હતા, છતાં સારી પેઠે વ્યાજ, નામું, સીલક રાખતા, અને ઘરાક સાચવતાં હતાં, અમે પાંચ ચોપડીઓ ભણ્યા, તો પણ ચાલ્યું ત્યારે અમારો છોકરો ૭ ચોપડી ભણ્યો છે, એટલે અમારા તથા અમારા ઘરડાઓ કરતાં પણ વધારે ભણ્યો છે, તો તે અમારો વૈભવ કેમ નહીં ફેરવી શકે? અમારે કંઇ નોકરી લેવી છે કે રાજભાષા અગર બીજી ઉંચી કેળવણી આપીએ? અમારે તો કામથી કામ.

મધ્યમ વર્ગ તરફથી—ભાઇ, તમો વિદ્યા ભણાવવાનું કહો છો તે અમારા મગજમાં ઉતરે છે, પણ એક છોકરા પાછળ હજાર રૂપીઆ ખર્ચવા જોઇએ. વળી મોટા વસ્તારી છીએ, જેથી ખર્ચ પણ વધારે છે, માટે ખર્ચ ભેગું ખર્ચ કરવું તે યોગ્ય નથી. એ તો ભણાવો કે ન ભણાવો **નસીબમાં** લખ્યું હશે તે તો આઘું કે પાછું થવાનું નથી; વળી હજાર રૂપીઆ દેવું કરીને ભણાવીએ, છતાં આધાર નોકરી ઉપર અને જો તે ન મળી તો પછી અમારા રૂપીઆએ જાય અને છોકરોએ જાય અર્થાત્ છોકરાંને પછી ગામડીઓ ધંધો ફાવે નહીં, માટે અમે તો અમારે જે રસ્તે જઇએ છીએ તેજ ઠીક છે.

ગરીબ વર્ગ તરફથી—ભાઇ, તમો વિદ્યા ભણાવવાનું કહો છો તે સત્ય છે, પણ અમારી પાસે પૈસો નથી; અને આજે તો પૈસો હોય તોજ વિદ્યા ભણાવી શકાય. વળી એવી કોઇ સંસ્થા નથી કે જ્યાંથી અમારાં બાળકોને યોગ્ય સ્કોલરશીપ મળે અગર તો એવી કોઇ બોર્ડિંગ નથી કે જેમાં નોનપેડમાં સંખ્યાબંધ બાળકો લાભ લઇ શકે. માત્ર હમારે તો એક કેળવણી ખાતા ઉપર આધાર રહ્યો, પણ તે ખાતાને અમો પસંદ કરતા નથી, કારણકે બિચારા યુવાનોને નવ કે બાર રૂપીઆ પ્રથમ તો મળે તેમાં પત્નિ સાથે પરગામ રહેવું પડે તેના કરતાં ઘરના ધંધે લગાડવામાં અમે તો શ્રેય ધારીએ છીએ. કેળવાએલા વર્ગ કરતાં બીનકેળવાએલો વર્ગ ઓછું કમાય છે, તે અમારા જાણવામાં છે, પણ **સાધનના અભાવે જંગલી સ્થિતિમાં પડી રહ્યા છીએ**, માટે અમને તમારા જેવા શહેરી બનાવવા અમારા બાળકોને ભણાવવા માટે પ્રાંતપ્રાંતવાર મોટા પાયા ઉપર સંસ્થાઓ સ્થપાશે તોજ અમારો વર્ગ વિદ્યામાં આગળ વધી શકશે.

ત્રણે વર્ગે આવા નિરૂત્સાહી જવાબો આપ્યા ત્યારે હું હવે મારી અલ્પ બુદ્ધિ પ્રમાણે એ સંબંધી વિચારો દર્શાવું છું તે વાંચી પોતાના જુના કદાગ્રહી વિચારો તજી દેશો, તોજ સેવક પોતાની મહેનત સફળ થઇ સમજશે.

શ્રીમંત વર્ગ પ્રત્યે જવાબ—બંધુઓ, તમારૂં શ્રીમંતપણું એ એક કુવામાંનો દેડકો સમુદ્ર કેવડો હશે તેનો વિચાર કરે તેવું છે. આપણે અહીં સાધારણ રીતે એક લાખથી એક કરોડના મિલકતવાળાને શ્રીમંત કહેવામાં આવે છે, ત્યારે અમેરિકામાં એક કરોડથી એક અબજની મિલકતવાળાને શ્રીમંત કહેવામાં આવે છે. શું આ વાત સાંભળી શ્રીમંતો પોતાની શ્રીમંતાઇનો ગર્વ કરશે કે? નહિજ કરે, કારણકે તેઓ એમ સમજશે કે આપણા કરતાં પણ દુનિયામાં ભારે શ્રીમંતો પડયા છે. હાલના શ્રીમંતોનો ઘણો ભાગ બીનકેળવાએલો હોવાથી છોકરાંને લાડ કરી બાયલા બનાવ્યા, અને દેશને પાયમાલી દશાએ લાવી મૂકયો. છતાં ખેર, **જાગ્યા ત્યાંથી સ્હવાર** ગણી ઉદ્યમ કરશો, તો થોડા વખતમાં પ્રથમના જેવું સુવર્ણમય હિંદુસ્તાન બની જશે.

દરેક માણસની ફરજ છે કે આપણે આપણી સ્થિતિમાં સંતોષ રાખી બેસી રહેવું જોઇએ નહીં, પણ તેને ઉંચી દશાએ લઇ જવા પ્રયત્નો કરવા જોઇએ એટલે છોકરા છોકરીઓને ઉંચા પ્રકારની કેળવણી આપવી જોઇએ. વિદ્યા ભણાવવા પાછળ પૈસો ખર્ચવામાં વીસ ઘણો

લાભ દેખીતો મળે છે. દાખલા તરીકે તમે એક આસામીને આઠ આનાના વ્યાજે રૂપીઆ બે હજાર ધીરો ત્યારે તેનું વ્યાજ રૂ. ૧૨૦ આવે ત્યારે તેટલાજ રૂપીઆ તમારા છોકરાને ભણાવવા પાછળ ખર્ચશો તો તે વરસ દહાડે તેનું ખર્ચ કાઢતાં રૂપીઆ ૨૪૦૦ પેદા કરી શકશે. તમો વરસ દહાડે રૂપીએ એક આનો નફો મળે તેવો ધંધો કરો છો, ત્યારે આ વીસ ઘણો નફો મળે તેવો ધંધો કરવા કોણ ના પાડશે? સમજુ મનુષ્ય કે જે વિદ્યાની કદર સમજ્યા છે તે તો પોતાના બાળકને ભણાવવા પૈસા ખર્ચવા પાછળ પાછી પાની કરશે નહિ. તમારી પાસે સાધન હોવા છતાં પણ ન ભણાવો તો પછી તમારી મૂર્ખાઇ કે બીજું શું? મોટા મોટા દેશી અમલદારો, ધંધાદારો આપણે જોઇએ છીએ, તે શ્રીમંત અને ખાનદાનનાજ છોકરાઓ હોય છે, માટે આપણે પણ તેમનું અનુકરણ કરી બાળકોને ઉંચી કેળવણી આપવી જોઇએ. વિદ્યા ભણવી એ કાંઇ નોકરી માટે નથી. વિદ્વાન મનુષ્ય નોકરી સિવાય બીજી અનેક રીતે પૈસા પેદા કરી શકે છે, માટે કોઇએ એ શંકા તો રાખવી જોઈએ નહિ.

હવે આપણી જુની પદ્ધતિના ધંધામાં લાંબી મુદત ફાવી શકીએ એવું નથી. એમાં પણ જમાનાને અનુસાર ફેરફાર થશેજ, માટે જમાનાને અનુસરી આપણા બાળકોને રાજ-સભા તથા ધાર્મિક જ્ઞાન અવશ્ય આપવું જોઇએ.

યુરોપીઅનોના રીવાજને લાખવાર ધન્ય છે કે જે પચ્ચીસ વર્ષ સુધી વિદ્યા ભણાવવામાં જેટલું ખર્ચ થાય તેટલું પુરું કરે છે; પછી પોતે ગમે તે ધંધે વળગી પોતે પોતાની મેળે કમાઇ ખાય છે અને પિતાએ જે દ્રવ્ય બચાવી રાખ્યું હોય તે મરણ વખતે પોતાના ધર્મબંધુ ગરીબ ખ્રિસ્તીઓને આપતા જાય છે, અને છોકરાને એક પાઇ પણ વારસામાં આપતા નથી. આપણા સાડા બાર લાખ જૈનોમાંથી એક પણ આવું ઉદાહરણ બતાવશો કે? ખુદ રાજાના કુંવરો પણ વિદ્યા ભણે છે, નોકરી કરે છે અને જ્યારે ગાદીને લાયક થાય ત્યારે તેને ગાદી મળે છે, તો પછી આપણે તો એક વણિક વર્ગ તેને શા માટે વિદ્યા રહિત રહેવું? પૂર્વે વણિક વર્ગ કેળવાયેલો હોવાથી ઘણો વૈભવ ભોગવતો હતો તેથી હાલ પણ કહેવાય છે કે...

राजद्वारे वा व्यापारे वसंति लक्ष्मीः

અર્થ—લક્ષ્મી રાજ્યમાં અને વ્યાપારમાં બન્ને સ્થળેજ રહેલી છે. એને રહેવા માટે ત્રીજું કોઇ સ્થળ નથી એમ કહીશું તોપણ તે અતિશયોક્તિ ગણાશે નહિ, માટે બંધુઓ, બાળકોને ગ્રેજ્યુએટ બનાવી ખાસ વ્યાપારી લાઇનનું જ્ઞાન લેવા માટે પરદેશ મોકલી દેશમાં વ્યાપાર વધારી નીચે લખેલા શ્લોક જેવી આપણી પૂર્વ સ્થિતિપર લાવો—

सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारकम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ॥

મધ્યમ વર્ગ પ્રત્યે જવાબ—તમે રૂપીઆના બાણુ નથી એ વાત હું માનું છું, પણ તમે તમારા વ્યાપારમાં જેમ મુડી રોકો છો તેમ આ પણ એક વ્યાપાર છે, એમ સમજી બાળકોને ઉંચી કેળવણી આપવી જોઇએ. જે માબાપો છોકરાને ઉંચી કેળવણી આપતા નથી, તેમને હજારવાર ધિક્કાર છે. તે તેમના શુભેચ્છક નથી, પણ શિરોચ્છેદક છે. બાળકોને નાનપણમાં વિદ્યા ભણાવતા નથી તેથી તે અભણ રહે છે, અને જ્યારે મોટા થાય છે અને સમજણ આવે છે ત્યારે માબાપોને ધિક્કારે છે કે આ અમારા શત્રુ માબાપે વિદ્યા ન ભણાવી, જેથીજ હમારે હાલ ઘણું પસ્તાવું પડે છે. હમારાથી પૈસો પેદા થતો નથી. જેથી ધર્મ, અર્થ, અને કામ એ ત્રણે પુરૂષાર્થ સાધી શકતા નથી. વિદ્યા વિનાનો મનુષ્ય

પશુ સમાન છે; આજકાલ જે અજાયબ-ભરેલી કળાઓ પાશ્ચાત્ય લોકો આપણી આગળ રજુ કરે છે, તે સઘળું વિદ્યાદેવીના પ્રતાપથીજ છે. માત્ર બે આંખ, બે કાન, બે હાથ, બે પગ અને એક નાક હોય તેને વિદ્વાનો મનુષ્ય ગણુતા નથી. જો તેને મનુષ્ય ગણે તોપછી વાંદરાને પણ મનુષ્ય ગણવો જોઇએ કારણકે તેને મનુષ્ય કરતાં પણ એક પુંછડી વધારે પ્રાપ્ત કરી છે અને શરીરે પણ જોરાવર છે, માટે તેને મોટો મનુષ્ય ગણવો જોઇએ. વિદ્વાનો તો જે વિવેકથી ચાલે છે; તેને મનુષ્ય કહે છે. અને વિદ્યા હોય તોજ વિવેક પ્રાપ્ત કરી શકાય છે માટે ધર્મ, અર્થ, કામ; અને મોક્ષ એ ચારે પુરૂષાર્થ સાધવા માટે વિદ્યા ભણાવો.

ગરીબ વર્ગ તરફ જવાબ—તમોએ ન ભણાવવા માટે 'અમારી પાસે પૈસો નથી'; એ કારણ બતાવ્યું તે યથાર્થ ગણી શકાય નહીં કારણકે તમો ગરીબ સ્થિતીના માણસ છો છતાં લગ્નનું ખર્ચ આવે તો અટકી રહેતું નથી. તો દેવું કરીને પણ એ કામ પારપાડો છો, ત્યારે આહો તો કંઇ એવું એકી વખતે સામટા રૂપીઆનું કામ નથી. વરસ દહાડે પચાસ રૂપીઆ જોઇએ તેમાં તમે તેના બાપ હયાત બેઠા છો, ત્યાં સુધી શો વાંધો છે? શું તમારૂં ખર્ચ કાઢતા રૂપ્યા પચાસનો પણ વધારો પડતો નથી? બેશક પડે છે, અને તમે તેના દાગીના કરાવો છો; પણ બંધુઓ! ખરો દાગીનો વિદ્યા છે, અર્થાત્ વિદ્યા પાસ હોય તો શરીર શોભાવવા માટે બીજા કંઇપણ દાગીનાની જરૂર નથી, માટે સર્વે બંધુઓને મારી ખાસ વિનંતી છે કે તમારે ઉંચી કેળવણી કે જે હાલ ઇંગ્રેજી કેળવણી ગણાય છે તે અવસ્ય આપવી જોઇએ. વિચાર કરો કે તમે તમારા છોકરાને પાંચશો રૂપીઆ વ્યાપાર કરવા મુકી આપશો, તો તે વધારે કમાશે કે તેટલાજ રૂપીઆ તેની પાછળ ભણાવવામાં ખર્ચશો તો ઇજ્જત, આબરૂ, માન, પૈસો વધારે મેળવી શકશે, તેનો વિચાર કરી વિદ્યા ભણાવવા તરફ લક્ષ દોરશો ત્યારેજ ખરી ઉન્નતિ થશે. (વધુ હવે પછી)



(લેખકઃ—પુનશી અર્જુન શાહ—ધુળીઆ.)

હે જીવ, આ દેહ ઉપર શાની મમતા ધરી રહ્યો છે? આ દેહને ઉત્તમોત્તમ પદાર્થોથી શું સુગંધિત બનાવી રહ્યો છે? અને સારા સારા ઉંચા વસ્ત્રો શું પરિધાન કરાવે છે? અને એટલું દેદિપ્યમાન બનાવવાથી શું મળવાનું છે? દેહની એટલી બધી મોહિની તને શા કામની છે? હે આત્મા! તું જાણે છે કે, દેહનો કોઈ કાળે નાશ થવાનોજ છે! એક વખત તેની રાખ હવામાં જરૂર ઊડવાની છે! તો હે આત્મા! તારા દેહની શાથી શોભા છે? આ દેહથી શા કાર્યો કરી લેવાના છે એનો જરા તો વિચાર કર, આ જેમ જેમ વખત જાય છે તેમ તેમ તારા દેહનો વિનાશકાળ નજદીકજ આવતો જણાય છે. મોટા મોટા મુનિવરો, મોટા યોગના સાધનારાઓ, મોટા ચક્રવર્તીઓ કે જેના અધિકાર આગળ જેના હસ્તમાં રંક કરવાની કે રાય કરવાની શક્તિ છે અને સ્વ સિવાય અન્ય વ્યક્તિનું મૃત્યુ પણ જેના હાથમાં છે, એવા મહાન મહારાજાઓ, મોટા ધન્વંતરી વૈદો કે જેની સંજીવની દવાઓ છે તેને પણ કાળે પછાડી ખાધા છે, એવો જે જબ્બર કાળ તારા દેહને પછાડી તને પકડવા ટાંપી રહ્યો છે. ફક્ત વખતની યાને હુકમની રાહ જુએ છે. તે વખત આવે પકડવા આગળ પાછળ જોનાર નથી, તારા કુટુંબીઓપર દયા કરનાર નથી, સંપત્તિથી દૂર કરી; દુઃખી કરી; તને પળભર પણ તેનો વિચાર કરવા વખત આપનાર નથી, માટે હે આત્મા! તારાથી થાય તેટલું. તારાથી

જેટલું અને તેટલું, તને જેટલો ફુરસદનો વખત મળે તેટલો પ્રભુ ભજનમાં વિતાડ, તેનુંજ ધ્યાન ધર, સાચા પરમાત્માનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવા તારાથી થાય તેટલી શક્તિનો ઉપયોગ કર, વ્યર્થ વખત ના વિતાડ; તૂં તારા મન સાથે સમજી શકે; જેમ જેમ હું મોટો થાઊં છું તેમ તેમ વધારે લક્ષ્મી મેળવી સુખીઓ થઇશ, પણ વિચાર કર, 'જેમ જેમ તું મોટો થાય છે, તેમ તેમ તારા આયુષ્યના દિવસો ઓછા થતા જાય છે, તો પછી લક્ષ્મી ઉપાર્જન કરીશ તેનો ભોકતા કોણ થશે! એ લક્ષ્મી ચપળ છે કારણઃ—

भूजंगी.

विद्युत लक्ष्मी प्रभूता पतंग–आयुष्य ते तो जळना तरंग
पुरंदरे चाप अनंग रंग, शुं राचीए त्यां क्षणनो प्रसंग.

એ મહાત્માનાં વાક્યો કેટલું ઉત્તમ, અને અત્યંત બોધદાયક સત્યજ વદે છે કેઃ-લક્ષ્મી વીજળી છે, જેમ વીજળીનો ઝબકારો થઇ ક્ષણ વારમાં હોલવાઈ જાય છે. અધિકાર પતંગના રંગ જેવો છે. પતંગનો રંગ જેમ ચાર દિનની ચટકી છે તેમ અધિકાર પણ ચાર દિવસમાં જતો રહે છે, તેવીજ રીતે આયુષ્ય પાણીના મોજાં જેવું છે. પાણીનો હીલોળો આ આવ્યો ! આ આવ્યો ! આ ગયો ! આ ગયો ! તેમજ દેહમાં જન્મ્યા શું ? એક દેહમાં રહ્યા શું ? દેહમાં રહ્યા કે ન રહ્યા તેટલામાં બીજા દેહમાં પ્રયાણ કરવું પડે છે. કામભોગ ઇંદ્રના ધનુષ્ય જેવું છે જેમ ઇંદ્રનું ધનુષ્ય ક્ષણવાર દેખાઇ લય પામી જાય છે તેમ યૌવનવયમાં કામવિકાર ફુગાભૂત થઇ લય પામી જાય છે. ટુંકામાં જ્યાં જ્યાં જે પ્રસંગો તપાસીશું જે જે વસ્તુઓને નિહાળીશું તે તે વસ્તુઓ અને પ્રસંગોનો સંબંધ એકમેક સાથે કેટલા કાળનો છે. તો તે સંબંધ સ્પષ્ટ રીતે જણાય છે કે "ક્ષણનોજ" એકજ પળનો પ્રબંધ છે તો હે જીવ ! હે–આત્મા ! એવા ક્ષણિક પ્રેમમાં પ્રેમ બંધનથી બંધાવું; એવા પ્રેમમાં બંધન થઇ રાચવું શું છે ! પૃથ્વીપરના સઘળા પદાર્થો ચપળ અને નાશવંત છે. હે આત્મા ! તુંજ એક અખંડ અને અવિનાશી છે, માટે તારા જેવીજ અખંડ અને અવિનાશી વસ્તુ પ્રાપ્ત કરવા પ્રયત્ન કર.

એવી રીતે અનેક દ્રષ્ટાંતો જાણતે છતે, અંધારી ગારમાં ઠોકરો ખાઇ ખાઇ કેમ થાકે છે ? તારી સામે; તારી પાસે; એક અત્યંત સ્વરૂપવાન પ્રકાશ પડેલ છે. અરે ! જે હંમેશાં તારીજ સાથે છે, જેનો સંબંધ અનેક જન્મો મર્ણોથી છે અને હાલ પણ તારી સાથે જન્મથી છે, અને મર્ણ વખતે પણ તે સહાય કર્તા છે, તે અમૂલ્ય પ્રકાશને ગ્રહણ કરવા તારી બધી શક્તિઓનો તું ઉપયોગ કર, તેને મેળવવા પ્રયત્ન કર. એ જે અત્યંત મૂલ્યવાન પ્રકાશ તે વિના મૂલ્યે વિના શ્રમે મળેલ છે કે જેની કીંમત તને એક પૈની પણ આપવી પડી નથી કે જેને માટે તને બિલકુલ મહેનત પણ લેવી પડી નથી, તેને ગ્રહણ કરવા-તેને મેળવવા શા માટે અચકાય છે? આ સંસારમાં તારા તુચ્છ દેહ માટે, તેને સુખીઓ કરવા માટે તું કોઇપણ જણસ મેળવવા, ગમે તેટલી મહેનતે ગમે તેટલા દ્રવ્યે ખરીદ કરવા અચકાતો નથી, તેથી તને ગમે તેટલું ગમે તેટલા પ્રકારનું સુખ થા ય તેથી રીઝે છે, તેને સ્વાધિન થતા બિલકુલ અચકાતો નથી, તેની માયામાં ફસવાને એક પગે તૈયાર થાય છે અને તે સુખ મેળવવા આગળ પાછળનો વિચાર ભૂલી જાય છે-બીલકુલ અન્ધ થઇ જાય છે ત્યારે આ વિના મૂલ્યે મળેલા અત્યંત પ્રકાશમાન હીરાને ગ્રહણ કરવા કેમ અચકાય છે એ ખબર પડતી નથી. આ અમૂલ્ય હીરાની કીંમત કોઇ કરી શક્યું નથી, તેમ કોઇ કરવા શક્તિમાન પણ નથી. જે ચિંતામણી તારી પાસે તારા હૃદયમાં જ્યાં, તે પ્રકાશ પ્રત્યે, તે ચિંતામણી પાસે ન જતાં તૂં

સંસારના ક્ષણીક સુખો મેળવવાની આશામાં કેવો તણાયો જાય છે? એ ક્ષણીક સુખની આશાથી તું કેટલી ભૂલ કરે છે અને તેથી તને કેવાં ફળ ચાખવાં પડશે, તેનાથી તું અજાણ્યો નથી? જરા આગળ વિચાર કરીશ તો સ્પષ્ટ દેખાશે કે, આ સંસારમાં અચાનકે કદાચ થોડી પણ ભૂલ થઇ હોય અથવા થાય, તો તેના બદલ કેટલી વિપત્તિ ખમવી પડે છે. એનો અનુભવ પણ હજારો વખત આવ્યો હશે છતાં પણ તું તેજ માર્ગે દોરવાય છે અને અગણીત ભૂલો કરી તેની દરકાર પણ કરતો નથી તો તેના ફળ કેવા ચાખવા પડશે; જરિક તો વિચાર! આ દેહના સબંધીઓને માટે ખોટા માર્ગે ન ચાલ, અને કર્તવ્ય ભૂલીશ નહીં, કર્તવ્યહીન થઇશ તો તારા જેવો દુઃખીઓ કોઇ ન સમજજે માટે ખરાં કર્તવ્યને સંભાર, તારા મનને શુદ્ધ કરી અચળ બનાવ, અને આ દેહથી શુદ્ધ કાર્યો આદર અને અંતના જન્મના બંધનો તોડી નાંખવા સમર્થ થા, જેમ જેમ તારા દેહને સ્વચ્છંદે ફરવા દઇશ, જેમ જેમ દેહથી વિશુદ્ધ ભોગો ભોગવવા તતપર થઇશ, જેમ જેમ લક્ષ્મીના લોભમાં તણાઇશ, જેમ જેમ દેહનો અભિમાન વધારીશ, તેમ તેમ દુઃખરૂપી કીચડ યાને કાદવમાં ઊંડો ફસાતો જઇશ, સમુદ્રના તળીએજ જઇશ કે બહાર નીકળવાનું બનશેજ નહીં માટે આગ લાગ્યા પહેલાં કૂવો અને કૂવામાં પાણી આવે તે પહેલાં પાળ બાંધવી કેટલી શ્રેયસ્કર છે! માટે આગ લાગ્યા પહેલાં કૂવો અને પાણી પહેલાં પાળ બાંધ કે આગ લાગવાનો ફરી વખતજ ન આવે.

હે આત્મા! તુંજ દુઃખની ભરેલી વૈતરણીનો કરનાર છે. તુંજ શાલ્મલી વૃક્ષના દુઃખોને ઊપજાવનાર છે, તુંજ મનઃવંચ્છીત વસ્તુરૂપી દુધની ભરેલ, અખંડ દૂધ દેવાવાળી કામધેનુના સુખોનો ઊપજાવનાર છે. હે આત્મા! તુંજ નંદનવનની પેઠે આનંદકારીછે. હે આત્મા! તુંજ કર્મોનો કરનાર તેમજ તુંજ તારા કર્મોનો ધોનાર છે-કર્મોને બાળનાર છે. ટુંકામાં કહું તો તુંજ કર્મોનો, સુખ દુઃખોનો કર્તા હર્તા છે. તુંજ તારો મિત્ર અને વેરી છે, માટે હે આત્મા! તુંજ તારો મિત્ર થા, અને તારા દેહને શુભ માર્ગે દોરવા પ્રયત્ન કર. હે આત્મા! આ મનુષ્ય દેહ ફરી ફરી મળવો દુર્લભ છે, તેમાં પણ તને પ્રાપ્ત થયેલ, આ ઉત્તમ જૈન ધર્મ જે અસંત દોહલું, તેનો; આ દેહના અલ્પ જીવનમાં તારાથી બની શકે તેટલી શક્તિએ એ ઊત્તમ ચિંતામણસમ ફળ દેવાવાળું જૈનધર્મનું રહસ્ય સમજવા પ્રયત્ન કર, ન કરીશ તો તારા જેવો ભૂંડો આ ત્રણે લોકમાં મળવો અસંત દુર્લભજ છે. તારા જેવો પાપી ત્રણે લોકમાં કોઇજ ન હશે. આ દેહના અલ્પ જીવન માટે, આ દેહની અસ્થિરતા માટે, આ શરીર કાષ્ટમાં બળનાર છે તે બદલ તું સારી રીતે સમજે છે. ન સમજતો હોય તો, આજથી સમજ; જ્યાંથી ભૂલે છે ત્યાંથી ફેરી લે અને ક્ષણીક સુખના માર્ગને વિષે ન જતાં, તિર્થંકર દેવોએ બતાવેલા માર્ગનો સ્વીકાર કર. અને અજ્ઞાન દશામાંથી જાગૃત થઇ સાવધ થા! સાવધ થા!! આ અસાર સંસાર માટે અનેક મહાત્માઓ પોકારી પોકારી કહે છે કે; હે પવિત્ર આત્માઓ! તમો પવિત્ર છો; છતાં સંસારના મોહથી અપવિત્ર ન બનો, સંસારની દુર્ગંધીથી દૂર રહો, આ સંસાર તમો માટે દુશ્મની ધરાવે છે તેની સાથે મિત્રતા ન ધરો, તમને લાલચમાં લપટાવવા માટે માયા-કૂલટા નારી જેમ હાથ પહોળા કરી બોલાવે છે માટે એ માયાથી-એ સંસારની માયાથી દૂરજ રહો. આ સંસાર એક અપવિત્ર લોહીથી ભરેલો છે. તેમાં ડૂબી તમો લોહીવાળા ન બનો. આ બીલોરી કાચના પવિત્ર આરશા પર મેશ ન ચોપડો. આ આરશામાં નીહાળો અને તમારા દેહમાં એ આરશાનું પ્રતીબિંબ પાડો અને તેમાં

એકત્રીસ વરસો પુરાં થવાં આવ્યાં છે અને હવે જે બાકીના અલ્પ જીવન માટે તારે શું કરવું જોઇએ? આજ દિવસ સુધીનો કાળ લઘુ પણ—બાળકની નિર્દોષ રમત રમવામાં, ત્યાર પછીનો કેટલોક કાળ વ્યવહારીક શિક્ષણ શીખવામાં અને ત્યાર પછીનો કાળ યુવાનીના પૂર જોશમાં અભિમાનપદ સાથે તણાતો જાય છે. લક્ષ્મી મેળવવાના લોભમાં કે સંસારના ક્ષણિક સુખને આધિન થતો જાય છે, પણ તે કાળ નકામોજ વ્યતિત થાય છે. અને આગળ જતાં અંતનો વૃદ્ધાપ કાળ કદાચ તને મળશે તોપણ તે કાળમાં કુટુંબિક અને લક્ષ્મીના વિચારથી એવો ભરમાઈ જશે કે તને પ્રભૂનું નામ સ્મરણ પણ યાદ આવવાનું નથી માટે હાલનાં જે તારાં સંસારીક વિચારો છે તે નકામા છે. તારા વિચાર પ્રભૂ તરફના જોરના નથી, કાળ કાપાને કઇ વખતે પછાડશે તેના પળની ખબર પડતી નથી. તે વખતને માટે નિશ્ચય કરી શકે તેમ નથી તે માટે એક મહાત્માના વાક્યોનો હે આત્મા! પૂર્ણપણે વિચાર કર! મહાત્મા કહે છે કેઃ—

"એક ગર્ભાધાનથી હરાયો, એક જન્મ્યો અને મુઓ, એક મૂએલો અવતર્યો ત્યારે એક ૧૦૦ વરસનો થઇ મરે છે."

આ વાક્યો પણ મોતનો વખત અનિશ્ચિત જણાવે છે માટે હે આત્મા! તારા દેહે ટીપેલાં કર્મો દેહનેજ ભોગવવાં પડે છે, પણ સંતાપ તને થાય છે, માટે સંતાપ નિરાકરણ કરવા પ્રભુનું સ્મરણ કર, તારાં પાપને સંભારી તે ધોવા પૂર્ણ રીતે પસ્તાવો કર, સાચા દેવનું શરણ લે, મહાવીરદેવનું સ્મરણ કર તેઓ એ કર્મો ધોવા કઇ રાહે ચાલ્યા છે તેનો વિચાર કરીશ તો જરૂર તારા પાપ ધોવાશે અને શુદ્ધાત્મા થઇશ એમાં શંકાજ નથી, •(વધુ હવે પછી)

समाजबंधनाची आवश्यकता.

(लेखकः—श्री. भरमप्पा पदमप्पा पाटील, होसूर—बेलगांव.)

कोणत्याही समाजाला सामाजिक बंधनांची *किंवा निर्बंधांची आवश्यकता* आहे किंवा नाहीं यासंबंधीं अलिकडे समाजधुरीणांमध्यें केव्हांही चर्चा चालू असलेली दृष्टीस पडते. समाजाची सुधारणा करूं इच्छिणारे कित्येक आधुनिक सुधारणावादि पुढारी समाजनिर्बंधांमुळेंच आमच्या समाजाची हानी झाली, असें म्हणून सामाजिक बंधनांची मुळींच *गरज नाहीं असें प्रतिपादूं लागले* आहेत. तर जुन्या मताचे पण मागचा पुढचा सर्व विचार करून कोणतेंही मत प्रगट करणारे समाजहितचिंतक समाजाच्या संरक्षणाला व जोपासनेला बंधनांची अथवा निर्बंधांची अत्यंत जरूरी आहे, असें प्रतिपादित असलेले दृष्टीस पडतात. तेव्हां या उभयतांमध्यें कोणाचें मत *समाजहिताच्या दृष्टीनें ग्राह्य आहे,* यासंबंधीं या लेखांत ऊहापोह करण्याचें प्रस्तुत योजिलें आहे.

पाश्चात्य शिक्षणानें संस्कृत झालेल्या कित्येक सुधारक लोकांचें असें मत आहे कीं, प्रत्येक मनुष्याला विचारस्वातंत्र्याची जशी मोकळीक आहे तशी आचारस्वातंत्र्याचीही मोकळीक असणें जरूर आहे. बंधनविरहित आचारस्वातंत्र्यामुळेंच समाजास कधीं काळीं उन्नतावस्था प्राप्त होण्याची आशा आहे! उलट कोणत्याही सामाजिक निर्बंधामुळे समाजांतील लोकांची समाजघात होण्याची मर्यादा ओसरणें भा-

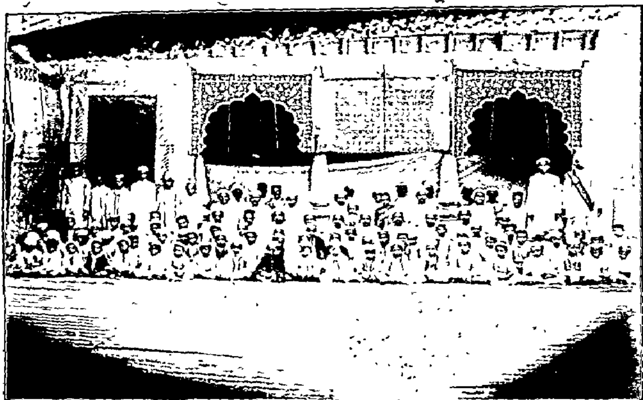
कून त्या प्रवृत्तिच्या अनुरोधानें त्यांना तसा मार्ग पत्करल्या शिवाय गत्यंतर नाहीं अशी स्थिती प्राप्त होते व त्यामुळें समाजाचा साहजिक ऱ्हास होतो ! याहून स्पष्ट भाषेंत सांगावयाचें ह्मणजे या बंधनांच्या लचांडास कंटाळून पुष्कळ लोक आपला धर्मसुद्धां सोडून जाण्यास तयार होतात ! ! परंतु हें ह्मणणें अगदीं निराधार व फोल आहे, हें पुढील उदाहरणांहून स्पष्टपणें दिसून येईल. एकाद्या टेंकडीच्या किंवा उच्चस्थानच्या ठिकाणाच्या पायथ्याशीं एकादा तलाव आहे अशी कल्पना करूं. त्याच्या सभोंवार त्यांतील पाणी बाहेर जाऊं नये ह्मणून भक्कम बंधारा घातलेला आहे; यामुळें त्याचें पाणीं एका ठिकाणीं सांठलेलें राहण्यास फार चांगली मदत होते. पण टेकडीवरून पावसाचें वगैरे पाणी त्या तलावांत येऊन सांठण्यास मात्र त्या बंधाऱ्यांचा कांहींच अडथळा होत नाहीं, हें उघड आहे. तेव्हां यावरून समाजबंधनांमुळें समाजांतील मनुष्यास बाहेर जातां येणार नाहीं ही गोष्ट खरी आहे. पण बाहेरील मनुष्यास टेंकडीवरील पाण्याप्रमाणें आंत येण्यास मुळींच हरकत होत नाहीं. अर्थात् समाजबंधनामुळें समाजाची नुकसानी कांहीं न होतां उलट फायदाच होतो हें स्पष्ट आहे.

कोणत्याही गोष्टीला बंधनाची किंवा शिस्तीची फारच आवश्यकता आहे, हें निर्विवाद आहे. बंधनविरहित कोणतीही गोष्ट कार्यकारी किंवा फलकारी मुळींच होत नाहीं. या म्हणण्याच्या स्पष्टीकरणार्थ सैन्याचीच एक गोष्ट घेऊं. सेनापतीच्या दाबाखालीं जें सैन्य शिस्तीनें राहतें तेंच लढाईच्या कामीं उपयोगी पडतें. पण बिनशिस्तीचें अर्थात् बंधनविरहित सैन्य युद्धसमयीं बिलकूल कामास येत नाहीं. या लष्करी शिस्तीला कंटाळून एकादा अप्रबुद्ध सैनिक सैन्य सोडून पळून गेला तर त्याच्या सैन्याचें त्यामुळें किमपीही नुकसान होणार नाहीं. उलट त्याची मात्र नुकसानी अकथनीय रीतीनें होईल ! अशा रीतीनें शिस्तीस कंटाळलेल्या लष्करी लोकांकरितां सैन्यातील शिस्तीमध्यें थोडासा ढिलेपणा करण्यास सेनापतीस शक्य आहे काय ? त्यांत थोडासा कां होईना ढिलेपणा झाल्यास सबंध सैन्य निरुपयोगी होऊन कार्यहानी मात्र होईल यांत मुळींच शंका नाहीं. हेंच उदाहरण समाजालाही तंतोतंत लागूं पडतें. समाजबंधनांस कंटाळून एकादा इसम समाजबाह्य झाल्यास त्याच्यामुळें समाजास मुळींच धक्का पोंचण्याचा संभव नाहीं. उलट एकाद्या अनाचारी अर्थात् समाजशिस्ती विरुद्ध वर्तन करणाऱ्यास चांगलें शासन करून त्यास बाहेर घालविणेंच हितकारी होईल ! त्यामुळें इतर लोकांना चांगला धाक बसून समाजनौका सुरक्षित राहण्यास मदत होईल. यास आमच्या सरकारच्या प्रजानियंत्रक कायद्याचेंच उदाहरण घेऊं. एकादा दरवडेखोर किंवा खुनी मनुष्य यास कायद्याप्रमाणें त्याच्या अपराधाच्या मानानें सरकाराकडून शिक्षा होईल तरच इतर लोकांना धाक पडून राज्यांतील खून व दरवडे कमी होतील. उलट त्या अपराधी मनुष्याची गय केली तर इतर लोकांना अपराधांची पूर्ण मोकळीक होईल व यामुळें सरकारास राज्यभार चालविणें सुद्धां कठिण होऊन जाईल. समाजबंधनरूपी कायदे 'नको' म्हणणारे लोक सरकारच्या इंडियन 'पिनल-

कोडाची किंवा इतर कायद्यांची तरी जरूरी कशें कबूल करतात समजत नाहीं ! सरकारास प्रजानियंत्रणासाठीं ज्याप्रमाणें कायद्यांची जितकी आवश्यकता आहे त्याप्रमाणें समाजनियंत्रणाकरितां तितकीच सामाजिक कायद्यांचीही जरूरी आहे, हें कोणासही प्रांजलपणें कबूल केल्याशिवाय गत्यंतर नाहीं. समाजबंधनांचें बिलकूल कारण नाहीं असें प्रतिपादन करणारे सुधारणावादि लोक आपण स्थापन केलेल्या सभा, सोसायट्या आदिकांना नियमांच्या बंधनांखालीं चिरडावयास कां लावूं इच्छितात समजत नाहीं ! या सर्व विवेचनावरून समाजबंधन नको म्हणणाऱ्या लोकांचा पक्ष किती निराधार आहे व समाजबंधन अवश्य आहे असें म्हणणाऱ्या लोकांचा पक्ष किती सबळ आहे, हें कोणाच्याही पूर्णपणें लक्षांत आल्या शिवाय राहणार नाहीं.

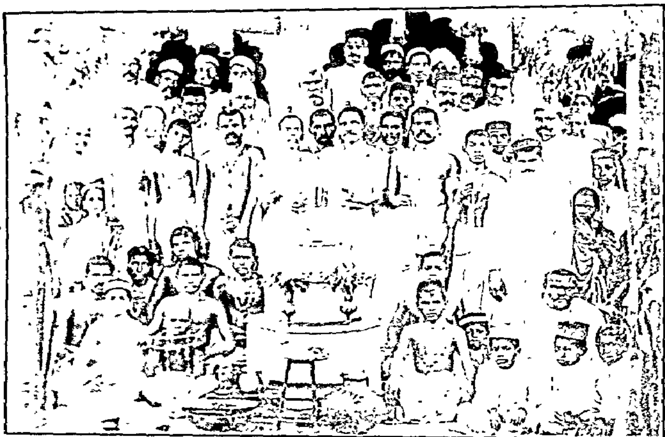
आतांपर्यंत सर्वसाधारणरीत्या समाजबंधनांची किती आवश्यकता आहे, याचें स्थूलमानानें प्रतिपादन करण्यांत आलें. यापुढें आपल्या जैनसमाजाची यासंबंधीं किती शोचनीय स्थिती झाली आहे व ती घालविण्यास काय उपाय करणें उचित आहे, हें सांगण्याचा थोडासा प्रयत्न करूं. अलिकडे आमच्या जैनसमाजांत सभा वगैरे स्थापन झाल्यापासून शिक्षणविषयक जागृति होऊन त्या बाबतींत समाजांतील लोकांची दिवसेंदिवस जास्त जोरानें उन्नति होत आहे, ही मोठ्या आनंदाची गोष्ट आहे. पण या सभादिकांपासून आमच्या समाजाची सामाजिक किंवा धार्मिक बाबतींतील प्रगति अजून योग्य मार्गानें व समाधानकारक रीतीनें झाली नाहीं, ही गोष्ट कोणासही निर्विवाद कबूल केल्याशिवाय निर्वाह नाहीं. कारण पूर्वी समाजावर धार्मिक गुरूंचा व पंचांचा जसा दाब होता तसा आतां मुळींच राहिला नाहीं. त्यास धर्मगुरूंची कर्तव्यविमुखता वगैरे अनेक कारणें असतील; पण अलिकडे समाजाचीं बंधनें फारच ढिलीं झालीं असून त्यास आळा घालण्याची कोणतीही तजवीज अद्याप सभादिकांकडून झाल्यासारखें दिसत नाहीं, ही गोष्ट मात्र खरी आहे. तेव्हां समाजावर दाब ठेवून समाजाचीं बंधनें शिथिल न होतील अशी व्यवस्था इरप्रयत्नेंकरून ठेवणें, हें प्रत्येक जैनधर्माभिमानी गृहस्थाचें कर्तव्य नव्हे काय ?

समाजांतील कोणी गृहस्थ अगर स्त्री समाजाला बाजूस ठेवून आपल्या मनास येईल तसें दुर्वर्तन करूं लागेल तर त्यांस शासन करण्याचा अधिकार पूर्वी भट्टारकांकडे व पंचांकडे होता. पण आतां तसें कोणी धर्मबाह्य किंवा समाजबाह्य वर्तन करूं लागल्यास त्यास कांहीं तरी शासन करून ताळ्यावर आणण्याचा कोणी (उपरीनिर्दिष्ट अधिकाऱ्यांनी) प्रयत्न केल्यास तो हल्लीं सफलीभूत होत नाहीं, हें उघड आहे. कारण समाजगुरूंचा व पंचांचा हुकूम अलिकडचे लोक कितपत मानतात, हें दिसतच आहे! गुरुंचें वर्तन टीक असल्यासच त्यांनी आज्ञा कोणीही शिरसावंद्य मानील, यांत मुळींच शंका नाहीं. 'जसा गुरु तसा शिष्य' या म्हणीप्रमाणें कोणांमध्येंही दर्डी ताळ उरला नाहीं. प्रत्येक गांवामध्यें कोणत्याही कारणानें का होईना दुसऱ्या अगर तिसऱ्या यांचें भान्गड वहुतेक असावयाचेंच ! या एकीविघातक तट्टांमुळें समाजाचें किती नुकसान होत आहे, हें वर्णन करून गांवगांव दा



श्री जैनविद्यालय कूचासेठ देहलीके विद्यार्थी अध्यापक और प्रबन्धकारिणि कमेटी ।

'Jain Vijaya' Press-Surat.



रामपुर (रियासत) में श्रीजैनधर्मसंरक्षणीसभा अमरोहाकी तरफसे कराये गये यज्ञोपवित संस्कारका दृश्य।

(१) श्रीमान मास्टर पं. बिहारीलालजी, (२) पं. विष्णुदत्तजी शर्मा, (३) श्रीमान लाला सिपाहीलालजी, (४) विद्यार्थी शांतिचन्द्र, (५) ला. बाबूमलजी आदि (अमरोहावालोंकी तरफसे) और (६) लाला अमर्सीलालजी, (७) लाला बांकेलालजी, (८) लाला कुंजीलालजी, (९) [illegible] (१०) लाला मोहनलालजी, (११) लाला बाबूराम मुनीम (१२) लाला [illegible]लालजी आदि (रामपुरनिवासी)

नाहिं असें म्हटल्यास त्यात कांहीं गैर होणार नाहीं. या दुफळ्याचा अगर तिफळ्याचा क्या-चा नाश होऊन समाजांत एकीचा ध्वजस्तंभ भक्कम पायावर ज्या दिवशीं उभारील तो दिवस समाजाच्या भाग्योदयाचा प्रथम दिवस गणला जाईल, यांत मुळींच शंका नाहीं. असो.

हल्लीं धार्मिक बाबतींतील समाजाच्या सुधारणेचा प्रयत्न पायाशुद्ध रीतीनें कोणत्याही संस्थेकडून अद्याप चालू झाला नाहीं, ही अत्यंत दिलगिरीची गोष्ट आहे. प्रत्येक जैन-धर्मी गृहस्थाचा किंवा स्त्रीचा धार्मिक आचार कसा असावयास पाहिजे, ह्या प्रश्नासंबंधीं समादिकांमध्यें चर्चा होणें तर कठीण–पण त्याचा विचारसुद्धां कोणा समाजपुढाऱ्याच्या मनामध्यें घोळत असेल किंवा नाहीं याची शंका आहे ! अशा परिस्थितींत या अति महत्वाच्या बाबीकडे इतर सामान्य व्यक्तींचें लक्ष न जाईल तर तें साहजिक आहे. हल्लीं सर्वांना स्वातंत्र्याची सारखी गोडी लागत चालली आहे. आचार स्वातंत्र्य तर सर्वांना पाहीजे आहे. कोणत्याही धार्मिक बंधनाखालीं चिरडून जाणें अलिकडच्या लोकांना नकोसें झालें आहे. आपल्या मनास येईल तसें वर्तन करावयाचें- त्यात धार्मिक आचरणाची राख-रांगोळी झाली तरी बेहत्तर !! अशी लोकांची प्रवृत्ति होत आहे. श्रावकाचाराविषयीं प्राचीन काळच्या महान् विद्वानांची काय आज्ञा आहे व तशी आपली वागणूक होत आहे किंवा नाहीं, याचा कोणीच विचार करीत नाहीं ! प्रत्येकाचा आपला तो धनी अशी स्थिती झाली आहे. यामुळें प्रत्यक्ष आपल्या मुलावरसुद्धां त्याच्या जन्मदात्याची–बापाची हुकमत चालणें कठीण झालें आहे. जैनसमाजातील कोणत्याही एका पंथाचा गृहस्थ अनाचारी-अर्थात् शूद्रवत् वर्तन करुं लागला तर त्यास ताळ्यावर आणण्याचा अधिकार हल्लीं कोणाकडेही राहिला नाहीं. आमचे भट्टारक या बाबतींत कांहीं तरी करु म्हटल्यास तें या नवीन वातावरणांत अगदींच अशक्य झालें आहे. बाकी राहतां राहिले जातीचे पंच. पण त्यानाही कोणी या कामांत विचार करण्याकरिता कायदेशीर नेमिलें नाहीं, असा प्रश्न येणारच शिवाय या पंचांचें तरी हल्लीं ऐकणार कोण आहे? प्रत्येकाचा आपल्यापुरता तो स्वतः पंच झाला आहे ! अशा परिस्थितींत आपल्या सांगण्याचा किंवा ठरावाचा बिलकुल उपयोग होत नाहीं; तेव्हा या भानगडींत पडा कां अशी पंचाची समजूत झाल्यास तेंही कांहीं गैर नाहीं. बाकी इतर लोकांना त्या अनाचारी गृहस्थाची विचारपूस करावयास सवडच नाहीं. या सर्व कारणामूळें त्या अनाचारी गृहस्थास समाजात राजरोस रीतीनें वावरण्यास आयता ठाव मिळतो. व त्यामुळें त्याच्या दुराचार प्रवृत्तीस उलट उत्तेजनच मिळून तो आपली आपल्या इतर बांधवानाही हळुहळु आपल्या पक्षास ओढण्याचा प्रयत्न करूं लागतो ! आणि त्यांत त्याला यशही येण्यास फारसें कठीण जात नाहीं. कारण त्यानें कसाही मनसोक्त आचार—धर्मविरुद्ध किंवा लोकविरुद्ध का होईना—ठेवल्यास त्यास सर्वांकडून कांहींच शासन होत नाहीं, इत केंच नव्हे तर समाजातील पूर्वीच्या त्याच्या मानसन्मानासही कांहींच बाध पडत नाहीं

तेव्हां आपल्या मित्राप्रमाणें आपणही आचार-स्वातंत्र्याचा पूर्णपणें फायदा घेऊन अनाचार-प्रवृत्त कां होऊं नये अशी एकाद्या उल्लू गृहस्थाची मनःस्थिती झाल्यास कांहींच नवल नाहीं. प्रत्येक समाजांत अशा प्रकारच्या उल्लू गृहस्थांची वाण मुळींच असत नाहीं, तेव्हां 'आधींच मर्कट त्यांतही मद्य प्याला'. अशा परिस्थितींतील लोकांना जर तसाच योगायोग अनायासें प्राप्त झाला तर त्याचा फायदा घेण्यास ते कधीं चुकतील काय? कधींही नाहीं. अशा प्रकारच्या परिस्थितीनें अनाचारी लोकांची संख्या दिवसेंदिवस जास्त होऊं लागल्यास शुद्ध व सनातन अशा जैनधर्मी लोकांचें वास्तव्य कसें रहावें समजत नाहीं!! अशा रीतीच्या एकाद्या अनाचारी मनुष्याच्या वर्तनाकडे समाजानें दुर्लक्ष केल्यास 'म्हातारी मेल्याचें दुःख नाहीं; पण काळ सोकावतो' अशा तऱ्हेची परिस्थिति प्राप्त होऊन समाजाची दुर्दशा होऊन जाईल यांत मुळींच संदेह नाहीं. तेव्हां अशा अनाचारप्रवृत्त लोकांस वेळींच ताळ्यावर आणून समाजबंधन कसें कायम रहावें व आपला धार्मिक आचार कोणत्या प्रकारानें आचरणांत आणून आपल्या सनातन जैनधर्मास स्थिरत्व प्राप्त करून द्यावें, याचा प्रत्येक जैनबांधवानें विचार करून सर्वानुमतें यासंबंधीं एक मार्ग मुकर करावा व या महत्वाच्या प्रश्नाचा समाधानकारक रीतीनें निकाल लावण्यास सर्वांनीं एकमतानें झटावें अशी विनंती आहे.

हा प्रश्न इतर कोणत्याही प्रश्नापेक्षा कानाडोळा करण्यासारखा नाहीं. या एका प्रश्नावर आपल्या धर्माची इमारत अवलंबून आहे. करितां आमच्या धर्मानुयायीबंधु पुना-त्यांनीं या प्रश्नाकडे आधीं लक्ष पुरवून आपल्या समाजाचीं बंधनें शिथिल होत असलेलीं दृढ करण्याचा प्रयत्न करावा अशी त्यांना आग्रहाची पण कळकळीची प्रार्थना आहे. आमच्या मतें या प्रश्नाचा निकाल कसा करावयाचा या संबंधीं थोडक्यांत आतां विवेचन करून या लेखाची परिसमाप्ती करूं. अशा प्रकारच्या समाजांतील भानगडींची विचारपूस होऊन त्याचा समाधानकारक निर्णय लागण्यास योग्य अधिकाऱ्यांची जरूरी आहे. असे अधिकारी म्हणजे आमच्या वाडवडीलांनीं समाजाचा कारभार योग्य प्रकारें चालविण्याकरितां नियत केलेले 'भट्टारक' व त्यांचे ठिकठिकाणचे शिष्य हेच होत. कित्येक लोक भट्टारक वगैरे समाजनियंत्रक गुरूंचें कारण नाहीं असें प्रतिपादन करितात, पण ज्या प्रमाणें राजा शिवाय राज्य चालणें कठीण; त्या प्रमाणें समाजशास्त्या गुरुशिवाय समाजसंस्था सुरळीत चालणें कठीण. किंबहुना हें शक्यच नाहीं असें म्हटलें तरी चिंता नाहीं. समाजांतील एका व्यक्तीची उठावर दुसऱ्या व्यक्तीस करणें जड जातें अर्थात् एकाद्या गृहस्थाश्रमी माणसास दुसऱ्या एकाद्या गृहस्थाच्या आचरणा संबंधीं शंका घेऊन त्याची शहानिशा करण्यास मुळींच शक्य नाहीं. पण एकाद्या धाडशी माणसानें अशा प्रयत्न केल्यास तर त्या परस्परांमध्यें वैर देवतेचा विनाकारण प्रादुर्भाव होऊन अनिष्ट प्रकार मात्र संघभंगास कारणीभूत होईल व अशीं उदाहरणें रोज होत गेल्यास अनवस्था प्रसंग प्राप्त झाल्या शिवाय रहाणार नाहीं. करितां अशा प्रकारच्या समाजशास्त्या होण्यास गृहस्थाश्रमरहित सर्वसंगपरित्यागी इसमच योग्य आहे हें उघड आहे. अशा

संन्यासाश्रमी माणसास कोणाची भीड किंवा मुरवत बाळगण्याचें मुळींच कारण नाहीं. परंतु अशा प्रकारचा समाज नायक किंवा समाजशास्ता झालेला गुरू सदाचरणी व निःपक्षपाती असण्याची अत्यंत जरूरी आहे. 'बोले तैसा चाले, त्याचीं वंदावीं पाउलें' अशा तऱ्हेचा गुरू असेल तरच त्याचा प्रभाव शिष्य समुदायावर पडेल. यांत मुळींच संदेह नाहीं. दुसरी गोष्ट ही कीं, अशा प्रकारचा गुरू किंवा भट्टारक लोकांनीं आपल्या मर्जी प्रमाणें निवडून त्याजकडे समाजशासनाचे अधिकार सोंपवीणें अत्यंत अगत्याचें आहे मात्र या भट्टारकाकडून अगर गुरूकडून कांहीं अक्षम्य कसूरी झाली किंवा त्याच्या आचारविचारामध्यें कांहीं फरक झाला तर त्यास पदच्युत करून त्याच्या जागीं दुसऱ्या योग्य माणसाची निवड करून त्याची स्थापना करणें उचित आहे. तसेंच या गुरूकडेच सर्वाधिकार असावा असें आमचें म्हणें नाहीं. त्यास चार पांच सद्गृहस्थांचें सल्लागार कौन्सिल देणें आवश्यक आहे. हे कौन्सिलर श्रावकांनीं बहुमतानें निवडून दिलेले शिष्ट व संभावित गृहस्थ असावेत, हें सांगण्याचें मुळींच कारण नाहीं. या कौन्सिलच्या बहुमताप्रमाणें कौन्सिलचे एक अध्यक्ष या नात्यानें भट्टारकांनीं किंवा गुरूनीं कोणत्याही प्रश्नाचा निकाल करावा. आपण स्वतः कौन्सिलची सम्मति घेतल्या शिवाय कोणतेंही महत्वाचें काम त्यानीं करतां कामा नये. अशा तऱ्हेनें एकाद्या प्रांता पुरतें मुख्य कौन्सिल उर्फ हायकोर्ट स्थापन झाल्यावर, त्या प्रांतांतील प्रत्येक गांवा संबंधीं किरकोळ प्रश्नांचा निकाल करण्याकरितां ग्रामपंचायतीच्या नमुन्यावर त्या त्या गांवांत ज्ञाति–पंचायती स्थापन होणें इष्ट आहे. या पंचायतीचे समासदही चार पांचच असून तेही लोकांनीं आपल्या सम्मती प्रमाणें निवडलेले असावेत. या समासदांमधूनच एक सरपंच उर्फ अध्यक्ष म्हणून एकाची नेमणूक करावी. अशा तऱ्हेच्या पंचायतीचे अगर कौन्सिलचे सभासद प्रति तीन वर्षांस अगर पांच वर्षांस नवीन निवडण्याची योजना करणें फारच अगत्याचें आहे.

अशा प्रकारें पंचायतीची व मुख्य कौन्सिलची योजना झाल्यावर समाजाचा उन्नती संबंधीं या संस्थांनीं प्रत्येक कामें–शिक्षण प्रसारापासून कन्याविक्रय, वृद्धविवाह, इत्यादि सामाजिक गोष्टींपर्यंत सर्व कामें आस्थेनें व कळकळीनें करण्याची अत्यंत जरूरी आहे. प्रत्येक गांवांत स्थापन झालेल्या पंचायतीच्या निकालावर मुख्य कौन्सिलाकडे अर्थात् भट्टारकाकडे अपील करण्याची सर्वांना मोकळीक असावी. सारांश कारभाराच्या दृष्टीनें सरकारचे मुलकी अधिकारी व न्यायाच्या दृष्टीनें सरकारचें हायकोर्ट व खालचीं कोर्टें या नात्यानें पंचायती व कौन्सिल यांनीं परस्परावलंबित्वाच्या तत्वाप्रमाणें नियमीत रीतीनें व चोखपणें कामें पार पाडावीं या प्रमाणें समाजकारभार समाधानकारक रीतीनें चालविण्याची रूपरेखा दर्शविल्यावर पंचायती व कौन्सिल हीं सुरळीत चालण्याकरितां त्यांच्याकरितां योग्य नियमांची जरूरी आहे. पण हा प्रश्न गौण असल्यामुळें त्यासंबंधीं कांहीं तूर्त येथें कांहींच विवेचन न करितां 'समाजबंधनाची आवश्यकता' या विषयावरील आमचे जे विचार आहेत ते विचारवंत व सुज्ञ समाजपुढाऱ्यांपुढें चर्चेकरितां मांडून व या महत्वाच्या प्रश्नाबद्दल लोकसमाजांत ऊहापोह होऊन त्या संबंधीं योग्य तो मार्ग लवकर अमलांत येण्याविषयीं श्रीजिनेंद्रप्रभू जवळ अनन्यभावें प्रार्थना करून आम्ही आपल्या प्रिय वाचकांची रजा घेतों.

सनातन जैनधर्म और उसका सार।

लेखकः—जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी,

आ. संपादक "जैनमित्र" बम्बई।

राग द्वेष आदि शत्रुओंको जीतनेवाला है उसको जिन कहते है अर्थात् वीतराग आत्माका नाम जिन है—जिनका जो धर्म सो जैनधर्म है। यह अनादि कालका है इससे इसका सनातन विशेषण है। यह लोक अनादि अनन्त है और कथंचित नित्य है अर्थात् अनन्त जीव, अनन्त पुद्गल, एक धर्मास्तिकाय, एक अधर्मास्तिकाय, एक आकाशास्तिकाय और असंख्यात कालाणुओंका समुदाय है। ये कभी लोप नहीं होते इसीसे द्रव्यकी अपेक्षा नित्य है। इसी कारण इनके समुदायका वाचक लोक भी नित्य है। परंतु यह लोक कथंचित अनित्य है अर्थात् सर्वही शुद्ध द्रव्योंमें शुद्ध परिणमन और अशुद्ध द्रव्योंमें अशुद्ध परिणमन प्रत्येक समय समयमें रत्नकी चमककी भांति व समुद्रमें तरंगोंकी भांति हुआ करते हैं—इस अवस्थाके बदलनेकी अपेक्षा सर्वही द्रव्य अनित्य हैं—इससे यह लोक भी अनित्य है। पदार्थोंमें विरोधी धर्म अर्थात् स्वभाव हर समय पाए जाते हैं—उनके ठीक समझने समझानेके लिये स्याद्वाद नयकी आवश्यकता है। स्यात् अर्थात् कथंचित् अर्थात् किसी अपेक्षासे वाद अर्थात् कथन जिसके द्वारा हो उसको स्याद्वाद नय कहते है। इसके सात भंग हैं।

जैसे लोक नित्य अनित्य है—इस विरोधी विषयको समझनेके लिये सात तरहसे शिष्यको बतलाया जायगा तब वह शंका-रहित समझेगा कि एकही समयमें दो विरोधी धर्म पदार्थमें इस तरह मौजूद हैं।

जैसे—१ स्यात् नित्यं—यह लोक द्रव्योंके अस्तित्वकी अपेक्षा नित्य है।

२. स्यात् अनित्यं—यह लोक पर्यायोंके पलटनेकी अपेक्षा अनित्य है।

३. स्यात् नित्यानित्यं—यह लोक द्रव्यकी अपेक्षा नित्य और पर्यायोंकी अपेक्षा अनित्य है—यह तीसरा भंग इसलिये कहा गया कि समझनेवालेको यह मालूम हो कि इसमें दोनों धर्म हैं पर क्रमक्रमसे कहे जाते हैं—

४. स्यात् अवक्तव्यं—एक समयमें दोनों धर्म रहते हुए भी एक समयमें कहनेकी शक्ति न होनेकी अपेक्षासे अवक्तव्य है अर्थात् कहने योग्य नहीं है। इस भंगसे यह बतलाया कि जितनी देरमें हम किसीका स्वरूप कहना शुरु करेंगे व पूरा कह पाएंगे उतनी देरमें उस पदार्थके स्वरूपमें बहुतसी पर्याएं हो जांयगी। हम केवल पिछली पर्यायकोही कहते रहेंगे इससे एक समयकी दशाको बहुत समय लेनेवाले शब्द कह नहीं सकते अतः वस्तुका स्वरूप अनुभवगम्य है। इस दृष्टान्तमें केवल इतना कहा गया कि

नित्य व अनित्य दोनों स्वभाव रहते हुए भी एक समयमें कहे नहीं जा सकते।

५. स्यात् नित्यं अवक्तव्यं च-एक समयमें दोनोंको कहनेकी अपेक्षा अवक्तव्य है, परंतु द्रव्यकी अपेक्षा नित्य स्वभावरूप है यह पांचवा भंग शिष्यको विशेष खुलासेके लिये कहा गया कि यद्यपि अवक्तव्य है तौभी उसमें नित्यपना मौजूद है।

६. स्यात् अनित्यं अवक्तव्यं च-एक समयमें दोनोंको कहनेकी अपेक्षा अवक्तव्य है पर पर्यायोंकी अपेक्षा अनित्य स्वभावरूप है-यह भंग भी अनित्यताकी दृढता करानेके लिये है।

७. स्यात् नित्यं अनित्यं अवक्तव्यं च-एक समयमें दोनोंको कहनेकी अपेक्षा अवक्तव्य है पर नित्य अनित्य दोनोंही धर्म उसमें पाए जाते हैं-इस भंगसे पूरी दृढता करा दी गई है कि वस्तुमें नित्य, अनित्य धर्म जरूर है यद्यपि एक समयमें उनका अवक्तव्यपना है तौभी—

शंकारहित ज्ञान करने करानेके लिये इन सातोंसे अधिककी जरूरत नहीं होती-यही स्याद्वाद नयका स्वरूप है। विशेष जाननेवालोंको 'सप्तभंगीतरंगिणी' ग्रन्थ देखना उचित है।

ऊपरके कथनसे यह प्रकट है कि हमारा, आपका, व किसीका भी आत्मा सदासे है और सदा रहेगा-केवल अवस्थाएं ही पलटती रहेंगी। इसी आत्माके असली अपने स्वभावको जिनधर्म कहते हैं इससे आत्मा ही अनादिताके साथ इसको भी अनादिता या सनातनता है।

आत्माका स्वभाव वास्तवमें अनुभवगम्य है। प्रत्यक्षप्रमाण जो केवलज्ञान है उसीके द्वारा प्रत्यक्ष देखने-जानने, व स्वाद लेने योग्य है। अथवा केवलज्ञानकी अपेक्षा परोक्ष पर स्वसंवेदन प्रत्यक्ष ऐसे भावश्रुतज्ञान नाम प्रमाण ज्ञानके द्वारा अनुभवगम्य है-अनुभवकी दशाएं कभी तो चित्पिंड, अखंड, निर्विकल्प, अमृतसागर ही झलकता है। कभी कुछ विकल्प सहित दशामें अनेक प्रकार झलकता है। परम महात्मा श्री अमृतचंद्रसूरिने समयसारकलशमें कहा है-

क्वचिल्लसति मेचकं क्वचिदमेचकामेचकं
क्वचित्पुनरमेचकं सहजमेव तत्त्वं मम।
तथापि न विमोहयत्यमलमेधसां तन्मनः
परस्परसुसंहतप्रकटशक्तिचक्रं स्फुरत्॥ २६॥
इतो गतमनेकतां दधदितः सदाप्येकता-
मितः क्षणविभंगुरं ध्रुवमितः सदैवोदयात्।
इतः परमविस्तृतं धृतमितः प्रदेशैर्निजै-
रहो सहजमात्मनस्तदिदमद्भुतं वैभवम्॥ २७॥
कषायकलिरेकतः स्खलति शान्तिरस्त्येकतो
भवोपहतिरेकतः स्पृशति मुक्तिरप्येकतः।
जगत्रितयमेकतः स्फुरति चिच्चकास्त्येकतः
स्वभावमहिमाऽऽत्मनो विजयतेऽद्भुतादद्भुतः॥२८॥

भावार्थ-कभी तो यह आत्मा अनेक रूप (दर्शन, ज्ञान, चारित्रकी भिन्नतासे) झलकता है, कभी अनेक और एक दोनों रूप और कभी एक ही रूप। (रत्नत्रयकी एक-

तासे) ऐसा मेरा स्वभावरूप वास्तवमें यह आत्मतत्त्व है तौभी निर्मल बुद्धिशालीयोंका मन विमूढताको नहीं प्राप्त होता है। क्योंकि इस मनमें परस्पर एक दूसरेको अपने साथ संकोचित किये हुए प्रगटरूप आत्मशक्तियोंका चक्र झलक रहा है। एक तरफसे (गुण व पर्यायोंकी अपेक्षा) अनेकपनेको प्राप्त है, दूसरी तरफसे (द्रव्यकी अपेक्षा) सदाही एकपनेको रखनेवाला है, एक ओरसे (परिणमनकी अपेक्षा) क्षणभंगुर तो दूसरी ओरसे (द्रव्यकी नित्यताकी अपेक्षा) सदाही अविनाशी उदय हो रहा है। एक तरफसे (समस्त लोकालोकको जाननेकी अपेक्षा) परम विस्तारवाला है तो दूसरी ओरसे [प्रदेशापेक्षा] अपने असंख्य प्रदेशोंमें ही विराजित है। अहो! इस आत्माकी स्वाभाविक विभूति महा आश्चर्यकारी हैं। एक तरफ [संसारापेक्षा] देखते हैं तो इसमें कषायकी कालिमा है, दूसरी तरफसे (शुद्धताकी अपेक्षा) देखते हैं तो शान्तता ही झलक रही है। एक तरफ (संसारभ्रमणकी अपेक्षा) देखते हैं तो चतुर्गतिके भवोंमें इसका भ्रमान होता है, दूसरी तरफ देखते हैं तो यही मुक्तिको ही स्पर्श करता है। एक अपेक्षासे (त्रिलोकका ज्ञाता होनेसे व तीन लोकमें अनंतानंत जीवोंका निश्चयनयसे एक स्वभाव होनेसे) तीन जगतरूप स्फुरायमान है व एक अपेक्षा (अपने व्यक्तिगत रूपकी अपेक्षा) से चैतन्यभाव प्रकाशमान है। इस आत्माके स्वभावकी महिमा अदभुतसे अद्भुत विजयको पा रही है।

प्रमाणज्ञान सर्वांग आत्माका ज्ञान कराता है जब कि उसके एक २ स्वभावका अलग २ ज्ञान व अनुभव भिन्न २ प्रमाणके अंश नयोंसे होता है। प्रमाणज्ञान आत्माको एक निर्मल क्षीरसागरका समुद्र अपने सर्व गुणोंसे संपन्न झलकता है—जब कि नयज्ञान इस आत्मसमुद्रमें उठती हुई भिन्न २ तरंगोंका व इसके भिन्न २ स्वभावोंका अनुभव कराता है।

जैसे एक अगाध समुद्रके अंदर रहनेवाले सर्व स्वभावों व उसकी सर्व तरंगोंका कथन नहीं किया जा सकता किन्तु जो बालक समुद्रको नहीं जानता उसको समुद्रका ज्ञान करानेके लिये कुछ थोडासा वर्णन समुद्रके कुछ खास स्वभाव व तरंगोंका करके उस बालकको समुद्रकी समझ करा दी जाती है। वह जानकर समुद्रका अनुभव कर लेता है पर जब साक्षात् समुद्रको देखता है तब प्रत्यक्ष अनुभव करके सम्पूर्णतया ज्ञानी होता है। इसी तरह अज्ञानी जीवको आत्माका ज्ञान करानेके लिये कुछ साधारण व कुछ विशेष गुणोंको समझाया जाता है जिससे यह शिष्य अनात्मा अर्थात् अजीव पदार्थोंसे भिन्न आत्मवस्तुके अनुभवको पा सके—यह आत्माको समुद्रकी भांति समझ जाता है पर जब केवलज्ञानी होता है तब साक्षात् प्रत्यक्ष आत्माका दर्शन कर उसका पूर्णज्ञानी

अर्थात् उसके अनंतगुण और पर्यायोंका ज्ञाता होता है।

जगतके नाटकको यदि कोई देखे और उसमें प्रत्येक अवस्थाका अनुभव करे तो मालूम होगा कि एक तो किसी भी आत्माको अज्ञानपना नहीं सुहाता, कोई उसको अज्ञानी कहे तो बुरा मानता है। दूसरे क्रोध कषायका होना अच्छा नहीं लगता। जब क्रोधी होता है तब दुःखी हो जाता है। इसके विरुद्ध यदि उसके ज्ञान हो तो वह अच्छा मानता है या उसको कोई ज्ञानी कहे तो प्रसन्न होता है वैसेही यदि शांति व क्षमा रहे आनन्दित होता है—जैसे उसको स्वयं अपनी इस दशाका अनुभव होता है, तैसे दूसरे देखनेवालेको भी उसकी अज्ञान अवस्था व क्रोधित अवस्था नहीं सुहाती किन्तु इसके विरुद्ध उसकी ज्ञानदशा व शांति तथा क्षमाकी अवस्था अच्छी मालूम होती है। यह एक दृष्टान्त मात्र है। इस दृष्टान्तसे तीव्रबुद्धि व्यक्तिको यह अनुभव करना चाहिये कि आत्माका स्वभाव अज्ञान व क्रोधादि कषाययुक्त नहीं है किन्तु इसके विरुद्ध ज्ञानस्वरूप व क्रोधादिक कषाय रहित याने वीतरागरूप है।

ऐसा ही श्री कुंदकुंदाचार्यदेवने अपने नियमसार ग्रंथमें कहा है कि—जो संपूर्ण राग द्वेषादि दोषोंसे रहित है व केवलज्ञान आदि परम विभूतिको रखनेवाला है सो परम आत्मा कहा जाता है उससे विपरित परमात्मा नहीं है।

पूर्णतया विचार करनेपर यही झलकता है कि आत्माका स्वभाव ही ज्ञानमय और वीतराग है। और साथ ही इसके आनन्दगुण भी इसमें मौजूद है। कोई भी प्रवीण पुरुष यदि छः मासके लिये एकान्तमें बैठ अपने आत्माको जो कि अनन्तगुणोंका समुदाय है और शरीर प्रमाण आकार रखता है इस तरह मनन करे कि यह पूर्ण ज्ञानस्वरूप और वीतराग है, और अपने चित्तको सब तरफसे रोक इस विचारमें ठहरानेका यत्न करे तो अभ्यास करते करते जिस वक्त इसका उपयोग औरोंसे छुटकर निजके मननमें कुछ भी देरके लिये तन्मयता प्राप्त करेगा तो जो आनन्दका ढेर इस आत्मामें भरा है उसका स्वाद इस अभ्यासीको ऐसा आयगा कि फिर उसको संसारमें जितने मजे हैं वे फीके लगेंगे और उनसे कोई अपूर्व रसरूपी अमृतका अनुभव होगा। यही इस बातका प्रमाण होगा कि आत्माका **स्वभाव आनन्दरूप भी है।**

इसी आत्माके ज्ञानमय, वीतराग और आनन्द आदि विशेषगुण और आस्तित्व, द्रव्यत्व, प्रदेशत्व, अगुरुलघुत्व, प्रमेयत्व, वस्तुत्व आदिको सामान्य गुणको आत्माका स्वभाव कहते हैं—यही जिनधर्म है अर्थात् अपने असली स्वभावमें तिष्ठे हुए आत्माका जो कोई सर्वज्ञ वीतराग, और आनन्दमय स्वभाव है वही उसका धर्म है—भेददृष्टिसे इस अपने ही स्वभावको जो इस समय

यद्यपि अपनेमें गुप्त रूपसे है पर प्रगट नहीं है। प्रगटतामें लानेके वास्ते जो उपाय है उसको भी जिनधर्म कहते हैं–और वह उपाय या साधनरूप जिनधर्म सम्यग्दर्शन-ज्ञानचारित्रमई निश्चय और व्यवहार रत्न-त्रय स्वरूप है।

व्यवहार रत्नत्रय निमित्त साधक जब कि निश्चय रत्नत्रय उपादान साधक है। विना उपादान निमित्तके कोई कार्य नहीं हो सकता। सुवर्णकी अशुद्ध डलीका कुंदनरूप कार्यका होनेका उपादान कारण उसी डलीकी शुद्ध होनेके पहले पूर्वपूर्वकी अवस्था है और निमित्त कारण अग्नि, मसाला, वायु आदिका संयोग है। उपादान कारण वास्त-वमें वही चीज होती है जो स्वयं कार्यरूप हो जाती है। कार्य होनेपर निमित्त जो उससे भिन्न चिज है छूट जाते हैं। रोटी कार्यका उपादान कारण आटा व उसके पहले गेहूं व उसके पहले वाली आदि हैं; पर निमित्त कारण चकी अग्नि आदि हैं।

अपने शुद्ध आत्माकी शक्तियोंका यथार्थ श्रद्धान् यथार्थ ज्ञान और यथार्थ अनुभवमें तल्लीनता अर्थात् वीतराग सम्यग्-दर्शन स्वसंवेदन ज्ञान व वीतरागचारित्रमई निर्विकल्प स्वस्थ चिद्रूप आत्मसमाधि नि-श्चय रत्नत्रय है और यही स्वयं सर्वज्ञ वीत-रागरूप होकर कार्य होजाता है। इस समाधिके पहले उसके २ पूर्व २ आत्मिक अनुभव व आत्मज्ञान व क्रमसे क्रम अविरत सम्यग्दृष्टि चौथे गुणस्थानवालेकी आत्मा-नुभवकी भावना व उसमें यथाशक्ति आच-रणता उपादान कारण है–जीवादि सात तत्वोंका श्रद्धान, अनेक तत्वविवेचक यथार्थ शास्त्रोंका ज्ञान, व श्रावक और मुनिके व्रतोंका आचरण ऐसा व्यवहार रत्नत्रय निमित्त कारण है। जबतक पूर्ण कार्य अर्थात् परम निरंजनरूप सिद्ध अवस्थाका लाभ न हो तबतक इस निमित्तकी आवश्यकता किसी न किसी रूपमें पडती है। जैनधर्मके १४ गुणस्थानोंकी अपेक्षा यद्यपि इन बाह्य निमित्तोंका विकल्प छठे प्रमत्तगुणस्थान तक होता है तथापि–बाह्य निमित्त शरीर नग्नता आदि विना विकल्प मनमें उठाए हुए ही १४ वें गुणस्थान तक बने रहते हैं।

इस उपादान और निमित्त कारणरूप मोक्ष मार्गपर चलते हुए जितना २ उस प्राणीका परिणाम निश्चय रत्नत्रय या आत्मा-नुभवमें ठहरेगा उतना २ ही वह अपूर्व आनन्दको पाता जायगा—

इस जिनधर्मका सार अपनी मुरझाई हुई आत्मकलीका विकाश है। जों २ विकाश होता है आत्मामें अपूर्व बल बढ़ता है–यह पुरुषार्थ अपने पुरुषार्थसे कभी न कभी अपने कार्यको सिद्ध करलेता है अर्थात् परम शुद्ध हो कर फिर बंधनादिमें पडनेसे मुक्त हो-जाता है। यदि किसी आत्माको करोड़ों वर्ष भी लगें तौभी इस रत्नत्रय मार्गपर चलना मात्र ही उसको उसी समय स्वाधीन आत्मिक

सुखको लाभ देगा और उसके मनको ऐसा पवित्र बनाएगा कि जब वह आत्मानुभवसे छुट्टी पाएगा, दिनरातमें यही सोचेगा, उद्योग करेगा, करायगा कि जगतके सर्व जीवोंका हित हो और उसके लिये मैं इस जगतकी क्या सेवा कर सकता हूं। उसकी आत्मामें नीचे लिखी चार भावनाएं नृत्य करेंगी।

मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थानि च सत्त्वगुणाधिकक्लिश्यमाना विनयेषु (तत्त्वार्थसूत्र)

अर्थात्-सर्व जीवमात्रका मित्रत्व, गुणोंसे अधिकोंपर हर्षभाव, दुःखियोंपर दया और अविनयी जीवोंपर रागद्वेष रहित माध्यस्थ भाव हो।

प्रिय पाठको! जिस आनन्दको हम बाहर ढूंढ रहे हैं, जिसके लिये हम पांचों इन्द्रियोंके भोगने योग्य वस्तुओंका संग्रह कर रहे हैं, जिसके लिये हम रात्रदिन तृष्णा नदीमें गोते खाते हुए क्लेशित रहते हैं वह सुख, वह आनन्द अपने पास ही है। अपनी आत्मा ही परमामृतका कूप है। उपयोगरूपी लोटेसे एक सूत्ररुपी रस्सीके द्वारा इस ज्ञानामृतको खींचकर उसी उपयोगसेही अपने आत्माके परिणमनरुपी मुखको जो पिलाते हैं वेही संसारमें जीते जागते आत्मा हैं—वेही सच्चे सुखको पाकर चाहे बाहर एक फटी चद्दर हो या नौनिधि चौदह रत्न और अटूट द्रव्यभंडार हो संतोषी रह सकते हैं। उनके लिये मनुष्यका जीवन बिताना एक नाटकशालामें नाटक खेलनेके समान है। यद्यपि बाहरसे जिस अवस्थामें रहते हैं उस अवस्थाके योग्य लौकिक, सामाजिक, राष्ट्रीय उन्नतिके पथपर लगे हुए व परोपकारके ही वाहनपर चढ़े हुए दिखलाई पड़ते हैं पर अंतरंगमें स्वात्मजनित स्वाधीन सुख और निज स्वतंत्रताके भोगी रहते हैं—उनको संसारनाटक करते हुए सफलता होनेपर उन्मत्तता नहीं व विफलता होनेपर विषाद नहीं होता है।

इस भारतमें आजकल ऐसेही उदार हृदयके धारक—परमात्माके भेट करनेवाले सच्चे सेवकोंकी आवश्यकता है। इस पवित्र जिनधर्मके सिद्धांत उसके चित्तको परम न्यायमार्गी, परम स्वाधीन, सत्यका अनुयायी, निर्भय, पुरुषार्थी और अपनी जिम्मेदारीके आप जोखमदार बना देते हैं।

अनेकान्त धर्मका सार हृदयमें बैठते ही जगत्के सम्पूर्ण धर्मप्रचारकोंके सिद्धान्तोंकी क्या २ दृष्टि क्या २ अपेक्षासे वे किसी बातको कहते हैं सो ध्यानमें आजाती है और हृदयसे मतविरोध दूर होजाता है—अपेक्षा या दृष्टि है तो और, और उसे औरका और भावना ही अनेक मतोंके प्रचारका कारण है। सर्व मतोंकी यथार्थ अपेक्षाको अनेकान्ततासे समझनेवाला साम्य, शांत, विरोध रहित और दृढ होजाता है। यद्यपि अंतरंगमें ऐसा होता है तथापि बाह्यमें अपनी २ स्थितिके अनुसार कर्तव्यपरायण रहता है जैसे गृही जीवन बितानेवाले पांचों

पांडवोंने तत्के ज्ञाता होकर भी प्रयोजन होनेपर अन्याय निवारणार्थ युद्ध किया—

इसी अंतरंग तत्त्वके अनुभवका प्रताप था कि जिससे महाभारतके युद्धमें लडते २ घायल होकर मृतप्राय व्यक्ति तुरत उपयोगको सम्हाल आत्मानुभवी हो जाते और प्राणकी आनमें क्लेशित परिणामोंके बदले शांत परिणामका देव आयु बांध स्वर्ग पहुंच जाते हैं।

केवल भारतहीको नहीं किन्तु इस जगतभरको इस पवित्र जिनधर्मके सिद्धान्तोंका ज्ञान होना लाभकारी है। पर इसका उपाय केवल सोचनेसे और घरमें बैठे २ आकाशके तारे गिननेसे नहीं होगा—

जो कुछ होगा सो वर्षोंके परिश्रमसे होगा। होगा जब ही जब सैकडों स्वार्थत्यागी कमर कसके जिनधर्मकी उन्नति करके ही रहेंगे, हम रुचिरूपी शस्त्रको बांध और उद्योग द्वारा उस शस्त्रका प्रयोग कर अवनतिके कारणोंको मिटाने और उन्नतिके कारणोंकी रक्षा करनेमें उतारु हो जांयगे। जरूरत है कि स्वार्थत्यागी मोह छोडें और अपनी आजीविका लायक पूंजी अपने पास रख प्रवृत्तिमार्गद्वारा जिनधर्मकी उन्नतिमें रात्रदिन लौलीन हों—मुख्य उपाय जिनधर्म प्रचारके पुस्तकोंका अति अल्प मूल्यमें नाना भाषाओंमें प्रकाश करना, पुस्तकोंके सारांशोंको बतानेवाले छोटी २ पुस्तकोंका मुफ्त वितरण करना, निर्भय होकर जैन अजैन समाजको सच्चा जैनसिद्धान्तका उपदेश देना, आप चलना और अपने चालचलनसे दूसरोंपर प्रभाव डालना, अनेक देशी विदेशी देशोंमें जाकर उपदेश देना, व छोटी २ पुस्तकें बांटना है—इन सबके लिये और क्या २ साधन चाहिए सो परोपकारी स्वयं विचार सकते हैं।

वास्तवमें देखा जाय तो यह दुनियां सच्चे सुखकी प्यासी हो रही है पर इसको आत्मानन्दरूपी जल पिलानेका कोई उद्योग नहीं हो रहा है—इसीसे इस लेखमें कहना पड़ा है कि परोपकारियों! पहले स्वयं पवित्र जिनधर्मका सार समझो, अनुभव करो, उसमें तन्मय हो तव फिर दूसरोंके उसके लाभका मार्ग बताओ—सर्व जगत् तुम्हारा उपकृत होगा।

जैनधर्मकी वर्तमानदशा।



लेखक-श्रीयुत् ज्योतिप्रसादजी (जैनकवि), सम्पादक 'जैनप्रदीप' देवबंद।

एक समय भारत विषै रहा जैन मत छाय,
क्या नर अरु क्या नारिगण सब सेवत हर्षाय। १.

चर्चा थी जिन धर्मकी घर २ हाट दुकान,
करैं परस्पर नारिनर जिनमत् तत्व बखान। २

पर अब या जिनधर्मकी दशा भई जो हीन,
वाका वर्णन कौन विधि लिखै लेखनी दीन। ३

कहां-जैन-जैनी-कहां-कहां ग्यान गुण तत्व,
कहां-द्रव्यचर्चा-कहां-कहां-भाव कहां सत्व। ४

छिपो दिवाकर जैन अब मिथ्या मत घन छाय,
भयो तिमिर अज्ञानका दृष्टि नहिं हित आय। ५

दिन बीत्यो सूरज छिप्यो भई अन्धेरी रैन,
कालगती विकरालसे रह्यो नामको जैन। ६

यह लख उपकारी हिये लागत चोट कठोर,
होय शोकमें विकल तन करत शोर अति घोर। ७

हीन दशा जो जैनकी रही और कछु काल,
फिर सुधराये ना सुधै करो यत्न तत्काल। ८

धनवंता ज्ञानी उठो सुन हितकारी वैन,
तजो नींद अज्ञानकी खोल ज्ञानके नैन। ९

जैन धर्म उन्नति विषै तन मन धन अरु लाज,
करो समर्पण वीर अब जो सुधरैं सब काज। १०

करो यत्न जा यत्नसे हो जिन रवि उद्योति,
भगै तिमिर मिथ्यात मत फैल ज्ञानकी ज्योति। ११

रत्नकरण्डके कुछ उपदेशरत्न।

देवस्वरूप।

भूख[१] प्यास[२] वृद्धत्व[३] बिमारी[४]
जन्म[५] मरण[६] भय[७] रागद्वेष[८]
गर्व[९] मोह[१०] चिन्ता[११] मद[१२] अरति[१३]
अचरज[१४] निद्रा[१५] खेद[१६] स्वेद[१७]।
दोष अठारह ये हैं गिरिधर
हों ये जिनमें ज़रा नहीं
आप्त वही है, देव वही है,
नाथ वही है, और नहीं।

सम्यग्दर्शन महिमा।

सम्यग्दर्शनकी शुभ सम्पद्
भानी है जिनके भीतर
चांडाल हों-कोई भी हों
महामान्य हैं वे गिरिधर।
गुदड़ीके वे लाल सुहाने
ढकी भस्मकी हैं आगी
सम्यग्दर्शनकी महिमासे
कहें देव ये बड़भागी ॥ १ ॥
ज्ञानशक्ति है ज्ञान बड़ा है
कोई वस्तु न ज्ञान समान
त्यों चारित्र बड़ा गुणधारी
सब सुखकारी श्रेष्ठ महान।
गिरिधरपर दर्शनकी महिमा
इन सबसे बढ़कर न्यारी
मोक्ष मार्गमें उसकी पदवी
कर्णधारकी है प्यारी ॥ २ ॥

निर्मोही गृहस्थकी बड़ाई।

मोह रहित जो गृहस्थ भी है
मोक्ष मार्गका गामी है
हो अनगार न मोह तजा तो
वह कुपंथका गामी है।
मुनि होकर भी मोह न छोड़ा
ऐसे मुनिसे तो गिरिधर
निर्मोही हो गृहस्थ रहना
है अच्छा, उत्तम, बिहतर ॥

सामायिक।

पूर्ण रीतिसे पञ्च पापका
तज देना गिरिधर सज्ञान
मर्यादाके भीतर बाहर,
अमुक समय धर समता ध्यान।
है यह सामायिक शिक्षाव्रत
महाव्रतोंका उपकारी
विधिसे, अनलस सावधान हो
प्रतिदिन इसके हो धारी ॥१॥
घर हो, वन हो, चैत्यालय हो,
कुछभी हो-निरुपद्रव हो,
हो एकान्त, शान्त, अति सुन्दर,
परम रम्य, गिरिधर शुचि हो।
ऐसे स्थलमें बड़ी खुशीसे
तनको मनको निश्चल कर
एक भुक्त दिन, वास दिवस, या
प्रतिदिन ही सामायिक कर ॥२॥

अशुभ रूप है, अशरण है यह,
हे अनित्य, है दुखकी खान,
आत्मरूप नहीं है भव तोभी
बना हुआ है मेरा स्थान।
से बिलकुल उलटा गिरिधर
मोक्षधाम है सुख क्यारा
ायिकके समय भव्यजन
ध्यान धरो ऐसा प्यारा ॥ ३ ॥

तत्त्वकी बात।

य बात तो यह है गिरिधर
पाप जीवका बैरी है।
ं बन्धु है, धर्म मित्र है,
धरो इसे क्या देरी है।
श्रय करता हुआ इसी विध
शास्त्र पढ़ेगा जो मानव
छे-से-अच्छा, सर्वोत्तम,
ज्ञानी वह होगा, है ध्रुव ॥
गिरिधर शर्म्मा–झालरापाटन सिटी।

जैन समाजकी उन्नतिके उपाय।

(लेखक-बाबू सूरजमल जैन संपादक 'जैन प्रभात'।)

यह देखकर संतोष होता है कि अब जैनसमाजमें भी उन्नतिकी आवाज सुनाई दे रही है। बीस वर्ष पहिलेकी जैनसमाजमें और वर्तमानकी जैनसमाजमें बड़ा अंतर पड़ गया है। उस समय दोचार जातिसेवकोंके सिवाय प्रायः सब घुर्राटे ले रहे थे। विद्वान दोचार ही दिखाई देते थे। अपने आपको जैनी प्रगट करनेमें लोग हिचकते थे। यह एक दोकी बात नहीं है प्रायः सबकी ही यही स्थिति थी यहाँतक कि विद्वान् लोग भी पूछनेपर अपनेको जैनी नहीं बतलाते थे। उस समय जैनी अपनेको बनियाँ, श्रावगी, अगरवाल आदि बताकर अपना परिचय दिया करते थे। एक भी स्थान पर कोई अच्छी पाठशाला नहीं थी। चारों ओर अंधकार व्याप्त था। पर अब इसके विरूद्ध है। अब सब जैनी बड़े अभिमानसे अपनेको जैनी प्रगट करते हैं। अपने नामके आगे जैन शब्द लिखनेमें अपना सन्मान समझते हैं। छोटे छोटे विद्यार्थी भी स्कूलोंमें अपनी जाति जैन लिखाते हैं। अब अपनेको बनियाँ, श्रावगी, खंडेलवाल, अगरवाल कहलानेमें जितना उन्हे आनंद नहीं मिलता जितना कि जैन

कहलानेमें । इसी तरह अब सेकडों पाठशालायें चल रही हैं । और चार छह तो ऐसी पाठशालायें हैं कि जिनमें उच्चश्रेणीकी पढ़ाई होती है । सो दोसो पंडित भी समाजमें दिखाई देते हैं । सेकडों ग्रेज्युएट भी दिखते हैं । दस पाँच समाचार-पत्र भी निकलते हैं । बीस पचीस बोर्डिंग हाउस भी शिक्षाप्रचारका कार्य कर रहे हैं । सार यह है कि बीस वर्षमें समाज अपने स्थानको छोड़कर कुछ ऊंचा उठ आया है। अब सोनेवालोंकी संख्या बहुत कम है । छोटे गामडोंमें भी उन्नतिकी बातचीत सुनाई देती है । यह सब कुछ हुआ है पर अभी यह बहुत कम है । संतोष योग्य नहीं है । इससे बहुत कुछ ज्यादह करना है । अभी समाजको—जैन समाजको बहुत कुछ उठाना है । अभी तो समाज प्रायः जागीही है । उन्नतिके मार्गकी ओर पूरी तौरसे सन्मुख भी नहीं हुई । और हमारा उद्देश्य इसकी उन्नति करनेका है अतएव पाठक सोच सकते हैं कि अपने ऊपर समाजोन्नतिके कार्यका कितना भारी बोझ है ? आज इस लेखमें यही विचार करना है कि समाजकी उन्नति क्या है ? और उसके उपाय क्या हैं ? समाजकी भावी उन्नतिका विचार कर जब हम अपनी कल्पनामें उस उन्नत अवस्थाका चित्र खींचते हैं तब वह चित्र इस भांति बनता है कि सारी समाज शिक्षित है । क्या स्त्री क्या पुरुष क्या बालक और क्या वृद्ध सब शिक्षासे दीक्षित हैं और किये जा रहे हैं । व्याकरण, न्याय, साहित्य आदि संस्कृतके प्रसिद्ध दिग्गज सैंकडों विद्वान् हैं । प्रायः सारी समाज जैनधर्मके सिद्धान्तोंको अपनी अपनी बुद्धि अनुसार न्यूनाधिक जानती हैं । सेकडों जैन सिद्धान्तकी उलझनें सुलझानेवाले विद्वान हैं । अंग्रेजी शिक्षाका प्रचार व्यवहारयोग्य सबको है पर उसमें कई अंग्रेजीके बडे बड़े विद्वान हैं । प्रोफेसर हैं, बेरिष्टर हैं । वकील हैं । जज हैं । मजिस्ट्रेट हैं । कई वकालत और बेरिष्टरी पास करलेने पर भी उच्च श्रेणीका व्यापार कर रहे हैं । कई विद्यार्थी विदेशोंकी पदार्थविद्यासे अपनी जातिके व्यापारपर प्रकाश डाल रहे हैं । कई नवीन आविष्कारोंके लिये अपनी मस्तिष्क शक्ति लडा रहे हैं । कई अंग्रेजीके विद्वान संस्कृत और धर्मशास्त्रका ज्ञान प्राप्त कर वर्तमान शैलीमें जैनधर्मके ज्ञानको लिख रहे हैं । कई नवीन नवीन विषयोंकी पुस्तकोंकी रचनामें लगे हैं। कई भिन्न भिन्न प्रकारके कारखाने खोलकर व्यापारवृद्धिकी ओर लगे हुए हैं । कई संस्कृत और अंग्रेजी दोनों भाषाओंके विद्वानोंने त्यागव्रत धारण किया है इनमें कई ब्रह्मचारी कई क्षुल्लक और ऐलक दिखाई देते हैं । कई विद्वानोंने जीवन समाजसेवाके लिये समर्पण कर दिया

है और वे दिनरात समाजसेवाका कार्य कर रहे हैं। इनमेंसे किसीने पाठशाला ही खोल रखी है। दस पांचने मिलकर विद्यालय खोल दिया है—कोई ब्रह्मचर्याश्रममें काम कर रहा है। दस वीस उच्च श्रेणीके विद्वानोंने जैन कॉलेज खोल रखा है, किसीने अनाथालयका कार्य अपने हाथोंमें ले रखा है। कोई सिद्धान्त भवनमें बैठे बैठे अपने अध्ययनको बढ़ा रहे हैं। किसीने सरस्वती भवन खोल रखा है। कई विद्वानोंने मिलकर धर्मप्रचारका काम शुरू कर रखा है। कई विदेशोंमें धर्मप्रचारके लिये चल पड़े हैं। प्रान्त प्रान्तमें एक एक दो दो अनाथालय खुले हुए हैं—हाइस्कूल, विद्यालय, महाविद्यालय प्रत्येक प्रान्तमें दिखाई देते हैं। चार चार छह छह बोर्डिंग प्रतिप्रान्तमें बने हुए हैं जिनमें सैकड़ों विद्यार्थी पठन पाठन कर रहे हैं। प्रतिप्रान्तमें कन्यामहाविद्यालय, ब्रह्मचर्याश्रम, सिद्धान्तभवत उच्चश्रेणीपर कार्य कर रहे हैं। जैनियोंके प्रत्येक निवासस्थानपर एक छोटी मोटी धार्मिक पाठशाला दिखाई दे रही है। जैनियोंकी स्थितिके निरीक्षण करनेके लिये प्रत्येक प्रान्तमें एक सभा हैं और वह किसी जैनीकी स्थिति असंतोषप्रद होते ही शीघ्रतासे उसका उचित प्रबंध कर देती है इसलिये जैनीमात्रको भोजनकी चिंतासे चिंतित नहीं होना पड़ता। मंदिरोंका उचित प्रबंध है। वहाँ बड़ी शांतितासे जैनी भाई धर्मसाधन करते हैं। यह हमारी उन्नति अवस्थाका संक्षिप्त चित्र है। अब हमारी समाज इस स्थितिको प्राप्त होगी तब कहा जासकेगा कि जैनसमाज उन्नत है। अर्थात् समाजकी उन्नति हमें यहाँ तक करना है जिसका कि वर्णन हम ऊपर करचुके हैं।

अब इसपरसे हमारे पाठक विचार करें कि हमें इस अवस्थाको प्राप्त होनेके लिये कितना कार्य करना है। इस अवस्थाको हम उस समय पहुँच सकते हैं जब कि हमारा सबका ध्येय एक यही समाजोन्नति हो जाय। हम सबको स्वप्नमें भी इसका ध्यान नहीं छूटे और क्या सेठ, क्या पंडित क्या बाबू और क्या सब साधारण इसी धुनमे मस्त न होजाँय जबतक समाजके सब व्यक्ति अपनेको समाजका अंग न समझने लगेंगे और अपने व्यवहारसे समाजको कितनी क्षति पहुँचती है अथवा कितना लाभ होता है यह न जानलेंगे तबतक समाज उक्त दशाको प्राप्त नहीं होसकती। क्योंकि प्रत्येक जैनी जैनसमाजका अंग है। प्रत्येक जैन व्यक्तिके व्यवहारका समाजपर प्रभाव पड़ता है और समाजपर ही क्या देशपर प्रभाव पडता है। यहां एक जापानी और एक भारतवासी व्यक्तिका दृष्टान्त देनेसे हमारा यह कथन विशेष स्पष्ट होजायगा। कई भारतवासी एक [illegible]पानी स्टीमरमें यात्रा कर रहे थे। [illegible]के यात्री थे उस दर्जेके अनुकूल

भोजन स्टीमरकी ओरसे दियेजानेपर भारतियोंने किसी कारणवश वह नहीं लिया। एक युवा जापानीने देखा कि ये सब भारतवासी भूखे हैं अतएव उसने कुछ दूध, फल, मेवा लाकर इन्होको दिये। पहिले तो रिवाजके अनुसार इन्होने लेनेसे इन्कार किया पर उसके विशेष अनुरोधसे इन्होने वह भोजन लेकर उस भोजनसे अपनी संतुष्टि की फिर उस जापानी युवकका धन्यवाद करने लगे और उसे भोजनका मूल्य देने लगे। उसने भोजनका मूल्य नहीं लिया और हाथ जोडकर वह कहने लगा कि कृपाकर जब आप अपने देशको जावे तो अथवा अन्य कहीं यह न कहें कि जापानी इतने नालायक होते है कि उनकी स्टीमरोंमें भोजन तक नहीं मिलता। इस युवकका स्टीमरसे कुछ भी संबंध नहीं था। पर यह जापानका अपनेको एक अंग अवश्य समझता था। देशका जीवनही अपना जीवन है इसका उक्त जापानीको दृढ विश्वास था। उसने केवल अपने देशकी बदनामीके भयसे भारतवासियोंके साथ उक्त प्रकारका व्यवहार किया। कितना भारी देशप्रेम कितनी उदारता कैसा शुद्ध ऐक्य भाव! इस भावनेही तरुण मनुष्यके उक्त छोटेसे कार्यने जापानका कितना प्रभाव बढ़ा दिया देशको कितना ऊंचा उठा दिया। ऐसे ही मनुष्योंके लिये एक कविने कहा है कि:—

मरना भला है उसका जो अपने लिये जिये।
जीता है वह जो मर चुका इन्सानके लिये।

(अपूर्ण)

जैनधर्मकी महिमा॥

कैसीथी वह शुभ घड़ी, जिनमतको जब प्रचार था।
सब दयामें लीन थे, अरु सुखमयी संसार था ।१।
धर्म अरु धनकी वृद्धि; प्रतिदिशि में थी सदा,
सौख्य करुणा और विद्याका भरा भण्डार था ।२
दिग् दिशाओंमें ज्ञानी ऋषि विचरते थे सदा।
जिनका विचरन गृहस्थाश्रमको धरम दातार था ।३।
इन्द्रियाजित् होकरके अध्ययन करतेथे पचीस वर्ष
तस्मात् यौवन बल व विद्याका अधिक आकार था ।४।
वंशजोंको जबसे इस शुभ मतसे घृण होने लगी
नर्क पथिगामी कुमति मत उनको वस हितकार था ।५।
पशु यज्ञकर्ता मांसभक्षी भोगी हिंसक बन गये
शीलकी गणिना घटी अरु नियोगका विस्तार था ।६।
कारण न कोई और मौजी दुर्भिक्ष मारी आदिका
पशु आप केवल और जिन मतका बड़ा तृस्कारथा ।७।

मौजीलाल जैन, कायमगंज।

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रगट थतुं मासिक

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

मुतं मुलेले विविधैश्चचिरै, दिगंबरजैन मिदं सुपत्रम् ।
प्रभो ! महावीर ! ! तव प्रभावात्, समुत्रमामुन्नतिमातनोतु ॥

वर्ष ९ मुं.	वीर संवत २४४२, मार्गशीर्ष–पोष, विक्रम सं. १९७२	अंक २–३ जो.



गत मासमां मुंबाईमां कोंग्रेस प्रसंगे 'भारत जैन महामंडळ' मी. खुशाल टी. शाह- नी १६ मी वार्षिक ना विचारो. बेठक भारे उत्साहथी थई हती जे प्रसंगना प्रमुख प्रोफेसर मी. खुशालभाई तलकचंद शाह बी. ए. बी. एम. सी. बेरीस्टर एट लॉ; के जेओ एक स्थानकवासी जैन बंधु छे तथा हाल कोमर्शीयल कोलेजमां एकोनोमिक्सना प्रोफेसर छे तथा जेओ फ्रेंच, जर्मन, इटालीयन वगेरे भाषाना पण जाणकार छे तेमज जैन धर्मनुं पण सारुं ज्ञान धरावे छे तेओए पोतानुं भाषण अंग्रेजी भाषामां घणीज गंभीरताथी करी पोताना स्वतंत्र विचारो जैन समाज समक्ष रजु कर्या हता, जेमांना घणा विचारो अती महत्वना हता तथा एक ये विचारो माटे सभानी लागणी उश्केराई हती तेथी ते बाबतनुं टूंक दिग्दर्शन आ स्थळे करवुं योग्यज लेखाशे. मी खुशालभाईए जणाव्युं के-(१) जैन धर्मना सिद्धांतो सायन्सनी साथे मळताज जाय छे जेथी आपणी फरज छे के ए सिद्धांतोने अंग्रेजीमां अनुवाद करीने प्रकट करवा के जेथी जगतनुं हित अने जैन धर्मनी प्रभावना थाय. (२) सामाजिक उन्नति अने धर्मप्रचारनो बेवडो उद्देश सिद्ध करवाने जुदा जुदा प्रयत्न करवा करतां जैनोना त्रणे फिरकाओए एकत्र थईने ऐवा प्रयत्नो करवा जोईए अने तेथीज धारेला कार्यनी सिद्धि थई शके. (३) आपणामां मांहोमांहेना ज्ञातिभेदो दूर थई जैनोमां परस्पर रोटी बेटी व्यवहार थवानी जरुर छे. [४] जैनोमां रोग अने गरीबाई वधतांज जाय छे, जेथी आपणी खास होस्पीटालो थवानी जरुर छे. [५] मुंबाई, कलकत्ता वगेरे मोटा शहेरोमां जैनोनी पुष्कळ वस्ती छे ज्यां गरीब वर्गने माटे सस्तां भाडांनां घरोनी योजना थवी जरुरनी छे. (६) केळवणीना संबंधमां सरकारी वस्तीपत्रक परथी जणाय छे के केळवणीमां जैनोनो बीजो नंबर छे, पण १२॥

लाखनी वस्तीमां मात्र चार लाखज लखी वांची शके छे. पुरुष ६॥ लाख छे, जेमां ३८०००० लखी वांची शके छे तथा स्त्रीओ छ लाख छे, जेमां मात्र २४००० ज वांची शके छे ज्यारे ५ थी २० वर्षनी उमरनी मात्र ८८००० भणे छे ऐटले बाकीनी २८७०८०० स्त्रीओ तो अभणज छे. आ आंकडो केटलो चोंकावनारो छे! आ अज्ञानताज जैन कोमनी अवनतिनुं मुख्य कारण छे. स्वर्गीय मी. गोखलेना मत मुजब फरज्यात अने मफत केळवणीनी योजना सरकार करे तो आ अज्ञानता मटी शके, पण ते थाय ते पहेलां आ २८७००० बाळकीओ माटे १००० प्राथमिक शाळाओनी जरूर छे जेनो दरेकनो वार्षिक खर्च ४३७) सरकारी हिसाब प्रमाणे थाय, तो शुं दरवर्षे चार लाख रुपिया एकत्र करीने आवी शाळाओ न चलावी शकाय? जो श्रीमानो २५)-३०) तथा साधारण स्थीतिवाळा पांच पांच रुप्या दरवर्षे आपता रहे तो आवी प्राथमिक जैन शाळाओ सारी रीते चलावी शकाय तथा व्यवहारिकनी साथे धार्मिक ज्ञान सुलभताथी आपी शकाय. (७) ऊंची केळवणी माटे एक जैन कोलेजनी पण जरुर छे. शुं श्वेते दिगंबर जैनो एकत्रित मळीने हिंदु युनिवर्सीटीनी माफक प्रयास करे तो एक जैन कोलेज शुं नहि स्थापी शकाय! (८) समाजमां ऐक्यता अने ट्रेड युनीयन माटे एकज समाजना संगठननी जरुर छे अने तेने आगळ आगळ वधी [illegible]. (९) आपणा मंदिरोमां १० थी १२ करोड रुप्यानी [illegible] तथा [illegible] छे जेनुं व्याज मात्र केळवणी माटे वापरवामां आवे अथवा ते रुप्या व्याजे धीरवामां आवे तो जैन कोमने केटली बधी सगवड थाय? [१०] तीर्थ यात्रा, प्रतिष्ठाओ, रथोत्सवो वगेरेमां पाणीना रेलानी माफक लाखो रुप्या खरचाया जाय छे तेमांनो अडधोज भाग जो आपणी संस्थाओना निभाव माटे आपवामां आवे तो समाजोन्नति केटली बधी करी शकाय! (११) लग्नसरामां थतो लखलूट खर्च तथा मरण प्रसंगे करवामां आवतो बेशरम खर्च अटकाववो जोईए अने ते रकम समाज अर्थे वसुल करवी जोईए अथवा तो समाजे एवा खरचो उपर केळवणी माटे २५ के ५० टकानो लागो [वेरो] नांखवो जोईए. (१२) दरेक दुकानदार धर्मादानो फाळो दर वर्षे जुदो काढे छे अने तेनी बराबर व्यवस्था थतीज नथी तो आवा धर्मादाना फाळानी रकम एकठी करवामां आवे तोपण लाखो रुप्या केळवणी माटे मळी शके. (१३) जैन सिद्धांतनो प्रचार करवाने कुमार देवेंद्रप्रसादजी जे प्रयास करी रहेला छे तेने सर्वेए उत्तेजन आपवुं जोईए.

उपला विषयो उपर विवेचन करवा पछी मी. खुशालभाईए 'साधुवर्गने उध्धापो के सुधारो' ए विषय उपर जे विचारो दर्शाव्या हता तेथी श्वेते दिगंबरना घणा भाईओनुं मन दुखायुं हतुं. एमणे सामान्य रीते हालना साधुवर्गने तद्दन नमेरी काढी नालायक ठेरववानी कोशीशो करी हती !!! अने पाछळथी जणाव्युं हतुं के में कंई समस्त साधुवर्ग माटे कह्युं नथी पण अमुक माटेज, आवी कंईक गंभीर भेदवाळी हतो तोपण आ बाबतनी पुष्कळ चर्चा थने [illegible]

यमां थई हती. बधोज साधुवर्ग नालायक छे एम केम कही शकाय ? आजे आपणे जोईशुं तो दिगंबरीमां केटलो बधो ऊंचो आचारविचार पाळवावाळा मुनि, ऐलक, क्षुल्लक वगेरे नजरे पडे छे तथा केटलाक त्यागी, ब्रह्मचारीओ पण केटला बधा नियमो पाळे छे अने समाजनुं हित करी रहेला छे, तेम श्वेतांबरी अने स्थानकवासी समग्र साधुवर्ग पण कंई वखोडवा लायक नथी. तेओमां पण अनेक विद्वान मुनिओ विराजे छे अने समाजनुं उत्तम हित करी रहेला छे. आ बाबत उपर विवेचन करतां पहेलां मी. खुशालभाईए घणी दीर्घदृष्टि वापरवानी जरुर हती, ए कहेवुं कंई गेरव्याजबी नथी.



वळी मी. खुशालभाईए आ प्रसंगनी सबजेक्ट कमीटीमां एक बाबत उपर जे कायरपणुं बताव्युं हतुं, तेथी पण घणा भाईओनी लागणी दुखाई छे. आ बाबत एज छे के दोढ वर्ष थयां विना न्याये विना अपराधे जयपुर राज्य तरफथी जयपुरनी जेलमां सबडता एक समाजहितैषी पं. अर्जुनलालजी शेठीना छुटकारा माटे जैपुर महाराजा अने नामदार वायसरोय पासे एक डेप्युटेशन लई जवानो जे ठराव आ सभामां मुकावानो छे एवी सूचनाओ ए मंडळ तरफथी अगाऊथी प्रकट थई हती, ते ठराव सब्जेक्ट कमीटीमां बहुमते पसार थवा छतां प्रमुख मी. खुशालदासे ए ठराव "पोते सरकारी नोकर थया छे" तेथी मुकवानी ना कही अने जो ए ठराव मुकवो होय तो हुं राजीनामुं आपुं छुं ! एवो ज खुलासो कर्यो हतो तेथी सब्जेक्टनां मन दुःखायां हतां, अने भारे चकचार पछी प्रमुखना माननी खातर ए सवाल पडतो मुक्यो हतो, पण अमारे कहेवुं जोईए के, आवुं डरपोकपणुं बताववुं कोईपण रीते उचित नहोतुं. आ माटे भारतजैनमंडळना सेक्रेटरी बाबू अजितप्रसादजी एम. ए. एल. एल. बी. गवर्नमेंट प्लीडर, लखनोर पुष्कळ आर्टिकलो इंग्लिश 'जैन गेझेट'मां प्रकट कर्येज करे छे तेम जैन अजैन बधाज पत्रकारोए आ अवाज उपाडी लीधेलो छे तथा मीसीस एनी बीसेन्टे पण आ चर्चामां भाग लीधो छे तेमज ज्यारे पं. अर्जुनलाल शेठीने जयपुर राज्ये जयपुरमां विना अपराधे विना न्याये केद करेला छे, तो तेनो न्याय करवा माटे जयपुर राज्य अने नामदार वाईसरॉयने निवेदन करवाने डेप्युटेशन मोकलवानो ठराव करवो एमां ते सरकार विरुद्ध शुं कार्य हतुं के मी. खुशालदास आवी बाबतथी डरी गया हता ? भावी बळवान छे. जे थयुं तेथी कंई नासीपास थवानी जरुर नथी, पण आ मंडळना कार्यकर्ताओए पोतानो प्रयत्न चालु राखी आगेवानोनुं एक डेप्युटेशन जयपुर महाराजा अने नामदार वाईसरोय पासे घणीज ताकीदे लई जवाय एवी कोशीशो करवी जोइए. आपणा मायाळु अने लोकप्रिय वाईसरॉयनी विदाय थवानी तैयारी छे ते पहेलां आवुं डेप्युटेशन जवानी अत्यंत जरुर छे. सीधी रीते न्यायपूर्वक इन्साफ मांगवो, एमां जरा पण अडचण जेवुं नथी.

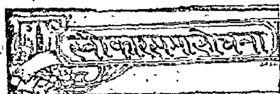


ઔષધાલયની ટિકિટો.

લગભગ બે વર્ષ થયાં માળવા દિગંબર જૈન પ્રાંતિક સભા તરફથી એક ઉત્તમ ખાતું ઘણીજ સફળતાપૂર્વક અને ઉત્તરોત્તર વૃદ્ધિપૂર્વક ચાલી રહેલું છે તે એ ખાતાનું શુદ્ધ ઔષધાલયજ છે. ઔષધાલયની હેડ ઓફીસ બડનગરમાં છે તથા આજ સુધીમાં લગભગ **૧૦૦ બ્રાંચ ઓફીસો** ખોલી શકાઇ છે, જ્યાંથી હઝારો દરદીઓ તદ્દન મફત શુદ્ધ દેશી ઔષધિનો લાભ લઇ રહ્યા છે. આ ઔષધાલયની આટલી બધી ઉન્નતિ થવાનું મુખ્ય કારણ એના ઉત્સાહી સંચાલક લાલા ભગવાનદાસજીજ છે, જેઓ પૂર્ણ પરિશ્રમથી આ ખાતાને ચલાવી રહેલા છે અને આથી પણ મોટા પાયા ઉપર પુરતી સગવડવાળું આ ઔષધાલયને બનાવવા માટે હાલજ એક યોજના પ્રકટ કરી છે જે આ અંકમાં આપેલી ઔષધાલયની ટીકીટ સંબંધીના વિજ્ઞાપનથી વાંચકોને જણાશેજ. એક રૂપ્યાથી ૧૦૦રૂપ્યા સુધીની જુદી જુદી આશરે ૧૮૦૦૦ **સુશોભિત ટીકીટો** આ ખાતા તરફથી પ્રકટ કરવામાં આવી છે જે દરેકે શક્તિ મુજબ ખરીદવાની જરૂર છે અને આથી આ ખાતાને સારી આવક મળી શકશે કેમકે જેટલી વધુ આવક આવશે તેટલી વધુજ સગવડ આ મફત ઔષધાલય કરી શકશે.

શ્વેતાંબરી ભાઇઓમાં જોઇશું તો બે ત્રણ અઠવાડિક પત્રો નિયમિત રીતે પ્રકટ થઇ સમાજને ચાલુ સ્થિતિનું દિગ્દર્શન નિયમિત કરાવ્યાજ કરે છે ત્યારે દિગંબર ભાઇઓમાં એવું એક પણ અઠવાડીક નથી એ શોચનીય છે, માટે હવે એ સમય આવી લાગ્યો છે કે એક **નિયમિત અઠવાડિક પત્ર** મુંબાઇ જેવે સ્થળેથી પ્રકટ થવાની જરૂર છે. અને બને ત્યાં સુધી "**જૈનમિત્ર**" નેજ અઠવાડિકરૂપમાં નિયમિત રીતે ફેરવી નાંખવાની આવશ્યકતા છે.



माणिकचन्द दिगम्बर जैन ग्रन्थ-माला; १-२:- स्वर्गीय दानवीर सेठ माणिकचन्दजीके स्मारकफंड (बंबई) से 'माणिकचन्द ग्रन्थमाला' निकालनेका ठहराव हुआथा वह अमलमें आ चुका याने इस संस्थाके मंत्री श्रीयुत् पं. नाथुरामजी प्रेमीने इस ग्रन्थमालाके दो संस्कृत ग्रन्थ प्रकट किये हैं जिसके नाम हैं–(१) लघीयस्त्रयादि संग्रह (पृ. २००) और सागारधर्मामृत (पृ. २५०)। दोनोंकी छपाई सफाई उत्तम है और टाईटल पृष्ठ आकर्षणीय है जिसपर सेठ माणिकचन्दजीका चित्र रखा गया है तौ भी इसका लागतका मूल्य सिर्फ छह आना और सात आना है। प्रथम ग्रन्थमें (१) भट्टाकलंकदेव-कृत लघीयस्त्रय स्तोत्र (तात्पर्यवृत्ति सहित), [२]. भट्टाकलंकदेवकृत स्वरूपसंबोधन और [३–४] अनन्तकीर्तिकृत लघु बृहत् सर्वज्ञ-सिद्धिका संग्रह है और इसका संशोधन पं. कल्लापा भरमाप्पा निटवे द्वारा हुआ है। दूसरा ग्रन्थ पंडितप्रवर आशाधरविरचित सागारधर्मामृत (पूर्ण) स्वोपज्ञ–भव्य कुमुद-चन्द्रिका टीका सहित है जिसका संशोधन पं. मनोहरलाल शास्त्रीद्वारा हुआ है। ग्रन्थमाला-के यह दोनों ग्रन्थ संस्कृतमें बड़े महत्वके नवीन प्रकट हुए हैं और लागतके मूल्यसे ही मिलते हैं इसलिये धर्मात्माओंको इसकी पचीस २ प्रतियाँ मंगाकर सिद्धान्त पाठशाला (मुरैना), स्याद्वाद विद्यालय (काशी), ब्रह्मचर्याश्रम (हस्तिनापुर), महाविद्यालय (मथुरा) आदि संस्थाओंमें उपयोगके लिये दानस्वरूप भेजना चाहिए जिससे इस संस्थाको लाभ हो और ज्ञानदान भी हो। हरएक मंदिरमें भी ऐसे ग्रन्थकी एक २ प्रति होनेकी आवश्यक्ता है इसलिये हरएक मंदिरके प्रबंधकर्ताओंको उचित है कि अपने द्रव्यसे या तो मंदिरके भंडारके द्रव्यसे इस ग्रन्थमालाके दोनों ग्रन्थ मगा लेना चाहिए। मंगानेका पता–मैनेजर, जैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, हीराबाग–बम्बई और (२) मैनेजर, दिगम्बर जैन पुस्तकालय, चंदावाड़ी–सूरत।

मृगांकलेखा:–लेखक–मुनि विमल-विजयजी और प्रकाशक–आत्मानंद जैन सभा-अंबाला शहर। पृ. १६० और मूल्य ०।≈)। यह एक उपन्यास हिन्दी भाषामें है जो सं. १४२२का रचा हुआ एक प्राकृत श्वे. ग्रन्थ तत्त्वकौमुदीपरसे नाटकके रूपमें नवीन ही लिखा गया है और सुशीला मृगांकलेखाका चारित्र बहुत ही शिक्षाप्रद है। प्रकाशकसे प्राप्य।

उपन्यासमाला:–सम्पादिका श्रोत्रिया पूर्णादेवी–बीजनोर। वार्षिक मूल्य बारह आने। यह सचित्र उपन्यासमाला मासिक रूपमें निक-लती है। इस प्रथम अंकमें आज्ञापालन नामका उपन्यास ४८ पृष्ठोंमें अपूर्ण है।

हिन्दी मास्टर:–नरसिंहपुर (C. P.) से प्रकट होता हुआ मासिक पत्र। वर्ष १५ अंक २। वार्षिक मूल्य बारह आने। इस मासिकमें अनेक उपयोगी लेखों प्रकट होते हैं। इसी अंकमें साहित्यसेवाका लेख बहुतही अच्छा है। मूल्य भी बहुत कम है। हिंदी पाठकोंको अवश्य ग्राहक होना चाहिए।

गहोईवैश्यपत्रिका:-नरसिंहपुर (C. P.) से प्रकट होता हुआ नवीन मासिक पत्र। वर्ष १ अंक २-३। वार्षिक मूल्य रु. १॥)। गहोई वैश्य ज्ञातिकी उन्नतिके लिये इस मासिककी योजना हुई है। लेख अच्छे २ रहते हैं।

'जयाजी प्रताप' खास अंक:—ग्वालियर स्टेटकी तरफसे इस नामका अंग्रेजी-हिन्दी भाषाका एक बड़ा साप्ताहिक पत्र निकलता है जिसका यह सचित्र विशेषांक सिंधिया नरेशकी ४० वीं वर्षगांठकी खुशीमें निकाला गया है। जिसमें अलग २ रंगकी शाहीसे छपे हुए कोई १२० चित्र अनेक प्रकारके हैं और १० इंग्लिश भाषाके तथा २६ हिन्दी भाषाके लेख हैं। सारा अंक ही रंगीन बार्डरसे छपा हुआ है। यह विशेषांक बहुत आकर्षणीय है और ..के अनेक लेख महत्वके हैं। इस अंकका अलग मूल्य १) रु. है, परंतु ग्राहकोंको विनामूल्य मिलता है। साप्ताहिकका वार्षिक मूल्य डांकव्ययसह ३) रु. है। मगानेका पता-मैनेजर "जयाजी प्रताप"—ग्वालियर।

महावीरउदासीनाश्रमः—कुंडलपुरमें ब्र० गोकुलप्रसादजीके प्रयाससे ७०००) रु. का चंदा होकर दो वर्षसे इस उदासीनाश्रमकी स्थापना हुई है जिसका यह द्वितीय रिपोर्ट है। अभी ७ उदासीन श्रावक इस आश्रमका लाभ ले रहे हैं। वार्षिक खर्च अंदाज २००) रु. है। ज्यादे सहायताकी आवश्यकता है। सहायक मंत्री पं. स्थापित श्रीजैनसिद्धान्तविद्यालय व मिडिल स्कूल, मुरैनाका यह नवीन पठनक्रम और नियमावली है। इसके नियम और पठनक्रम दूसरे विद्यालयों, बोर्डिंगों, पाठशालाओंको अनुकरणीय हैं। हरएक विद्यालय, बोर्डिंग और पाठशालाके कार्यकर्ताओंको उचित है कि इस नियमावलीको मंगाकर एकवार अवश्य निरीक्षण करें।

"The Indian Engineer" धी इन्डीअन एन्जीनीयर:—मद्राससे प्रकट होता हुआ अंग्रेजी भाषाका सचित्र मासिक पत्र। वर्ष १ अंक १-२। वार्षिक मूल्य ६) रु.। इसमें शिल्प विषयक बहुतही महत्वके लेख रहते हैं। अंग्रेजी भाषा जाननेवाले व्यापारीओंको अवश्य ग्राहक होना चाहिए।

म्हैसुर बोर्डिंगका रिपोर्ट:—ता. २५ नवम्बरको श्रीमान् म्हैसुर नरेशने साथ पधारकर म्हैसुर जैन बोर्डिंगका निरीक्षण किया था। उस वख्त बोर्डिंगका जो इंग्लिश रिपोर्ट श्रीमानको वांचकर अर्पण किया गया था वही यह सुशोभित रिपोर्ट है। सेठ एम. एल. वर्द्धमानैय्याके प्रयाससे ६ वर्ष हुए इस बोर्डिंगका कार्य अच्छा चल रहा है। अभी २६ विद्यार्थी लाभ ले रहे हैं।

कटनीमुड़वाराकी पाठशालाका रिपोर्ट:—श्री. जैनपाठशाला और छात्रालय कटनीमुड़वारा (जबलपुर) का यह द्वितीय रिपोर्ट वांचनेसे विदित होता है कि दो वर्षमें इस पाठशालाने आशातीत उन्नति की है। पाठशालामें लौकिक और धार्मिक दोनों प्रकारकी शिक्षा दीजाती है। इस पाठशालाने छात्रालय, जैनकन्याशाला, जैन रात्रिशाला, जैन शास्त्र-सभा आदि चार पांच संस्थायें खोल रखी हैं

१००००) रु. का स्थायी फंड है। हरएक पाठशालाके कार्यकर्ताओंको उचित है कि इस रिपोर्टको एकवार अवश्य पढ़ें।

बीजनोर बोर्डिंगका रिपोर्ट–छ वर्ष हुए इस बोर्डिंगका कार्य ठीक चल रहा है। अभी १५ छात्र शिक्षा ले रहे हैं। धर्मशास्त्रकी पढ़ाई पं. माणिकचंदजीद्वारा अच्छी होती है। इसमें स्थायी फंड नहीं है इस लिये बीजनोर प्रान्तके भाइयोंको उचित है कि वे इस बोर्डिंगको सहायता देते रहें।

दुधगाँव शिक्षणप्रसारक संस्था:–इस संस्थाका यह चौथा रिपोर्ट देखनेसे विदित होता है कि इस संस्था द्वारा विद्यार्थिओंको स्कोलरशीप, छात्राश्रम, अनाथफंड, ग्रंथमंदिर, विद्यार्थिओंको मदद आदि कई कार्य हो रहे हैं। वार्षिक खर्च १०००) रु. है। मेम्बर फी कमसेकम दो रुपया है। प्रबंध बहुत अच्छा है।

जैनजातिसुधार गारिका १–२:–श्री भगवती आलय नवयुवक मंडली करहल (मैनपुरी)ने इस नामकी दो छोटी २ पुस्तकें प्रकट की हैं जिसमें विवाह प्रसंगपर गाने योग्य गारिकाका संग्रह कविवर हजारीलालकृत है। हरएकका मूल्य आधाआना और २) रु. सैंकडा है।

દશાશ્રીમાળી હિતેચ્છુ:–દશાશ્રીમાળી જ્ઞાતિની ઉન્નતિ માટે આ માસિકનો જન્મ ધોરાજી (કાઠીયાવાડ) થી થયો છે. વાર્ષિક મૂલ્ય રૂ. ૧) છે. લેખો સારા આવે છે. દશાશ્રીમાળી ભાઇઓએ ગ્રાહક થઇ ઉત્તેજન આપવું જોઇએ.

પરલોક પ્રકાશ:–આ નામનું ૧૨૫ પાનાનું પુસ્તક મર્હૂમ ઝવેરી મોણસી અમુલખના સ્મરણાર્થે **દુર્લભજી ત્રી. ઝવેરી (મોરબી, કાઠીયાવાડ)** એ પ્રકટ કર્યું છે, જેમાં પ્રથમ ભાગ **શોકશમન** મૃત્યુ બાદ બેસણામાં વાંચવાનો છે. તથા બીજો **મૃત્યુસુધારસ** ભાગ મૃત્યુ શય્યાપર પડેલા બીમાર પાસે વાંચવાનો છે. આ ઉપયોગી પુસ્તક ઓછામાં ઓછા પાંચ પ્રસંગે વાંચી સંભળાવવાનું વચન આપનારને પોસ્ટેજ માટે માત્ર એક આનાની ટીકીટ મોકલનારને પ્રકાશક પાસેથી **તદ્દન મફત** મળે છે.

સ્વામી રામતીર્થ ભાગ ૮–૯:–સસ્તાસાહિત્યવર્ધક કાર્યાલય (અમદાવાદ) તરફથી પ્રકટ થતી વિવિધ ગ્રંથમાળાનો ૪૭૫ પાનાંનો ૬૧–૬૨–૬૩ મો આસંયુક્ત મણકો છે. જેમાં સ્વામી રામતીર્થના ઉપદેશના સંગ્રહનો ૮ મો તથા ૯ મો ભાગ છે. છુટક કિ. ૦॥। અને ગ્રંથમાળાનું વાર્ષિક મૂલ્ય રૂ. ૨) છે.

नका समाचार।

मुंबाइमां कोंग्रेस प्रसंगे दि. नवा मंदिरमां त्रण जाहेरसभाओ थइ हती, जेमां पं. खूबचंदजीए जैनधर्म, ब्र. शीतलप्रसादजीए परमात्मानुं स्वरूप, अने बाबू दयाचंदजी गोयलिये "जैन धर्मनी साथे लोक व्यवहारनो संबंध" ए विषयो उपर उत्तम भाषणो आप्यां हतां.

गजपंथाजीनो मेळो:—नासिक तरफ प्लेगने लीधे आ तीर्थनो मेळो माहासुद १३ने बदले चैत्र सुद ८ उपर भरवामां आवनार छे अने ते प्रसंगेज मुंबाइ दि. जैन प्रांतिक कोन्फरंसनी बेठक थशे.

आहारदानका नवीन उपाय:—श्री ऋषभब्रह्मचर्याश्रम (हस्तीनापुर)में ६८ ब्रह्मचारी ७ से १९ वर्षकी उमरवाले रहते हैं जिनका एक दिनका भोजनखर्च २९) रु. होता है और वर्षके ३६९ दिनोंके लिये ३६९ ग्रहस्थों यह भार उठा ले तो सहज ही यह कार्य हो जावे और ऐसे आहारदानमें चारों दान गर्भित है। ऐसी सूचना प्रकट होनेपर २२ दिनका खर्च तो १२ महाशयोंने देना स्वीकार किया है और इस प्रकार अन्य श्रीमानोंको उचित है कि इस आश्रमको एक २ दिनका भोजन खर्च रु. २९)-२९) भेज देवें जिससे ३६९ दिनकी पूर्ति हो जावे और आश्रमका काम भले प्रकार चलता रहे।

रायपुरमें गत मासमें वेदीप्रतिष्ठा बड़े समारोहके साथ हुई थी जिसमें बाहर अनेक विद्वानोंने पधारकर तीन दिन तक उपदेशक सभाएं की थीं और मंदिरजीको २१४५)की आमदनी हुई थी।

मुलाकात लीधी:—कोंग्रेस प्रसंगे मुंबाइमां ओ. पं. मदनमोहन माळवीआ, देशभक्त महात्मा मोहनलाल करमचंद गांधी, ओ. रायबहादुर लाला सुलतानसिंहजी दिल्ली, बाबु अजितप्रसादजी लखनउ, बाबु दयाचंदजी, कुमार देवेंद्रप्रसादजी आरा, सौ. विद्यागौरी अने सौ. शारदागौरी बी. ए. वगेरेए मुंबाइना श्राविकाश्रमनी खास मुलाकात लइ आश्रमना कार्यथी संतोष पामी श्रीमती मगनब्हेनना आवा परमार्थी कार्यनी अतीव प्रशंसा करी हती.

सभापति हुए:—खुर्जेके रायबहादुर पं. सेठ मेवारामजी रानीवाले म्यूनिसीपालिटी और इ. सी. हाईस्कूलके सभापति हुए हैं।

रावबहादुर थया:—सोलापुरनिवासी शाह गौतम मोतीचंद वकीलने रावबहादुरनी पदवी मळी छे.

स्याद्वाद महाविद्यालय (काशी) को अक्टूबर मासमें ६६७)-॥ और नवम्बर मासमें ४८६॥।-)की सहायता मिली थी।

जैन पद्धतिसे विवाह और दान:—जैन बालसभा हाथरसके मंत्री मीथीलालजीकी भगनीका विवाह गत मासमें जैनपद्धतिसे हुआ जिसमें लग्नसे विदा पर्यन्त हरएक विधि जैनपद्धतिसे की गई और वेश्यानृत्य, आतशबाजी मंडपवन आदि कुरिवाज कुछभी नहीं किये गये और श्रीमान लाला गुलाबचंदजी अजमेर (वरपक्ष)की तरफसे ५१६) रु. मंदिरोंमें उपकरणादिके लिये और अनेक संस्थाएं और चार पत्रोंको सहायता दी गई है जिसमें १) रु. 'दिगंबर जैन' को भी मिला है। ऐसा मौका दा वरसमें प्रथम ही था।

हमारे दादाजी मदरसेमें नहीं पढ़े! हम क्यों पढ़े?

My grandfather never went to School! why should I?

आज हम देश के इस कोने से उस कोने तक जिधर सुनते हैं एकही शब्द कानों में आकर गूंजता है। जिधर देखिये एकही पुकार, एकही धुन और एकही विचार लोगों पर सवार है। राजनैतिक पुरुषों, समाज के नेताओं, सरकारी कर्मचारियों व प्रजा के हर वर्ग में यहांतक कि शासकों में "शिक्षा सुधार" व "शिक्षा प्रचार" का ही चर्चा होता दिखाई देता है। हमारा पहले तो यही ध्यान होता है कि शायद यह वीसवीं सदी का फैशन है। सब ही कहते हैं कि बीसवीं सदी फैशन का युग है; अगर यह सच है तो शिक्षाप्रचार की इतनी चिल्लाहट का भी फैशन होना सम्भव है।

अगर यह वास्तविक फैशन है तो हमको यह कहना पड़ता है कि हमने आजतक किसी फैशन के प्रचार का ऐसा आन्दोलन होते न सुना, न देखा; और फिर फैशन का मौसम होता है वह दो चार महीने रहा और उसका बदल फिर किसी नये फैशन से हो जाता है। लखनऊ और पैरिस से तो २४ घन्टे में ही फैशन बदल जाया करते हैं।

शिक्षा की धुन बांधना अगर फैशन होता तो शुरू में उसका जोर और पीछे-से उसका गिराव जरूर होना चाहिये था। यह तो शुरू में बे मालूम शुरू हुआ और और अबतो बुरी तरह देश के हर पुरुष और स्त्री के पीछे पड़ा।

एक तरफ तो समाज के अगुआ राज़-कर्मचारी शिक्षाप्रचार के लिये अनेक तरह की तजवीजें करते तथा आम लोगों की उस ओर रुचि दिलाते हैं, दूसरी ओर जिस जगह देखिये क्या गांव में क्या शहर में, अधिकतर मनुष्यों को यही खब्त सवार हो गया है कि लड़कों व लड़कियों को मदर्से पढ़ने के लिये भेजो।

कुछ वर्ष पहले हमारे दादाजी जब इसी दुनिया में थे तब हमने उनसे एक दिन पूछा कि दादाजी, आपने कभी किसी मदर्से में भी कुछ पढ़ा था। वह हमसे बहुत क्रोधित हुए और कहने लगे कि कैसा मदरसा। यह मदर्से बदर्से तो खेल हैं। जब हम बालक थे स्कूल का नाम भी हमने नहीं सुना था।

यह सुनकर हमको आश्चर्य हुआ कि परमेश्वर की कृपासे हमारे दादाजी गांव के पंच बिरादारी के प्रतिष्ठित सज्जन थे और उन्हो ने अपनी जवानी के वक्त अपने उद्योगद्वारा द्रव्य भी खूब कमाया था। आपकी आयु ८० वर्ष की होने पर भी वह हाथ पैरों से चंगे थे और आठ

दश मील का चक्कर लगाये विना उनको खाना भी हजम नहीं होता था।

हमारे पिता ने हमको बालकपने से ही मदरसे में बिठा दिया। माता का हमारे उपर प्रेम था और अगर हम कभी मदरसे न जाते और इधर उधर खेलने लगजाते तो वह हमसे कुछ नहीं कहतीं; परन्तु जब हम घरमें आते वह भी किताब लेकर पढ़ने के लिये तंग करतीं। हमारे पिताजी कड़े थे। उनको जो कहीं यह मालूम हुआ कि बेटा आज मदरसे नहीं गया तो विना मारे नहीं छोड़ते।

हमने एक दिन अपने माता व पिताजी से तंग आकर दादाजी से कहाः–दादाजी, यह क्या बात है। घर में आकर बैठते हैं तो माता तंग करती हैं कि किताब लेकर पढ़। बाहर खेलते हैं तो पिताजी नाक में दम कर मारते हैं और पीछे पड़ते हैं कि मदरसे में जा। मदरसे में गये और गुरुजी का डंडा चलता है। वह कहते हैं यह याद करो, यह घोको, इस सवाल को करो, यह लिखो, वह सुनाओ। आप भी तो बालक थे, आपने एक दिन कहा था कि उस समय मदरसे स्कूल नहीं थे यह मदर्से क्या हमारे ही भाग्य में बदे थे। आप भी तो दुनिया में आये, आपने भी तो अपना जीवन दुनिया में बिताया, आपने भी तो अपने कुटुम्ब का पालन किया और सब कारज किये; परन्तु आपने तो एक भी किताब नहीं पढ़ी और फिर भी आपने कमाई भी की, मान भी पाया और आराम से भी रहे। हमारी समझ में नहीं आता कि पिताजी और माताजी क्यों व्यर्थ तंग करते हैं और जब देखो तब मदरसे और क्लास की बात करते रहते हैं। आप ही जरा उनको धमका कर हमारा पीछा छुड़ाइये। हम तो जब जरा कुछ कहते हैं तो पिताजी हमको बुरी तरह धमकाते हैं।

हमारे दादाजी ने बड़ी प्रसन्नतासे हमारी बात सुनी और बोले–'बेटा, जो तुम कहते हो सच है। हमारे गांव में बल्कि जिले में जब हम बालक थे कोई स्कूल नहीं था। हमने स्कूल का नाम भी नहीं सुना था। लेकिन अब कुछ हवा बदल गई है। मदरसे में पढ़े विना अब कोई बालकों को अपने पास भी नहीं बिठाता। विना पढ़े-लिखों को अब कोई अपनी बेटी नहीं ब्याहता। विना पढ़े लिखे को अब कोई सरकार में नहीं पूंछता। जब हम बालक थे हमने कानून व कायदों के कभी अपने गांव में नाम भी नहीं सुने थे। सब काम जबानी आपस के भरोसे पर करते थे। कोई लिखा पढ़ी भी तो हम लेन देन की नहीं करते थे। अब तो विना पढ़े लिखे कि खराबी है, पटवारी अलग तंग करता है। वह कुछ अट की सट्ट लगा देता है। वह कहता है करना पड़ता है। हम कुछ कानून कायदे समझते हैं नहीं। छोटी छोटी बातों पर

कानून की दफा लगाकर पुलिस का कानिस्टबिल भले आदमियों को चालान करा देता है। जो आता है बेगार मांगता चला आता है। बेटा! जो तुम आराम से जिन्दगी में रहना चाहते हो तो हमारी तो यही सलाह है कि तुम पढ़ो, वस अब विना पढ़े लिखों की खराबी है।

दादाजी की यह बात सुनकर तो हम सन्नाटे में आगये, और किसी तरह अपना बचाव न देख, हमने सोचा–जो कुछ हो अब पढ़ने में ध्यान लगावेंगे। परन्तु उस रोज की बातचीत से हमारी पूर्ण संतुष्टि न हुई। एक दिन हमने अवसर पा फिर अपने दादाजी से इस विषय पर बातचीत शुरू की।

क्यों दादाजी, आजकल के जमाने में और पहिले जमाने में क्या फर्क होगया कि जो पहिले मदरसे में पढ़े विना काम चल जाता था और अब मदरसे में जाये विना काम नहीं चलता।

दादाजी बड़े प्रसन्न हुए और कहने लगे कि बेटा, जो तुम्हारी शंका है वह मैं समझ गया। जो कुछ मैं कहता हूं ध्यान देकर सुन।

जब हम बालक थे रेल और तार का नाम ही कहां था? सड़कें भी मुश्किल से ही कहीं कहीं दिखलाई देती थी।

गांव और शहरों में रहनेवाले अपना जीवन अपने गांव और शहरों के हद में समझते थे। बहुत कम पुरुष ऐसे होते थे कि जिनको अपने घर से २५ या ३० कोस से जियादा दूर कभी किसी जगह आने जाने का काम पडता था। हमारे यहां बाहर की कोई चीजें न आसकती थी और न हमारे यहां की कोई चीज जियादा बाहर जासकती थी। हम अपने गांवो के जुलाहों की हुई गजी पहना करते थे। जूता भी हमारे ही मोचियोंका बना होता था। ब्याह शादी में पोशाक में चन्देरी की पगडियें, थान जो अमीर आदमी होते थे देते थे। तथा और इसी प्रकार लोहे, पीतल, तांबे की चीजें सब हमारे आसपासकी ही बनी हुई नरवर मगरौनी, मथुरा से आ जाया करती थीं। हम खुद नाज का व्योपार करते थे। गांवों से अनाज गाड़ियों में भरकर हम शहरों में बिकवाते थे और उसके ऐवज में वही गाडियां बरेलीका गुड; शकर व दूसरा सामान भरकर ले आया करती थीं जो हम बेच लिया करते थे।

उस समय न मलमल थी न लंकलाट, न गाज थी, न बुक, न डासन का जूता था, न जर्मनी के खिलौने, न बाजे, न स्विडन की दियासलाई। गांवों में हमारे सब काम बिरादरी व गांवों की पंचायतों से तय होते रहते थे। उस समय न वकील थे, न मुख्तार, न जज और मुन्सिफ, और न स्टाम्प और न अदालत, न हम कुछ लेन-देन की कोई लिखा पढी करते थे, न हम

कोई दस्तावेज पर स्टाम्प लगाते थे। बही-खाते रहते थे जिनसे लेन देन था उनसे लेते देते थे। ज्यादातर सचाई का ही व्योहार होता था और जो किसी ने कभी बेईमानी की तो पंचायत से उसका निपटारा हो जाता था और उस से कोई लेन देन नहीं करता था।

हमारे समय में कोई डाकखाने व तारधर भी नहीं थे। चिट्ठी पत्री नाइयों अथवा नौकरों द्वारा आसपास के गांवों में कभी कोई शायद भेजता हो। वह भी व्याह की लगुन भेजते समय या और ऐसे ही अवसरों पर। दूर देश अव्वल तो कोई निकलता ही नहीं था और जो निकल गया तो फिर उसकी खबर परमेश्वर के हाथ थी। कुटुम्बी और परिवार जब वह पिंडारियों व ठगों से बचकर लौट आता था समझते थे कि अब यह दुनिया में है।

कोई कानून, कायदे, म्युनिसिपेलिटी, पुलिस, बोर्ड ऐसे नहीं थे जैसे कि अब पिछले ६० वर्षों में (यह बातचीत ३० वर्ष से ऊपर की है) हो गये हैं। डाके, लूट, चोरी उस समय जरूर ज्यादा होती थीं और उनका डर रहता था; लेकिन गांववाले मिलकर सब अपनी हिफाजत का प्रबन्ध करते थे।

गांव के काश्तकार और जमींदार अपनी जमीन जोतने व खेती कराते थे, जानवर पालते थे, सरकारी मालगुजारी तहसील में जमा करा देते थे या सरकारी बांटों पर से बांटकर शहना व कानूनगो या कमाविसदार लेजाया करता था। वह जब आते थे गांववाले उनको सरकारी ऑफिसर समझकर बड़ी इज्जत करते और डरते थे। और उनको हर तरह खुश करके पीछे भेज देते थे। उनको गांवबाले अपना मां, बाप कहकर पुकारते थे और देश के राजा का दर्शन तो शायद ही कभी भाग्यवश ही किसी गांववालों को जन्मभर में हो जाता था। उस समय खाने पीने की चीजों के गांवों में भंडार भरे रहते थे। दूध और घी की कमी नहीं थी। अखाड़ों पर कुश्ती, सुबह शाम कसरत करते और डंड पेलते थे। घर पर आते तब माता बड़े प्रेम से खाना खिला देती थी और हमेशह हमको बुरे रास्ते से डरने के लिये उपदेश दिया करती थी। या तो हम अपने बाप के साथ खेतों में जाकर आसामियों से उघाई करते और बैलों और जानवरों को देखते और जब घर में आते अपने भाई व बहनों के साथ खेला करते। हमारी माता लड़कियों को अपनी सहेलियों के साथ गुड़ियां व गुड्डा का खेल खेलने को उत्साहित करती थी। गुड़ियाओं के घर बनाना, उनके लिये कपड़ा तैयार करना, पकवान बनाना, आपस के नाते, शादी की रस्में यह सब उसी खेल में हमारी माता सिखाती थीं और यह गुड़ इसमें भाग लिया करती थी। रात को

जब हम अपने बाप के साथ घर पर सोने जाते तो हमको हमारे बाप या माता राजा भोज, विक्रमादित्य, जयचन्द, उदयपुर के राजा इनकी बहुतसी कहानियां सुनाया करते। जब हमारे घर के आगे पंचायत जुड़ती थी हम चुपचाप अपने बाप के सामने जाकर बैठ जाते और पंचों की बातें सुना करते थे।

बेटा, उस समय में और अब तो जमीन और आसमान का फर्क है। अब तुम्हारे लिये कलकत्ता और बम्बई ऐसा है जैसा कि हमारे गांव से १० कोस पर गांव था। विलायत और अमेरिका ऐसे हैं जैसे उज्जैन से लश्कर गये और उसमें भी कोई डर नहीं। आठ आने खर्च किये और झट कहो जहां से खबर मंगाली। अगर तुम्हारे बाप कभी लाहौर या करांची जाते हैं तो झट हमारे पास तार आजाता है कि हम अच्छे हैं, फलाने दिन पीछे आवेंगे, हम तार तुम्हारे मास्टरजी से पढ़वा लेते हैं। अपने घर के बहुत से कुटुम्बी और नातेदार अब दूर दूर शहरों में जाकर किसी ने सरकारी नौकरी करली, कोई वकालत, मुख्तारी करता है, कोई कारखाने में नौकर है, कोई दूकान करता है, दो एक तो चीन जापान तक पहुंच गये; परन्तु उन सब की बराबर हमारे पास चिट्ठी राजाखुशी की आती जाती हैं और कभी हम तुम्हारे बाप से और कभी मास्टरजी से जवाब लिखवाकर डलवा देते हैं। अब जमीन का बन्दोबस्त होता है, हकियत का दाखला होता है, हजार तरह की पूछताछ होती है। बन्दोबस्त के साहब के यहां एक भले आदमी ने जाकर हमारी जमीन की बाबत लिखा दिया कि वह तो उस जमीन को २० वर्ष से जोतता है और उसपर उसका हक रहा है। उसको मौरूसी पट्टा झूठी गवाहियों पर से मिल गया। हमारे बाप ने कागज जमीन के सम्हालकर नहीं रक्खे थे। पट्टे वट्टे तो कोई थे नहीं। रसीद सरकारी थी सो वह खोगई। गांव के एक पंच ने गवाही हमारी दी थी; लेकिन दूसरे ने चार गवाह पेश कर दिये, जमीन पुश्तैनी हाथ से जाती रही। पुलिस के थाने और चौकी बनगये। कानून बने हैं उनको गांववाले अभीतक समझते हैं नहीं। पुलिस का जमादार आया और उसने कानून की किताब जेब से निकाली, दफा पढ़ी और गांववालों की मुंह की हवा छूटी। बस, मुट्ठी गरम करते ही बनती है। परसों पडोस में दो आदमियों में झगडा होयगा। एक ने दूसरे के थप्पड मारदिया। अब वह मुकद्दमा अदालत में चलाया जारहा है दोनों ने वकील बुलाये हैं।

अब व्यापार आस पास के गांवों से नहीं होता। रेल के होजाने से बम्बई, कलकत्ता, कानपुर, करांची की सीधी दिसावर चलती है। तुम्हारे भाई की बजाजी की और आढत की दूकान है; अगर उसने

मदर्से में न पढ़ा होता तो स्टेशन के बाबूओं को तार लिखाई, चिट्ठी लिखाई, बिल्टी लिखाई देते देते नाक में दम आजाता।

अब घर में जब तुम जाते हो कभी तुमने अपनी मां को तुम्हारी बहनों को गुड्डा गुडियों का खेल खिलाते देखा है, वह उसको स्लेट लेकर पढ़ाने बैठ जाती है या कभी सिलनेका काम कराती है। दूध और घी दिसावरों में मांग के कारण इतना महंगा होगया कि जितना हमने दूध और घी पिया है उतना तुमको शायद पानी भी पीने को न मिले। अखाडे, कुस्ती और कसरत के काम कम हो गये; मदर्सों में क्रिकेट, फुटबाल, हॉकी, टेनिस के आगे सब भूल गये। हमारे गांव में भी तो लड़के क्रिकेट खेलते और जमानास्टिक करते हैं।

गांव की पंचायतें अब दिखाई भी नहीं देतीं। अदालत मुन्सफी और मजिस्ट्रेटी के दरशन बिना कैसे भी पिन्ड नहीं छूटता। सरकारने जो पिछले कहत के बाद माफी की थी उसका हाल छापकर बांट दिया था, कायदे बनाये थे, हमारे गांव के बहुतसे आदमियों को हाल नहीं मालूम हुआ। तहसील के आदमी आये और गांववालों को फुसलाकर कि हम तुम्हारी माफी करावेंगे खूब रुपया बनाकर लेगये।

बेटा, अब तुम्हीं सोचो कि बिना पढ़े लिखे आजकल कैसे ठीक लग सकता है? तुम्हारे बाप नौकरी सुबह ८ बजे जाते हैं। और रात को ८ बजे आते हैं। दिनभर काम करते थक जाते हैं। हमारे बापको कभी इतना काम ही नहीं था। हम उनके साथ रहते थे, अच्छी बातें सीखते थे तुम्हारे बाप तुम्हे पढावे किस वक्त, अच्छी बातें सिखावे किस वक्त, बिचारा थका थकाया आता है खा पीकर पड़ रहता है। घरमें पूजन, पाठ, कथा का तो जिकर ही कहां है।

हां एक बात और याद रखना कि अब रोज कोई न कोई ऐसी नई बात निकल आती है जिसमें सब काम करने का ढंग सीधा हो जाता है।

खेती की कलें, पानी निकालने की कलें, हर तरह की चीजें बनाने की तरकीबें हमारे गांव के जो लोग पढ़े लिखे हैं वह तो खूब ही फायदा उठा रहे हैं।

बेटा! यह समझलो कि चाहे तुम खेती करना या हल जोतना, चाहे दूकानदारी करना, चाहे कारखाने का काम करना, चाहे सरकारी या रेल की नौकरी करना, सब के लिये पढने लिखने की जरूरत है नहीं तो फिर कोई पूछना तो दूर तुम्हारे पास भी नहीं लगावेगा।"

दादाजी का उपदेश सुनकर हमें होश आया और उस दिन से हमको वास्तविक यह मालूम हुआ कि पहिले मदरसों के बिना ही हमारे दादाजी ने एक भी किताब न पढ़कर कैसे अपना जीवन आराम से गुजारा और हम क्यों बिना पढ़े लिखे दुनियां में कुछ काम नहीं कर सकते।

"जगजी मताप."

जैन आगेवानो! क्यारे जागशो?

હિંદના સાચા ખેરખાંહ લોર્ડ હાર્ડીજની મુદ્દત આવતા માર્ચમાં પુરી થાય છે, માટે શું અર્જુનને છોડાવવા પ્રયત્ન નથી કરવો?

भवतीष्टं सतक्रिययानिष्टं तद्विपरीतया

ઉત્તમ પુરૂષાર્થ કરવાથી ઉત્તમ ફળ મળે છે અને અધમ પુરૂષાર્થ કરવાથી અનિષ્ટ ફળ મળે છે. શુક્રનીતિ.

" आरंभे शूराः! હજુ આ **ભારતવર્ષની અધમ દશા** કેમ રહી છે; હીંદુસ્તાનમાં હુન્નર ઉદ્યોગ કેમ પગભર થતા નથી, આર્યાવર્તમાં અનેક કંપનીઓ કેમ ભાંગી પડે છે, ભરતક્ષેત્રના વ્યાપારીઓ અને કંપનીઓ કેમ સારો નફો કાઢી શકતી નથી, આર્યોના ઉગતા હુન્નરો કેમ રસાતળ જાય છે, સ્વદેશી ચળવળ, આજે કેમ નરમ પડતી દૃષ્ટિગોચર થાય છે? વીસમી સદીમાં સમાજ હિતાર્થે ઉદ્ભવી રહેલ જ્ઞાતિપરિષદો, સંમેલનો, કોનફરન્સો કે કોમી ઉત્કર્ષ ઇચ્છુક મંડળોના અતુલ ઉપદ્રવ અને અસ્તિત્વ છતાં જ્ઞાતિઓનું અને આર્ય તત્વનું નિકંદન કાઢનાર આર્યન બ્રધરહુડ કેમ જન્મ્યું? વખતો વખત કોનફરન્સોમાં થતી પૈસાની બરબાદી, કંકનો કચ્ચરઘાણ, અને બળાખાઓનો ભારી કોલાહલ છતાં અનેક કષ્ટ અને પાયમાલી અરે! મનુષ્યોને મનુષ્યત્વમાંથી નષ્ટ કરી અધમ દશાએ પહોંચાડનારા રીત રિવાજો કેમ નષ્ટ નથી થતા? આવી અનેક બાબતો પરત્વેનું છુપું અને ખરું સત્ય તપાસવામાં આવે તો માલુમ પડશે કે आरंभे शूराः! બની પાછળથી સતત્ ખંતથી પ્રયાસ વગરના અને આત્મિક શ્રદ્ધા વગરનાઓજ, ભરડી જવામાં નંબર વન; ઓલી પાળવામાં કુસકા જેવા, " ચડ **જા બેટા શૂળીએ, અલ્લા ભલા કરેગા.**" એવી આંતરિક ઇચ્છાવાળા, 'કહેના સો કરના નહિ, સુખશે ભયે લબાડ' જેવી ધાનતવાળા **"નાસ્તેકી આગુ ઔર ભાગતેકી પીછુ"** જેવા બ્હીકણબિલાડા મનુષ્યોએ ભારતવર્ષની, દરેક સમાજોની અને દેશભક્તોની દુર્દશા કરી છે. એમ કોણ ના કહી શકશે? આવીજ રીતે **વીસમી સદીના જૈન ઈતિહાસમાં કાળો** ડાઘ લગાડનાર જેપુર નરેશના એક કૃત્ય તરફ વળીએ. નિઃસ્વાર્થી, સ્વદેશહિતૈષી **પં. અર્જુનલાલ** સેઠી બી. એ. માટે ગયા વર્ષમાં સમાજે સભાઓ, તારો વગેરે વગેરે અનેક પ્રકારના જોરશોરથી ખુબ ઉહાપોહ મચાવ્યો હતો, એ સવાલને એક કોમી નહિ પણ એક હિંદુસ્તાનના સવાલ તરીકે આગળ કર્યો હતો અને તેનો ખાસ કરીને જૈન સમુદાયના કંઇ કેટલાક શિક્ષિત ગ્રેજ્યુએટોએ અને સંભાવિત શ્રીમાનોએ અગ્રગણ્ય ભાગ ભજવ્યો હતો, તે વખતની જૈનોની ઉલટ જોઇ સામાજિક પત્રકારોએ પણ બ્રિટિશ ગવર્નમેંટનું લક્ષ ખેંચ્યું હતું, તે વખતે કોઇપણ સમાજહિતૈષીના હૃદયમાં એવું થયા વગર નહિ રહ્યું હશે કે પંથોથી વિભક્ત થયેલો જૈનસમાજ અન્યાય વગર રીબાતા નિસ્વાર્થી માટે અટુટ પ્રયાસો કરશેજ અને છેવટે એવું પણ બહાર આવ્યું હતું કે એ સવાલ ધારાસભામાં કે પાર્લામેંટમાં પુછાવાનો છે.! અને વળી અંતિમ એક **ડેપ્યુટેશન** જયપુરનરેશ અને નામદાર વાઇસરોય લોર્ડ હાર્ડીન્જની પાસે લઇ જવાના ભણકારા સંભળાતા હતા, પરંતુ સત્ હજાર અફસોસ છે કે છેલ્લા એ ચાર મહીના થયાં તો જાણે आरंभेशूरा ની માફક કંઇ બન્યુંજ ના હોય તેમ પત્રકારો કે આગેવાનો જાણે કુંભકર્ણની નિંદ્રામાં કેમ ન સુતા હોય તેમ સુમસામ થઇ ગયા છે!!!

અહા! ભાવનામાં કેવું મહાન પરિવર્તન, કેવું શુદ્ર મનોબળ!! કેવું ઐક્યનું સ્વરૂપ, કેવું

સ્વજાતિય અભિમાન ! કેવો માતૃપ્રેમ ! જૈન સમાજની આવી અધમાધમ વર્તણુપર છે કંઇ ફીટકાર(!) હે જૈન શાસનના અધિષ્ઠાતાઓ ! તમારા ક્ષેત્રમાં આવા આરંભેશૂરા પૂત્રો કેમ જન્મે છે ! હે ભારતી ! આવા બેવકુફ પુત્રોને ત્હારા ઘરમાં કેમ સ્થાન આપે છે ! હે કળીકાળ સર્વજ્ઞ વિભુતિઓ, કેમ શાંતવન ધરી રહ્યા છો ! જગાડો જગાડો !! ગુરૂ મહાવીરના ઉપદેષ્ટાઓ **વીરના વીર કેશરીઓને** જગાડો ! અને કહો કે હિંદના સાચા હિતૈષી નામદાર **લોર્ડ હાર્ડીંજની** મુદત પુરી થવાનો વખત પાસે આવતો જાય છે અને ઠેકઠેકાણેથી માનપાનના ભણકારા સંભળાય છે. આવા ન્યાયી, પ્રજાવાત્સલ્ય ધરાવનારા બીજા વોઇસરોય આવશે કે કેમ અને એઓ શ્રી જેવો ન્યાય ભારતવર્ષને મળશે કે કેમ, તેને માટે પત્રકારો ચિંતા બતાવે છે, આગેવાનો અધિપ બની **મુદતમાં વધારો કરવા માંગણી કરે છે,** તોપણી જૈન સમાજના શુભેચ્છકો ! તમે હજુ શું વિચાર કરો છો ? શું વાદવિજેતા ! "સત્યવાદી"ની માફક સ્વપનાથી દોષિત છે એવું કંઇ નથી જાણ્યુંને ? કે કોઇ ગુપ્તચરે બાતમી તો નથી આપીને કે ભારતવર્ષને એક આદર્શ દેશ બનાવવાની ખરા અંતઃકરણથી મહત્વાકાંક્ષાવાળા શ્રીમાન લોર્ડહાર્ડીંજથી આપણને અન્યાય થરોજ છે શું? આટલા બધા **ધબોધબ ઢાંકણાં કેમ દેવાઇ ગયા છે ?** કે કોઈ માંહોમાંહેના પક્ષો કે કુસંપે તમારી વૃત્તિમાં તો ફેરફાર નથી કર્યોને ? જૈનોના ત્રણે ફીરકા એકત્ર કરી લાડીઓના મંડળની વાતો કરી કેટલાક ગરીબોની જીંદગીના હક્કને લુંટી લેનારા એવા ઐક્યના હીમાયતીઓ આવે વખતે ક્યાં ભરાઇ બેઠા છે ? શું ઐક્યની વાતો આવા સ્વાર્થ માટેજ કરવા માંગો છો ? તમારી ઐક્યતાનો ભીનાર આજ કે બીજે ? સભાઓમાં ઠરાવોને અનુમોદન આપનારા આજે ક્યાં ભરાયા છે ! લાંબા લાંબા લેકચરો અને છાપાઓ હીમાયત કરી " સુધરો ઐક્ય કરો, નહીતો જાહનમમાં પડો " એવું કહેનારા આજે કેમ જણાતા નથી ? જૈન સમાજના **વકીલો** અને **બેરીસ્ટરો** એજ ચર્ચામાં અગ્રગણ્ય ભાગ ભજવનારાઓ ક્યાં સંતાઇ બેઠા છે ? શું શ્રીમાનોના બળ વગર તમારાથી કંઇ વળે તેમ છેજ નહી ? શું સત્યાગ્રહી **લો. મા. ગાંધી** જેવા કોઇ નેતા ડેપ્યુટેશન લઇ જવા બહાર નહીંજ આવશે !!! એ માટેજ નીમાયેલ મુંબાઇના વિદ્વાનો અને કાયદાશાસ્ત્રીઓ હજુ શું વિચાર ચલાવે છે ! કોઇ કોમી કુસંપના પ્રશ્નથી ઘેરાયલા વાદળે કરીને તમારી ભાવનાઓ પલટાઇ તો નથી ગઇ! **" વખત થોડો ને વેશ ભારી "** ડેપ્યુટેશન લઇ જવું હોયતો શું હવે ઢીલ કરવી જોઇએ છે ? જુના ગોળ કરતાં નવો ગોળ કોણ કહેશે કે વ્યાધીમાં હીતકર થઇ પડશે! જેના હાથમાં આપણી નાડ આવી હોય તેની પાસે અને જે આપણા કુટુંબ-દેશના વૈદ હોય તેની પાસે શા માટે ખંત રાખી દવા ન કરવી ! વળી અણુજાણ્યા વૈદના હાથમાં આપણી નાડ આવે ત્યારે કે ? ડેપ્યુટેશન લઇ જતા થતા ખરચ માટે માથું ખંજવાળતા હોતો એક ફંડ કરો (જે ફંડ 'જૈન મિત્ર' દ્વારા ખુલેલું પણ છે) અને તેમાં પણ જો હાલ સીલક ન હોય તો શું આપણા જેવાઓ સો બસો પ્રેમીહૃદયો એ બોજો ન ઉંચકી શકે ? શું બન્ધુ અર્જુન તરફ પ્રેમના પાયા પાડી બનાવનારા સર્વે મનુષ્યો ભીખારી-ભુખેમરતા-ગરીબ અવસ્થાના છે ? એ અપૂર્વ પ્રેમનો દાવો ધરાવનારા શું ટુકડામાંથી ટુકડો નહિ આપશે ? એ મનાયજ નહિ કોઇ આગેવાન બની બહાર આવો ! તમારા હક-

યમાં ખરા અંતઃકરણથી લાગણી હોય, તમારો એ બંધુ પ્રત્યે નિસ્વાર્થ પ્રેમ હોય, તમે ખરૂં અહિંસા પરમો ધર્મઃ . સૂત્ર સમજ્યા હો, તમે એક જૈન તરીકેનો દાવો ધરાવતા હો તો ન્યાય મેળવવા પ્રતિજ્ઞા કરો ? ડેપ્યુટેશન લઇ જવા સતત્ પ્રયાસ આદરો અને તે ઉભું ન થાય ત્યાં સુધી ટંઇ વ્રત રાખો ? સમાજહિતેચ્છુઓ ! આવી અધમ ગુલામીથી મુક્ત કરાવો નહિ તો ખરેખર જૈન સમાજમાં થયેલા તમારા જન્મિતને ધિક્કાર છે ! ! ! એક શ્રીમાન પાસે ભિક્ષા ન માંગો, સેંકડો ગરીબોની પ્રેમાળ લાગણી તરફ નજર કરો. મલીન અંતરના એક શ્રીમાન પાસેથી યુક્તિ પ્રયુક્તિ પૈસા કઢાવવા અને ડેપ્યુટેશન લઇ જવા કાલાવાલા મા કરગરો, તમારી ભાવનાઓ મલીન થશે, તમારૂં કાય• મહેનત અફળ જશે. પરંતુ ગરીબોના સાચા જિગરની–હૃદયની દુવા હજારો ઘણો લાભ આપી શકશે. જો કોઇ આગેવાનો ડરપોક બની બહાર પડતા ખંચકાતા હોયતો આપણા કાયદા• શાસ્ત્રીઓ અને શિક્ષિતો-આગાડી પડતા ભાગ લેનારાઓનું એક પ્રતિનિધિ મંડળ બનાવી લોર્ડ હાર્ડીંજની સેવામાં ડેપ્યુટેશન લઇ જવા ખચ્ચીત ઉદ્‌ભવો. તે માટે ધારાશાસ્ત્રી-ઓને કાયદાનો કોરડો આડે આવતો હોય તેમજ કોઇપણ પ્રકારની આંટીઘુંટી લાગતી હોય તો ધારાસભામાં જાણીતા લોક-પ્રતિનિધીઓ. સુરેન્દ્રનાથ બેનરજી, મદન• મોહન માળવીયા, સર નારાયણ ગણેશ ચંદા• વરકર, અલીઇમામ વગેરે લોકપ્રતિનિધીઓની સહાય–સલાહ લ્યો અને બને તો ડેપ્યુટેશનમાં સાથે રાખો, દરેક પ્રતિષ્ઠિત પત્રકારોએ એ સવાલ ચર્ચ્યો, છતાં ધારાસભાના લોકનાયકોનું લક્ષ એ બાબત કેમ વળ્યું નથી? ધારાસભામાં સવાલ કેમ પૂછાયો નથી ! જાતોજાત મળી એઓના લક્ષમાં આ વાત સત્યપણે ઉતારો. ઉદ્યમી બનો, ખંત રાખો અને કુંભકર્ણની નિદ્રાનો ત્યાગ કરો નહિ તો કોઇએ સત્યજ કહ્યું છે તેમ—

નિદ્રા હા! મૃત્યુ લેખાતી! ને મૃત્યુ નિદ્રા!

ક્યાં છે એ સ્વદેશ અને હાલના જયપુર નરેશના વંશી મહારાણા પ્રતાપનો ઉત્કર્ષ ઇચ્છનાર 'ભામાશા' જેવા માતૃભક્તો! ક્યાં છે સ્વ. 'માણેક' જેવા મનોભાવી અને કાર્ય આરોપનારા શ્રીમાનો! ક્યાં છે સંઘમાંના એક પણ મનુહૃદયને દુઃખ થતા તેની સહાય કરનારા–આગતાસ્વાગતામાં નિશદીન રચીપચી રહેનારા, તેમાં પોતાનું શ્રેય માનનારા, સુખે-સુખી દુઃખે દુઃખી થનારા સંઘવીઓ ! ક્યાં ગયા આલમશાહ-અલાઉદ્દીન બાદશાહ જેવા• ના ગર્વને અને તેમના ધર્મમાં લીન રાખો અને ચેતન નામના બ્રાહ્મણોનો મદ ઉતારનાર મહાસેનસ્વામી ! ક્યાં ગયા એ ભોજની સભામાં હંસની માફક દીપી રહેલા અને વિદ્યા• માં સિંહની માફક ગર્જના જેવા શોભતા મયુર અને બાણનો ગર્વ ઉતારનાર શ્રીમદ્ માનતુ-ગાચાર્ય ! ક્યાં ગયા એ ચતુર્માસના વ્રત ધારી રાજેશ્રી કુમારપાળના દુશ્મન સિકં-દર બાદશાહને સુતેલા પલંગ સહ લાવી મારી મંગાવી, પ્રતિ વર્ષે છ મહીના જીવ• દયાનું ફરમાન તેમના રાજ્યમાં પાળવા નક્કી કરાવી રાજેશ્રી કુમારપાળને અનેક વિપત્તિઓ• માંથી મુક્ત કરનાર કળીકાળ સર્વજ્ઞ શ્રીમદ્ હેમચંદ્રાચાર્ય ક્યાં છે ! આવો આવો, સ-માજ ઉદ્ધારક, પરદુઃખ ભંજન, અહિંસા પર-મો ધર્મ: નામના મંત્રને દુનિયાપર પ્રસરાવ-નારા, તેનું રહસ્ય સમજાવી અનેકોને ભવા-બ્ધિમાંથી મુક્ત કરનારી હે મહાન વિભૂતિ• ઓ! હવે છેલ્લી પાર્થના તમારીજ છે. 'બાલ' કવી પણ સત્યજ કહે છે કે,–

કહો ક્યાં જઇ કરવી, અરે ફર્યાદ દીલ-દર્દની;
ખોળી વળ્યો સહુ ખલ્ક પણ અદાલત
ન દીઠી ઇન્સાફની.
નહિ રાહ કે ફરિયાદ કોઇ કરવા-સુણવા
અહીં કાજી મળે,–
પ્રસર્યું બધે અંધેર, જહીં શયતાનના
પાશા ફરે.

ચિંતિત હૃદય- 'છગન'

विश्वसेवापर कुछ विचार.

(लेखकः–कुमार देवेन्द्रप्रसाद जैन.)

(गतांकसे आगे)

(२४)

जबतक मनुष्य अपने को (अपनी ही करणी से) नीचा नहीं बना देता तबतक वह कभी अपने कार्य्यों के करने में लज्जित नहीं हो सकता ! कारण यह है कि लाञ्छन मनुष्य की नीचातिनीच प्रकृतिका फल है—वह कभी सपने में भी उदार हृदय पुरुष को नहीं छू सकता।

(२५)

एक आमका वृक्ष है—अपने पल्लवालकों डुला डुलाकर अभ्यागत पथिकों को पंखा झलता है–अपने हाथपर बैठी हुई कोयलसे दूर २ के पथिकों को हँकारने को कहता है–आगत अतिथियों को दतौन (दन्तधावन)—शीतल छाया—पल्लवका दोना (जलपात्र)–देकर सादर स्वागत करता है–मधुर २ फल बरसाता है–पत्थर की चोट सहकर भी अमृत की घूँट पिलाता है। बस, अपना सर्वस्व व्ययकर देने पर–जीर्णावस्था प्राप्त होने पर समका समिध बनकर सेवा करता–पाक प्रस्तुत करनेके लिये अपनी देह जलाता–कोयला बनकर भी सोनाका मल धोता और अपनी उस राख (भस्मराशि) में से भी किसीकी जीविका उपजाता। अहा ! धन्य ! ठीक, उसीकी मूर्ति अपने सामने आदर्शरूपसे रखलो "तुल्य निन्दा समोस्तुतिः" का अर्थ जानलो और सेवापथपर बेखटके अग्रसर होते चले जाओ।

(२६)

जब तुम्हारे मन में यह निकृष्ट विचार अंकुरित हुआ कि तुम विश्वसेवा करने में समर्थ हो और तुम्हारे देखने में दूसरा कोई तुमसे बढ़कर विश्वसेवक नहीं है उसी दम तुम्हें भलीभांति समझजाना चाहिये कि तुम सच्ची सेवासे सैकड़ों कोसोंकी दूरी पर हो॥

[२७]

सच्ची सेवा इसी में है कि तुम अपने जीवन को दूसरे के जीवन के साथ मिला दो। चाहे किसी तरह से हो–यह प्रगट करने की चेष्टा कदापि न करो कि तुम एक अनुकरण योग्य पुरुष हो।

[२८]

अच्छा यही है कि पहले काम करो तब कुछ बोलो। यह नहीं कि काम करने के पहलेही बक २ करने लगो। सबसे अच्छी बात तो यही है कि कार्य्य करो और एकदम चुप हो रहो।

[२९]

मनुष्य की–सेवा करने की–योग्यता उसके दैनिक गृहकार्य्य (दिनचर्य्या–डायरी) देखनेसे समझा जासकता है न कि उसकी लिखी पुस्तकों से, न यशः सौरभ से, न उसकी झाड़ी हुई सर्व साधारण के समक्ष वक्तृताओं से अथवा न उसके अन्य कार्य-कलाप से। सर्व साधारण के लिए किये हुए महत्कार्यों से कोई महान पुरुष नहीं हो सकता बल्कि छोटे २ नित्य के कार्यों में आत्मत्याग

का ज्वलन्त उदाहरण पाने से—जो सब लोगों को ज्ञात तक नहो है-बड़े और भले आदमी की सच्ची पहचान हो सकती है।

(३०)

जो विश्वसेवा करनेको तत्पर होता है उसे अपना सर्वस्व सेवा-हितमें अर्पण करनेको प्रस्तुत रहना चाहिये-जिससे वह सचमुच विश्वसेवक कहलानेका अधिकारी हो।

(३१)

एक आदमी अपनी सहायता तुमसे हज़ार तरहसे ले सकता है पर तुम्हारी उचित सहायता यही है कि उसकी आवश्यकताके अनुसार तुम उसकी मदद करो केवल उसकी इच्छाहीके अनुसार नहीं। समय २ पर वह इस विषयमें तुमसे कुछ रुष्ट भी हो सकता है परंतु तुम यही चेष्टा करते रहो कि तुम्हारी सेवाका ढंग उसकी स्वीकृतिके उपयुक्त हो॥

(३२)

जो मनुष्य वस्तुतः सेव्य है-जिसे सहायता दरकार है-उसे छोड़कर यदि अन्यान्यकी सेवा सहायता की गई तो वह कदापि सच्ची सेवा नहीं है। सेवाकी सच्ची राहसे विपथ होकर अनेक मनुष्य सेवक बननेकी चाह रखते हैं-जिन्हें सेवा सहायताकी आवश्यता नहीं है उनकी सेवामें तत्पर होना चाहते हैं और जिन्हें सेवा सहायताकी चाह है उनकी ओर उदासीनता एवं असावधानता फेंक देते हैं।

(३३)

तुम्हारी की हुई सेवा जितनी ही उत्तम होगी तुम्हारा जीवन उतना ही सेव्य (आदर्श) हो जायगा।

(३४)

संसार में ऐसा कोई नहीं है जो किसी प्रकार की सहायता न चाहता हो और ऐसा भी संसार में कोई व्यक्ति नहीं जो दूसरों की कुछ सहायता न कर सके।

(३५)

जब तुम दूसरों की सेवा करने लगो तो उसकी (सहायता की) आवश्यकता देख कर अधीर मत हो जाओ। यदि उसे कोई आवश्यकता नही आ पड़ती तो तुम्हें सेवा करने का अवकाश ही कहाँ प्राप्त होता। यही मनसूबा रखो कि बहुत लोग तुम्हारी सेवा से सुखी हो सकें। " दरिद्रान् भर कौन्तेय ! मा प्रयच्छेश्वरे धनम्। व्याधि स्तस्यौषधं पथ्यं निरुजस्यकिमौषधिः"—श्रीकृष्ण भगवानका यह वचन कभी न भूलो।

(३६)

" नहिं सुखं दुःखैर्विना लभ्यते " जैसे-ऐसा कोई क्लेश नहीं है जो भावी आनन्द का सूचक न हो-(ऐसी कोई रात्रि नहीं जिसके पश्चात् सौम्य सूर्योदय न हो -ऐसा कोई बादल नहीं जिसके पीछे पूर्णेन्दु न छिपा हो)-ठीक उसी प्रकार ऐसी कोई आवश्कता या चाह नहीं है जिसकी किसी न किसी दिन पूर्ति न हो जाय-ऐसा कोई दोष नहीं जिसका कभी सुधार या संशोधन न हो सके।

(३७)

जब तुम दूसरे किसी की सेवामें रत हो तो इस बातका पूरा ध्यान रखो कि यदि तुम्हारी सेवा शुद्ध और सच्ची होगी तो उसके

और जो जैनी विद्वान् स्वार्थ त्याग कर विद्याप्रचारके लिये उद्यत होवे तो फरग्युसन कोलेज वा दयानंद कोलेज जो पुना–लाहोरमें है और जिसमें अनेक विद्वानरत्न निकल कर स्वपरका हित कर रहे हैं और नये नये विद्यालय खोलते है उस मुजब हमारे जैनीओंके भी क्यों नहीं होते?

एक गोखले रत्न निकला जिसने भारतवर्षके हितार्थ स्वार्थ त्यागकर देश-विदेशमें भ्रमणकर लोगोंकी आंखें खोल दी जोकि आज स्थूल देहसे वो नहीं दिखता तोभी उसकी यशस्वी जींदगी आज भारतवर्ष और विदेशमें निरंतर प्रकाशमान रह गई है। कोई जैनी क्या ऐसा परमार्थ नहीं कर सक्ता। अफसोस यह है कि आज हम घोर निद्रामें पडे हैं हमारे लिये धर्मके नामपर झगडा कर क्लेश बढानेका वा स्वार्थ साधन करनेका रह गया है। हम आपसमें तीर्थके झगडोंमें लडकर हमारी संपत्ति बुद्धि और जीवन नाश करेंगे उसमें ही हमारी मुक्ति साक्षात् हमको दिखती है।

हम सबमें प्रधान ज्ञान मानते हैं, कहते हैं शास्त्रोंमें फरमाया है तोभी हम हमारी पुराणी रीति नहीं छोडेंगे और मंदिरोंमें सोनेरी कारीगिरी कराकर भपकादार रखेंगे और चामरछडी पालखी रथ बनावेंगे और रथयात्रा निकालकर जिमनकर उत्सव करेंगे, विद्यालयोंमें-अनाथालयोंमें गरीब जैनीओंकी स्थिति सुधारनेमें चाहे इतनी निर्धनता वा दुर्दशा होगी तोभी हम उसको मदद नहीं करेंगे, हदसे उपरांत कर (टेक्स) मंदिरके लिये पूर्वमें जो लगाये हैं उससे द्रव्य जादा होनेपर श्रावक खाकर देवद्रव्यके चौर होंगे तोभी वो टेक्स (कर) हम विद्यामें नहीं लगावेंगे यह जो मान्यता दृढ हो गई है वह सुधारनेकी आवश्यक्ता है, वह प्रत्येक जैन साधु वा श्रावकके दीलमें खटकनी चाहिये।

श्रावककी कीमत।

एक श्रावक होगा तो श्राविका बनेगी और दोनोंसे श्रावकरत्न कुमार होगा वो साधु होकर जैनधर्म दीपावेगा, ग्रहस्थ रहकर जैनधर्मके क्षेत्रोंमें द्रव्य लगाकर पृथ्वीको जैनधर्ममय करेगा, इतना उत्तम गुणोंका बीज धर्मका मूल श्रावक होनेपर भी बिचारा कुत्तेकी तोल गरीब श्रावक रोटीके लिये हैरान होता है मजदूरी होती नहीं, विना विद्या नौकरी नहीं मिल्ती, विनाधन हुन्नरकला नहीं सीख सक्ता! अरर! आजके समयमें जो हम अंतरदृष्टिसे देखनेको जावे तो हमारे कुटुंब दरिद्रतासे पीडित होकर गुम गिनते हाथ

अफसोस कर रहे हैं और उनका मटीआ मेट होता है याने घरके घर शून्य होते हैं। पीछे उसकी संपत्ति वा घर बेचकर मंदिरमें धन लेजाते है वहां सुवेरी काम होता है। जिसका-विश्वास न हो वो गुप्तचर होकर देखे। ग्वालियर लश्करके श्वे. मंदिरमें इस तरहसे द्रव्य हरसाल आता है, ऐसे कितनेही गावमें होता है। मैंने कार्यवाहकोंसे कहा कि ऐसा निर्माल्य धनसे मंदिरकी शोभा मत बढ़ाओ परंतु मंदिरमें जुज रकम लेकर वो द्रव्यसे जो निर्धन श्रावक है उनको धंधे लगाओ, उनके बच्चोंको विद्या पढ़ाओ जिससे और घरोंका नाश न होवे किंतु जहांतक ऐसी परमार्थ वृत्तिके उपदेश देनेवाले रत्न सो पचास नहीं निकलेंगे वहांतक मेरी बात कौन सुनता है ! ! !

पारसी आर्य समाजी और ईसाईओंके पादरी जो कार्य करते हैं उनका गुण हमें अवश्य लेना चाहिये, कुत्तेसे मरेसे गधेसे भी गुण लेनेका शास्त्रमें फरमाया है तो मनुष्योंसे गुण लेनेमें क्या हर्ज है!

पारसीओंका जातिप्रेम व्यापारवृद्धि और देशहित सीखना चाहिये, समाजीसे विद्याप्रचार और इसाईओंसे अनाथ मनुष्योंकी रक्षा करनी सीखनी चाहिये। भारतवर्षका उदय होनेवाला है, नामदार सरकार देशकी उन्नति चाहती है, ऐसे समय पर जो हम फेरफार नहीं करेंगे तो हमारा जैसा मंदबुद्धि कौन होगा ? भाईओं! जाग्रत हों, प्रमाद छोडो, क्लेश हटाओ, योग्य स्थानमें द्रव्य लगाओ। मैंने आम लोगोंके हितार्थ सार्वजनिक हित के छह भाग निकाले हैं सातवा प्रेसमें जा चुका है इस लिये मैं यहां पर आपको विशेष नहीं कहता। सिर्फ आपको श्रद्धा विवेक कर्त्तव्य पर ख्याल रखनेकी प्रार्थना करता हुं।

छोटादरीबा देहली
जैन धर्मशाला
भाद्रपद सुदी ८.

आपका सदैव हितचिंतक
मुनि माणेक.

और जो जैनी विद्वान् स्वार्थ त्याग कर विद्याप्रचारके लिये उद्यत होवे तो फरगुसन कोलेज वा दयानंद कोलेज जो पुना-लाहोरमें है और जिसमें अनेक विद्वानरत्न निकल कर स्वपरका हित कर रहे हैं और नये नये विद्यालय खोलते है उस मुजब हमारे जैनीओंके भी क्यों नहीं होते?

एक गोखले रत्न निकला जिसने भारतवर्षके हितार्थ स्वार्थ त्यागकर देश-विदेशमें भ्रमणकर लोगोंकी आंखें खोल दी जोकि आज स्थूल देहसे वो नहीं दिखता तोभी उसकी यशस्वी जींदगी आज भारतवर्ष और विदेशमें निरंतर प्रकाशमान रह गई है। कोई जैनी क्या ऐसा परमार्थ नहीं कर सक्ता। अफसोस यह है कि आज हम घोर निद्रामें पडे हैं हमारे लिये धर्मके नामपर झगडा कर क्लेश बढानेका वा स्वार्थ साधन करनेका रह गया है। हम आपसमें तीर्थके झगडेमें लडकर हमारी संपत्ति बुद्धि और जीवन नाश करेंगे उसमें ही हमारी युक्ति साक्षात् हमको दिखती है।

हम सबमें प्रधान ज्ञान मानते है, कहते है शास्त्रोंमें फरमाया है तोभी हम हमारी पुराणी रीति नहीं छोडेंगे और मंदिरोंमें सोनेकी कारीगिरी कराकर भपकादार रखेंगे और चामरछडी पालखी रथ बनावेंगे और रथयात्रा निकालकर जिमनकर उत्सव करेंगे, विद्यालयोंमें-अनाथालयोंमें गरीब जैनीओंकी स्थिति सुधारनेमें चाहे इतनी निर्धनता वा दुर्दशा होगी तोभी हम उसको मदद नहीं करेंगे, इससे उपरांत कर (टेक्स) मंदिरके लिये पूर्वमें जो लगाये हैं उससे द्रव्य जादा होनेपर श्रावक खाकर देवद्रव्यके चौर होंगे तोभी वो टेक्ष (कर) हम विद्यामें नहीं लगावेंगे यह जो मान्यता दृढ हो गई है वह सुधारनेकी आवश्यक्ता है, वह प्रत्येक जैन साधु या श्रावकके दीलमें खटकनी चाहिये।

श्रावककी कीमत।

एक श्रावक होगा तो श्राविका बढेगी और दोनोंसे श्रावकरत्न कुमार होगा वो साधु होकर जैनधर्म दीपावेगा, ग्रहस्थ रहकर जैनधर्मके क्षेत्रोंमें द्रव्य लगाकर पृथ्वीको जैनधर्ममय करेगा, इतना उत्तम गुणोंका बीज धर्मका मूल श्रावक होनेपर भी बिचारा कुत्तेकी मोत गरीब श्रावक रोटीके लिये हैरान होता है मजदूरी होती नहीं, विना विद्या नौकरी नहीं मिलती, विनाधन हुन्नरकला नहीं सीख सक्ता! अरर! आजके समयमें जो हम अंतरदृष्टिसे देखनेको जावे तो हजारो कुटुंब दरिद्रतासे पीडित होकर गुप्त गिनिते हाथ

અથવા ખાદીના સ્વચ્છ ટુકડાથી શરીરને ભાર દઇને લુંછી નાખું છું. મારે એક વાત વચ્ચે કહેવાની રહી જાય છે તે એ છે કે ફરી આવીને તુરત હું કોઇક કઠણ પદાર્થનો નાસ્તો લઉં છું. આ નાસ્તામાં ખાસ કરીને હું કોપરાં અને ગોળને સર્વથી વધારે પસંદ કરૂં છું. કઠણ પદાર્થનો નાસ્તો કરવામાં ખાસ લાભ એ થાય છે કે ખાતાં ખાતાં, સાથે સાથે, વાંચવાની હ્હેજત આવે છે. આવે વખતે વાંચનને માટે ખાસ કરીને હું 'ફરજ' (Duty) અથવાતો સદ્વર્તન (Character) નાં અંગ્રેજી પુસ્તકો અથવા તો એના જેવાં અન્ય વિષયનાં પુસ્તકો પસંદ કરૂં છું. પંદર વીસ મીનીટમાં નાસ્તાનું કામ પતી રહે છે, એટલે પુસ્તકને પણ હું આઘું મુકું છું. ત્યારબાદ, ઉપર લખ્યા પ્રમાણે ન્હાઇ ધોઈ સ્વચ્છ થઇને, એક ધોતીયાભેર હું દહેરે (મંદિરે) ખુલ્લે દીલે અથવા ઠંડીની મોસમમાં ખાસ ઓઢીને જાઉં છું. સાથે ચોખાના દાણા સિવાય અન્ય કાંઇ લઇ જવાનું મને પસંદ નથી. દહેરાસરમાં જતાં વેંત પ્રથમ પ્રભુની સન્મુખ ઉભા રહી પ્રભુનાં દર્શન કરવામાં મારા મન અને શરીરને રોકું છું. એકાગ્ર ચિત્તથી ભક્તામર-સ્તોત્રના શ્લોક (૨૩, ૨૪, ૨૫, ૨૬) વડે અથવા તો મન સ્વચ્છ હોય તો જે કાંઇ કવિતા મનમાંથી નીકળે તેવાં પદોથી પ્રભુનું સ્તવન કરૂં છું. ત્યારબાદ, પ્રભુ આગળ ત્રણ વખત દંડવત પ્રણામ કરૂં છું. ત્યારબાદ ઉને લાગે રથ ઉભો રહીને અંજલિ ક્ષમા ચાહું છું. સામાયિકના જોયા પછી કેટલોક સમય ઘર શ્લોક બોલું છું આડોશીપાડોશી તથા નજીક રહેતા પ્રમોદમ્ આદિ સાથે ગામની તથા કુળીયા વગેરે ભણ કરૂં છું ની જાણવામાં અનિયમીતપણે વ્યતિત થી જાઉં છું, કદાચ કોઈ મિત્ર વગેરે ખાસ ગવાનને ગો

નું છું. એક તો એ હું પણ મારા એક વૃદ્ધ અર્ધાદિનાં અષ્ટ જાઉં છું. તેઓ મારા વડે હું પ્રભુપૂજા નહિ, પરંતુ તેમની સાથે હું પંચપરમેષ્ઠિ હું ભાગીયા તરીકે જોડાયો છું. નામ બોલી એક વૃદ્ધ ગુરૂ મને તેમના મિત્ર તરીકે ગણ ચંદ્રાકારમાં મેં પણ તેમને મિત્ર તરીકે કરૂં છું. દગલીઓની ખરી રીતે, ઘણે ભાગે છું. આ સાથિયાને હું અને કેટલીક તત્વજ્ઞાન સાથિયો અને પરમે તત્વોનું શિક્ષણ આપવામાં ટલીક વખત હું સ્ તેમના સહવાસમાં ગુજરતા કરી સ્થાપના કરૂં હું 'તેરી વખત' ગણું છું. લોકાચાર પ્રમાણે અને વખત બેસું છું તેટલો તેજ હું કરૂં છું અને થયા કરે છે. કાવ્ય, કોઇ કોઇ પ્રસંગે વિચાર પાર અને વ્યવહાર થઇ રહ્યા પછી એકાગ્ર ધી એઓ મારી સાથે કારવાલી (માળા) ન કરે છે. કદી કદી આ મેઝિ નાં હું ૧૦ વાદવિવાદ પણ કરીએ છીએ. મારૂં સામાયિ ન મારે કહેવું જોઇએ કે કોઇક ધાર્મિક પુસ્ નહમાં જો એ હારે તો પોતાની ઝક વાંચું છું સત્યને કબુલ કરે છે. આવું નિરઅનુકુળતા ગુણ, સરળતા, ઉચ્ચ પ્રતિભા, જ્ઞાન તિલક (થે સાથે એક ગૃહસ્થનો સારી રીતે બરો લઇ ચાલે એટલું ધન અને સ્થળના પ્રમામાં જતી મોહોળો વ્યાપાર, આ બધુંએ એકસાથે ભળે તેને માં જોઇને કયા વિદ્વાન અને ડાહ્યા નથી; આનંદ ન થાય? કુટુંબ અને જાતે સ્નેહી એઓ સુખી છે.

મને જ્યારે જ્યારે હું મારા વૃદ્ધ મિત્ર પાસે જતો નથી; ત્યારે ત્યારે તે વખત હું અન્ય એવાજ કામમાં મિત્રો સાથે વાતો કરવામાં અથવા તો સિતાર બજાવી સંગીતની હ્હેજત ચાખવામાં પસાર કરૂં છું. આ પ્રમાણે રાત્રે નવ વાગી જાય છે. મારી પ્રિય પત્નિને શિક્ષણ આપવામાં, અથવા અન્ય કોઇ વિનોદવાર્તા કરવામાં ત્યાર પછી એકાદ કલાક રહેજમાં

आदर्श दिनचर्या.

(લેખક—સુજ્ઞાન મિત્ર)

પ્રાતઃકાળે સૂર્ય ઉદય થતાં હું દરરોજ ઉઠું છું. ઉઠતાંની સાથે લાંબા કાળની ભોગવેલી શાન્તિથી ઉત્પન્ન થતી આનંદઉર્મિઓ દર્શાવવાને ભર્તૃહરી શતકચતુષ્ટયમાંથી, જ્ઞાનાર્ણવમાંથી અથવાતો અન્ય યાદ આવતા શ્લોકનું ગાન મુખમાંથી સ્વાભાવીક નીકળી પડે છે. એવા શ્લોક ગાતો ગાતો હું પથારીમાંથી ઉઠી શૌચ ક્રિયાને માટે જળપાત્ર લઇ, ઠંડી ન લાગે એટલા પુરતાં કપડાં પહેરી લઇ, તદન સાદા પોશાકમાં ગામ બહાર જાઉં છું.

આ વખતનો આનંદ! અહા! એનું તે હું શું વર્ણન કરું! કોઇ કોઇ વખતે રક્તવર્ણિ પૂર્વ દિશામાં, ઉદય પામવા ઉત્સુક રહેલા સૂર્યદેવતાના સૌંદર્યનું વર્ણન કરવાને એકાદ મહાન કવિને ઉભો રાખ્યો હોય, તોજ તેની કદર થઇ શકે, એવી રમણીય-સ્થિતિનો અનુભવ થતાંની સાથેજ શરીર ઉપરનાં રોમે રોમ ખડાં થઇ જાય છે. આવે વખતે, હું એકાદ ઉંચા ટેકરા ઉપર ઉભો રહીને, સૂર્ય દેવતાના અને તેમના ગુલાબી અને હીંગલોક જેવા લાલ કીરોર કિરણોથી આચ્છાદિત થયેલા, નીલા, લીલા અને શ્વેત રંગે રંગાયેલા સુશોભિત, જુવાર, કપાસ, લાંગ, ઘઉં આદિ ધાન્યના કુમળા છોડવાથી ભરપુર ખેતરોને લાંબીને લાંબી દ્રષ્ટિથી નીહાળું છું. મન, ધાન્ય અને સમૃદ્ધિના અનેક વૈભવો પરદેશી પ્રજાઓની હરીફાઇમાં આપણે હારી ગયા છતાં, પરમ કૃપાળુ પરમેશ્વરે, આ અવર્ણનીય લીલાથી ઉત્પન્ન થતું સુખ કાયમ રાખ્યું છે; તેને માટે એ પરમ કૃપાળુ પરમેશ્વર, યાતો કુદરતનો હું અંતઃકરણપૂર્વક વારંવાર ઉપકાર માનું છું; અને તેમના તરંગી યશોગાનથી મારા હૃદયને રંજન કરૂં છું.

જો હું વહેલો ઉઠું છું, તોતો સૂર્યોદય થતા પૂર્વે એકાદ માઇલ નીકળી જાઉં છું, અને જ્યાં સૂર્યોદય થવાનો પ્રારંભ થાય ત્યાંથીજ અટકીને પાછો ફરૂં છું. શૌચ ક્રિયા પણ સૂર્યોદય થતાં પહેલાંજ કરીલઉં છું. કપડાં, અપવિત્ર થવાના ભયથી ખુલ્લે શરીરે, જેમ બને તેમ નજદીકમાં મળ મૂત્ર ત્યાગ કરનાર મારા ધર્મભીરૂ બાંધવોને હું પૂછું છું કે તમને શું કોડી પણ ખર્ચ કર્યા વિના મળે તેવો અનુપમ આનંદ ભોગવવાને મન થતું નથી? ન તો ઝાઝો વખત રોકાય, કે ન તો કાંઇ અન્ય ઘેરલાભ, થાય. થોડીક લોકભીરતા મનમાંથી દૂર કરો એટલે બસ.

આ વાત ઘણેભાગે ગામડાંમાં અને નાનાં શહેરો (કસ્બા) માં રહેનારને તદન બંધબેસ્તી છે, પરંતુ મ્હોટા શહેરોમાં રહેનાર મ્હારા શહેરી બાંધવો પણ ધારેતો, એપ્રમાણે વર્તવાને કાંઇક અનુકુળતા મેળવી શકે. શૌચ ક્રિયા વગેરેથી ઘર આગળથી પરવારીને પણ તેઓ આ આનંદનો લ્હાવો લઇ શકે એમ મારૂં ધારવું છે.

આ પ્રમાણે શૌચ ક્રિયાથી પરવારી તુરત સ્નાન કરી લઉં છું. શિયાળાની ઋતુમાં સૂર્યનાં કીરણોમાં બેસીને ન્હાવું, એ પણ એક અપ્રતિમ આનંદજ છે. અન્ય ઋતુઓમાં સૂર્ય ઉગતાં પહેલાં અથવા તાપ ન આવ્યો હોય એવે સ્થળે ન્હાવામાં આનંદ પડે છે.

ન્હાતાં ન્હાતાં પણ કોઇકવાર શ્લોકોનો મુખપાઠ કરતાં કે કોઇક કવિના ગાનાં ગાતાં, સાબુ વગેરેની મદદ સિવાય, શરીરને ખૂબ ચોળી ચોળીને, અનકી રીતે પાએક કલાક સુધી ન્હાયા કરૂં છું. ન્હાઇ તુરત કૃપાળુ

ચાલ્યો જાય છે. દશ, સાડાદશે હું નિત્ય સુઇ જાઉં છું.

પ્રિય વાંચક બંધુઓ! મારા વ્યવહારિક સંબંધથી હું તમારામાંના બહુજ થોડાઓનેજ ઓળખતો હોઇશ, તમે પણ ભાગ્યેજ ઓળખતા હશો તોપણ એટલું તો હું નિઃસંશય જાણુંજ છું કે તમારો અને મારો આત્મા કોઇ કાળે વ્યવહારીક સંબંધથી પણ એકત્ર થયો હશે. તમને જો રૂચે અને કદાચ કંઇક અનુકરણીય લાગે તો તે જાણી આનંદ પામજો અને તમારા વર્તનમાં વધઘટ લાગે તો સુધારો વધારો કરવા પ્રયત્ન કરજો. મારૂં જ્ઞાન બતાવવાને આ લેખનો વિષય નથી, પણ મારા હૃદયનો ઉભરો છે, ચાહ, બીડી વગેરેનાં **જુદી જુદી જાતનાં વ્યસનોથી ઘેરાઇ પડેલા મારા યુવાન મિત્રોને આ એક સૂચનઃ છે, અને ગપ્પાસપ્પા મારી વખત વ્યતિત કરી દઈ પ્રસંગ આવે વખતની તંગીનો વાંક કાઢનારાઓને ઉત્તમ બોધરૂપ આ ઉપદેશ છે.**

સવારથી સાંઝ સુધીનાં આચરણોનું એક સારા પ્રકારનું આ ચિત્ર દોરવામાં આવ્યું છે, તેને સુજ્ઞ વાંચકો સત્ય સમજે કે કલ્પિત સમજે એનો કાંઇ વાંધો નથી, પરંતુ એ બેશક અનુવર્તનીય છે.



भारतमें शिल्प की आवश्यकता

भारत में शिल्प के नए कारखाने खोलने की भारी जरूरत है। हम इस बारे में भारत का जापान से मुकाबला करते हैं। जापान में साधारण आदमियों ने जो ४० वर्ष पहले भारत निवासियों से न ज्यादा हुनरवर और न बुद्धिमान् थे, शिल्प के बहुतसे काम जारी किए और बीस साल में ही उन्नत हो गए। अब योरप की तमाम चीजें अपने देश में तैयार करते हैं। हिन्द के लोग भी तब तक सुखी न होंगे जब तक वह शिल्प के क्षेत्र में आगे न बढ़ेंगे और इस बात को अच्छी तरह से अनुभव न करेंगे कि हिन्दोस्तान में हर प्रकार के कारखाने खोले जायँ और उनको तरक्की दी जाय। तब भारत अपनी प्राचीन उन्नति को प्राप्त करेगा। आजकल हमारे इस्तेमाल की हरएक वस्तु विदेश से मंगवाई जाती है। आजतक जिस कदर कारखाने खोले गए हैं उन में से बहुत तो विदेश के रुपये से खोले गए हैं। इस प्रकार के कारखानोंसे भारत को कोई लाभ नहीं पहुंचता। क्योंकि विदेश के रुपयों से कारखाने चलाने में सब लाभ देश के बाहिर चला जाता है। जरूरत इस बात की है कि हिन्दोस्तान का अपना रुपया कारखानों की तरक्की में लगे। भारत में निस्सन्देह धन मौजूद है परन्तु इसे लाभदायक कामों में नहीं लगायाजाता। यदि यह रुपया शिल्प कारखानों में लगाया जाय, तो इन कारखानों की बहुत तरक्की होगी और साथ ही देश का धन भी बढ़ेगा, और अवस्था भी सुधर जायगी। यदि हमारे राजे

महाराजे और जागीरदार और धनाढ्य अपने रुपये को व्यर्थ दबाने या स्त्रियों के भूषण बनाने की पुरानी आदत को छोड़कर इसे मुफ़ीद कामों में लगाने की आदत बनाने का प्रयत्न करें तो वह अपने देशकी भारी सेवा करेंगे। तब दुर्भिक्ष का भी प्रबन्ध हो जायगा। भारत में सम्भवतः कोई फ़िर्का ऐसा नहीं है, जिसने भारत की तरक्की के लिये इस कदर यत्न किया हो जितना पारसियों ने। इन्होंने अपनी पूंजी को कारखानों और तिजारत में लगा रक्खा है। पारसियों की संख्या सारे भारत में केवल दो लाख है। तोभी यह अत्युक्ति नहीं कि उन्होंने हिंदुस्तान में कारखाने खोलने की तमाम दूसरे फिर्कों की निस्बत ज्य हैं, कोशिश की है। न उनमें कोई सा तोंको और न उनकी स्त्रियों में कोई वेश —पवित्र हालाँ कि अन्य तमाम फिर्कों और वर्तमानकी की वेश्यायें भारत में मौजूद है। न करदेना गरीबी के कारण कई ऊंची जात शिक्षाका ढं वेश्या बन गई हैं। इन सब रु समाज इलाज यह है कि देश में हर प्र ाता होर- खाने हिंदुस्तानी पूंजी से जारी इसके य और उनकी तरक्की के लिये भा प्रचारि को दृढ़ निश्चय कर लेना चाहिये अपने देश की बनी हुई चीजें इस्ते करना चाहिये।

समाजमें

टहलराम गङ्गाराम- प्रवाह चे



सब धर्मसे है उत्तम यह जिन धरम हमारा।
है उच्च कुलका भूषण यह जिन धरम हमारा॥
दुख मूलसे नसावै सुखकीर्ति यश बढ़ावै।
जन्मन मरण मिटावै यह जिन धरम हमारा॥

उपदेश सत बतावै कुगतीसे यह बचावै।
शिवपंथको दिखावै यह जिन धरम हमारा॥
चहु दिशमें जिसका डंका निर्भय न कोइ शंका।
धर्मोंमें धर्म बंका यह जिन धरम हमारा॥

है ज्ञान भानु आत्मा मतिभेदसे निराला।
निर्ग्रंथ गुरुने पाला यह जिन धरम हमारा॥
जीवोंपै करुणा धारी अरु है परोपकारी।
ऐ लोक्य गुण भंडारी यह जिन धरम हमारा॥

मिथ्यात्वका है नाशक अरु तत्त्वका प्रकाशक।
द्रव्यास्ति नास्ति ज्ञायक यह जिन धरम हमारा॥
रागादि द्वेष टालै चारित्र गुण संभालै।
उन्मार्गसे निकालै यह जिन धरम हमारा॥

नर जन्मका सुधारन है मुख्य ये ही कारन।
भवदध जहाज़ तारन यह जिन धरम हमारा॥
दुनियां की सब कल्पना है रैनकासा सपना।
कर लो हृदयसे अपना यह जिन धरम हमारा॥

जगमें न कोइ तेरा क्यों करता मेरा मेरा।
हुआ पार जिसने हेरा यह जिन धरम हमारा॥
कहते वसंतभाई तज मिथ्या मूर्खताई।
भव भव में है सहाई यह जिन धरम हमारा॥

और अपनी शिक्षा दिक्षासे समाजकी उन्नति करें।

तीसरा अत्यंत आवश्यकीय कार्य यह है कि एक जैन कालेज खोला जाय। यदि हमारी समाजके शिक्षित पुरुष इस ओर ध्यान दें तो यह कोई बड़ी बात नहीं है पर शिक्षितोंको पहले मैदानमें आकर कार्यका रंग जमाना चाहिये केवल लेखोंसे कुछ न होगा जबतक कि दस पांच विद्वान इस कार्यमें अपना सर्वस्व समर्पण कर भिक्षां देहि न करेंगे।

अंग्रेजीके विद्यार्थियोंमें जातीय अभिमान और धार्मिक ज्ञान उत्पन्न करनेके लिये कालेजके समान अन्य कोई आवश्यकीय कार्य नहीं है।

चोथा कार्य जो हमें करना है और वर्तमानमें जो बहुत जरूरी होचला है वह यह है कि समाजकी सर्वसाधारण प्रजाको रोटियों की चिंतासे मुक्त करना। समाजमें दारिद्रता बड़ी तेजीसे बढ़ रही है। जो जैनी कभी भी प्राण जाते भी भिक्षा मांगनेको उद्यत नहीं होते थे उन्हींकी संतान आज लज्जाको तिलांजुलि दे पापी पेटको भरने के लिये सबकुछ करनेको तैयार हैं। जैनियोंके हाथोंसे व्यापार निकल गया है और रहासहा भी निकलनेकी तयारीमें है। ग्रामीण जैनियोंकी बड़ी शोचनीय दशा है अतएव इसकी ओर समाजको अवश्य ध्यान देना चाहिये। क्योंकि दरिद्रतासे समाजका भयंकर ह्रास होता है। दरिद्रता रोगोंकी जड़ है। मृत्युसंख्या बढ़ाने वाली है। हमारी समझमें तो प्रत्येक प्रान्तमें एक२ ऐसी सभा होना चाहिये जो कि समाजका निरीक्षण करती रहे। और किसी व्यक्तिकी साम्पत्तिक स्थितिके गिरतेही उसे उठानेका प्रयत्न करे। इसके लिये उसके पास कमसे कम पच्चीस हजार रुपयाका फंड रहना चाहिये। इस फंडमेंसे व्यापार के लिये गरीब जैनियों को सो सो पचास पचास रुपै दिये जायँ। और विनाव्याज उनसे रुपै महिना आठ आना महिना की किस्तबंदीसे वापिस लिये जावें जैसेकि ऐक जैनी भाईको सो रुपै दियेगये। उससे प्रतिमास एक रुपया महिना लिया जाय तो वह विना किसी भी प्रकारकी रुकावटके अवश्य देता जायगा। इधर इसका व्यापार भी चल जायगा। उधर आठ वर्षमें तुम्हारे रुपै भी वसूल हो जावेंगे। इस तरह पच्चीस हजार रुपयोंसे समाजके प्रायः पांचसो कुटुम्बोंकी प्रतिपालना तुम आठ वर्षमें कर सकोगे। कितना भारी पवित्र पुण्यका और वात्सल्यका कार्य है और इस उपायसे कितनी शीघ्र हमारी जाति व्यापारिक चिंतासे छूट सकती है। क्या कोई है माईका लाल जैनी! जो इस उपायको कार्य में परिणत करनेके लिये लाख दो लाखका दान दे। जिसने एक लाखका दान इस महा कार्यमें दिया समझना

चाहिए कि उसने आठ वर्षमें करीब ढाइ हजार जैनियोंके कुटुम्बोंको और दस हजार जैनियोंको रोटियोंकी चिन्तासे मुक्त किया। इस सातिशय पुण्यका लेखा लगानेको कोई समर्थ हो सकता है ? हम दानी जैनी भाइयोंका ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं।

इनके सिवाय कई कार्य और है जो कि समाजकी उन्नतिके लिये अत्यंत आवश्यकीय है। यहांपर हम उनका नामोल्लेख करके इस लेखको पूर्ण करेंगे। और फिर कभी उनपर विवेचन करनेका प्रयत्न करेंगे। हम जैनसमाजके शिक्षित व्यक्तियोंसे प्रार्थना करेंगे कि वे हमारी ऊपरकी प्रार्थनाओं पर व निम्नलिखित कार्योंके करनेपर कमर कसकर तयार हो जावें।

१. जैनधर्मके ज्ञानको वर्तमान पद्धतिसे प्रकाशित करना।

२. वर्तमानकी पदार्थ-विद्यासे जैन धर्मके ज्ञानकी तुलना करना।

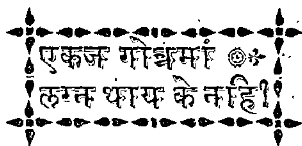
३. जैनइतिहासका संग्रह करना।

४. एक सर्वोपयोगी जैन ग्रन्थालय स्थापित करना।

५. प्रत्येक प्रान्तमें एक२ अनाथालय, हाईस्कूल, विद्यालय, कन्याविद्यालय, और श्राविकाश्रम स्थापित करना।

६. एक जैनप्रेस संस्थाके रूपमें खोलना।

७. सस्ती जैनग्रंथमाला निकालना। इत्यादि।



(લેખક-રા. છગનલાલ ઉમેદચંદ કરૈયા-સુરત)

(ગયા અંકથી ચાલુ)

વળી કહે છે કે, " કુટુંબની ઓળખાણ માટે ગોત્ર કલ્પના અકારણ છે. " ગોત્ર એ કલ્પના કે સત્ય છે તે ઉપર વિદિત કર્યું છે. ગોત્ર ને કુટુંબ એક છે કે નહિ તે ' **ગોત્રોની** ઉત્પત્તિ 'ના ખુલાસામાં શેત્રુંજય માહાત્મ્યના ટીકલા ફકરાથી સ્પષ્ટ કર્યું છે. વળી આગળ લખે છે કે, " આથી સાબિત થાય છે કે ગોત્ર-કલ્પના સિવાય પણ કુટુંબની ઓલખાણ થઇ શકે છે, કારણકે પોતપોતાનું કુટુંબ સૌ ઓળખે છે." પ્રથમ તો કુટુંબની ઓળખ કેવી રીતે રહે તે આખો લેખ વાંચી જોતાં માલમ પડતું નથી અને અહિં તો સિદ્ધ કર્યું છે ! પરંતુ સાત પેઢી પછીનો કુટુંબી ગોત્રીય કહેવાય છે, પરંતુ ગોત્રજ ન માનીયે, તો સાત પેઢી પછી કુટુંબની ખબર કેવી રીતે રહી શકે ? તે મી૦ શાહ સ્પષ્ટ દર્શાવશે તો આભાર થશે. વળી આ જમાનામાં તો બાપના જેટલા દીકરા તેટલા ઘર મંડાય છે, તો બસો ચારસો વરસે કે છોકરાના છોકરા કે તેના છોકરા કેમ જાણી શકે કે હમે એક કુટુંબના હતા.

વળી જણાવે છે કે-" દત્તક રહેનાર તેના સંતાનોના પોતાના પિતાના મુળ ગોત્રમાં લગ્નસંબંધ કરી શકે છે." " દત્તક વગેરે પુત્રો ગોત્રના તથા વારસાના અંશભાગી છે."

મ. સ. અ. ૯ શ્લો. ૧૬૫

દત્તક રહેનાર વ્યક્તિ દત્તક લેનારના ગોત્રનો ગણાય છે, એમ સોમસેન આચાર્યકૃત

ત્રીવર્ણાચારમાં પણ કહ્યું છે, માટે એ યોગ્યજ છે. એ શંકાનો અહિંઆ પરિહાર થાય છે.

વળી સૂચન કરે છે કે, "આ ઉપરાંત આ ગોત્રકલ્પના પ્રાચીન નથી, કારણકે શાસ્ત્રોમાં એ વિષેનો કોઇ પણ જગ્યાએ ઉલ્લેખ જોવામાં યા સાંભળવામાં નથી આવ્યો, ત્યારે હવે એમ વિચારો કે જો ગોત્ર કલ્પના ન હતી તો શું સંબંધ માંહોમાંહે નહિ થતા હોય? અને જો થતા હોય તો શું સ્વકુટુંબમાંજ થતા હશે?"

પ્રાચીન ન હોય ત્યારે તો એ સંબંધી ઉલ્લેખ શાસ્ત્રોમાં હોયજ પરંતુ પ્રાચીન હોય તો શાસ્ત્રવેત્તાઓ કયાંથી લખે કે, ગોત્રોની ઉત્પત્તિ આ કારણથી થઈ છે; માટે સાંભળવામાં પણ આવેજ કયાંથી? સ્વકુટુંબમાં કે માંહોમાંહે વિવાહમંડનનું કોઇ શાસ્ત્રોક્ત પ્રમાણ આપો તો કંઇ માન્ય થાય ખરૂં, બાકી એવા તરંગી વિચારો આ પ્રત્યક્ષ ઉદાહરણ જોવાવાળા જમાનામાં ચાલી શકે તેમ નથી.

વળી કહે છે કે, "વાંચક! **જૈનીઓની** સંખ્યા દિનપ્રતિદિન ઘટતી જાય છે અને તે એટલે સુધી કે જો થોડા દિવસમાં એનો ઉપાય નહિ કરવામાં આવે તો એ જાતિનું નામ નિશાન પણ નહિ રહે. જ્ઞાતિના ઘટાડાના કારણોમાં બીજા કારણો ઉપરાંત ગોત્ર કલ્પના પણ પ્રબળ કારણ છે."

કેવી નાશવંત ભાવના!! ગીતામાં સત્ય કહ્યું છે કે "यो यच्छ्रद्धः स एव सः" "જેના હાથમાં ચિંતામણી હોય તેને દીનતાનો શો ભય? સૂર્યનો ઉદય થયે અંધકારનો ભય શાનો? મેઘની વૃષ્ટિમાં દાવાનળથી વન કેમ બળી શકે? અગ્નિ સમીપ છતાં શીતનો ભય શાનો? કેસરી વિદ્યમાન છતાં હરિણથી ડર કેવો? ગરૂડનું અવલંબન કરનારને સર્પ શું કરી શકે? બારણામાં કલ્પવૃક્ષ છતાં સંતાપનો શો ભય? તેમ સર્વ ધર્મમાં શ્રેષ્ઠ જૈન ધર્મને ધારણ કરનાર શું પૃથ્વીપર કોઇજ નહિ રહેશે? અબજો રૂપિયા વાપરી અને શહેરમાં અને પર્વતોપર ધર્માભિમાનીઓએ અગણીત વંદનીય દેવાલયો-તીર્થો બંધાવ્યા છે અને લાખ્ખો રૂપિયાનો ભોગ હજુ પણ અપાયેજ જાય છે તે જાતિનો નામ નિશાન સાથે વિદ્ધંસ આજના વિજ્ઞાનવેત્તાઓ, સાયન્ટીસ્ટો, વૈદિક શાસ્ત્રજ્ઞો જગત્ વ્યાપી જૈન દર્શનના આચાર વિચારો છે; એમ સિદ્ધ કરે છે તો તે જમાનામાં પણ નાસ્તિ! જે મતમાં કોઇપણ અન્ય ધર્મો કરતાં અતિ ઘણું શ્રેષ્ઠ અને પ્રથમ શ્રેણીનું સાહિત્ય હોય તેનું કરમાઇ જવું! જે ધર્મપર અને તેના અનુયાયીઓપર આદ્ય શંકરાચાર્ય, વલ્લભ, બુદ્ધ વગેરે ધર્મપ્રવર્તકોએ તેમજ ક્રુર હૃદયના મોગલ બાદશાહોના અનેકાનેક પ્રકારના ત્રાસો-ઉપસર્ગો ઉપજાવ્યા છતાં, અરે! વર્ષો સુધી જે ધર્મોના પવિત્ર શાસ્ત્રોથી પાણી ગરમ કરી કરીને નાહ્યા હોય, છતાં પણ તેજ મતના શાસ્ત્રો, આચારવિચારો અને રહસ્યો સર્વ દેશીય લેખાય એવા મહાન ધર્મનો અને ધારણ કરનારી જાતિનો અતિ ઘણા **રાક્ષસી કૃત્યોથી પણ રક્ષાએલ એક ગોત્રીય બંધન જેવા કારણથીજ અલ્પ સમયમાં નાશ (!)** ભલે આજના જૈનનામધારીઓનો નાશ થાય પરંતુ '**જૈન દર્શન**' એ શબ્દ તો દુનિયાના ઇતિહાસમાં સોનેરી કોતરાયેલોજ રહેશે. **જયાં અક્ષય કીર્તિ ત્યાં ભયની બ્હીકજ કેવી!** તોપણ આવી નાશવંત ભાવનાઓ ભાવવાથીજ અને આવા નાસ્તિક ઉપાયો લેવાથીજ નાશ સમીપમાં આવશે. એ વસ્તી ઘટવાની મહાન શોધ કોઇથી અણજાણીતી નથી. આપણા વડીલો કહેતા આવ્યા છે કે, ભાઈ, અગાડી આપણી ન્યાતમાં, સુરત, વિ. લાડુ વગેરે આટલા (વધારે) જોઇતા અને અત્યારે તો આટલે (ઓછે) આવી લાગ્યું છે. જ્યારે કોઇ વસ્તી ઘટવાનાં કાર-

ણોમાં આજની શિક્ષણપદ્ધતિમાં વ્યવહારિક જ્ઞાનનો અભાવ, બાળવિવાહ, વૃદ્ધવિવાહ, કન્યાવિક્રય વગેરે દૂષણો કાઢે છે, તે ઉપરાંત મી. શાહ ગોત્ર બંધનને પ્રબળ-મુખ્ય કારણ ગણાવે છે એ મહદાશ્ચર્યયુક્ત છે.!!

તેમજ જણાવે છે કે, "અને તેમાં પણ વળી એક બે ગોત્ર તો એટલાં બધાં મ્હોટાં છે કે તે ગોત્રવાળાઓને લાયક વર અને તે લાયક કન્યા મેળવવાની મુસ્કેલીનો ખરો અનુભવ તે ગોત્રવાળાજ જાણે છે અને તેને લઇને કેટલાએ વરકન્યાના નસીબ મ્હારી જાણમાં ફેરવાઇ ગયા છે, અને ભવિષ્યમાં પણ હજી વધારે વધારે દુઃખદાયક થવાનો સંભવ છે."

નૃસિંગપરાનું ગુજરાતમાં આટલું મ્હોટું સર્કલ હોવા છતાં તેમજ સંઘપરા અને નૃસિંઘપરા એકત્ર થયા, તોપણ ગોત્ર વગર 'લાયક વર' નથી મળતા એ વિચારણીય વાત છે, છતાં આપણે એ મ્હોટા ગોત્રવાળાને પૂછીશું કે શું નૃસિંઘપરા ફક્ત ગુજરાતમાંજ વસે છે? ઇદોર, પરતાબગઢ આદિથી કેટલીક કન્યાઓ ગુજરાતમાં આવી છે, પરંતુ ગુજરાતમાંથી ગઇ તેની નામાવલી કોઇ મેળવશે ખરૂં કે? આ જમાનામાં પૃથ્વીના આ છેડાથી પેલા છેડા સુધી, આર્યાવર્તના કોઇ પણ ભાગમાં આપણે અમુક થોડાજ દિવસોમાં જ્યાં દિલ ચ્હાય ત્યાં સ્હેલાઇથી જઇ શકીએ છીએ, તો જેમનું ગોત્ર મ્હોટું હોય, તેઓએ શા માટે ગામમાં અને વાડાઓમાં ભરાઇ રહેવું જોઇએ? એથી પણ સમાજને અનેક જાતનાં અલભ્ય લાભો થાય તેમ છે. તેમજ વાડાઓ મટી સર્કલો થશે અને છેવટે સર્કલો મટી સમગ્ર સંપ્રદાયમાં ધીરે ધીરે વેવીશાળ થવા માંડશે. છે કોઇ હિમ્મતબાજ જુવાન મર્દ કે બે ચાર કન્યાઓ હિંદુસ્તાનના બીજા ભાગોમાં આપી ત્યાંથી પણ લાવી શકે? પરંતુ માબાપોને છોકરીને ગામથી બહાર, લાલચો અને સ્વાર્થોને તીલાંજલી આપી કાઢવી હોય ત્યારે કેની? આજે નૃસિંઘપરામાં કેટલાક યુવકો રળીને રોટલો ખાય એવી સ્થિતિવાળા કુંવારા છે, પરંતુ ગરીબો પાસે વધારે પલ્લું અને શ્રીમંતોને ત્યાં વગર પલ્લે તેમજ આજના ભારી પલ્લાંઓથી તેમજ વળી છોકરીના માબાપો બચપણમાં પારણામાં હોય ત્યારથી પૈસેટકે સુખી એવી વ્યક્તિઓને ત્યાં વેવીશાળ કરી દે છે. તેઓની ગરીબ અવસ્થાને લીધે પુત્રીવાળા જરા સરખી નજર પણ કરતા નથી. શું એ બધા ગોત્રના બંધનને લીધેજ કુંવારા રહી ગયા હશે? પુત્રીના માતાપિતાઓની આવી અધમ લાલસાથી કે લાયક થવાની ગેરહાજરીમાં?

'લાયક વર' ની વ્યાખ્યા કરતાં "જૈન હિતેચ્છુ" માં એક લેખક જણાવે છે કે, "સુધારક તરીકે ઓળખાવવા ઇચ્છતા કેટલાકોની વળી એ પણ ફરિયાદ સાંભળવામાં આવે છે કે, અમારી પુત્રીને લાયક વર અમારી જ્ઞાતિમાં કે અમારા સર્કલમાં નથી, માટે હમારે બ્હાર દોડવું પડે છે. કેટલીક તદ્દન **નાની જ્ઞાતિઓ** માટે આ ટીકા વ્યાજબી પણ ગણાય, પરંતુ મોટી જ્ઞાતિઓમાં અને મોટા સર્કલોમાં પણ આવી બૂમ પડાય છે ત્યારે જરા વિચાર કરવો પડે છે. 'લાયક' વરની વ્યાખ્યા તેઓ વિચિત્ર રીતે કરે છે. આજે ભીખારીને પણ શ્રીમંત જમાઇ જોઇએ છે. ગમે તેની કન્યાને માટે પણ બેરીસ્ટર વરૂ જોઇએ છે. સૌની મહત્વાકાંક્ષા હદપારની હોય છે. આવા લોકોને કોઇ એવા સલાહકારની જરૂર છે કે, જે તેમને એમ સમજાવે કે, "હિંદુ કરતાં પારસીમાં ફેશન વધારે છે, યાહુદી પાસે પૈસો વધારે છે, અમેરીકનમાં સાહસ વધારે છે, અંગ્રેજમાં કળા વધારે છે, માટે સૌથી વધારે લાયક વર તો એ લોકોજ જણાય, ત્યાંજ તમારી કન્યા આપો. તેઓ મોટર પણ બનાવી જાણે છે."!

આજે વસ્તી ઘટવાને વર્ષો થયાં, પણ એ બ્હોળા ગોત્રવાળાઓએ અવાજ ઉઠાવ્યો નથી કે ગોત્રબંધનને લીધે હમારી છોકરીઓ મોટી મોટી થઇ ગઇ છે, માટે ક્યાં વરાવીએ, તેમને આ ગોત્રીય ચર્ચા ઉપસ્થિત (આ સંબંધી મી. શાહે લેખ લખ્યાને) થયાને એક વર્ષ થયું પરંતુ એવી સંકટમય જીંદગી ગુજારનારી એકપણ વ્યક્તિ જાહેરમાં એ અવાજને અનુમોદન આપવા કેમ બહાર આવી નથી! વખતે સુધારાનો સેતાન ન ભરાયો હોય યા પ્રણયની શોધમાં અધુરા હોય તો પ્રભુ જાણે. એવી મુશ્કેલીમાં આવેલી કેટલીક વ્યક્તિઓએ ૧૫, ૧૮, કે ૨૦, વર્ષની પુત્રીઓ પરણાવી છે અથવા તો હાલ પણ એ ગોત્રમાં એવી મ્હોટી કન્યાઓ છે ખરી કે? અરે ગુજરાતના નૃસિંહપરામાં આંગળીના વેઢાપર પણ ગણાય તેટલી ચૌદ વર્ષની છોકરીઓ કુંવારી છે ખરી કે? એ સંજોગને લીધેજ કેટલાકના નસીબ ફરી ગયા હોય એમ એક જ્ઞાતિનો હોવા છતાં મ્હારી જાણમાં નથી પરંતુ કોઈ એકાદ બે વ્યક્તિ એ સંજોગોમાં સપડાઇ હોય, તો કંઈ સમગ્ર જ્ઞાતિ કે સમાજને ઉલટા માર્ગે જવા પ્રેરણા કરવી એ બુધ્ધિગુરૂપ ન કહેવાય, પરંતુ કંઇકોના નસીબ કેવી રીતે ફરી ગયા છે અને જાય છે તેના સત્ય પ્રમાણો હું બતાવીશ કે, કેટલાકો મ્હોટી મ્હોટી પહેરામણીઓ આપી અરે ખુદ માતાઓ કુટુંબીઓની મરજી ન હોય, છતાં પણ પોતાના પલ્લામાંથી આપવાની હઠ કરી પોતાની દેવરૂપ કન્યાને, સરખી ઉમ્મર હોવા છતાં, પુત્રી કરતાં તે મુરતીઆની શારીરિક હાલત કનિષ્ટ હોવા છતાં શ્રીમંતોના પૈસાની અગ્નિમાં સીઝવવા મુકે છે-વેવીશાળ કરે છે. જ્ઞાતિમાં એક વ્યક્તિ બબ્બે ત્રણચાર વખત કન્યાવિક્રય કરે છે અને ત્રીસ પાંત્રીસ કે પછી ચાલીસની ઉમરનો હોય તેવા મુરતીઆ સાથે સાત આઠ કે અગિયાર વર્ષની પુત્રીના ભવ બાળે છે, છતાં પંચો ઉંઘ્યાજ કરે છે, બિમાર હોવા છતાં પણ રોગના ભોગ બનેલા પોતાના પુત્ર માટે પૈસાની લાલચ આપી શ્રીમાનો કન્યા લઇ જાય છે, અને તે ભગિનિઓનો ભવ બગડે છે. કેટલાક શ્રીમંતોમાં ખેંચાઇ પોતાની પુત્રીને વરાવે છે, પણ જ્યારે વરના (લક્ષ્મિ સંગ્રાહક) પિતા સ્વર્ગે સિધાવે છે ત્યારે પછી કપૂત પુત્ર લક્ષ્મીની બરબાદી કરી પરણેતરના ઘરેણાંગાંઠાં વેચી દુઃખી થાય છે. કૂતરૂં ખેંચે ગામ ભણી અને શિયાળ તાણે ખેતર ભણી'ના સૂત્ર અનુસાર વર કન્યાને જોયા વગર, ભાઇ, બાઇ, સગાંસ્નેહી ઇત્યાદિ આપ્ત જનોના દાણદ્વાણુ, સરસપારસ, વારૂ છોકરી આપણી પાસે તો ખરી, શ્રીમંતને ત્યાં તો છે, વગેરે વગેરે નાશવંત આશાઓમાં લપટાઇને વેવીશાળ-થયા છે થાય છે. વરસ કે ૭ છ મહિનાના બાળકોના ભવિષ્યનો વિચાર કર્યા વગર વેવીશાળ કરે છે, આંખે દેખાય છે કે પુત્રી કરતાં તે મુરતીઆનું શરીર કનિષ્ટ દશામાં છે, છતાંપણ ગામમાં આવેલા જોઇ, લાગ સાધી ભાંજગડીઆ નાંખી વિવાહ ઠોકી બેસાડે છે અને કોઇ પૂછે તો કહેશે કે કયા દેશમાં નાંખવા જઇએ? "યાર, એક શ્રીમંતને ત્યાં તો મંડાઇ," એવી નીચ ભાવનાઓથી લાકડે માંકડું વળગાડી પ્રણય યુગલનો ભવ બાળે છે. એક કન્યાનું મ્હાનું કાઢી ઉમ્મર કે શારીરિક સ્થીતિનું નિરિક્ષણ કર્યા વગર જાણે વરો હોયજ નહિ તેમ એકને બદલે બબ્બે કન્યાઓ પરણાવી દઇ દંપતિઓને દુઃખમાં ઉતારે છે. આવા વિપરિત માર્ગોના સંજોગો અનેક યુગલો થયા છે અને થાય છે. બાકી ગોત્રીય લગ્નનો એક બ્હાનુંજ લાગે છે' જ્યાં ૭ ૭ ગોત્રો બચાવાય છે, ત્યાં દુઃખી જોડાનો ધ્વનિ સંભળાયો નથી. ત્યારે નૃસિંહપરામાં અને ગુજરાતના દિગંબરીઓમાં ફક્ત સગોત્રનોજ બગાર છે ત્યાં મી. શાહને કાને એ નાદ ન બજાય, એ અતિ આશ્ચર્યકારક છે. વળી દ્રષ્ટિમાં

વિદિત કરે છે કે, "ગોત્રમાં, કુટુંબમાં કે સગામાં લગ્ન કરવાથી જે જે સંતતિ ઉત્પન્ન થાય છે, તે નબળી ઉત્પન્ન થાય છે. વિજ્ઞાન શાસ્ત્રદ્વારા એમ સિદ્ધ થઇ ચુકયું છે, ત્યારે વહોરા, પારસી, મુસલમાન અને અંગ્રેજ લોકો સગામાં અને કુટુંબમાં પણ લગ્ન કરે છે છતાં આપણા કરતાં દરેક બાબતમાં ચડતા હોય એમ જણાય છે. તેઓનો ખોરાક બલિષ્ટ એમ કહો પણ આપણે તે માન્ય કરતા નથી તો તે વિષે વિશેષ અજવાળું પાડવાની જરૂર છે"

વિજ્ઞાનમાં શંકા!! એ જે સિદ્ધ કરે છે તે સર્વ કોઈ માન્યજ છે, કારણકે તે પ્રત્યક્ષ પ્રમાણોથી સિદ્ધ કરી બતાવે છે. પછી તેને માટે શંકા કરવી તે ઝવેરી બની પત્થરને હીરાની માફક ફેરવી ફેરવીને તપાસવા કરવા જેવું છે. જૈન ધર્મના રહસ્યોની ઝીણામાં ઝીણી બારીકીઓ શું જગતને વિજ્ઞાને સિદ્ધ કરી નથી બતાવી? વહોરા, પારસી મુસલમાન અને અંગ્રેજો કરતાં, શીખ, મરાઠા વગેરે જાતિઓ કસમાં કંઈ ઉતરે તેવી નથી. તે ચાલતા રણાંગણે (યુદ્ધે) સિદ્ધ કર્યું છે. ઇતિહાસ સાક્ષી આપે છે કે શાહબુદ્દીન ઘોરીને પૃથુરાજ ચોહાણે કેટલીકો વખત પરાજય કરી ઉભી પૂંછડીએ નસાડયો હતો, મહાન્ મોગલ બાદશાહ અકબર નરેશને સહાયકો જો ક્ષત્રીઓ ન થયા હોત તો—પક્ષમાં ન લીધા હોત તો, ઇતિહાસમાં ખ્યાતિ મેળવતે ખરી કે? કોણ ના કહેશે કે અકબર ક્ષત્રીઓના બળથી અને પ્રધાન બીરબલ જેવા કાર્યદક્ષ હીંદુની સલાહે ચાલવાથી ઇતિહાસમાં 'ન્યાયદાતા' તરીકે સોનેરી અક્ષરે કોતરાયો નથી? આર્યાવર્તનું રાજ્ય કોણે હીંદુઓ રાજાઓ પાસેથી છલ કપટ વગર લઈને મેળવ્યું છે! આજે પણ ભારતમાં ફક્ત ગુજરાત પ્રાંતજ નિર્માલ્ય, શૌર્યહીન વગેરે દરેક બાબતોમાં છેલ્લી પંક્તિએ છે. આપણે પણ બળમાં શ્રેષ્ઠ થઇ શકીયે, પરંતુ આપણી હીન્દુ સમાજમાં એ લોકો જેટલી નહાની ઉમરમાં બાળકોને શારીરિક કસરત આપવાની ટેવોનો સદંતર લોપ થઈ ગયો છે. બ્રહ્મચર્ય શું વસ્તુ છે તેનું હાલ આપણને ભાનજ નથી. તેઓમાં લગ્ન મ્હોટી ઉમર સિવાય થતાંજ નથી, મુસલમાનોમાં તો જે દિવસે સાદી (લગ્ન) થાય છે તે દિવસે સહગમન કરાવાય છે, તેમાં દંપતિની ઉમરો વીસ અને સોળ વર્ષની હોય છે એટલે આપણી માફક ન્હાની સરખી હોતીજ નથી. ત્યારે આપણામાં શાસ્ત્રઆજ્ઞાનું ઉલંઘન કરી, બાળલગ્નનો નિષેધ કહેવડાવનારા બાર, તેર અને બહુ જુલમ તો ચૌદ વર્ષની અપરિપકવ વય અને અવયવોની બાળકીનો ઘર સંસાર શરૂ થઈ જાય છે, તેમાં પણ વળી નહિ રાત કે નહિ દિવસ જોનારા વ્યવહારિક જ્ઞાન વગરના, પશુવૃત્તિ ધારણ કરી યુવાનીના અંકુરો ફૂટવા જેવી વીસ વરસની વયમાં તો વેંતીયા ખેંચી કાઢેલા જેવા બેચાર છોકરાના 'બાપાજી' બની જાય છે. તેમાં જનમ્યા તેટલા કે અર્ધા તો અવસ્ય આ અસાર સંસારને છેવટના પ્રણામ કરી સવેળા ચલતી પકડે છે. એવી અવસ્થામાં ગૃહસંસારના મંડાણથી રોગનો ભોગ થએલી કેટલીક અબળાઓ દીન પડેને દવાના ડોઝ લેવા જતી શહેરોમાં નજરે પડે છે.

વસ્તી વધવાનો મુખ્ય આધાર પરિપકવ વીર્ય અને અવયવો વિકસિત થયા પછી સંતતિ ઉત્પન્ન કરવા માટે યોગ્ય ઉમ્મરે જોડાવું તેજ છે. ભલે તેઓની પ્રજા નિર્માલ્ય ન ઉત્પન્ન થતી હોય, પરંતુ એટલું તો કબુલ કરવું પડશે કે આવી સંક્રમણની ક્રિયાથી જે દયા, નિર્મળતા, આચાર વિચાર અને શિષ્ટાચાર આજના વિશુદ્ધ ધર્મને ધારણ કરનારા હિંદુઓમાં છે, તે તેઓનામાં નથી. સર્વ ધર્મની દેશના અરે! ખુદ એ પારસી, અંગ્રેજ અને મુસલમાનોના શાસ્ત્રોમાં પણ ફરમાવેલ "अहिंसा परमो धर्मः"નું સત્ય સ્વરૂપ આજે એ ધર્મીઓ

હશે. દીનપર દીન સેંકડો હિંદુઓ ક્રીશ્ચીયન અને મુસલમાન પંથમાં ભુખમરાથી કે ધર્મજ્ઞાનને અભાવે વટલી જાય છે, તેનો તાજો દાખલો હાલ ખોજા પંથમાં ભળેલા સેંકડો હિંદુઓ છે. અને એ પંથની અગિઆર કે બાર લાખની વસ્તી છે તેમાં મોટો ભાગ હિંદુઓનો છે અને ખુદ એ પંથ સૂર્યવંશી રામચંદ્રજીના પુત્ર લવના વંશજો કહેવાતા લુહાણામાંથી ઉત્પન્ન થયો છે (વાંચો લુહાણા ઉત્પત્તિનો ઇતિહાસ). તેમજ વળી ઇતિહાસો સાક્ષી પૂરે છે કે. ઔરંગઝેબ અને બીજા બાદશાહોએ અનેકાનેક પ્રકારની ક્રુરતા વાપરી આર્યોને એ ધર્મ ગ્રહણ કરાવ્યો છે. જૈનોમાં પણ પૂર્વે હજારો બલ્કે. લાખો મનુષ્યો જૈન દિક્ષા સ્વીકારતા હતા ત્યાં આજે અફસોસ છે કે અત્યારે હજારોની સંખ્યા આર્ય સમાજ, વૈશ્નવ, શીવમાર્ગી કે થીઓસોફીસ્ટ વગેરે ધર્મને માનનારા દષ્ટિગોચર થાય છે. જ્યારે એ લોકોના મનપર તે ધર્મની સચોટ છાપ પડે તેમજ સુધારાના વરો ળીયામાં સપડાયા હોય તો આપણાથી વિરક્ત થાય તે કંઇ નવાઇ ખરી ? વસ્તી ઘટવાનું આ એક મહાન્ અંગ અને પ્રબળ કારણ ન કહેવાય ? તેર લાખની વસ્તીવાલા જૈન સંપ્રદાયમાં ભાગ્યેજ એકાદલાખ મનુષ્યો જગત્ વ્યાપી જૈન દર્શનના જ્ઞાતાદષ્ટા હશે ત્યારે સમાજની વસ્તી ઘટે, કુકર્મો આદરાય, એમાં કંઇ આશ્ચર્ય જેવું છે? ત્યારે એ નાસ્તિ ફક્ત ગોત્રીય લગ્નના મંડાણથી અટકશે ખરી કે ?

એ પ્રજા અત્યારે આપણા કરતાં આહાર માં એકના ભોગવે છે.

विद्यादशगुणं मांसं मांसाद्दशगुणं पयः ।
पयसोऽष्टगुणं तैलं खादयेन्न तु मर्दयेत् ॥

અર્થાત્-ધઉંના કરતાં દશઘણું બળ માંસમાં છે, (વૈદક, ગં. સુશ્રુત.), માંસથી દશઘણું બળ દુધમાં છે અને દુધ કરતાં આઠઘણું જોર તેલમાં છે, પરંતુ તેલ ખાવાના ઉપયોગમાં લેવાતું નથી. માત્ર એના મર્દનથીજ એટલા બળની પ્રાપ્તિ થાય છે.

હિંદુઓનું જીવન દુધ છે એનો સંબંધ ધાર્મિક ક્રિયાઓ સાથે પણ છે. પૃથ્વીપરનું અમૃત એનેજ કહેવામાં આવે છે. એમાં સત્વ વિશેષ છે, પરંતુ લાખ્ખો મણ દુધનું ડેરીમાં માખણ કાઢી લઇ પાણી જેવું આપણા ખાવામાં આવે છે અને તેપણ આપણા શ્રીમંત લોકોજ ખાય છે, કારણકે તેનો ભાવ પણ વિશેષ હોય છે. શહેરોમાં દુધવાળાઓ પાણી ભેળ્યા સિવાય ભાગ્યેજ દુધ વેચે છે અને જે ભેંસવાળાઓ સારાં અને પાણી વગરના દુધનો દાવો ધરાવી વેચે છે તેઓ કપાસિયા આદિ ભેંસોને મોઘા ભાવને લીધે પૂરતા મુકી ન શકવાથી વધુ ભાવ આપતાં છતાં પણ પુષ્ટિકારક દુધ હોતું નથી તેમજ મુંબાઇમાં ભેંસવાળાઓ ઘણે ભાગે વધુ દુઝાણું આવવા માટે ચૂનાનો વહેર અને કોપરાં ખવડાવે છે, તેથી તે ભેંસો થોડી મુદતમાં નીચોવાઇ નકામી થઈ જાય છે. તેથી કહેવાતું હશે કે મુંબાઇનું દુધ ગરમ હોય છે. હેલ્થ ઓફીસરના રિપોર્ટપરથી માલમ પડે છે કે મુંબાઇમાં પોણોસો ટકા દુધ સ્વચ્છ વેચાતું નથી. એક વખત જે દુધ અને છાશથી કરોડો મનુષ્યો પોષાતા હતા, ત્યાં આત્યારે લાખો મનુષ્યોને પણ મળવું દુર્લભ થઈ પડયું છે. એક દિવસ આપણા સર્વેને આંગણે પૃથ્વી માતા-ગાયના દર્શન થતાં, ત્યાં આજે એક શ્વાન સરખું પણ નથી જણાતું. એક વખતે આપણા કૃષિકારોના પુત્રો તાસલામાં દુધ અને રોટલો આરોગી શરીરે હૃષ્ટપુષ્ટ માલમ પડતા, ત્યાં આજે જુવાર કે ઘઉંના પણ ફાંફાં માલમ પડે છે. આપણા સાધારણ સ્થીતિના મનુષ્યો દિન પર દિન વધતી જતી મોંઘવારીને લીધે ખરચાઓ વધી જવાથી દુધ, ઘી ખાવામાં કસર કરે છે અથવા નામ માત્રજ વાપરે છે, તોપછી બિચારા શેઠીઆઓને નીહાલ કરનારા, પોતે

દિવસના બારે કલાક મહેનત કરી લોહી પાણી એક કરી શ્રીમંતોને ગાડી ઘોડે ફેરવનારા **મીલ** મજુરો કે એવા બીજા ખાતાઓમાં કામ કરનારા નોકરીયાત વર્ગને તો ક્યાંથીજ મળે? તેમજ વળી સુધરેલા જમાનામાં તો મોટે ભાગે મનુષ્યોને દુધ વાયડું પડે છે! કોઇ સ્વદેશ પ્રિય ગૃહસ્થને ત્યાં મેમાનગીરી દાખલ દુધના કટોરા આપ્યા હોય તો નાક મરડી કહેશે કે ભાઇસાહેબ, મ્હને નથી સદતું! બાદી થશે!! અરે! મ્હને તો ઝાડાજ થઇ જાય!!! મ્હારા મહેરબાન, ક્ષમા કરો. વારુ, ઘણો આગ્રહ છે તો ચાહ મુકાવી દો. તેમાં જોઇએ તો વધારે દુધ નાંખજો. "છે કામ ડાની કોટે રતન", આ ડાકીણીએ (ચાહે) સર્વ સ્થળે પગપેસારો કરી અમારા શરિર સૌંદર્યને વિકસાવનાર વીર્યને નષ્ટપ્રાયઃ કરી માનવ જન્મોમાંથી કાઢી નાંખી સત્યાનાશની પાટીપર અમારું શરીર લાવી નાંખ્યું છે. સર્વે કારણો પહેલાં દેહના રાજાને ક્ષીણ કરનારી આવી વસ્તુઓ શું મુખ્ય નથી? આ શ્લોકમાં ઘી વિષે ઉલ્લેખ નથી, પરંતુ દુધ કરતાં ઘી શ્રેષ્ટ શક્તિદાયક હોય એ સ્વભાવિકજ છે, તેમાં પણ આજે તલ્લીનું તેલ તો રહ્યું, પણ હલકી જાતના તેલો ચરબીઓ વગેરે મેળવાય છે અને તે પણ વળી ક્યાં ગરીબ વર્ગને પૂરું પડી શકે છે કે છુટથી ઉપયોગ કરી શકે છે! બિચારા સાત, દશ કે બાર રૂપડીના માસિક વેતનવાળા બબ્બે ચચ્ચાર છોકરા અને બૈરીનું પોષણ કરનારા ક્યાંથી દુધ, ઘી ખાઇ શકે તેમજ વળી જેઓને મળે છે તે મોઘા ભાવને લીધે કે કંજુસાઇને લીધે ક્યાં પેટ પુરતું ખાઇ શકે છે? મુંબાઇ નગરીની શેઠાણીઓ મહારાજને કહેશે કે જરા રોટલીઓ ઘસી ઘસીને ચોપડતા રહો, તેમ આપણે ત્યાં આવેલા મહેમાનોને પીરસતાં હાથ દો લાંબો થશે, પરંતુ ઘીની ધારડી વાંકી વળીના આંગળાનું દબાણ ક્યાં કોઇને અજાણ્યું છે. એનાથી હિનતું ખાસ છે. પરંતુ તેતો વર્જનીયજ છે, તેનાથી ઉતરતા ઘઉં છે, તે પણ કહો જોઇએ વારુ, આપણા ગુજરાતમાં દિગંબર જૈનના કેટલા ઘરો ઘઉંપર નિર્વાહ કરે છે? બેચાર ફુલકા રોટલીની ક્ષુધાવાળા સુરત, મુંબાઇ તરફ ઘઉંનો પ્રચાર છે. અમદાવાદમાં એક ટાઇમ ઘઉં વપરાય છે (શ્રીમંતોને ત્યાંજ), બાકી સાંજે તો અવશ્ય કરીને ભાતજ; નહિ શાક કે ન દુધ ત્યારે આજુબાજુની દશા કેવી હશે તે સહજ સમજી શકાય છે. મ્હેં કેટલાક કુટુંબો એવા જોયા છે કે, જેઓ કોઈ સગાસ્નેહી કે મ્હેમાન આવ્યા હોય, ત્યારે ઘઉં વાપરે છે. નહિતો ચોખા અને બાજરી વપરાય છે. વળી તેલ તેમાં પણ અત્યારે શીંગના તેલના પીપોએ જગ્યા લીધી છે. કોણ ના કહેશે કે અત્યારે એ પ્રજાનો આહાર આપણા કરતાં શ્રેષ્ઠ નથી ત્યારે આપણું આયુષ્ય ઓછું થાય, શારીરિક સ્થીતિ નબળી થાય અને તેઓને દરેક બાબતમાં મ્હડતા પણ માનીએ તો કંઇ નવાઇ જેવું નથી.

વસ્તી ઘટવાના કંઇક કારણો ઉપર દર્શાવ્યા છે. હવે સગોત્રમાં લગ્ન થવા પ્રારંભ થાય તો સમાજનું દુઃખ દૂર થશે કે દુઃખપર ડામ દેવા જેવું થશે તે વિચારીયે. ગોત્રવાળાઓ એક ગામમાં અથવા જીલ્લાઓમાં અને બ્હાર દેશાવરોમાં પણ હોય છે. એટલે ગોત્રનું બંધન નષ્ટ થાય તો, છોકરીઓ આપણી પાસે તો ખરી, છોકરીને આપણી દાઝ તો ખરી, વખતે શું છે ને શું નહિ વગેરે નાશવંત આશાઓપર મદાર બાંધનારા ગામમાંજ વરાવશે એટલે પુત્રીને સાસરે બને છે કે નહિ, પતિ સાથે પણ બને છે કે નહિ એવી વાતો પર વિશેષ ધ્યાન અપાશે અને તેથી સમાજમાં કલહ ઉદ્ભવશે તેમજ કેટલાક કુટુંબોમાં કુસંપનું મંડાણ રહેશે. પુત્રો માતાપિતા બાઈ બાંદુથી વિખુટા પડશે. એક ગામમાં કે જીલ્લામાં પરણાવવાની ભાવનાઓ ઘણીજ પ્રબળ થાવે છે તેને ઉત્તેજન મળશે અને તેથી જે છોકરીઓના મોટી ઉમર

(તિપણુ ૮-૧૦) સુધી વેવીશાળ નથી થતા અને તે કન્યાઓને બ્હારગામ વરાવવી પડે છે તે ન્હાની ઉમ્મરોમાં પોતાના ગામમાંજ અને પિત્રાઇ ગોત્રીઓમાંજ સગાઇસંબંધીમાંજ મંડાઇ જશે, એટલે "હું અને મ્હારા મોહનભાઇ, જેવા વિચારો-પ્રવૃત્તિ, વાડાઓનું બંધન નષ્ટ કરવાને બદલે મજબુત થશે. અને વળી વ્યવ્હારીક અને ધાર્મિક જ્ઞાનથી વિમુખ એવી અભણ સમાજ ઉમ્મરનું પ્રમાણ વગેરે શાસ્ત્રોક્ત પ્રમાણ વિસારી સગાઇ સંબંધ કરશે અને તેથી દિન પર દિન આપણી અધમ અવસ્થાજ થવા પામશે અને દેશ દેશાવરના ભાંડુઓને આપણે સદંતર વિસારી મુકવા પડશે, અરસપરસ સંબંધ વધે, ઐક્યતા રહે, દૂર વસતા આપણા બન્ધુઓની સ્થીતિ, વિચાર વગેરેનું નિરિક્ષણ કરી આપણી અને તેઓની સ્થીતિ સુધારી શકીયે તેવા ઉદ્દેશથીજ, સોમસેન આચાર્યકૃત ત્રીવર્ણાચારમાં પુત્રીને પોતાના ગામથી પાંત્રીસ ગાઉ અગાડી વરાવવા કહ્યું છે. એ શ્લોકની સત્યતા અત્યારે પણ વિદિત થાય છે કે, જો આપણે કોઇ ગામડામાં પરણ્યા હોઇએ અને આપણે તે ગામ ગયા હોઇએ તો ગામમાં પેરતાંજ થઈ રહેશે કે આપણા ફલાણાના જમાઇ આવ્યા છે. એક મોહલ્લામાં વસનારા પછી ગમે તે જુદી જુદી જ્ઞાતિના હોય, પણ કહેશે કે કેમ છો ? ભાઇ, બ્હેન વગેરે એક કુટુંબના-એક લોહીના હોય તેવોજ ભાવ વ્યક્ત કરી બોલાવશે. આ પ્રેમાળ શબ્દોના ભાવો અવર્ણનીય છે. જ્યાં નીકટનો રક્ત-સંબંધ-એક લોહી હોય ત્યાં વેવીશાળ કરવા એજ દીર્ધાયુષી સંતાન ન થવાનું અથવા સંતાનજ ન થવાનું પ્રધાન કારણ છે."

નાનપણમાં થતા વેવીશાળ બંધ કરવા તો રહ્યા, પણ તેને ઉત્તેજન મળશે, કારણકે માંહોમાંહે વેવીશાળ કરવાનું હોવાથી રખેને આવું સારૂં ઘર અને સગું વળી બીજું કોઇ મારી જશે એવી બ્હીકથી તેઓ ચોકડાં ગોઠવી મુકશે અને તેથી બીજવરોને અત્યારે જે કન્યા સ્વપ્નવત છે તે સ્વપ્ને પણ આવશે નહિ અને વળી સાટા કે જે વહોરા આદિ કોમમાં થાય છે અને તેવું આપણા ગુજરાતમાં પણ કાંઇક છે, તેને પુષ્ટિ મળશે અને છેલ્લે સરવાળે આપણી સમાજ **દુધની સગાઇ** પર ઉતરી પડશે.

'**ગોત્રોની પ્રાચીનતા માટે**' શાસ્ત્રોક્ત દલીલોથી વિભુષિત એક લાંબો લેખ મ્હારી પાસે છે પરંતુ વાંચકને કંટાળો ન આવે માટે દલીલો પર સ્ટોપ કરી ટુંકમાંજ સમાપ્ત કરવાની ફરજ પડે છે. પ્રસ્તુત લેખમાં જૈન સમાજમાં જે વસ્તી ઘટી રહી છે તેને આપણે કેવી રીતે પુગી વળવું એજ મુદ્દાનો વિષય છે. '**ગોત્રનું બંધન સમાજવૃધ્ધિમાં ખલલકર્તા છે એમ ઘડી ભર પણ માનવા હું ના કહુંછું**' વસ્તી ફક્ત જૈનોનીજ નથી ઘટતી પરંતુ ભારતવર્ષના હીંદુ સમાજની ઘટે છે, તે માટે ગુજરાતી, સરસ્વતી, આર્યપ્રકાશ, નવયુગ, વગેરે વગેરે સામાજિક તેમજ દરેક કોમી પત્રોમાં લેખો પ્રસિદ્ધ થયા છે અને તેમાં ઘણોજ ઉહાપોહ થયો છે, પરંતુ તેમાંના કોઇ પણ લેખમાં ગોત્રની ગંધ સરખીએ નથી.

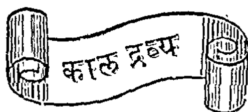
વસ્તી કેમ ઘટે છે ? એ સવાલ આપણને ઘણા ગુંચવડામાં નાંખે છે. પ્રથમ તો '**જૈન**' એટલે જગતના બંધનો અને સંસારની વાસનાઓ પરથી જય મેળવે તે '**જૈન**' અને એવા વિજયવેત્તાઓએ કથેલું રહસ્ય 'ધારણ કરે તે ધર્મ' પરંતુ આવા એક જગતના ધર્મને આજે 'નામ માત્રથીજ' ધારણ કરી રહેલાઓનો સંપ્રદાય બંધાઇ ગયો છે કે જેનાં સત્રો ગ્રહણ કરનારને જૈન બનાવી તેની સાથે કોઇ પણ જાતનો સંબંધ જોડી શકતા નથી અને તેને જૈન નહિ પણ જૈનેતર નામથી સુધારાવાળા જમાનામાં સંબોધાય છે. સોળમી શતાબ્દિ

સુધી જો. ધર્મગુરૂઓએ અનેક જ્ઞાતિઓના લાખ્ખો મનુષ્યોને જૈન બનાવ્યા છે, તેમાંનું આજે સ્વપ્નું પણ નથી. વળી જણાવ્યા પ્રમાણે શ્રીમદ્ ઉમાસ્વામીએ સ્થાપેલી જૈન જ્ઞાતિઓમાંની કેટલીક આજે અજૈનમાં ગણાય છે જેમકે નાગર, મોઢ, લાડ, કપોળ, ખડાયતા વગેરે. વળી વસ્તી ઘટવાના કેટલાક સંજોગો શાસન-પ્રણાલિકાને આધીન છે. જેમકે યુરોપમાં લગ્ન સંબંધમાં ખાસ કાયદાઓ હસ્તી ભોગવે છે. તેમજ પરણનારાઓને વૈદિક તપાસમાં ઉત્તીર્ણ થવું પડે છે અને ઉમ્મરનું પ્રમાણ ગૃહસંસાર ચલાવવા યોગ્ય હોય તોજ લગ્ન થાય છે. વળી ત્યાં ફરજ્યાત કેળવણી સાથે વ્યવહાર ઉપયોગી જ્ઞાનપણ આપવામાં આવે છે. ત્યારે આપણે ત્યાં એમાનું કશું નથી તેમજ વળી વસ્તીની થતી ભયંકર ક્ષતિ માટે આજે હદ ઉપરાંત થતું બાળકોનું મરણ પ્રમાણ આપણું હૃદય ચીરી નાંખે છે. યુવાન વિધવાઓની આંખ મીચીને વધતી સંખ્યા આપણા પૂર્વજોને કલંકિત કરશે એવી બીક રહે છે અને તેમના વિદીર્ણ થએલા હૃદયમાંથી નિકળતી હાયરૂપી જ્વાળા આ આર્યાવર્તને ભસ્મીભૂત કરશે એવા વિચારો મનમાં કુતુહલ મચાવે છે. નાની ઉમ્મરમાં સુવાવડ આવવાથી થતી નિર્માલ્ય સંતતિ તેમજ રોગનું ઘર બનેલી **દેશજનનીઓની** સુખ-મુદ્રા આપણા મનોનિગ્રહમાં એક જબરો આઘાત કરે છે. વળી બાળલગ્ન અને અપરિપક્વ વયમાં મંડાતો ગૃહસંસાર અને ગોખણ-પટ્ટીવાળી કેળવણી અગણિત યુવકોનું સૌંદર્ય હરણ કરી–ચીર લૂંટી લઇ આપણા નેત્રોને સાંત્વન આપવાને બદલે બાલ્યાવસ્થામાં એમ આ પુત્રો આ આર્યદેશને શું કરી શકશે, એવા વિચારોથી ચમકવું પડે છે. ક્ષીણપુષ્ટ સ્તંભને સ્મરો રાખી બેઠેલા મા. પટિયાર કહે છે કે "જ્યારે વૃદ્ધ માતાઓની સાથે તેમની દીકરીઓની તથા દીકરીની દીકરીઓના કદની સરખામણી કરીએ અને જ્યારે વૃદ્ધ વડી સાસુઓની સાથે જુવાન વહુઓની તથા તેમના દીકરાઓની નવી નવી પરણેલી વહુઓની સરખામણી કરીયે, ત્યારે તેઓના કદ ઉપરથી આપણે સમજાય છે કે **પચ્ચીસ વર્ષમાં અર્ધો ફુટ ગેબની** વાત તદ્દન સાચી છે." જેમ સ્ત્રીઓના કદમાં ઘટાડો થતો જાય છે, તેમ પુરૂષવર્ગમાં ક્યાં નજરે નથી પડતો ? ત્યારે સહજ પ્રશ્ન ઉદ્ભવે છે કે, માત્ર પચ્ચીસ વર્ષમાંજ **અર્ધો ફુટ ગેપ** તો સો બસો વર્ષમાં મનુષ્યોના શરીર કઇ દશાએ પહોંચશે ? આપણે ગમે તેટલા પ્રયત્નો સેવીયે તોપણ કુદરત પોતાનું કાર્ય આરોપે તેમ નથી. તેમ થાય તો જૈન અંગના પાઠીઓએ બાંધેલી કાળની–શરીર, આયુષ્ય આદિની મર્યાદા ખોટી પડે. એક બાજુ પૌષ્ટિક ખોરાક પેદા કરનાર સાધનોનો અભાવ નાશ થતો જાય છે અને પૌષ્ટિક ખોરાકની અછત વધતી જાય કે જે વીર્યને બલિષ્ટ બનાવી દીર્ઘાયુ સંતતિ ઉત્પન્ન કરવામાં મુખ્ય ભાગ ભજવે છે તેમજ મોંઘવારી કુદકે અને ભુસકે પોતાનું પાથરણું પ્રસરાવે છે. કહેવાય છે કે ભારતમાં હજારો કુટુંબ આજે એક વાર ભોજન કરે છે, તેમજ સ્વદેશના હવાપાણી અને હિંદુઓની ખાન-ખોરાકી વિરૂદ્ધના અનેક પીણાઓ રોગીષ્ટ બનાવી આયુષ્યની દોરીપર એક સજ્જડ ફટકો લગાવે છે. સ્ત્રીઓને ઋતુ પ્રાપ્ત થયા પછી થતી શુભ ક્રિયાઓથી અજ્ઞાન હોવાને લીધે તેમજ તેને અંગેના કેટલાંક શુભ કારણો વંશવૃદ્ધિ માટે પ્રથમ આડે આવે છે વગેરે વગેરે અનેકાનેક વિચારો પરત્વે લક્ષ દોરવવાનું છે. કુદરત અનુકુળ થશે તો આવતાજ અંકમાં સમાજવૃદ્ધિ માટે કંઇક વિચારો જણાવવા ઇચ્છા છે, તે બાબતના કુદરતને આધિન હોવાથી અત્યારે તો લખવામાંજ સંતોષ માનવો પડે છે.

આ લેખ પ્રસ્તાવિક લેખની સમાલોચના તરીકે લખાયો છે તેને હું ના કહી શકું તેમ

નથી, પરંતુ એમાં કેટલુંક એ વિચારો પરત્વેનું છુપું રહસ્ય-સત્ય સમાયલું છે તે વાચકથી નાં પાડી શકાય તેમ નથી તેમજ એની આલોચના થશે તે પણ મ્હારા ધ્યાન બ્હાર નથી અને ત્યારેજ ' वादे वादे जायते तत्वबोधः ' આ સૂત્રાનુસાર સત્યતાનું રહસ્ય સમજાશે, પરંતુ એ મહર્ષિમાં ખપી હમાનંદે જે અર્થોના અનર્થો ઉપજાવ્યા છે તેવું ન થાય ' માટે ટીકાકારોને મિત્ર ભાવે સુચન કરે છે, તેમજ સરળ હૃદયથી તત્વ શોધી તટસ્થપણું જાળવી જૈનત્વ કે આર્યત્વનો નાશ ન થવા પામે તે લક્ષમાં રાખવા ધ્યાન ખેંચે છે. એક અંગ્રેજી પુસ્તકમાં કહ્યું છે કે—

હે સુધારક ! જ્યાં સુધી વસ્ત્રપર ડાઘ બાકી હોય ત્યાં સુધી તેને ધોવાનું કારણ ઉપસ્થિત છે, એમાં તો લેશ માત્ર પણ શંકા નથી અર્થાત્ કલંકને કાઢી નાંખવા માટે વસ્ત્રને ધો-એમાં મારો વાંધો નથી, પરંતુ એમ કરવા જતાં વસ્ત્રને એટલું બધું ચોળી નાંખવું ન જોઇએ કે ડાઘની સાથે તે વસ્ત્રનો પણ નાશ થઈ જાય.



(लेखकः-अमोलखचन्द्र उडेसरीय-इन्दौर.)



सारमें देखा जाता है कि हर-एक पदार्थकी हालत बदलती है। एक हालतमें कोई भी पदार्थ कायम नहीं रहता, अतः इन तमाम हालतोंका बदलनेवाला कोई पदार्थ अवश्य होना चाहिये। दूसरी बात यह भी है कि सांसारिक कार्योंमें घडी, घंटा, दिन, रात वगैरहका भी व्यवहार होता है। दुनियावी कार्य कोई भी विना इसके नहीं चल सक्ता है इसके लिये यह विचार करना होगा कि घडी, घंटा वगैरह व्यवहारकी जो प्रसिद्धि है वह क्यों कर है? क्यों कि विना मूल कारण के कोई भी कार्य या बातकी प्रवृत्ति नहीं होती है जैसे कहा जावे कि यह मनुष्य सिंहके समान पराक्रमी है। यदि सिंह कोई पदार्थ नहीं होता तो सिंहके समान है यह बात कभी प्रवृत्त नहीं हो सक्ती थी। इसी प्रकार यदी कोई मूल पदार्थ 'काल' नहीं होता तो यह घडी घंटारूप व्यवहारकाल उत्पन्न नहीं हो सक्ता है इससे आपको मानना पडेगा कि काल द्रव्य कोई अवश्य है।

जैन सिद्धान्त कहता है-'कालश्च' अर्थात् जैसे जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश द्रव्य हैं इसी तरह काल भी एक द्रव्य है। येही षट् द्रव्य जैनधर्मने माने हैं इनमें इस काल द्रव्यका संक्षिप्त वर्णन यहां लिखा जाता है।

जैन सिद्धांतने इस कालको द्रव्य रूप माना है क्योंकि द्रव्यका लक्षण "गुणपर्ययवद्द्रव्यं" है अर्थात् जो हमेशा साथ रहें कभी न छूटें वह तो गुण हैं, और गुणोंका जो विकार सो पर्याय है जिसमें ये दोनों हों वही द्रव्य है जैसे अग्निका गुण उष्णता है और कमी वेशी-रूप परणमन होना यह पर्याय है। इसी तरह कालमें अगुरु लघुत्वादि गुण हैं वर्तना परिणाम वगैरह पर्याय हैं अतः काल द्रव्य है।

काल द्रव्यका लक्षण वर्तना है अर्थात् जीव पुद्गल वगैरह द्रव्योंका एक पर्यायसे दूसरी पर्याय पलटनेमें जो सहकारी कारण है इसको वर्तना कहते हैं और यही निश्चय (मूल) काल द्रव्य है। यह द्रव्य सूक्ष्म अणु मात्र है, एक प्रदेशी है परंतु वे अणु संख्यामें लोकके बरावर असंख्यात हैं, रत्नोंकी राशिके समान प्रथक् २ स्थित हैं।

जैसेः-लोयायास पदेसे, एक्केके जेठिया हु इक्केका।
रयणाणं रासीमिव, ते कालाणु असंख दव्वाणि॥
(नेमिचन्द्र सिद्धांतचक्रवर्ति.)

इन हरएक परमाणुओंमें संपूर्ण पदार्थोंकी पर्याय पल्टानेकी शक्ति है।

यहां इससे यह न समझ लेना चाहिये कि पदार्थोंमें स्वयं शक्ति कुछ नहीं

है यह काल द्रव्य ही पर्यायें बदलता है। हरएक पदार्थमें स्वयं पर्याय पलटनेकी उपदान शक्ति मौजूद है। यह काल द्रव्य केवल सहकारी कारण है। जैसे मिट्टीमें घड़ा बननेकी शक्ति होनेपर भी विना चाक, कुंभकार वगैरहके घड़ा नहीं वन सक्ता है इसी तरह हरएक द्रव्यमें परिणमन होनेकी शक्ति रहते हुए भी विना कालकी सहायता परिणमन नहीं हो सक्ता था अतः काल द्रव्य सहकारी कारण है। और सहकारी कारण होकर भी जैसे चाक कुंभकार वगैरह घटसे भिन्न होते हैं, इसी तरह यह द्रव्य भी अन्य द्रव्योंसे पथक् रहता है-मिल नहीं जाता है। इस प्रकार मुख्य काल द्रव्य कहा गया है।

जो निश्चय काल द्रव्यसे पर्याय उत्पन्न होनेरूप है और जो द्रव्योंकी पर्याय पलटनेसेही जाना जाता है उसको व्यवहार काल कहते हैं। जैसे समय, आवली, घड़ी, घंटा वगैरह; इसीसे संसारका काम चलता है, देना, लेना, छोटे बड़ेका व्यवहार, आयु स्थिति सब इसीसे शुमार की जाती है।

कोई ऐसा समझते हों कि एक घंटा चला गया, एक महिना, एक वर्ष चला गया, दूसरा वर्ष आया ऐसा लोकमें कहा जाता है इससे शायद कोई चीज आती जाती हो सो यह बात नहीं है। न कुछ आता है न जाता है यह दिन रातका व्यवहार पुद्गल द्रव्यकी पर्याय पलटनेके आधार पर संसारी काम चलनेके लिये कल्पना किया गया है। विचार देखिये कि सूर्य उदय होता है तब हम कहते हैं दिन आया, फिर ज्यों२ उसकी हालत बदलती जाती है कहते हैं सबेरा गया दुपहर आया शाम आगई। छिपने पर कहते हैं रात्री आगई। अब कहिये क्या आया क्या गया? सूर्य नामा पुद्गलकी हालत पलटने पर हमने ही दिन रातकी कल्पना करली है इसीसे व्यवहार चलता है यदि यह कल्पना न की जाती तो व्यवहार नहीं चल सक्ता था। इस प्रकार द्रव्योंके परणमनरूप व्यवहार काल है यथाः- द्व्व परिवट्ट रूवो, जो सो कालो हवेइ ववहारो। (नेमिचन्द्र)

इस व्यवहार कालके मुख्य दो भेद हैं। उत्सर्पिणी१ अवसर्पिणी२। जिसमें मनुष्योंकी आयु काय, बल वगैरह बढ़े वह उत्सर्पिणी काल है, और जिसमें ये बातें क्रमर से कम होती जावें उसको अवसर्पिणी कहते हैं। इन दोनोंका समय हरएकका दश दश कोड़ाकोड़ी सागरका है। और इन दोनोंके जोड़को कल्प काल कहते हैं। करोड़से करोडके गुणनकालको कोड़ाकोड़ी कहते हैं।

ऊपर कहे हुए दोनों कालोंके प्रत्येकके छह छह भेद हैं। अर्थात् प्रत्येकके छह काल होते हैं-१. सुषमासुषमा, २. सुषमा, ३. सुषमा दुःषमा, ४. दुःषमासुषमा, ५. दुःषमा, ६. दुःषमा दुःषमा ये छह भेद अवसर्पिणी के हैं। और उत्सर्पिणीके इस प्रकार हैं-१. दुःषमा दुःषमा, २. दुःषमा, ३. दुःषमा सुषमा, ४. सुषमा दुःषमा, ५. सुषमा, ६. सुषमा सुषमा।

इस प्रकार छहों कालोंका परिभ्रमण होता रहता है जैसे दिनसे रात्रि, शुक्ल पक्षसे कृष्ण पक्षका फिरना होता है।

अवसर्पिणीका पहला काल चार कोड़ा कोडी सागरका, दूसरा तीन कोड़ा कोडी सागरका, तीसरा दो कोडा कोड़ी सागरका, चौथा व्यालीस हजार वर्ष कम एक कोडा कोडी सागरका, पांचवां, इक्कीस हजार वर्षका, छट्टा भी इक्कीस हजार वर्षका होता है। और उत्सर्पिणी कालका पहिला दूसरा, तीसरा, चौथा, पांचवा, छट्टा काल क्रमसे अवसर्पिणीके छट्टे, पांचवे, चौथे, तीसरे, दूसरे, पहिले के बराबर होता है, इनमें मनुष्योंका आयु, काय, बल वगैरहका भी क्रम इसी प्रकार समझ लेना चाहिये।

अवसर्पिणीके १। २। ३ और उत्सर्पिणीके ६। ५। ४ में भोग भूमि रहती है और बाकी कालोंमें कर्म भूमि होती है। जिसमें विना असि, मसि, कृषि वगैरह कार्यों के किये हुए ही स्वयमेव पुण्यके उदयसे सुखकी सामिग्री मिलती हैं, उसको भोग भूमि कहते हैं। जिसमें व्यापार वगैरह षट्कर्मोंसे आजीविका कर निर्वाह हो उसको कर्मभूमि कहते हैं।

भोग भूमि।

जहांपर भोजन, वस्त्र, आभरण वगैरह के लिये कुछ आजीविका नहीं करनी पड़ती, दश प्रकारके कल्पवृक्ष हैं उनसे यथेष्ट चीजें मिल जाती हैं। दश प्रकारके कल्पवृक्षोंके नाम ये हैं:-मद्यांग, तूर्यांग, विभूषांग, स्रगांग, ज्योतिरंग, दीपांग, गृहांग, भोजनांग, पात्रांग, वस्त्रांग, इन वृक्षोंसे दुग्धादि पेय पदार्थ, बाजे, आभूषण, मालाएं, अनेक तरहके प्रकाश, दीपक, घर, भोजन, वर्तन, वस्त्र इस प्रकार सर्व वस्तुओं मनके माफिक जितनी चाहिये उतनी इच्छा करते ही उसी वक्त मिल जाती हैं।

मनुष्योंके शरीर सुदृढ, सौम्य, सुंदर होते हैं और हर समय मुकुट, कुंडल, हार, वगैरह आभूषणोंसे सुसज्जित रहते हैं। जिनको कोई रोग कभी नहीं होता, न उनका कहीं आना जाना होता है, मल मूत्रादिककी बाधा नहीं होती, पसीना नहीं होता, न उनको कोई मनमें चिंता वगैरह उत्पन्न होती है। न कोई और दुःख, इष्ट वियोग, अनिष्ट संयोगादिकका होता है। क्योंकि वहांपर अकाल मृत्यु नहीं है। आयु पूर्ण होनेपर ही मरण होता है। स्त्री पुरुषकी दोनोंकी बराबर आयु होती है। दोनोंका एक ही समय मरण होता है इसलिये किसीको किसीका दुःख नहीं हो पाता और उनके जुगलिया (पुत्र-पुत्री) संतान भी उसी समय जन्म लेती है, इधर मातासे संतानका उत्पन्न होना, उधर स्त्रीको जंभाई, पुरुषको छींक आती है इसीसे मरण होजाता है, शरीर कपूरके समान उड़ जाता है, संतानको यह नहीं मालूम पड़ता कि हमारे माता पिता कोन२ थे। माता पिताको यह नहीं मालूम होता कि हमारी

संतान कौन कहां है, फिर वेही कुछ दिनोंमें अंगूठा पीपीकर जवान होजाते हैं।

वहांपर किसीसे लड़ाई वगैरह नहीं होता क्योंकि लड़ाई होती धन वगैरह के लिये। वहांपर सबको यथेष्ट सम्पत्ति मिल जाती है तो फिर लड़ाई किस लिये हो। इस लिये मंद कशायी रहते हैं, और वहांसे मरकर नियम देव पर्याय पाते हैं। यहां पर जन्म होना पात्र दानका फल है।

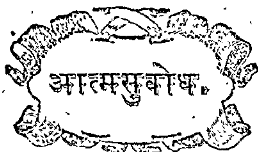
❋ कर्म भूमि ❋

जहांपर उपर्युक्त कल्प वृक्षोंका अभाव हो जाता है। और भोग भूमिसे विपरीत सब कार्य होते हैं यह वर्तमानमें कर्म भूमिका ही फैलाव हो रहा है यह आपके प्रत्यक्ष अनुभव ही है

अवसर्पिणीके प्रथम कालमें उत्कृष्ट भोग भूमि, दूसरेमें मध्यम, तीसरेमें जघन्य होती है, कल्पवृक्ष वगैरह सुखके साधनोंमें कुछ कमी वेशी नहीं होती। हां, आयु कायादिमें फर्क हो जाता है-पहिले कालमें आयु ३ पल्यकी, शरीर ३ तीन कोशका, भूखकी तीन दिन पीछे इच्छा होती है, वेर (बद्रीफल) समान थोड़ा आहार होता है। दूसरे कालमें २ कोशका शरीर, २ पल्यकी आयु, २ दिन पीछे भूखकी इच्छा, बहेडे प्रमाण आहार, तीसरे कालमें १ पल्यकी आयु, १ कोशका शरीर, एक दिन पीछे आहार की इच्छा, आवले प्रमाण आहार होता है-तीसरे कालके अंतमें पल्यका आठवां भाग समय शेष रहनेपर कल्पवृक्षोंकी शक्ति मंद मंद होने लगती है। तब सूर्य चन्द्रमा वगैरह दिखाई देने लगते हैं, क्योंकि पहिले कल्पवृक्षोंके सामने इनकी ज्योति मालूम नहीं पड़ती थी, भोजनांग वगैरह जातिके कल्पवृक्षोंमें शक्ति घटती जाती है। तीसरे कालके अंतमें १४ कुलकर होते हैं, इनमेंसे पहिले कुलकरसे लेकर अंतके कुलकर तक सर्व प्रत्येक बातका क्रमसे समाधान बतलाते हैं। चन्द्रमा सूर्यको प्रकाश देनेवाला बतलाकर चित्त संतोषित करते हैं; और भोजन वगैरहकी सब विधि बतलाते हैं। कर्म भूमिके आगमनकी बात सब कहते हैं। इस तरह तीसरा काल होता है। चौथे कालसे कर्मभूमिका आगमन हो जाता है, इस कालमें जुगलिया धर्म नहीं रहता, कल्पवृक्षोंका बिलकुल अभाव हो जाता है, भूख बढ़ जाती है, आयु काय घट जाती हैं, इसमें मोक्षमार्ग प्रकाश होता है, और चौदहवें कुलकरसे तीर्थंकर जन्म लेते है येही व्यवहार मार्ग, व्यापार मार्ग, और मुनि होकर केवलज्ञान प्राप्त कर धर्मका मार्ग प्रगट करते हैं। इस तरह चौथे कालमें २४ तीर्थंकर, नव नारायण, नव प्रतिनारायण, नव बलभद्र, बारह चक्रवर्ति इस प्रकार त्रेसठ सलाका पुरुष होते हैं और मोक्षका मार्ग जारी रहता है। फिर चौथे कालके बाद पांचवा काल आता है (जो अभी वर्तमान मौजूद है) इसमें धीरे२ धर्म कर्म आयु बलादिकी कमी होती जाती है। पांचवें कालके अंत में धर्म बिलकुल छिप जाता है, मनुष्य अन्यायी, धर्मसे परान्मुख हो जाते हैं।

इसके बाद छट्ठा काल आता है। जिसमें भी धर्म कर्मका बिलकुल अभाव हो जाता है-मनुष्य मांसाहारी होते हैं। छट्ठे कालके अंतमें एक हाथका शरीर और १२ वर्षकी आयु रह जाती है, और ४९ दिन शेष रहनेपर अग्नि वगैरहकी वर्षा शुरु होती है, जिसमें सब रचनाका प्रलय हो जाता है। कुछ जीव विजयार्द्ध वगैरह की गुफाओंमें छिप जाते हैं इस प्रकार छट्ट कालका परिवर्तन होता है इसके पश्चात् जब प्रलय बंद हो जाता है तब सचिक्कण पदार्थोंकी वर्षा होती है जिससे पृथ्वीमें धान्यादिककी उत्पन्न होने की शक्ति आजाती है, और स्वयमेव धान्यादिक उत्पन्न होने लगते हैं, हैं, तब वो जीव विजयार्द्ध वगैरहसे आ आकर विचरते हैं उन्हींसे सृष्टिकी बढ़वारी होती है। यही उत्सर्पिणी कालका आगमन है और फिर धीरे२ हरएक प्रकार की वृद्धि होती जाती हैं। इस कालका भी अवसर्पिणीके समान परिभ्रमण होता है, इसका क्रम पहिले लिखा जाचुका है इस रीतिसे कालचक्र सदैव चलता रहता है। यही काल द्रव्यका अस्तित्व बतलाता है।

यहांपर यह भी प्रगट किया जाता है कि इन छहों कालोंका परिभ्रमण भरतक्षेत्र और ऐरावत क्षेत्रके आर्य खंडमें ही होता है शेष क्षेत्रों तथा खंडोंमें एकसा ही सदैव काल रहता है। अर्थात् विदेह क्षेत्र के देव कुरु, उत्तर कुरु, हरिक्षेत्र, रम्यक क्षेत्र, हेमवत क्षेत्र, हैरण्यवत क्षेत्र इनमें पहिले दोमें उत्कृष्ट भोगभूमि (पहिला काल), बीचके दोमें मध्यम भोगभूमि (दूसरा काल), अंतके दोमें जघन्य भोगभूमि (तीसरा काल) रहता है। विदेह क्षेत्र, और भरत, ऐरावत के ५ म्लेच्छ खंडोंमें चतुर्थ काल रहता है। म्लेच्छ खंडोंमें मोक्षमार्गका अभाव है, वहांसे कोई जीव कभी मोक्ष प्राप्त नहीं कर सक्ते। विदेह क्षेत्र में सदाकाल मोक्षमार्ग जारी रहता है। और बीस तीर्थंकर सदैव विद्यमान रहते हैं। जिनकी स्तुति पूजा कर तथा उनकी दिव्य ध्वनि द्वारा तत्वज्ञान और धर्म लाभ प्राप्तकर सम्पूर्ण जीवधारी सुखकी प्राप्ति करते हैं। अतः मैं भी उन प्रभुको स्मरण कर नमन करता हूं।



(લેખકઃ-પુનશી અર્જુન શાહ-ધુળીઆ.)
(ગયા અંકથી ચાલુ)

હે આત્મા! દેહમાં દેખાતા પ્રત્યક્ષ રોગોને સ્નેહી સંબંધીઓ, માતા કે પિતા, બંધુ કે ભગિની, નારી કે જાયા જેમ લઇ શકતા નથી, તેમ તારા પાપોને પણ લેવા શક્તિમાન નથી. તે તો એક આત્મા કે જેણે કર્મો કર્યાં છે તેજ ભોગવે. તે દુઃખ દેહનેજ ભોગવવું પડે છે. સંસારિક દ્રવ્યની કમાઇમાં બધા ભાગ લેવા તૈયાર થઇ જાય છે ત્યારે **પાપના કોઈ પણ ભાગીદાર થનાર નથી.** તે વિપાકો આપણનેજ હે આત્મા! તારાજ દેહને ભોગવવાં પડે છે. ખાલી હાથે એકલાં જવું છે માટે એક દ્રષ્ટાંત કે જે હે આત્મા! સ્નેહસંબંધીનું અતી ઉપયોગી છે, તે પ્રત્યે તારી નજર દોડાવ.

એક મહાત્મા મહાન યોગી હતા, જે હંમેશા સ્વયોગમાં આત્મસિદ્ધી માટે તત્પર રહેતા હતા અને સંસાર અસારનો નિત્ય ઉપદેશ કરતા હતા તેમની પાસે ઘણા ભાવિકો વ્યાખ્યાન રૂપી અમૂલ્ય ઉપદેશ સાંભળવા આવતા હતા. એ મહાત્માનો નિરંતર ઉપદેશ કેઃ—

પદ.

દેશ (સુણે તો સુણાવું તુંનેરે) તાલ લાવણી.
સમજે તો સમજાવું ફરીરે. દિવાના દિલડા.
સંસારે કાંઇ ન તારૂં, માટે કાં વદે તું મારૂં;
જે જોઇશ તે છે ન્યારૂંરે. દિવાના દિલડા. ૧
માતતાત બંધુ નારિ, વિશ્વમાં તને જે પ્યારી;
ભગીની પણ થાયે ન્યારીરે, દિવાના દિલડા.૨
કંચનસમ છે તુજ કાયા, સંબંધીઓની છે માયા;
મરતાં તજે છે જાયારે, દિવાના દિલડા. ૩
કાળ ઉભો મોહું ફાડી, મૂખે ખેંચે આયુ તારી;
સમજી કાં દે વિસ્તારીરે, દિવાના દિલડા. ૪
મરતાં દેહની ઝોળી, બાંધી લઇ જાય દોડી;
સ્મશાને સળગાવી હોળીરે, દિવાના દિલડા. ૫
કરે કાંઇ નહી ઝાલી, રંક રાય ચાલ્યા ખાલી;
બાળ્યાં કાષ્ટ માંહી ઘાલીરે, દિવાના દિલડા.૬
વિચાર કરીને સારાં, પાપ કાં ગણે તું પ્યારાં;
નેણ તો ઉઘાડ તારાંરે; દિવાના દિલડા. ૭
માટે ભજ ભજ પ્રેમે, પ્રભૂને તું નિત્ય નેમે;
મોક્ષપદે પહોંચ ક્ષેમેરે. દિવાના દિલડા. ૮
"મહાવીર" નામ સારૂં, અખંડ સુખ દેનારૂં;
પૂનસીને લાગ્યું પ્યારૂંરે, દિવાના દિલડાં. ૯

એવી રીતે હંમેશાંનો સદુપદેશ ચાલુજ હતો. હે આત્મા! તેમાં તારા જેવા મૂઢ આત્માઓ તે સદુપદેશ પ્રત્યે ધ્યાન આપતા નહી. એક કાને શ્રવણ કરી બીજા કાનેથી તેઓ સદુપદેશને રજા આપતા, પણ એક સાહુકારપુત્ર કે રોજ એ ઉપદેશ સાંભળવા આવતો હતો, તેજ મહાત્માનું વ્યાખ્યાન ધ્યાનપૂર્વક સાંભળતો. એક દિવસ તે સાહૂકારપુત્રે મહાત્મા પ્રત્યે પુછ્યું—"હે પૂજ્ય મહાત્મા! આપ જે રોજ વ્યાખ્યાનમાં કહો છો તે બધું ખરૂં છે? શું સંસાર એટલો બધો ખરાબ છે? શું સગાંઓ, સંબંધીઓ, મિત્રો, કે કુટુંબીઓ સ્વાર્થીઆ છે? હે મહારાજ! મને સ્પષ્ટ જણાવો, મને શંકામાં ન નાંખો, મારી વિચાર ભ્રમણાનું નિરસન કરો, જે સત્ય હોય તે દેખાડો."

મહાત્મા બોલ્યા—"હે વત્સ! હે બેટા! જે સત્ય અને સ્પષ્ટ છે તેજ તું ... તો શું પણ આખા જગતને જણાવું ... અને મને જે મારા ખુદના અનુભવનું ... મળ્યું છે તેજ કહી દેખાડું છું. તારે ... જો અનુભવ જોવો હોય તો દેખાડીશ."

સાહૂકારપુત્ર બોલ્યો—"ભલે મહે છે. એમાં દેખાડો. હું જોવા આતુર છું. તમેજેની ખપતી કહેશો તેમ કરવા ખુશી છું, પણ ... પ્રત્યક્ષ અનુભવ જોવો છે માટે હવે ..."

મહાત્મા બોલ્યા—"બેટા! ... મહીનાથી તું મારી પાસેથી યોગનો ...

(હાંસિયામાં ઝાંખું: ...ણુ ...ારો, વખત ...છે. દઢ ...રે. કર. ... ત્યારે ... ઔષધિ ... તને કહેવા ... ઘણી મરે ... માં આ ઘણી ... કહો. વધારે)

લે છે અને એટલા થોડા સમયમાં બાર બાર કલાક સમાધિમાં રહી શકે છે, તો તેજ સમાધિ તને પ્રત્યક્ષ અનુભવ દેખાડશે."

સાહુકારપુત્રે પુછ્યું—" કેવી રીતે ?" મહાત્મા બોલ્યા—" સાંભળ બેટા ! હમણા ઘેર જા અને પેટ દૂખવાનો ઢોંગ કરી, સમાધિ લગાવી લે, તેથી તારો શ્વાસ બ્રહ્મરંધ્રમાં રહેશે. બે ત્રણ કલાકમાં હું તારી પાસે આવીશ અને જ્યારે હું કહું કે " બેટા જાગ્રત થા " ત્યારેજ સમાધિથી મુક્ત થજે. ત્યાં સુધી શું શું થાય છે તે જોયા કરજે, પણ મારા કહેલા શબ્દો ધ્યાનમાં રાખજે કે " બેટા જાગ્રત થા " ત્યારે તારી સમાધિ ઉતારવી. પાછલા જન્મમાં તું એક મહાન્ યોગી હતો પણ કાંઇક ભોગવવાનું બાકી રહ્યાથી તારે યોગનો થોડોક ભાગ જે બાકી રહ્યો છે તે હવે પુરો કરીશ. જા, મારો આશીર્વાદ છે."

સાહુકારપુત્ર બોલ્યો–" ઠીક મહારાજ, હું જાઉં છું અને આપના કહ્યા મુજબ કરીશ. આપની સુચના બરાબર યાદ રાખીશ, એમ કહી ઘરે આવ્યો અને થોડીવાર પછી બૂમો પાડવા મંડયો કે અરે મારી મા ! ઓ પરમેશ્વર ! અરે પિતાશ્રી ! ઓહ ! ઓહ ! મને શું થાય છે ! મારા પેટમાં બહુજ દુખે છે ! એવું કદીપણ કોઇ દીવસ મારૂં પેટ દુખાયું ન હતું. ઓ માડી ! હું મરી જઇશ ! મને બચાવો ! બચાવો ! એ બૂમો સાંભળતાં માબાપ, ભાઇઓ, બહેનો, મિત્રો, કે અન્ય સગાંઓ બધાં ભેગા થયા. શું થયું ? શું થયું ? પેટ દુખે છે કે ? ડૉકટરને બોલાવો ! કોઇ કહે ડૉકટર ધન્વંતરી વૈદને બોલાવો ! એમ બધાએ દોડધામ કરી મુકી અને થોડીવારમાં ડૉ[illegible] અને ધન્વંતરી વૈદો આવ્યા, નાડી તપાસી દવા આપવાનું કરી ચીંધતા [illegible] લઇ ચાલ્યા ગયા. અહીં તો છોકરાનો [illegible] વધારેને વધારે થવા લાગ્યો અને બુમો મારવી શરૂ કરી–અરે ! હવે તો [illegible]રોગ, માટે હવે તો બચાવો ! મારૂં [illegible] તો હશે, બાકીનું થોડું હું ભોગવીશ

પણ એ દુખ કોણ લે ! બધા જોતા ઉભા રહ્યા અને ભાઇએ ધીરેધીરે પગ લાંબા કરી સમાધિ ચડાવવા માંડી અને થોડીવારમાં શ્વાસને બ્રહ્માંડમાં ચડાવી દીધો, અને હાથપગ ઢીલા કરી મુડદું થઇ પડયો. ફરી દોડધામ શરૂ થઇ અને એક મોટા એ૦ બી૦ સી૦ ડી૦ ની ડીગ્રીવાળા ડૉકટર સાહેબે ફક્ત નાડી જોઇ પરીક્ષા કરી કે હવે રડો ચાહે ન રડો, પણ ભાઇના રામ રમી ગયા છે. ભાઇ તો સ્વર્ગે સીધાવ્યા છે. ભાઇનો આત્મા—આ દેહ ઘર છોડી–અન્ય ઘરને વિષે પ્રયાણ કરી ગયો, એટલું સાંભળતાં બધાંઓએ માથે પોક મૂકી રડવાનું શરૂ કરી મૂકયું. ભાઇ કયાં ગયો, અમને એકલો મૂકી તને જવું ન ઘટે. જ્યારે કમાવા ખવરાવવા જેવો ત્યારેજ દગો દઇ ચાલ્યો ગયો. અમને હવે કોણ કમાવી ખવરાવશે ? હે ભાઈ ! હે બાપૂ ! તુંજ અમારો જમણો હાથ હતો, અમારો વેરી કાં થયો, એમ મોટી બુમો પાડીને રડવા લાગ્યા. એટલે બીજાઓ કહેવા લાગ્યા–જે થયું તે થયું, પરમેશ્વરના આગળ કોઇનું થોડું પણ જોર ચાલતું નથી. આ તો ઇશ્વરી માયા છે, માટે આપણાથી શું થઇ શકે ? આ તો એક દવા વગરનું ખોખું છે. હવે તો એમની અંતની ક્રિયા કરો. મુડદું ઘરમાં વધારે વખત રખાય નહી માટે હવે છાના રહો, એમ કહી છેવટની ક્રિયાને લગતો વ્યવહાર કરવા ગુંથાયા. મોટે સાદે રડનાર હવે ધીમે સાદે મનમાંજ રડવા લાગ્યા અને હવે શબને કયારે લઇ જાય છે તેની રાહ જોતા બેસી રહ્યા, એટલામાં મહાત્મા ભજન ગાતાં ગાતાં આવતા જણાયા.

ભજન.

ચાલ (દેખો સંતો અજબ તમાસા,
ફેર બખત નહી આનેકા)

ભજ લે ભાઇ પ્રભૂકો અબ તૂં–
એક બખત હય અનેકા;
કાળ ફીરતા શીરપર પ્યારે,
હાથ નહી કોઇ પરનેકા. ૧

મીટ્ટીકા તૂને મહેલ બનાયા,
વો નહી જાય તેરા હય;
તંનહી ક્યોંકર હોગા તેરા,
સોચ સોચ ક્યૂં ફસંતા હય. ૨
જંગલકી સંજીવન બુટ્ટી,
બડે બૈદને લાઇ હય;
અંત સમયકો હો ગઇ જુઠ્ઠી,
ક્યોં કામ નહી આઈ હય. ૩
ભાઇ બાઈ ન માઇ તેરે,
તાત દોસ્ત સબ ન્યારે હય;
સમજ સમજ હે મન મેરે,
ચરણ શરણ પ્રભૂ તેરે હય. ૪
પુનશી કહે હે સૂનકે સમજકે,
અંધેરા ક્યૂં ધરતા હય;
પાસ પ્રકાશ હય ઊસકું લેલે,
ક્યોં કર દેર લગાતા હય. ૫

ભજન ગાતાં ગાતાં મહાત્મા સાહૂકાર-પૂત્રના ઘર આગળ આવ્યા અને જેમ જાણતા જ ન હોય તેમ અજાણ્યા થઇ પૂછવા લાગ્યા-ભાઇઓ, શાની ધમાલ છે? શું કોઇનો વિવાહ છે કે બ્રાહ્મણભોજનની તૈયારી છે, પણ! અરે! તમે તો બધા ઉદાસી દેખાઓ છો, તેથી હું ધારૂં છું કે, ઊપરોક્ત કાંઇ નહી, પણ કાંઇક શોકનું કારણ હોવું જોઇએ, પણ જરા મને જણાવશો તો ઉપકાર થશે, એમ ફરી ફરી કેટલીકવાર પુછ્યું, પણ કોઇએ સીધો જવાબ આપ્યો નહીં. વારે ઘડીએ દરેક જણને પુછવાથી, એક સારા સદ્‌ગૃહસ્થે જણાવ્યું-"મહારાજ, આપ જે શોકનું કારણ કહોછો તેનુંજ છે. આ સાહૂકારનો મોટો પૂત્ર વીસ વરસની ભરજુવાનીએ ચાલ્યો ગયો છે કે જેને એક બે કલાકમાંજ મૃત્યૂની ઝડપ આવી છે. શું ડોકટરો અને વૈદો ઘણા આવી ગયા, પણ આયુષ્ય નહીં, તેથી તેઓ પાછા ગયા. તેથી હે મહારાજ, શોકમાં ડૂબેલા છીએ. એના બીજા ભાઇઓ કે હજુ જે નાના છે અને નિશાળે ભણે છે. આ સર્વે વાતે કુશળ હતો. બાપનું કામ ચલાવવા જેટલો હોંશિયાર શીખેલો હતો પણ મૃત્યુ! કે જ્યાં કોઇનું જોર ચાલતું નથી, ત્યાં અમારો પણ નાઇલાજ થયો. આપ મહાત્મા છો માટે તપાસો અને ઔષધોપચાર કરી એને જીવાડો તો અમને સુખ થાય અને તમારા ઉપકાર તળે દબાયલા રહીશું.",

મહાત્મા બોલ્યા—"ઠીક છે. મને દેખાડો, મારો ઉપાય ચાલશે તો જરૂર જીવાડીશ, માટે મને એકવાર બતાવો. મહાત્માને ઘરમાં તેડી લાવ્યા અને સાહુકારપુત્રના શબ આગળ બેસાડ્યા. મહાત્માએ હાથ પગની નાડીઓ તપાસી, આખું શરીર તપાસ્યું કારણકે એમ મને બધી ખબર હતી છતાં વેશ ભજવ્યા સિવાય છૂટકોજ નહીં. બરાબર તપાસીને બોલ્યા-હજુ જીવ છે, એમ કહેતાં તો બધા રાજી થયા અને મહાત્માને પગે પડી કહેવા લાગ્યા-" મહારાજ, અમારા પુત્રને જીવતો કરો. અમો તમો કહેશો તેવી રીતે કરવા તૈયાર છીએ."

મહાત્મા બોલ્યા-"કહો છો તે ખરૂં, પણ મોઢે બોલવું સહેલું પણ કાર્ય કરવું કઠણ છે. માટે પુરતો વિચાર કરી બોલો. ત્યારે બધા કહેવા લાગ્યા-એને માટે અમારો પ્રાણ પણ કદી આપવો પડે તેની દરકાર કરીશું નહી, પણ મહારાજ ઉપાય બતાવો."

માહરાજ બોલ્યા—" બરાબર વિચારો, પાકો નિશ્ચય કરો કારણકે જેમ જેમ વખત જાય છે તેમ તેમ એનો આત્મા મુંઝાય છે. દૃઢ મનથી જણાવો એટલે ઔષધિ તૈયાર કરૂં.

બધાઓએ પાકા મનથી કબુલ કીધું ત્યારે મહારાજે-મહાત્માએ। એક દિવ્ય ઔષધિ તૈયાર કરી બધાની વચમાં મુકી અને કહેવા લાગ્યા-જુઓ આ સંજીવની દવા છે. એમાં એવો ગુણ છે કે જે દૂનિયામાં જેની ખપતી નથી, તે પીએ કારણકે પીનાર ધણી મરે અને તેના બાકીના આયુષ્યમાં આ ધણી જીવે માટે કોણ પીનાર છે તે કહો. વધારે

વખત ન વિતાડો. જે તૈયાર થાય તે ધણીઆ શબની આજુબાજુ ફરી સાચા અંતઃકરણે કહેકે "મારૂં બાકીનું આયુષ્ય એ મરનારને પ્રાપ્ત થાઓ" એમ કહી દવા પીએ: એટલે આ તરત ઉભો થશે. મારૂં વચન સત્ય છે. હવે તમારા વહાલાને કે જેને માટે રડી રડી થાક્યા છો તેને જીવતો કરવો અથવા કષ્ટમાં બાળવો તે આપના હાથમાં છે."

આ સાંભળતાંજ બધા વિચારમાં પડયા અને આપસમાં ગુણગુણ કરવા લાગ્યા, પણ કોઇ દવા પીવા તૈયાર થયો નહી. રડવું-ધાગ-ધૂમ ભૂલી ગયા. મરેલા માણસને વિસરી ગયા ત્યારે મહાત્મા બોલ્યા-બસ, હવે કેમ પાછા પડો છો? આગળ તો છાતી ઠોકી કહેતા હતા, હવે કેમ વિચારશુન્ય થઈ ગયા? ત્યારે પુત્રની માતાએ કહ્યું-"મહારાજ, **બેટો વહાલો છે પણ અમે કેમ મરીએ!** બીજા બધાની સંભાળ કોણ કરશે. તેઓ થોડા વખતમાં મોટા થઇ જશે એટલે કમાઇને ખવરાવશે, તેમ અમારા નાથની પણ ઉમર મોટી છે, તેમની સંભાળ પણ કોણ કરે? તેથી મહારાજ મારાથી દવા નજ પીવાય."

મહારાજ બોલ્યા-"સુતના તાત, તમે પણ વિચાર કરો, ત્યારે સાહુકાર બોલ્યા મારી ઉમર તો મોટી થઇ માટે હવે પ્રભુભજનમાં કાળ વિતાવવો છે કારણકે છોકરો મરી ગયો તે કાંઇ મારે બદલે સ્વર્ગે જવાનો નથી. "પોતે મરે ત્યારેજ સ્વર્ગે જવાય માટે મારેતો ધર્મધ્યાન કરી મરવું છે, અકાળે મરવું નથી. વિશેષ તેમાં સંપત્તિની વ્યવસ્થા કરવી-નાનાં બચ્ચાંઓ માટે વિચાર કરવાનો છે માટે મારાથી પણ દવા પીવાય નહી. પછી મહારાજે બધાને કહેતાં ભાઇઓ, બાઇઓ, મિત્રો, બધાને પુછ્યું પણ કોઇએ દવા પીવા હા કહી નહી. પછી છેવટે તેની સ્ત્રીને પુછ્યું-"હે બેટા! આ તારો ધણી છે. તારો પ્રભુ છે, તારા પ્રાણનો પણ નાથ છે. હાલની એની વ્યવસ્થા જો. તારા સુખને માટે પોતે પણ કેટલુંક દુઃખ સહન કર્યું હશે! તું દવા પી! કદાચ મરીશ તો પણ ધણીના હિત માટે તને સ્વર્ગજ મળશે અને નહી તો વિધવા પણાના ટપોરાં ખાતી ફરીશ તે માટે વિચાર કર."

પુત્રવધૂ બોલવા લાગી-"મહારાજ! ખરા જન્મદાતાઓ દૂર થયા, એકજ રક્તથી થયેલા બંધુઓ ભગીની દૂર થયા, ત્યારે હું કોણ માત્ર! હું પરાયા કોખીથી બનેલી હું પરઘરની કહેવાઉં, માટે મારાથી પણ દવા પીવાય નહી."

મહરાજ બોલ્યા-"ઠીક જેવી તમારી ઇચ્છા, હવે હું જાઉં છું એ સાંભળી એટલીવાર જે ચુપ હતા, તે ફરી સ્વાર્થ માટે રડવા લાગ્યા, ત્યારે મહારાજે શબ ઉપર હાથ ફેરવી કહ્યું કે બચ્ચા ઉઠ! તારા ઘરના માણસોને હવે સંભાળી લે. તેમના સ્વાર્થીપણાને જો અને તને અનુભવ મળ્યો કે નહી તે કહે. સાહુકારપુત્રે **ધીરે ધીરે સમાધિ ઉતારી** અને મહાત્માના વચનપર અવિશ્વાસને બદલે ક્ષમા માગી અને મહારાજને કહેવા લાગ્યો-"મહારાજ, મને હવે પૂરો શિષ્ય બનાવી આ સંસારની ઉપાધી છોડવો. મારા પ્રભૂ છો, મને તારો. આ સંસારમાં ન ડુબાવો."

મહાત્મા બોલ્યા-"સાંભળ બેટા! આપણા પ્રભુના વદેલા સત્ય માર્ગે ચાલ. અને અખંડ સુખનો માર્ગ મેળવ અને નીચેના રાજચંદ્રના વચનો હૃદયમાં ગોઠવી તે વિષે વિચાર કર.

શાર્દૂલ.

ના મારાં તનરૂપ કાંતી યુવતી ના પુત્ર કે ભ્રાતના,
ના મારાં ભૃતસ્નેહીઓ સ્વજન કે ના ગોત્ર કે જ્ઞાતના;
ના મારાં ધનધામ યૌવન ધરા, એ મોહ અજ્ઞાતના,
રે! રે! જીવ વિચાર એમજ સદા અન્યત્વદા ભાવના.

दृढ विश्वासका एक उदाहरण।

सायंकाल का समय था। आकाशमण्डल काले २ बद्लोंसे आच्छादित हो रहा था। सूर्यनारायण धीरे २ अस्ताचलकी ओर गमन कर रहे थे। राजगृही के अधिपकी प्राणवल्लभा एक सुन्दर महलमें दरबार करके बैठी हुई रागरंग सुनने में मग्न हो रही थी। अनेक सुन्दर २ स्त्रियां श्रेष्ठ वस्त्राभूषणों से सुसज्जित महिषी को गा बजा नाच दिखा प्रसन्न कर रही थी उनमें एक वेश्या भी थी, उसके हृदयमें नृत्य करते हुए राणीके गलेमें पड़े हुए रत्नहारको देख, उसके पहिननेकी तृष्णा उत्पन्न होगई। वह विचार करने लगी-जीवन उन्हींका सार्थक है जो आनन्द से गद्दी तकियोंपर इस प्रकारका हार पहिन बैठे रहते हैं। धिक्कार है मेरे इस जीवनको, यदि मुझे ऐसा चन्द्रहार पहिननेको नहीं मिला तो मनुष्य जन्म पाकर जीते रहने से लाभ ही क्या है ? इसी विचारने वेश्याको पगली बना दी। वह तत्काल नृत्य बंद कर एक ओर बैठ गई, और ज्योंही सभा विसर्जन हुई, अपने घर आ, एक पलंगपर लेट, रत्नहार के निमित्त निश्वासें डालने लगी।

रात आधीसे विशेष जा चुकी थी। बादल गरज २ कर विरहनी स्त्रियों को डरा रहे थे। संसारको मोहान्धकार में फंसा देख कामदेव भी अपने पुष्प बाणसे नरनारियों को घायल कर रहा था। एक चोरने भी कामबाणसे घायल हो छुकते छिपते अपनी चिरपरिचिता उपरोक्त वेश्या के द्वारपर जा, उसके किवाड़ खड़खड़ाये। बांदियोंने दर्वाजा खोल दिया। अन्दर जाकर क्या देखता है कि अपनी प्यारी पलंगपर लेटी हुई लम्बी २ सांसे खेंच रही है।

अंजनने जाकर कहा-"प्यारी! आज तुम ऐसी मलिनमुख क्यों हो रही हो?"

वेश्या बोली-"प्यारे! यदि तुम मेरे हृदयकी वेदना मिटाना चाहते हो, तो राजराणीका रत्नहार लाकर मुझे दे दो, अन्यथा मेरे प्राण बचने कठिन है। यदि तुम मेरी इच्छा पूरी कर दोगे, तो मैं सदा तुम्हारी दासी बनके रहूंगी और कभी दूसरे मनुष्यकी वांछा नहीं करूंगी।"

अंजन बोला-"प्यारी! तुम धीर धरो, मैं अभी जाकर तुम्हें हार ला देता हूं।" यह कह, अंजन अदृश्य करनेवाला सुरमा अपनी आंखोंमें डाल, राजमहलमें जा पहुंचा, और राणीके हारको जिसको वह अपने पलंगपर रख निःशंक सो रही थी, उठा लाया। मार्गमें रत्नोंकी ज्योतिसे प्रकाश हो गया। पहरेदारोंने चोर समज उसका पीछा किया, अंजन यह सोचकर, कि यदि मैं वेश्या के घर जाऊंगा तो ये लोग मुझे पकड़कर बंधी बना लेंगे, जंगलमें भाग गया।

जंगलमें जाकर इसने एक मालीको वृक्षपर चढ़ते उतरते देखा, और उससे पूछा-"तू किस हेतुसे यह चढ़ाउतरीका काम इतनी रात जाने पर कर रहा है? क्या तुझे अपनी जानका भय नहीं है? किस लिए वृक्षपर यह छींका बांध रक्खा है और क्यों बड़े २ भयानक शस्त्र इसके नीचे रख छोड़े हैं?

मालीने उत्तर दिया-"मुझे जिनदत्त सेठने कहा है, कि तू एक वृक्षकी शाखा पर छींका बांध, उसके नीचे भीषण शस्त्र रख, छींकेमें बैठ जाना और णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं, इस महान मंत्रका जापकर, छींकेकी रस्सी काट देना, जिससे तुझे आकाशमार्गके द्वारा यथेच्छ स्थानमें पहुंचानेवाली विद्या (आकाशगामिनी विद्या) सिद्ध हो जायगी। सायंकालसे अबतक इसी प्रकारसे मैं वृक्षपर चढ़ा उतरी कर रहा हूं किन्तु मेरा यह साहस नहीं होता, कि छींकेमें बैठ कर रस्सी काट दूं। कदाचित विद्या सिद्ध न हो, विद्याकी अधिष्ठातृ देवी आकर न बचावे, तो मुफ्तमें ही मेरे प्राण चले जावें। कभी हिम्मत करके वृक्षपर चढ़ता हूं, किन्तु इन भयावने शस्त्रोंको देखकर पुनः लौट आता हूं।"

अंजन बोला—"मुझे यह विद्या सिद्ध कर लेने दे, तू यह रत्नहार लेकर जा और सदा के लिए सुखी हो।"

माली उन भयानक शस्त्रोंसे पहिले ही डर हुआ था। हारका मिलना सुन, वह तत्काल ही अंजन के पास चला गया, और उसको नवकार मंत्र बता, हार ले वहांसे चलता बना।

अंजन बड़े धैर्य के साथ वृक्षपर चढ़ा, और इस विश्वास के साथ कि—मंत्र सत्य है, अवश्यमेव सिद्ध होगा, छींकेमें जा बैठा किन्तु अंजन मंत्र भूल गया। वह बड़ी ही दुविधामें पड़ा, उसी समय सहसा उसके हृदयमें किसी और ही विचारने आ स्थान जमाया। वह विचार करने लगा कि यह मंत्र सत्य है और मैं उसको भूल गया हूं तो क्या? मैं यह कहकर कि जो कुछ सेठने कहा है, सत्य है, छींकेकी रस्सी काटदूं तो देवी नहीं आयगी? अवश्य आयगी। यह विचार अंजनने "मंत्र सत्य सेठ वचन प्रमाण" कह, छींकेकी रस्सी काट दी। करीब था कि अंजनके शस्त्रोंपर गिर टुकड़े २ उड़ जावें। अधिष्ठातृ देवीने प्रकट हो उसे बचालिया और कहने लगी—"तेरे मंत्र सिद्ध हुआ। मैं तेरे आधीन हूं, जो कुछ तू आज्ञा देगा मैं वही करूंगी। पाठक! देखा, दृढ विश्वासने कितनी शीघ्रतासे अंजनको विद्या प्राप्त करवा दी; और असाहसी अविश्वासी माली तीन पहर तक वृक्षपर चढ़ता उतरता रहा, तब भी यूंही रहा।

देवीकी बात सुन अंजन प्रसन्नवदन हो बोला—"मुझे अपने गुरु जिनदत्त सेठ के पास ले चल"। देवी तत्काल ही अंजन को विमानारूढ़ करवा ले चली। मार्गमें एक पर्वत पर सुन्दर २ चैत्यालय देख, अंजन वहां उतर गया, और बड़े आनन्द के साथ भगवानके दर्शन किये। फिर वहांसे रथपर चढ़, वह राजगृही नगरीमें सेठके घर पहुंच उसको नमस्कार कर कहने लगा—"हे श्रेष्ठीवर्य! मैंने आपकी कृपासे आकाशमार्गगामिनी विद्या सिद्ध की है" यह कह उसने अपना सब पूर्व वृत्तान्त सुनाया और बोला—"अब आप मुझे श्रेष्ठ धर्म बताइए जिससे मैं संसार के संकटों से मुक्त हो सकूं।"

सेठ हर्षसे अंजन को गले लगा बोला—"धन्यो! तुम धन्य हो। तुम्हारे पुण्यका उदय आया है इसहीसे तुम्हारे हृदयमें श्रेष्ठ धर्म अङ्गीकार करने की इच्छा उत्पन्न हुई है, किन्तु मैं धर्मशिक्षण देने व गुरु बननेके योग्य नहीं हूं। चलो, हम निर्ग्रंथ मुनिके निकट चलें उनके दर्शन कर अपने नेत्र सफल करेंगे और श्री गुरुके मुखसे श्रेष्ठ धर्मोपदेश सुनेंगे"

दोनो वहांसे उठ, शहरके बाहिर मुनिके पास, जो कि एक कुटियाके अन्दर आत्मध्यान में स्थित थे गये। अंजन व सेठ उनकी तेजपुंज प्रेममयी मूर्ति देख, चरणोंमें गिर पड़े। पश्चात् प्रदक्षिण देकर बोले—"गुरु-

देव ! हम पापी जीव निशदिन स्वार्थ के पङ्कमें फंस कष्ट भोग रहे हैं। आप दया कर श्रेष्ठ धर्मका उपदेश दीजिए, जिससे हमारा निस्तार हो। ''

साधुने आशिस दे, फिर इस प्रकारसे धर्मोपदेश देना प्रारम्भ किया—

'' संसारसे निस्तार पाने के लिए प्रत्येक व्यक्तिको चाहिए कि वह अपने इन्द्रिय विषयिक लालसाओंको—ख्वाहिशात नफ्सानीको—छोड़ दे। इनकी लालसाओंसे उत्पन्न होनेवाले यूं तो सहस्रों पाप हैं, किन्तु साधारणतया हम इनको पांच भागोंमें विभक्त कर सकते हैं। [१] किसी प्राणीको कष्ट पहुंचाना, [२] मिथ्याभाषण करना, [३] किसी मनुष्यकी विना आज्ञा कोई वस्तु उठा लेना, [४] निष्प्रयोजन वस्तुएं एकत्रित करना, [५] मन वचन और कायके द्वारा ऐसे कार्य करना जिससे इस शरीरसे वीर्य निकले।

इन्हीं पापोंसे सर्वथा मुक्त होनेवाले साधु कहलाते हैं। वे इस दुखदायी संसारका परित्यागकर अपने उस वास्तविक स्वराज्यको पा लेते हैं। जिसमें दुःख या पीड़ाका लेश मात्र भी गुज़र नहीं है, किन्तु सांसारिक व्यवहार करनेवाले व्यक्ति इन पापोंसे कदापि पूर्णतया बच नहीं सकते। अतः प्रत्येक व्यवहारकुशल मनुष्यको उचित है, कि वह इन पापोंसे बचनेके लिए निम्न प्रकारके नियम ले लेवे:—

१–मैं कभी यथासम्भव त्रस जीवोंका वध नहीं करुंगा और स्थावर जीवोंको भी उतनीही हानि पहुंचाऊंगा, जिससे साधारणतया मेरे व्यवहारिक कार्य चलते रहें।

२–यथासम्भव मैं कभी ऐसा झूठ नहीं बोलूंगा जिससे किसी प्राणीको कष्ट पहुंचे।

३–मैं कभी अन्य पुरुषकी यथासम्भव ऐसी वस्तु नहीं उठाऊंगा जिससे लोकनिन्दा हो, अथवा राज्यके द्वारा दण्ड मिले।

४–निरुपयोगी एक भी वस्तु अपने घरमें नहीं रक्खूंगा।

५–सन्तानोत्पत्तिके निमित्त स्व-स्त्रीके साथ कामकेलि करनेके अतिरिक्त कभी अपना श्वेतरक्त (वीर्य) प्रवाहित नहीं करूंगा।

इस प्रकारसे नियमपूर्वक अपना जीवन बितानेवाले जीव—श्रावक वास्तविक गृहस्थी या सच्चे नागरिक कहाते हैं। ''

इत्यादि उपदेश देकर साधु मौनावलम्बी हो गये। अंजन के भाग्यने जोर लगाया। उसका हृदय जो अद्यावधी संसारके पापोंमें लिप्त हो रहा था, वैराग्य के रूपमें परिणत हो गया। उसने महात्मासे विनती करके सर्व पापोंसे मुक्त करनेवाली उत्तम दीक्षा ग्रहण की, और कई वर्षपर्यन्त घोर तपश्चरण करके, इस संसारकी तीव्र यातनासे छुटकारा पा मोक्षमें पहुंच गया।

पाठक ! यदि हम भी इसही प्रकारसे दृढतापूर्वक विश्वासके साथ प्रत्येक कार्य के करनेमें अपना साहस दिखावें तो संसारका वह कौनसा कार्य है जिसको हम न कर सकें ? वह कौनसी वस्तु है, जो हमारे लिए अलभ्य हो ? वह कौनसा कूट प्रश्न है, जिसको हम हल न कर सकें ? सब कुछ कर सकते हैं; किन्तु चाहिए दृढ विश्वास और पूर्ण साहस।

कृष्णलाल वर्मा (गोहाना)

जीर्णोद्धारनी जरूर.

निरालंबन-धर्मस्य स्थिति यस्मात्ततः सतां।
मुक्ति प्रासाद सोपान मार्गैरुक्तो जिनालयः ॥

શ્રી ઇડરગઢ ઉપર શ્રી સંભવનાથજી મહારાજનું દિગંબરી પ્રાચીન મંદિર છે, જે સમોસરણ આકારે મહાન કારીગરીથી બાંધવામાં આવેલું છે, તે ઘણુંજ જીર્ણ થયેલું છે, તેનો વ્હેલાસર જીર્ણોદ્ધાર કરવામાં ન આવે તો આગળ ઉપર ઘણાજ ભારે ખર્ચમાં ઉતરવું પડે તેમ છે. આથી અત્રેના સ્થાનિક ભાઇઓ આ મંદિરનો જીર્ણોધાર કરવાને પ્રયત્ન કરી રહેલા છે, પણ એમાં આશરે રૂપીઆ પચીસ ત્રીસ હજાર ખર્ચ થાય તેમ છે જેથી આવો ભારે ખર્ચ અત્રેની વસ્તીના પ્રમાણમાં પૂર્ણ થઇ શકે તેમ નથી છતાં પણ તનમનથી પ્રયત્ન શરૂ થઇ ઉદાર વૃત્તિથી ધર્મ વૃદ્ધિના હેતુ અર્થે આ દેરાસરના જીર્ણોદ્ધાર માટે એક ટીપ શરૂ કરવામાં આવી છે, તેમાં આશરે રૂા. ૨૦૦૦) બેહજાર ના સુમારે રકમો ભરાયેલ છે.

આ પ્રાચીન મંદિરની પ્રાચીનતાનો દાખલો ઇડર મહિકાંઠા મેન્યુઅલમાં લખાયેલો છે કે-ઇડરગઢ ઉપર બાવન જીનાલયના દેહેરાસર કરતાં **શ્રી સંભવનાથજીનું મંદીર પ્રાચીન કાળનું છે.**

આ મંદિરનો જીર્ણોદ્ધાર ઘણીજ તાકીદે થવાની જરૂર છે, તો ધર્માત્મા ગૃહસ્થોએ નવીન દેહેરાસર બંધાવ્યા કરતાં પ્રાચીન દેરાસરનો જીર્ણોદ્ધાર કરાવવો તેનાથી મહાન પુણ્ય બંધાય છે.

नष्टं कुलं कूप तडाग वापी, भृष्टं च राज्यं शरणागतं च।
गां ब्राह्मणं जीर्ण सुराल्यं च, य उद्धरेत्पुण्य चतुर्गुणं स्यात्॥

અર્થ—જેઓ કુળથી નષ્ટ થયેલા હોય તેને શરણ આપવામાં, કૂવા, વાવ, તલાવ, વીગેરે જીર્ણ થઇ ગયેલા હોય તેને સુધારવામાં, રાજ્યથી ભ્રષ્ટ થયેલાને રાજ્ય અપાવવામાં. ગાય બ્રાહ્મણને શરણ આપવામાં, જે પુણ્ય થાય છે તેનાથી ચારગણું પુણ્ય જીર્ણ મંદીરના જીર્ણોદ્ધારમાં દ્રવ્ય આપવાથી થાય છે.

આથી મહાન પુણ્યનો લાભ લેવાને સર્વે ધર્મ બંધુઓએ તનમન ધનથી આ દેરાસરના જીર્ણોદ્ધારમાં મદદ કરવી જોઇએ.

ઉપરની ટીપ શરૂ થવા ઉપરાંત ધર્મની પ્રભાવના અર્થે વિશેષ મદદ થવાના હેતુથી નવીન પંચ કલ્યાણક પુજનવિધાન કરી નવીન પ્રતિમાઓ જે શ્રી ખેડબ્રહ્મામાંથી નિકળેલ હતી, તે પ્રતિમાઓ માગસર સુદ ૨-૩-૪ ઉપર ઉત્સવ કરી ગઢ ઉપરના દેરાસરમાં લઇ જવામાં આવી, અને નીચેના ધર્માત્માઓએ ધર્મ પ્રભાવના અર્થે પોતાના નામથી રકમો આપી બિરાજમાન કરી ઉત્સવમાં વધારો કર્યો હતો—

- ૧૦૧) શેઠ હરીભાઇ દેવકરણભાઇ. શોલાપુર.
- ૭૫) દોશી નાનચંદ દેવચંદ. ઇડર.
- ૫૧) ગાંધી ઘેલાભાઇ જીવરાજ. ,,
- ૪૫) વોરા ફતેહચંદ શાંકલચંદ. દેરોલ.
- ૪૫) દોશી હરીભાઇ કસ્તુર. ઇડર.
- ૪૧) દોશી પદમશી જોઇતાદાસ. ,,
- ૩૧) ગાંધી મુલચંદ રાયચંદ. ,,
- ૪૦) શા० રાયચંદ કસ્તુર ,,

———

રૂ० ૪૨૯)

એ રીતે ઉપર મુજબ ગૃહસ્થોએ પોતાના નામથી રકમો આપી પ્રતિમાઓ બીરાજમાન કરી તથા કલશાભિષેક પૂજન વિધાન વિગેરેના ચડાવાના આશરે રૂા. ૩૭૧) ઉત્પન્ન થયા તે મળી કુલ રૂા. ૮૦૦)ના આશરે જીર્ણોદ્ધારના ફંડમાં ઉપજ્યા છે.

વળી પ્રભાવના અર્થે ઉત્સવ પ્રસંગમાં ત્રણ જમણ સંઘ તરફથી કરવામાં આવ્યાં. અને ઉત્સવ તથા ધર્મની પ્રભાવના ઘણીજ ધામધુમથી થઇ હતી તેમ નીચેથી વરઘોડો કાઢી ગઢ ઉપર પ્રતીમાઓ ઘણી ધામધુમ થી લઇ જવામાં આવી હતી.

આ જીર્ણોદ્ધાર માટે અત્રેના ગાંધી પાનાચંદ નાથાભાઇ તથા ગાંધી મોતીચંદ શાંકલચંદ વગેરે તનમનથી પ્રયત્ન કરી રહયા છે, માટે દરેક બંધુએ આ ફંડમાં મદદ કરવાની જરૂર છે.

આ ખાતાનો પત્ર વ્યવહાર ગાંધી પાનાચંદ નાથાભાઈ ઇડર (મહીકાંઠા) ઉપર કરવો.

લી० જ્ઞાતીબંધુ—

નાથાભાઇ જેઠાલાલ ગાંધી-ઇડર.

भारत जैन महामंडलनी मुंबाईमां बेठक.

તા. ૨૫ થી ૩૧ ડિસેંબર સુધી મુંબાઈમાં હીંદી નેશનલ કોંગ્રેસ, ઔદ્યોગિક પરિષદ, સંસારસુધારા કોન્ફરંસ, દારૂ નિષેધક કોન્ફરંસ, ભાટિયા કોન્ફરંસ, ભારત મહિલા પરિષદ મુસ્લીમ લીગ, જીવદયા સભા વગેરે લગભગ ૧૮ જાતની સભાઓ થઇ હતી તે પ્રસંગનો લાભ લઇને ત્રણ દિવસ પૂજન વિધાન કરી તા. ૨૬ મીએ ભુલેશ્વર આગળના આપણા નવીન મંદિર તરફથી રથોત્સવનો વરઘોડો ભારે ઠાઠથી નીકળવાથી દિ. જૈન ધર્મની સારી પ્રભાવના થઇ હતી તથા "ભારત જૈન મહામંડળ" કે જેમાં ત્રણે ફિરકાના આશરે ૩૦૦ વિદ્વાનો જોડાયલા છે અને જે ૧૬ વર્ષ થયાં સમગ્ર જૈન કોમમાં ઐક્યતા અને ઉન્નતિ થવા માટે પ્રયાસ કરી રહ્યું છે તેની વાર્ષિક બેઠક પણ આ પ્રસંગે ભારે ઉત્સાહથી એમ્પાયર થીએટરમાં તા. ૩૦-૩૧ મીએ ભરવામાં આવી હતી, જે પ્રસંગે મુંબાઇના ત્રણે ફિરકાના ભાઇઓની બનેલી સ્વાગત કમીટીએ સારી ગોઠવણ કરી હતી અને એ બેઠકનો લાભ ત્રણે ફિરકાના લગભગ ૨૦૦૦ જૈનોએ લીધો હતો. તા. ૩૦મીની પ્રથમ બેઠકમાં સ્વાગત કમીટીના પ્રમુખ **શ્રીયુત મકનજી જુઠાભાઈ મ્હેતા બી. એ.** બેરીસ્ટર એટ-લોએ આવકાર આપનારૂં ભાષણ કર્યું હતું જેમાં જૈનોની આગલી જાહોજલાલી તથા ૨૦-૨૫ વર્ષમાં થએલા દાનવીરોની દાનપદ્ધતિનું દિગ્દર્શન કરાવી મુંબાઇની સર્વે જૈન સંસ્થાઓ શું શું કાર્ય કરી રહેલી છે તથા જૈનકોમમાં સંપ થવા માટે હાલ કેવા કેવા ઉપાયો યોજવાની જરૂર છે તે વિષે (વિસ્તારમાં) અસરકારક વિવેચન કરવા પછી શા. મોતીચંદ ગીરધર કાપડીયા સોલીસીટરની દરખાસ્ત અને શેઠ તારાચંદ નવલચંદ ઝવેરીના ટેકાથી **પ્રોફેસર ખુશાલભાઇ તલકચંદ શાહ** બેરિસ્ટર એટ લોને પ્રમુખસ્થાન અપાયું હતું અને ખુશાલભાઇએ પોતાનું લંબાણ ભાષણ અંગ્રેજી ભાષામાં કર્યું હતું. જેનો કેટલોક ભાગ પં. લાલને ગુજરાતીમાં કહી બતાવ્યો હતો બાદ જુગમંદરલાલ જૈની એમ૦ એ૦; બેરીસ્ટર એટ-લો તથા બાબૂ અજીતપ્રસાદજી એમ૦ એ૦ એલ૦ એલ૦ બી૦ લખનૌર નિવાસીએ અસરકારક ભાષામાં મંડળનો રિપોર્ટ વાંચી મંડળના કાર્યથી સર્વેને વાકેફ કર્યા હતા અને ૩૦-૩૫ ગ્રહસ્થોની સબજેક્ટ કમીટી નીમાઇ પ્રથમ બેઠક સાંજે ૫॥ વાગતે વિસર્જન થઇ હતી. રાત્રે હીરાબાગમાં સબજેક્ટ કમીટીની બેઠક ૮ થી ૧ વાગતા સુધી મળી હતી અને ભારે રસાકસી પછી ૯ ઠરાવો નક્કી કરવામાં આવ્યા હતા જ્યારે એક બે ઘણાજ મહત્વના ઠરાવો તો પડતા મુકવામાં આવ્યા હતા.!!!

બીજી બેઠક તા. ૩૧મીએ બપોરે ૧૧॥ થી ૪ સુધી મળી હતી, જેમાં લગભગ ૧૦૦૦ની સંખ્યા હાજર હતી અને નીચેના ઠરાવો અંગ્રેજી, ગુજરાતી, અને હિંદી ભાષાઓમાં વિવેચનો સહિત પસાર કરવામાં આવ્યા હતા.

ઠરાવ ૧લો—આ મંડળ બ્રીટીશ સરકાર અને તાજ તરફ પોતાની ઉંડી **વફાદારી** જાહેર કરે છે. પ્રમુખ તરફથી.

ઠરાવ ૨જો—આ મંડળ હાલની યુરોપની મહાભારત લડાઇમાં બ્રીટીશ સરકાર અને **મિત્રરાજ્યોની** ફતેહ થાય અને સુલેહનો રસ્તો જલ્દીથી આવે એવું ઇચ્છે છે. પ્રમુખ તરફથી.

ઠરાવ ૩જો—આ મંડળ જૈન કોમના મર્હૂમ આગેવાનો **દાનવીર જૈનકુલભૂષણ**

શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદ ઝવેરી જે. પી., શેઠ હેમચંદ અમરચંદ, રાય શેઠ ચાંદમલજી અજમેર, શેઠ લખમશી નપ્પુ, બાબૂ ધન્નુલાલ અગ્રવાળ એટર્ની કલકત્તા, શેઠ ગોકળદાસ રાજપાળ ગોરખી અને શેઠ અમરચંદજી પીતળીયા રતલામના મૃત્યુ માટે અત્યંત ખેદ પ્રદર્શિત કરે છે અને મર્હૂમોના કુટુંબો ઉપર આવી પડેલી આફત માટે દિલસોજી જાહેર કરે છે. પ્રમુખ તરફથી.

ઠરાવ ૪થો—આ સભા ઠરાવ કરે છે કે હવે વખત આવી પહોંચ્યો છે કે જૈન કોમમાં બાળલગ્ન, કન્યાવિક્રય, વૃદ્ધવિવાહ, વેશ્યાનૃત્ય, આતશબાજી, ફુલવાડી, હદપારના જમણો, રડવા કુટવાનો રિવાજ વગેરે જે બુરા રિવાજો જડ ઘાલી બેઠેલા છે તે દૂર કરવાના ઉપાયો યોજવા અને સઘળા જરૂરી સામાજિક સુધારાને ઉત્તેજન આપવું. દરખાસ્ત મી૦ કેશરજી મકનજી દોશી. ટેકો—શ્રી. ચીનજી દેવશી, અને મી૦ નથમલજી ચોરડીયા.

ઠરાવ ૫મો—આ સભા ઠરાવ કરે છે કે આપણી કોમમાંથી અજ્ઞાનતા દૂર કરવી અને તે માટે ઓલ-ઇંડિયા-જૈન-એસોશીએશને કોમની કેળવણીને લગતી હાલતો મળથી ગણવા કરવા તે માટેના ઉપાયો યોજવા અને ખાસ સગવડો મેળવવા માટે નામદાર સરકારને અને બીજા મંડળોને જરૂર પડે મળવા માટે કેળવાયેલા આગેવાનોની કોન્ફરન્સ (જૈન એજ્યુકેશનલ કોન્ફરન્સ) બોલાવવી. દરખાસ્ત—મી૦ મણીલાલ એમ. દલાલી એમ. એ. એલ એલ. બી. ઇત્યાદિ. ટેકો—પં. લાલન અને જૈન મહિલારત્ન બીબી મગનબાઈ.

ઠરાવ ૬ ઠ્ઠો—આ સભા ઠરાવ કરે છે કે કેળવણીના અંગે બીજા રિપોર્ટોમાં જૈનોની સંખ્યાનું કોલમ જુદું પાડવાને હિંદુસ્તાનની સરકારને અરજ કરવી. દરખાસ્ત. મી૦ હીરાચંદ લીલાધર ઝવેરી એમ. આર. એ. એસ., ટેકો—મી૦ સાકેરચંદ માણેકચંદ ધડીયાલી.

ઠરાવ ૭ મો—જૈનોની ઘટતી જતી સંખ્યા માટે આ સભા ખેદ જાહેર કરે છે અને આ સ્થીતિ શાથી ઉત્પન્ન થાય છે તેની તપાસ કરવાને પં. નાથુરામજી પ્રેમી, મી૦ વીરચંદ ચોકસી, મી૦ માણેકચંદ કોચર અને બાબૂ દયાચંદ્ર ગોયલીયની કમીટી નીમે છે જેઓ સંખ્યા ઘટવાના કારણો દર્શાવનારો પોતાનો રિપોર્ટ રજુ કરે. દરખાસ્ત—બાબૂ દયાચંદ્ર ગોયલીય જૈન બી. એ. લખનૌ. ટેકો—જૈનધર્મભૂષણ બ્ર. શીતલપ્રસાદજી.

ઠરાવ ૮ મો—આ સભા ઠરાવ કરે છે કે અંધારામાં રહેલું જૈન સાહિત્ય છપાવવા માટે તુરત પગલાં લેવાં અને આ માટે કુમાર દેવેન્દ્રપ્રસાદજી જે કાર્ય કરી રહેલાં છે તેની તારીફ કરે છે. દરખાસ્ત—મી૦ મોહનલાલ દલીચંદ દેશાઈ બી. એ. એલ. એલ. બી. ટેકો પં. ગિરિધર શર્મા અને બાબુ અજીતપ્રસાદજી લખનૌ.

ઠરાવ ૯મો—આ સભા ઠરાવ કરે છે કે જૈનોના ત્રણે ફિરકામાં એકસંપ થાય તે માટે પ્રયત્નો કરવાને અને તે બાબતમાં આડે આવતી કેટલીક બાબતો જેવી કે તકરારી સાહિત્ય વગેરે પ્રકટ થતું અટકાવવાની જરૂર છે તથા ત્રણે ફિરકાના વાંધાઓ પતાવવાને એક લવાદ કમીટીની જરૂર છે. દરખાસ્ત—પં. લાલન. ટેકો નથમલજી ચોરડીયા, મગનચંદ કસનદાસ કાપડીયા. સુરત અને બ્ર. જૂ. ચેતનદાસજી સહારનપુર.

ઉપલા ઠરાવો થયા પછી બાબૂ અજીત-પ્રસાદજીએ આવતી સભા લખનોરમાં કોંગ્રેસ પ્રસંગે બોલાવવાનું આમંત્રણ કર્યું હતું જે સ્વીકારવામાં આવ્યું હતું અને પ્રમુખનો ઉપકાર માનવાની દરખાસ્ત કરી. લલ્લુભાઇ પ્રેમાનંદદાસ એલ. સી. ઇ. એ મુકતાં તેને મી. લક્ષ્મીચંદજી ખોખાણીએ ટેકો આપતાં ખુલાસો કર્યો હતો કે પ્રમુખ સાહેબનું ભાષણ જે મુંબાઇ સમાચાર માં પ્રકટ થયું છે તેમાં સાધુ સંબંધીની ટીકાનો જે ફકરો છપાયો છે તે અનુવાદ બરાબર થયેલો નથી અને પ્રમુખે અમુક સાધુઓ સંબંધી જ ટીકા કરી હતી અને નહીં કે સમગ્ર સાધુવર્ગ માટે. કેટલાક બંધુઓમાં આ બાબત ગેરસમજ ફેલાયલી છે તે દૂર કરશો વગેરે. એ પછી પ્રમુખે ઘટતા શબ્દોમાં સર્વેનો ઉપકાર માની પોતાના સ્વતંત્ર વિચારના ભાષણથી કોઇનું મન દુખાયું હોય તો તે માટે સર્વેની ક્ષમા ચાહી હતી અને મંડળનું કાર્ય પુરૂ થવાની તૈયારી હતી એટલામાં લોકમાન્ય દેશભકત મહાત્મા **મોહનલાલ કરમચંદ ગાંધી** સાદા ડ્રેસમાં સભામાં પધાર્યા હતા જેમને ભારે હર્ષનાદથી વધાવી લેવામાં આવ્યા હતા અને એ પછી આ સભા વિસર્જન થઇ હતી અને તરતજ ત્યાં જીવદયાને લગતી ગંજાવર સભા ઑ. પં. મદનમોહન માળવીયાના પ્રમુખપણા નીચે થઇ હતી જેમાં 'બોમ્બે ક્રોનીકલ'ના સંપાદક મી. બી. જી. હોર્નીમેને જીવદયા સંબંધી ઇંગ્લિશમાં અસરકારક ભાષણ આપ્યું હતું તેમજ પં. વિષ્ણુ દિગંબર, પં. લાલન, પં. ડૅા. પરસરામ શર્મા, શેઠ લલ્લુભાઇ ગુલાબચંદ ઝવેરી, સર ભાલચંદ્ર કૃષ્ણા વગેરેનાં વિવેચનો થયાં હતાં. આ પ્રસંગે પારસીઓ, હિંદુઓ, જૈનો વગેરેની ભારે સંખ્યાએ લાભ લીધો હતો.





શ્રી ગજપંથાજીમાં કોન્ફરંસની બેઠક:—આપણી મુંબાઇ દિ. જૈન પ્રાંતિક કોન્ફરંસ પાલીતાણાની બેઠક પછી ગત વર્ષે મળી નહોતી જેથી આ વર્ષે કયે સ્થળે મેળવવી તે માટે વિચાર કરવાને મેનેજીંગ કમીટીની એક સભા ગઇ તા૦ ૨૯મીએ મુંબાઇમાં હીરાબાગમાં શેઠ નવલચંદ હીરાચંદ ઝવેરીના પ્રમુખપણા નીચે મળી હતી જેમાં આ વર્ષે કોન્ફરંસની બેઠક **સિદ્ધક્ષેત્ર શ્રી ગજપંથાજીમાં** વાર્ષિક મેળા પ્રસંગે **માહા સુદ ૧૨-૧૪-૧૫** તા. ૧૫-૧૭-૧૮ ફેબ્રુઆરીએ સભા તરફથી મેળવવાનો સર્વાનુમતે ઠરાવ થયો હતો તથા ખર્ચ માટે રૂ. ૧૩૦૦) નું બજેટ પસાર થયું હતું, તેમજ કોન્ફરંસ માટે એક સ્વાગતકારિણી કમીટી મુંબાઇ, સોલાપુર, બારામતી, સુરત, નાસિક, ચાંદવડ, પરંઢા, આળંદ, ધારાસીવ વગેરે સ્થળોના આશરે ૨૫ ગ્રહસ્થોની નીમવામાં આવી હતી, જેમાં પ્રમુખ શેઠ નવલચંદ હીરાચંદ ઝવેરી અને સેક્રેટરીઓ તરીકે બાબૂ માણેકચંદજી બૈનાડા તથા આ. સેક્રેટરી તરીકે શેઠ પાનાચંદ રામચંદ અને શા. હીરાલાલ જયચંદ નીમાયા હતા. વળી કોન્ફરંસના **પ્રમુખ** માટે શેઠ સુખાનંદજી મુંબાઇ, રાયબહાદુર દાનવીર શેઠ કલ્યાણમલજી ઇંદોર, શેઠ રામચંદ મલુકચંદ બારામતી, શેઠ રોડમલ મેઘરાજ સુસારી અને શેઠ માણેકચંદ મોતીચંદજી (આળંદ) ને ક્રમવાર પૂછાવીને જેઓ સ્વીકારતા કરે, તેમને નીમવાનો ઠરાવ થયો હતો, પણ નાસિક તથા ગજપંથાજીની આસપાસ હાલ પ્લેગ ચાલે છે જે માહા સુદ ૧૩ સુધી શાંત થાય એમ લાગતું નથી, તેથી ગજપંથાજીના

प्रबंधकर्ता शेठ रावजी नानचंद वगेरे सथे मसलत चलावतां, कोन्फरन्सनी बेठक म.हा मासमां नहि पण चैत्र सुद ५-६-७-८ उपर मेळववानुं नक्की थयुं छे.

देहलीमें रथोत्सव-ता. २३-१२-१९ को देहलीमें वार्षिक जैन रथोत्सव बड़ी धूमधामसे नीकाला गया था जिसमें भजन मंडली विद्यालय और पाठशालाओंके छात्रोंने भिन्न २ भजन किये थे और सरकारी इंतजाम भी अच्छा था।

तीर्थोंना फोटाओः—लगभग बधा तिर्थोना फोटाओ द्वा. हीराचंद मलुकचंद दोशी (सोलापुर) पोतानी यात्रा दर्म्यान पाडी लाव्या छे अने तेनी दरेकनी कि. मात्र आठ आना छे माटे जेमने जे तीर्थना फोटानी जरुर होय, ते तेमणे सोलापुरथी मंगाववा.

आगरामें वार्षिकोत्सव और केशलोंचः—श्री जैनकुमारसभा मोती कटरा आगराका प्रथम वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधामसे ता. ५-६-७ डिसम्बरको बड़े जैन मंदिरमें हुआ था। जिसमें बाहरसे स्या. वा.न्या. पं.गोपालदासजी बरैया, न्या. पं. माणिकनन्दजी, कुंवर दिग्विजयसिंहजी, बाबू चंद्रसेनजी वैद्य, पं. देवकीनंदनजी आदि विद्वान पधारे थे और अनेक विषयोंपर उत्तमोत्तम व्याख्यान हुए. और दो दिन शंकासमाधान भी हुआ था और ता.७ को दि. जैन बोर्डिंग हाउसमें श्रीमान् त्यागी ऐलक पन्नालालजीका केशलोंच महोत्सव भी बड़े समारोहके साथ हुआ था।

शोकजनक मृत्यु अने रु. १५००)नुं अनुकरणीय दानः—घोघानिवासी शा. डाकरशी नथुभाइ कार्तक वद ३ ने दिने भावनगरमां मृत्यु पाम्या छे जेमनी पाछळ शुभ खाते वापरवा तेमना पुत्र छगनलालभाइए रु. १५००)नी रकम काढी छे, जेनी व्यवस्था नीचे मुजब थनार छेः—

१७५) गरीबोने अनाज, कपडां तथा जानवरो माटे घास, अनाज वगेरे; १२५) मृत्यु तिथिए जीव छोडाववा तथा घोघामां माछीनी जाळ बंध रखाववा माटे; २७५) भावनगरना देहेरासरमां इंद्रध्वजनी गाडी अने तोरण माटे; ५०) अभिषेक, पूजन, प्रभावना माटे; १००) भावनगरमां विद्यानंदीना पगलांना जीर्णोद्धार माटे, २०) पाठशाळाना विद्यार्थीओने इनाम माटे, १००) घोघाना देहेरासरना जीर्णोद्धार माटे, आशरे रु. १२५) "दिगंबर जैन"ना ग्राहकोने एक पुस्तक भेट वेंचवा माटे; १५५) ऋषभब्रह्मचर्याश्रम, स्या. महाविद्यालय काशी, दिल्ली जैन अनाथाश्रम, मुरादाबाद श्राविकाश्रम, मुंबाइ श्राविकाश्रम, मथुरा महाविद्यालय, अमदावाद दि. जैन बोर्डिंग, जैन सिद्धांत विद्यालय मोरेना, अमदावादनी व्हेरांमुंग नी शाळा वगेरे संस्थाओमां; आ मुजब आ दाननी व्यवस्था थइ रहेली छे. एक साधारण स्थितिवाळाए दानमां आवी सारी रकम काढी तेनो जुदी जुदी रीते उपयोग करवानी जे व्यवस्था करी छे, ते बीजा श्रीमानोए अनुकरण करवा योग्य छे एटले मृत्यु निमित्ते नीकळती रकमनो उपयोग विद्यादान, शास्त्रदान, जीवदया अने जीर्णोद्धारमांज विशेषे करीने थवो जोइए, जेथी मरनारनुं नाम अमर रहेवा उपरांत दानना पण लाभो थइ शकशे.

विमानोत्सव होगा—छबड़ागुगौरमें पौष वदि १० ता. २१ जनवरी को बडे समारोहके साथ विमानोत्सव होनेवाला है।

मदद मळी—मुंबाई श्राविकाश्रमने नवेंबर मासमां रु. २१४। ०॥नी मदद मळी हती जेमां रु. १००) श्रीमती मूळदेवीबाई बेलगामवाळाना हता.

तेरहद्वीपपूजन और केशलौंच—सुनारा (झालरापाटन) में कार्तिक मासमें १२ दिनतक तेरहद्वीपपूजनविधान बड़े समारोहके साथ हुआथा और इसी अवसर पर निग्रन्थ मुनि श्री चंद्रसागरजी महाराजका केशलौंच भी हुआथा जिसमें १९०० यात्रिगण उपस्थित थे। दो सभामें पं. गिरिधर शर्माने गृहस्थधर्म और श्रावकधर्म पर व्याख्यान दियाथा। जलयात्राका उत्सव भी हुआ और जैनकुमारसभाका दूसरा दौरा भी सफलतापूर्वक हुआथा और औषधालयको रु. ७३)= की सहायता मिली थी।

पांच नहीं पंद्रह हजार दिये—हमने जो अंक १२ में पं. पन्नालालजी के दौरे पर संदेह कियाथा कि सेठ हरिभाई देवकरणवालोंने भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनीसंस्थाको पांच हजार रु. दिये हैं या अधिक सो पं. पन्नालालजी के पत्रसे ज्ञात हुआ कि सेठजीने पांच नहीं १५ हजार रु. दिये हैं। इसके लिये सेठजीको हम कोटिशः धन्यवाद देते हैं कि—और २ दानी महाशयोंने जो उदारता दिखाई है और रथयात्रा, मेला, प्रतिष्ठा, पाठशाला, बोर्डिंग आदि धर्मसंस्थाओंमें दिखाई है उन सबकी मूलभूत इस संस्थाको इस प्रकार उदारता दिखाकर दृढ करके उनके परम संस्थापक व संरक्षक बनना बहुत ही उत्तम उनके पदस्थानुसार हुआ है। और ऐसे ही दानवीरोंकी आजकल आवश्यकता है।

अध्यापिकाकी जरुरत—श्री कंचनबाई श्राविकाश्रम इन्दौरके लिये २ हिन्दी अध्यापिका (२०) से ३०) तक मासिक वेतनकी) और धर्मशिक्षा देनेके लिये हेड पाठिका (वेतन ३०) से ३५) तक) की जरूरत है। पत्रव्यवहारका पता—हजारीलाल जैन, मंत्री, रा. ब. दानवीर सेठ हुकमचंदजी दि. जैन पारमार्थिक संस्थायें, इन्दौर।

ईनामनो मेळावडो:—ईडरनी माणेकबाई दि. जैन पाठशाळामां ईनाम वेंचवानो मेळावडो गत मासमां वकील देवचंद लीलाचंदना प्रमुखपणा नीचे थयो हतो, जेमां वंचायला रिपोर्टथी जणाय छे के १८ विद्यार्थीओ, ५ बाईओ तथा २२ बाळकीओ एनो लाभ लई रहेला छे अने द्रव्यसंग्रह, रत्नकरंडश्रावकाचार, पंचमंगळ सार्थ, दर्शन पाठ, आलोचनापाठ, छःढाळा वगेरेनुं शिक्षण अपाय छे. आ प्रसंगे विद्यार्थीओए 'उन्नति' उपर संवाद भजव्यो हतो तथा मास्तर नाथालाल तथा मणीलाले पण योग्य विवेचन करता पछी विद्यार्थीओने पाठशाळा तरफथी फेंटा, साडीओ वगेरे रु. ३४)नुं ईनाम वेंचायुं

હતું. આ પાઠશાળાનું કાર્ય નિયમિત ચાલ્યા કરે છે એ અતિ આનંદની બીના છે, અને આ પાઠશાળાને ઇડરના ભાઇઓ દરેક રીતે વખતોવખત યોગ્ય મદદ પહોંચાડતા રહે, તો ભવિષ્યમાં આ પાઠશાળા આથી પણ વધુ ઉન્નતિ કરી શકે.

पीपरा (सागर) में पं. बाबू खूबचंदजी के उपदेशसे कई भाइयोंने अनेक प्रकारके व्रतनियम लिये हैं। इयरका सिखरबंद मंदिर छ वर्ष हुए विनाकलश है इसलिए आगामी माघ मासमें नाइक अडकूलाल व मोदी मुंजीलालजी आदि पंचगणोंने कलशाभिषेक करनेकी प्रतिज्ञा की है।

नुक्तेके समय सभा—चोली (निमाड) में सेठ केशवसाह माणिकसाहकी माताके नुक्तेके समय एक खास सभा की गईथी जिसमें खंडवा, सनावद, मंडलेश्वर, महेश्वर आदि पचासों गांवके पोरवाड जैन एकत्रित हुए थे और जव्हरचंदजी, चौधरी केशवसाहजी तथा रूपचंदजी का "जातिहितचिन्ता" पर और सुप्रसिद्ध कवि—वक्ता श्री लक्ष्मणाचार्य वाणीभूषणजीका स्त्रीशिक्षाके विषयमें बहुतही महत्वशाली व्याख्यान हुआ था। और चोलीके मंदिरके जीर्णोद्धारके लिये ५००) रु. का चंदा हुआ था।

दहीगांवका मेला:—दहीगांवमें कार्तिक मासमें वार्षिक मेला हुआथा जिसमें नातेपुता, फलटण, बमणेद आदिकी भजनमंडलियें पांच दिन तक आईथीं और दो हजार आदमी एकत्रित हुए थे और ब्र. महावीरप्रसादजीका 'वस्तु स्वरूप' और ब्र. पार्श्वसागरजीका 'विद्या दान' के विषयमें व्याख्यान हुआथा जिससे कुंथलगीरीकी पाठशालाको २९०) रुपयेकी सहायता मिली थी।

मंदिरप्रतिष्ठा—झज्झर (रोहतक) में पौष सुदि १२ से १५ तक ढाईद्वीपपूजनविधान रथयात्रा उत्सव आदि सहित नवीन मंदिरकी प्रतिष्ठा होनेवाली है। यह स्थान बहादुरगढ़से २० मैल और रोहतक स्टेशनसे १६ मैल पर है।

बड़वाणीका मेला:—हर वर्षकी भांति इस सिद्धक्षेत्रमें पौष सुदि ८ से १५ तक वार्षिक मेला होनेवाला है। यह स्थानपर मउ Mhow स्टेशनसे जाया जाना है। सडक पक्की है।

हस्तीनापुरका मेला:-इस क्षेत्रमें कार्तिक मासमें वार्षिक मेलेके समय 'श्री ऋषभब्रह्मचर्याश्रम' का वार्षिक उत्सव बड़े समारोहके साथ हुआथा जिसमें कुल ७ सभाओंमें पं. माणिकचंदजी, कुंवर दिग्विजयसिंहजी, बाबू दयाचंदजी, ब.बू. जुगलकिशोरजी, ब्र. शीतलप्रसादजी आदिके अनेक व्याख्यान हुए थे। ब्रह्मचर्याश्रममें इस समय ६८ छात्र पढ़ रहे हैं और गतवर्ष रु. १२०००) खर्च पड़ाथा और इस वर्ष १०० छात्रोंके लिये २१,०००) रु.

का बजट तजवीज हुआ है। इस मेलेमें करीब १५००) रु. की सहायता आश्रमको मिलीथी। लाला जम्बूप्रसादजी सहारनपुरवालोंने आकर ब्रह्मचर्याश्रमको धर्मशालासे निकालदेनेके लिये बड़ा भारी दंगा और हुल्लड मचाया था !! और अधिष्ठाता बाबू गेंदनलालजीको बहुत कुछ चोट लगीथी परंतु साहू जुगमंदरदासजी, लाला जग्गीमलजी आदिने सबको शांत करदिया था जिससे ज्यादे विघ्न उपस्थित नहीं हुआ और आश्रमको भी धर्मशालासे नहीं हठाया गया। बड़े अफसोसकी बात है कि लाला जम्बूप्रसादजी (महसभाके महामंत्री!) ने विना प्रयोजन ही आश्रमके कार्यको नष्टभ्रष्ट करनेका बीड़ा उठाया था जो किसी प्रकारसे उचित न था!

ग्राहक नंबर—"दिगंबर जैन" की ग्राहक संख्या दिनोंदिन बढ़ रही है इस लिये पत्रव्यवहार करते समय हरएक ग्राहकको अपना ग्राहक नंबर अवश्य लिखना चाहिए।

एक स्त्रीरत्नका वियोग—लखनऊ निवासी श्रीमती विदुषी पार्वतीबाईजीका देहांत मेरठमें हो गया! आप कई वर्षोंसे जैनस्त्रीसमाजमें शिक्षाके प्रचारका कार्य कर रहीथीं और आपके उपदेशसे अनेक श्राविकायें और विधवाओंके जीवन सुधरे हैं। आपके पास १८००) रु. की आजिविका थी जिसका ट्रस्टडीड किया है जिसका व्याज स्त्रीशिक्षा और औषधिदानमें लगाया जायगा। मेरठकी स्त्रीसमाजने आपके नामका स्मारक फंड खोला है। बम्बई श्राविकाश्रमसेभी १५) रु. स्मारक फंडमें भेजा गया है।

शिखरजीके यात्रियोंको सुभीता:—श्री सम्मेद शिखरजी जानेके लिये इसरी स्टेशनसे पोस्ट पारसनाथ (चिरकी) तक मोटोरकारका इंतजाम हुआ है। यहाँसे मधुवन सिर्फ डेढ मैल ही रहजाता है। मोटोरमें २५-३० आदमी सामान साथ बैठ सकते हैं और एक कलाकमें मधुवन पहुंचती है। किराया १॥)- २॥) और ४) तीन प्रकारसे है।

"खंडेलवालकुलभूषण" का पद मिला-श्री कचनेरजीके मेलेमें खंडेलवालपंचमहा सभाका वार्षिकोत्सव हुआ था जिसमें श्रीमान पं. पन्नालालजी कासलीवालको 'खंडेलवालकुलभूषण' का पद प्रदान किया गया है।

जैनसाहित्यका प्रदर्शन—कलकत्तेमें रथयात्रा उत्सव के समय बेलगछीया जैन मंदिरमें प्राचीन जैनसाहित्यका एक प्रदर्शन ता० २७-२८ नवम्बर को बताया गया था जिसमें जैनसिद्धांतभवन-आरासे कुमार देवेन्द्रप्रसादजीने बहुतही प्राचीन जैनसाहित्य लाकर रखा था।

ऐलक हुए—श्रीमान क्षुल्लक गौरीलालजीने केकड़ीमें उत्सवके समय ऐलक पद्वी धारण की है। यहां के भंडारमें २०० प्राचीन शास्त्र हैं जो जीर्णशीर्ण हो रहे हैं उनकी संभालकी बड़ी आवश्यकता है।

विद्यालयका वार्षिकोत्सवः—श्री जैनसिद्धांतविद्यालय (मुरेना) का पंचम वार्षिकोत्सव माघ सुदी ५–६ तदनुसार ता. ८–९ फरवरीके दिन बड़े समारोहके साथ होगा। सब भाईयोंको अवश्य पधारना चाहिए।

उपहार कब मिलेंगे—इस वर्षके ग्राहकोंको २)–३) के मूल्यकी ७ पुस्तकें उपहारमें मिलेंगी, जो तैयार होनेपर क्रमशः भेजी जायंगी। ग्राहकगण! धैर्य रखिए।

ઐલક પન્નાલાલજી જૈન પાઠશાળા (સોલાપુર) નો ૩ જો વાર્ષિક મેળાવડો શ. પાયસાગર ઉગારકરના પ્રમુખપણા નીચે તા૦ ૨૪-૧૦-૧૫ને દિને થયો હતો, જેમાં ઘ મરાઠી ભાષાના અને બાળવિવાહ ઉપર સંસ્કૃત ભાષામાં એક સંવાદ વિદ્યાર્થીઓએ બજવી બતાવ્યો હતો તથા રિપોર્ટ વગેરે ઇનામો વંચાયા હતા જે વખતે ગૌતમચંદ જયચંદજી નીમાણકરે ૨૦૦) મદદ આપી હતી.

"दिगंबर जैन"को सहायता—१) जैनकुमारसभा झालरापाटन कैम्पकी तरफसे; २) छोटेलाल जैन अंबालाकी तरफसे पुत्र-लग्नकी खुशीमें, ११) होनासा रामासा सीरपुरकी तरफसे मातुश्री सोनाबाईके स्मरणार्थ और १) गुलाबचंदजी श्यामलालजी जयपुरवालोंकी तरफसे पुत्री विवाहकी खुशीमें गोकुलचंद सोगानीकी मार्फत "दिगंबर जैन" को सहायतार्थ मिला है सो साभार स्वीकार किया जाता है।

ઉપદેશનું ફળ—વાસણાનીપરી (સાદરા) માં પં. પીતાંબરદાસજી ઉપદેશકના પ્રયાસથી ત્યાં ઘર દેરાસર કરવા માટે રૂ. ૨૦૧) ની ટીપ થઇ છે. ત્યાં દશાહુમડભાઈઓનાં ૭ ઘર છે. પણ મંદિર નથી, જેથી ઘર દેરાસર તાકીદે કરવાની જરૂર છે.

काशीमें वार्षिकोत्सव।

"श्री स्याद्वाद महाविद्यालय"का ग्यारहवां वार्षिकोत्सव ता. २–३ फर्वरी सन् १९१६ को श्रीयुक्त पंडीतराज कविसम्राट् महामहोपाध्याय यादवेश्वरजी तर्करत्नके सभापतित्वमें खूब धूमधामके साथ होगा। उसी समय ता. ४ फर्वरीसे विश्वविद्यालयके मुहूर्तका महोत्सव भी बड़े समारोहके साथ होनेवाला है। श्रीमान वाइसराय (बड़े लाट) महोदय अपने हाथसे विश्वविद्यालयकी नीव रक्खेंगे। और सैंकड़ों राजा, महाराजा उस समय पधारेंगे। इस कारण विद्यालयके महोत्सवमें पधारनेवाले महाशयोंको विश्वविद्यालयका समारोह देखनेका भी एक अच्छा अवसर प्राप्त होगा। तीसरे बनारससे सम्मेदशिखरजी भी बहुत निकट पड़ते हैं। इस लिये थोड़े खर्च में शिखरजीकी यात्राका भी असीम लाभ हो सकता है। सर्व सज्जन महाशयोंसे निवेदन है कि उक्त समयको हाथसे न जाने देवें।

सूचना—आनेवाले महाशयोंको काशी स्टेशनपर उतरकर मैदागिनमें बाबू बिहारीलालजीकी धर्मशालामें उतरना चाहिये। और विशेष व्यवस्थाके लिये-सुपरिन्टेन्डेन्ट स्याद्वाद महाविद्यालयको सूचना देना चाहिये।

ब्र. शीतलप्रसाद, अधिष्ठाता।

पं. उमरावसिंह, सुपरिन्टेन्डेन्ट।

 इस वर्षके ग्राहकोंको २)-३) की ७ पुस्तकें उपहारमें मिलेंगी। 

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रगट थतुं मासिक

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

युतं मुलेखै र्विविधैश्चचित्रै, र्दिगंबरजैन मिदं सुपत्रम् ।
प्रभो ! महावीर ! ! तव प्रभावात्, समुन्नतिमातनोतु ॥

वर्ष ९ मुं.	वीर संवत २४४२. माघ विक्रम सं. १९७२	अंक ४ थो.



दि. जैन प्रांतिक कोन्फरंस

गया अंकमां आपेल समाचारथी वांचकोने जणायुं हशेज के आपणी मुंबाई दिगंबर जैन प्रांतिक कोन्फरंसनी बेठक गत वर्षे आमंत्रणनी गेरहाजरीमां खाली जवा पछी आ वर्षे खास कोन्फरंस तरफथी सिद्धक्षेत्र श्री **गजपंथाजी (नासिक)** मां वार्षिक मेळा प्रसंगे चैत्र सुदी ५-६-७ उपर मळनार छे, जे माटेनी रिसेप्शन कमीटी नीमाई चुकी छे तथा अनेक प्रकारनी गोठवणी चाली रहेली छे. आ श्री गजपंथाजी तीर्थ उपर कोन्फरंस थवाने लगभग ९ वर्ष थई गयां छे अने ते समये आ कोन्फरंसनो लाभ गुजरातना भाईओए नहिं जेवोज लीधो हतो; केमके " जैनमित्र " नो विशेष प्रचार गुजरातमां न होवाथी घणा भाईओ आपणी *कोन्फरंसथी अजाण्या हता, पण "दिगंबर जैन"* (आ पत्र) नो जन्म थया पछी गुजरातना भाईओ आपणी कोन्फरंस अने तेनां कार्योथी सारी रीते जाणीता थया छे, जे **पावागढ, तारंगा, पालीताणा** वगेरे स्थळे भरायली कोन्फरंसनी बेठकोमां गुजरातना भाईओनी पुष्कळ हाजरी अने मळेली मददो उपरथी खास जणाई आवे छे. एटलुं तो नक्कीज छे के आ कोन्फरंसथी मुंबाई इलाकाना दि. जैनोमां **धर्मजागृति** घणी थवा पामी छे अने ए प्रवाह पूर्ण उत्साहथी चालु रहे, तो भविष्यमां आ कोन्फरंस कंई अवनवां कार्योज करी बतावशे एवी संपूर्ण आशा छे. गजपंथाजीपर कोन्फरंस मळवाने मात्र बे महिनाज बाकी रहेला छे, माटे ए प्रसंगनो लाभ लेवाने गुजरातना भाईओए पावागढ तथा पालीताणानी माफक मोटी संख्यामां खास तैयार थवुं जोईए. आ सिद्धक्षेत्र

नासिकथी मात्र पांच माईल उपर छे, तेमज मांगीतुंगीजी तीर्थ पण पासेज आवेलुं छे; जेथी गजपंथाजीनी साथे मांगीतुंगीनी यात्रानो पण लाभ मळी शकशे.



माणेकचंदजी ग्रंथमाळा.

गुजरातना दिगंबर जैनोमां धर्मजाग्रति फेलावनार अने आखा हिंदना दि. जैनोनी उन्नति माटे अहर्निश तन, मन, धनथी अटूट प्रयास करनार स्वर्गीय वीरवर दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणेकचंदजीनुं नाम अमर राखवाने माटे मुंबाईमां जे स्मारक फंड खोलायुं हतुं तेमां मात्र चार हजार रुपीआ भराया हता, जेमांथी एक संस्कृत ग्रन्थमाळा सेठ माणेकचन्दजीना नामथी प्रकट करवानुं नक्की थयुं हतुं, ते मुजब आ ग्रन्थमाळाना बे संस्कृत ग्रंथो नामे लघियस्त्रयादि संग्रह अने सागारधर्मामृत पूर्ण प्रकट थई चुक्या छे. आपणा श्वेतांबरी भाईओमां संस्कृत पुस्तको प्रकट करवानी अनेक संस्थाओ छे अने ते द्वारा लागतनी किंमते अनेक प्राकृत-संस्कृत ग्रंथो प्रकट थया करे छे, पण आपणा दि. भाईओमां आवी एक पण संस्था न होवाथी ए खातनो प्रयास बाळब्रह्मचारी पं. पन्नालालजी बाकलीवाले उपाडेलो छे अने बीजो प्रयास आ 'माणिकचन्द ग्रंथमाळा' प्रकट करवानो मुंबाईथी थयो छे, अने तेना मंत्री तरीके "जैन हितैषी" ना विद्वान संपादक श्रीयुत् नाथुरामजी प्रेमी नीमाया छे, जेथी आ ग्रन्थमाळाने जो पुरतुं उत्तेजन मळे, तो आ संस्था द्वारा अनेक संस्कृत ग्रंथोनो उद्धार थई शकशे. वधारे उपयोगी न थवाथी संस्कृत भाषाना ग्रंथोनो खास उठाव थतो नथी, तोपण 'मूळ वगर शाखाज क्यांथी?' ए उक्ति मूजब प्रथम तो मूळ संस्कृत ग्रंथो प्रकट थवानी जरूर छे, जेथी आ ग्रंथमाळाना ग्रंथो श्रीमानोए २५-५० नी संख्यामां खरीदी लई आपणी संस्थाओ तथा मंदिरोमां मुकवा जोईए तेमज दरेक गाम के शहेरना दरेक मंदिरदीठ आ ग्रन्थमाळानी एकेक नकल खरीद करवानी तो खास आवश्यकता छे. आ बंने ग्रंथोमां एक २०० पृष्टनो अने बीजो २५० पृष्टनो छे, तेम वळी दरेक पर दानवीर सेठ माणेकचंदजीनुं आकर्षणीय चित्र पण छे, छतां एनी लागत किंमत तो मात्र छ अने सात आना छे, जेथी आवी जुज किंमते आवा अलभ्य संस्कृत ग्रंथोनो संग्रह करवाने सर्व बंधुओने खास भलामण करवामां आवे छे. मुंबाईथी तेमज सुरतथी पण मळी शके छे.



सस्ती जैन-ग्रंथमाळा.

गुजराती भाषामां प्रगट थयेला दि. जैन ग्रंथोनी संख्या आंगळीना वेढा उपर गणाय तेटली पण नथी, तेम गुजरातमां वांचननो शोख विशेष न होवाथी कोईपण पुस्तक जो खास वेचाण माटे प्रकट करवामां आवे छे, तो तेनी १००-२०० प्रतो खपवी पण मुश्केल पडे छे. जोके 'दिगंबर जैन' मारफते गुजरातना भाईओनी मददथी गुजराती भाषानां केटलांक डुंक पुस्तको भेट तरीके बहार पडयां छे, जेथी हवे आ दिशा तरफ गुजरातना भाईओनी प्रवृत्ति

चळती जाय छे, तोपण घणीज सस्ती किंमते गुजराती टाईपे गुजराती भाषामां अनेक पुस्तको प्रकट थवानी जरूर छे, जे माटे अमारा ज्येष्ठ बंधु जीवणलाल कसनदास कापडियाए पोतानी स्व. सौ. पत्नि जडावबाईना स्मरणार्थे रु. २००) काढी आपी एक सस्ती जैन ग्रंथमाळा प्रकट करवानी शरूआत छ महिना थयां करी आपी छे, जेथी आ सस्ती ग्रंथमाळानो प्रथम मणको चेतन-कर्म चरित्र (पृ. २२५ कि. रु. ०।) प्रकट थई चुक्यो छे अने बीजो मणको श्री यशोधरचरित्र (पृ. १९२) पंदर दिवसनी अंदर प्रकट थनार छे. आ ग्रंथमाळानुं पोस्टेज साथे वार्षिक मूल्य मात्र आठज आना राख्युं छे, जेथी आटली जूज किंमतमां दर वर्षे घेर बेठां ४०० पानानुं वांचन मळवानी उत्तम सगवड थई छे, जेथी गुजरातना दरेक बंधुने आ सस्ती जैन ग्रंथमाळाना ग्राहक थवा अमो एकवार फरीथी आग्रह करीए छिए. अमोने मात्र एक कार्ड लखवाथी आ ग्रंथमाळानो प्रथम मणको श्री चेतन-कर्म चरित्र वार्षिक मूल्यना वी. पी. थी तरतज मोकलाय छे अने बीजो मणको पण पंदर दिवसमां तैयार थये रवाना करवामां आवशे.

આહારદાનનો સહેલો ઉપાય.

એક સમય એવો હતો કે જ્યારે વિદ્યાર્થીઓને ગુરૂને ઘેરજ વિદ્યાભ્યાસ કરવા માટે રાખવામાં આવતા અને ત્યાં પણ તેઓ ભિક્ષા માંગી લાવીનેજ પોતાનું ગુજરાન કરતા હતા. જો આજે આપણે એવી વાતો કરીએ, તો ઘણાને આશ્ચર્યજ લાગશે કે એવી રીતે માંગીને પેટનું ગુજરાન કરવું અને ગુરૂને ઘેર રહીને વિદ્યાભ્યાસ કરવો, એ તો કિંચુપત લગાડનારૂં કહેવાય, પણ આમાં ઘણાજ બારીક લાભો સમાયલા હોવાથીજ આવી પ્રવૃત્તિ હતી. હાલનો સમય તદ્દન બદલાઇ ગયો છે અને એવાં ગુરૂકુળો સ્વપ્નવત્ થઇ ગયાં છે, છતાં પણ હાલ ચાર વર્ષ થયાં દિ० જૈનોમાં એક એવી ઉત્તમ સંસ્થા સ્થપાઇ છે કે જે દ્વારા અનેક વિદ્યાર્થીઓ એકજ સ્થળે સૂખચેનમાં રહી ઉત્તમ પ્રકારે વિદ્યાભ્યાસ કરી રહેલા છે. આ સંસ્થા તે શ્રી **હસ્તીનાપુર** ક્ષેત્રમાં ચાલતું **શ્રી રૂપભ બ્રહ્મચર્યાશ્રમજ** છે, જેને બ્ર० ગેંદનલાલજી, બ્ર० ભગવાનદીનજી, બ્ર० ભગીરથજી વર્ણી વગેરે સારી વ્યવસ્થાથી ચલાવી રહેલા છે, અને તેમાં વળી વિશેષ ઉત્તમ સગવડ હાલ એ થઇ છે કે જૈનધર્મભૂષણ બ્રહ્મચારીજી **શીતલપ્રસાદજી** હાલ આ સસ્થાના અધિષ્ઠાતા નિમાયા છે, જેમણે આ જંગી સંસ્થાના નિભાવ માટે એક **ઉત્તમ યોજના** પ્રકટ કરી છે, જેને સારો આવકાર મળશેજ, એમ સંપૂર્ણ આશા છે. આ બ્રહ્મચર્યાશ્રમમાં ૫ થી ૧૫ વર્ષની ઉમરના ૬૮ વિદ્યાર્થીઓ બ્રહ્મચર્ય અવસ્થામાં રહીને વિદ્યાભ્યાસ કરી રહેલા છે, જેનો માસિક ખર્ચ રૂા ૧૨૦૦) છે, છતાં સ્થાયી ફંડ ન હોવાથી વાર્ષિક, માસિક તેમજ છુટક મદદોથી આ ગંજાવર ખરચ માંડમાંડ નીભી રહેલો છે, જેથી બ્ર. શીતલપ્રસાદજીએ એવી યોજના પ્રકટ કરી છે કે બધા વિદ્યાર્થીઓનો રોજનો **ભોજન ખર્ચ રૂા. ૨૫)** છે, તો વર્ષના **૩૬૫ દિવસ માટે જો ૩૬૫ શ્રીમાનો** માત્ર પચ્ચીસ પચ્ચીસ રૂપ્યા એકેક દિવસના ભોજન ખર્ચ માટે આપે તો આ વિદ્યાર્થીઓના ભોજન માટેની ઉત્તમ ગોઠવણ થઇ શકે. આ સૂચના 'જૈન મિત્ર'માં પ્રકટ થતાંજ ૨૫ શ્રીમાનોએ આ પ્રમાણેની પચ્ચીસ પચ્ચીસ રૂા. ની મદદ આપવા કબુલ્યું છે, જે બાબતનો એક લેખ આ અંકમાં ૨૩૬મે પાને પ્રકટ કરેલો છે, તો આ પ્રમાણે **આહારદાન કરવાનો આ સેહેલો ઉપાય** છે, જેને ઉત્તેજન આપવા અમો દરેક બંધુને ખાસ આગ્રહ કરીએ છીએ. આપણે આશા રાખીશું કે ટૂંક સમયમાં ૩૬૫ દિવસ માટેની સ્વીકારતા બ્રહ્મચારી શીતલપ્રસાદજીને મળી જશેજ. આવા આહારદાન માટે એક વર્ષે માત્ર રૂ. ૨૫) ની સહાયતા આપવી એ કોઇપણ શ્રીમાનને ભારે પડે તેમ નથી.

શુભ પ્રસંગો માટે જરૂરી સુચના.

હાલમાં જ્યાં જોઇશું ત્યાં લગ્નસરાની શુભ મોસમ શરૂ થયેલી જણાઇ માલમ પડશે અને એક બીજાની દેખાદેખીથી તથા એક બીજાથી ચઢિયાતા થવા માટે લગ્ન પ્રસંગે ન્યાતવરાં, વરઘોડાઓ વગેરેમાં નાણાંનો પુષ્કળ વ્યય થઇ રહ્યો હશેજ. હવે આ શુભ પ્રસંગોએ જોઇતો ખર્ચ કરવાની તો જરૂરજ છે પણ સામટો ઉડાઉ ખર્ચ કમી કરી આવા શુભ પ્રસંગની ખુશાલી નિમિત્તે કંઇને કંઇ રકમ પણ વિદ્યાદાન અને શાસ્ત્રદાન માટે કાઢવાની જરૂર છે. તેમજ દરેક લગ્ન પ્રસંગે 'પુત્રીકો માતાકા ઉપદેશ' (સસુરાલ જાતે સમય) નામનું પુસ્તક ખાસ વેંચવાની જરૂર છે. નિમિત્ત વગર કંઇપણ કાર્ય થતુંજ નથી. માટે દરેક લગ્ન પ્રસંગની ખુશાલીમાં વિદ્યાદાન નિમિત્તે આપણી જાણીતી સંસ્થાઓ જેવી કે- શ્રી ૠષભ બ્રહ્મચર્યાશ્રમ-હસ્તીનાપુર, સ્યાદ્વાદ જૈન મહાવિદ્યાલય,-કાશી; જૈનસિદ્ધાંત વિદ્યાલય,-મોરેના, શ્રાવિકાશ્રમ-મુંબાઇ; મહાવિદ્યાલય-મથુરા, જૈન અનાથાશ્રમ-દિલ્હી વગેરે સંસ્થાઓ માટે કંઇ ને કંઇ રકમ જુદી કાઢી તે તરતજ મનીઓર્ડરથી મોકલી આપવી જોઇએ. તેમજ જેમનાથી બની શકે તેમણે આવા પ્રસંગની ખુશાલીમાં રૂ. ૫૦), ૧૦૦), ૨૦૦) ની રકમ શાસ્ત્રદાન માટે કાઢી તેમાંથી કોઇ નવીન પુસ્તક પ્રકટ કરાવી લગ્નની ખુશાલી તરીકે ભેટ વેંચાવવાની હાલના સમયમાં જરૂર છે. વળી લગ્ન જેવા શુભ પ્રસંગે હજુ કેટલેક સ્થળે વેશ્યાનૃત્ય, આતશબાજી, ફટાકડી વગેરેનો તથા મિથ્યાત્વ રૂઢીથી લગ્નવિધિ કરવાનો રિવાજ પણ ચાલી રહેલો છે, તેને બંધ કરી દરેક લગ્ને શાસ્ત્રોક્ત જૈનલગ્નવિધિજ થવા જોઇએ, અને આવા લગ્ન પ્રસંગે એક ઉપદેશક સભા ભરી કુરિવાજો બંધ કરવાનો ઉપદેશ અપાવો જોઇએ.

* * *

લડાઇ અને મોંઘવારી.

દોઢ વર્ષ થયાં જે દારૂણ રણસંગ્રામ યુરોપમાં ચાલી રહેલું છે તેમાં લાખોની સંખ્યામાં નરસંહાર અને કરોડોની સંખ્યામાં દ્રવ્યસંહાર થઇ રહેલો છે, જેની અસલ અસર આખી દુનિયાના દરેક વ્યાપાર ઉપર થઇ છે અને આ ઘોર રણસંગ્રામ વધુ લંબાશે, તો દરેક વ્યાપારની સ્થિતિ કેટલી બધી કઢંગી થઇ પડશે તે કળી શકાતું નથી. હિંદના વ્યાપાર ઉપર આ લડાઇની અસર આટલી બધી થવાનું કારણ હિંદને ખપતી લગભગ બધીજ વસ્તુઓ ઉપર પરદેશનો આધાર હાલ રાખવો પડે છે અને લડાઇને લીધે પરદેશનો માલ આવતો બંધ પડયો છે તેજ છે. જો કે અનેક કાચા પદાર્થો હિંદમાંથી પરદેશ ખાતે જઇ તેનું રૂપાંતર થઇને અત્રે આવે છે અને તે ચારગણા આઠગણા ભાવથી અત્રે વેચાય છે, તો હવે એવો સમય આવી પુગ્યો છે કે હિંદને ખપતી દરેક વસ્તુ હિંદમાંજ તૈયાર કરવાની જરૂર છે, જે માટે જે જે કારખાનાઓ ચાલુ હોય, તેને મદદ કરી ખીલવવાં જોઇએ તથા શ્રીમાનોએ પોતાનાં નાણાંનો વ્યય નવાં કારખાનાંઓ ઉભાં કરવાને કરવો જોઇએ. દાખલા તરીકે **કાગળની મોંઘવારી** એટલી બધી વધતી જાય છે કે, આ સ્થિતિ ચાલુ રહી, તો ભવિષ્યમાં એની કેટલી બધી મોંઘવારી થઇ જશે, તે કળી શકાતું નથી. યુરોપમાં કાગળની તંગીને લીધે કેટલાંક પેપરો બંધ પડયાં છે તેમ કેટલાંકનાં કદ ઘટયાં છે તથા અનેકોએ લવાજમો વધાર્યાં છે, તો હિંદમાં પણ તેવીજ સ્થિતિ થશે એમાં કાંઇ નવાઇ જેવું નથી, માટે હિંદમાંથી કાગળનો મારો જતો અટકાવી દરેક જાતના કાગળો અત્રે ઉત્પન્ન કરવાની કોશીશો થવાની ખાસ જરૂર છે. આપણે વધુ ન કરી શકીએ, તોપણ ખપ જોગું તો તૈયાર કરવાની તો ખાસ જરૂર છે.



પાવાગઢનો મેળો:-રાખેતા મુજબ સિદ્ધક્ષેત્ર શ્રી પાવાગઢ ઉપર માહા સુદ ૧૩ ને દિને વાર્ષિક મેળો ભરાનાર છે, જે પ્રસંગે આ તીર્થની મેનેજીંગ કમીટીની પાંચમી બેઠક પણ થનાર છે.

सहायताकी आवश्यकता:—जैन बालबोध पाठशाला, बबीना (झांसी) द्रव्यकी त्रुटीके कारण बंद पड़ी है जिसपर ध्यान देकर वहांके भाईयोंको उचित है कि इस पाठशालाको सहायता देकर शुरु रक्खें।

મૃત્યુના સ્મરણાર્થે દાન—વ્યારા (સુરત) ના શેઠ દેવચંદ ગુલાબચંદે પોતાના માતુશ્રી મણીબાઇ તથા ભત્રિજા જશવંતલાલના પુણ્યાર્થે રૂ. ૨૫) ઋષભ બ્રહ્મચર્યાશ્રમ (એક દિવસના ભોજન માટે), રૂ. ૨૦) જૈન સિદ્ધાંત વિદ્યાલય-મોરેના, ૧૫) સ્યાદ્વાદમહાવિદ્યાલય-કાશી, ૧૦) શ્રાવિકાશ્રમ-મુંબઈ, ૧૦) શ્રાવિકાશ્રમ-મુરાદાબાદ, ૧૦) જૈન અનાથાશ્રમ—દિલ્હી, ૧૦) મુંબઇ દિ. જૈન પ્રાં. સભા ઉપદેશક ફંડ, ૧૦) મથુરા વિદ્યાલય અને રૂ. ૨. જૈનતત્ત્વ પ્રકાશિની સભા—ઇટાવા એમ મળીને રૂ. ૧૧૨) મોકલી આપ્યા છે.

કીર્તનકારનો સ્તુત્ય પ્રયાસ:-જાણીતા કીર્તનકાર તાત્યા કેશવ ચોપડે દિ. જૈને અહમદનગરમાં પંદર દિવસ સુધી કીર્તન કર્યું હતું, જેમાં 'દેશભૂષણ કુલભૂષણ' ઉપર ઉત્તમ આખ્યાન કરવાથી એક માનપત્ર અપાયું હતું તથા વાગડે થીયેટરમાં ૨૦૦૦ જનસમુહ વચ્ચે જાહેર કીર્તન 'સોમદત્ત' આખ્યાન ઉપર કરવાથી ત્યાં રા૦ બા૦ યશવંતરાવને હાથે સોનાનો ચાંદ અને માનપત્ર અપાયું હતું. વળી અત્રેના જૈન કાસાર જેઓ જૈન હોવા છતાં પોતે જૈન છે એમ જાણતા નહોતા તેમને કીર્તનો વડે ઉપદેશ આપી જૈનધર્મ ઉપર શ્રદ્ધા કરાવવાથી તેઓએ ખુશ થઈ કીર્તનકારને માનપત્ર આપ્યું હતું. આ કીર્તનકારે '**જૈન કીર્તનાલય**' નામે સંસ્થા પુનામાં ઉઘાડી છે, જે દ્વારા જૈન અને જૈનેત્તરોમાં વખતો વખત કીર્તનો વડે ઉત્તમ ઉપદેશ અપાય છે.

भ्रमणका फल—वर्धामें कुंवर दिग्विजयसिंहजीने पधारकर आठ दिन तक अनेक व्याख्यानों द्वारा धर्मोपदेश किया था और ३०)सहायता ऋषभब्रह्मचर्याश्रमको मिली थी।

મહુવા (કાઠીયાવાડ)ની ગૌરક્ષક સભાનો ૨૫મો વાર્ષિક મેળાવડો ગઇ તા. ૧૪ મીએ ભારે ઉત્સાહથી થયેલો, જે પ્રસંગે ગૌશાળાની ગાયોને સુશોભિત શણગારો પહેરાવી ગાયોનું સરઘસ કાઢવામાં આવ્યું હતું તેમજ ભાવનગરના મહારાજા વગેરેની મદદનો રૂ. ૨૦૦૦)ના વ્યાજમાંથી સર્વે ગાયોને પાકના લાડુ ખવડાવવામાં આવ્યા હતા. આ સંસ્થામાં ગાયોનું રક્ષણ ઉત્તમ રીતે થાય છે જે એના ઉત્સાહી મંત્રી ઓધવજી રામજીને આભારી છે.

अचानक वियोग:—झांसीनिवासी सिंघई हरप्रसादजीका ता. ११—१—१६को अचानक स्वर्गवास हो गया है। आपके स्मरणार्थ शास्त्रदानके लिये कुछ रकम निकलनेवाली है।

પાઠશાળાની સ્થાપના:-શા. માણેકલાલ નાનચંદ અને માસ્તર નાનચંદ પૂંજાભાઈ બી. એ. ના પ્રયાસથી પાદરામાં પાઠશાળા ખોલવાનું નક્કી થઇને આશરે ૩૦ રૂ૦ની માસિક આવક થઇ છે અને તેનું મુહૂર્ત માહા સુદ ૧૩ ને દિને ભ. સુરેંદ્રકીર્તિને હસ્તે થનાર છે.

ભ० સુરેંદ્રકીર્તિજીએ ગત માસમાં મહેળાવ, છાણી, બોરસદ વગેરે સ્થળે-ભ્રમણ કરી ઠીક ઉપદેશ આપ્યો હતો.

ઘોડાદરની પાઠશાળા જે તારાચંદ તલકચંદ જેલાભાઇ (સુરતવાળા) તરફથી ચાલે છે તેનો ૫૨ વિદ્યાર્થી લાભ લે છે, જેની પરીક્ષા ગત માસમાં એ સ્ટેટના મેનેજર માધવલાલે લઇ સંતોષ જાહેર કર્યો હતો તથા મીઠાઇ વેંચાઇ હતી.

કાશીના સ્યાદ્વાદ મહાવિદ્યાલયનો અાદર—શેઠ તારાચંદ તલકચંદ જણાવે છે કે, રાયદેશમાંથી આશરે ૧૫૦ આદમીનો સંઘ શ્રી સમેદશિખરજીની યાત્રાએ નીકળેલો છે, જેણે ગયા માસમાં કાશીમાં સ્યાદ્વાદ મહાવિદ્યાલયની મુલાકાત લીધી હતી, જે દરમ્યાન એક મોટી સભા થઇ વિદ્યાર્થીઓનાં ઉત્તમ ભાષણો સાંભળવાથી આ સંઘને અતિ આનંદ થયો હતો અને વિદ્યાલયના કાર્યથી ખુશ થઇ બધા વિદ્યાર્થીઓને બીલોડાના શેઠ કોદરભાઇ ઉગરચંદ તરફથી બરફી પુરીનું જમણ અપાયું હતું તથા ૪૩ યાત્રાળુઓએ વિદ્યાલયની મદદમાં રૂ. ૧૦૨॥=) રોકડા ભર્યા હતા, જે રકમ રૂ. ૧૦) થી રૂ. ०॥ સુધીની હતી, જેમાં રૂ. ૧૦) નો રકમ ટોરડાના શા० કાળીદાસ સખારામની હતી.

ભટ્ટારકનો વિયોગ—કોલ્હાપુરમઠના ભટ્ટારક સ્વસ્તિ શ્રી લક્ષ્મીસેનસ્વામી ગઇ તા० ૨० મીએ સ્વર્ગવાસી થયા છે. આ ભટ્ટારકજી વિદ્વાન અને કાર્યકુશળ હતા. ઉમર આશરે વર્ષ ७०ની હતી.

वार्षिकोत्सवः—श्री जैन सिद्धांत-विद्यालय मुरैनाका पंचम वार्षिकोत्सव ता. ८-९ फरवरीको बड़े समारोहके साथ होनेवाला है। सब भाईयोंको पधारना चाहिए।

रथोत्सव और सभाः—दि. जैन प्रां. सभा खीचीवाडाका तृतीय वार्षिकोत्सव फाल्गुन कृ. २ से ८ तक सिरोंजमें होनेवाला है जिस मौकेपर रथोत्सव होगा और अनेक विद्वानोंके व्याख्यान भी होवेंगे। यह स्थान बीना भोपाल लेनके बामोरा स्टेशनसे ८ कोसपर है। सवारी बराबर मिलती है।

हाथरसमें त्यागी पन्नालालजी और उत्सवः—गत मासमें श्री. त्यागी ऐलक पन्नालालजीका शुभागमन हाथरसमें हुआ था जिससे जैनधर्मकी अच्छी प्रभावना हुई थी और आपके उपदेशसे अनेक भाईयोंने व्रत-नियम लिये और संपूर्ण समाजने मिलकर मंदिरजीमें ऊनके वस्त्र और सीपके बटन आनेकी बंदी की है। और सुदी १० को "ऐलक पन्नालालजी दि. जैन धर्म विद्यावर्धनी पाठशाला" नामक नवीन पाठशालाका मुहूर्त किया गया और इसी मौकेपर जैन बालसभा (हाथरस)का वार्षिकोत्सव भी हुआ जिसमें सभाका नाम अबसे "जैन धर्म वर्धनी सभा" रखा गया। सभापति लाला प्यारेलालजी सेठी हुए। प्रत्येक पक्षकी द्वितीयाको सभाकी बैठक होगी, और वार्षिक फी २) के स्थानमें १) किया गया और अनेक व्याख्यानों होकर कई प्रस्ताव पास हुए थे।

ब्यावरमें श्रीमान् रायसाहब कुंवर रामस्वरूपजीका असमयपर मृत्यु हो जानेसे 'श्री. दि. जैन हितकारिणी सभा' की तर-

लागतके दामोंपर

दो महान् ग्रंथ।

हरिवंशपुराण बड़ा, नवीन भाषानुवादसहित और तत्त्वार्थ सूत्रकी अर्थप्रकाशिका टीका सदासुखजीकृत, ये दोनों ग्रंथ शोलापुरनिवासी दानवीर श्रेष्ठिवर्य गांधी हरिभाई देवकरण एन्ड सन्सकी जैनग्रंथमालामें छपानेका प्रबंध किया गया है और सेठजी साहबने ये दोनों ही ग्रंथ लागतके दामोंसे ही बेचनेकी आज्ञा दी है।

इनमें हरिवंशपुराण बड़ा जिनसेनाचार्यकृत १२००० श्लोकोंमें मूल है। उसका हमने नया सरल हिंदी भाषानुवाद कराकर १२००० मूल श्लोकोंसहित नये सुंदर टाइपोंमें छपानेका प्रबंध किया है। इसकी कुल लागतका हिसाब लगाया तो लगभग ५) रु. में एक प्रति पड़ेगी। ये ग्रंथ नीचे लिखे महाशयोंको लागतके दामोंमें दिये जायगे,—

१ एक तो जो महाशय भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्थाकी तीनों ग्रंथमालाओंमें छपे हुये भाषा या भाषाटीकासहित प्रत्येक ग्रंथको छपते ही वी. पी. द्वारा मँगानेवाले हैं, अर्थात् एक एक रुपया मनीआर्डरसे भेजकर पक्के ग्राहक बनगये हैं या आगेको चैतसुदी १ तक १) रुपया भेजकर पक्के ग्राहक बन जायँगे उनको।

२ दूसरे—जो शास्त्रदानी महाशय १०–२०–२५ प्रति तक खरीदकर मंदिर पाठशाला पुस्तकालयोंमें या विद्वान् विद्यार्थियोंको दान करेंगे उनको। और—

३ जो महाशय हमारे दौरेमें पचास२ रुपये देना स्वीकार करके स्थायी सभासद (लाइफ मैंबर) बन गये हैं अथवा अब १००) रुपये भेजकर स्थायी मैंबर बन जायँगे उनको। उन्हें इन दोनों ग्रंथोंके सिवाय संस्थासे छपनेवाले सब ग्रंथोंकी एक एक प्रति विना मूल्य भेजी जायगी।

४ इसी प्रकार अर्थप्रकाशिकाकी टीका ऊपर लिखे नियमानुसार ग्राहक बननेवालोंको अनुमान २) २।) के लागतके दामोंसे भेजी जायगी। जो लोग १) रु. भेजकर पक्के ग्राहक नहिं होंगे और न १०–२० प्रतियां ही लेंगे उनको इस भावसे कोई ग्रंथ नहीं मिलेगा।

५, जो महाशय जिस ग्रंथकी २०० प्रतियोंके ग्राहक होंगे उनका फोटो व परिचय उस ग्रंथमें छपा दिया जायगा और १०–२० प्रतिवालोंके नाम दानी ग्राहकोंकी लिस्टमें छपा दिये जायँगे।

जिनको जितनी प्रतियोंके ग्राहक बनना हो जवाबी कार्डद्वारा चैत सुदी १ तक ग्राहक बन जावें।

श्रीलाल जैन काव्यतीर्थ,
मंत्री—भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था,
९ नं. विश्वकोषलेन, बागबाजार, कलकत्ता।

संसारिक सुधारामां प्रथम पगलुं.

મહાશયો,

આપણા ગુજરાતમાં અમદાવાદ બોર્ડિંગની સ્થાપના થયાને લગભગ ૧૨ વરસ થઇ ગયાં છે. તે દરમ્યાન દરવરસના રિપોર્ટો વાંચતાં માલુમ પડે છે કે, ગુજરાતમાં અન્ય કોમોની સાથે સાથે આપણી દિગંબર જૈન કોમ પણ કેળવણીમાં કંઇક આગળ વધતી દેખાય છે. રિપોર્ટમાં વિદ્યાર્થીસંખ્યા વધી પડયાની તથા કેટલીક દાખલ થવા માટેની અરજીઓ પાછી કાઢયાની વાત વાંચી છે. વળી દર વરસના વાર્ષિક મેળાવડાની વીઝીટર્સ કમીટીની બેઠકોમાં વધુ વિદ્યાર્થીઓ કેળવણી કેમ લે તે માટે ગોઠવણ કરવા વિષે ચર્ચા પણ સાંભળી છે. આ બધા ઉપરથી લાગે છે કે હવે કેળવણી માટે આપણા લોકોએ જરા ધ્યાન આપવા માંડયું છે, જોકે આપણે વસ્તીના પ્રમાણમાં જોઇએ તેટલું ધ્યાન પોહોંચાડયું નથી, કેમકે જ્યાંસુધી (**વીસા-દશા હુમડ, નરસીંહપુરા તથા વીસામેવાડા** ભાઇઓમાંના) દરેક વિભાગ માટે એક એક વિશાળ બોર્ડિંગ સ્થપાય નહીં અથવા હાલ છે તેની ચાર પાંચ થાય નહીં અને શ્રીમંતો પોતાના જાતિબંધુને જમાનાની કેળવણી આપવી એજ પ્રથમ ફરજ છે એમ સમજે નહીં ત્યાં સુધી હાલનો સુધારો પુરતો કહેવાય નહીં. વળી જ્યાંસુધી આપણી કોમના દરેક ખુણા સુધી (દરેક છોકરા અને છોકરી સુધી) લેખન વાંચન પોહોંચે નહીં અથવા પુત્ર કે પુત્રીને પરણાવવા પહેલાં અમુક હદ સુધી તો કેળવણી આપવી એ **જીંદગીની પ્રથમ** ફરજ સમજે નહીં, ત્યાં સુધી કોમના ઉદયની આશા રાખી શકાય નહીં તેમ કોમની આર્થિક સ્થીતિ સુધરે પણ નહીં એટલે કે મોટા નાના ગામમાં દરેક ઘરમાં પુત્ર-પુત્રી ફરજીઆત તરીકે કેળવણી લેતા થાય, એ આપણો આશય હોવો જોઇએ અને તે માટે પ્રસંગોપાત ઉપાયો યોજવા જોઇએ. આ બાબતમાં ફંડની જરૂર છે. જો કે તે માટે થોડો સમય વીને ત્યાં સુધી રાહ જોવી જરૂરની છે, છતાં પ્રયત્નો કરતા રહેવું જોઇએ.

આ સાથે એક બીજી બાબત જે આપણા હાથમાં છે, જે રિવાજ ઘણા વખતથી ચાલુ આવ્યો છે, જે માટે દરેક માણસ ખાનગી રીતે વિરૂદ્ધ અભિપ્રાય આપે છે અને જે માટે કોમનો પુરતો અણગમો છે, છતાં દરેક જ્ઞાતિમાં સુધારારૂપે ઠરાવ પસાર થાય નહીં ત્યાં સુધી એ રિવાજ બંધ થાય નહીં. આ રિવાજ તે **જુવાન માણસના મરણ પાછળ જમણ થાય છે** તે છે. ધારવા પ્રમાણે જમણના રિવાજ દરેક દેશમાં, દરેક કોમમાં, દરેક સ્થીતિમાં અને દરેક જમાનામાં હયાતિમાં હોય તેના દાખલા મળી આવે છે. હાલના સુધરેલા ગણાતા દેશામાં પણ આ રિવાજ અમુક રૂપમાં હયાત છે અને ચાલુ છે એટલે જમણની વિરૂદ્ધ કોઇ હોઇ શકે નહીં, પરંતુ જમણ સારા અને ખુશખુશાલીના પ્રસંગો ઉપરના અને માઠા એટલે મરણ અને તેવા ખેદકારક પ્રસંગો ઉપરના એમ બે વર્ગમાં વહેંચી નંખાય છે.

પ્રથમ પંક્તિના જમણોમાં એટલે લગ્ન **અથવા બીજા ખુશાલીના પ્રસંગો ઉપર જમણો થવાંજ જોઈએ;** કેમકે,તેથી કરીને જે ગૃહસ્થને ત્યાં લગ્નપ્રસંગ અથવા અંતરની ખુશાલી હોય છે, તેમના આનંદમાં પોતાનો સગો અને સંબંધીવર્ગ ભાગ લઇ શકે અને ત્યારે તે ગૃહસ્થને વધારે આનંદ થાય છે. જુની રીતની ગણત્રી પ્રમાણે પોતાના ઘર આગળ જ્ઞાતિબંધુઓ જમે અને ગરીબોને ગળપણ જમવાનું મળે, એ વગેરે દૃષ્ટિએ કેટલાકો પુન્યનું કામ ગણે છે. આવા પ્રસંગો દરેક મનુષ્યનેજ પોતાની જીંદગીમાં

ઘોડા આવે છે અને તેથી યથાશક્તિ ખરચ જમણ પાછળ કરે છે, તેમાં વિરૂદ્ધતા ન હોવી જોઇએ. જોકે હાલમાં કેટલાક સુધારકો જમણની તદ્દન વિરૂદ્ધ હોય એમ સાંભળીએ છીએ, છતાં તેઓ પણ કેટલાક પ્રસંગો નિમિત્તે પોતાના મિત્ર અને અંગત વર્ગને (party, feast, social gathering) પાર્ટી, ફીસ્ટ (મીજબાની), સોશીઅલ ગેધરીંગ વગેરે કોઇપણ રૂપમાં ન્હાનું કે મોટું જમણ આપતા લેતા જોઇએ છીએ. આ બાબતમાં કેટલીક કોમમાં હદ ઉપરાંત ફરજીયાત વરા સારા પ્રસંગો ઉપર હોય એમ સાંભળીએ છીએ. દાખલા તરીકે સુરત શહેર જેવા સુધરેલા શહેરમાં આપણા વીસા-હુમડ ભાઇઓમાં લગ્નમાં બને પક્ષનાં મળી ૧૫ જમણ હોય છે. આ બીના ખરી હોય તો આવા રિવાજો વખતે કેટલાકને ભારે થઇ પડે અને દરેક વિચારવંત વર્ગને જો ખર્ચાળ અને બીનઉપયોગી લાગે, તેવાં ૧૫ જમણોને બદલે પાંચ-સાત જમણો રખાય, તો તેથી લગ્નનો આનંદ કંઇ ઓછો થાય નહિ. તેમ બંને પક્ષના સગાંસંબંધીઓના ઘણા દિવસો નકામા જતા અટકે છે. એકજ લગ્ન ઉપર ૧૫ જમણો હોય તે હિસાબે ઓછામાં ઓછા ૧૫ દિવસ સુધી બને પક્ષવાળાએ હાજર રહેવું જોઇએ અથવા તો ફરજીયાત જમણવારના કારણે ફક્ત સ્થાનિક ન્યાતીલાઓને જમાડવા પુરતોજ હર્ષ થાય-તેથી કંઇ વધુ લાભ સધાય નહીં. તેવા કારણથી જો બીજી કોમોની માફક ત્રણ ચાર દિવસજ લગ્નના દિવસો આનંદના ગણાય અને તેટલાજ દિવસોમાં ટુંકા ખરચમાં વધુ ઉલ્લાસ પ્રસરે એમ મારૂં માનવું છે અને તેથી કરીને વીસા-હુમડ કોમ (જ્યાં આ રીવાજ ચાલુ છે ત્યાં) ના આગેવાનોને મારી નમ્ર અરજ છે કે હાલના સુધરેલા જમાનામાં આ સવાલ જરા તપાસી તેમાં કંઇ યોગ્ય ફેરફાર કરવો જોઇએ. આવા હદ ઉપરાંતના રિવાજો સારા પ્રસંગો ઉપરના હોય, છતાંપણ ઇચ્છિત લાભ કે આનંદ આપે નહીં અને તેમ હોય તો તે રિવાજો માટે અંગુલિનિર્દેશ બતાવવો જરૂરનો છે. સિવાય કે તે વિષે ફરીઆદ કરવી નકામી છે.

હવે બીજો વર્ગ એટલે **મરણ વગેરે ખેદકારક બનાવો વખતે ફરજીયાત રીતે મનાયલા જમણોના લાભો-ગેરલાભો તપાસીએ.** આ વર્ગમાં મરણ પાછળનાં જમણો મોટો ભાગ ભજવે છે. આ વર્ગમાં જુવાન મરણ પાછળ અને ઘરડા મરણ પાછળ ન્યાતવરાઓ આવે છે. **ઘરડાની પાછળના વરાઓ** માટે કેટલીક જગ્યાએ એમ કહેવાય છે કે **પરોસીનું ઘર અને માબાપનું બારમું,** એ પ્રસંગો ફરી ફરી મળતા નથી, તેમાં એમ માન્યતા છે કે માબાપનો પુત્ર તરફ જે અનહદ વાત્સલ્ય પ્રેમ રહેલો હોય છે તે સ્નેહનો બદલો આપવાનો છેલ્લો પ્રસંગ માબાપના બારમા વખતે આવેલો ગણાય છે અને જે છેલ્લો પ્રસંગ ગણી મરણની દિલગીરી હોય છતાં પાછળનો વાત્સલ્યપ્રેમ યાદ લાવી જ્ઞાતિના રિવાજ પ્રમાણે ખરચ કરે છે. જોકે હાલ ધર્માદા રકમ વધારે પ્રમાણમાં કાઢવાનો રિવાજ પ્રસરતો જાય છે. ઘણી જગ્યાએ મરનાર વડીલ પોતાની પાછળ પુત્ર-પુત્રીઓ અને પ્રપુત્ર-પ્રપુત્રીઓ અથવા કેટલીક જગ્યાએ તો ચાર પેઢીનાં બાળકો મુકી તે મરી જાય છે તે વખતે તે કુટુંબ ગણે છે કે, પોતાના પિતા અથવા દાદા તો **બાળબચ્ચાંઓની વાડી** મુકી ૭૦-૮૦ ની ઉમરે સ્વર્ગસ્થ થયા, તે દિલગીરી બદલે આનંદનો પ્રસંગ છે અને તેથી લગ્નના પ્રસંગની માફક આનંદ કરે છે અને ભારે ખરચનાં જમણ આપે છે. એ વાત ખરી છે કે દુનિયામાં જ્યારે જન્મ્યું તે જવાનું એટલે દરેક પ્રાણી જન્મે છે તે કોઇ વખતે પણ મરવાનું છેજ, તો પછી આવા સંજોગોમાં મરે તે મરણને દિલગીરીનો નહીં પણ આનંદ-

નો પ્રસંગ માની લેવામાં ડહાપણ છે અને કુદરતના નિયમને માન આપેલું ગણાય છે. આ પ્રસંગો ઉપર સુધરેલી કોમોમાં અને મોટા શેહેરોમાં જમણ કરતાં કેળવણી વગેરે પરોપકારી ખાતાઓમાં ધર્માદા રકમ જમણના ખરચ કરતાં વધારે પ્રમાણમાં કાઢવામાં આવે છે તેઓ જમાનાને માન આપે છે. આ સર્વોત્તમ રસ્તો ગણાય, પરંતુ આથી ઉલ્ટું જ્યારે નાની ઉમરના મનુષ્યો એટલે ૩૫-૪૦ ની અંદરના મરદ કે સ્ત્રી મરણ પામે છે, જ્યારે તેના કુટુંબના દરેક મેમ્બરની આંખમાંથી આંસુઓ સુકાતાં નથી, જ્યારે કોઇ જગ્યાએ પુરૂષ મરવાથી કમાણીનું સાધન જતું રહ્યું હોય, કોઇ જગ્યાએ બાળ-બચ્ચાંવાળા મુકી મા મરી જાય છે અથવા તો પુરૂષ નાની સ્ત્રીને અનાથ વિધવા રૂપે મુકી મરી જાય છે વગેરે **હૃદયભેદક બનાવો બને છે, ત્યારે ગોળ-ખાંડના લાડુઓ ખાઇએ, ખવડાવીએ એનાથી બીજું વધુ શરમભરેલું શું કહેવાય !** એનાથી બીજું વધારે અનઘડ-પણું અથવા ઘાતકીપણું શું કહેવાય ? એક બાજુ ઉપર બૈરાંઓ રાજીયાં ગાઇ છાતિફાટ રડે છે. બીજી બાજુ ઉપર મરદો અંતરની દિલગીરી એકઠા થઇ દેખાડે છે, તે વખતે જ્ઞાતિલાઓને આનંદથી જમતા-જમાડતા જોઇ કોણ વિચારવંત પુરૂષને કંપારી છુટશે નહી ! ભાઇઓ, આવા કંપારી છુટે એવા હૃદય-ભેદક બનાવો વખતના જમણ માટે **મારી ફરિયાદ** છે અને તે રિવાજો બંધ કરવા દરેક જ્ઞાતિજ્ઞાઓને વિનંતિ છે. સુરતના વીસા હુમડ ભાઇઓએ સાંભળવા પ્રમાણે ૪૦ વર્ષ ની ઉમરથી નાના મનુષ્યના મરણ પાછળના વરાઓ ઘણા દિવસથી ફરજીયાત બંધ કર્યા છે. આવા સુધારા માટે વીસા હુમડ ભાઇઓના પગલે ચાલી બીજા બધા વિભાગવાળા ભાઇઓ-એ જ્ઞાતિવાર સવાલ ઉઠાવવો જોઇએ. આગેવાનો-એ પંચ એકઠા કરી આ માટે ઠરાવ કરવો જોઇએ કે **૪૦ વરસની અંદરના મનુષ્યના મરણ પાછળ વરા કરવા નહિ.** ઉપરની ઉમરના વરા ફરજીઆત નહીં અને એ ઠરાવ વિરૂદ્ધ ચાલશે તે જ્ઞાતના ગુન્હેગાર થશે અને ભારે દંડને પાત્ર થશે. આ ઠરાવ પસાર કરાવી તેને અમલમાં મુકવા માટે યોગ્ય અને વખતસર પગલાં લેવાં જોઇએ અને ' **દિગંબર જૈન** ' માસિક મારફતે તે ઠરાવો અને પ્રયત્નો બહાર પાડવા જોઇએ. આ માસિકના તંત્રીને પણ મારી નમ્ર અરજ છે કે આ વિષે ચર્ચાપત્ર શરૂ કરી ગેરસમજ બંધ કરવા માટે લેખો શરૂ કરવા જોઇએ. વધુમાં દરેક કોમના કેળવાયલા યુવકવર્ગ તથા હિતચિંતકોની ફરજ છે કે આ વિષય ઉપર લેખો લખી આવા રિવાજો અટકી જાય અને **સુધારો શબ્દમાંજ નહી, પણ કાર્યમાં ખરૂં રૂપ લે તે માટે પ્રયત્નો જારી રાખશે.**

શુભેચ્છક-

L. P.

आहारदान करनेका सुगम उपाय।

दिगम्बर जैन आम्नायमें साधु, त्यागी, ब्रह्मचारी बहुत कम संख्यामें पाये जाते हैं। इसलिये जैनी भाइयोंमें पात्रदानकी प्रथा प्रायः उठसी गई है। कभी एक दो पात्रोंका लाभ होता है। हमारे परम पूज्य शास्त्रोंकी आज्ञानुसार धनकी सफलता आहारदानसे ही सफल कही है। ऐसी दशामें प्रत्येक जैन गृहस्थका कर्तव्य है कि वह रोजमर्रा कुछ न कुछ दान देकर पीछे आहार करे। इसके लिये योग्य पात्र तय्यार करनेके लिये समाजने हस्तनापुरमें श्रीऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम स्थापित किया है जिसमें आज ६८ ब्रह्मचारी ७ से १९ की उम्रवाले रहते हैं, जो धर्मध्यान, शास्त्रस्वाध्याय, धार्मिक और लौकिक शिक्षाका लाभ करते हैं। इन ब्रह्मचारियोंका यदि हरएक गृहस्थ एक एक दिनका भोजन कराना स्वीकार कर ले तो आहारदानियोंको महान् पुण्यका लाभ हो और इन ब्रह्मचारियोंका ३६५ दिनका आहार भिक्षासे हो जावे। ६८ ब्रह्मचारियोंके १ दिनका भोजन खर्च २५) रु० होता है। जिसे छोटेसे छोटा गृहस्थ भी एक दिनको आहारदान कर सकता है। धनाढ्य भाई तो कई दिनोंका आहार दे सकते हैं। इन ब्रह्मचारियोंके आहारदानमें चारों ही दान गर्भित हैं। भाइयों, २५) कोई बड़ी बात नहीं है। अतएव हमें आशा है कि हरएक भाई एक एक दो दो दिनका स्वयं स्वीकार करेंगे और अपने मित्रोंसे करायेंगे। हर्षकी बात है कि नीचे लिखे भाई बहनोंने २५ दिन मंजूर कर लिये हैं।

रुपया.	दिन.	आहारदानियोंके नाम।
५०)	२	गेंदनलालजी, हस्तनापुर
५०)	२	मोतीलालजी, दिल्ली
२५)	१	धर्मपत्नी हजारीलाल प. धी. दिल्ली
२५)	१	बनारसीदास जौहरी, बनारस
५०)	२	मुन्नालालजी जौहरी, इंदौर
२५)	१	धर्मपत्नी से० प्रेमचंद मो. बम्बई
२५)	१	" " " चुन्नीलाल झवेरचंद "
५०)	२	" " " नवलचंद हीराचंद "
५०)	२	स्वर्गीय मैनाबाई (हरीभाई देवकरण)
१००)	४	रा. ब. सुलतानसिंहजी, दिल्ली
५०)	२	सेठ गुरुमुखराय सुखानंदजी
५०)	२	धर्मपत्नी सेठ हीराचंद पा. बम्बई
२५)	१	हकीम मूलचंद राजाराम, झांसी
५०)	२	सेठ जमनादास प. मिरजापुर

भाइयोंको विदित हो कि इस समय खर्च आश्रमका (१२००) मासिक है तथा ध्रौव्य फंड कोई ऐसा है नहीं जिससे काम चल सके अतएव धर्मात्मा भाई (१०) व ५) मासिककी मदद भी देते रहें व व्याह, शादी आदि अवसरों पर व व्यापारके लाभमें एक मुश्त रकम भी भेजते रहें—

निवेदक—

साहू जुगमन्धरदास नजीबाबाद,
मंत्री।

ब्र. शीतलप्रसाद.
अधिष्ठाता, श्रीऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम,
हस्तनापुर (मेरठ यु. पी.)।

उन्नतिके काममें बहानेबाजी !

(लेखक–ज्योतिप्रसादजी, संपादक, "जैन प्रदीप")

"कैसा गिला रक़ीबका क्या तअने अकरबा"
"तेरा ही दिल न चाहे तो बातें हजार हैं।"

प्रश्न उठता है कि आजकल अपनी दशा हीन क्यों है? हम भारतवर्षकी सब जातियोंसे नीचे क्यों गिरे जाते हैं? उत्तर मिलता है कि यह सब भाग्य की बात है। प्रारब्धमें ऐसा ही लिखा है। फिर पूछा जाता है कि धर्म क्यों लोप होता जाता है? जो धर्म किसी समयमें सूर्य की भांति प्रकाशमान् था आज उसमें तारागण कैसी भी चमक क्यों नहीं है? इसके उत्तरमें कहा जाता है कि यह पञ्चम काल है इसमें ऐसा ही होना है। केवली भगवानने ऐसा ही कहा है इत्यादि। उत्तरदाताओं के भोलेपनपर हमको शोक भी होता है और हंसी भी आती है। शोक की बात तो यह है कि न ऐसे भाई स्वयं शास्त्र पढ़ते हैं और न किसी दूसरे से सुनते हैं बलकि धर्म से दूर भागनेके लिये मनघडंत कहावतें घड़ लेते हैं। इन भोले पुरुषोंको यह खबर नहि है कि पञ्चम कालके तो अभी १८॥ हजार वर्ष पड़े हैं अभी तो कुल अढाई हजार साल ही बीते हैं। जितनी अवनति इस थोड़े से समय में हुई है यदि इसही हिसाब से होती चली जायगी तो धर्म दूसरे हजार वर्ष तक नहि रह सका। लेकिन शास्त्रमें पञ्चमकाल के समाप्त होने तक जैनधर्म रहेगा ऐसा लिखा है इसही लिये इनकी बातों से हंसी भी आती है। ऐसे भाइयों को याद रखना चाहिये कि पञ्चमकाल में जैनधर्म उन्नति भी करेगा और अवनति भी, यह सब कुछ धर्मात्माओं के ही उपर निर्भर रहेगा।

प्यारे मित्रों! जरा विचार करो कि जब दूसरी जातियें खुले मैदान कमर बांधकर साहस के साथ आगे कदम बढ़ाये चली जारही है, तो क्या जैनजाति के भाग्य में यह लिखा है कि वह अंधे गढ़े में गिरी रहे और उन्नति के मैदान में कदापि न आने पावे? प्रेमी लोगों! यह सब बहानेबाज़ी है–टालमटोल की बातें हैं क्योंकि हमारे भोले भाई यह समझे बैठे हैं कि जाति की चिन्ता करके कौन अपनी जानको बवाल में फंसावै–धर्म के प्रचारका बीड़ा उठाकर कौन आफ़त में पड़े।

शैर–"अब तो आरामसे गुज़रती है,
आक़बतकी खबर खुदा जाणे"।

जातिकी उन्नति और धर्म के प्रचार की चिन्ता करके अपने सुख और आनन्द में क्यों कमी की जाय? यदि किसी ने आकर धार्मिक या सामाजिक बातोंका झगड़ा छेड़ ही दिया–तो यह कहकर पीछा छुड़ा लेते हैं कि जो होनहार है वह स्वयं हो रहेगी–किसी के किये से कुछ नहि होता–इन लोगोंकी ऐसी बातोंको हम सत्य मान लेते और कदापि बहानेबाज़ी न कहते। यदि वह लोग अपने संसारिक कामों को भी होनहार के उपर ही छोड़ देते और हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाते, लेकिन ऐसा नहि है। संसारिक कामों में तो आकाश और पाताल एक कर दिया जाता है। प्यारे मित्रों! धर्म फिज़ूल है, चलाये से चलता

है, तुमने कंधा डाला और यह गिरा। तुमने साहस किया और यह उठा। अतएव तुमको चाहिये कि जिस भांतिसे अपने ग्रहस्थ के कामों में होनहार के ध्यानको भूलाकर दिन रात परिश्रम करते हो, इस ही भांति धर्म प्रचार और जाति सुधार के कामों में भी परिश्रम करो। अपने संसारिक कामों में परिश्रम करना और धार्मिक तथा सामाजिक कामों में वहानेबाजी करना तुम्हारे लिये हानिकारक है। इसका फल (नतीजा) बुरा निकलैगा और वह इतना बुरा निकलैगा कि जिसको प्रकट करते हुये शरीरके रोम खड़े होते हैं। और दिल बांसों उछलता है।

प्यारे मित्रो! धर्मसे जानकारी, शास्त्रोंकी स्वाध्याय और दया-दान पूजादिक का भाव दिलों से दूर होता जाता है और इसका बुरा प्रभाव हमारी आगामी संतानके उपर भी पड़ रहा है। व्यर्थव्यय, वेश्या-नृत्य, मिथ्यात पूजन, असत्य भाषन, और खोटा आचरण हमारी जातिमें दिन २ बढ़ रहा है, जिसके कारण बहुत सी बातें हमको लाचार होकर करनी पड़ रही हैं। छोटी जातियें जिनको हम नीच और शुद्र कहकर पुकारते हैं खोटे कामों से बच रही हैं, बुरी बातोंका त्याग कर रही हैं, लेकिन एक हम हैं कि होनहारका भरोसा किये नेत्र मूंद कर अंधे गढ़ेमें गिरे जा रहे हैं। मित्रों, प्रेमी भाँयें। याद रक्खो और नोट करलो कि अगर आज कैसी दशा कुछ और दिन बनी रही तो थोड़े ही समय में छोटी जातियां बड़ी और बड़ी जातियां छोटी हो जावेंगी, जैन धर्मका निग्द मिट जायगा और हमारा क्या होगा यह आप स्वयं विचार कर सकते हैं परन्तु 'गई सो गई अब राख रही को' अभी बहुत कुछ हो सकता है। संभलनेका समय हाथोंसे नहि गया. अतएव उठो! वहाने-बाजी छोड़ो और साहस करके धर्मप्रचार और जातिसुधारमें लगो।

कहावत है कि, खरबूजेको देखकर खरबूजा रंग बदलता है लेकिन नहीं मालूम कि इस कहावतका प्रभाव तुमपर क्यों नहि हुवा? तुम अपनी आंखों से देख रहे हो कि ईसाई लोग अपने धर्मको संसार भरमें फैलाने के लिये लाखों और करोड़ों रुपिया खर्च कर रहे हैं-शहर २ और गांव २ मारे फिर रहे हैं। आर्यसमाजी आठ प्रहर इस ही धुनमें लगे रहते हैं कि कब संसार भरमें हमारे धर्मका प्रचार हो। विद्योन्नतिके लिये हरेक समाजने अपने, अपने विद्यालय (कालिज) खोल दिये हैं। लाखोंका धन बातकी बातमें संचय कर लिया है-विश्व विद्यालय तककी स्वीकारता प्राप्त करली है परन्तु एक जैन जाति है कि जागनेका नाम ही नहि लेती।

मित्रों! शोक है कि पड़ौसी काम करैं और तुम चारपाईपर पड़े करवटें बदलो, दूसरे लोग उन्नतिके मैदानमें दौड़ लगावें और तुम आंखें मींचकर सरपर हाथ धर कर बैठ जाओ। याद रक्खो जैन जाति और जैनधर्म के लिये बहुत कुछ करनेकी आव-श्यकता है। यह समय सोचते रहने या दूर बैठकर तमाशा देखनेका नहि है और न समय बहानेबाजीका है। अब तो जागनेका और काम करनेका समय है। अतएव जागो,

आंखें खोलो, दूसरी समाजोंके कामको देखो, उन्नतिके उपाय निकालो और रात दिन परिश्रम करके जैनधर्मका प्रचार और जैन जातिका सुधार करो। और यह भी याद रक्खो कि काम करते समय तुमको सब मनुष्य तुम्हारे जैसे नहि मिलेंगे। बहुतसे तो तुम्हारा साहस तोडेंगे, तुम्हारी हंसी उडायेंगे और तरह तरहकी बातें सुनायेंगे परन्तु जो तुमको धर्मका सम्यक् श्रद्धान है, तुम्हारी देवगुरुमें सच्ची श्रद्धा है तो तुमको किसीके कहे सुने का किसीके किये हुवे विरोधका जरा भी ख्याल करना नहीं चाहिये। बल्कि ऐसी दशामें तो उनकी बिगडी हुई दशा देखकर और भी दया करनी चाहिये।

प्यारे मित्रों–सच्चे परोपकारी बनों–संसारिक विषयोंके सुखोंको छोड़ो, खसकी टट्टियों और बिजलीके पंखोंकी हवासे परहेज करो। यदि जेठ मासकी कड़ी धूपमें नंगे पैरे और नंगे सर घूमकर भी धर्मका प्रचार या जातिका सुधार होता हो तो करो।

विद्योन्नति के लिये विद्यालय स्थापित करो, दयाधर्मका प्रचार करनेके लिये शास्त्रोंके भंडार भरो, संतानको सदाचारी बनानेके लिये आदर्श संस्थायें खोलो तब तुम्हारा कल्याण होगा, और तुम्हारे सिरसे बहानेबाज़ीका कलङ्क दूर होगा।

उपदेशक पीतांबरदासजीना भ्रमणनो रिपोर्ट.

(ता. ७–१०–१५थी ता. ३१–१२–१५ सुधीनो.)

बीना–एक शास्त्रसभा करी नाभिनंदन पाठशाळानुं निरीक्षण कर्युं. अत्रे एक बोर्डिंग पण छे, जेमां गरीब विद्यार्थीओने व्यवहारिक अने धार्मिक शिक्षण अपाय छे, परंतु पं. वृजलालजी अने पं. नंदनलालजी हवे न होवाथी सर्वे कार्य शिथिल थई गयुं छे, माटे कार्यकर्ताओए बीजा पंडितनी तजवीज करी ए कार्य सत्वर चालु करवुं जोईए.

बामोरा–एक व्याख्यानसभा करी 'जैनोना षट्कर्म' पर विवेचन कर्युं. स्वाध्यायी भाई ४० अने १५ भाईओने अष्टद्रव्यथी पूजन करवानो नियम छे. धर्मरुचि उत्तम छे. पंच तरफथी जैन पाठशाळा पण स्थपाई छे. अध्यापक पं. मुन्नालालजीनी शिक्षणपद्धति अनुकरणीय छे. उपदेशकफंडमां रु. ४) आव्या.

पाटनाकुवा–अत्रे हितवर्द्धक सभाना वार्षिक उत्सवमां भाग लीधो. रात्रे "जैनोनुं कर्तव्य" ए विषयपर विवेचन कर्युं. शा. हाथीभाइ माणेकचंद अने जीवराम विद्यार्थीनी सूचनाथी आ सभाए एक स्कोलरशीप फंड स्थाप्युं, जेमां रु. ५००) नी उपज थइ, आ फंडमांथी निराधार विद्यार्थीओना शिक्षणमां मदद करवामां आवशे. आ सभा कांठा प्रांतना जैनोमां घणोखरो सुधारो करती रही छे. एना सेक्रेटरी कोटडीआ नेमचंद रतनचंद छे, जेओ सुधाराना कार्यमां हमेशां प्रयत्नशील रहे छे. बीजी सभा स्थानिक पंचमां करी, जेमां 'जैनोनी क्रिया'

પર વિવેચન કર્યું, જેથી પાંચે સ્વાધ્યાય અને અષ્ટદ્રવ્યથી પૂજા કરવાનો નિયમ કર્યો તથા એકે રાત્રિભોજનનો ત્યાગ કર્યો. સભાના પ્રમુખ તરફથી રૂ૦ ૪), સભા તરફથી રૂ૦ ૫) અને સ્થાનિક ભાઈઓ તરફથી રૂ૦ પા મળી ઉપદેશક ફંડમાં રૂ૦ ૧૪ા મળ્યા તથા રૂ. ૨) મોરેના વિદ્યાલયને મળ્યા.

ધનીઓળ—'સમ્યગ્દર્શન અને સુરીતિ પ્રચાર' એ વિષયો પર એક સભા કરી, જેમાં બાળવિવાહના અટકાવપર પૂર્ણ પ્રભાવ પાડવામાં આવ્યો. આ સભામાં કાંઠા પ્રાંતના ૨૦ ગામના અગ્રેસરો હાજર હતા, જેઓ તરફથી એમ જાણવાનું મળ્યું કે, થોડા વખતમાં પંચ એકઠું થનાર છે, તે વખતે બાળવિવાહ અટકાવવાનો ઠરાવ કરવામાં આવશે તથા લગ્નસંસ્કારની પ્રથા ચાલુ કરવામાં આવશે. આ વિષયનું અનુમોદન શા. ચુનીલાલ સાકળચંદ પેથાપુરવાળાએ કર્યું તથા પ્રાંતિક સભાનો ઉપકાર માનતાંની સાથેજ રૂ. ૫) પ્રમુખ શેઠ મગનભાઈ જાંબુડીવાળાની તરફથી અને પરચુરણ રૂ. ૧૦) મળી રૂ. ૧૫) ઉપદેશક ફંડમાં મળ્યા.

રખીઆલ—એક શાસ્ત્રસભા અને વ્યાખ્યાન સભા કરી. બેએ રાત્રિ ભોજનનો ત્યાગ અને છએ સ્વાધ્યાય કરવાની પ્રતિજ્ઞા કરી તેમજ એક બીડી તમાકુ ન ખાવા પીવાનો નિયમ લીધો.

તળોદ—"સદાચાર અને જૈનોનું કર્તવ્ય" એ વિષય ઉપર બે વ્યાખ્યાનસભાઓ કરી, જેથી દશ પુરુષ અને પાંચ સ્ત્રીઓએ રાત્રિભોજનનો ત્યાગ કર્યો તથા છએ સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. પંચમાં અષ્ટદ્રવ્યથી પૂજા કરવાની ગોઠવણ કરાવી. કેશરભાઈ અને નેમચંદ માસ્તરના પ્રયાસથી બાળકોને ધર્મશિક્ષણ આપવાની પણ ગોઠવણ થઈ. રૂ. ૨) ઉપદેશક ફંડ અને ૧) મોરેના વિદ્યાલયને મળ્યો.

પ્રાંતિજ—સભા કરવા માટે આમંત્રણ કર્યું પણ માત્ર એક ભાઈ અને ચાર બ્હેનોએજ હાજરી આપી !!! તેમની સાથે 'સદાચાર' વિષયપર સંભાષણ કર્યું મંદિરમાં પ્રતિબિમ્બ અધિક છે, અને પૂજારી વિધર્મી બ્રાહ્મણ હોવાથી તેને પૂજનપ્રક્ષાલની ક્રિયા આવડતી નથી, માટે પંચે એ બાબત લક્ષ રાખવું જોઈએ. મ્હારા મત પ્રમાણે તો પ્રાંતિજ તાલુકાના નાના નાના ગામોમાં, જ્યાં ચૈત્યાલય હયાત છે અને ત્યાંની પંચ આદર્શરૂપ પ્રતિબિમ્બ માંગે છે તથા તે ન મળી શકવાથી નવીન મૂર્તિની સ્થાપના કરવાની ગોઠવણ કરી રહી છે અથવા ઘણી જગ્યાએ જિન પ્રતિબિંબના દર્શન સિવાય દુઃખી થઈ રહ્યા છે તેઓને અહીંની પ્રતિમા આપીને પુન્યના ભાગી બનવું અને પૂજનપ્રક્ષાલ બરાબર ન થવાના દોષોથી બચવું જોઈએ.

લાકરોડા—ત્રણ શાસ્ત્રસભા અને ચાર વ્યાખ્યાનસભા કરી, જેમાં 'વિદ્યાદાન' વગેરે વિષયોપર વ્યાખ્યાન કર્યું, જેથી કેટલાક સ્ત્રીપુરુષોએ રાત્રિભોજન ત્યાગ અને ૧૫ ભાઈઓએ સ્વાધ્યાય કરવાની પ્રતિજ્ઞા કરી, તથા મધ અને ચામડાના વાસણ સાથે સ્પર્શ થએલો ભક્ષ્ય પદાર્થ ખાવાનો તથા તમાકુ, વગેરે અભક્ષ્યત્યાગનો નિયમ લીધો. વધારે મહત્વનું કાર્ય એ થયું કે, કોટડીયા સોમચંદ ઉગરચંદે રૂ૦ ૧૩૧૨) આપી જૈન પાઠશાળા સ્થાપન કરવાનો દૃઢ સંકલ્પ કર્યો. બાદ પંચાયતી અને બીજા ગામના હાજર રહેલા મહાશયો તરફથી મળી કુલ રૂ. ૨૪૦૦) નું સ્થાયી ફંડ પાઠશાળા માટે થયું. વળી "શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદ લાયબ્રેરી" સ્થપાઈ છે, જેના સેક્રેટરી કોટડીયા રેવચંદ હેમચંદ વગેરે સજ્જનોનો ધાર્મિકપ્રેમ પ્રશંસનીય છે, રૂ. ૧૦) ઉપદેશક ફંડ અને ૧. ૮) મોરેના વિદ્યાલયને મળ્યા.

ઓરાણ—બે વ્યાખ્યાનસભા અને એક શાસ્ત્રસભા કરી. સ્વાધ્યાયી ભાઇ ૩૦ અને વારે વારે અષ્ટદ્રવ્યથી પૂજન કરાવવાનો પ્રબંધ કરાવ્યો. કેટલાકોએ ચામડાના પાત્ર સાથે સ્પર્શ થયેલો ભક્ષ્ય પદાર્થ ખાવાનો ત્યાગ કર્યો. રાત્રી-પાઠશાળાનું નિરીક્ષણ કર્યું. પરીણામ સંતોષજનક છે. અધ્યાપક શા. લલ્લુભાઇ રાયચંદ ધર્મોત્સાહી છે. પાઠશાળાની કમીટીએ તેમના પ્રમોશન માટે ધ્યાન આપવું જોઇએ. ઉપદેશક ફંડમાં રૂ. ૬૧) અને રૂ. ૧) મો. વિ.ને મળ્યા.

ઉંજેડિયા—એક શાસ્ત્રસભા અને બીજી વ્યાખ્યાનસભા કરી, જેથી ૨૫ સ્ત્રી-પુરૂષોએ રાત્રિભોજન ત્યાગ અને ૧૫ ભાઇઓએ સ્વાધ્યાયનો નિયમ કર્યો. પંચ તરફથી અષ્ટદ્રવ્યથી પૂજન કરવાનો પ્રબંધ થયો તથા સરસ્વતી પૂજન કરાવતાં પાઠશાળા સ્થાપન કરવાનું મુહુર્ત નક્કી કરાવ્યું. અધ્યાપક મફતલાલે ૬ મહિના ઓનરરી તરીકે શિક્ષણ આપવાનું સ્વીકાર્યું. રૂ. ૨) ઉપદેશકફંડમાં આવ્યા.

સોનાસણ—સાત વ્યાખ્યાનસભાઓ કરી જેમાં સ્વાધ્યાયશાળા સ્થાપન કરવાના વિષય-પર વિવેચન કરતાં વિવિધ વિષયોપર વ્યાખ્યાન કર્યું, જેથી ૧૮ ભાઇઓએ સ્વાધ્યાય કરવાની પ્રતિજ્ઞા કરી અને કેટલાંક સ્ત્રીપુરૂષોએ રાત્રિ-ભોજન આદિ અભક્ષ્યત્યાગના નિયમ કરતાં **સ્વાધ્યાયશાળા માટે રૂ૦ ૪૦૦)નું ફંડ** થયું તથા **વીરનિર્વાણ પુસ્તકાલય** નામની સ્વાધ્યાયશાળા સ્થાપી. ઉપદેશક ફંડમાં રૂ. ૮) અને મો. વિ.માં રૂ. ૫) મળ્યા. સોનાસણની પંચે અષ્ટદ્રવ્યથી પૂજન કરાવવાનો પ્રબંધ કરાવવો જોઇએ. જૈન પાઠશાળા સ્થપાયલી છે. અધ્યાપક પં. બુદ્ધસેનજી છે.

અમદાવાદ—શેઠ પ્રેમચંદ મોતીચંદ દિ. જૈન બોર્ડિંગના વાર્ષિકોત્સવ પ્રસંગે પહોંચ્યો, અને વિદ્યાર્થીઓનું ધાર્મિકશિક્ષણ તપાસ્યું, તો જણાયું કે વિદ્યાર્થીઓ ભણેલા પાઠ પણ ભૂલતા જાય છે.

નનાનપુરઃ—બે સભા કરી, જેથી ૬૨ પુરૂષો અને ૮ સ્ત્રીઓએ રાત્રિભોજન અને અભક્ષ્યત્યાગની પ્રતિજ્ઞા કરી તથા આઠે સ્વાધ્યાયનો નિયમ કર્યો.

રામપુર—દિ. જૈનનું માત્ર એકજ ઘર છે તેમનાજ ઘેર ચૈત્યાલય છે. રાત્રે ગામના **અન્યધર્મી ભાઇઓને** એકઠા કર્યા અને 'સંસ્કાર' વિષયપર વિવેચન કર્યું તો કેટલાક ભાઇઓએ ઝેરી જીવોની હિંસા ન કરવી, દારૂ ન પીવો અને તમાકુનો ત્યાગ વગેરેના નિયમ લીધા.

ફતેપુર—ચાર શાસ્ત્રસભા અને પાંચ વ્યાખ્યાનસભાઓ કરી, જેમાં સ્વાધ્યાય, શાસન-સંસ્કાર, સુરીતિ પ્રચાર, અભક્ષ્ય ત્યાગ અને જિનપૂજન વગેરે ઉપર વિવેચન કર્યું. સ્વાધ્યાય કરવાનો નિયમ ઘણાખરા ભાઇઓને છે તથા બીજા ૬ એ સ્વાધ્યાયની પ્રતિજ્ઞા કરી અને પંચતરફથી એક વર્ષ સુધી અષ્ટદ્રવ્યથી પૂજન કરાવવાનો પ્રબંધ કરાવ્યો. કેટલાક સ્ત્રીપુરૂષોએ રાત્રિભોજન ત્યાગ અને ચામડાના પાત્ર સાથે સ્પર્શ થયેલો ભક્ષ્ય પદાર્થ ખાવાનો ત્યાગ કર્યો અને દુધ, દહીં વગેરેની મર્યાદિત ક્રિયા કરવાનું કબુલ્યું. પાઠશાળા માટેનું ફંડ થયું છે. પંચ માસિક રૂ. ૨૦)ના પગારથી એક અધ્યાપક ઇચ્છે છે, જે પ્રાંતિકસભાએ તજવીજ કરી મોકલી દેવો જોઇએ. પંચ તરફથી શેઠ ચુનીલાલ રાયચંદે પ્રાં. સભાના કાર્યોની પ્રશંસા કરીને ઉપદેશક ફંડનો આભાર માન્યો, જેથી ઉપદેશક ફંડમાં રૂ. ૨૩) અને રૂ. ૭) મો. વિ. ને મળ્યા.

આસરોડા—દિ. જૈનનું એકજ ઘર છે. રાત્રે ગામના ખેડુતોને એકઠા કરી સભા કરી, જેથી કેટલાક સ્ત્રી પુરૂષોએ મદ્ય, માંસ, મધ અને તમાકુ-બીડીના ત્યાગનો નિયમ લીધો અને જુ વગેરે ઝેરી જીવોની હિંસાનો ત્યાગ કર્યો.

ગઢોડા—એક શાસ્ત્રસભા કરી. બેએ રાત્રિભોજન ત્યાગ અને સ્વાધ્યાય કરવા સ્વીકાર્યું. રૂ. ૨) ઉપદેશકફંડમાં મળ્યા.

ઈડર-એક વ્યાખ્યાન સભા શા. પુનમચંદ સાંકળચંદના પ્રમુખપણા નીચે કરી, જેમાં "પુરૂષાર્થ" વિષયપર વિવેચન કર્યું. શ્રાશેઠબાઇ પાઠશાળાનું નિરિક્ષણ કર્યું, પરિણામ સંતોષજનક છે. અધ્યાપક ભાઇ નાથાલાલ સૌભાગચંદ છે. આ પાઠશાળાના આશ્રયે કન્યાશાળા અને શ્રાવિકાશ્રમ ચાલુ છે, જેમાં ૩૦ બાળકીઓ અને પાંચ શ્રાવિકાઓ ધર્મશિક્ષણ મેળવી રહી છે. અધ્યાપિકા મૈનાબાઇની શિક્ષણપદ્ધતિ પ્રશંસનીય છે. અહીં પહાડ ઉપર એક વિરતીર્ણ મંદિર શ્રી સંભવનાથ સ્વામીના નામથી પ્રસિદ્ધ છે. આ મંદિર પ્રાચીન હોવાથી બહુજ જીર્ણ થઇ રહ્યું છે. આ પ્રાંતના જૈનો અને ઈડરના ભટ્ટારકજીએ એક ફંડ કરી આ મંદિરનો જીર્ણોદ્ધાર કરવો જોઇએ.

વડાલી-અમીઝરા પાર્શ્વનાથના દિ. જૈન મંદિરની સરહદમાં જે મોટી ધર્મશાળા છે, તેમાં ૬ શ્વે. સાધુઓને જનસમુહ સાથે સભા કરતા જોયા, જેમાં હું પણ સામેલ થયો અને 'જૈન ધર્મ' ઉપર વિવેચન કર્યું તથા વિવિધ પ્રકારના પ્રશ્નોત્તર થયા. અતીશયયુક્ત પ્રતિમા શ્રી પાર્શ્વનાથજીની પાસે એક પ્રતિમા સ્થપાઇ છે. પુજન પ્રક્ષાલ અને ભંડાર વગેરેનો પ્રબંધ સ્થાનિક શ્વેતાંબરીના હસ્તક છે. ઇડરના ભટ્ટારક અને તીર્થક્ષેત્ર કમીટીએ ધ્યાન આપી નહિતર હાથમાં લેવો જોઇએ.

બાલીસણા-'અભક્ષ્યત્યાગ અને સ્વાધ્યાય પ્રચાર' ઉપર બે વ્યાખ્યાન સભાઓ કરી, જેથી પાંચે શાસ્ત્રસ્વાધ્યાય કરવાની પ્રતિજ્ઞા કરી તથા રાત્રિભોજનનો ત્યાગ કર્યો. પંચને અષ્ટદ્રવ્ય વડે જિનપૂજન કરાવવાની પ્રેરણા કરી. અહીંનું જિનમંદિર જીર્ણ થઇ પડવા લાગ્યું છે તે તરફ પંચે ધ્યાન આપવું જોઇએ. ઉપદેશક ફંડમાં રૂ. ૪) મળ્યા.

કરોળ-"જૈનોની ક્રિયા અને સુરીતિ પ્રચાર" ઉપર બે વ્યાખ્યાન આપ્યાં. પંચથી અષ્ટદ્રવ્યવડે પૂજન કરાવવાનો પ્રબંધ કરાવ્યો અને આઠે સ્વાધ્યાય કરવાનું કબુલ્યું. રૂ. ૪) ઉપદેશક ફંડમાં આવ્યા.

સઢાછીનામુવાડા-અત્રે દિ. જૈનોના દશ ઘર છે, પરંતુ ચૈત્યાલય એક પણ નથી. પંચને ચૈત્યાલય સ્થાપન કરવા માટે પ્રેરણા કરી. આઠ ભાઇઓએ સ્વાધ્યાય કરવાનું સ્વીકાર કર્યું અને છએ રાત્રિભોજનનો ત્યાગ કર્યો. રૂ. ૨)ઉપદેશક ફંડમાં મળ્યા.

વાસણાચોધરી-બે સભા કરી, જેથી ૫ બાઇઓએ રાત્રિભોજન ત્યાગ અને ૪ ભાઇઓએ સ્વાધ્યાય કરવાની પ્રતિજ્ઞા કરી. અત્રે ચૈત્યાલય નહોતું જેથી પંચનું ચિત્ત તે તરફ આકર્ષ્યું, તો રૂ૧૦ રવ૬)ની રકમ ચૈત્યાલય સ્થાપન કરવાને એકઠી થઇ રૂ. ૩ા ઉપદેશક ફંડમાં આવ્યા

દરોરા-સદાચાર અને સ્વાધ્યાય ઉપર વિવેચન કરવાથી ૨૫ સ્ત્રી પુરૂષોએ રાત્રિ ભોજન-ત્યાગ અને પંદરે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. રૂા. ૪) ઉપદેશક ફંડમાં આવ્યા.

પેથાપુર-એ સભા કરી. કેટલાકે હિંસક અને ઝેરીલા જીવોની હિંસાનો ત્યાગ કર્યો. અત્રે પાઠશાળા છે, જેમાં ૨૦ વિદ્યાર્થી ભણે છે, શા. ચુનીલાલ સાં. ઉત્સાહી છે રૂ. ૨) ઉપદેશક ફંડમાં આવ્યા.

ઉપલા રિપોર્ટમાં દરેક પંચે એક વર્ષ માટે અષ્ટદ્રવ્યથી પૂજન કરાવવાનું કબૂલ્યું છે તથા સદાચાર અને સુરીતિ પ્રવૃત્તિમાં ચામડાના સ્પર્શવાળા પદાર્થ ખાવાનો ત્યાગ કર્યો છે તથા મરણવગેરેના શોકમાં આ પ્રાંતની સ્ત્રીઓમાં ઉઘાડી છાતિએ ભરબજારમાં દિવસમાં ત્રણ ત્રણ વખત કૂટવાનો રિવાજ બંધ કરાવ્યો છે. હું બીજા ગામોની પંચો કે જેઓ એક બીજી પંચની શરમ રાખીને એમ કહે છે કે અમારી સ્ત્રીઓ જો ઉઘાડી છાતિએ નહિ કૂટશે તો અમને પંચ ન્યાતબહાર કરશે, જેથી પછી અમોને ત્રણ ત્રણ દિવસની ઉમરના બાળકોની સગાઇ કરી દેવામાં કઠિનતા પડશે !! વગેરે કહેનારાઓનું ધ્યાન એ બાબત ઉપર આકર્ષિત કરું છું.

દરેક પંચના ઠરેલ અને વયોવૃદ્ધ આગેસરો ! આગળ પાછળનો વિચાર કરો ! ધ્યાન આપો અને ઉપલી પંચોનું અનુકરણ કરો, જેથી પછી આપોઆપજ બાળક-બાળકીઓના લગ્ન કરવાની ઉમર ૧૫ વર્ષ સુધીના કરવાનો સુધારો થઇ જશે અને રડવા કૂટવાનો બેહુદ અને બેશરમ રિવાજ પણ નાબુદ થશે, પણ તમે દીર્ઘવિચારી અને સહનશીલ બનો ત્યારેજ એ સુધારાઓ થઇ શકશે.

જૈનજાતિસેવક-

ઠાકોરદાસ ભગવાનદાસ ઝવેરી,
મંત્રી, ઉપદેશક વિભાગ, દિ. જૈ. પ્રાં. સભા.

तीर्थक्षेत्र कमेटीका ट्रेडमार्क।



उपरोक्त हेडिंग भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रकमेटीका मानस्थंभाकार मार्क है, जिसकी सूचना समय २ पर जैनमित्रादि पत्रों द्वारा समाजको मिलती रही है। उपरोक्त मार्क ती० क्षे० क० से सहमत दि० जैन तीर्थोंके कार्यकर्त्ता मान्यवर महाशयोंने खुशीसे अपने २ प्रबंधके तीर्थपरकी रसीदोंमें लगवा लिया है। कोई दो चार महाशय ही ऐसे इने गिने बाकी रह गये हैं कि जो कमेटीका मार्क लगवानेमें अपनी मौरूसी डूबनेका ख्याल करते हैं। शायद उनके दिलमें यह बात बैठी हुई है कि अमुक तीर्थके जो हम प्रबंधकर्त्ता हैं वह हमारे बड़ोंकी मौरूसी है। हम कमेटीका मार्क लगवा लेंगे तो फिर उसमें कमेटीका हक हो जायगा।

हम अफसोसके साथ कहते हैं कि न मालूम कब उनके हृदयसे इस कुमतका नाश होगा और वह कब अपने स्वच्छ हृदयमें इस सुमतविचारको स्थान देंगे कि भा० व० दि० जैन ती० क्षे० क० और दि० जैन तीर्थ सामान्य दिगम्बर जैन सम्प्रदायके हैं । यह खास किसी एक व्यक्तिके नहीं हैं और न कभी हो सकेंगे । जबतक यह उत्तम विचार उनके न होंगे तबतक वह न अपना ही भला कर सकेंगे और न समाजका या समाजकी मर्यादाका भला कर सकेंगे। अतएव ऐसे महाशयोंके लिये श्रीजीसे प्रार्थना है कि उनको सुबुद्धि दे ।

अब पुनः दिगम्बर जैनसमाजको याद दिलाई जाती है और सूचना दी जाती है कि जिस किसी तीर्थ स्थानपर ती० क्षे० कमेटीके मानस्थंभाकार ट्रेड-मार्ककी रसीद तुम्हारे देखनेमें न आवे कदापि उस तीर्थपर भंडारादिमें द्रव्य देकर उसका दुरुपयोग न करावें। उपरोक्त मार्ककी रसीद मिलनेसे ही द्रव्य प्रदान करें जिससे कमेटी उस द्रव्यका यथार्थ हिसाब जांच कर उसका यथार्थ उपयोग करा सके।

श्री सम्मेदशिखरजी जानेवाले यात्रियोंको सूचना।

सम्मेदशिखरजीकी यात्रा करनेवाले दिगम्बर जैन भाइयोंको श्वेताम्बरियों की तरफसे कुछ रोक टोक की जाती है । लेकिन यह बात कदापि नहीं है और न हो सकती है । हम लोग दिगम्बर और श्वेताम्बर सब अपनी २ आम्नाय और इच्छा-प्रमाण हमेशाकी रीत्यनुसार स्वतंत्रतापूर्वक पर्वतपर तथा टोंकोंमें व नीचे अपना २ धर्म सेवन करते हैं; कुछ किसीकी किसीको रोक टोक नहीं है और न कभी हो सकेगी ।

दूसरा सुभीता ।

अब ईसरी स्टेशनसे मधुवन तक ता० १० जनवरीसे मोटरगाडी चलनेका निश्चय होगया है और किराया भी सिर्फ १) रु० सवारी मय सामानके रक्खा गया है । इसलिये हरएकको यात्रा करनेके लिये शिखरजी जाने का विशेष सुभीता होगया है। इतना ही नहीं, बल्कि राजगिरि, पावापुरी, गुणावाजी, कुंडलपुरजी, मंदारगिरजी, चम्पापुरजी आदि तीर्थोंपर भी धर्मात्मा भाइयोंकी सहायतासे धर्मशालायें आदि बनजानेकी वजहसे यात्रार्थ पधारनेवाले भाइयोंको ठहरने आदिका विशेष सुभीता होगया है । अतः सभी भाइयोंका फर्ज है कि वे जहां २ जावें सानंद यात्रा करें और अपने कारखानोंकी भले प्रकार देखरेख करें और यदि वहां किसी प्रकारकी त्रुटि देखें तो वहांके मुनीम पुजारी आदिको मधुर वचनोंद्वारा समझाकर उस त्रुटिको दूर करावें । यदि कोई विशेष बात हो तो हर एक तीर्थपर रहनेवाली निरीक्षक बुकमें उस बातको लिखाकर दें, जिससे कि कमेटी उसपर पूर्ण विचार कर

सुप्रवेश करा सके। यात्री महाशयोंका यह भी फर्ज है कि वहांके धर्म आयतनोंकी पूर्तिके लिये मुनिमकी प्रार्थनापर विशेष २ ध्यान देवें तथा भंडारादि द्रव्य दे मानस्थंभाकार कमेटीका उपर्युक्त ट्रेडमार्क लगती हुई रसीद लेवें।

मुकद्दमोंके विषयमें सब लोगोंको जानना चाहिये कि केस नं० २७५ जो पट्टे बाबतका अपनी तरफसे दायर किया गया था उसके लिये कमीशन विलायत गया है, उसमें अभी बहुत देरी है।

केस नं० २८८ जो श्वेताम्बरियोंने अपने ऊपर दायर किया था उसमें सिर्फ एक कमीशन कलकत्तेके लिये निकला था, जिसमें राय बद्रीदास और रामचंद जेठाभाई (श्वे०) की गवाही हुई। बाकी गवाह देना श्वेताम्बरियोंने अस्वीकार किया, अदालतके साम्हने देनेको कहा है। अस्तु, कलकत्तेका कमीशन खतम हो गया।

जैनसमाजका सेवक—

भागमल प्रभुदयाल, महामंत्री।

गुजरातनी यात्रा.

तीर्थयात्रा ए धार्मिक प्रवास छे. प्राचीन समयना महान् सद्गुणी पुरुषोना सत्कार्यना अमर यातो चिन्ह मात्र रहेला कीर्तिस्तंभोना दर्शन करवा ते सद्गुणी, आत्मसंयमी, परोपकारी पुरुषना चरणारविंदथी पवित्र थयली भूमिपर जइ किंचित मात्र पण पवित्र थवानी इच्छाथी जे पर्यटण करवुं, तेने यात्रा कहे छे. ते यात्रा घणुं करीने शीतऋतुमां करवामां आवे छे. आवा शीतऋतुना समारंभमां मुंबाइथी अमो आठ श्राविकाओ गुजरातनी पवित्र भूमि सिद्धक्षेत्र गिरनारनी वंदनार्थे गुजरात तरफ जती रातनी फास्ट ट्रेनमां जवा नीकळ्यां अने बीजे दिवसे सवारमां लगभग दश वाग्याने सुमारे अमे गुजरातना पाटनगर अमदावाद पहोंच्या.

अमदावादमां त्रण दरवाजे आवेली शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डींग स्कूलमां अमे उतारो कर्यो. अहिंआ दिगंबर जैन भाइओनां ३० घर छे. शहेरमां बे अने बोर्डींगमां बे मळी कुल चार दि. जैन मंदिर छे. अहिं चार दिवसना अरसामां अमे शहेर बहार नदीपार आवेला श्रीयुत् मोहनलाल करमचंद गांधीए स्थापेला सत्याग्रह आश्रमनी मुलाकात लीधी, त्यां मी. गांधी साथे कन्याकेळवणी अने विधवाकेळवणी केवा प्रकारनी अने केवी रीते अपाववी जोइए, ते संबंधमां केटलीक वातचीत करी; आश्रमना नित्यनियमो जाण्यां, त्यां अपातुं सुतारी अने शाळकाम जोई मी. गांधीना विशाळ ग्रन्थमंदिरनुं निरीक्षण करी ते दिवस व्यतीत कर्यो. बीजे दिवसे शहेरना अन्य संबंध धरावता सद्‌गृहस्थोनो मेळाप करी, त्यांनी चीमनलाल नगीनदास बोर्डींगनी मुलाकात लीधी.

આ પ્રમાણે દિવસો વ્યતીત કરી ચોથે દિવસે સાંજે ખંડવા, બડવાહ અને સનાવદથી અત્રે આવેલા શેઠ ધનશ્યામશાહજી અને પુમહુશાહજીના કુટુમ્બીઓ સાથે અમે લગભગ ચોવીસ મનુષ્યો ગીરનારજી જવા નીકળ્યા.

બીજે દિવસે બપોરે બે વાગ્યાને સુમારે અમે જુનાગઢ શહેર પહોંચ્યા. અહિંથી ગિરનાર તળેટી દોઢ માઇલને અંતરે છે. શહેરમાં એક દિ. જૈન મંદિર અને એક ધર્મશાળા છે. તળેટીમાં પણ એક વિશાળ ધર્મશાળા અને જિનાલય છે. આ ધર્મશાળાની તદ્દન નજીક **ગિરનાર પર્વત** પર જવાનો રસ્તો છે.

તા૦ ૧૯–૧૦–૨૫ પ્રાતઃકાળે અમે પહાડપર દર્શનાર્થે ચઢવાનું શરૂ કર્યું. આ પહાડપર જવા માટે માણસદીઠ એક આનાની ટીકીટનું સરકાર તરફથી નાકું લેવામાં આવે છે. પહાડપર ચઢવાનો માર્ગ પત્થરનાં બાંધેલાં નિયમીત પગથીયાં છે. પૂર્વ દિશામાં અરૂણોદયના ઝળહળતાં કિરણોના પ્રકાશ થવાની સાથે અમે **પહેલી** ટૂંકે આવી પહોંચ્યા. અહિંઆ એક દિગંબરી અને એક શ્વે૦ ધર્મશાળા છે; જ્યાં યાત્રાળુઓ કેટલીક વખત રાત્રિવાસો પણ કરે છે. અહિં આગળ બે દિગંબરી જિનાલયો છે.

અહીંથી પૂજા કરી આગળ ચાલતાં વૈષ્ણવ સંપ્રદાયની બે ત્રણ ટુંક આવ્યા પછી પાંચમી ટૂંક પરમપૂજ્ય બાવીસમા તીર્થંકર **શ્રી નેમનાથ સ્વામીની** આવે છે; કે જ્યાંથી નેમનાથસ્વામી મોક્ષે ગયા હતા એમ કહેવાય છે. આ ટૂંકપર તેમનાં ચરણ છે, જે ચરણને જુદા જુદા નામથી દરેક સંપ્રદાય પૂજ્ય માને છે.

અહિંથી તેજ રસ્તે પાછા ફરતાં પહેલી ટૂંક આગળથી શેષાવન જવાનો રસ્તો આવે છે. રસ્તામાં કેટલાક મુનિઓનાં ચરણ આવે છે. કહેવાય છે કે શેષાવનમાં નેમનાથસ્વામીએ દીક્ષા લીધી હતી અને અહિંજ તેમને કેવળજ્ઞાન ઉપન્યું હતું. આ પર્વતપર શ્વે. જૈન મંદિરો પણ છે. નિર્મળ પાણીના ઝરા, કુંડ અને ઉપયોગી ઔષધી ઘણી નજરે પડે છે. પર્વત ઉપર પહેલી ટૂંક સિવાય અન્ય સ્થળે ચઢાવેલા દ્રવ્યનો ઉપયોગ અન્ય મતાવલમ્બીઓ કરે છે. પહેલી ટૂંકે મંદિરમાં પણ એક ગોલક રાખવાની જરૂર છે. શેષાવનના રસ્તાથી નીચે તળેટીમાં જવાય છે; પણ આ રસ્તો વિકટ છે તેથી તેને **ગેબી રસ્તો** કહે છે.

આ સ્થળ ઘણું શાન્ત અને પવિત્ર છે. આ પ્રમાણે વંદના કરી લગભગ સાડાબારને સુમારે અમે નીચે તળેટીમાં આવ્યા.

અમે અહિંયાં લગભગ આઠ દિવસ રહ્યા, તે દરમ્યાન ચોવીસ મહારાજની પૂજાનું મંડલવિધાન કીધું, અને જુનાગઢ શહેરનાં પ્રાચીન અને પ્રખ્યાત સ્થળોની મુલાકાત લીધી. આ શહેર નવાબના તાબે છે, પરંતુ હાલમાં શાહજાદા નાની વયના હોવાથી અંગ્રેજ શહેનશાહતનો પ્રતિનિધિ (Rejent) બધો કારોબાર કરે છે. શહેરની ધર્મશાળામાં કૂવો તદ્દન અધૂરી અવસ્થામાં હોવાથી અને કામ અપૂર્ણ હોવાથી તેના પત્થરો ધર્મશાળાના ચોગાનમાં જેમ તેમ પડેલા હોવાથી યાત્રાળુઓને ઘણી અડચણ પડે છે; માટે આ કૂવો પૂરો ખોદાવી પાણીની જોગવાઈ કરી આ મુશ્કેલી દૂર કરવા ગિરનાર કમીટીએ ખાસ ધ્યાન આપી તે બાબત ત્યાંના મુનિમને સૂચના કરવી જોઇએ.

આઠમે દિવસે બપોરે અમે સિદ્ધક્ષેત્ર પાલીતાણા જવા નીકળ્યા અને બીજે દિવસે સવારમાં દશ વાગે ત્યાં પહોંચ્યા. અહિંઆ શહેરમાં એક દિ. જૈન વિશાળ ધર્મશાળા અને સુશોભિત મંદિર છે. આ વખતે પાલીતાણામાં સખ્ત પ્લેગ ચાલતો હતો. પહેલે દિવસે અમે પાસે આવેલા મહુવા શહેરમાં 'શ્રીવર્ધમાન' નિરા-

ળવા ગયા હતા. બીજે દિવસે પ્રાતઃકાળમાં પવિત્ર શ્રી શેત્રુંજયગિરિપર વંદના કરી. પહાડ ઉપર એક દિગંબર જૈન મંદિર છે. આ સ્થળને શ્વેતામ્બર જૈનમતાવલંબી બંધુઓ સિદ્ધાચળ માને છે. તેમનાં અહિં સાડા ત્રણ હજાર મંદિરો બંધાવેલાં કહેવાય છે. ઉપરના મંદિરમાં વિધિવત્ પૂજા કરી લગભગ ૧૧ વાગે નીચે આવ્યા. બીજે દિવસે શહેરના મંદિરમાં વિધિવત્ પ્રક્ષાલ પૂજા કરી. દરરોજ રાત્રે અત્રેના મુનિમ ધરમચંદજી તરફથી શાસ્ત્રવાંચન અને ધર્મોપદેશ થતો હતો.

અહિંથી અમે ભાવનગર ગયા અને ત્યાંની પાઠશાળાની પરીક્ષા લીધી. બીજે દિવસે પાસે આવેલા ઘોઘા શહેરમાં દર્શન કરવા ગયા હતા અને તેજ રાત્રે ભાવનગરની પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓને સભા ભરી ઇનામ વહેંચ્યું. સભામાં શહેરના સ્ત્રી પુરુષોની સારી સંખ્યા હાજર હતી. આ પ્રસંગે 'સ્ત્રી કેળવણી' વિષે એક વ્યાખ્યાન કરવામાં આવ્યું હતું, અને તેમાં સર્વ કોમોથી અધિક અજ્ઞાન અંધકારમાં ડૂબી રહેલી જૈન બાળિકાઓ અને વિધવાઓ માટે આત્મ અને દેશકલ્યાણ માટે કેળવણી કેટલી આવશ્યક છે તે દૃષ્ટાંતદ્વારા સ્પષ્ટ કરી બતાવવામાં આવ્યું હતું. અહિં શહેરમાં દિ. જૈનનાં ૩૦ ઘર અને એક મંદિર છે. અહિંથી અમે તારંગાજી ગયા. ત્યાં પહાડપર એક ધર્મશાળા અને એક મંદિર છે. અહિંથી પછી આબુજી ગયા. અત્રે નીચેના ખરાડી શહેરમાં એક ધર્મશાળા અને એક મંદિર છે. અહીંથી અમો અજમેર ગયા. અહીં બે ધર્મશાળા અને બધાં મળી તેર મંદિર છે. જેમાંના મુળચંદજી સોનીના બે મંદિરો ઘણાં જોવાલાયક છે. અહિં જૈનોની વસ્તી ઘણી છે. અહીંથી અમે કેશરીયાજી વંદના માટે ઉદેપુર ગયા.

ઉદેપુરમાં દિગંબર જૈનોનાં ૩૦ ઘર અને આઠ મંદિર છે. અહિંથી ધુળેવ (કેશરિયાજી) વીસ ગાઉને અંતરે છે. ત્યાં જવા ટાંગા અને બળદગાડી મળે છે. અહિંનું ચલણી-નાણું મુખ્યત્વે ચિતોડી છે. ઉદેપુરથી ધુળેવ જતાં રસ્તામાં ચોકી માટે પૈસા આપવા પડે છે. ધુળેવ પહોંચતાં ટાંગાને એક અને બળદગાડીને બે દિવસ લાગે છે. ત્યાં રહેવા માટે જૈન ધર્મશાળા છે. શહેર વચ્ચે શ્રી કેશરીયાજીનું વિશાળ મંદિર છે, તેમાં આખો દિવસ વખતસર પૂજનક્રિયા થયા કરે છે. તેનો મુખ્ય કાર્યભાર ઉદેપુર મહારાણાને હસ્તક છે. શહેરમાં દિ. જૈનોમાં ૧૦૦ ઘર છે અને એક પાઠશાળા છે. અત્રે એક દિવસ બપોરે પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓની પરીક્ષા લઇ તેમને ઇનામ વહેંચવામાં આવ્યું અને રાત્રે એક ધર્મસભા ભરી, તેમાં "જ્ઞાન સિવાય આચરણ નકામું છે અને જ્ઞાન એજ આત્મોદ્ધારનું કારણ છે, માટે હરેક પુરુષે તેને ઉત્તેજન આપવા બનતો પ્રયાસ કરવો જોઇએ" તે સંબંધમાં લંબાણથી વિવેચન કરવામાં આવ્યું. અહિં બે દિવસ પૂજનાદિ કરી પાછા ઉદેપુર ગયા. ત્યાં જતાં રસ્તામાં પરસાદ નામે ગામ આવે છે. અહિંઆ એક મંદિર અને એક પાઠશાળા શેઠ માણેકચંદ પાનાચંદ તરફથી ચાલે છે. ગામમાં જૈનોનાં ૭૫ ઘર છે.

કેશરિયાજીની યાત્રા કરીને અમો કાર્તક સુદ સાતમે પાછા ઉદેપુર આવ્યા. આંહમે નિત્યકર્મ કરી મંદિરે પૂજા કરી અહિંની પાઠશાળાની મુલાકાત લીધી. રાત્રે અહિંના જૈનોની એક સભા ભરી 'સ્ત્રી કેળવણી' વિષે ભાષણ આપવામાં આવ્યું હતું અને શ્રાવકાશ્રમ માટે રૂા. ૩૦) ભરાયા હતા. બીજે દિવસે અમે રતલામ ગયા. અહિં શહેરમાં ત્રણ મંદિરો છે; અને એક શેઠ માણેકચંદ પાનાચંદ બોર્ડીંગ હાઉસ છે. અહિંથી સાંજે અમે

અમારો યાત્રાપ્રવાસ પૂર્ણ કરી કાર્તિક સુદ ૧૧ બુધવારે પંજાબમેલમાં મુંબાઇ આવી પહોંચ્યા.

વળી તા. ૨ થી તા. ૨૨મી ડિસેંબર સુધીમાં અમોએ (કંકુબ્હેન, કુમારી શ્રીદેવીબાઇ અને મેં) થોડું દેશાટન કર્યું. દરેક મનુષ્ય કોઇપણ ઉદ્દેશ વગર કાર્ય કરી શકતું નથી, એજ તત્ત્વને લઇને અમો નાગપુર વગેરે જગ્યાએ જવાના હતા, પણ ત્યાં પ્લેગ ચાલે છે, એવી ખબર મળવાથી અમો વડોદરા ગયા અને ત્યાં શા. માણેકલાલ નાનચંદને ત્યાં ઉતર્યા. પ્લેગને લીધે એક ધર્મશાળામાં રહેતા હતા, છતાંપણ શહેરમાં જોવાલાયક ઘણી સંસ્થાઓ હતી, તેથી ત્યાં બે દિવસ રહી, ટ્રેનિંગકોલેજ, સેન્ટ્રલ લાઇબ્રેરી, કીન્ડરગાર્ટનની સંસ્થાઓ જોઇને ઘણો આનંદ થયો. આવી સંસ્થાઓ અમોએ હમણાંજ જોઇ છે. જૈન શ્રાવિકાશાળાની મુલાકાત લીધી. તેમજ છોકરાઓની પાઠશાળા પણ જોઇને ઘણો આનંદ થયો, પરંતુ અભ્યાસક્રમ ઠીક નહોતો તે ઠીક કરાવી આપ્યો. ઘરની સંખ્યા ૨૫ ની છે, પણ ખેદ થાય છે કે અહીં પણ તડનું બીજ વાવી મુકેલું છે. અહીંથી તા. ૬ ઠીએ દાહોદ ગયા. અહીં દિ૦જૈનોના ઘર ૧૦૦-૧૫૦ છે. પાઠશાળા બંધ છે, પણ અક્ષરજ્ઞાન છોકરીઓને તથા ઘણાખરા બૈરાંઓને જોઇને શાંતિ લાગી. અહીં બે ત્રણ બાઇઓ તત્ત્વવિચારમાં ઘણી યોગ્ય છે. અહીં ત્રણ ચાર સભા કરી, તેમાં એક જાહેરસભા કરી, જેમાં દાહોદના મામલતદાર વગેરે અધિકારીઓ આવ્યા હતા. શ્રાવિકાશ્રમ માટે રૂ૦ ૧૮૦) ની મદદ મળી તથા કુંવારી એક બાઇ આશ્રમમાં રહેવા આવી. અહીંથી આગળ મન્દસોર થઇને તા. ૧૦મીએ દિવસે નિકળી તા. ૧૧ મીએ પરતાપગઢ પહોંચ્યા. અહીં ચાર મંદિર મોટાં મોટાં છે. ઘર સંખ્યા ૩૦૦)ની છે, પરંતુ તડ અને તેરા-વીસના કલેશથી ધર્મમાં આર્તધ્યાન થાય છે, અહીં રતનચંદજી જુઆને ત્યાં ઉતર્યા. ચાર સભાઓ કરી. મહાવીર કન્યાશાળા કે જેમાં ૧૦૦ કન્યાઓ શીખે છે તે, ઘીયાવાળાની પાઠશાળા અને છોકરાઓની પાઠશાળા જોઇ. મહાવીર કન્યાશાળાનું કામ શિક્ષિત બંધુઓની એક કમીટી કરે છે અને પ્રબંધ ઘણો સારો છે. અહીંથી આશ્રમને રૂ૦ ૩૫૦) જેટલી મદદ મળી. આ પ્રસંગે અમારી સાથે વડનગરના ઉપદેશક પં. કસ્તુરચંદજી પધાર્યા હતા અને તેમણે પણ સભાઓ કરી હતી, જેથી માળવા પ્રાં૦ સભાને રૂ. ૫૦)ની મદદ મળી હતી. અત્રે કેટલીક બાઇઓએ નિયમવ્રત લીધાં અને ચાર પાંચ બાઇઓએ શ્રાવિકાશ્રમમાં આવવાની મંજુરી આપી. અહીંથી તા. ૧૭મીએ નિકળીને મંદસોર આવ્યા. અહીં પણ દિ. જૈનોના ૭૫ ઘર અને ત્રણ મંદિર છે, સભાઓ કરી. અને શ્રી. ઉદાસીન શ્રાવિકા હગામીબાઇ પાસે ધર્મચર્ચા કરીને તા. ૨૧મીએ નીકળી તા. ૨૨ મી ડિસેંબરે અમે મુંબાઇ આવ્યા.

ब्रह्मचर्य ।

प्यारे भ्रातृगण ! ब्रह्मचर्यव्रत पालन करना बड़ा जरूरी है । जिस तरह घरका आधार नीवपर होता है इसी तरह शरीररूपी घरका आधार ब्रह्मचर्यव्रत पर है। जिस तरह नींव कच्ची होनेसे मकान भी कच्चा ही रहता है—बहुत दिन तक नहीं बना रहता इसी तरह ब्रह्मचर्यव्रतके भंगसे यह मनुष्य शरीर कच्चा रह जाता है अर्थात् अधिक दिन तक नहीं रहने पाता—बीचमें ही नष्ट हो जाता है। जिस तरह कच्ची नींवका घर साधारण ही आपत्तियोंसे गिर पड़ता है और उसमें रहनेवाले अकालमें ही कालके ग्रास बन जाते हैं इसी तरह ब्रह्मचर्यव्रतका पूरा पालन किये विना कोई मनुष्य निरोगता, सुख और पूर्णआयु नहीं भोगता । इसलिये मनुष्यको अपने शरीरकी रक्षाके लिये और पूर्ण आयु के सुख भोगनेके लिये ब्रह्मचर्यव्रतका पालन अवश्य करना चाहिए । जो बालक ब्रह्मचर्यव्रतका पालन करते हैं वे ब्रह्मचारी कहलाते हैं । समय के फेरसे ब्रह्मचर्यका मतलब दूसरा समझ लेते हैं।

ब्रह्मचर्यका अर्थ यह है कि जो ब्रह्म यानी आत्मामें रमण करे या वीर्यकी रक्षा करता हुआ आहार विहारसे रहे उसको ब्रह्मचर्य कहते हैं ।

जबतक हमारी जाति ब्रह्मचर्य पालती रही तब तक यह भारतवर्ष जगद्गुरु कहलाता रहा। जबसे इसका प्रचार छूटा तबसे उत्तम सन्तान तो नाम मात्र सुननेको न रही। ब्रह्मचर्य सब आश्रमोंकी जड़ है। यदि ब्रह्मचर्य आश्रम ठीक २ निभ गया तो और आश्रम भी निभ सक्ते हैं परन्तु हा! भारतवर्ष! जबसे तूने ब्रह्मचर्यका शरण छोड़ा तबसे बल और विद्या तो तुझसे विदाही मांग गई। इसी भारतवर्षमें बड़े २ वीर भीष्म जैसे योधा, अर्जुन जैसे बलधारी, रामचन्द्र जैसे मातापिताके आज्ञाकारी, श्रीऋषभादि जैसे त्यागी और अनेकानेक वीर त्यागी महात्मा, निःकलंक अकलंक जैसे परोपकारी हुए पर अब एक भी उनके सदृश मनुष्य नज़र नहीं आता। इसका कारण है तो ब्रह्मचर्यका न पालना । पहिले भारतवर्षमें शिशु अवस्थामें ही ब्रह्मचर्य पालन कराते थे और साथ ही साथ गुरुकुलोंमें पढ़नेके लिये भेज दिया करते थे जिससे लड़का कुचाली न हो जावे और ठीक २ ब्रह्मचर्य पालता हुआ गुरुकी आज्ञाके विरुद्ध न चलता हुआ अपने लिये संसारमें आदर्शरूप प्रस्तुत होता था। फिर उस गृहस्थधर्मको ग्रहण करता था । जब उसके सन्तान इतनी बलिष्ठ, रोगरहित, स्वरूपवान होती थी फिर वह सन्तान कभी भी कुचाली नहीं होती थी वल्कि बहुत ही शीघ्रतासे पढ़ लिया करती थी जिससे सब सांसारिक व्यवहार आसानीसे चल सक्ते थे। यह बात भी जाने दीजिए, इस समय आपके

सामने ब्रह्मचर्यकी जिन्दा मिसाल उपस्थित है। राममूर्तीको ही ले लीजिए, कितना शारीरिक बल उसमें उपस्थित है जिसे सब लोग देखकर आश्चर्यान्वित होते हैं। इसके बारेमें कोई कोई मनुष्य यह कहा करते हैं कि इसको भूतविद्या आती है, कोई कहता है प्रेतविद्या आती है परन्तु हे भाईयों! यह बात सब मिथ्या हैं। वह अपने व्याख्यानमें साफ २ शब्दोंमें कह दिया करता है कि न मुझे कोई विद्या सिद्ध है न कोई प्रेतविद्या सिद्ध है परंतु यह ताकत सब ब्रह्मचर्य ही की है। यदि हमारे जैनी भाई ब्रह्मचर्यको पालना शुरू करें तो क्या यह भारतवर्ष फिर जगद्गुरु नहीं कहला सकता अर्थात् ज़रूरी कहला सकता है।

विष्णुदत्त शर्मा—अमरोहा।

ॐ

दि० जैन मालवा प्रां० सभाका शुद्ध औषधालय का० बड़नगर।

सम्पूर्ण सज्जनोंको विदित हो कि इस औषधालयसे सम्पूर्ण देशों के सर्व जनोंको सर्व प्रकारकी गुणकारी औषधियां विना मूल्य पेकिंग और पोस्ट खर्च मात्रसे भेजी जाती हैं। थोड़े ही समयमें अनेक देशोंके सहस्रों साधारण व कठिन रोगों के रोगियोंको आराम हुआ है। कई स्थानों में ऑनरेरी प्रचारक १२५ ब्रांच ऑफिसोंद्वारा इस औषधालयकी औषधियोंका प्रचार कर रहे हैं। प्रचारकों तथा औषधालयका कार्य बढ़ानेकी और भी कोशिश हो रही है। सम्पूर्ण सज्जनों को चाहिये कि प्रचारक बनकर किंवा आर्थिक सहायता व औषधालय संबंधी सामान भेजकर तथा रोगियों को ठहरने के लिये दो २ सौ तीन २ सौ रुपयाकी लागतकी कोठरियां बनवाकर उदारता दिखावें। कोठरियों में बनानेवालों के नाम का बीजक लगाया जायगा और नियमानुसार एकमुश्त सहायता देनेवालोंको यथोचित पदोंसे विभूषित कर उनके चित्र औषधालय में सुशोभित किये जायँगे। हमारे पास कई स्थानों के असाध्य रोगियों के यहां ठहर कर इलाज कराने के लिये पत्र आते हैं किन्तु उनके ठहरने के लिये स्थान न होनेसे लाचार हो अस्वीकारता लिखना पड़ती है। इस औषधालय में आमदनी के लिये, ।), ॥), १), २), ५), १०), २५), ५०), १००), तक के टिकट तैयार कराये गये हैं उन्हें खरीद इस महत् पुण्यकार्य में भाग लेना चाहिये। सहायकों के नाम धन्यवादपूर्वक समाचारपत्रों में प्रकाशित किये जायँगे। मंगानेवालों को टिकट वि. पी. से भी भेज सकेंगे।

प्रबंधक—

औषधालय–बड़नगर (मालवा)।

मुकद्दमेबाजी के दोष।



भारतवासियों की आजकल की निर्धनता और दरिद्रता का एक कारण हदसे ज्यादा मुकद्दमेबाजी भी है। जिन लोगोंको ऐतिहासिक ग्रंथों के पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ है वे जानते हैं कि प्राचीन समय में भारतवासी इस दोष से कितने रहित थे। एक चीनी तीर्थयात्री सातवीं शताब्दी में भारतवर्ष की यात्रा करके जब लौट कर अपने देशमें गया, तब वह भारतवासियों के विषय में ऐसा कहता था कि "भारतवासी झूठ बोलना महा पाप समझते हैं इस लिये वे बिलकुल झूठ नहीं बोलते।" इस बात को उसने स्वरचित एक पुस्तक में भी लिख दिया है। प्रोफेसर मेक्समूलर साहब ने (जो यूरोप में बड़े भारी संस्कृत के विद्वान् और भारतवर्ष के सच्चे हितैषी थे) अपनी पुस्तक "भारत से हम क्या सीख सकते हैं" में लिखा है कि प्राचीन आर्य्यगण सत्य बोलने के लिये बहुत प्रसिद्ध थे। परन्तु शोक है कि आजकल हम उसी भारत के निवासी और उसी प्रशंसित आर्य्यजाति की सन्तान इतने बदनाम हो गये हैं कि यूरोप अमेरिका और अन्य सभ्य देश के लोग हमारे नामसे घृणा करते हैं। विदेशी लोग हम को झूठे, कपटी, छली और दग़ाबाज़ के नाम से पुकारते हैं। जिन लोगों को आजकल कचहरियों, अदालतों की कार्रवाई का ज्ञान है, वे भली भाँति जानते हैं कितने लोग दीवानी फौजदारी अदालत में कैसा झूठ बोलते हैं। और कदाचित् उतना झूठ वे कचहरी के बाहिर कभी नहीं बोलते होंगे। अनेक जन चार २ आने के लिये पवित्र से पवित्र नामों की शपथें खाते हैं, जिसका परिणाम यह हुआ कि आजकल हमारी जाति असत्य, छल, कपट के लिए बहुत बदनाम हो गई है। यहां तक कि परस्पर मित्रों और रिश्तेदारों में भी एक दूसरे पर विश्वास नहीं रहा। और इसी लिए भारतवासी वाणिज्य, तिजारत में भलीभांति उन्नति नहीं कर सके। इस मुकद्मेबाज़ी से भारतवासियों को जो हानि पहुंचती है वह बुद्धिमानों से छिपी नहीं। असल रकम से पांच गुणा अधिक मुक़द्मा पर खर्च हो जाता है और उभय पक्ष (फरीकैन) मुक़द्मेबाजी से बरबाद होजाते हैं इस कारण हमें पञ्चायत करनी चाहिए।

टहलराम गंगाराम—डेरास्माइलखां।

अपने देश की चीजें बरतो।

भारत का दरिद्रता की यह भी एक भारी कारण है कि यहां के कपड़े के कारखाने बिलकुल नष्ट होगए हैं। और हरएक वस्तु हम विदेशियों की तैयार की हुई इस्तेमाल करते हैं। इसलिए भारत-

का बहुतसा रुपया विदेश की ओर खिंचा चला जा रहा है और यहां के लोग आजीविका के अभाव के कारण भूकों मर रहे हैं। इसका प्रतीकार यह है कि न केवल विद्या सम्बन्धी वरन् क्रियात्मिक कार्यवाही भी आरम्भ कर देनी चाहिए । इस में शक नहीं कि विदेश के लोग ज्यादा धनी और कारीगर हैं इस लिए वह चीज़ें अच्छी और सस्ती तैयार कर सकते हैं । और कुछ समय तक इस मुल्क में बनी हुई चीजों के साथ मूल्य में मुकाबला नहीं कर सकतीं । यदि हिन्दुस्तानी इस बात का दृढ़ निश्चय करलें कि हम केवल हिन्दुस्तान की बनी हुई चीजें इस्तेमाल करेंगे तो वह समय बहुत दूर न होगा जब कि इस देश में हर प्रकार के कारखाने कायम होकर उन्नति करेंगे और फिर यहां की बनी हुई चीज़ें विदेश की चीजों की तरह अच्छी और सस्ती होंगी । अब हिंदुस्तान के कई ज़िलों-ढाका, भागलपुर, अहमदाबाद और लुधियाना में ऐसे अच्छे कपड़े तैयार होते हैं कि योरोपियन कपड़े के साथ मुकाबला कर सकते हैं । परन्तु जब तक हिंद के लोग इस में उस लेडी की नकल न करेंगे जिसने एक निहायत ही गर्म और तैयार चाय का प्याला पीने से इस लिए इन्कार कर दिया कि वह उसकी अपने मुल्ककी बोई हुई चाय से नहीं बनाई गई थी, तब तक इस देश के कारखाने अच्छी तरह से नहीं चल सकते क्योंकि ज़रूरत ही हर प्रकार की उन्नति की जड़ है । आशा है देश के हितचिन्तक अपने देश की बनी हुई चीज़े इस्तेमाल करेंगे। ईश्वर भी उनकी सहायता करता है जो प्रथम अपनी सहायता आप करते हैं । आशा है कि आप अवश्य इसपर अमल करेंगे।

टहलराम गङ्गाराम ।



दोहा।

रहे न कौड़ी पापकी, ज्यों आवे त्यों जाय।
लाखों का धन पायके, मरे न कफ्फन पाय ॥

कन्या कर रही हाहाकार,
सुन लो दाम चुकानेवाले ॥टेक॥
क्यों तुम कर रहे पाप अपार,
आखिर नहीं है इसमें सार ।
मरती पृथ्वी इसके भार,
ऐसा पाप कमानेवाले ॥कन्या०॥
कहते मातपिता अरु भाई,
जिनको शर्म जरा नहीं आई ।
बन गये सबके सभी कसाई,
जीवित मांस बेचनेवाले ॥क०॥
लंगड़ा लूला अति बेहाल,
बूढ़े बालकका नहीं ख्याल ।

होना चाहिये मालामाल,
कन्या नाश करानेवाले ॥क०॥

कन्या जब विधवा हो जाय,
उठती तनमें कैसी लाय।
बनती जब है कैसी हाय?
हिय में आग जलानेवाले ॥क०॥

कन्या किससे करे पुकार,
रह २ लगे कलेजे घाव।
इससे बेहतर डालो मार,
लोभी मुफ्त रुलानेवाले ॥क०॥

टिकता पैसा जरा न पास,
करलो मन झूठा विश्वास।
आखिर होय नरकका बास,
सत्यानाश करानेवाले ॥क०॥

यह "गहलोत" कर अभिलाष,
जिसका देश जैतपूर बास।
काटो दुहिताकी गल बाल्य है
मोटे नाम उठाना आ ॥क०॥
ोई बनते हैं
ाखाना आजक

प्यारे पाठकगण जाते थे तुम श्रेष्ठ जब
में जैसे कन्यायें बेची माना आजकल॥१०॥
खरीदी जाती हैं वैसे धका लेंगे न वह।
बेची और खरीदी न ज ने है माना आजकल॥
पर तो कन्या और उ ष्ठ बनना चाहो जो।
और उसके बन्धूजन बिगाना आजकल॥
नाई (Barber) तथा नहिं तुम मित्रवर।
पुरोहितजी सम्बंध ठहरा उठाना आज कल॥
लाल जैन-भींड.

खेद है कि जिन विश्वासघातकों को कोई महाजन (मुद्रा) उधार देता हुआ भी हजार विचार करेगा उन लोगों के अधिकार में अपनी प्यारी सन्तति (औलाद) के जन्मभरका सुख दुःख सौंप दिया जाता हैं। गोया चींटी (कीड़ी) बिल्लीको जलेबी की रखवाली का भार दिया जाता है। वर चाहे नाबालिग (वृद्ध बालक) हो कन्या चाहे कानी हो केवल थैलियों की बातचीत होती है। धनवानों में १०० में से ५० से अधिक ऐसे होते हैं कि जिनमें वरसे कन्या की अवस्था सवाई होती है। प्रत्येक नगर में बीसों ऐसे उटपटांग उदाहरण मिल सकते हैं।

सगाई पक्की करनेको याने मुद्रा देने को जो पंच पधारते है वे निरे कठपुतले ही है कि कुछ मस्तक में बुद्धि भी रखते हैं?।

यदि कन्या और वरके मातापिता तथा पंचलोग निज कर्तव्य (duty) पर ध्यान देवें तो इन विचारी अबोध कन्याओं के गले में लटकी फंसी शीघ्र दूर हो सकती है।

ડાંભા
હોય છે, ખુ का भूला सांझ पड़े भी जो घर
જાણીતું હોતું નથી. आला नहीं कहलाता।
ન્યુને સૂવું તે કેદખાનાં ने।
લાગશે.

કેટલાક કહે છે કે દૂધ ચાહ પીતા
વખતે ફુંકો મારી મારી પીવું નહિ, પણ
આમાં સમજવામાં ભૂલ છે. કાર્બોનીક એસીડ
ગ્યાસ ફક્ત નાકવાટે શરીરમાં દાખલ થાય

કોન્ફરંસ સમયે ગુજરાત પ્રાંતના ભાઇઓ પણ ઘણી ભારે સંખ્યામાં ભાગ લેશેજ એવી પૂર્ણ આશા છે. આ પ્રસંગે કેવા કેવા ઠરાવો અને શું શું કાર્યો થવાની જરૂર છે તે સંબંધી એક સૂચના અમો આવતા અંકમાં પ્રગટ કરનાર છીએ, માટે ઠરાવોની સૂચના અમોને તથા કોન્ફરંસ ઓફિસને ઘણીજ તાકીદે મોકલી આપવી. તેમજ કોન્ફરંસ સંબંધી પત્રવ્યવહાર કરનારે હીરાબાગ-મુંબાઇને સરનામેજ પત્રવ્યવહાર કરવો. આવતો અંક કોન્ફરંસને લીધે ખાસ કરી બરાબર ચૈત્ર સુદ ૧ સુધીમાં પ્રકટ કરવામાં આવશેજ, માટે કોન્ફરંસ સંબંધી સૂચનાઓ લખી મોકલનારે ફાગણ વદ ૫ સુધીમાં તે લખી મોકલવી.



आहारदाननो उत्तम प्रसंग. गया अंकमां जणाव्या मुजब हस्तीनापुरना 'श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम'मां रहीने विद्याभ्यास करता ६८ ब्रह्मचारीओनो रोजनो भोजनखर्च रू. २५) लेखे आहारदान तरीके मोकली आपवानी सूचना भारे उत्साहथी उपाडी लेवाई छे अने गत अंकमां २५ दिवसनी ६२५)नी मंजुरी तो प्रकट थई चुकी छे अने वधुमां ३६ दिवसनी ८७५) नी मंजुरी मळी चुकी छे ने वधू मळतीज जायछे, जे एना अधिष्ठाता जैनधर्मभूषण ब्र. शीतलप्रसादजीना अहर्निश प्रयासनुंज फळ छे. आ पैकी २१ दिवस माटेनी मंजुरी तो मात्र दिल्हीना भाईओनीज छे तेमां पण भाईओए तो वारंवार सांवत्सर दिवसनी मंजुरी आपी छे. वर्षना ३६५ दिवस दरम्यान ६१ मात्र ६० दिवसनी मंजुरी मळी छे एटले हजु आ प्रसंगमां छठ्ठे भागे सफळता थई छे. दि. जैनोमां धनवानोनो टोटो नथी, तो मात्र २५) ब्रह्मचारीओने आहारदान माटे आपनारा ३०० श्रीमानोनी स्वीकारता ताकीदे मळवी जोईए, तोज आ महाभारत अने जैनधर्मने अतीव उपयोगी संस्थानो नीभाव थई शकशेज, माटे आ बाबत अमो हिंदना दरेक स्थानना श्रीमानोनुं खास लक्ष खेंचीए छिए.



नामदार वाईसरॉयनी हार्डिज मुदत पुरीथवे विदायगीरी. आपणा भला अने अतीव लोकप्रिय नामदार वाइसरोय लोर्ड आज मासनी ता. ३० मीए विदाय थनार छे (अने नवा वायसरोय लोर्ड चेम्सफर्ड ता. ३जी एप्रील आवी पहोंचनार छे) तो ते पहेलां अमारे एक छेवटनुं रुदन अने आजीजी नामदार वाइसरोय लोर्ड हार्डिजनी सरकारने करवानी के आपनी हकुमतना जेपुर राज्यमां वगरन्याये वगरतपासे लगभग बे वर्ष थयां जेलमां सबडता एक निःस्वार्थी परोपकारी जैन पंडित अर्जुनलाल सेठीनी दाद फर्याद जेपुरराज्य के आप नामदारनी सरकार हजारो तारो, पत्रो तथा अनेक अरजीओ थवा छतां जराए सांभळतीज नथी के ए बाबत कंई गुन्हाओ पण करती नथी ए अतीव अजबजेवुं अने दिलगीरीभरेलुं छे, माटे आप नामदारने छेवटनी एज अरज गुजारवानी के आप नामदार हिंदमांथी विदाय थवां पहेलां पं. अर्जुनलाल सेठी-

पर विनान्याये विना अपराधे थयेली केदनी दिशामांथी तेमनो न्याय करवाने महेरबानी करवी, तेमज दि. श्वे. स्था. सर्वे जैन बंधुओने पण खास सूचना करवानी के समय घणोज टूंको छे, माटे घणीज त्वराए दरेक गामनी पंच तरफथी छेवटनो एकेक तार नामदार वॉइसरायने दिल्हीमां एवी मतलबनो करवो के "जयपुर राज्य तरफथी जैनसमाजना एक नेता पं. अर्जुनलाल सेठी, जे विना न्याये विना तपासे बे वर्ष थयां जेलमां सबडे छे तेमनो न्याय आपे विदाय थतां पहेलां करी जवानी महेरबानी करवी."



मिथ्यापर्व होळी. आ मासनी सुद १५ उपर होळी अथवा हुताशणीनो मिथ्याती-बनावटी पर्व आवे छे ते प्रसंगे हिंदमां घणे स्थळे हजु पण जैनो आ पर्व अनेक प्रकारनी हिंसाना कार्यो करी तथा गाळागाळीच करी मोजमझा उडावी मानी रहेला छे, ज्यारे अने माननारी कोमोमां केटलेक स्थळे 'होळीका संमेलन' कमीटीओ केटलांक वर्षोथी नीमाय छे अने ते द्वारा सभाओ भराई, ए त्हेवारमां थता लज्जास्पद रिवाजो बंध थता जाय छे, माटे हवे तो देखादेखीथी मिथ्यापर्वने मानी रहेला जैनोए चेतवानी जरूर छे. आ दिवसोमांज आपणो अष्टानिका पर्व आवे छे माटे "होळीका पूजन तो करवुंज जोइए अने **नाळियेर, छाणनी बनावेली कृत्रिम सामग्री** वगेरे होमवुंज जोइए" एवा वहेम काढी नांखी पुण्यने बदले पापना भागी थतां अटकवुं जोइए.



इन्दौरमें सेठ हुकमचन्दजीका बड़ा सन्मानः—ता. १–३–१६ को श्रीमंत महाराजा साहेब-इन्दौरके गादीकी वर्षगांठका दर्बार था जिसमें श्रीमंत महाराजा व सरदार, आफिसर व ११ पंच साहूकारान उपस्थित थे। दरबारकी मामूली कार्रवाईके बाद हाउसहोल्ड मेम्बर साहेबने श्रीमंत सरकार तरफसे खलीता पढ़ा जिसमें जैनसमाजके मुखिया और इन्दौर नगरके प्रसिद्ध **रायबहादुर दानवीर सेठ हुकमचन्दजीको** उनके विद्यादान और सत्कार्य, धर्मशाला, महाविद्यालयादिका इन्दौर नगरमें लाखों रुपिया लगाकर स्थापित करने और इन्दौरकी प्रजाको व्यापार लाभ पहुंचानेके लिये धी हुकमचन्द मिल्स खोलनेके उपलक्षमें श्रीमंत महाराजा साहेबने सेठसाहेबको इन सत्कृत्योंका धन्यवाद दिया और अभीतक सेठसाहेबकी बैठक ११ पंचोंमें लेन नं. १३ में थी सो अबसे सेठ साहबको **महाराजा साहेबकी दाहिनी ओर खासकी सरदारों बैठक दी।** और एक हाथी रखकर उपयोगमें लानेकी परवानगी दी। इस सन्मानके बदलेमें सेठ साहेबने महाराजा साहेबका आभार मानते हुए ऐसी प्रजाप्रेमी नरनाथकी रियाया होनेका सौभाग्य प्रगट किया। पश्चात् हाउसहोल्ड मेम्बर साहेबने सेठ साहेबको नवीन बैठक पर बिठाया बाद सरकार तरफसे इत्रपान होकर दरबार बरखास्त हुवा। सेठ साहेबका

इस प्रकार सन्मान देखकर हम बधाई देते हैं और श्रीमंत महाराजा साहेबकी इस कदरदानीके लिये आभार मानते हैं।

श्री जैनकुमारसभाका उत्सव और केशलोंचः—श्री जैनकुमारसभाका द्वितीय वार्षिकोत्सव और रथयात्रा उत्सव झालरापाटन केम्पमें फाल्गुन शुक्र ८ से १२ तक होगा जिस मौकेपर मुनि श्रीचंद्रसागरजीका केशलोंच सुदी १२ को ८ बजे सबेरे होगा। सब भाईयोंको अवश्य पधारना चाहिये। श्री छत्रपुर (नागदा मथुरा रेल्वे) स्टेशनसे १६ मीलपर झालरापाटन केम्प है। सवारी तैयार मिलती है।

ભ. સુરેંદ્રકીર્તિજીએ વડુમાં જાહેર સભા કરી 'મનુષ્ય કર્તવ્ય અને પંચમહાવ્રત' ઉપર ભાષણ આપ્યું હતું.

વાસણ ન વાપરવા, (૨) રજસ્વળા સ્ત્રીએ ચાર દિવસ સુધી ઘરમાં નહિ અડકવું, રોજ ન્હાવું તથા પાંચમે દિવસેજ રસોઇ કરવી, (૩) સુવાવડી સ્ત્રીએ ૧I મહિના સુધી ઘરમાં કશાને અડકવું નહિ વગેરે ૫ લેખિત ઠરાવો કર્યા છે અને તે વિરૂદ્ધ વર્તનાર પાસે રૂ. ૫I દંડ અને તે ન આપે તો વ્યવહાર બંધ કરવાનો ઠરાવ કર્યો છે. આ મુજબ ખેડા જિલ્લામાં ઘણા ગામોમાં રજસ્વળાનો તથા સુવાવડનો પ્રતિબંધ બરાબર પળાતો નથી. ત્યાંના ભાઇઓએ આ ઠરાવો જવાસની પંચ પાસે લખાવી મંગાવી તેનું અનુકરણ કરવું જોઇએ.

अमरोहामें जैनपद्धतिसे विवाह—माघ सुदी ३को लाला बांकेलालकी पुत्रीका विवाह लाला श्यामलालके सुपुत्रके साथ पं. विष्णुदत्त शर्मा द्वारा जैनपद्धतिसे हुआथा जिस मौकेपर एक सभा भी की गई थी और बेटीबेटेवालोंकी तरफसे कई संस्थाओंको रु. १५) विद्यादानमें दिया गया, जिसमेंसे रु. १) 'दिगंबर जैन 'को भी सहायतार्थ मिला है।

नाम बदल गया—श्री. दानवीर रा० ब० सेठ हुकमचन्दजीकी तरफसे बोर्डिंग, विद्यालय, धर्मशालादि इन्दौरमें जहाँ है उस स्थानका नाम अभीतक नसियां के नामसे मचलित था परंतु अब इसका नाम बदलकर आपकी स्वर्गीय माता जंवरीबाईके नामपर 'जंवरीबाग' रक्खा गया है इसलिये अब नसियांके स्थानपर 'जंवरी बाग' लिखना चाहिये।

बालसे युवकअवस्था ग्रहण की—हाथरसकी सभाका नाम ३॥ वर्ष हुए 'जैन बालसभा' था परंतु यहांके सज्जनोंने इस सभाका आदर करके उसमें सम्मिलित होकर

उसका नाम अब 'जैनधर्मवर्द्धनी सभा' करदिया है। हाथरसके सभी भाईयोंको अवश्य सभासद बनना चाहिये। मंत्री जगन्नाथप्रसादजी हैं।

કલ્યાણચંદ નામે ધૂર્ત બ્રહ્મચારીથી સાવધ રહેજો–શાહપુર (બેલગામ)નો આશરે ૪૦ વર્ષનો કલ્યાણચંદ નામે એક ધૂર્ત જેને જમણા હાથની ટચલી આંગળી નથી તે બ્રહ્મચારીનો વેપ લઇ ગામેગામ ફરે છે અને આચારવિચારથી ભ્રષ્ટ છે તે કોઇ સ્થળે આવે તો તેથી સાવધ રહેવું. ગયા માસમાં આ ધૂર્ત સુરતમાં આવી પાંચ છ દિવસ રહ્યો હતો જેથી તેનું પોકળ અત્રે પકડાઇ ગયું છે.

'જ્ઞાતિવરા અથવા જમણવાર' સંબંધી ઈનામી નિબંધ—માસ્તર ગંગાશંકર જણાવે છે કે શેઠ પ્રે. મો. દિ. જૈન બોર્ડિંગ (અમદાવાદ)ના વિદ્યાર્થીઓએ સ્થાપેલી સોસાયટીમાં દર રવીવારે ભાષણો થાય છે તે દરમ્યાન દરેક વિદ્યાર્થી પાસે 'જમણવાર' ઉપર ઇનામી 'નિબંધ લખાવવામાં આવેલો, જેમાંના સારા ત્રણને ઇનામ આપવાને ઠરેલું, જેથી લખાયેલા બધા નિબંધો ગુજરાત વર્નાક્યુલર સોસાયટીના કલાર્ક સાક્ષર શ્રી **મી० મણીલાલ છગનલાલ ભટ્ટ** પાસે તપાસાવેલા, તેમાંથી પહેલે નંબરે **શા० જગજીવન કસ્તુરચંદ** (છત્રાલ)નો, બીજે નંબરે ગાંધી છોટાલાલ ગુલાબચંદ (સોનાસણ)નો અને ત્રીજે નંબરે શા. ભુગચંદ બહેચરદાસ (કરમસદ) નો નિબંધ આવ્યો હતો, તેમ બીજાઓને પાસ તરીકે ગણવામાં આવ્યા હતા, તે સાથે મી० ભટ્ટે એ સંબંધી પોતાનો ઉત્તમ અભિપ્રાય આપી સંતોષ જાહેર કરી વિદ્યાર્થીઓના ઉચ્ચ વિચારોથી પ્રસન્ન થવાનું જણાવ્યું હતું. મી० ભટ્ટ પરધર્મી હોવા છતાં આપણી બોર્ડિંગ માટે જે તસ્દી લઇ પોતાની લાગણી દર્શાવી છે તે માટે આપણે તેમના અત્યંત આભારી છીએ. પ્રથમ નંબરનો શા. જગજીવન કસ્તુરચંદનો આ ઉપયોગી નિબંધ અમને મળ્યો છે, જે સ્થાનાભાવને લીધે આવતા અંકમાં પ્રકટ કરવામાં આવશે.

उदैपुरमें अविनयः—झावुवासे मोदी पनालाल लिखते हैं कि मैं केशरियाजीकी यात्रा करके उदैपुर गया तो वहाँ एक मांसाहारी बोहरेकी दुकानपर केशरियाजी (रीखवदेव)की मूर्तिके श्वे. दि. दोनों प्रकारके फोटो बिकाते देखे जिस अविनयको देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ। उदैपुरके श्वे. दि. भाईयोंको उचित है कि इस अविनयको रोके और उस बोहरेसे सब फोटो ले लेवें।

સોજીત્રાની પાઠશાળાને ઉત્તેજનની જરૂર—એક ચર્ચાપત્રી જણાવે છે કે સોજીત્રામાં જૈન પાઠશાળા પુનઃ સ્થાપન થયે સવા વર્ષ થઇ ગયું છે છતાં પણ બધો ખર્ચ ઇસણાવવાળા શેઠ નરસીદાસ ગંગાદાસ પુરો પાડે છે. હાલ ૧૮ જ વિદ્યાર્થી છે માટે વધુ વિદ્યાર્થીઓ અને વધુ મદદની ઘણીજ તાકીદે જરૂર છે. આ પાઠશાળાની વ્યવસ્થા સારી રીતે ચાલે છે, માટે એને બરાબર ઉન્નત અવસ્થાએ લાવવામાં આવે તો આ પાઠશાળા ગુજરાતની પાઠશાળાઓમાં એક આદર્શરૂપ થાય વગેરે. આ બાબત સોજીત્રાસંઘના ભાઇઓનું અમો ખાસ ધ્યાન ખેંચીએ છીએ.

એક વૃદ્ધ બાઇનું ઉચિત અવસ્થામાં અનુકરણીય દાન—ઝાણુઆમાં ૮૦ વર્ષની ઉમરની **શ્રીમતી ચુનીબાઇએ** આ સંસાર ક્ષણભંગુર જાણી પોતાને હાથે નીચે પ્રમાણે દાન કરી દીધું છે–૧૦૦) જૈન પાઠશાળા કુશલગઢ, ૫૦) જૈન પાઠશાળા રાણાપુર, ૧૦) મોરેના જૈન વિદ્યાલય, ૧૦) મુંબાઈ શ્રાવિકાશ્રમ, ૨૫) ઋષભ બ્રહ્મચર્યાશ્રમને એક દિવસના ભોજન માટે, ૧૦) 'દિગંબર જૈન ઓફિસ–સુરત, ૧૨૬) ઝાણુઆ વગેરેના મંદિરમાં ઉપકરણ માટે, ૫૦) દિ. જૈન માલવા પ્રાં•સભા ઔષધાલય, ૨૫) શિખરજીમાં સામગ્રી ખાતે, ૫૦) મંદિર જીર્ણોદ્ધાર માટે મળી કુલ્લે

રૂ. ૪૯૬) રોકડા અને થાંદલા **જૈન પાઠશાળા માટે એક મકાન** અર્પણ કરી દીધું છે. ધન્ય છે આ બાઇને કે "હાથે તેજ સાથે" એવો વિચાર કરી પોતાના નાણાંનો પોતાની હયાતિમાંજ સદ્વ્યય કર્યો છે. બીજા શ્રીમાનો આ બાઇનું અનુકરણ કરશે કે ?

બડવાઈ કન્યશાળાનો મેળાવડો અને મહારાણીને માનપત્ર-તા૦ ૭-૨-૧૬ ને દિને વિદ્યાવર્દ્ધિની પાઠશાળાનો મેળાવડો શ્રી. બેસરબાઇ તરફથી મોટાં મહારાણી હોલ્કર સરકારના પ્રમુખપદે થયો હતો, જેમાં મુંબાઇથી શ્રી. મગનબ્હેન, કંકુબ્હેન તેમજ ઇન્દોરથી મહારાણીના કુટુંબીઓ તથા રાવબહાદુર શેઠોનાં પત્નીઓ વગેરે પધાર્યાં હતાં અને રિપોર્ટ, સંવાદ, ઇનામ વગેરે થયા પછી શ્રી. બેસરબાઇને હાથે મહારાણીને અભિનંદનપત્ર વાંચીને ચાંદીના કાસ્કેટમાં અર્પણ કરાયું હતું તેમજ મહારાણીએ પાઠશાળા તરફ સંતોષ દર્શાવી (રૂ. ૫૦)ની મદદ આપી હતી. આ પાઠશાળા માટે શ્રી. બેસરબાઇએ ૨૫૦૦૦)નું ફંડ કાઢેલું છે. માસિક

અહમદનગરમાં પ્રાણીરક્ષક સંસ્થા:-દોશી હીરાચંદ મલુકચંદ જણાવે છે કે અત્રે ગઇ તા. ૩૦ એ ત્રણે ફિરકાના જૈનો તથા એક ક્રિશ્ચીયન રેવ્હરંડ ટીલકે મળીને પ્રાણીરક્ષક સંસ્થા સ્થાપન કરી છે, જેનો ઉદ્દેશ ધુળીઆની સંસ્થાને મળતોજ છે. ૧૩ મેમ્બરો હાલ દાખલ થયા છે. વળી અત્રે જૈન કાસાર તથા સેતવાલ જૈન વગેરે અન્યમતી થયેલા છે તેમને ઉપદેશ કરી શેઠ નાથા રંગજીએ બાળબોધ જૈનધર્મ, તીર્થંકરચરિત્ર, મહાપુરાણામૃત વગેરે પુસ્તકો વેંચ્યા છે જેનો તેઓ રોજ સ્વાધ્યાય કરેછે, તેમાં ૪૫ જણે તો સ્વાધ્યાયની પ્રતિજ્ઞા લીધી છે. પ્રયાસનું ફળ.

માંસ દારૂ અને કંદમૂળ ત્યાગ-સામેત્રીના હાકોર કાનજી પનાજી તથા મગનજી દાનાજીએ માંસ દારૂ અને કંદ મૂળનો ત્યાગ કર્યો છે.

रतलाममें संप–रतलामके मंदिरमें 'तेरापंथ शुद्धाम्नाय'का साईनबोर्ड कितनेक भाईओंने लगाया था जिससे तीन सालसे बड़ा वैमनस्य फैला हुआ था और जिसका झघड़ा कोर्टतक चलाथा जिसमें साईनबोर्ड न लगाना चाहिये ऐसा फैसला हुआथा। और अब सब कलहका मुंह काला होकर निम्न लिखित नियम ऊपर दोनों ओरके मुखियाओंके हस्ताक्षर होचुके हैं–(१) दोनों दल विना संकोचके एकदूसरे यहां जाना आना, (२) जिसके यहां अबतक मन्दिरजीकी रकम द्रव्य उपकरण आदि होवें सब सेठ गंगाराम गुलाबचंदजीके यहां जमा करावे और सेठजीवाले अलगवहीमें उसका हिसाब रक्खे, (३) सेठजीवालेके यहां मंदिरकी जिनकी अमानत हो वेदीको छोड़कर बाकी कुल रकमका जमाखर्च मंदिरजीकी अलगवहीमें रक्खें और इन सबका व आमदखर्चका आगामी हिसाब

बिलकुल साफ २ रखें, (४) मंदिरजीके उपकरण ब्राह्मण वैश्यके सिवाय किसी अन्य जातिको मांगे न दिये जायं, (५) जाति सम्बंधी काम दो जनेकी राय पूछ कर किये जाय।

आपसी फूटके कारण अनेक स्थानोंमें खास करके धर्मकार्यमें बड़ाभारी धक्का लगता है इसलिये रतलामके भाइयोंका अनुकरण करके इन्दौर, सोलापुर, बड़ौदा आदि स्थानोंकी पंचोंमें भी कई वर्षोंसे दो धड़े पड़े हैं उसका निवटारा दोनों पक्षवालेने साथ मिलकर लाना चाहिये।

रु. २६२७) का दानः—बड़वानी-निवासी सेठ भीलाजी चांदूलालजीकी धर्मपत्नी श्रीमती सीताबाईका स्वर्गवास हो गया है। आप २६२७) का दान भिन्न २ मंदिर और संस्थाओंको कर गई हैं और शास्त्रदानके लिये भी कुछ रकम निकाली गई है।

એક માસમાં રૂ. ર૯૦૩॥ ०॥ ની મદદ મળી:—શ્રી ઋષભ બ્રહ્મચર્યાશ્રમ, હસ્તી નાપુરને ડિસેંબર માસમાં કુલે રૂ. ૧૫૨૪॥ાની, સ્યાદ્વાદ મહાવિદ્યાલય કાશીને રૂ. ૪૦૫॥॥—ની અને મુંબાઇ શ્રાવિકાશ્રમને રૂ. ૭૭૩। ની મદદ મળી હતી.

બુઢ્ઢાકાકાને રૂ. ૭૦૦૦)ની કન્યા નહિ મળી:—માઢા (સોલાપુર) ના મોતીચંદ કસ્તૂરચંદે પોતાની ૧૧ વર્ષની કન્યાને ૭ સાત હજાર રૂ. લેવાના કરીને નિંબગાંવના એક ૫૩ વર્ષના બુઢ્ઢાકાકા સાથે લગ્ન કરવા નક્કી કરેલું તે માટે કન્યાના મામાએ તેમ ન થાય તે માટે કોર્ટદ્વારા દાદ માંગેલી; જેનો નીકાલ થતા પહેલાંજ કન્યાના બાપ મોતીચંદે બે વર્ષ પછીજ છોકરીના લગ્ન કરવાનું અને તે પણ કન્યાના મામા અને બીજા લોકો જે યોગ્ય વરની સાથે કહે, તેની સાથેજ લગ્ન કરવાનું કબુલ્યું છે. મામાને પોતાની ભાણેજની દયા આવી, પણ બાપને પોતાની બેટીની દયા (પહેલાં તો) નજ આવી! **સ્વાર્થ તદ્દન આંધળોજ છે.**

શિખરજી કેસ—શ્વેતાંબરી તરફથી જે સંબંધી જે કેસ માંડવામાં આવેલો છે તેમાં શ્વે. તરફના સાક્ષીઓ લેવાનું કામ તા. ૪ થી માર્ચે શરૂ થનાર હતું. દિ. તરફના સાક્ષીઓ એમની પછી તરતજ લેવામાં આવનાર છે, પણ સાક્ષી આપવા જનારે તૈયાર થઇ રહેવું જોઇએ.

परस्पर प्रेमभाव—देहलीमें श्वे. की तरफसे बड़ा भारी रथोत्सव हुआ था जिसमें दिगंबरभाई भी तन मनसे इस तरह शामिल हुए थे कि जैसे एक माके दो बेटे बिछुडे बाद मिलते हैं। सभी स्थानोंपर ऐसा ही परस्पर प्रेमभाव रहना चाहिए।

हिन्दू विश्वविद्यालयमें जैनोंका आदर—काशीमें 'हिन्दू विश्वविद्यालय'के मुहूर्तपर वेदिक हिन्दूधर्म, सिक्ख और जैन तीनों धर्मोंकी विधिसे पूजा, जप और होम अलग् २ मंडपोंमें किया गया था जिसमें जैनोंका पूजन होम ता. २९ जनवरीसे ता. ४ फर्वरी तक प्रातःकाल ७॥ से १०॥ तक होता था। मंडपमें ऊंची वेदीके ऊपर सौनेरी सिंहासनपर शास्त्र, यंत्र और निकट ही गिरनारजीका पट और पद्मासन अर्हंतका चित्र रक्खा जाता था। जैनधर्मभूषण ब्र. शीतलप्रसादजी, पं. दीपचंदजी, ब्र. कुंवर दिग्विजयसिंहजी, न्या. पं. गणेशप्रसादजी ब्रह्मचारी, बाबा भगीरथजी, कुमार देवेंद्रप्रसादजी, पं. तुलसीरामजी, गोविंदरामजी काव्यतीर्थ, श्वे. यति कर्पूरविजयजी आदि और अनेक जैन सज्जनों भी इस पूज-

नमें शरीक हुए थे। हिन्दू विश्वविद्यालयके दरबारमें श्रीमान् वायसरॉय लोर्ड हार्डिंज अनेक गवर्नरों, अनेक राजा महाराजाओं उपस्थित थे जिसमें जैनियोंमें रा. ब. दानवीर सेठ हुकमचंदजी, रा. सा. बाबू गुलाबचंदजी छपरा, रा. ब. बद्रीदासजी आदि थे। ता० ५ से ९ तक प्रातःकाल और सायंकाल उत्सवके संबंधमें विद्वानोंके व्याख्यान होते थे उसमें ता. ९ की सभामें पं. दीनदयाल शर्माने 'धार्मिक शिक्षा किस प्रकार होगी' इसपर व्याख्यान देते समय स्पष्ट रीतिसे यह कहा कि हिन्दू शब्द उन सबके लिये व्यवहारमें आता है जिनका बुजुर्गोंका जन्म इस भारतमें हुआ और जिनकी भाषा प्राचीन कालमें संस्कृत-प्राकृत थी इसलिये इस विद्यालयमें सर्वही हिन्दूओंके सिद्धांतोंकी शिक्षा दी जायगी और जैनधर्मकी भी शिक्षा दी जायगी। यद्यपि इसके फंडमें रा. ब. लाला मुलतानसिंहजी देहलीने १००००), बाबू धन्नूलालजी अटार्नीने रु. १००००) की सहायता दी है और इन्दौरके श्रीमान् दानवीर सेठ हुकमचंदजी—कल्याणमलजी—कस्तूरचंदजी तीनों भाइयोंने मिलकर १५०००) मंदिर बनानेके लिये प्रदान किये हैं अभी जैनियोंको इनमें और भी मदद देनी चाहिए। एक बोर्डिंगके लिये ४०–५० हजार रु. और १००) मासिकका प्रबंध एक जैन विद्वान रखनेके लिये होनेकी आवश्यकता है।

महाविद्यालयका वार्षिकोत्सवः—अपने स्याद्वाद महाविद्यालयका उत्सव भी काशीमें कविसम्राट महा. श्री. पं. यादवेश्वरजी तर्करत्नके सभापतित्वमें ता. २–३ फर्वरीको बड़े समारोहके साथ हुआ था। प्रथम दिन कई विद्वानोंके संस्कृत, हिन्दी और अंगरेजीमें व्याख्यान हुए थे, ब्र. शीतलप्रसादजीने रिपोर्ट पढ़ा और रा. बा. सेठ हुकमचंदजीको मानपत्र दिया गया था और अपील होनेपर १००१) सेठ हुकमचंदजी, और ५००) दूसरे होकर डेढ़ हजारका चंदा हुआ था। रात्रिको कुंवर दिग्विजयसिंहजीके सभापतित्वमें मूर्तिपूजा, धार्मिक भाव, छात्रोपदेश आदि विषयोंपर व्याख्यान हुए थे। दूसरे दिन दुपहरके २ बजे टाउन हॉलमें बड़ी आमसभा की गई थी जिसमें पं. दीपचंदजीने 'उद्योग,' कुंवर साहबने 'जैन सिद्धान्त,' न्या. पं. गणेशप्रसादजी ब्र. ने 'स्याद्वाद' और प्रो. लक्ष्मीचन्दजी एम. ए. ने विज्ञान पर व्याख्यान दिये थे। सभापतिजीने भी अपने व्याख्यानमें कहा कि जैनियोंके सिद्धान्त शरीर प्रमाण आत्मा है तथा यह परलोकादि मानते हैं और बौद्धसे भिन्न हैं आदि। रात्रिको टाउन हॉलमेंही फिर सभा हुई थी जिसमें अनेक व्याख्यानों हुये थे और स्व. बाबू देवकुमारजीके सुपुत्र बाबू निर्मलकुमार और चक्रेश्वरकुमारको सन्मानपत्र दिया गया था। नवीन बजट ६००) मासिकका पास हुआ है।

मेवाडा प्रकरण.

વીસા મેવાડા કોમની વસ્તી ગુજરાત પ્રાંતના એક ભાગમાં આશરે ચારસો પાંચસો ઘરની હશે. માણસોની સંખ્યા આશરે દોઢ બે હજારની હોય તો હોય; લેખકને તે સંખ્યાની પુરી માહિતી નથી. આ કોમના લોક દિગંબર જૈન આમ્નાયના છે. ઉપરોક્ત સંખ્યા આશરે સાઠેક ગામોમાં વિભક્ત થયેલી છે.

આ કોમ દિનપરદિન ઉન્નત દશાએ પહોંચે છે કે **અવનતિના ખાડામાં** પડતી જાય છે એનું દિગ્દર્શન કરાવવું એજ આ લેખનો ઉદ્દેશ છે. જેમ જગત એ પરમાણુઓનો સમૂહ છે, તેમ ન્યાત એ અમુક માણસોનું મંડળ છે. ન્યાતની દરેક વ્યક્તિની સ્થીતિની અસર તે ન્યાતપર થાય છે.

કોઇપણ કોમની સ્થીતિ જાણતા **પહેલાં** તેમાં કેટલી વિદ્યા, કેવો વ્યાપાર, જનસંખ્યાની વૃદ્ધિ કે હાનિ, તથા તે કારણોને માટે કોમ તરફથી લેવાતા ઇલાજો વીગેરે કંઇએક તરેહથી તેને તપાસવાની જરૂર છે. હું ભુલતો ન હોઉં તો મારે જણાવવું જોઇએ કે આજથી આશરે પાંચેક વર્ષ ઉપર **માસ્ટર દીપચંદજી ઉપદેશકે** આ કોમ સંબંધી ટીકા કરી હતી કે "મેવાડા કોમનો **જુવાન વર્ગ** અગર કોઇ કાર્યમાં આગળ વધ્યો હોય તો તે એજ કે સ્ત્રીને પુરૂષ બંને વર્ગ ફક્ત કપડાં **ને ઘરેણાંગાંઠાંની ટાપટીપ ને ફેશનમાંજ આગળ વધ્યો છે,** ન કે કોઇને ન્યાતસુધારા યા તેની ઉન્નતિની ફિકર હોય. લગનગાળા સમય **ન્યાતોના મિષ્ટાન્ન** ઉડાવીને છોકરાંઓને પરણાવીપરસ્તાવી નિરાંતે જીવવા સિવાય એક પણ ડગલું આ કોમ આગળ વધી હોય એમ જણાતું નથી." લેખકને પણ આ ટીકા ઘણે અંશે ખરી લાગે છે; કારણકે એકાદ દશકા ઉપર તો આ કોમમાં કંઇક સભા, સોસાયટીઓ ને નામની પાઠશાળાઓ ને જ્ઞાતિનું દુઃખ હૈડે ધરનાર પરોપકારી પુરૂષો પણ નજરે પડતા હતા પણ હવે તો તેમાંનું કંઇપણ દેખાતું નથી. સભાના કેટલાક કુશળ કાર્યકર્તાઓનો કંઇ સ્વાર્થ હતો કે શું? ને તે સ્વાર્થને અંગે બિચારા સાધારણ ભોળા વર્ગને આમ ભુલાં ભમાવતા હશે—ને હવે તે સ્વાર્થ શું સધાઇ ગયો કે તે પણ ઠંડા થઇ ગયા? **પાઠશાળાઓથી** પણ સઘળા ધરાઇ ચુકયા; એટલે તે પરત્વે પણ હવે કહેવા કથવાથી કંઇ વળે તેમ નથી. અલબત્ત પહેલાંના કરતાં હાલમાં કંઇક અંશે **અંગ્રેજી કેળવણી** વધી હોય એમ જણાય છે, પણ તે હજુ માત્ર નામનીજ છે ને જે ભણેલા છે તેઓએ પણ પોતાના જ્ઞાનનો લાભ કોમને કોઇ અંશે આપ્યો હોય એમ જણાતું નથી; **સ્વાર્થ સિવાય પરમાર્થ શાને કહેવો** એ સમજવાને માટે હજુ તેમને કોઇ બીજી નિશાળે ભણવાનું બાકી રહ્યું હશે એમ મને તો સમજાય છે. તે લોકોના સંબંધમાં "**હું ને મારી વહુ, ને તેમાં** આવ્યું સહુ" વાળી કહેવત ચરિતાર્થ થાય છે.

જ્યાં જ્ઞાતિના કહેવાતા આગેવાનોમાં સ્વાર્થ સિવાય બીજી કોઇ ભાવનાજ ન હોય, પોતાને દિનમાં બબ્બે વખત મિષ્ટાન્ન મળતાં છતાં પોતાનાજ **ભાઇને સાંજ સુધી ભુખે રઝળવળતો દેખી તેને વાસ્તે** કડકો સુકો લુખો રોટલો આપવાનું **જેને દિલ ન થાય તેવા** નેતાઓ **કોમનું કેટલું શ્રેય કરી શકે** એ વાંચનાર પોતેજ વિચારી શકશે! પહેલાં તો કંઇક કંઇક આશા પણ હતી કે નવા જમાનાની અસર કોમ પર થતી જોય

છે, પણ હવે તો તે પણ નાબુદ થતી જાય છે. ને બેચારા કોમનું ભવિષ્ય કેવું નીવડશે તે સમજવું હવે અઘરું નથી.

જે દુકાનદાર સાલ આખરે પોતાના વ્યાપારનું સરવાયું ન કાઢતો હોય, સાલ આખરમાં કમાય છે કે ખુએ છે તેનો કંઇપણ હિસાબ ન રાખતો હોય, જ્યાં "આંધળું દળે ને વાછડું ખાય" વાળી વાત ચાલતી હોય તેવા દુકાનદારને આખરે દેવાળું કાઢવાનો વખત આવે તેમાં શું નવાઇ? એજ સ્થિતિ સદરહુ કોમની છે.

જ્ઞાતિની વસ્તી વધે છે કે ઘટે છે? ઘટતી હોય તો તે ન થવા દેવા માટે શા ઇલાજ લેવા તેની બેદરકારી, જ્ઞાતિ જમણો ને સંઘ કાઢવામાં જ્યાં પાણીપેઠે પૈસા ખરચાય, પણ જ્ઞાતિના ગરીબ માણસોને ઉદ્યમે લગાડવા માટે કોઇ પણ ફંડની જોગવાઇનાં જ્યાં ફાંફાં, ઘણા નિરંશીઓ કે જેમણે મરતે સમયે પોતાનું ધન શુભ-કામમાં વાપરવા કહેલું હોય તે ધનને તે રસ્તે ન ખરચતાં પોતે પચાવી પાડવાની દાનત, મિથ્યા કુળાભિમાન, પરસ્પરની ઇર્ષ્યા, સામા માણસની ઉન્નતિ દેખી તેને ઉતારી પાડવાનું વલણ; આવા આવા અનેક દોષો જ્યાં એકી સાથે વાસ કરીને રહ્યા હોય તેવી કોમની ઉન્નતિની આશા રાખવીજ ફોકટ છે.

ઉપરોક્ત દોષો કેટલે અંશે આ કોમમાં છે તેનું દિગ્દર્શન કરાવી તેને મટાડવાના ઉપાય દેખાડવા જરૂરી છે.

ક્યારે કે જ્યારે પંચાયતીઆઓ નિષ્પક્ષપાતપણે મત આપે ત્યારે; જ્યાં સુધી સ્વાર્થની બુરી ભાવનાપર નજર રહે ત્યાંસુધી ન્યાયને સ્થાન ક્યાંથી મળે? જેના પક્ષમાં દશ માણસ બોલનાર હોય, તેને કોઇ પૂછનાર નહીં અને બિચારા એકલડોકલ ગરીબને કચડી નાંખવાને પંચ પુરો અખત્યાર વાપરે અને કદાપિ નિસ્વાર્થપણે કંઇ ઠરાવ પંચે કર્યો તો તેનો અમલ નહીં, ઠરાવ તોડનારને શિક્ષા કરવાની પરવા નહીં, પોતાની તથે રૈસો આવ્યો કે સૌ છટકવા માંડે અને કંઇ માંડમાંડ ખદ્દાનાં કાઢે, એ પ્રમાણેનું જ્યાં પંચનું બંધારણ હોય ત્યાં સુધારા ને વધારા બધું થઇ રહ્યું!

પણ અહીં તો "ખાટલે મોટી ખોડ કે મૂળમાં પાયોજ વાંકો" પંચ કોને કહેવું તેનુંજ ઠેકાણું નહીં, પચાસ વૃદ્ધ આગેવાનોએ કરેલા ઠરાવની વિરૂદ્ધ એક ઉતાવળીઓ જુવાન કંઇ આવેશમાં આવીને કંઇ વાંધો ઉઠાવે કે સઘળાએ કરેલા કપેલાનું કાંતેલું પીંજ્યું થાય કપાસ, દળી દળીને કુલડીમાં વાળવા જેવું થાય. પંચ તે કોણ? એકજ ઘરમાં બાપ બોલે તે ખરું કે બેટો બોલે તે ખરું, તેનુંજ જ્યાં ઠેકાણું નહિ. બધાજ પંચના શેઠીઆ, ને બોલે તે પટેલ, પછી ભલે તે હાલા ચપ્પર બેસ બરાબર ફૂટી મારનાર હોય, પણ પંચમાં આગળ બેસીને લાંબા હાથ કરીને બોલવું જોઇએ એટલે તે પણ પટેલ. આવા પંચથી ન્યાતમાં કેટલા સુધારા થઇ શકે તેનો ખ્યાલ વાચકવર્ગ પોતેજ કરી લેશે.

બદલાતો જાય છે, હાજીહાનો સમય હવે રહ્યો નથી ને જે સમયે હરેક કોમ પોતપોતાની ઉન્નતિ કરવામાં દત્તચિત્ત થયેલી છે તે સમયે બીજાનું દેખીને પણ જ્યારે આપણે નહીં ચેતીએ ત્યારે અગમબુદ્ધિ વાણીઆ તમોને કોણ કહેશે? આપણા ઉપર રાજ્ય કરનાર બ્રિટિશ પ્રજા જે અહીંથી ઘણે દૂર ઇંગ્લાંડમાં વસે છે; તે પાર્લામેંટ દ્વારા કેવી રીતે રાજ્ય ચલાવે છે? શું આપણા પંચની માફક પાર્લામેંટમાં ઈંગ્લાંડનો હરેક વાસી બેસે છે કે ફક્ત લાયકોને સ્થાન મળે છે? તેમજ આપણા હિંદુસ્તાનમાંજ વાઇસરૉય ને ગવર્નર સાહેબની કાઉન્સીલોનાં બંધારણનું નિરીક્ષણ કરીએ તોજ માલૂમ પડશે કે તેમાં બેસનાર માણસને મત આપવાનો અખત્યાર અલબત બધાને છે, પણ બેસનાર તો ફક્ત થોડા લાયક નરોજ છે, પણ આ પંચમાં તો લાયક કે નાલાયક-બધાનેજ બોલવાનો હક! પંચમાં બેસવા માટે ગામદીઠ કે ઘરદીઠ પ્રતિનિધિઓની અમૂક સંખ્યા બેસીને પંચના નામે ફેંસલા કરવાનો જ્યાં સવાલ આવ્યો કે કેટલાકને તો એમજ લાગે છે કે પંચમાં બેસવાને તેમને ઇશ્વરથી મળેલો વારસાનો હકજ જતો રહેશે માટે તે તો થવા દેવુંજ નહીં પછી ન્યાતની ઉન્નતિ થવાની હોય તો થાય ને ન થવાની હોય તો ન થાય; ન્યાતની ઉન્નતિ થાય કે ના થાય તેમાં તેમને શું નહાવું નીચોવવું છે. આવા સ્વાર્થીઓ ન્યાતનું કેટલું ભલું કરી શકે તે સમજવું અઘરું નથી.

લગ્નગાળા સમયે જ્યારે મેવાડાની સમગ્ર કોમ સોજીત્રા મુકામે એકઠી થાય છે ત્યારે પંચની બેઠકોમાં જેણે હાજરી આપી હોય, તે લોકો જાણતાજ હશે કે પંચની કાર્યપદ્ધતિ કેવી છે? શા માટે, પંચ એકઠું થવાનું છે? કેટલા સમયને માટે પંચ એકઠું થનાર છે? કોઇ બાબતનો નિર્ણયજ જ્યાં નહીં. ફલાણા ભાઈ નથી આવ્યા તો તેને બોલાવો. અને ફલાણા ભાઇ નથી આવતા તો તેમને તેડવા ચાલો—જાણે કે પંચ ઉપર ઉપકાર કરતા હોય તેમ એકઠા થતા થતા કદાચ અરધીક રાત તો એમજ વીતી જાય અને તેમ કરતાં કરતાં કદાચ કાર્ય પ્રારંભ થયું તો એક કાર્ય પુરૂં થતાં પહેલાં જો બીજો માણસ બોલ્યો કે નહીં ફલાણું કામ કરો તો પહેલાને પડતું મુકી બીજાને પકડયું અને વળી ત્રીજો કોઇ ઉતાવળે બોલ્યો તો બીજા કામને પડતું મુકી ત્રીજું પકડયું—દરમ્યાન કંઇ નનામી અરજી આવી તો વળી સઘળાં કામ પડતાં મુકી તેને વાંચવાનું કામ—ભલે તે પછી છીદ્રારૂપે હોય યા સામાની આબરૂને નુકશાનકર્તા હોય, પણ એ જણ ઉતાવળે બોલ્યા એટલે તે તો વાંચવીજ પડશે. આવી તો કાર્ય કરવાની પદ્ધતિ! ફલાણાનો દંડ કરો ને ફલાણાનો દંડ નથી આવ્યો માટે તેને ઉઘરાવવા માણસ મોકલો, પણ તે દંડ શા કારણથી કરવામાં આવે છે? બિચારાની શી કસુર છે! કોઇ જબરદસ્તની પછવાડે પાંચ બોલનાર હોય તો તેનું તો નામ દેવુંજ નહીં, તેમ આવા દંડોની રકમની શું વ્યવસ્થા થાય છે, તેની કોઇને માહિતી નહીં, કોઇ પુછે તો તેને ધુતકારી કાઢવાની રીત. સેંકડો વર્ષથી મેવાડાની ખરી કમાઇના હજારો રૂપીઆ એકઠા કરી પારકાને ન્યાલ કરવાની જ્યાં આગેવાનોની અભિલાષા, ગાયને દોહીને કૂતરીને પાવાની રીત જ્યાં સુધી અખત્યાર હોય ત્યાં સુધી જ્ઞાતિની ઉન્નતિની આશા રાખવી ફોકટ છે. એક એક વિષય ઉપર કોઇ લમનાં કોલમ ભરાય એટલું લખાય તેમ છે, પણ અહીં ફક્ત સ્થૂળરૂપેજ વર્ણન કર્યું છે. વિસ્તૃતરૂપે લખવાનું કામ હું આગળને માટે મુલતવી રાખું છું.

... લાંબા વખતની વાત તો હું જાણતો નથી, પણ ગત પચ્ચીસ વર્ષથી પંચે કરેલા ઉજાગરા ને ઠરાવના પરિણામનો સરવાળો કરતાં મીડુંજ આવ્યું છે. અગર કંઇ અલ્પાંશેય કાર્ય થાય ત્યારે તો સરવાળામાંજ તે દિવસે એકડો પણ આવે પણ અહીં તો ઉજાગરા સિવાય બીજું કાંઇ નહીં, ત્યાં પરિણામ શેનું ? અને આજ કારણથી ન્યાતના કેટલાક સમજદાર પુરૂષો પંચના આવા કાર્યથી તેમાં ભાગ લેતાં પણ અટકી ગયા છે.

વખતે કોઇ નિષ્પક્ષપાતપણે સાચું બોલે તો પછી બીજા બધા તેનેજ માથે ઢોળી પાડે કે આ ન્યાય અમે તો નથી કર્યો, પણ ફલાણાભાઇએ કર્યો છે. અમે તો કંઇ હા ને ના નથી કહી. હોળીનું નારીએળ પેલા કહેનારને બનાવે એ કારણથી પંચમાં ભલા પુરૂષો ભાગ લેતાં અચકાય છે.

ડાહ્યા પુરૂષો તો શરીરનું એક અંગ બગડ્યું તો તેને ત્યાંથી કાપી નાંખી બાકીના ભાગને બગડતો અટકાવે છે, પણ અહીં તો શરીરનું એક અંગ બગડ્યું તો બીજું અંગ સમજે કે મારેને તેને શો સંબંધ છે ? એવી સમજ અહીંના આગેવાનોની છે. કુવામાં હશે તો હવાડામાં આવશે, અને જે દુઃખ ન્યાતનાઅમુક વર્ગને પડે છે તે દુઃખ કાલે આપણને કેમ નહીં નડે એમ જ્યાં સુધી પંચના આગેવાનો સમજતા નહીં થાય, ત્યાં સુધી તેઓ નાનનું કંઇપણ શ્રેય કરી શકવાના નથી. લેખક આશા રાખે છે કે આ પત્ર દ્વારા કોમના હિતેચ્છુઓ આ વિષયપર પોતપોતાના સ્વતંત્ર વિચાર જાહેર કરશે.

(૨) જ્ઞાતિના પંચનું બંધારણ ઠીક થયા બાદ જ્ઞાતિની સંખ્યા વધે છે કે ઘટે છે, ને ઘટે છે તો શા પ્રમાણમાં ઘટે છે તે જાણવાને માટે જ્ઞાતિનું વસ્તીપત્રક બનાવવું જરૂરનું છે—ને હરસાલ તેમાં ઘટતી વધતી સંખ્યાની તારવણી કાઢવી. યુરોપના મહાન સંગ્રામમાં લડતી પ્રજાઓના દેશની વસ્તીની સંખ્યા ને કયે ઠેકાણે કઇ પ્રજાનું કેટલું લશ્કર લડાઇમાં ઉતર્યું છે, તેની સંખ્યા જાણવી સહેલ છે, પણ અમારી આ કોમની હજાર દોઢ હજારની સંખ્યાનો ઠીક આંકડો જાણવો મુશ્કેલ છે. જ્ઞાતિના સૌ કોઇ માણસો જાણે છે, કે મનુષ્યસંખ્યા દિન પર દિન ઘટતી જાય છે, તો તે શા પ્રમાણે ઘટે છે તે જાણવાની કોઇને દરકારજ નથી. જ્ઞાતના ખર્ચે જે કાર્ય કરવાનું છે તેને અગર એક વ્યકિત જે પોતાનેજ ખર્ચે કામ કરવા તતપર થાય તો તેને પણ મદદગાર પડનારજ સાંસા. ઘણા અફસના ખાં તો આ કામને મદદ કરવાને બદલે માંહે પથ્થરજ ફેંકવા તૈયાર થાય છે. કેટલાક એમ સમજતા જણાય છે કે જે કોઇ પોતાની કુંવારી છોડીયોના નામ જાણી જશે તો વખતે તેનું કોઇ હરણ કરી જશે; તો વળી કેટલાક ને એમ ધારતી રહે છે કે વિધવાઓનાં નામ જાણી જવાથી તેમનાં પુનર્લગ્ન કરી દેનારા કોઇ નીકળી આવશે; તો વળી કેટલાક વિધુર પુરૂષોને પોતાનું નામ વિધુર (રંડેલા) તરીકે લખાવવામાંજ શરમ આવતી જણાય છે. ધન્ય છે તે લોકોની બુદ્ધિને ને ધન્ય છે તેમના આ વિચારોને ! ! સરકાર બહાદુર દશ દશ વર્ષે જ્યારે વસ્તિપત્રક કરે છે ત્યારે તેમના આ વાંધા કયાં જતા રહે છે ? આમ વસ્તીપત્રક કરવા વિરૂદ્ધ પડવાથી શું તેઓ એમ સમજતા હશે કે આ તેમની હાલત ન્યાતમાં તેમના સિવાય બીજું કોઇ જાણતુંજ નથી ! મેવાડાની કોમ કંઇ એટલી વિશાળ નથી કે કોઇની હાલત કોઇથી છુપી હોય, તેમ વળી પરસ્પર તેમાં ભાઇ બાઇઓમાં ને સગાં સંબ-

વામાં એટલો દ્વેષભાવ છે કે તેમની સંખ્યા તો શું પણ તેમની આર્થિક હાલત પણ બીજાથી છુપી રહેતી નથી. પછી ભલે તે એમ સમજતા હોય કે અમારી હાલત અમારા સિવાય બીજું કોઇ જાણતુંજ નથી. આ બધા તેમના વિચારો ફક્ત તેમનું અજ્ઞાન જાહેર કરે છે. આ તેમના વિચારો ફેરવવાને ઇશ્વર સદ્બુદ્ધિ આપે એમ લેખક ઇચ્છે છે,

(૩) **મિથ્યા કુળાભિમાને તો ન્યાતનું જે નખોદ વાળ્યું** છે, તેથી તો હદજ આવી રહી. અમુક વર્ગને તો ત્રણત્રણ ચારચાર વખત કન્યા મળે ને **અમુક વર્ગમાં લાયક વરો હોવા છતાં બિચારા વર્ષોનાં વર્ષો કુંવારાપણામાં ગાળે**-તેમની કોઇ દાદ ફરિયાદ પણ ન સાંભળે, **એથી વિશેષ જુલમ શો હોય ?** જ્ઞાતિની વસ્તી વધારવા માટે કન્યાની સગવડ ગરીબ તથા અમીરવર્ગ બન્નેને માટે એક સરખી હોવી જોઇએ. આ બાબત માટે જે વિચારો ન્યાતના કહેવાતા આગેવાનોના મનમાં છે તે જાણાવતાં ઘણું દુઃખ થાય છે. ન્યાતના અમુક ભાગના ભવિષ્યના **બીજવરો** માટે અમુક કન્યાઓ રીઝર્વ રહેવીજ જોઇએ ને તે વિચારોને લઇને પછી બીજો વર્ગ ભલે જીંદગીસુધી કુંવારાપણું ભોગવે ને તેવાનું દુઃખ જ્યાં સુધી આગેવાનોના હૈડે નથી, ત્યાં સુધી ન્યાતની શુદ્ધિ તે શી રીતે થવાની છે !

કન્યાની અછતથી અને મિથ્યાકુળાભિમાનથી જે દશા ચોરાસી કોમ પૈકી ઘણી કોમોની તેમ સોજીત્રામાં રાયકવાલ કોમની **જે હાલત થઈ ગઈ છે તે હાલત મેવાડા કોમની જતે દિવસે થાય તો તેમાં કંઈ નવાઈ જેવું નથી.** અને આ સ્થીતિ કદાચ બે દશકા રહી ને ન્યાતે તેને માટે યોગ્ય પગલાં ન લીધા તો આજથી એકસો વર્ષે મેવાડા કોમની નેસ્ત નાબુદી થવાની એ ચોક્કસ છે. ભલે પછી જ્ઞાતિવાળા તે સમજે યા ન સમજે ! ને જો **એ દશકા આમને આમ ચાલ્યું** તો પછી સોજીત્રામાં **ધર્મશાળા બનાવવાનું જે મહાભારત કાર્ય** ન્યાત સામે ખડું છે તે કરવાની પણ મહેનત મટી જવાની.

(૪) **જ્ઞાતિમાં વિવાહ ને મરણ પ્રસંગે હજારો રૂપીઆ ખરચાય** છે-આ ખર્ચ ન કરવા એમ મારૂં કહેવું નથી, પણ તે કામની સાથે સાથે કંઇક રકમ વિદ્યાદાન અર્થે ને " ગરીબોના નિભાવ અર્થે જો કઢાતી હોય તો **ટીપે ટીપે સરોવર ભરાય ને " કાંકરે કાંકરે પાળ બંધાય, " " પંચકી** લકડી ને એકકા બોજ " થઇને કોઇ નાની મોટી સંસ્થા ચાલે એટલું ફંડ એકઠું થઇ શકે તેમ છે. **અમદાવાદની પ્રે૦ મો૦ બોર્ડીંગે** જ્ઞાતિના છોકરાઓને ઇંગ્રેજી ભણવાની કેટલી સુગમતા કરી આપી છે તથા તેથી મેવાડા કોમને કેટલો લાભ થયો છે તે સૌ કોઇના જાણવામાં છે, પણ અફસોસ છે કે ન્યાતમાં કેટલાય ઉત્કર્ષ દીઆં થઈ જાય છે તેના પૈસા તેનાં સગાંવહાલાં ખાઇ જાય છે ને કેટલેક ઠેકાણે તો કોર્ટો લડવામાં પણ પૈસા ખરચાય છે, પણ આજ બાર વર્ષથી બોર્ડીંગ સ્થપાઇ છે પણ મેવાડા કોમમાંથી એક પણ હરિનો લાલ મળ્યો નહીં કે જેણે પોતે નિર્વંશ હોવા છતાં ને પોતે જાણવા છતાંય કે મારો પૈસો પાછવાડે બધા ખાઇ જશે, તોપણ તેણે પોતાની મિલ્કત ગરીબ વિદ્યાર્થીઓ માટે બોર્ડીંગને અર્પણ કરી હોય. આ કામ માટે **પારસી** કોમ કેટલી આગળ વધેલી છે ને તેમ કરવાથી તે કોમ કેવી સ્થીતિએ પહોંચી છે તે જાણવુંજ બસ છે; માટે **હરેક ભલા ભૂંડા પ્રસંગે** વધુ નહીં ને થોડી કંઇને કંઇ રકમ એકની એકના વિદ્યાની સંસ્થા માટે મદદરૂપે કઢાવવા ન્યાતના પંચે જરૂર ઠરાવ કરવો જોઇએ

એ. પારસી કોમમાં ઘણા જણાઓએ હજારોને લાખોનાં દાન વિદ્યાર્થે કરેલાં છે તો શું મેવાડા કોમમાંથી એકપણ વીર નહીં નીકળે કે જે પોતાના તરફથી વિદ્યાર્થીઓને માટે એક મહિનાનું હરસાલ ભોજન અપાય એટલી રકમની જોગવાઇ કરી શકે. પચાસ છોકરાને એક મહિનાનું ભોજન આપવું એટલે કે પંદરસો માણસને એક દિવસ જમાડવાનું ખર્ચ થાય તેટલી રકમ જમા કરાવવી એ કંઈ મેવાડા કોમ માટે બારે વાત નથી. પણ અહીં તો સ્વાર્થ એજ છે કે મારો છોકરો કંઈ ઓછો બોર્ડિંગમાં ભણવા જવાનો છે; માટે મારે તો તેને મદદ કરવાની શી જરૂર છે ? આવા વિચારો જ્યાં જડમૂળ ઘાલીને બેઠા હોય ને વિદ્યાદાન કોને કહેવું–વાત્સલ્યભાવ કોને કહેવો–ગરીબોને મદદ કરવાથી શું પુન્યનો બંધ થાય છે-આહારદાન દેવા પાત્રને દેવાથી સુફળ મળે છે, આ વિષયો શાસ્ત્રમાં રોજ સાંભળવા છતાંય કાર્યમાં મૂકતી વખતે જ્યાં આંખ આડા કાન કરવાની ટેવ હોય ત્યાં સુધી વિદ્યાની વૃદ્ધિ યા ન્યાતની ઉન્નતિ થવાની નથી.

આ ઉપરાંત હજુ ઘણા વિષયો છે કે જે ઉપર હું મારા વિચારો જાહેર કરવાનું આગળ પર મુલતવી રાખું છું. છેવટમાં મેવાડા કોમના ને અન્ય કોમના સઘળા બંધુઓ પ્રત્યે મારી એજ વિનંતી છે કે જે ન્યાતમાં જે જે ખામીઓ હોય તે આ લેખથી તેઓને કંઇ ધડો લેવાનો મળે ને તે પ્રમાણે થોડે ઘણે અંશે કોઇ તેનો લાભ લે, તોજ આ લેખ લખવાની સફળતા થઇ જાણીશ; નહીં તો પછી જેમ બાપુ દાદીચંદ લખે છે કે–

હજી દાદીચંદ હજુ, જાગ્યાનું ઘણું પણ,
રોનાર જોનાર વિણ, કોને તે દેખાડીએ.

સ્થાન. વેકેંટ સમીપ
તા. ૨૮-૧-૧૬ D. S.

सायन्स विद्या.

(લેખક–શા. નાનચંદ પુંજાભાઇ બી. એ. વડોદરા.)

(૩)

ગયા અંકમાં આપણે હવાના દબાણ વિષે વાંચ્યું છે, પણ નાયટ્રોજન અને કાર્બન નામનાં તત્વો આપણા ખોરાકમાં ખાસ કરી લેવાની જરૂર છે, તેથી ખોરાક સંબંધી થોડુંક વિવેચન કરીશું તો અસ્થાને ગણાશે નહિ, કારણકે એ પણ એક અગત્યની બાબત છે. માણસનું શરીર તંદુરસ્ત હાલતમાં રાખવાને ખોરાકના પદાર્થોમાં જે પાંચ તત્વો જોઇતાં પ્રમાણમાં લેવાં જોઇએ તે આ પ્રમાણે છેઃ–(૧) નાયટ્રોજન (૨) કાર્બન (૩) ચરબી (૪) ક્ષાર (૫) પાણી. આ પાંચે તત્વ દરેક ખોરાકમાં હાજર હોય છે, પણ પુરતા જથ્થામાં દરરોજ લેવાનાં જોઇએ. પહેલા ત્રણ આપણને બળ અને ગરમી આપે છે.

માણસનો ખોરાક તેની ઉમર, જાતિ (નર, નારી), ધંધો, ટેવ અને હવા ઉપર આધાર રાખે છે. બચ્ચાંને સહેલાઇથી પચી શકે તેવો પુષ્ટિકારક ખોરાક મળવો જોઇએ. પુખ્ત ઉમ્મરની સ્ત્રીઓને પુરૂષ કરતાં ઓછો ખોરાક જોઇએ છે. બેઠાબેઠ ધંધો કરનારને બહાર મજુરી કરનાર કરતાં ઓછો ખોરાક જોઇએ છે. સખત કામ કરનારને બળવર્ધક ખોરાકની જરૂર છે; જેમકે સ્ટાર્ચ (જેમાં ખેળ જેવો ભાગ હોય જેમકે આટો, ચોખા વગેરે) અને ચરબી (જેમકે ઘી તેલ) વાળો ખોરાક જરૂરનો છે. માનસિક કામ કરનારને નાયટ્રોજનનો જેમાં ભાગ વધારે હોય તેની જરૂર છે. શિયાળામાં જેમાં કાર્બન વધારે હોય તેવા ખોરાકની જરૂર છે. ઉન્હાળામાં સ્ટાર્ચ અને ચરબીવાળા પદાર્થ ઘણા ઓછા પ્રમાણમાં લેવા જોઇએ, પણ તાજાં શાક ભાજી ફળ વધારે લેવાં જોઇએ. ઉનાળુ જેવા ઠંડા

પ્રદેશમાં લોકોને ચરબી–તેલવાળા પદાર્થ લેવા પડે છે. હિંદુસ્તાન જેવા સમશીતોષ્ણ કટીબંધમાં આવેલા દેશ માટે પ્રાણીજન્ય કરતાં વનસ્પતિ ખોરાકની બહુ જરૂર છે.

સાધારણ રોજ મેહેનત કરનારના દેહમાંથી ૩૭૫૦ થી ૪૨૦૦ ગ્રેન (એક ગ્રેન એક ઘઉં જેટલો વજનમાં છે.) કાર્બન નીકળે છે. તેજ દરમ્યાન પેશાબદ્વારે ૨૨૫ થી ૨૭૦ ગ્રેન નાયટ્રોજન નીકળે છે. જેમ મેહેનત વધારે તેમ કાર્બનનો ભાગ વધારે નીકળે છે, માટે **સામાન્ય રીતે માણસે રોજના ખોરાકના** પદાર્થોમાંથી ૩૦૦ ગ્રેન નાયટ્રોજન અને ૫૭૦૦ ગ્રેન કાર્બન લેવાની જરૂર છે.

આપણા રોજના પદાર્થોમાં સેંકડે નીચે પ્રમાણે ભાગ છે.—

	પાણીનો ભાગ.	નાયટ્રોજન મિશ્રીત પદાર્થ	ચરબી.	કાર્બન મિશ્રીત પદાર્થ	ક્ષાર.	એકદરે એક શેરે ગ્રેન.	
						નાયટ્રોજન.	કાર્બન.
તાજું દુધ ...	૮૭	૪	૩.૫	૫	.૫	૪૫	૬૦૦
મલાઇ (ચીઝ) ...	૩૭	૩૭	૨૪	...	૫.૫	૩૦૦	૩૩૦૦
માખણ ...	૬	.૩	૯૧	...	૨.૫	...	૬૫૦૦
ચોખ્ખું ઘી ...	...	...	લગભગ ૧૦૦	...	...	...	૭૦૦૦ આશરે
ઘઉંની રોટલી ...	૪૦	૮	૧.૫	૫૦	૧.૫	૯૦	૨૦૦૦
બાજરી ...	૧૧.૮	૧૦.૧૩	૪.૮૬	૭૧.૭૫	૧.૭	પ્રમાણ	કાઢ્યું નથી.
દાળ ...	૧૧.૮૪	૨૫.૧૫	૧.૨૬	૫૯.૮૫	૧.૯૨	પ્રમાણ	કાઢ્યું નથી.
ચોખા ...	૧૦	૫	.૮	૮૩	.૫	૭૦	૨૭૦૦
ખાંડ ...	૩	...	...	૯૬	.૫	...	૩૧૦૦
ચણા ...	૧૧.૩૯	૨૦.૭૦	૩.૮૬	૬૨.૧૮	૨	પ્રમાણ	કાઢ્યું નથી.
વટાણા ...	૧૫	૨૨	૨	૫૫	૨.૫	૨૫૦	૨૭૦૦
તાજું શાકભાજી ...	૯૦	.૨	.૫	૬	.૭	૧૪	૪૨૦

આ કોઠામાં દરેક વસ્તુનું પ્રમાણ સેંકડે આપ્યું છે. તેની સમજ એવી છે કે જો આપણે સો રૂપીઆભાર દુધ લઇએ તો તેમાંથી ૮૭ તોલા પાણી મળે, ૪ તોલા નાયટ્રોજન મિશ્રિત પદાર્થ મળે, ૩॥ રૂપીઆભાર ચરબી મળે, ૫ તોલા કાર્બન મિશ્રિત પદાર્થ મળે, એમ દરેકનું સમજવું.

જો આપણે ૧૦૦ શેર ચોખા લઇએ તો ૧૦ શેર પાણી, ૫ શેર નાયટ્રોજનવાળો પદાર્થ ૮/૧૦ એટલે ૧૩ અધોળ ચરબી, ૮૩ શેર કાર્બનવાળો પદાર્થ અને ॥ શેર ક્ષાર મળે. બીજું જોડે જે કોઠો છે તેમાં એમ બનાવ્યું છે કે એક શેર ચોખામાંથી એકંદર શુદ્ધ નાયટ્રોજન ૭૦ ગ્રેન અને ૨૭૦૦ ગ્રેન કાર્બન મળી શકે છે.

સામાન્ય રીતે માણસે ૪॥ અધોળ દાળ ચણા વીગેરેના રૂપમાં નાયટ્રોજનવાળો પદાર્થ, ૩ અધોળ ઘી તેલના રૂપમાં ચરબી, ૧૫ અધોળ રોટલી, રોટલો, ચોખાના રૂપમાં સ્ટાર્ચ (ખેળવાળા પદાર્થ) લેવાની જરૂર છે, એમ ગણતાં એકંદર ૩૦૦ ગ્રેન નાયટ્રોજન અને ૫૦૦૦ ગ્રેન કાર્બન શરીરમાં રોજ પેદા થવો જોઇએ, કારણકે આટલું વજન શરીરમાંથી રોજ નીકળી જાય છે.

આપણા રોજના ખોરાકનો મેળ કાઢીએ તો નીચે પ્રમાણે થાય છે.-

શેર		ગ્રેન નાયટ્રોજન	ગ્રેન કાર્બન
૦ા ચોખા	૧ાા		૬૭૫
૦)- ઘી	—		૪૩૭૪
૦ાા બાજરીનો લોટ	૫૫		" ૪૦૦ "
૦)ન તુવેરની દાળ	૩૪		આશરે ૩૫૦
૦ા શેર શાકભાજી	૩ાા		" ૧૦૫ "

એકંદરે નાયટ્રોજન ૧૧૦ ગ્રેન મળે અને કાર્બન ૧૯૬૦ ગ્રેન મળે જ્યારે દરેક માણસને ૩૦૦ અને ૫૦૦૦ ગ્રેન જોઇએ.

આ ખોટ નહિં પૂરાવાથી આપણા **બાંધા નબળા પડતા જાય એમાં શી નવાઇ !** વળી કેટલાક ડાહ્યા કહેશે કે અન્ન પવિત્ર કરવા જેટલું ઘી લીધું એટલે બસ. કેટલાક કહેશે કે દુધ ખાવું તે શ્રીમંતનું કામ. ચાકમાં તો ખાવું શું છે ! એકલા ઘઉંમાં ચરબીનો ભાગ બહુ ઓછો છે માટે તેને ઘી ચોપડવાની જરૂર છે. **રસોઇની અંદર મસાલા સ્વાદ ખાતર નાંખવાના નથી, પણ તેનાથી શરીરમાં જાતજાતના રસ ઉત્પન્ન થાય છે.** ખારો ગળ્યો રસ સાંભળતાં મોંમાં પાણી છૂટે છે, તેમ પેટમાં જાય તો બીજા રસને ઉત્પન્ન કરે છે, માટે જુદી જુદી રસોઇ જમવાની જરૂર છે, પણ અતિશય તીખા ખારા મસાલા નુકશાન કરે છે

आपणी कोममां सोलीसीटरो केम बनाववा?

આપણી દિગંબર જૈન કોમમાં પ્રાથમિક કેળવણી લેવા માટે અમદાવાદ રતલામ વગેરે સ્થળોની **બોર્ડિંગની** મદદ મળે છે અને કોલેજની કેળવણી માટે મુંબાઇ બોર્ડિંગની ગોઠવણ છે, જ્યાં ફંડના ઉત્પન્ન પ્રમાણે લાયક વિદ્યાર્થીઓને લાયક **સ્કોલરશીપ** મળે છે. જોકે હાલ અપાતી સ્કોલરશીપ પુરતી નથી એમ બૂમ વારંવાર સાંભળવામાં આવે છે છતાં બોર્ડિંગના કાર્યકારો ફંડની આવક ઉપરજ આધાર રાખે, એ વાસ્તવિક છે. આ મદદ વધારે બોહોળા પાયા ઉપર આપવામાં કોમના **શ્રીમંત વર્ગ** ઉપર નજર પડે છે, જેઓએ કોમના ભલા માટે વિદ્યાદાન કરવા સખી હાથ લંબાવવાની જરૂર છે, જેથી કરીને ગરિબ અને સાધારણ સ્થીતિના ભણે એવા બાહોશ વિદ્યાર્થીઓને ગ્રેજ્યુએટ થવાને બની શકે.

શ્રીમંતોએ ચાલતા જમાનામાં બનારસની **હીંદુ યુનીવરસીટીનો** દાખલો લેવા જેવો છે કે જ્યાં દરેક કોમના હીંદુ રજવાડા કે ગૃહસ્થની મદદથી હાલમાં લગભગ એક કરોડ રૂપીઆનું ફંડ થયું છે અને જેનો પાયો ચાલુ માસમાં ભારે ધામધુમથી લોકપ્રીય નામદાર વાઇસરોય લોર્ડ હાર્ડિંજના મુબારક હસ્તે નંખાવો છે જેના તરફ આપણે પુરી ફતેહ ઇચ્છીએ છીએ.

ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણેની મદદ મેળવી તૈયાર થવા આવેલા હાલમાં બે **વિદ્યાર્થી એલ. એલ. બી.** ની છેલ્લી પરીક્ષામાં આપણા ગુજરાત ભાગમાંથી બેસવાના છે. તે બન્ને વિદ્યાર્થીઓ અત્રેથી મુંબાઇની બોર્ડિંગ

માં રહી ઘણા વરસથી ભણે છે; ભલે વિદ્યાર્થીઓ બાહોશ-ઉંચા પ્રકારનું જ્ઞાન ધરાવનારા તથા ચંચળ બુદ્ધિના દેખાય છે. વળી એવી સારી લાયકાતવાળા વિદ્યાર્થીઓ નેમની નીચેના વર્ગોમાં પણ માલુમ પડે છે તેઓ અનુક્રમે દરવરસે બહાર પડશે.

આવા વિદ્યાર્થીઓ જો તેમના ઘરની સ્થીતિ સારી નહીં હોય અને ભણવાની ઇચ્છા હોવાછતાં પણ નોકરી કે બાપદાદાના એવા કોઇ ધંધામાં લાગુ થઇ જશે, જેનાં પરીણામે ઉચ્ચ શ્રેણીની ડીગ્રીઓ લેનારા ઘણાજ થોડા નીકળશે અને **કોમમાં ઉંચા દરજ્જાના અમલદારો-વકીલો-સોલીસીટરો-બેરિસ્ટરો વીગેરે ઉત્પન્ન થઇ શકશે નહીં**

ત્યારે એ સવાલ ઉત્પન્ન થાય છે કે તેવા મોટાં દરજ્જાના અમલદારો-વકીલો-સોલીસીટરો-બેરિસ્ટરો કેમ ઉત્પન્ન કરવા?

આપ જાણો છો કે ઉંચા દરજ્જાનું **જ્ઞાન મેળવવા માટે ખરચનો સવાલ** ઉત્પન્ન થાય છે, તેને પુરી વળવા માટે કોઈ એક શ્રીમંત મળી આવે અને સ્કોલરશીપો સ્થાપે તો ઠીક પડે, પરંતુ તેવા સખી શ્રીમંતો પોતાની સદ્‌કમાણીનો સદ્‌ઉપયોગ કરવા બાહાર પડે ત્યાં સુધી નીચેની એક વ્યવહારૂ યોજના તરફ ધ્યાન આપવા જેવું છે.

ગુજરાતના દરેક વિભાગના **શ્રીમંત** દિગંબર જૈન ગ્રહસ્થ પાસેથી રૂ૦ ૧૦૦) સો અથવા એથી નાની મોટી રકમ ભરી શકે તેવા લગભગ ૧૦૦ સદ્‌ગૃહસ્થો પાસે અરજ કરી રકમ ભરાવવી અને તે રીતે ઓછામાં ઓછી રૂ૦ ૧૦૦૦૦) દસ હજારની રકમ એકઠી કરવી. આ ફંડની રકમ વાપરવી અને તે વધે ત્યાં સુધી જે સગવડ બને તે આપવી. તેની વ્યવસ્થા માટે એક **કમીટી** નીમવી ને રકમ લેનાર વિદ્યાર્થીને તેના ઉપયોગમાં આવે તેટલી રકમ આપવી અને તેનો **વીમો** ઉતરાવવો જે કમીટીના સ્વાધીન રહે.

આ હેતુ ધ્યાનમાં રાખી કોઇ પણ જાતની સ્કીમ તૈયાર થાય તો આપણી કોમમાં કેળવણી આગળ વધે. આવી સ્કીમો ઘણી જગ્યાએ ચાલે છે અને પુનાની **ફરગ્યુશન કોલેજના પ્રોફેસર મી. પ્રાંજપે એવીજ સ્કીમથી તૈયાર થયેલા રત્ન છે.**

આ વિચારને ટેકો આપવા માટે કોઇ વિચારશીળ સદ્‌ગ્રહસ્થો બાહાર પડશે તો ઉપકાર થશે.

જાણ માટે જણાવું છું કે સોલીસીટરનો અભ્યાસ કરવા ઇચ્છનાર ઉમેદવારે રૂ. ૩૨૫૦) નો ખરચ શરૂઆતની ફી તરીકે કરવો પડે છે.

ઉપરોક્ત બંને વિદ્યાર્થીઓ સોલીસીટર થવાલાયક છે, જે માટે હાલ પાંચ છ હજાર રૂપીઆની જરૂર છે.

હાલ તો અત્રેજ વિરામવું ઠીક છે. આ વિષય ઉપર નવા વિચારો સાંભળવા આતુર.

L. P.



(१)

हे सज्जन हे भाई मेरे,
एक विनय मैं करता हूं ।
पर अज्ञ जानि अपनेको,
हृदयांतर से डरता हूं ॥

(२)

यदि मेरी इस तुच्छ विनयपर,
कृपा आप दिखलावेंगे ।
अरु लघु सेवक जानि आपनो,
हिरदे से अपनावेंगे ॥

(३)

तो मैं अतिहि कृतारथ होकर,
सेवा नित बजाऊंगा ।
अरु अपने पराभर में कब हूं,
काममें मुंह न छिपाऊंगा ॥

(४)

है यह विनय हमारी प्यारे,
जाति रसातल जाती है ।
पर तुम करवट तक नहिं लेते,
और शर्म नहीं आती है ॥

(५)

इस से क्या सोचा है तुमने,
समझो आप भलाई है ।
तनिक सोचकर देखो प्यारे,
नहीं अन्त सुखदाई है ॥

(६)

अन्य जातियां हो गई आगे,
अरु पूरी दौड़ाई है ।
गुरुकुल ऋषिकुल आदि खोलकर,
उन्नति शक्ति दिखाई है ॥

(७)

कोई कालेज बना जाति के,
निर्धन छात्र पढ़ाती है ।
पर अपनी जाति संतानें,
मूर्ख बने अठिलाती है ॥

(८)

इसका अंतिम फल यह होगा,
सुता पुत्र दुख पावेंगे ।
रोते रोते नाहिं चुकेगा,
अतिशय दुःख उठावेंगे ॥

(९)

इस प्रायश्चित कारण भाई,
आप नर्कमें जावेंगे ।
अरु अपने कर्तव्य विमुख हो,
अन्तमें अति पछितावेंगे ॥

(१०)

इस से अभी सचेत होइए,
होनी थी सो होय चुकी ।
और पराक्रम सारा अपना,
यह जाति अब खोय चुकी ॥

(११)

हिलमिल करके साहस बांधो,
विद्याका परचार करो ।
पुत्रपुत्रियां सभी पढ़ाओ,
अरु सबके तुम दुःख हरो ॥

(१२)

चन्दे से अखबार मंगाकर,
सब कोई उनको अपनाओ ।
अरु हितशिक्षा हृदय धारकर,
सब से उनको पढ़ाओ ॥

(१३)

ब्रह्मचर्यके पालन खातिर,
खूब अखाड़े बनवाओ।
अरू नित एकत्रित हो करके,
मल्ल युद्धमें डट जाओ॥

(१४)

सबको अपना प्रेम दिखाकर,
सबके दुःख तुम दूर करो।
और निराश्रय जिनको पाओ,
उनके दुःख अरू शूल हरो॥

(१५)

ऐसा करने से ही मित्रों,
मुलकी वृद्धी होवेगी।
और मनोरथ जो कुछ होंगे,
उनकी सिद्धी होवेगी॥

(१६)

यदि थोड़े से इन वचनों पर,
नहीं आप चित देवेंगे।
तो निश्चय यह जान लीजिये,
सर्वस अपना खोवेंगे॥

(१७)

अब देखें कि कौन सूरमा,
इस पर प्रणको करता है।
अरू जाति शुभ चिन्तन कारण,
जाय समरमें डटता है॥

प्रेमी हजारीलाल जैन–आगरा।

जैन जातिकी उन्नतिके उपाय।

(लेखकः–मंगलप्रसाद जैन गोलापुरव–पाटन।)

महाशयो! पहिले मैं यह बतलाना चाहता हूं कि हम क्या थे और अब क्या हो गये? चारों ओर जो दृष्टि पसार देखा जाता है तो मालूम होता है कि हमारी जैन जाती घोर अविद्या और अविवेकता रूपी अंधकारमें सोई पड़ी है और अपनी वास्तविक उन्नतिसे कोसों पीछे हटी हुई है। दिन प्रतिदिन अविनत दशाको प्राप्त होती जाती है और अपने जैनीपनेको भी बट्टा लगा रही है। जब कभी इस जातिकी पहिली उन्नतिदशाका चिंतवन किया जाता है तो नेत्रोंके सन्मुख बिजलीसी चमक जाती है, जी भर २ आता है और वर्तमान दुर्दशाको देखकर अश्रुपातकी धारा पड़ने लगती है। जिस जातिमें बड़े २ ऋद्धिधारक मुनिश्वर तथा श्रीअकलंकदेवादि सरीखे वादविजयी नैय्यादिक शिरोमणि महोपदेशक महर्षि विद्यमान थे। हाय! आज उस जातिमें एक साधारण यति भी दिखाई नहीं देते। जिस जातिमें अवधिज्ञानादिकके धारक तथा अष्टांग निमित्तके पारगामी श्रीभद्रबाहु आदिक बड़े २ पुरुषरत्न विद्यमान थे। शोक! आज उस जातिमें एक भविष्यवादी (ज्योतिषी) का भी अभाव दिख पड़ता है।

जो जाति बड़े २ विद्वानों, शूरवीरों, धर्मात्माओं, विद्याधरोंसे भरपूर थी। खेद! आज वह जाति प्रायः उन सबसे शून्य प्रतीत होती है। जिनके पूर्वज बड़े २ पुष्पक विमानों द्वारा आकाशमार्गको अवगाहते थे। शर्म है कि आज उनकी संतानमें एक भी जैनी उक्त विमानविद्याका जानकार तो क्या मामूली बैलगाड़ीविद्याका जानकार और उसमें बैठकर चलनेवाला भी नहीं है।

जिस जातिकी स्त्रीसमाजमें रेवती जैसी श्रद्धावती तथा सीता, द्रौपदी, मनोरमा, अंजना, मैनासुन्दरी आदि जैसी सुशीला, पतिव्रता, धर्मपरायण, विदुषी और पंडिता स्त्रियें होगई हैं। धिक्कार! आज उस जातिमें प्रायः निरी मूर्खा, अक्षर, ज्ञानरहित, दुराचारमें प्रवीण, कलह करनेवाली, मिथ्यात्व सेवनेवाली और केवल वस्त्राभूषणकी लालसा करनेवाली स्त्रियें पाई जाती हैं।

जिन जैनियोंकी वात्सल्यता और दयालुता पशु पक्षी तथा कीड़ी मकोड़ी और एकेन्द्रियादिक जीवों तक जाहिर थी। आज उन जैनियोंसे वात्सल्यता बिलकुल काफूर होकर उड़ गई है और परस्पर वैर विरोधाग्नि ऐसी भभक उठी है कि भाई २ आपसमें लड़े मरते हैं। एक दूसरेके वैभवको देख नहीं सकता और अपने तन, धन और धर्म तीनोंका उस अग्निमें स्वाहा कर रहे हैं। जो जाति अपनी सत्यताके कारण विख्यात थी और जिस जातिके प्रायः समस्त मामले पंचायत द्वारा तय होते थे, कोई ही विकट मामला राजद्वार तक जाता था, आज वह जाति ऐसी निर्बल और कमजोर हो गई है अथवा यह कहिये कि उसमें इतनी कषाय प्रबल हो गई है कि बात २ पर जैनी अदालतोंकी शरण लेते हैं और अपना प्राणोंसे प्यारा हजारों रुपया बरबाद करके कोरे बाबाजी बन जाते हैं। जिनके उदार धर्मप्रेमी पूर्वज (पुरखा) लक्षों रुपया धर्मकार्योंके लिये अर्पण कर गये हैं और बड़े २ विशाल मंदिर आदिक बनवा गये हैं आज उनकी संतानमें ऐसा अंधेर मच रहा है कि देवद्रव्यका कुछ भी ख्याल नहीं रहा। बहुतसे मंदिर गिराऊ खड़े हैं जिनकी छतोंसे पानी टपकता है, दीवारें फट गई हैं परंतु उनका कोई जीर्णोद्धार नहीं कराता और धर्मकी लगन इतनी कमजोर हो गई है कि बहुतसे मंदिरोंमें नित्य पूजन भी नहीं होता, जिन भगवानकी प्रतिमाओंका न्हवन और पूजन इन्द्रादिक देव और चक्रवर्तादिक राजा स्वयं अपने हाथसे करते और अपनेको धन्य समझते थे। अफसोस! आज हम जैनियोंमें ऐसे प्रमादी, आलसी और भक्तिरहित भी होने लगे हैं जो नोकरोंसे भगवानकी पूजनादिक कराते हैं। जिनके धर्मात्मा पूर्वज कन्याओंके घरका पानी भी नहीं पीते थे। हा! आज उनकी संतानमें

ऐसे दुराचारी पापात्मा भी होने लगे हैं जो कन्याओंका मांस चामादिक भी बेंच खाते हैं। बहुतसे यहां तक कर बैठते हैं कि रुपयोंके लोभसे बेचारी दस वर्षकी कन्याको साठ वर्षके बुड्ढेके गले बांध देते हैं या यूं कहिये कि विचारी निरपराधनी कन्याओंको जन्मभरके लिये अंधकूपमें धक्का दे देते हैं।

जिस जातिमें वर और कन्याके गुणोंकी परीक्षापूर्वक विवाह हुआ करता था आज उस जातिमें न कुछ वरकी पूछ है और न कन्याकी, केवल धनकी पूछ रह गई है, चाहे वर निरक्षर भट्टाचार्य क्यों न हों, चाहे नपुंसक क्यों न हो और चाहे सप्त ही व्यसनोंका धारी हो इसकी कोई पूछ नहीं करता, परंतु द्रव्यवान होना चाहिये। और बालविवाहकी प्रथा ऐसी प्रचलित हो रही है जिससे यह जाति दिन प्रतिदिन उद्यम, साहस, बल, वीर्य तथा विद्या आदिक सद्गुणोंसे हीन होती चली जाती है। जिस जातिके बुजुर्ग अपने उत्पन्न किये हुए द्रव्यको बहुत योग्य रीतिसे व्यय करते थे, कदापि कुमार्गमें एक पैसा भी नहीं लगाते थे और धार्मिक रीतिसे इस बातका ख्याल रखते थे कि हिंसक जीवोंको रुपया न दिया जावे। अफसोस! आज उस जातिका बहुतसा द्रव्य तो प्रायः रंडी भंडुओंके नाच तमाशोंमें खर्च होता है या संड मसंडोंको भूरवाहा वखेर आदिके तौरपर लुटाया जाता है या आतिसवाजी जैसे हिंसक कार्यमें फूंक दिया जाता है अथवा नुमायशी चीजोंकी खरीददारीमें बरबाद किया जाता है। परंतु विद्यावृद्धि आदिके धर्मकार्योंके लिये मुट्ठी बंद रहती है उनके लिये साफ इन्कार होता है।

जिस जैन जातिके जैन धर्मके धारक पापसे भयभीत होकर सदैव खोटी संगतिसे बचते थे और पापात्मा व्यसनी पुरुषोंके पास तक नहीं जाते थे, आज उस जातिके तथा धर्मके अनुयायी पापोंसे ऐसे निडर हो रहे हैं कि पापोपदेशके लिये सभाएं स्थापित करते हैं और व्यभिचारादि व्यसनोंका उपदेश दिलाते हैं अर्थात् रंडीका नाच कराते हैं जिसके द्वारा बड़े२ कुलीन जैन बालक धर्म और कर्मसे पराङ्मुख होकर वेश्यासक्त होते जाते हैं और जो द्रव्य उन वेश्याओंको दिया जाता है वह हजारों गौ और बकरोंकी कुरबानी आदिमें लगता है जिसका अपराध दातारके सिर होता है।

जिस जातिमें मदीरा और मधुके त्याग बिना कोई भी जैनी नहीं कहला सकता था। धिकार! आज उस जातिमें मधुभक्षणकी तो क्या बात है ऐसे दुष्ट और पापात्मा भी होने लगे हैं जो कि सुन-

नेमें आता है कि शराबकी बोतलें गटगटाते और जैनी बनकर मूछोंपर ताव देते हैं।

जिस जैन जातिमें धर्मोन्नतिके लिये प्राणोंतकका त्याग करनेवाले श्री निकलंक जैसे परोपकारी श्रावक हो गये हैं, आज उस समाजमें धर्मोन्नतिके लिये प्राण तो क्या धन देनेवाले भी दुर्लभ हो रहे हैं।

हाय ! जिस जातिमें सुकुमालजीके पिता सरीखे हजारों निष्प्रेही ग्रहस्थी होते थे और अवसर पाते ही चटसे दीक्षा धारण करलेते थे, आज उस जातिमें ग्रहस्थी परिग्रहमें इतने लिप्त और तृष्णाके वशीभूत हो रहे हैं कि बूढ़े होजाने पर भी नवीन विवाहकी आशा रखते हैं, और अपने आत्मकल्याणकी ओर बिलकुल नहीं झुकते, न व्रत संयम पालते हैं, न तप सामायिक करते हैं, न दान देते हैं, न शास्त्र सुनने, न स्वाध्याय करते, न अपनी संतानको पढ़ाते और न आत्महितमें हानि पहुंचानेवाली प्रचलित कुरीतियोंको दूर करनेका यत्न करते हैं।

हाय हाय ! जो जाति लौकिक और धार्मिक उन्नतिमें अग्रगण्य और सर्वमान्य थी जिस जैनधर्मका झंडा लोकके शिखरपर फहराता था और जिसका डंका चहुं ओर बजता था, बड़ेर चक्रवर्ती राजा जिस धर्मके अनुयायी होते थे, आज उसकी यह वचनातीत दुर्दशा और हीनता ! धिक्कार ! जैनियोंके प्रमाद आलस्य और जैनी कहलानेको। कौन ऐसा वज्रहृदय सच्चा परोपकारी और जातिहितैषी हो सकता है जिसका जाति वा धर्मकी इस हालतको देखकर तथा सुनकर हृदय कम्पायमान न हो जावे, जिसके शरीरपर रोंगटे खड़े न हो जावें और आंखोंमें आंसू न भर आवे ?

अफसोस ! हम क्या थे और क्या हो गये ! समयके हेरफेरने हमको कैसा दीन और हीन बना दिया है ! प्यारे परोपकारियों और इस जाति और धर्मकी गिरी हुई हालतपर आंसू बहानेवालों ! रोने और पश्चाताप करने और केवल मनोरथी घोड़े दौड़ानेसे कुछ भी प्रयोजनकी सिद्धि नहीं हो सकती। यदि आपमें कुछ भी कौमी जोश और धर्माभिमानता बाकी है, यदि आप अपने जैनकुलमें जन्म लेनेको सफल करना चाहते हैं, यदि आपके हृदयमें धर्मकी कुछ चोट है और यदि आप उक्त राजाओं तथा अकलंकदेव सरीखे महर्षियोंकी संतान और परम्परामें होनेका दावा रखते हो तो आलस्य और प्रमादको छोड़ दो, उद्यम और साहसकी कमर बांधकर जाति और धर्मकी सेवामें दत्तचित्त होजाओ और इस बातपर विचार करो और खोज करो कि पूर्वकालमें उन्नतिका क्या कारण था और हमको उसके लिये क्या कर्तव्य है।

यदि आप जात्युन्नतिके उपायोंपर पूरी तौरसे विचार करेंगे तो आपको मालूम हो जावेगा कि वर्तमानमें अविद्यारूपी घोर अंधकारमें सोते हुए जैनियोंको जगाने, उनमें विद्या सीखने, स्वाध्याय करने तथा धार्मिक कार्योंमें लगने और सहायता देनेकी रुचि पैदा करने, परस्परका वैर विरोध मेटने, एकता फैलाने, कन्याविक्रियादि दुराचार तथा मिथ्यात्व और अन्यायोंको हटाने, समस्त कुरीतियोंको दूर भगाने आदिके लिये सभा पाठशालादिक खोलने और सुगम रीतिसे जैनी भाईयोंको कर्तव्य बतानेके लिये सबसे उत्तम और शीघ्र सफलता प्राप्त करनेवाला यदि कोई उपाय हो सकता है तो यही है कि जातिमें सदुपदेशका प्रचार किया जावे। पूर्व कालमें भी उन्नतिका प्रधान कारण सदुपदेश ही था। उस समय बड़े २ ऋषि, मुनि और त्यागी विद्यमान थे, जो अपनी निर्निमत्त बंधुतासे जगह २ विचरकर सोते हुए भाईयोंको जगाते थे और उनको हितका उपदेश देते थे, जिनके उपदेशसे अज्ञानता और कषाय भाव नष्ट होकर विवेककी प्राप्ति होती थी, परंतु खेद! आज हम लोगोंके अभाग्यसे उन महानुभावोंका लोप हो गया है अतएव हमारे लिये अब यही शरण है और यही कर्तव्य है कि उन महानुभावोंका अनुकरण ग्रहण करें यद्यपि हम उन महानुभावोंके सदृश होनेमें असमर्थ हैं तथापि इसमें कुछ संदेह नहीं कि जितने २ अंशोंमें हम उनका अनुकरण ग्रहण करेंगे उतनी ही हमारी उन्नति होती जावेगी।

अब मैं अपने लेखको सज्जन महानुभाव महाशयोंसे लेखके अवगुणोंकी क्षमा मांगता हुआ समाप्त करता हूं कारणकि मैं ऐसा बुद्धिमान व्यक्ति नहीं हूं कि आप लोगोंके समक्षमें कुछ लिख सकूं और न आजतक कोई लेख लिखनेका विचार ही किया है।

दि॰ जैनियोंकी—मनुष्यसंख्या।

सारे हिंदुस्थानमें दिगंबर जैनियोंकी जातिवार और ग्रामवार मनुष्यसंख्या कितनी है और उनकी स्थिति कैसी है आदि जाननेके लिये स्वर्गीय श्रीमान् दानवीर जैनकुलभूषण सेठ माणिकचंद हीराचंद झवेरी जे. पी. बड़ी भारी कोशिश और रु. १५०००) खर्च करके भारतवर्षीय दिगंबर जैन डिरेक्टरी नामका १५०० पृष्ठका बड़ा भारी और अतीव उपयोगी ग्रन्थ तैयार कर गये हैं जिसमें दिगंबर जैनियोंकी जातिवार संख्या निम्नलिखित है—

नं.	जाति	संख्या
१	खंडेलवाल	६४७२६
२	अग्रवाल	६७१२१
३	जैसवाल	११०८९
४	परवार	४१०९६
५	पद्मावती परवार	११५९१
६	परवार (दसा)	९
७	परवार (चोसके)	१२७७
८	पल्लीवाल	४२७२
९	गोल्लालारे	५५८२
१०	चिनैकया	३६८५
११	नूतन जैन	३
१२	ओसवाल	७०२
१३	ओसवाल (बीसा)	४५
१४	गंगेरवाल	७७२
१५	बडेले	१६
१६	बरैय्या	१५८४
१७	फतेहपुरिया	१३५
१८	दि. जैन	११६७
१९	पोरवाल	११५
२०	बुढ़ेले	५६६
२१	लोहिया	६०२
२२	गोलसिंघारे	६२९
२३	खरौआ	१७५०
२४	लमेचु	१९७७
२५	गोलापूर्व (पचविसे)	१९४
२६	गोलापूर्व	१०६४०
२७	चरनागरे	१९८७
२८	धाकड	१२७२
२९	कटनेरा	६९९
३०	पोरवाड	२८५
३१	पोरवाड (जांगडा)	१७५६
३२	पोरवाड जांगडबीसा	५४०
३३	धवल जैन	३३
३४	कासार	९५८७
३५	बघेरवाल	४३२४
३६	अयोध्यावासी (तारनपंथ)	२९९
३७	अयोध्यावासी	२९३
३८	लाड जैन	३८५
३९	कृष्णपक्षी	६२
४०	काम्भोज	७०१

४१	सैमय्या	११०७
४२	खरसाटी	४६७
४३	दशा हूमड	१८०७९
४४	बीसा हूमड	२५५५
४५	पंचम	३२५५६
४६	चतुर्थ	६९२८५
४७	बदनेरे	५०१
४८	पापडीवाल	८
४९	भवसागर	८०
५०	नेमा	२६२
५१	नरसिंहपुरा (बीसा)	४४७२
५२	नरसिंहपुरा (दशा)	२५९३
५३	गुर्जर	१५
५४	सेतवाल	२०८८९
५५	मेवाडा	२११८
५६	मेवाडा (दसा)	२
५७	नागदा (बीसा)	२६५४
५८	नागदा (दशा)	८९७
५९	चितोडा (दशा)	३०६
६०	चितोडा (बीसा)	५९१
६१	श्रीमाल	७३८
६२	श्रीमाल दशा	४२
६३	सेलवार	४३३
६४	श्रावक	८४६७
६५	सादर (जैन)	११२४१
६६	बोगार	२४३१
६७	वैश्य (जैन)	२४२
६८	इंद्र (जैन)	११
६९	पुरोहित	१५
७०	क्षत्रिय (जैन)	८७
७१	जैन दिगंबर	९७७२
७२	तगर	८
७३	चौघले	१६०
७४	मिश्रजैन	२९
७५	संकवाल	४०
७६	खुरसाले	२४०
७७	हूरदर	२२६
७८	उपाध्याय	१२१६
७९	ठगरबोगार	९२
८०	ब्राह्मण जैन	७०४
८१	गांधी	२०
८२	नाई जैन	४
८३	बढ़ई जैन	३
८४	पोकरा जैन	२
८५	सुकर जैन	८
८६	महेश्री जैन	१६
८७	अन्यधर्मी	७०
	कुल संख्या	४५०५८४

इस प्रकार हिंदुस्थानमें दि. जैनियोंकी मनुष्यसंख्या करीब साढ़ेचार लाखकी इस डिरेक्टरीमें बताई गई है तो भी इससे ज्यादे संख्या होनेकी पूर्ण संभावना है, क्योंकि ऐसे कई ग्रामों रह गये होंगे जहां डिरेक्टर नहीं पहुंचा होगा और कई ग्रामों ऐसे भी होंगे जहांके भाइयोंने अपनी संख्या नहीं लिखाई होगी। अस्तु ॥

इस जातिवार संख्यासे कौन २ जातिकी कितनी २ संख्या है यह मालूम होता है और कौन २ ग्राममें दि. जैनियोंकी कितनी २ संख्या है, उनमें मुख्य २ पुरुषों कौन २ है, सारे हिंदुस्थानमें तीर्थक्षेत्रों, सिद्धक्षेत्रों, अतिशयक्षेत्रों, मंदिरों आदि कहां २ कितने २ हैं और उनका संक्षिप्त परीचय क्या २ है यह सब हाल होनेके अतिरिक्त इस डिरेक्टरीमें हिंदुस्थानके मुख्य २ शहरोंका भी वर्णन है। इसलिये यह ग्रंथ बहुत ही उपयोगी तैयार हुआ है जिसकी हरएक ग्राममें एक २ कापी भी होनेकी खास आवश्यकता है इसलिये जिस २ ग्राममें यह डिरेक्टरी न मंगाई गई हो वहांके भाइओंने अपने द्रव्यसे, पंचके द्रव्यसे याती मंदिरके भंडारके द्रव्यसे मंगालेना चाहिये। मैनेजर दिगंबर जैन पुस्तकालय-सूरत को लिखनेसे मिल सकती है। मूल्य सिर्फ रु. ७॥ डांकव्यय अलग।

संपादक।

पं. अर्जुनलालजी सेठीकृत- महेन्द्रकुमार नाटक।

उपदेशक कस्तूरचंदजीके भ्रमणका रिपोर्ट।

(ता. १ डिसंबरसे ३१ जनवरी तक।)

रतलाम—यहांपर आपसी विरोध तथा भाइयोंका किसी बारातमें बाहर चले जानेके कारण सभा न हो सकी। केवल ७॥) सभासदीके वसूल हुए।

मंदसौर—२ व्याख्यान 'धर्मोन्नति' 'लोकोन्नति' विषयपर हुए। मनुष्य सं: १५० के करीब थी। व्याख्यान का असर अच्छा पड़ा तथा २ व्याख्यान महिलारत्न मगनबाई तथा कंकुबाईके 'स्त्रीशिक्षा' पर हुए। श्राविकाश्रमके लिये चंदा हुवा जिसमेंसे २०) इस सभाको प्राप्त हुए तथा ७) सभासदीके वसूल हुए।

परतापगढ़—२ व्याख्यान नये मंदिरमें धार्मिक व सामाजिक विषयोंपर हुए। जनसंख्या ३०० के करीब थी। सभापतिका आसन महाराजा साहबके सेक्रेटरी श्रीमान् राघवदासजी (स्थानकवासी)ने ग्रहण किया था। व्याख्यान समाप्त होनेपर सभापति साहबने व्याख्यानकी पुष्टि की जिससे उपस्थित मंडलीपर अच्छा प्रभाव पड़ा। श्रीमती मगनबाई तथा कंकुबाई के भी 'स्त्रीशिक्षा' पर व्याख्यान हुए जो बड़े असरकारक थे। पुनः १ व्याख्यान उपदेशकजीका तेरापंथी मंदिरमें जैनधर्मके महत्वपर हुआ। मनुष्य सं. १०० के करीब थी। यहांके भाइयोंने कन्याशाला खोली है जिसमें १०० कन्या शिक्षा पा रही है। कन्याशालाकी आर्थिक अवस्था ठीक नहीं है। यहांके भाइयोंको आपसी झगड़ा छोड़कर कन्याशालाकी उन्नति करना चाहिये। यहांके भाइयोंने २००) रु.

श्राविकाश्रम बम्बई तथा ५०) मालवा सभाके फंडमें दिये जिसमेंसे बड़ी रकम श्रीमान् सेठ कस्तूरचंदजी तराठीने १००) रु. की दी थी तथा स्त्रीसमाजने भी चंदा किया था। कन्याशालाकी परीक्षा लेकर श्राविकाश्रम बम्बईकी तरफसे ३) रु. माहवारी देना मंजूर हुवा।

मलारगढ़—घर ४ दि. जैन तथा १ जैन मंदिर है। १ आमसभा बाजारमें की गई। धार्मिक विषय पर व्याख्यान हुवा। १०० मनुष्य एकत्रित थे। फल यह हुवा कि उसी समय १ पाठशाला खोलनेका निश्चय हुवा और १६) रु. माहवारी चंदा लिखा गया जिसको आम लोगोंने खुशीसे भर दिया। पाठशाला खोली जावेगी। ६) रु. सेठ माधोचंदजी चतुर्भुजसे सभासदीके वसूल हुए।

नारानगढ़—घरसंख्या १० मनुष्य सं. ३०। रात्रिको १ व्याख्यान मंदिरमें हुवा। तीन भाईयोंने स्वाध्याय करनेका तथा ७ भाइयोंने शास्त्रश्रवणका नियम लिया। श्वेताम्बर पाठशालामें २ विद्यार्थी दि. जैन पढ़ते हैं। ५) रु. सभासदीके वसूल हुए।

मनासा—घर सं. १०। दो खास सभा मंदिरमें हुई। नित्यपूजन तथा १५ स्त्री पुरुषोंने शास्त्रश्रवणका नियम लिया। १ आमसभा बाजारमें की गई। २५० मनुष्य एकत्रित हुए थे। धर्म विषयपर २॥ घंटा व्याख्यान हुआ। अच्छा प्रभाव पड़ा। ९) रुपये सभासदीके आये। ६॥) रु. की आमदनी औषधालयफंडमें हुई। ३ नवीन सभासद बनाये।

नीमच—शास्त्रोपदेश हुवा। जातिमें किसी पुरुषके मर जानेसे सभा न हो सकी। १२) रुपये सभासदीके वसूल हुए तथा लाला गुलज़ारीलालजी साहबने १२) रु. साल औषधालयको देना स्वीकार किया।

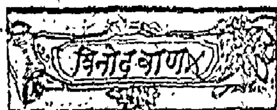
जावद—घर सं. ३५ मनुष्य सं. १५०। २ सभा खास तौरसे मंदिरमें हुई। १० भाइयोंने स्वाध्याय करनेका नियम लिया। १ सभा आम तौरसे बाजारमें की गई। अनुमान ४०० स्त्री पुरुष एकत्रित हुए। तहसीलदार साहब, मजिस्ट्रेट साहब आदि राज्यमंडली भी पधारी थी। "जैन धर्म क्या है" इस विषयपर व्याख्यान करीब २ घंटे तक हुआ। तहसीलदार साहबने सभापतिका आसन ग्रहण किया था। व्याख्यान समाप्त होनेपर सभापति साहबने अच्छे शब्दोंमें व्याख्यानकी बड़ी तारीफ़ की। पश्चात् सभा समाप्त हुई। ९) सभासदीके वसूल हुए।

नसीराबाद—यहांपर रात्रिको मंदिरमें शास्त्रोपदेश हुआ। २० स्त्रीपुरुष एकत्रित थे। किसी खास कारणसे सभा न हो सकी। श्रीमान् सेठ ताराचंदजी सेठीने मालवा सभाका लाईफ मेम्बर होना स्वीकार करके १०१) दिये तथा १५) रु. सभासदीके वसूल हुए।

उदयपुर—यहांपर अभी भादों मासमें उपदेशकजीने २० दिन ठहरकर आम व्याख्यानोंद्वारा बड़ी धर्मप्रभावना की है। पुनः अब जाकर २ व्याख्यान मंदिरमें हुए। १५० स्त्रीपुरुषोंने धर्म श्रवणकर बड़ा हर्ष माना तथा १८॥-) रु. सभासदी व औषधालयफंडके पुरानी बाकी वसूल हुए।

यहांसे रवाना होकर वापिस बड़नगर आये और बड़वानी भेजे गये।

लाला भगवानदास
महामंत्री, दि. जैन मालवा प्रां. सभा–बड़नगर।



આખરે સમજ્યા ખરા કે ?

સાહેબ ! એક કહેવત છે કે " આંજ્યું **ન ખમાય, પણ રૂંધ્યું ખમાય** " તે પ્રમાણે આપણા જૈનોમાં હમણાં થયું છે. એ. જૈનોમાં લગભગ પાંચ વર્ષ પૂર્વે અત્યંત કોલાહલ મચી રહ્યો હતો, સાધુઓ દ્વેષની અગ્નિથી સળગી ઉઠ્યા હતા, મૂર્ખાઓના ટોળાંએ સદ્‌ગુણીને અપમાન પહોંચાડવા કમર કસી હતી ! જ્યારે આ ખળભળાટ ઉઠ્યો ત્યારે આખા હિંદુસ્થાનમાં તેને સંઘ બહાર મુકો, ગંધ બહાર મુકો વગેરે ઉદ્‌ગારોજ સંભળાતા અને તેના ના તરાકે **સુરતમાં** લાખો રૂપીઆના ખર્ચે એક **જૈન** કેસ ઉભો થવા પામ્યો હતો. આજે તેઓમાંના કેટલાક એ જૈનો સમજુ, ડાહ્યા અને વિવેકી બની તે મહાશય (કે જેમના માટે આ પેંધાટ હતો) ને મુબારકબાદી આપવા ટટાર થયા છે. આખરે પણ સમજુ થયા, એ સારી વાત છે. ભાઇઓ ! પ્રથમથીજ ખરા ખોટા પારખવાની રીત શીખશો એટલે આવા બનાવ બનવા પામશેજ નહિ.

× × × ×

અને તેમની એ કદર બુઝવા મુંબાઇના જાહેર મંડળો એકત્ર થઇ ફાગણ વદ ૧૦ને દિવસે મુબારકબાદી આપનાર છે. ધન્ય જૈનો ! તમે હવે પણ સમજ્યા એ સુભાગ્યની વાત છે. ચાલો ત્યારે આપણે પણ મી૰ લાલનને મુબારકબાદી આપીએ કે " મી૰ લાલન ઘણું આયુષ્ય ભોગવો અને જૈન સમાજની બદીઓ દૂર કરવા માટે કમર કસતાં જે જે નિર્માલ્ય આફતો આવે તે સામે આપનો અમર આત્મા મજબુત બનો એમ ઇચ્છી છીએ !

× × × ×

અરે એ શું ? કે ઉંદર સાપને ગળી ગયો. બાઇ ! એ તો એમજ ચાલે. આ જમાનામાં મારે તેની તલવાર ! આ–વિનોદીરામ સવારના કામ માટે જવા નીકળ્યો, એટલામાં પોસ્ટમેને કેટલાક પત્રો હાથમાં મુક્યા, જેમાંથી પ્રથમનો પત્ર ફોડતાંજ વાંચવામાં આવ્યું કે " **ઉંદર સાપને ગળી ગયો** " આ વાંચતાં તો હું ખુશ ગયો કે હવે તો હિંદુસ્થાન ભરમાં આપણુંજ રાજ્ય પથરાઇ જશે. હવે તો આપણે મનમોજી રીતે મહાલીશું. કોઇના પણ દબાયલા રહીશું નહિ અને તેમ છતાં કોઇ ડરાવવા આવશે તો આપણા 'ઉંદર' મહાશયને આગળ ધરીશું એટલે બસ !! બેડો પાર અને વસો ગામ બહાર !!

× × × ×

મેવાડા ભાઇઓ, ચોંકશો નહિ !

મેવાડા ભાઇઓ ! ચમકશો નહિ, ગભરાશો નહિ, ગુસ્સે થશો નહિ, ખોટું લગાડશો નહિ. ટુંકામાં થોડું લખ્યું ઘણું કરી માનજો. તમારા માટે, તમોરી કોમ અને ધર્મ માટે આપણુ માનીતા થઇ પડેલા 'દિગમ્બર જૈન' માં થોડા વખત થયાં જે જે લખાણ છપાય છે તે ધ્યાનથી વાંચજો અને તે ઉપર મનન કરજો. મનન કર્યા બાદ તમારા અંતરમાં 'રામ' વસે તો અમલમાં મુકજો, નહિ તો હવામાં ઉરાડી મુકજો, પરંતુ ગુસ્સે થશો નહિ, કારણુ આ તો જુદા જુદા લખનારાના વિચારો છે, અને તે વિચારો તમારી સમક્ષ મુકવા તે 'દિગંબર જૈનનું' કર્તવ્ય છે, પછી તો તમારી ધ્યાનમાં આવે તો હૃદયમાં ઉતારજો, નહિતો એક કાને સાંભળી બીજા કાને કાઢી નાંખજો. જેવી તમારી મરજી! 'ધણીને સુઝે ઢાંકણીમાં અને પાડોશીને આયનામાં પણુ ન દેખાય' ! ! !

× × × + +

કેળવાયલાઓનું કાયરપણું !

ઓ જૈનશાસનના રક્ષક દેવો ! ઓ અજ્ઞાનતિમિર નાશ કરનાર સમર્થ કર્મવીરો ! દુનિયામાં સર્વત્ર સંપને અમરસ્થાન આપવા મથનારા યોદ્ધાઓ ! અને ઓ પરમત્યાગી, નિસ્વાર્થી જૈન-જિતેંદ્રિય જૈનો ! હવે તો જાગો. હવે તો જરા ગરીબ, કર્મ-ધર્મથી પરાંગ્મુખ થએલા અજ્ઞાની જૈનોનું અજ્ઞાન દૂર કરો, અરે ! હું ભૂલ્યો, કારણુ હાલના જૈનો-કહો કે જૈનોમાં મુખ્ય ગણાતા વિદ્વાનો-અન્ય ભાષાના અભ્યાસીઓ તો એટલા કઠોર હૃદયના થઇ ગયા છે કે, જો કોઇપણુ આપણુને બચાવવા આવતાં તેને કાંઇપણુ કષ્ટ વેઠવું પડે તો તે સામે **આંખમીંચામણાંજ** કરે છે.

* * * *

એમ કેમ ? વિદ્વાનો કેમ કાયર થાય છે ? ભાઇ ! એ તો એમજ ચાલે. રખે મને મળેલો **'ઝબ્બો', 'માન-ચાંદ'** પાછો ચાલ્યો જાય, એવા કાયરપણાની કુટીલતાથી **'ભારત-જૈન મહામંડળ'માં** જૈન સમાજના સુધારક તરીકે બહાર પડી જ્યારે **અર્જુને** પોતાની આયુધશાળામાંથી ધનુષ્ય લઇ તીર ચઢાવવા માંડયાં ત્યારે કેટલાક અનાજને ખાઇ જનારાં પક્ષીઓ કોલાહલ કરવા લાગ્યા, પરંતુ તે તરફ નજર પણુ ન કરતાં પોતાના ક્ષેત્રનું રક્ષણુ કરવા વધારે તીર ફેંકયા, જેથી અમુક એકજ જાતના પક્ષીઓએ સંપ કરી તેને તેનું કામ કરતા અટકાવ્યો. અરે એટલેથી પણુ તે પક્ષીઓ શાંત થયા નહિ. તેઓ આગળ વધી તેના માથામાં પોતાની ભુંડી ચાંચો ભોંકવા લાગ્યા. આથી અર્જુનને પોતાનું ધનુષ્ય મુકી દેવું પડયું અને પોતાને તે પક્ષીઓની ચાંચવડે થયેલા જખમ રૂઝાવવા આરામ લેવાની જરૂર જણાઇ !

પણુ કયાં કોઇ આરામ લેવા માટે અર્જુનને સ્થાન આપે છે, દિલાસો આપે છે કે બીજા કોઇને ભલામણુ પણુ કરે છે ? અરે એ બંધુએ રહેવા દોને, પણુ માત્ર 'ભારત જૈન મહામંડળ'માં તેના વિગે ઠરાવ કરવા જેવા કાર્યથી પણુ ડરી ગયા-બ્હી ગયા. તેઓ આગળ વધી હાલના માનવંતા ભલા વાઇસરોયને ભલામણુ તો શું કરી શકે ? નહિ તો જરૂર ના. વાઇસરોય આ બાબતનો ખુલાસો કરતજ; પરંતુ **'જેનું ઘર ફુટયું તેનું કર્મ ફુટયું'** એ ઉક્તિ પ્રમાણે હાલમાં આપણા સમાજનું છે. ભલે, ત્યારે **બિચારા અર્જુનને** જેલમાં સડવા દો અને આપણે મોજમજાહ ભોગવી, 'જેવા આવ્યા તેવા ખાલી હાથે સીધાવો' એટલે બસ ! બાકી તો આવા આગેવાનોથી કાંઇ વળવાનું નથી. **'કર્મ તારી ગતિ અકળ છે!!!'**

"વિનોદી."

વસંત કે પલ્લું

આપણામાં જે સો દોઢસો રૂપિઆના વસંત ગદાવતા હતા અને રૂ. ૫૦૦) ના પલ્લાંથી લગ્ન થઇ શકતા હતા, તેના બદલામાં હાલના જમાનાના પ્રમાણમાં કેટલો સુધારો થયેલો છે તે આપ ભાઇઓ વિચાર કરશો તો જણાશે કે રૂ. ૫૦૦) નું પલ્લું ગદાવતા હતા તેને બદલે રૂ. ૫૦૦) નું તો વસંતજ ચઢાવવામાં આવે છે અને પલ્લાંનો તો જાણે છેડોજ નહિ કે જે ગરીબ સ્થિતિનો હોય તેને પણ એક હજાર રૂપિઆનું પલ્લું તો અવશ્ય કરવુંજ પડે અને જો ઇજ્જતવાન ગણાતો હોય તો તે ઉપરાંત એટલે લગભગ દોઢ હજારનું પલ્લું થાય. બંધુઓ, એકજ દાખલા તરીકે હું આપને જણાવીશ કે એક ઘરમાં પાંચ છોકરાઓ છે તો તેને રૂ. ૨૫૦૦) નું વસંત અને રૂ. ૫૦૦૦) નું પલ્લું મળી રૂ. ૭૫૦૦) ગરીબ સ્થીતિના માણસને જોઇએ અને જમવાનો ખરચ રૂ. ૧૫૦૦) નો એટલે કુલ્લે રૂ. ૯૦૦૦) હોય ત્યારે પાંચ છોકરા પરણે, તો આ પાતકી રિવાજ દુર કરી આપણો અસલનો રિવાજ રાખશો તો આપણી જ્ઞાતિની ઉન્નતિ થશે. વળી આપણી સ્થીતિ કેવી છે તેમ હાલના જમાનામાં કેટલી પેદાશ છે અને તેના પ્રમાણમાં કેટલો ખરચ છે, તેનો વિચાર કરવો જોઇએ. આવી રીતે "**ખીસા ખાલી અને ભપકા ભારી**" બતાવાથી શું ફાયદો થાય ? વળી ઉપર જણાવેલો જે રિવાજ છે, તે માટે કંઇ યોગ્ય નિયમ બાંધવો જોઇએ કે જેથી ગરીબ અગર શ્રીમંત બંનેને સરખો લાભ મળી શકે. જેવી રીતે ન્યાયની કોર્ટમાં ગરીબ કે તવંગર બંનેને સરખો ન્યાય આપવામાં આવે છે તેવીજ રીતે આપણા પંચમાં શ્રીમંત અને ગરીબને સરખો લાભ આપવો જોઇએ. જો આ બાબત કંઇ નિયમ કરવામાં આવશે નહિ તો ભવિષ્યમાં આપણી શું સ્થીતિ થશે તે કંઇ કહી શકાય તેમ નથી. (અપૂર્ણ)



(संशोधक:–मोतीलाल जी. माळवी–थाकरोळ.)

चारित्रसंपन्न मनुष्यो जनमंडळना हृदयरूप छे. **इमरसन.**

आत्मसंयम एज व्यक्तिनी वास्तविक स्वंतत्रता छे. **फ्रेडरीक परथीस.**

उमदा मनुष्योनो अभ्यास करवाने हुं पोते बहु उत्सुक छुं. **सेकसपीयर.**

हंमेशां जीववानो छे एम धारी काम कर, अने आजेज मृत्युवश थवानुं छे तेम धारी ईश्वरभजन कर. **कहेवत.**

जे नानी ज्ञाति के कोममां आपणे छीये तेने चाहवी तेज सार्वजनिक प्रेमनुं बीज छे. **बर्क.**

साचा धार्मिकपणाथी आत्माने दिलासो अने शान्ति मळे छे. **पामर.**

क्रोधनी शरूआतमां मुर्खता छे अने अंतमां पश्चाताप छे. **मॉन्टर.**

क्रोधी माणस मों उघाडुं राखे छे ने आंखो बंध राखे छे. **केटो.**

ज्यारे आगळथी क्रोध प्रवेश करे छे त्यारे पाछळथी डहापण जतुं रहे छे. **फील्डींग.**

जे माणस पोताने पोताना काबुमां राखतो नथी ते स्वतंत्र नथी. **पीथागोरास.**



श्रीमान् शेठ माणेकचंद मोतीचंद-आळंद (सोलापुर)
मुंबाई दिगंबर जैन प्रांतिक कोन्फरंस (सभा) नी गजपंथाजीमां मळनारी
चौदमी बेठकना प्रमुख.

 इस वर्षके ग्राहकोंको ७ पुस्तकें उपहारमें मिलेंगी। 

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रगट थतुं मासिक

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

युतं सुलेखै, र्विविधैश्चचित्रै, दिगंबरजैन मिदं सुपत्रम् ।
प्रभो ! महावीर ! ! तव प्रभावात्, समुत्तमामुन्नतिमातनोतु ॥

वर्ष ९ मुं. || वीर संवत २४४२. चैत्र. विक्रम सं. १९७२ || अंक ६ ठो.



लगभग १५ वर्ष पहेलांनी आपणां दिगंबरी भाईओनी स्थीतिनो गजपंथाजीमां विचार करीशुं तो जणाशे के

कोन्फरंस. १५ वर्ष पहेलां आपणामां एक पण बोर्डिंग नहोती तेम पाठशालाओ पण जुजजाज हती ज्यारे हालमां तो १०-१५ स्थले बोर्डिंगो, बे त्रण श्राविकाश्रमो, औषधालयो, उदासीनाश्रमो, ब्रह्मचर्याश्रम, महाविद्यालयो वगेरे अनेक संस्थाओ दृष्टिगोचर थाय छे तेमज अनेक सभाओ, पुस्तकालयो, लायब्रेरीओ वगेरे स्थपायानो समय दरवार वर्षनी अंदरनोज छे तो आ बधा शाना प्रताप छे ? कारण वगर तो कार्य थायज नहि, तो आ बधी प्रगतिना मूल कारणभूत अने संस्थापक कोण हशे ए विचारज दरेकने प्रथम आवशे जेथी जणावीशुं के आ सर्व प्रगतिनुं मूल कारण आपणी मुंबाई दिगंबर जैन प्रांतिक सभा (कोन्फरंस)ज छे के जेनी स्थापना १४ वर्ष अगाउ कोन्फरंसना पिता स्वर्गीय दानवीर जैनकुलभूषण शेठ माणेकचंद हीराचंद झवेरी जे. पी., स्या. वा, न्या. पं. गोपालदासजी वरैय्या, शेठ हीराचंद नेमचंद दोशी, पं. धन्नालालजी कासलीवाल वगेरेए मळीने करी हती, अने ते पछीज कोन्फरंस तरफथी 'जैनमित्र', उपदेशक, संस्कृत विद्यालय, परीक्षालय वगेरेना प्रयासथी आपणा दि. भाईओमां धर्मसंबंधी घणी जाग्रति थवा पामी छे अने अनेक स्थले अनेक संस्थाओ उभी थई छे. अमो खात्रीपूर्वक कहीए छीए के जो आ कोन्फरंस स्थपाई न होत तो मुंबाई ईलाकामां आपणी आटली पण प्रगति नज थात. आ कोन्फरंसनुं अनुकरण करीनेज दक्षिण महाराष्ट्र जैन कोन्फरंस, दि. जैन माल्वा प्रां. सभा, खंडेलवाल सभा वगेरेनी स्थापनाओ थई छे ए निःसंशय छे. वळी आपणी भारत,

दि. जैन महासभा आ प्रांतिक कोन्फरंसथी जुनी छे अने अगाउ एणे घणां कार्यो करेलां छे, तोपण एनी हालनी स्थीति एटली बधी फकोडी अने ढंगधडा वगरनी थई पडी छे के महासभा आ शब्दज याद आवतां मोढुं कटाणुं थई जाय छे. एनुं साप्ताहिक वाजिंत्र 'जैनगजट' पण ६ महिनाथी मरणपथारीए पड्युं छे अने हवे साजुं थईने देखाव आपशे के नहि ते पण शंकास्पद छे, पण एक आपणी **मुंबाई दि० जैनप्रां० सभा (कोन्फरंस)**ज एक एवी संस्था छे के जे पोतानां कार्यो गमे तेवी अगवडो अने कटाकटीना समयमां पण बजावीज जाय छे ए ओछुं खुशी थवा जेवुं नथी. हवे ज्यारे एमज जणाय छे के हालनी आपणी प्रगतिनुं कारण आपणी मुंबाई दि. जैन प्रां कोन्फरंसज छे, तो एने टकावी राखवी अने मोटा पाया ऊपर लाववी ए आपणा भाईओनी मुख्य फरज छे. कोन्फरंसनी छेल्ली (१३मी) बेठक त्रीजे वर्षे सिद्धक्षेत्र श्री पालीताणामां स्व. दानवीर शेठ हुकमचंदजीना प्रमुखपदे भारे ठाठथी थई हती अने तेज प्रसंगे शेठ हुकमचंदजीए **रु. चार लाखनुं गंजावर दान** प्रगट कर्युं हतुं ते सर्वेने स्मरणमांज हशे तेमज ते समये आ कोन्फरंसना पिता दानवीर शेठ माणेकचंदजी जीवताजागता हता, पण तेज वर्षमां आपणी आखी कोमना आ महान **धर्मवीरनो अचानक वियोग** थवाथी आपणी अनेक प्रवृत्तिओना मूळ संचालकनी आपणने असाधारण खोट पडी छे, जेनो ताजो पुरावो आजे दिसे छे. गत वर्षे नियम मुजब कोन्फरंसनी बेठक भरवानी जरूर हती, पण आसंज-गोनी गेरहाजरीमां बंध रही हती, पण आ वर्षे **तो कोन्फरंसे जाते हामी भीडी छे** एटले कोन्फरंस पोताने खर्चेज १४ मी बेठक **श्री गजपंथाजीमां आ (चैत्र) मासनी सुद ५-६-७ ना दिवसोए** वार्षिक मेळा प्रसंगे करवानुं बीडुं झडप्युं छे, जे समय हाथवेंतमांज छे, माटे जरापण विलंब न करतां मुंबाई, दक्षिण अने गुजरात प्रांतना भाईओ अने व्हेनोए आ कोन्फरंसनो लाभ लेवा तरतज उपडी जवुं जरूरनुं छे. वधु खुशी थवा जेवुं ए छे के आ प्रसंगे जवाथी एकने बदले अणचार लाभो मळनारा छे एटलेके **गजपंथाजीनी यात्रा, वार्षिक मेळो, महिला परिषद, खंडेलवाल महासभा** वगेरेनो लाभ मळवा उपरांत रस्तामां आवतां के जतां **मुंबाई शहेरनी मुलाकात** तेमज मांगीतुंगीनी यात्रानो पण लाभ मळी शकशे. गजपंथाजीमां १० वर्ष ऊपर कोन्फरंसनी एक बेठक थई हती पण ते समये **गुजरात प्रांतना भाई-ओए** तो नहीं जेवोज लाभ लीधो हतो माटे आ समयने जतो न करी गुजरात प्रांतना भाईओए तो तरतज गजपंथाजी जवा नीकळवुं जोईए. वळी **गजपंथाजीनो प्राचीन-अर्वाचीन इतिहास** तेमज कोन्फरंसमां थनार प्रमुख **आळंदनिवासी शेठ माणेकचंद मोतीचंदनो** फोटो अने संक्षिप्त परिचय आज अंकमां प्रकट कर्यो छे, जेथी पण गजपंथाजी तीर्थ अने प्रमुखसाहेबनो परिचय सर्वेने मळी शकशे. आ समयनी स्वागत कमीटिना प्रमुख तो आपणी कोन्फरंसना पिता स्व. दानवीर जैनकुळभूषण शेठ माणेकचंदजीना भ्राता शेठ नवलचंद हीराचंद

झवेरीज छे के जेमना नामथी अने परीचयथी दि. जैनना वाचको जाणीताज छे एटले आपणने संपूर्ण आशा छे के शेठ नवलचंदजी पोताना स्व. मोटा भाई शेठ माणेकचंदजीने पगले चाली कोन्फरंसना कार्यने दरेक रीते दीपावशेज.

हवे आ कोन्फरंसमां विशेष करीने कया कया **ठरावो** थवानी जरूर छे ते संबंधी थोडीक सूचनाओ अत्रे करीशुं तो ते योग्यज लेखाशे—

(१) कोन्फरंसना पिता शेठ **माणेकचंदजीनुं** नाम कोन्फरंसना कोई खाता साथे **अमर** रहे एवो प्रबंध थवो जोइए.

(२) उपदेशकखातुं आथी वधारीने ओछामां ओछा बे त्रण उपदेशको फेरवी शकाय तेवी गोठवण थवी जोईए.

(३) **परीक्षालय**विभागमां घणो मोटो सुधारोवधारो करवानी जरूर छे एटले के पाठशाळाओ स्थापवा, तेनुं निरीक्षण करवा वगेरे माटे इन्सपेकटरो नीमवानो प्रबंध तथा दरेक पाठशाळाओमां एकसरखो अभ्यासक्रम चाली शके ते माटे एक अभ्यासक्रम कमीटी नीमवानी जरूर छे.

(४) समाजनी प्रगतिना खास कारणभूत **समाचारपत्रज** छे, पण आपणामां एक पण अठवाडिक पत्र नियमित नथी, जेथी आपणा पाक्षिक 'जैनमित्र' ने बराबर नियमित रीते अठवाडिकना रूपमां फेरवी नाखवानो खास प्रबंध अवश्य थवो जोईए.

(५) **समेदशिखरजी, अंतरीक्षजी** वगेरे तीर्थोना मांहोमांहेना नाहकना झघडा माटे जैन कोमना लाखो रुप्या बरबाद थई वकील, बेरीस्टरो अने सरकारना घर भराय छे जेथी तीर्थोना झघडानो मांहोमांहे नीकाल करवाने आ कोन्फरंसे खास ठराव करवो जोईए तथा आज मासमां मुंबाईमां मळनारी **श्वे. जैन कोन्फरंसने** पण तेवो ठराव करवाने भलामण करवी जरूरनी छे.

(६) बे वर्ष थयां जयपुरनी जेलमां विना तपासे विना न्याये सबडता समाजहितैषी **पं. अर्जुनलालजीना** छुटकारा माटे जैपुरना महाराजा अने नवा वाइसरोयनी पासे एक **निवेदन** पत्र तथा एक डेप्युटेशन मोकलवानो प्रबंध करवो जोइए.

(७) मुंबाईमां व्यापार माटे आवता दि. जैनोने कोईपण नोकरी के धंधामां ठाम पाडवा माटे एक खास संस्था स्थापवानी सगवड थवी जोईए.

(८) ज्यां सुधी **दरेक ज्ञातिनी कोन्फरंस** थाय नहीं त्यां सुधी धारेला सुधाराओ अमलमां आवी शके नहि माटे ज्ञाति कोन्फरंसो स्थापवाने प्रयास करनारी कमीटि नीमवी जोईए.

(९) मुडबिद्रीमां आपणा अमूल्य ग्रंथो **श्रीधवल, जयधवलनी** एकेक नकल बाळबोध लीपिए थई छे तथा **महाधवल** ग्रंथ लखाय छे तेनी बधु नकल करवा देवा माटे कोन्फरंस तरफथी एक **निवेदन पत्र** 'दक्षिण कर्णाटक जैन सभा' पर मोकलवो जोईए.

आ उपरांत आ कोन्फरंस प्रसंगे जे जे विचारो रजु करवामां आवे ते ऊपर पुख्त विचार करी ते संबंधी योग्य ठरावो थवानी जरूर छे.

अमोने आशा छे के गजपंथाजीमां आ वखते मुंबाई, दक्षिण अने गुजरातना भाईओ घणीज भारे संख्यामां लाभ लेशेज अने कोन्फरंस प्रसंगे कंई अद्भुत कार्यो थया पामशेज,

ત્રણ વર્ષ થયાં 'દિગંબર જૈનમાં' મહાવીર જયંતી ઉજવવા સંબંધી **મહાવીર જયંતી.** હિલચાલ ઉપાડવામાં આવી છે ત્યારથી આ જયંતી અનેક સ્થળે ઉજવવા મંડાઇ છે અને તેજ સમય આ વર્ષે પણ આ **ચૈત્ર સુદ ૧૩** ને દિને આવી પહોંચ્યો છે. આ તેજ પરમપવિત્ર દિવસ છે કે જે દિને આપણા **અંતીમ (૨૪ મા) તીર્થંકર શ્રી મહાવીર પ્રભુએ** કુંડલપુરનગરમાં માતા **ત્રીશળાની** કુખે જન્મ લીધો હતો અને સર્વ સ્થળે અપાર આનંદઉત્સવો થયા હતા. આપણે આપણા બાપદાદાની, પોતાની, પુત્ર—પુત્રીઓ વગેરેની **વર્ષગાંઠ** ઉજવીએ છીએ તો **મહાવીર પ્રભુની જન્મતિથિ ચૈત્ર સુદ ૧૩ યાને મહાવીર જયંતી શું ભારે ઠાઠમાઠથી ન ઉજવવી જોઇએ?** બીજી કોમોમાં કૃષ્ણ-જયંતી, રામ જયંતી, હનુમાન જયંતી. નરસિંહ જયંતી વગેરે એવી સારી રીતે ઉજવાય છે કે રામનવમી, કૃષ્ણ જયંતી વગેરે તો ખાસ જાહેર તહેવાર તરીકે પળાય છે તો જૈનોની શું ફરજ નથી કે આ મહાવીરજયંતીને એટલા બધા ઠાઠમાઠથી ઉજવવી જોઇએ કે એક સમય એવો પણ આવી પહોંચે કે આપણે **મહાવીર જયંતીનો દિવસ જાહેર તહેવાર તરિકે** પાળવાને નામદાર સરકારને આગ્રહ કરી શકીએ.

\+ × ×

હવે આ **મહાવીર જયંતી** કેવી રીતે ઉજવવી જોઇએ તે સંબંધી થોડીક સૂચનાઓ અંત્રે કરીએ છીએ, જે ઉપર '**દિગંબર જૈન**' ના વાચકો પુખ્ત વિચાર કરી આ વર્ષની જયંતી ભારે ઠાઠમાઠથી દરેક ગામ કે શહેરોમાં ઉજવશોજ એવી અમો આશા રાખીએ છીએ.

૧. દિગંબરી, શ્વેતાંબરી અને સ્થાનકવાસી ત્રણે સંપ્રદાયના જૈનો એકજ મહાવીર પ્રભુને માને છે માટે આ જયંતી **ત્રણે સંપ્રદાયના ભાઇઓએ એકત્ર મળીનેજ ઉજવવી.**

૨. ઘરો, મંદિરો, દુકાનો, જાહેર સંસ્થાઓ વગેરેને એવી રીતે શણગારવાં કે જેથી જાહેરને એમ જણાય કે આજે જૈનોનો કંઇ મોટો તહેવાર છે.

૩. સવારે દરેક મંદિરોમાં અભિષેકપૂર્વક **મહાવીરપ્રભુની પૂજા** ગાનતાન અને ભક્તિ—ભાવથી થવી જોઇએ તથા **મહાવીરચરિત્ર વ્યાખ્યાનરૂપે** મંદિર કે ઉપાશ્રયમાં વંચાવું જોઇએ.

૪. આ દિવસે પોતાને ઘેર મિષ્ટ ભોજન કરી અથવા ન્યાતિજમણ કરી જાહેર તહેવાર પાળવો જોઇએ.

(૫) ગામેગામ અને શહેરેશહેર દરેક સ્થળે **સમગ્ર જૈન કોમની એકજ જાહેર સભા** ભારે ઠાઠમાઠથી ભરવી અને તેમાં વિદ્વાન વક્તાઓ દ્વારા મહાવીર પ્રભુનું જીવન અને તેમના ચરિત્ર ઉપરથી લેવાનો બોધ એ સંબંધી વ્યાખ્યાનો થવાં જોઇએ તથા ન્યાતિ કે કોમના **માંહોમાંહેના ઝઘડાઓનો સરળ મનથી નીકાલ કરી નાંખવો જોઇએ** તથા પ્રભાવના તરીકે આ પ્રસંગે કંઇને કંઇ પુસ્તકો વેચવાં જોઇએ.

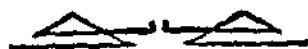
૬. જ્યાં જ્યાં **પાઠશાળા, સભા** વગેરે ન હોય ત્યાં તે સ્થાપવા માટે તથા હોય તેને ઉત્તેજન આપવાનો પ્રબંધ થવો જોઇએ.

૭. કારણ વગર કાંઇ બનતું નથી માટે આ મહાવીર જયંતી ઉત્સવ નિમિત્તે કંઇને કંઇ **રકમ વિદ્યાદાન** વગેરે માટે જુદી કાઢવી જોઇએ.

૮. દર વર્ષે મહાવીર જયંતી નિયમિત ઉજવી શકાય તેવું પાકું બંધારણ થવું જોઇએ.

९. દરેક સ્થળે **મહાવીર જયંતી ઉજવવાના સમાચાર** વર્તમાનપત્રોમાં લખી મોકલવા જોઇએ કે જેથી એક બીજા તેનું અનુકરણ કરી શકે.

આ ઉપરાંત આ મહાવીર જયંતી જેવા શુભ નિમિત્તે જૈનકોમમાં સંપ, જાગૃતિ અને ઉન્નતિ થાય એવા પ્રયાસો કરવા જોઇએ. **તેમજ આવતા અંકમાં** દરેક સ્થળે મહાવીર જયંતી ઉજવાયાના **સમાચાર** પ્રકટ કરવા માટે આ સમાચારો અમને **ચૈત્રવદ ૫ સુધીમાં** અવશ્ય લખી મોકલવા સર્વે વાંચકવર્ગને ભલામણ કરીએ છીએ.



गजपंथा-कोन्फरंसना प्रमुख-शेठ माणेकचंद मोतीचंदनो-संक्षिप्त परिचय ।

आ अंकमां कोन्फरंसना प्रमुख शेठ माणेकचंद मोतीचंद (आळंद) नो **फोटो** प्रगट कर्यो छे; जेथी तेमनुं संक्षिप्त जीवन-वृत्तांत जाणवुं जरूरनुं छे.

शेठ माणेकचंदजी आळंद (जिल्ले सोलापुर) ना एक सुप्रसिद्ध व्यापारी छे. आपना पितानुं नाम **मोतीचंद हेमचंद** अने मातानुं नाम **दौलाबाई** हतुं. शेठ मोतीचंदने बे पुत्रो अने पांच पुत्रीओ थई तेमां आपणा **चरित्रनायक शेठ माणेकचंदजीनो** जन्म सं. १९२३ भादरवा सुद त्रीजे थयो एटले हालमां एमनी ऊमर ४९ वर्षनी छे. एमना नाना भाईनुं नाम अमीचंदजी छे.

शेठ माणेकचंदजीए नानी ऊमरमां मराठी भाषानुं सामान्य ज्ञान तथा गणित हिसाब वगेरेनुं सारुं ज्ञान मेळव्युं हतुं, पण आळंदमां वधु भणवानी सगवड न होवाथी एओ वधु अभ्यास करी शक्या नहोता, तोपण गणित अने भाषानुं एमनुं ज्ञान घणुंज सारुं छे.

आपनी बे **पत्नी** पैकी प्रथमना लग्न सं. १९३७ मां सोलापुरना गांधी भवानचंद चतुरचंदनी पुत्री **श्रीमती सखुबाई के जेओज महिलापरिषदना प्रमुख** थनार छे तेमनी साथे थया हता. एओ पण लखी वांची जाणे छे. श्रीमती सखुबाईने एक पुत्र अने एक पुत्री थयेला पण ते बन्ने नानीज वयमां मृत्यु पाम्या हता. बीजां लग्न सं. १९४८ मां लाखेवाडी गामना श्रीमती रतनबाईना साथे थयां हता जेमने ३ पुत्री अने पांच पुत्रो हयात छे. पांच पुत्रीओने पण आपे सारुं शिक्षण आप्युं छे.

सं. १९५५ मां शेठ माणेकचंदजीना पितानो अने सं. १९५८ मां मातानो स्वर्गवास थयो हतो जे समये **पिताजी रु. ११०००] अने माताजी रु. ५०००]** धर्मादा तरीके काढी गया हता.

हवे शेठ माणेकचंदजीए धर्मोन्नतिना शुं शुं कार्यो कर्यां छे ते जणावीशुं—

सं. १९५७ मां आळंदमां एक जैन **पाठशाला** स्थापित करी अने तेनो एक वर्षनो बधो खर्च पोते आप्यो अने ते पछी एना स्थायीफंड माटे पोते रु. ५०००) भरीने बीजा भाईओ पासेथी ९०००) भरावी रु. १४०००) ना फंडथी आ पाठशाळाने **चिरस्थायी** बनावी छे.

आळंदमां निजाम सरकारनुं राज्य छे, जेथी केळवणीनो जोईए तेवो प्रबंध न होवाथी जैन विद्यार्थीओने प्राथमिक केळवणीमां आ पाठशाळाथी घणोज लाभ थयो छे. तेमज गया वर्षथी आ पाठशाळामां हिंदु विद्यार्थीओने पण दाखल कर्या छे, जेथी हाल आ पाठशाळामां ४० जैन अने ९० अजैन मळी ९० **विद्यार्थीओ** विद्याभ्यास करी रहेला छे. आज पाठशाळामां शिक्षण लईने हाल केटलाक जैन विद्यार्थीओ सोलापुर सतारा वगेरे स्थळे संस्कृत, अंग्रेजी अने वैद्यकनुं शिक्षण लई रह्या छे.

वळी एमनीज प्रेरणा अने वारंवार सहायताथी आळंदमां एक जैन सभा स्थपाई छे, जे दर चौदसे मळ्या करे छे. आ सभा तरफथी एक वखत निजाम स्टेटमां एक उपदेशकनुं भ्रमण करावबामां आव्युं हतुं अने जैन पुस्तको वेंचवामां आव्यां हतां, जेथी ए प्रांतमां वसता जैन धर्मीओ केओ नामनाज जैनी हता पण जैन धर्मनुं लेशपण ज्ञान नहोतुं तेओ जैन धर्मथी जाणीता थया छे.

वळी शेठ माणेकचंदजी सं. १९६२ मां श्री **दक्षिण महाराष्ट्र दि. जैन कोन्फरंसना सभापति** नीमायां हता, जे समये सभाने रु. ५००) नी मदद आपी हती. तेमज सोलापुरमां त्यागीजी ऐलक पन्नालालजीना केशलोच समये आपे सोलापुरनी पाठशाळाने रु. ५००) नी मदद आपी हती.

आ उपरांत आपना तरफथी आळंदमां रोगीओने मफत दवा आपवामां आवती हती तथा सं. १९६९ मां एक **औषधालय** स्थपायुं छे जेमां आपे रु. १०००, नी मदद आपी छे.

आपे बे वखत शिखरजी, बे वखत गीरनारजी अने त्रण वखत श्री गोम्मटस्वामीनी यात्रा कुटुंबसहित करीने दानपुण्यमां पोताना द्रव्यनो सारो उपयोग कर्यो हतो.

आपने दररोज सामायिक, स्वाध्याय, पूजापाठ वगेरेनो नियम छे तथा घरमांज चैत्यालय छे जेथी घरनां सर्व स्त्रीपुरुषो थोडो घणो स्वध्याय पूजापाठ करेज छे. आपनो व्यापार आळंदमांज चाले छे अने सरकारी अमलदारो तरफथी एमने सारुं सन्मान मळे छे.

आपणे इच्छीशुं के शेठ माणेकचंदजीना प्रमुखपदे आ कोन्फरंसनां सर्व कार्यो सफळतापूर्वक पार पडो अने एओ दीर्घायुषी थई आथी घणु समाजसेवानां कार्यो करवा तथा आथी पण घणु सन्मान मेळववा भाग्यशाळी थाओ. तथास्तु.

सिद्धक्षेत्र श्री गजपंथाजी।

संते जे बलभद्दा जदुवणरिंदाण अट्ठकोडीओ
गजपंथे गिरिसिहरे णिव्वाण गया णमो तेसिं
(निर्वाणकांड गाथा।)

जे बलिभद्र मुकतिमें गये।
आठ कोडी मुनि और ही भये॥
श्री गजपंथ शिखर सुविशाल।
तिनके चरण नमूं तिहूं काळ॥
(निर्वाणकांड भाषा)

बम्बई प्रान्तमें नासिक (G. I. P. Ry.) स्टेशनसे ९ मील और नासिक शहरसे ४ मील उत्तरकी ओर 'मसरूल' नामक एक ग्रामके निकट अनुमान एक मिलपर 'गजपंथ' पर्वत है। इसकी ऊंचाई करीब ४०० फुट है। पहाडके शिखरपर दो दिगम्बर जैन मन्दिर है जो पर्वतके स्वाभाविक पाषाणको काटकर बनाये गये है। मंदिरोंमें अनेक मूर्तियां हैं, जो भीतमें उकीरकर बनाई गई हैं। मूर्तियोंके अतिरिक्त दो स्थानोंमें दो चरणपादुका हैं, जिनके भव्यजन बड़ी भक्तिसे दर्शन करते हैं। दूसरे मन्दिरकी बाईं ओर एक जलका कुंड है इसमें निरंतर जल भरा रहता है। यात्रीलोग पूजनके द्रव्यका प्रक्षालन इसीके जलसे करते हैं।

पर्वतकी तलेटीमें भी एक वापिका है। इसका जल बहुत अच्छा रहता है। बन्दनाको जानेवाले प्रायः इसी वापिकासे पूजन द्रव्य धोया करते है। इस वापिकाके निकट भट्टारक 'क्षेमेंद्रकीर्तिजी'की एक 'समाधि' बनी हुई है। इसमें भट्टारकजीके चरणोंकी स्थापना है। इस समाधिके पाससे ही पर्वतपर चढ़नेका मार्ग है। और थोड़ी दूर चढकर ही सीढ़ियोंका आरंभ है। सीढ़ियोंकी संख्या ३२९ है। इन सीढ़ियोंपर सफेद कलई की गई है, इससे बहुत दूरसे दिखाई देती हैं। मंदिर और कोटपर भी कलई की गई है इससे सीढ़ियों सहित वह दृश्य ऐसा मनोहर जान पड़ता है, मानों यह दूधका सरोवर पर्वतके शिखरपर भरा हुआ है और सीढ़ियां ऐसी जान पड़ती है कि दूधकी धारा बहा रही है। भगवद्दर्शनके लिये आकुल हुए धर्मात्माओंके हृदयमें इस धारासे एक अपूर्व आनंद होता है।

यह जैनियोंका परमपूज्य सिद्धक्षेत्र है। निर्वाणकांडकी ऊपरकी गाथा—भाषाके अनुसार पूर्वकालमें इस स्थानसे बलभद्रादि ८ कोटी मुनियोंने मोक्ष प्राप्त किया है।

इस क्षेत्रमें प्रतिवर्ष माघ सुद १२से तीन दिन तक मेला लगता है और आसपासके बहुतसे यात्री बन्दना करनेके लिये आते है। प्लेगके कारण इस वर्षका मेला माघके स्थानमें अभी (चैत्र सुदी ८को) ही होनेवाला है।

इस पर्वतके आसपास अनेक छोटे २ ग्राम है परंतु उन सबोंसे निकट 'मसरूल' ग्राम है, यहां शोलापुरके प्रसिद्ध शेठ 'रावजी'के पिता शेठ नानचंद फतेहचंदजीने नागौरकी गद्दीके स्व. भट्टारक श्री क्षेमेन्द्रकीर्तिकी प्रेरणासे एक सुंदर मंदिर सं. १९४२में बनवाया और १९४३में प्रतिष्ठा कराई थी। इस मंदिरके चारों ओर एक कोट है, जिसके भीतर दो धर्मशालाएं,

एक कूप और बहुतसे झाड हैं। धर्मशालाओंमें ३०० आदमी आरामसे ठहर सकते हैं।

इस मंदिरका और तीर्थक्षेत्रका प्रबन्ध शोलापुरके शेठ रावजी नानचंद गांधीके तरफसे होता है।

मंदिरमें इससमय ७ प्रतिमाओंके सिवाय ४ प्रतिमाएं शिरपुरके अंतरीक्ष पार्श्वनाथकी प्रतिमाके समान अर्द्ध पद्मासन करीब २ हाथ ऊंची है, और ७ कायोत्सर्गस्थ प्रतिमाएं करीब ३॥ हाथ ऊंची और भी है जिनको बहुत अनावस्थासे मंदिरके पीछे एक प्राचीन पत्थरके बने हुए जीर्ण मंदिरमें अव्यवस्थित रूपसे रख दी है। जीर्णोद्धार करते समयमें मंदिरका शिखर और अंदरका कुछ भाग पुराना ही रक्खा है। यहांपर एक खंडित शिलालेख भी पाया जाता है जिसका सारांश यह है–

"संवत १४४१में 'हंसराज' माता गोदीबाईने 'माणिक'स्वामीके दर्शन करके अपना जन्म सफल किया है"।

આ તીર્થનો ઉપર્યુક્ત પરીચય ભારતવર્ષીય દિ૦ જૈન* યાત્રાદર્પણ ઉપરથી ઉદ્ધૃત કરવામાં આવ્યો છે અને આ ઉપરાંત આ તીર્થનો 'પ્રાચીન ઇતિહાસ' જે શ્રી. કેંપબેલના મુંબાઇ ઇલાકાના સન્ ૧૮૮૩ ના ગેઝેટિયર વોલ્યુમ ૧૬ પાનું ૪૨૬ ઉપરથી શ્રીયુત એસ. પી. પરીખે સારાંશરૂપે લખી મોકલ્યો છે તે નીચે મુજબ છેઃ—

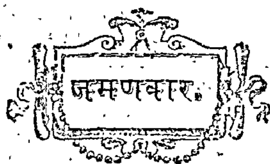
દક્ષિણમાં આવેલા નાસિક શહેરથી પાંચ માઇલના અંતરે આશરે ૬૦૦ ફીટ ઉંચાઇનો ડુંગર છે. જેને ચામ્ભારલેન અથવા ચામ્ભાર ગુફા કહે છે. આ ગુફાઓ જૈન ગુફાઓ છે. ડુંગરની તલેટીએ ચામ્ભાર જાતના લોકના ઘર છે તે ઉપરથી આ ડુંગરને ચામ્ભારલેન નામ આપેલું કહેવાય છે. જૈન લોકો આ ડુંગરાને ગજપંથાનો ડુંગર કહે છે. એ નામ આપવાનું કારણ કે તેમના કહેવા પ્રમાણે ત્રીજા કાળ એટલે દ્વાપર યુગમાં કૃષ્ણને ગજસુખકુમાર કરીને ભાઇ હતા, તે આ ડુંગરના શીખર ઉપર મોક્ષે ગયા અને તે બાદ કેટલાક મુનીઓ મોક્ષે ગયા કહેવાય છે તે ઉપરથી આ પહાડ ગજપંથાના નામથી પવિત્ર ગણાય છે.

સન્ ૧૮૭૦ના વરસમાં કેટલાક જૈનો (મારવાડી ગુજરાતી વીગેરે) એ મળી રૂ૦ ૭૫૦) ના ખરચે આ ગુફા સામે દિવાલ બંધાવી છે. તેમજ રૂ. ૮૦૦) ના ખરચે પગથીઆં અને તજેટીએ મશરૂલમાં એક ભવ્ય મકાન મોટા ખરચે બંધાવ્યું છે.

ગુફાઓ ૪૫૦ ફીટની ઉંચાઇએ છે જેનું મુખ નૈરૃત્ય કોણમાં (દક્ષિણ–પશ્ચિમ દીશા વચ્ચે) છે. એકંદર ૧૭૩ પગથીઆં છે. ૧૬૩ માં પગથીએથી બે બાજુએ રસ્તા જાય છે. ગુફાની આગળ દીવાલ સુધી થોડી ખુલ્લી જગા છે. ગુફામાં ડાબી બાજુએ પાણીનો ઝરો વહે છે, જેનું પાણી એક નાના ખાબોચીઆમાં ભરાઇ રહે છે તેની સાથેથી ગુફાઓ શરૂ થાય છે, તે બધીમાં જૈન તીર્થંકરો વીગેરેની નાની મોટી ઘણી પ્રતિમાઓ કોતરી કાઢેલી છે, જેમાંની કેટલીક કાયિક ધ્યાનમાં અને કેટલીક બેઠા આસનમાં કોતરેલી છે. એકંદર ચાર ગુફાઓછે. એક બાજુએ ત્રણ કમળો કોતરેલાં છે. વચલા કમળની મરી (diameter) ૪-૬ ફીટની છે એથી અડધા માપની બાજુબાજુનાં બે કમળો છે, જે એક બીજાથી પાંચ ફીટના અંતરો દરેક છે. કોતરકામ બહુ ઉંચા પ્રકારનું નથી.

યાત્રાદર્પણના અને ગેઝેટિયરના આ પરીચયમાં કંઇક ફરક આવે છે, જેનો ચોક્કસ નિર્ણય આ કોન્ફરંસ પ્રસંગે પ્રત્યક્ષ રીતે થવાની જરૂર છે

* આ ગ્રંથ રૂ. ૧) ની કિંમતે દિ. જૈન પુસ્તકાલય સુરતથી-મળી શકે છે.



(અમદાવાદની પ્રે. મો. દિ. જૈન બોર્ડિંગના વિદ્યાર્થીનો ઇનામી નિબંધ)

(૧) આ શબ્દ હાલના હિંદસમાજમાં એટલો બધો સાધારણ થઇ ગયો છે કે હિંદના કોઇપણ ભાગમાં કોઇપણ માણસ એવો નહિ હોય કે જે ઉપલા શબ્દના અર્થથી માહિતગાર ન હોય.

જુના વખતમાં જમણવાર કરવાનો ઉદ્દેશ.

(૨) દુનીઆમાં દરેક માણસ પોતાના કુટુંબનું ભરણપોષણ કરવા માટે દ્રવ્ય મેળવવા સારૂ પ્રયત્ન કરી રહેલો છે અને દ્રવ્ય પ્રાપ્ત કર્યા પછી તે પોતાનાં બાળબચ્ચાંનું તેમજ કુટુંબીઓનું હિત થાય એવાં કાર્યોમાં પોતાના પૈસાનો વ્યય કરે છે. આ ફરજ બજાવ્યા પછી તેની પાસે પૈસા વધે છે એટલેકે જો તે પૈસાદાર હોય તો તે પોતાને શોભા અથવા કીર્તિ આપે એવાં કાર્યો કરે છે, અને તેવાં કાર્યોમાં પોતાનું દ્રવ્ય વાપરે છે. પહેલાં જમણવાર થતાં તેનાં મુખ્ય કારણોમાં આ એક છે. બીજું કારણ એ છે કે જુના વખતમાં રેલ્વે, આગબોટ, ઘોડાગાડી, બગી, પાકા રસ્તા, મોટર વિગેરે મુસાફરીનાં સાધનો બહુજ ઓછાં હતાં, અને વધારામાં જંગલોમાં વાઘ વરૂ વિગેરે હિંસક પ્રાણીઓનો તેમજ ચોર અને ધાડપાડુઓનો ઘણો ઉપદ્રવ હતો; તેથી એક જગાએથી બીજી જગાએ જવામાં માણસોને ઘણી અડચણ પડતી; આથી માણસો એક બીજાના દૂરનાં સ્નેહી અથવા સગાંને હાલની માફક વર્ષમાં ઘણી વખત મળી શકતા નહોતા, માટે સગાંસ્નેહીઓ એક બીજાને મળે, સુખદુઃખની વાતો કરે, આનંદ પામે, તથા એકબીજાના હેતમાં વધારો થાય એવા હેતુથી પહેલાં જમણવાર કરવામાં આવતા. ત્રીજું કારણ એ છે કે જેમ માણસને એકલું રહેવું ગમે નહિ, તેમ એકલપેટા થઇને જમવું પણ ગમે નહિ, માટે ઘરના બધા માણસો સાથે સાથે જમવા બેસે તો જરા આનંદ થાય; થોડા ઘણા દોસ્તો સાથે હોય તો વળી વધારે આનંદ થાય; દોસ્તો ઉપરાંત બીજાં સગાંવહાલાં હોય તો તો ઉપર કરતાં પણ વિશેષ આનંદ થાય અને જ્યારે પોતાનાં કુટુંબનાં માણસો, સ્નેહી મિત્રો, સગાંવહાલાં, ઓળખીતા માણસો એ બધાં સાથે જમવા બેસે ત્યારે તો અનહદ આનંદ થાય છે અને મન ઘણું પ્રફુલ્લિત રહે છે. આ કારણથી પણ પહેલાં જમણવાર અથવા વરા કરવામાં આવતા.

પ્રકાર.

(૩) પહેલાના વખતમાં લગ્નાદિ શુભ પ્રસંગે વરા કરવામાં આવતા. જેમ જેમ વખત વધતો ગયો તેમ માણસો જમણવાર કરવામાં વધતા ગયા એટલે કે જમણવારની સંખ્યા વધતી ને વધતીજ ચાલી. આખરે આ સંખ્યા એટલી બધી વધી ગઇ કે મરણાદિ અશુભ પ્રસંગે પણ વરા કરવામાં માણસોએ બાકી રાખી નહિ. આ પ્રમાણે હાલના વખતમાં શુભ અને અશુભ એમ બંને પ્રકારના વરા કરવામાં આવે છે. હવે આપણે બંને પ્રકારના જમણવારનું થોડું થોડું વર્ણન કરીશું.

(અ) શુભ પ્રસંગે થતા જમણવાર— જુદા જુદા માણસો જુદે જુદે પ્રસંગે વરા કરે છે. મુખ્યત્વે કરીને લગ્ન, સીમંત,

બાપદાદા પૈસાદાર હતા **તેથી** તેમના વંશજોએ પણ ગમે તો તેઓ લક્ષાધિપતિ હોય કે પછી તેમના ઘરમાં **'હાંલ્લાં કુસ્તી કરતાં હોય'** તોપણ બાપદાદાની આબરૂ જાળવવા તેમની માફક ખર્ચ કરવો જોઇએ એવી પણ ઘણાખરા લોકોમાં માન્યતા છે, અને આવા ખર્ચ કરવામાં ગરીબ અને મધ્યમ વર્ગના લોકો અને ઘણી વખતે પૈસાદાર પણ ઘરબાર, વતન, વાડી, ખેતર વગેરે ઘરેણે મુકીને અથવા વેચીને આખરે ખોઇ નાંખે છે. તેઓ વિચાર કરતા નથી કે આમ કરવાથી પોતાના બાપદાદાની આબરૂ જળવાઇ રહે છે કે ઉલટી નષ્ટ થાય છે? તેઓ બાપદાદાની આબરૂને તથા પોતાના કુળને ખટ્ટો લગાડે છે. પહેલાં નાત જમાડવાનો વિષય ઐચ્છિક હતો એટલેકે પોતપોતાની મરજીની વાત હતી. તે વખતે લોકો ઉપર હાલની માફક કોઇપણ પ્રકારનું નાતનું દબાણ નહોતું. હાલ તો મુખ્યત્વે કરીને **ન્યાતના દબાણથી.** ન્યાત બહાર કાઢી મુકાવાના ભયથી અથવા તો લોકનિંદાના ભયથી ઘણા જણને પછી તે ગરીબ હોય કે પૈસાદાર હોય, નાનો હોય કે મોટો હોય, તોપણ વરા કરવાની ફરજ પડે છે. વળી કોઇને ત્યાં કંઇ શુભ પ્રસંગ આવવાનો હોય તો લોકો તેને ત્યાં જઇને કહે છે કે તમારે તો સારી રીતે ખર્ચ કરવો જોઇએ, તમારા બાપદાદાની આબરૂ જાળવવી જોઇએ, **નાણું મળે** પણ ટાણું નહિ મળે, અને આવો શુભ પ્રસંગ ફરી ફરીને આવશે નહિ, માટે સારો ખર્ચ કરીને તમારે લ્હાવો લેવાનું ચુકવું નહિ જોઇએ, વિગેરે વિગેરે. આ પ્રમાણે લોકનિંદાથી પણ માણસોને વરા કરવાની ફરજ પડે છે. પોતાની અને બારહી ન્યાતીમાં અમર નહિ પણ ફક્ત નામનીજ કીર્તિ મેળવવા માટે તથા લોકોમાં પોતાની વાહવાહ કહેવડાવવા માટે પણ ઘણેખરે ઠેકાણે વરા કરવામાં આવે છે, અને લોકો **'ખર્ચરૂપી** ઊંડા **ખાડામાં** પડીને આખરે પાયમાલ થાય છે. કેટલાક **નામના** મેળવવાની સ્પર્ધા પણ કરે છે, એટલેકે એક બીજાથી **ચડીઆતું** જમણ અથવા તો બીજા ખર્ચ જેવા કે વરઘોડા, લ્હાણી વગેરે કરે છે. કોઇ વિચાર કરે છે કે ફલાણાભાઇએ તો વાજાં મંગાવ્યાં ને વરઘોડો પણ ચઢાવ્યો, તો હું પણ શા માટે સુંદર બેન્ડ અથવા પટ્ટધમ ન મંગાવું અને વરઘોડો ઠાઠમાઠથી ન ચઢાવું? ફલાણાએ બે જાતનાં શાક કર્યાં ને રાયતાં પણ કર્યાં તો હું પણ શા માટે ત્રણ ચાર જાતનાં શાક, રાયતાં, ભજીયાં, ચટણી વગેરે ન કરાવું? ફલાણાએ આવું જમણ કર્યું તો હું પણ તેનાથી ચઢીઆતું જમણ શા માટે ન કરૂં ને આબરૂ ન મેળવું? ફલાણાએ તાંબા પિત્તળનાં વાસણોની લ્હાણી કરી તો હું પણ શા માટે ન કરૂં? શું હું તેનાથી ઊતરું એવો છું? આમ **ખોટી આબરૂ** મેળવવાને માટે લોકો એક બીજાની સાથે સ્પર્ધા કરે છે, અને ઘણો ખર્ચ કરે છે. આ કારણથી દિવસે દિવસે જમણ પણ જુદી જુદી જાતનાં થાય છે. થોડો ખર્ચ થાય એવાં જમણ બહુ થોડા પ્રમાણમાં થાય છે. શાક પણ જુદી જુદી જાતનાં કરવામાં આવે છે. ગામડામાં કે નાના શહેરમાં જોઇએ તેવી જાતનાં શાક મળે નહિ, માટે અમદાવાદ, વડોદરા, સુરત વગેરે નજીકનાં મોટાં શહેરોમાંથી ઘણો ખર્ચ કરીને મંગાવવામાં આવે છે. શાકની જોડે બે ત્રણ જાતનાં **ભજીયાં** અને **રાયતાં** પણ હોય તો ભોજન જરા વધારે સ્વાદિષ્ટ બને, માટે જુદી જુદી જાતનાં ભજીયાં અને દહીંના રાયતાં પણ કરવામાં આવે છે. આમ શાકપાન, ભજીયાં, રાયતાં વિગેરેમાં પણ ઘણો ખર્ચ થાય છે. કોઇ કોઇ વખત તો મુખ્ય જમણ જેટલો અથવા તો **તેથી** પણ વધારે ખર્ચ થાય છે. પહેલાં નાતો કરવામાં

જેટલો ખર્ચ થતો હતો તેનાથી પાંચ સાત ગણો અથવા તેથી પણ વધુ ખર્ચ હાલના વખતમાં થાય છે. વળી લગ્નપ્રસંગે જમણવાર ઉપરાંત ઘણો ખર્ચ થાય છે, વડીઓ પાપડ કરવાં પડે છે. ખારેકો, સોપારી તથા કોઇ વખત પતાસાં કે ગોળ વહેંચાય છે. કોઇ વળી નાળિયેરનું લ્હાણું કરે છે. કોઇ તાંબા પિત્તળનાં વાસણનો તો કોઇ ખાંડસાકર વિગેરેની લ્હાણી કરે છે. વરઘોડો પણ દાદમાદથી ચઢાવવામાં આવે છે. શણગારેલા ઘોડા તથા બગીઓ ભાડે લાવવામાં આવે છે. પહેરામણીમાં પણ સગાંવહાલાંને યથાશક્તિ પૈસા આપવા પડે છે. બ્હેનો વિગેરે સગાંવ્હાલાંને લ્હાપાં વિગેરે આપવાં પડે છે ગોરને પૈસા આપવા પડે છે. સગાંવહાલાંને પણ કંઈ આપવું પડે છે. પડઘમનો ખર્ચ પણ થાય છે. કોઇ કોઇ શ્રીમંતો મોટા મોટા મંડપ બંધાવે છે, રાત્રે રોશની કરાવે છે અને દારૂખાનું પણ ફોડાવે છે. મરણ પ્રસંગે જે લોકો કાણે આવે છે તેમની પણ સારી બરદાસ કરવી પડે છે. તેમને માટે ખાવાપીવાની તથા સુવાની સગવડ કરવી પડે છે. પોતાને ઘેર પાછા જતી વખતે પણ સુરમા લાડુ વિગેરે ભાથુ બાંધી આપવું પડે છે. જમાઇને પાઘડી તથા બીજાં સગાંને લુગડાં અથવા પૈસા આપવા પડે છે. ગોરને પણ કંઇ આપવું પડે છે, ને તેનાં સગાંને જમાડવા પડે છે. આ ઉપરાંત ખર્ચ વધવાનું કારણ હાલની મોંઘવારી પણ છે એમ કહીએ તો ખોટું નહિ ગણાય. હાલમાં પહેલાંના કરતાં ખાનપાનની વસ્તુઓ જેવી કે અનાજ, ઘી, ગોળ, ખાંડ, તેલ વિગેરે તથા સુખડીનાં લાકડાં મોંઘાં થઇ ગયાં છે. પહેલાં લોકો હાથે રસોઈ કરતા ને હાલ રસોઇયાને પૈસા આપી રસોઇ કરાવે છે. પહેલાં લોટ વિગેરે પોતપોતાની નાતિનાં બૈરાં દળી આપતાં તથા પોતનાં મર્યા ડાંગર ખાંડી આપતાં, પણ હાલ તો દળવાની ઘંટીમાં લોટ દળાય છે ને ડાંગર ખંડાય છે. અથવા તો ચોખા વેચાતા લાવવામાં આવે છે. હાલમાં સુખનાં સાધનોને લીધે ઘણાં બૈરાં લોટ દળવાની અથવા ડાંગર ખાંડવાની પણ મહેનત કરતાં નથી, અને પરિણામે તેમનાં શરીર બહુ નાજુક થઇ જાય છે. આ પ્રમાણે આપણને જણાય છે કે **ખોટી નામના મેળવવાની હરિફાઇ,** અજ્ઞાન, તથા મોંઘવારી વિગેરે કારણોને લીધે પહેલાંના કરતાં ખર્ચ અતિશય વધી ગયું છે. અને પરિણામે ઘણા જણ પાયમાલ થયા છે, થાય છે અને થશે એમાં કાંઇપણ સંદેહ રહેતો નથી.

કેટલીક ન્યાતોમાં **જમવાની જગા** ઘણી ગંદકીવાળી હોય છે. જો શહેરમાં કોઇ પોળમાં નાત કરે તો ખાજરૂ વિગેરેની ઘણી દુર્ગંધ આવે છે તથા પોળોમાં ઘણી ગંદકી હોવાથી જમવામાં જોઇએ તેવો આનંદ થતો નથી. લોકો બધાં સાથે ઉઠતા નથી ને વહેલા ઉઠવાની ઉતાવળ કરે છે. કેટલાક તો વળી ભિખારીઓ પડવાની બીકથી ભાત દાળ અથવા તો કઢી વગેરે વહેલા વહેલા ખાઇથી ઉઠી જાય છે. વળી ગુજરાતી લોકોમાં પિરસવાની પદ્ધતિ પણ સારી હોતી નથી. પહેલાંના વખતમાં બધા સાથે જમતા તથા જમવાનું શરૂ કર્યા પહેલાં પોતાના ઇષ્ટદેવનું સ્મરણ કરતા. કોઇ મંત્રો અથવા શ્લોક બોલતા તથા કોઇ પ્રભુના નામનો ધ્વનિ પણ કરતા ને ત્યારપછીજ જમવાનું શરૂ કરતા. આપણા ગુજરાતી બાઇઓ કરતાં **દક્ષિણી લોકોમાં ન્યાતો સારી રીતે કરવામાં** આવે છે, તથા એમને પોતાની જ્ઞાતિ તરફથી દબાણ હોતું નથી. તેઓ સ્વચ્છ જગામાં રંગ વિગેરે પૂરીને અગરબત્તી વિગેરે ધૂપ સળગાવીને, તથા પાટલાપર બેસી નિરાંતે આનંદ કરતાં કરતાં જમે છે. અને આવી રીતે જે આનંદ પડે છે (થાય છે) તેની મઝા તો અનુભવી સિવાય કોઇ

જાણી શકે નહિ. આ તેમની રીત ઘણી સારી છે, અને એવી રીત આપણી ગ્નાતિમાં દાખલ કરવામાં આવે તો સારૂં.

(૫) અવસર હદમાં કરવામાં આવે તો બેશક ઘણા લાભ થાય અને પૈસાનો લાભાલાભ. દુરૂપયોગ થતો અટકે. **શુભ પ્રસંગે અવસર શોભે પણ મરણ વિગેરે જમણ સંભવે પણ કેમ?** એક બાજુ ઘરમાં રડારોડ અથવા હાયહાય થતી હોય અને આપણે બહાર બેસી નિરાંતે જમીએ એ કેટલું બધું અઘટિત કહેવાય? સારા માણસોને એવે વખતે જમવું ગમે પણ કેમ! જો કદાચ શાસ્ત્રોનો આધાર લઇએ તો પ્રેતનું અન્ન ખાવાની તેમાં મનાઈ કરેલી છે. મરણની ન્યાતો કરવાની શાસ્ત્રમાં છૂટ નથી. વિવેકબુદ્ધિવાળા માણસો આવા અવસરોને સારા ગણશે નહિ; પણ **અજ્ઞાનને લીધે આપણે આ જડ ઘાલી બેઠેલા ખરાબ ચાલને દૂર કરી શકતા નથી,** એ આપણી ગ્નાતિની તેમજ આપણી પોતાની કેટલી બધી **નિર્બળતા** જણાવે છે? કોઇ વખત લગ્ન કરતાં પણ મરણ વખતે વરા કરવામાં ખર્ચ વધી જાય છે. ઘરડા માણસનું બારમું કરવામાં આવે છે એટલુંજ નહિ પણ ૨૦-૩૦ અથવા ૪૦ વર્ષના જુવાનના અથવા નાનાં છોકરાંના મરણ પાછળ પણ ખર્ચ થાય છે, અને તેમાં મરનાર કરતાં નાની ઉમરના માણસો જમવા જાય છે. કોઇ કોઇ ન્યાતોમાં તો મોટા પણ જમવા જાય છે. **૧૦-૧૫ કે ૨૦ વર્ષનો છોકરો મરણ પામે અને તેની વહુ બિચારી નાનપણમાં રાંડે અને તે વખતે આપણે જમવા જવું એ આપણને ઘટિત છે?** નહિજ. આપણે ઉલટું મરનાર ધણીનાં સગાંવહાલાંને મળવાને અને દિલાસો આપવાને માટે ત્યાં જવું જોઇએ. તે જોડે ઘરથી ભાથુ બાંધી લેવું જોઇએ. ત્યાં જઇને બધાંને દિલાસો આપવો તથા ईश्वरेच्छा बलीयसी। વિગેરે વાક્યોનો અર્થ સમજાવી તેમનો શોક બનતા સુધી દૂર કરવો જોઇએ; ને પછી તરત પોતાને ઘેર પાછા વળવું જોઇએ. આવું કરવાને બદલે હાલમાં તો લોકો ત્યાં જાય છે અને તેમને દિલાસો આપવાને બદલે એ લોકોને પોતાના ખાવાપીવાને તથા સુવાને માટે સગવડ કરી આપવામાં હેરાન કરે છે. ત્યાં જઇને તેઓ બે ત્રણ કે ચાર દિવસ સુધી **મિષ્ટાન્ન** વિગેરે અચ્છી તરેહથી ઝાપટે છે ને **મઝા કરે છે.** પોતાના પતિના મરણથી બિચારી બૈરી રડીરડીને અડધી થઈ ગઇ હોય, ગામમાં ઘર અને સીમમાં ખેતર ન હોય, તે વખતે નાતવરાની ત્રેવડ કરવાની તેને ફરજ પાડવી એ કેટલું બધું ખરાબ! આ ઉપરથી આપણને સ્પષ્ટ જણાય છે કે મરણ પાછળ જમણવાર કરવા એ અઘટિત છે. અને તેમાં જમવા જવું એ તેનાથી પણ વધારે શરમાવે તેવું છે.

હવે આપણે **લગ્નાદિ શુભ પ્રસંગે કરેલાં જમણના લાભ તથા ગેરલાભ** તપાસીશું. લાભ થોડુંજ ઓછા છે. પોતાનાં સગાંવહાલાં આવે છે તથા વાતચીત કરે છે તેથી ઘણો આનંદ થાય છે. વળી જમતી વખતે પણ ઘણો આનંદ થાય છે અને પ્રીતિમાં વધારો થાય છે. એક બીજા સાથે **ઓળખાણ** પણ થાય છે. એક બીજાના મિત્રો તથા સગાંની સાથે ઓળખાણ થાય છે. તથા જમણવારને લીધે એ લોકોનો મેળાપ થાય છે. દૂરનાં સગાં અથવા મિત્રો પણ પ્રસંગને બ્હાને મળવા માટે પધારે છે અને આવી રીતે ઘરધણીને એકંદરે ઘણો હર્ષ થાય છે. ગેરલાભો ઘણા છે. પાસે પૈસા ન હોય તો દેવું કરવું પડે છે અને લેણદારોનું મન મનાવવા ઉપરાંત જૂઠા વાયદા કરવા પડે છે. હદ ઉપરાંત ખર્ચ કરવાથી પૈસાનો ખોટો વ્યય થાય છે. પૈસા સારાં કાર્યોમાં ખર્ચને

બદલે ખોટાં કાર્યોમાં ખર્ચાય છે. કોઇ વખત ઘર, દાગીના તથા જમીન વિગેરે પણ વેચવાં પડે છે. આ પ્રમાણે હદ ઉપરાંત ખર્ચ કરનાર માણસ પોતે એકલોજ નહિ પણ પોતાના કુટુંબને દેવા-રૂપી બેડીમાં હમેશને માટે બાંધતો જાય છે. છોકરાં પણ બાપે કરેલું ભારે દેવું ન ભરાઇ શકવાથી મનમાં બહુજ દુઃખી થાય છે. આ ઉપરાંત એંઠવાડ વિગેરે ગંદકીથી ગામની તેમજ શહેરની હવા ઘણી બગડે છે અને મુખ્ય-ત્વે કરીને શહેરોમાં રોગનો ફેલાવો પણ થાય છે. ઘણા ભિખારીઓ ન્યાત થતી હોય ત્યાં જાય છે અને ઉદ્યોગ કરવાને બદલે ભીખ માંગીને પેટ ભરે છે. આવી ન્યાતો ઘણી થતી હોવાથી ભીખારીની સંખ્યા દિનપ્રતિદિન વધતી જાય છે. વળી ન્યાતમાં સારાં સારાં જમણ, શાક, ભજીયાં વગેરે હોવાથી કોઇ વખત પુરુષો તથા બૈરાં છોકરાં વિગેરે હદ ઉપરાંત પણ ખાઇ બેસે છે, તેથી પરિણામે ઘણા જણ માંદા પડે છે તથા ડાક્ટર કે વૈદને ઘેર જવું પડે છે. આ ઉપરાંત જમણવારનાં બીજાં ઘણાં અનિષ્ટ પરિણામો નીપજે છે, પણ વિષય બહુ વધી જવાથી લખી શકાય તેમ નથી. વળી દેશ પણ પરિણામે ગરીબને ગરીબ થતો જાય છે ને ગરીબ લોકોનો તો મરો જ થાય છે.

(૬) હિંદુસ્તાન દિનપ્રતિદિન વેપાર, રોજગાર, હુન્નરો તથા પૈસે

અવસરોના સંબંધમાં ટકે ગરીબ થતો જાય કરવા યોગ્ય સુધારા. છે, ને હજારો ભીખારીઓ વધતા રખડતા

લોકોને દિવસમાં એક વખત પણ રોટલો અગર ખોરાક મળી શકતો નથી. જ્યારે હાલના વખતમાં પૈસાદાર તથા મધ્યમ વર્ગના લોકો મોટા મોટા ખર્ચ કરીને હજારો બલ્કે લાખો રૂપીઆનો વ્યય નિરર્થક કરે છે. પોતે અગાડી તરેહથી નિરાંતે મિષ્ટાન્ન જમે છે, પણ તેમને પોતાના ગરીબ **દેશ-બંધુઓને** દિવસમાં એક વખત સુકો રોટલો પણ મળતો નથી તેનો વિચાર કરવો જરૂરનો છે. તેઓની સ્થિતિ સુધારવાને માટે પૈસાદાર લોકોએ પોતાના પૈસાનો વ્યય કરવો જોઇએ તથા તેમને ઉદ્યોગે વળગાડવા જોઇએ, પણ ભીખારીના ભીખારી રાખવા ન જોઇએ. **જમણવારના ખર્ચમાં થોડા રૂપીઆ ઓછા વાપરે તો તેમનું કંઇ ખોટું થવાનું નથી.** જમણવારમાં તો એકે વખતે **હજારો રૂપીઆનું પાણી થાય છે ને તે પૈસા ગયા તે તો ગયાજ,** પાછા આવવાના નથી. પણ જો લોકો પૈસા **ધર્માદાનાં** કાર્યોમાં વાપરે તો તેમનું **નામ પ્રખ્યાત** થાય એટલુંજ નહિ પણ **પરલોકમાં ઘણી શાંતિ** મળે છે. નાતિના ચાલતા રિવાજ વિરુદ્ધ વર્તન કરવાની એકાએક હિંમત ન થઇ શકે. મુખ્યત્વે કરીને વચલા વાંધાના કે ગરીબની નિંદા થાય, તેમને કદાચ ન્યાત બહાર કાઢી મુકવામાં આવે અને એ ઉપરાંત બીજું ઘણું દુઃખ સહન કરવું પડે, પણ જો કોઇ **શ્રીમંત વિરુદ્ધ વર્તન કરે તો તેની સામે થવાની** કોઇ હિંમત કરી શકે નહિ, તથા બધા તેનું કર્યું માને, માટે શ્રીમંતે પોતપોતાની ન્યાતમાં સુધારો કરવાનું કામ પોતાના હાથમાં લેવું એ બહુ જરૂરનું છે. એ લોકોએ તથા જ્ઞાતિના આગેવાનોએ મુખ્યત્વે કરીને **મરણ પાછળના વરા તો તદ્દન બંધ કરી દેવા જોઇએ.** ત્રણ અથવા ચાર નાતોને બદલે એક અથવા બે કરવી જોઇએ. બીજાં કાર્યોમાં પણ બનતા લગી ઓછો ખર્ચ કરવો જોઇએ. વળી ગરીબ માણસોને માટે પણ કંઇ થવું જોઇએ કારણકે તેઓ ન્યાત જમાડવાને શક્તિમાન હોઇ શકે નહિ. લગ્નમાં અતીશય ખર્ચ થાય છે તે પણ ઓછો કરવો જોઇએ. વર્ષ.શની ન્યાતો પણ બંધ કરવી જોઇએ. અગાઉના બાપદાદા જેવું કરતા

હતા તેવું અમારે પણ કરવુંજ જોઇએ એવી ખોટી હઠ માણસોએ ત્યજી દેવી જોઇએ. તેમણે કરેલાં ફક્ત સારાં કૃત્યોનુંજ અનુકરણ કરવું જોઇએ નહિ કે ખોટાં. દરેક માણસે વરા કરતી વખતે તેમાં થોડો ખર્ચ ઓછો કરીને તે પૈસા વિદ્યાદાનમાં આપવા જોઇએ. હાલના વખતમાં કેળવણીનો પ્રચાર આખી દુનીઆમાં ઘણોજ થયેલો છે. જાપાન, અમેરિકા, ઇંગ્લાંડ વિગેરે દેશોની ચડતી અથવા આબાદી ત્યાંની કેળવણી તથા વેપારને લીધેજ છે, માટે આપણા દેશમાં પણ વિદ્યાનો પ્રચાર કરવાને બનતો પ્રયત્ન કરવો એ દરેક હિંદવાસીની મુખ્ય ફરજ છે.

દરેક માણસ પાસેથી થોડા કે વધારે પૈસા કોઇ શુભ પ્રસંગે કઢાવવા જોઇએ અને તેનો ઉપયોગ વિદ્યાદાનમાં કરવો એ પણ જ્ઞાતિના આગેવાનોની ફરજ છે. શ્રીમંતોએ પણ હદમાં રહીને ખર્ચ કરવો અને ગરીબોને મદદ કરવાને તથા તેમને ધંધે વળગાડવાને બનતો પ્રયત્ન કરવો જોઇએ. દરેક જણે લગ્નાદિ શુભ પ્રસંગે અમુક રકમ બચાવવી અને તે દ્રવ્ય બોર્ડિંગો, અનાથાશ્રમો, વિદ્યાલયો, બ્રહ્મચર્યાશ્રમો તથા બીજી ધાર્મિક સંસ્થાઓ કે જ્યાં ગરીબોનું પાલણપોષણ થાય છે અને તે ઉપરાંત તેમને વિદ્યાભ્યાસ કરાવવામાં આવે છે ત્યાં મોકલવું જોઇએ. પૈસાદાર ગૃહસ્થોએ એક સ્કૉલરશીપ ફંડ પણ સ્થાપવું જોઇએ કે જેમાંથી સ્કૉલરશીપ મેળવવાને દરેક વિદ્યાર્થી બનતો પ્રયત્ન કરશે અને આખરે જે વિદ્યાર્થી મહેનતુ તથા લાયક હશે તેને સ્કોલરશીપ મળશે. હાલમાં ઘણીવાર એમ બને છે કે પૈસાદારના છોકરા ભણી શકતા નથી અને ગરીબ લોકોના છોકરા ઘણા મહેનતુ તથા ભણવામાં ઘણા હોંશિયાર હોય છે, પણ તેમની પાસે પૈસા ન હોવાથી અભ્યાસ મુકી દેવાની જરૂર પડે છે, માટે આવા વિદ્યાર્થિઓને પણ તે ફંડમાંથી મદદ આપવાની ઘણી જરૂર છે. બીજું મજુર વર્ગમાં પણ કેળવણીની ઘણી જરૂર છે. મીલોમાંથી તથા બીજી જગાઓમાં હજારો મજુરો કામ કરે છે, તેમાંના સેંકડે પાંચ ટકા પણ પોતાનું નામ પણ લખી શકતા નથી, માટે આવા લોકોને ભણાવવા માટે રાત્રિશાળાઓ પણ તે ફંડમાંથી સ્થાપવાની જરૂર છે કે તેઓ જે કામ કરવા જાય તે રાત્રે થોડું ઘણું ભણે. જ્યાં સુધી મજુરવર્ગની સ્થિતિ સુધરી નથી ત્યાં સુધી આપણા દેશની અથવા આબાદીની આશા રાખવી વ્યર્થ છે. આવા લોકોને કેળવણી આપવા સારૂ દરેક દરેક મોટા શહેરમાં રાત્રીશાળાઓ પણ સ્થાપવી જોઇએ.

ન્યાતના આગેવાનોએ જમણ પ્રસંગે જમણ કરનાર દરેક જણ પાસેથી થોડા ઘણા પૈસા ભેગા કરવા અને એક મોટું ફંડ કરવું જોઇએ, તેમાંથી પોતાની જ્ઞાતિના તેમજ બીજી જ્ઞાતિઓના છોકરા તથા છોકરીઓને કેળવણી આપવી જોઇએ. વળી તે ફંડમાંથી વેપાર રોજગાર વધે એવે રસ્તે પણ પૈસા ખર્ચવા તથા તેમાંથી જુદી જુદી ધાર્મિક સંસ્થાઓ જેવી કે બોર્ડિંગ, અનાથાશ્રમ, ઉદાસીનાશ્રમ વગેરેમાં પૈસાની બનતી મદદ કરવી. આ પ્રમાણે કરવાથી પૈસાનો સદુપયોગ થશે, મજુરો પણ કેળવણીની કિંમત સમજતા થશે, લોકોમાં કેળવણીનો પ્રચાર વધશે, ભીખારી જેવા રખડતા માણસો કામે લાગીને સુખી થશે તથા વેપાર હુન્નર વિગેરેને ઉત્તેજન મળશે. છેવટે દેશમાં પૈસો વધશે અને તેની આબાદી થશે.

કંઇ નહીતો યુવાનના મરણ પ્રસંગના ખર્ચ તદ્દન નાબુદ કરવા જોઇએ અને દરેક જ્ઞાતિના હિતચિંતકોએ " મરણ પાછળ થએલા અવસરોમાં જમવા ન જવું " એવો દૃઢ સંકલ્પ કરવો જોઇએ. આથી ઘણા ગેરલાભો થતા અટકશે અને આખરે એ વરા બંધ થવાથી

ઘણો સુધારો થશે, પૈસા બચશે અને તેમાંથી થોડો ભાગ પુણ્યદાનમાં પણ વપરાશે.

(૭) દરેક બાબતનું ફરી ફરી વિવેચન કરીને વાંચકોનો વખત લેવો એ યોગ્ય નથી, માટે હવે

ઉપસંહાર ફક્ત કહેવાનું એટલુંજ કે (૧) વધારાના વરા એટલેકે અયોગ્ય ખર્ચ, અને મરણ પાછળના ખર્ચ બંધ કરવા (૨) જ્ઞાતિના આગેવાનો તથા શ્રીમંતોએ એક મોટું ફંડ સ્થાપવું. (૩) તેમાંથી ગરીબ તથા મજુરવર્ગોને કેળવણી આપવી. (૪) ધર્મિક સંસ્થાઓને મદદ કરવી. (૫) ભીખારી તથા રખડતા બીજા લોકોને ધંધે વળગાડવા અને આ પ્રમાણે કરવાથી પોતાની, પોતાના ગામની, પોતાની જ્ઞાતિની અને આખરે આખા દેશની પણ ઘણે અંશે આબાદી થશે એમ હું હિંમતથી કહું છું.

જગજીવન કસ્તુરચંદ (છત્રાલ.)

सायन्स (विज्ञान शास्त्र)

(લેખકઃ-શા. નાનચંદ પુંજાભાઇ બી. એ. વડોદરા.)

ગયા અંકમાં જે આપણે રોજના ખોરાકનો મેળ કાઢયો છે તે એક ટુંકનો છે. જુદા જુદા પ્રાંતમાં જુદી જુદી જાતનો ખોરાક લેવાતો હોવાથી બન્ને વખતની ગણત્રી મુશ્કેલ છે, પણ આપેલા કોઠા ઉપરથી દરેક જણ પોતાનું ધોરણ નક્કી કરી શકે. સાધારણ મેહેનત કરનાર મનુષ્ય રોજ ૩૦૦ ગ્રેન નાયટ્રોજન અને ૫૦૦૦ ગ્રેન કાર્બન બહાર કાઢે છે, પણ વ્યક્તિ પરત્વે એક ધોરણ બાંધી શકાય નહિં. વળી ઘણો આધાર પોતાની પાચનશક્તિ ઉપર રાખે છે. કેટલાક વિદ્વાનો ઘઉંની અંદર નાયટ્રોજનયુક્ત પદાર્થ બાજરીના કરતાં કંઇક વધારે બતાવે છે, તેથીજ ઘઉં ઉત્તમ અનાજ મનાતું હશે. મેંદા કરતાં ચુલી મિશ્રિત આટામાં નાયટ્રોજનનો ભાગ ઘણો આવે છે. નાયટ્રોજન યુક્ત ખોરાક શરીરમાં માંસ બનાવે છે અને કાર્બન મિશ્રિત પદાર્થ બળ અને ગરમી આપે છે. ખોરાક વિષેની વાત હાલ આપણે આટલેથી બંધ રાખીશું.

આધારે રહે છે! કાગળના આધારે નહિ, પણ નીચેથી હવાનું દબાણ કાગળ ઉપર થાય છે તેથી આ જાદુઈ ખેલ! બને છે.

બીજી બાબત એ છે કે આજના જમાનામાં પણ કેટલાકની એવી માન્યતા છે કે **નજર** લાગી હોય તો કાંસાનો વાડકો થાળીમાં ઉંધો પાડતાં સજ્જડ ચોંટી જાય તો ખરેખરી નજર લાગી છે-ચોટ લાગી છે. નજર અથવા દૃષ્ટિ વિજ્ઞાનશાસ્ત્રના આધારે કેવી રીતે સમજાવવી તે અત્રે કહેવું કઠણ છે. કદાચ મેસમેરીઝમનો નિયમ લાગુ પડતો હશે કે મગજમાંથી વીજળીનો પ્રવાહ નીકળતો હશે તે શંકાસ્પદ છે, પણ નજર લાગી છે કે નહીં તેની ખરી પરીક્ષા આ કહી શકાય નહીં; કારણકે વાડકાની ધાર બરાબર સપાટ હોય અને થાળી પણ સપાટ હોય તો વાડકો ચોંટી જવોજ જોઇએ. ઉપરથી હવાનું દબાણ ઘણું થાય છે અને વળી વાડકાની અંદર કોયલા હોવાથીને કોયલા અંદરની હવાનું શોષણ કરી લે છે તેથી અંદર હવા રહેવા પામતી નથી તેથી વળી વાડકો ખરેખરો સજ્જડ ચોંટી જાય છે.

વળી કેટલાકને **પેટમાં** દુઃખે છે ત્યારે પ્યાલો ડુંટી પર મુકે છે. પ્યાલો ઉંચકવાની સાથે પેટની ચામડી પણ ઉંચી જાય છે. કોઇ કોઇ વખત તો આ બનાવ બહુ ભયંકર થઇ જાય છે. આ પ્યાલાનું ચોંટી જવું તે પણ ઉપરની રીતેજ સમજાવી શકાય. બીજી વખતે આપણે બેરોમીટરના ઉપર વિચાર કરીશું.

✤ श्री तत्त्वार्थसूत्रजी. ✤

नीतिसूत्र।

(संशोधकः-मोतीलाल श्री. माळवी-बाकरोळ.)

ज्यारे क्रोधी माणस पोताना क्रोधनुं कारण जाणे छे त्यारे ते फरीथी क्रोधे भराय छे.

पब्लीअस साईरस.

गुस्सानुं साम्राज्य घणुंकरीने बाल, वृद्ध अने आजारीमां जोवामां आवे छे. ए उपरथी एम समजाय छे के गुस्सो ए नबळाईनुं चिन्ह छे अने नीच छे,

लॉर्ड बॅकन.

जो कोई तने श्राप दे तो तुं तेने आशीर्वाद आप.

बायबल.

जो कोई तने डाबा गाल उपर तमाचो मारे तो तेने माटे जमणो गाल पण तैयार राख.

बायबल.

क्षमा कर अने तने पण क्षमा अपाशे.

बायबल.

संतोष ए तत्ववेत्तानो साचो हीरो छे.

पोलोक.

जेवी रीते सूर्यनी गेरहाजरीमां ताराओने प्रकाशित थवानी परवानगी मले छे तेवी रीते सद्गुणनी गेरहाजरीमां सोनुं प्रकाशित करे छे मतलबके ज्यां सोनुं छे त्यां सद्गुण भाग्येज होय छे ए दृष्टिगोचर छे.

डॉक्टर यंग.

सामान्य रीति एवी छे के कामथी माणसना दीलनी परीक्षा कराय छे, पण ए रीति हमेशने माटे विश्वासने पात्र नथी परंतु जे माणस हमेशने माटे कृपाकार्य करे छे ते स्वभावथी मायाळु छे एवो निश्चय थाय छे.

पोप.

दशाहुमडना चोखलाना पंचमां सुधारानी जरूर.

(ગયા અંકથી ચાલુ.)

(૩) આપણામાં લોકાચારની રૂઢી આજના જમાનાને ઘણી શરમ ઉપ- **લોકાચાર (રાવણાં.)** જાવનારી જોવામાં આવે છે. આપણામાં જ્યારે કોઇને ત્યાં માણસનું મરણ થાય છે ત્યારે તે ધણીના કેવા હાલ થાય છે તે આપ ભાઇઓ જાણો છો અને તે રીવાજ ઘણો ઘાતકીપણાનો છે કે-આપણામાં માણસના મરી ગયા પછી બે માસ સુધી રાવણું (કાણું) જાય છે, તેથી બે માસ સુધી જેને ત્યાં મરણ થયું હોય, તે તો જાણે તેજ વેપાર લેઇ બેઠો હોય તેવીજ રીતે બે માસ સુધી ઘર છોડી કંઇ જઇ શકતો નથી; કારણકે જો ક્યાંઇ જાય અને ઘેર રાવણું આવે તો પછી તે લોકોની મેમાનગીરીની સગવડ કોણ કરે! વળી બે માસ સુધી રડવા કુટવાથી ઘણા તેના ઘરના માણસો માંદા પડે છે અને 'પડ્યા ઉપર પાટું' જેવું બને છે તેમજ એક તો માણસ મરી ગયું હોય તેની ચિંતા હોય અને બીજું સો દોઢસો રૂપિઆ રાવણા પછવાડે ખરચવાની ચિંતા હોય તથા રાવણાવાળા આવેલાઓની પુરતી રીતે સગવડ રાખવી જોઇએ, નહિ તો પોતાની ચર્ચા થાય; ત્યારે તેનાથી તો બે માસ સુધી વેપાર અગર કોઇ રીતનો કામ ધંધો થાય નહિ અને આખા બે માસ તો આ જાતિના વેપારમાં ચાલ્યા જાય એટલે પરબાર્યો તો ખુવારજ થઇ જાય! તો મારા વહાલા ભાઇઓ, આ કુરિવાજ (રાવણા)ની બે માસની મુદત રાખેલી છે તેમાં આપણા ચોખલાના પંચે કંઇપણ ઘટાડો કરી ઘણી ઓછી મુદત રાખવાની જરૂર છે અને તેમાં દરેક ગામવાળાઓના જમણુંના ટંક સરખા કરવા જોઇએ વળી જુવાન માણસના મરણું વખતે પણ અમુક દિવસ રહેવાનો જે શરમ ભરેલો ચાલ છે તેને દૂર કરી વધારેમાં વધારે ત્રીસ વરસના જુવાનો મરણમાં તે ગામમાં એક ટંક પણ જમવાની મનાઈ કરવી જોઇએ. જ્યાં સુધી આવા ઘાતકી જડધારાઓનું મૂળ કહાડવામાં આવશે નહિ ત્યાં સુધી આપણને સારો રસ્તો જડી શકવાનો નથી.

(૪) આપણામાં કજોડાં ઘણી જગ્યોએ થાય છે અને તેનો પ્રત્યક્ષ **બાળલગ્ન અને કજોડાં** પુરાવો ગઇ સાલે કેટલાક કજોડાંથી લગ્ન થયેલાછે તે આપ સર્વેને વિદિતછે, તો તેનો ખાસ અટકાવ કરવાની જરૂરછે અને તે કારણોથી વિદ્યાભ્યાસ આગળ વધી શકતો નથી અને લાકડેમાકડું વળગાડી દઇ આપણી બ્હેન બેટીઓની તેમજ ભાઇ પુત્રોની અમુલ્ય જીંદગી ઉપર પાણી ફેરવીએ છિએ. જે જ્ઞાતિમાં ગામમાં અને ઘરમાં તકરાર ટંટા તેમજ ક્લેશ કંકાશ જોવામાં આવેછે તેમજ કજોડાં પણ નાનપણનાં સગપણથી થવા પામેછે તે બંધ કરી કન્યાની મોટી ઉમરે વરકન્યામાં ઓછામાં ઓછા પાંચ વર્ષના તફાવતથી સગપણ કરવાની રૂઢી દાખલ કરવામાં આવે, તો ઘણોજ ફાયદો થાય અને મોટી ઉમરનાને સહેલથી કન્યાઓ મળી શકે. એમ કરવાથીજ બાળલગ્ન તથા કજોડાંનું મૂળ નાબુદ થશે અને તે બદલ આપણા મહાન્ દયાળુ નામદાર શ્રીમંત, ગાયકવાડ સરકારે ખાસ બાળલગ્નનો ફરજીયાત કાયદો ઘડેલોછે અને તે કાયદાનો સારીરીતે ન્યાયપૂર્વક અમલ થાય છે. જ્યારે બાળલગ્ન બદલ આપણી ન્યાયી સરકાર આટલી કાળજી રાખેછે તો આપણે તેમનો જેટલો ઉપકાર માનીએ તેટલો ઓ-

છો છે ત્યારે આપણા ચોખલાંના પંચે બાળલગ્ન અને કજોડાં બંધ થવા માટે ખાસ **ફરજીયાત નિયમ** બાંધવો જોઇએ અને તે નિયમ છાલા મુકામે પંચ એકઠું થયેલું ત્યારે ઘડેલોછે તે અમલમાં લાવવાની ખાસ જરૂરછે અને બાળલગ્ન તથા કજોડાં સંબંધી દરેક સભાઓમાં તથા વર્તમાનપત્રોમાં ચર્ચા ચાલે છે તો આપણે જેવી રીતે ઝેરી જાનવર જોઇ ન્હાસી જઇયે છીએ તેવીરીતે આ ઝેરી કુરીવાજ કેમ નહિ કાઢવો જોઇયે ?

લગ્નના નક્કી દિવસ

(૫) આપણામાં લગ્ન વખતે સાત દિવસ જાન રાખવાનો રીવાજ છે અને તેથી એક બીજામાં આનંદ માનીએ છીએ અને તેમાં સામો ચૂલો માંડવો પડે છે, તો તેના કરતાં ત્રણ દિવસ જાન રાખવાનો નિયમ થવો જોઇયે અને તેટલા વખતમાં લગ્ન કાર્ય કરવું જોઇયે કે જેથી ઓછા દિવસો થાય અને ખર્ચમાં બચાવ થાય. બીજી કોઇ કોમમાં સાત દિવસ જાન રહી શકતી નથી, સામા ચૂલા માંડવાનો રીવાજ નથી, તો આપણે બીજા ગામમાં જઇ સામો ચૂલો માંડવો તે ઘણું શરમાવા જેવું છે અને વળી કંઇ ચીજ જોઇયે અને વેવાઇને ત્યાં લેવા જાય ને તેમાં કંઇ બોલાબોલી થાય, તો ઉલટી તકરાર થાય છે. વળી લગ્નમાં આપણી જ્ઞાતિ વગરના (બીજી જાતના) વધારેમાં વધારે કેટલા માણસો લઇ જવા તે નક્કી કરવું જોઇએ અને તેમ કરવાથીજ આપણને અનેક ફાયદા થવા સંભવ છે તે આપ જાણો છો અને તેમાં તાગ **તારણનો આંકડો** પણ નક્કી કરવા આપને મારી ભલામણ છે. ઉપરની બાબતોમાં યોગ્ય સુધારો નહીં હોવાથી ઘણા ઠેકાણે સગા સંબંધીમાં નજીવી બાબતોની તકરારો ઉઠે છે તે દૂર થઇ જશે અને સ્નેહમાં વધારો થશે.

જૈન વિધિથી લગ્ન.

[૬] આપણે જૈન છતાં આપણામાં જૈન વિધિથી લગ્ન થતાં નથી તેથી વરકન્યા એક બીજાની શું ફરજ છે તે નહિ સમજતા પોતાનો ખરો ધર્મ ભૂલી જાય છે માટે જૈન વિધિથી લગ્ન કરવા આપણા ખેડવા બ્રાહ્મણને ભલામણ કરવી જોઇએ. કદાચ ખેડવા બ્રાહ્મણ આપણને એવું સમજાવે કે સાથે લગ્ન થવાથી અમારાથી કેવી રીતે જૈન વિધિથી લગ્ન બની શકે, તો જણાવવું કે તમારે તેમ કરવું પડશે અને નહિ કરશો તો અમો જૈન વિધિથી લગ્ન કરાવીશું અને તેમ નહિ સમજે તો આપણા પંચ તરફથી કોઇ પંડિતજીને બોલાવવા જોઇએ અને તેમની પાસે જૈન વિધિથી લગ્ન કરાવવા. પણ તે બદલ પંચે નિયમ કરવો જોઇએ કે જૈન વિધિ સિવાય કોઇએ લગ્ન કરવાં નહિ.

વર્ષી વખતે શું કરવું?

[૭] માણસના મરણની વર્ષી [વાર્ષિકતિથિ] વખતે વિધવા સ્ત્રીને પોત નાખવા ઘણું માણસ એકઠું થાયછે તે બંધ કરાવી પીયર પક્ષના એકજ માણસની છુટ મુકવી જોઇએ જેથી હેરાનગતિ ઓછી થશે અને અનેક ફાયદા થવા સંભવ છે.

ચૂડાનો સુધારો

[૮] આજે કેટલાક વર્ષોથી ચુડા (ચૂડા)નો પહેરવેશ બદલવા બદલ ચર્ચા ચાલી રહેલીછે. આગળ આપણા વડવાઓ મારવાડના રહીશ હોવાથી આપણી જ્ઞાતિમાં મારવાડના જેવા ચૂડાઓ પહેરવામાં આવેછે, પણ ગુજરાતમાં રહેતા હોવાથી બીજા પહેરવેશમાં ફેરફાર થયો છે અને ચૂડા તેજ કાયમ રહ્યાછે તેથી કહેવત મુજબ થયું કે 'નહિ હિન્દુમાં કે નહિ મુસલમાનમાં' તેવી રીતે 'નહિ મારવાડી પહેરવેશ કે નહિ ગુજરાતી પહેરવેશ' તેથી ઉ-

લહુ ખરાબ દેખાયછે અને ખરચ સરખો છે તો હવે જમાનાને અનુસરી ચૂડામાં ફેરફાર કરવો જોઇએ ને તે બદલ છાલા મુકામે પંચ એકઠું થયેલું ત્યારે ચૂડા ફેરવવાનો ઠરાવ થયો હતો તે અમલમાં લેવો જોઇએ.

[૯] આપણા ચોખલાના પંચમાં અસલ રીવાજ એવો હતો કે જ્ઞાતિમાં

દંડના પૈસાનો ઉપયોગ.

જે કોઇ ગુન્હો કરે તેનો દંડ લેવાતો હતો અને તે દંડના જે રૂપિઆ આવે તે પંચના ખાધાખરચમાં વપરાતા હતા, પણ હાલ અમદાવાદ મુકામે શ્રીમંત શેઠ પ્રે. મો. દિ. જૈન બોર્ડીંગમાં પંચ એકઠું થયેલું ત્યાર પછી તે કાયદો રદ કર્યો હતો અને છાલા તથા વદરાળ મુકામે પંચ એકઠું થયેલું તે વખતે આપણામાં મુખ્ય ગામ બેંતાલીશ ગણાયછે તે મુખ્ય ગામોના સૌ સૌના રસોડાનું ખરચ પોતપોતાનું પંચ કરેછે, તેમાં ચોખલાના પંચના પૈસા વપરાતા નથી, તો હવે જે દંડના રૂપિઆ આવે તેનો એવીરીતે ઉપયોગ કરવો જોઇએ કે તેનો અમુક ભાગ શાસ્ત્રદાનમાં કાઢવો એટલે સુરતથી પ્રગટ થતા માસિક 'દિગંબર જૈન' ની ઓફીસમાંથી ભેટનું પુસ્તક પ્રગટ કરવાને અથવા ગત સાલે સુરતમાં સ્થપાયલી સસ્તી 'જૈન ગ્રંથમાળા' માં મોકલી આપવા કે જેથી દિ. જૈનના ગ્રાહકોને અને ગ્રંથમાળાને આવી સારી મદદ મળવાથી તે સારા પાયાઉપર આવી પોતાનું નિયમિત કાર્ય કરી શકે. આ ઉપરાંત દંડના અમુક ભાગમાંથી એક ઉપદેશક રાખવો કે જેથી જ્ઞાતિ ઉન્નતિ થાય તથા જૈન ધર્મનું રહસ્ય આપણને મળી શકે તેમજ એક ભાગ ગરીબ વિદ્યાર્થીઓને સ્કોલરશીપ આપવા માટે કાઢવો જોઇએ.

આ લેખ વાંચી કેટલાક ભાઇઓ એમ કહેશે કે આપણા વડવા-ઘરડા કંઇ ગાંડા હશે કે આવા કાયદા બાંધ્યા હશે પણ તેમ કહેનારની ભૂલ છે. આપણા વડવા ઘણા સમજુ હતા, પણ તે વખતનો જમાનો ઘણો સારો હતો અને તેઓએ જમાનાને અનુસરી કાયદા બાંધેલા હતા. વળી જો આપણે આપણા વડવાઓના દાખલા લઇશું તો આપણા વડવા પ્રથમ ધર્મને માટે છવ અર્પણ કરવા તૈયાર થતા તથા રાજ્યમાં આગેવાનો ગણાતા હતા, અસલ પાંચસો રૂપિયાનું પહલું હતું વગેરે રિવાજો આપણા વડવાના સમયમાં હત, અને તેઓ ઘણા હિંમતવાન અને બળવાન હતા. આપણાથી હાલ પાંચ કે સાત ગાઉ ચાલી શકશે નહિ અને તેઓ પચીશ ગાઉ ચાલ્યા જતા, વળી તે સમયે સોંઘવારી કેટલી હતી વગેરેનું હાલ તમારી પાસે શું છે? કંઇ નહિ, ત્યારે જમાના પ્રમાણે ફેરફાર થવોજ જોઇએ.

લી.

દશા હુમડ પંચનો એક સેવક.

श्री

आदिपुराण ग्रंथ।

भगवज्जिनसेनाचार्यकृत यह बड़ा भारी ग्रंथ मूल सहित सरल हिंदी टीकामें छप रहा है। मोटे और मजबूत कागजपर बड़े टाइपमें खुले पत्रोंपर छपता है। १४२४ पृष्ठ तैयार हैं और आगे छप रहा है। कुल न्योछावर १६ सोलह रुपये हैं जिन्हें चाहिये वे १६) भेजदें। अथवा आज्ञापत्र डाक खर्चके वी. पी. से भेज दिया जायगा।

मिलनेका पता-लालाराम जैन
शीतलमाला, इंदौर सिटी।

विधवाविवाह निषेध।

'जैनहितैषी', 'जैन तत्वप्रकाशक' और 'जैनहितेच्छु' (गुजराती) में उनके सम्पादकोंने जो निंद्य विधवाविवाहकी चर्चा छेड़ी है, वह पवित्र जैनधर्म व उसकी धारक जैनजातिके उद्देश्योंसे सर्वथा विरुद्ध है। ऐसे पापुष्टयापोषक लेखोंसे ज्ञात होता है कि उक्त सम्पादक जैनजातिके उच्च उद्देश्योंके रक्षक नहीं किन्तु भक्षक है। और पत्रोंका जैनहितैषी, जैनतत्वप्रकाशक और जैनहितेच्छु रखकर समाजको धोखा देना चाहते हैं। तथा विधवाविवाहके पोषक बनकरके विधवाओंको पुनर्विवाह द्वारा क्षणभंगुर विषयसुख चखानेका उद्योग कर स्वयं संसारमें डूबना और विधवाओंको डुबोना चाहते हैं। उक्त सम्पादकोंका विधवाओं प्रति कर्त्तव्य तो यह था कि वे उन्हें धर्मामृतरूपी शिक्षा द्वारा धर्ममें दृढ़कर स्थितिकरण अंगका पालन करते और स्वपर कल्याणमें प्रवर्तते। जैसाकि पूर्व आचार्योंने किया है—

विधवायास्ततोनार्या जिनदीक्षा समाश्रयः ॥
श्रेयानुतास्विद्वैधव्य दीक्षावाप्राहते तदा ॥१॥

अर्थ—पतिके मरनेके पश्चात् स्त्रीको जिनदीक्षा लेना योग्य है अथवा जिनदीक्षा लेनेकी रुचि न हो तो वैधव्य दीक्षा लेना।

संसारमें डुबोनेवाले अनेक मिथ्याधर्म प्रचलित हैं किन्तु भवसागरसे पार करनेवाला जिनेन्द्र भाषित जैनधर्म ही है इसके अनुयायियोंको तो सर्व जीवों प्रति संसारसे पार होनेका उपदेश देना चाहिये न कि विधर्मियोंका अनुकरण कर खोटा उपदेश दे स्वपर आत्माओंको संसारका कारण बनाना चाहिये।

विधवाएँ इस पंचमकालमें ही नहीं हुई किन्तु चौथेकालमें अभीसे कई गुनी थीं और उनकी आयु भी अधिक होती थी फिर पूर्व महर्षियोंने उनके पुनर्विवाहकी आवश्यक्ता क्यों न समझी? समझें क्यों? वे तो हितोपदेशी थे और उनका उद्देश्य ही संसारमें भ्रमण करते हुए प्राणियोंको सच्चा मार्ग दिखानेका था न कि खोटा। यही कारण है कि रावणादिककी मृत्युके पश्चात् उनकी सहस्रों स्त्रियां संसारिक विषयसुखोंसे मुँह मोड़ अपने आत्महितमें प्रवर्ती। यदि उस कालमें इस समयके मंदबुद्धि पुनर्विवाहपोषक मनुष्य होते तो उनके आत्मकल्याणके मार्गमें अवश्य कंटकबिछाते और उन्हें धर्मच्युत करनेके लिये उद्यत हो जाते। देखिये उस समयकी सीता जैसी सतियोंके भाव आचार्योंने कैसे दर्शाये हैं—

कर्मणा मनसा वाचा रामं त्यक्त्वापरं नरम्।
समुद्वहामि न स्वप्नेप्यन्यं सत्यमिदंमम ॥
यद्येतदनृतं वच्मि तदा मामेष पावकः।
भस्मसाद्भाव मप्ताभाविप्राप्य तत्क्षणात् ॥
अथ पद्मान्नरं नान्यं मनसापि वहाम्यहम्।
ततोऽयंहनलोधाक्षीन्मामां शुद्धि समन्विताम् ॥
मिथ्या दर्शिनीपापां क्षुद्रिकां व्यभिचारिणीम्।
हनलोमां दहत्येष सतीं वृत स्थितां तुमा ॥

(श्री रविषेणाचार्य)

"मनसि वचसि काये जागरे स्वप्न

मार्गे मय यदि पतिभावो राघवादन्य पुंसि तदिह दह शरीरं पावके मामकीनं सुकृतविकृत नीते देव साक्षी त्वमेव"

इससे अनुमान होता है कि उस समयकी स्त्रीसमाजमें इस प्रकारकी शिक्षाका प्रचार था कि दूसरेके साथ पुनर्विवाह करना तो दूर रहो उन्हें स्वप्नमें भी परपुरुषको विकार भावसे देखनेका डर था। इसीसे उनमें इतनी शक्ति थी कि कोई भी उन्हें शीलसे नहीं डिगा सक्ता था जैसे सीताजीके शीलमें रावण अनेक चेष्टाएं कर कुछ भी बाधा न पहुँचा सका। और अंतमें सीताजी शील धर्मकी महिमा दिखानेके लिये अग्निकुंडमें प्रवेशकर संसारमें आदर्श हुई। क्या विधवा-विवाह (पुनर्विवाह) से फिर सीता जैसी सतियें और उनमें लव अंकुश जैसी वीर संतान होनेकी आशा की जा सक्ती है ? कदापि नहीं।

जिन जातियोंने विधवाविवाहकी शरण ली है वे दिनप्रति चारित्रभ्रष्ट होती जाती हैं, उनके विवाहबंधन इतने कमजोर हो गये और स्त्रियोंकी स्वतंत्रता यहांतक बढ़ गई कि स्त्रियां छोटी २ बातोंसे एक पुरुषसे विवाहबंधन तोड़ दूसरे तीसरे आदि अनेक पुरुषोंसे संबंध करनेके लिये तैयार हो जाती हैं। अनेक स्त्रियां तो इसी कुचालसे पतिकी रोगावस्थाके समय उसके आरोग्य करनेकी चेष्टा न कर उससे अरुचि करने लगती हैं कि ऐसा पति किसी तरह मरजाय तो कंटक मिटे, हम स्वतंत्र हो विचरें। कोई तो पतिको विषादिकका प्रयोग कर पुनर्विवाहके सहारे दूसरे पुरुषोंकी घातिका बनती है और कामांध हो अपनी संतानको छोड़ देती हैं, उस संतानका पालन पोषण करनेवाला न होनेसे बहुतसी तो मरजाती है और शेषसे भिखारियों तथा ईसाइयोंकी संख्या बढ़ती है। इत्यादि और भी अनेक हानियां विधवाविवाहसे प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रही हैं। यह बुरी चाल आचार विचार संयम तथा वात्सल्यादि अनेक उत्तमोत्तम गुणोंको रसातलमें पहुँचानेवाली है। अतः जैन बांधवो ! धूर्त लोगोंके धोखेमें मे न आकर अपने पूर्व आचार्योंकी आचारनीतिमें दृढ़ रहो और चिगते हुएको दृढ़ रखकर लौकिक व धार्मिक उन्नति करो यही तुमहम सबका कर्तव्य है—

उक्त पत्रोंने पूर्वापर विचार रहित होकर विधवाविवाहके विषयमें मनमाना लिख मारा है जिसमें कुछ भी तथ्य नहीं है। देखो जैन ग्रन्थोंमें क्या लिखा है—

लौकिक नियम धार्मिक नियमोंसे अविरुद्ध ही रह सके हैं मनमाने नहीं—देखो 'सागारधर्मामृत' पृष्ट १३५—

द्वौहि धर्मौ गृहस्थानां लौकिकः पारलौकिकः।
लोकाश्रयो भवेदाद्य परः स्यादागमाश्रयः॥

अर्थ—गृहस्थोंका धर्म दो प्रकारका है एक इस लोकमें काम आनेवाला लौकिक और दूसरा परलोकमें काम आनेवाला पारलौकिक। उनमें पहला जो लौकिक है वह देशकालके अनुसार लोकके आश्रय है अर्थात् देशकालके अनुसार उसकी विधि बदलती भी रहती है परन्तु वह धर्मशास्त्रसे विरुद्ध कभी नहीं होती तथा दूसरा जो पारलौकिक

यह सिद्धान्तके अनुसार सदा एकसा रहता है। धर्मशास्त्रोंमें गृहस्थको कन्यादान करनेका लिखा है जैसेः—सागारधर्मामृत पृष्ठ १३९—

सुकलत्रं विना पात्रे भूहे मादिव्ययो वृथा।
कीटैर्दंदह्यमानसें ऽतः कोऽम्बुसेकात् द्रुमेगुणः॥६१॥

अर्थः—जिसके श्रेष्ट स्त्री नहीं है ऐसे पात्रको अर्थात् जिसमें मोक्षके कारण सम्यग्दर्शन आदि गुण विद्यमान हैं परन्तु जिसके श्रेष्ट स्त्री नहीं है ऐसे गृहस्थको पृथ्वी सुवर्ण आदि दान देना व्यर्थ है क्योंकि जिस वृक्षका मध्य भाग घुनके कीडोंने बुरी तरहसे खा डाला है ऐसे वृक्षको जल सींचनेसे क्या लाभ? अर्थात् कुछ नहीं। अभिप्राय यह है कि जब विना स्त्रीवालेको धन देना व्यर्थ तब साधर्मी पुरुषको श्रेष्ट कन्यादेकर धन देना चाहिये।

फिर कहिये धर्मशास्त्रसे विरुद्ध वधू या विधवाविवाहका नियम समाज बना सक्ती? कभी नहीं।

देखो 'गृहस्थधर्म' पृष्ट ५४ में महापुराणके आधारसे लिखा है कि विवाह संस्कारोंमें वेदीकी सप्त प्रदक्षिणा देनेपर कन्याकी वधू संज्ञा हो जाती है—

गृहस्थको स्वदारसंतोषव्रतकी रक्षार्थ विवाह करना शास्त्रोक्त है—विवाह पद्धति महापुराण—अथ विवाह. करसास्यगृहस्थधर्म गता मनादि प्रवृत्तिं च प्रति पादयन्नाह—

अन्यांगना परिहृतेर्निन दार वृत्ते, धर्मो गृहस्थ जनता विहितोयमास्ते। नादि प्रवाह इति संतति पालनार्थ मेवं कृतो मुनि वृषे विहितादरः स्याद॥

अर्थ—अन्य अनंगनाका परित्याग तें अर निज स्त्री मात्रमें प्रवृत्तितैं गृहस्थनिका समूह कै योग्य योग्य विवाह कर्म अनादि प्रवाहरूप धर्म तिष्टे है यातैं परंपराका पालनके अर्थ असो पूर्वोक्त प्रकार करतां संता भव्य जीव जो है मुनिधर्मके विषैं रच्यो है पतिकी मृत्यु पश्चात् स्त्रीका कर्तव्य है—

गृहस्थधर्म पृष्ठ नं० २५९ 'त्रिवर्णाचार'के आधारसे—

जब स्त्रीका पति देहान्त कर जावे तब उसको विधवा अवस्थामें रहकर अपना जीवन श्राविकाके व्रतोंके पालनेमें विताना चाहिये। विधवाको किस प्रकार रहना चाहिये इस विषयमें सोमसेन त्रिवर्णाचारके कुछ श्लोक लिखे जाते हैं:—

तत्र वैधव्य दीक्षायां देशव्रत परिग्रहः
कंठ सूत्र परित्यागः कर्णभूषणवर्जनम्॥
शेष भूषा निवृत्तिश्च वस्त्र खंडान्तरीयकम्।
उत्तरीयेण वस्त्रेण मस्तकाच्छादनं तथा॥
खट्वाशय्याञ्जनालेप हारिद्र एव वर्जनम्
शोकाक्रन्द निवृत्तिश्च विकथानां विवर्जनम्।
त्रिसंध्यं देवतास्तोत्रं जपः शास्त्र श्रुतिः स्मृतिः
भावनाचानुप्रेक्षाणां तथात्मप्रति भावना॥
पात्रदानं यथाशक्ति चैकं भक्तिमगृद्धितः
ताम्बूलवर्जनं चैव सर्वमेतद्विधीयते॥

अर्थः—विधवा श्राविका देशव्रत ग्रहण करे, कंठमेंसे मंगल सूत्र उतारे, कानके गहने व अन्य आभूषण न पहिरे, धोती पहिरे, ऊपरके वस्त्रसे मस्तकको ढके, खाट व शय्या पर न सोवे, सुरमा न लगावे, हल्दी लगाकर न नहावे, पतिके लिये शोक न करे न रोवे, खोटी कथाएँ न कहे, तीनो संध्याओंमें श्री जिनेन्द्रका स्तोत्र पढ़े, जाप देवे, तथा शास्त्र सुने, बारह भावनाओंका विचार

करे तथा आत्मस्वरूपकी भावना यथाशक्ति पात्रदान करे, गृद्धता न करके एक समय भोजन करे तथा पान ताम्बूल न खावे।

ऊपरके प्रमाणोंसे स्पष्ट सिद्ध हो गया कि विधवाविवाह सर्वथा विरुद्ध है और साम्प्रतके विद्वानोंने भी इस निंद्य प्रथाको शास्त्र विरुद्ध और हानिकारक बतलाया है।

स्याद्वादवारिधि वादिगजकेसरी न्यायवाचस्पति पं. गोपालदासजी बरैय्या पूर्वमें "जैनमित्र"के कई अंकोंमें विधवाविवाह निषेधक कई लेख प्रकाशित किये गये हैं और उनमें इस बुरी प्रथाको शास्त्रविरुद्ध और अति हानिकारक बतलाया, उन लेखोंको 'जैन मित्र'के पूर्व अंकोंसे हरकोई जान सक्ता है कि विधवाविवाहकी प्रथा कितनी बुरी है। लेख बढ़ जानेके कारण 'जैन मित्र'के सब लेखोंका उल्लेख नहीं किया गया। यहांपर केवल विधवाविवाहका नतीजा जोकि सं. १९६८ पंचम वर्ष अंक २ में प्रकाशित हुआ वह लिखा जाता है–

विधवाविवाहका नतीजा।

नेपल्स शहरका नेप्पोलरजोनी नामक एक मल्लाह है वह विधवाविवाहका एक जीता जागता प्रत्यक्ष उदाहरण इसप्रकार बतलाता है कि, "मैंने एक तरुण विधवाके साथ विवाह किया। उसके प्रथम पतिसे सिल्वीना नामकी एक खूबसूरत पुत्री थी जब वह यौवनपूर्ण हो आई तो अपने कटाक्षोंसे मदोन्मत्त हुआ पुरुषोंको लोटनकबूतर बना रही थी मेरे पिता भी उसके कटाक्षोंके निशाने बनगये और अंतको उन्होंने उसे अपनी स्त्री बना ली अर्थात् मेरी सौतेली मा बन गई। इस हिसाबसे अब मेरा पिता मेरा जमाई हो गया। जो कुमारिका मेरी वर्तमान स्त्रीकी संतान होनेसे पुत्री थी वही मेरी माता हो गई। इसके अनन्तर मेरी स्त्रीसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ वह नये हिसाबसे मेरे पिताका साला हुआ। फिर पुत्र मेरा मामा हुआ इसमें सन्देह ही क्या? कारण मेरी सौतेली मा सहोदर है। पाठक महाशयो! इस विचित्र सम्बंध की लीला यहीं समाप्त न हुई, एक और विचित्र रहस्य निकला–अर्थात् थोड़े दिनोंमें मेरी सौतेली मासे भी एक पुत्र हुआ वह मेरा भाई कहलाया तथा वही मेरी पुत्रीसे उत्पन्न होनेके कारण मेरा दोहिता (नाती) हुआ और इस हिसाबसे मेरी स्त्री मेरी नानी हुई कारणकि वह मेरी सौतेली माकी जननी है। तथा मैं अपनी स्त्री (नानी)का पति भी निश्चय होनेसे अन्तमें कह सक्ता हूं कि "मैं आप अपना नाना होगया" यह चरित्र इस कथाके मूल नायकके श्रीमुखकी वाणी है जो अभी मौजूद हैं। अब कहिये विधवाविवाहके प्रचारक महाशयो! आपको एक घरमें इतने रिश्ते करना मंजूर है? मुझे भय होता है कि यदि ऐसा हुआ तो बड़ी भारी आपत्ति यह आन पड़ेगी कि प्रत्येक घरमें रिश्तोंका हिसाब किताब रखनेवाले एक २ मुनीमकी जरूरत, सो भी पुराणगणितज्ञ, ऐसे मुनीमका तो मगज ही घूम जावेगा ऐसे विचित्र बीजकसे!"

ऊपरके नतीजेसे देखा महाशयो, विधवाविवाह कैसी निंद्य पशु प्रथा है!

साधु और अर्जिकाका विवाहः-

" अमृतसरमें एक श्वेताम्बर साधु और आर्जिकाने आर्यसमाजकी पद्धतिके अनुसार परस्पर विवाह कर लिया है। विना इच्छाके छुटपनमें मुंड़े हुए मूर्ख त्यागी और क्या करेंगे ? श्वेताम्बर समाजके साधुओंमें ऐसे चेले मूंड मूंडकर अपना परिवार बढ़ानेकी ईच्छा बहुत प्रबल होरही है। इस ईच्छाका कुछ संयम न होजाय तो अच्छा है ।" देखा महाशयो ! प्रेमीजी पहले इस प्रथाकी कितनी निन्दा करतेथे फिर न मालूम किस खोटे अभिप्रायसे 'जैनहितैषी' में ऐसे निंद्य प्रथापोषक लेखोंको स्थान दिया !

प्रेमीजीको दुष्ट लोगोंके बहकानेमें न आकर अपने पूर्व उद्देश्यपर तत्पर रहना चाहिये। और ऐसे निंद्य प्रथापोषकोंके लेखोंका खूब निराकरण करना चाहिये इसीमें उनकी शोभा है और तभी वे समाजके हितैषी कहला सके हैं। अब हम इस लेखको यहीं समाप्त करते हैं और जैन समाजको सावधान करते हैं कि कभी भी ऐसे लोगोंके धोखेमें न आकर अपने पूर्वजोंकी आचार नीतिमेंही दृढ़ रहना चाहिये जिससे ऐसी निंद्य प्रथाएं जैनजातिमें स्थान न पाने पावें।

भगवानदास दि० जैन, महामंत्री
दि० जैन मालवा प्रां० सभा-बड़नगर।

बालबोध जैनधर्म भाग ३जो.
(गुजराती अनुवाद.)

गुजरातनी दरेक पाठशाला माटे अवश्य मंगावो. किं. ०)-॥

मेनेजर दि. जैन पुस्तकालय—सूरत.



'पाटलिपुत्र' का सचित्र विशेषांकः-

बांकीपुरसे दो वर्ष हुए 'पाटलिपुत्र' नामका बड़ी साईझके १२ पृष्ठका हिन्दी साप्ताहिक पत्र प्रकट होता है जिसकी लेखनशैली इतनी उत्तम है कि यह पत्र हिन्दी पत्रोंमें अव्वल नंबरका गिना जाता है और पटना हाईकोर्ट तथा हिन्दू विश्वविद्यालयके उपलक्षमें यह विशेषांक इतना तो उत्तम प्रकट किया गया है कि जिससे सारा हिन्दी संसार चकित हो गया है। आजतक हिन्दीमें ऐसा एक भी विशेषांक नहीं प्रकट हुआ है। ७५ पृष्ठके इस विशेषांकमें विद्या, व्यापार, कलाकौशल्य, ऐतिहासिक आदि विषयोंके २७ लेख और ८७ चित्र बड़े महत्वके हैं। सारा अंकही उत्तम चिकने कागजपर रंगीन शाहीसे छपा हुआ है। लेखोंमें प्राचीन भारतियोंका वस्त्र-परिचय, विहारके तीर्थ, राष्ट्रका विकाश, राजभक्त भारत, विद्याका महत्व, विहारके दर्शनीय स्थल, सच्ची उन्नति, अंग्रेजी राज्यकी उपयोगिता, प्राचीन भारतका विदेशसे व्यापा आदि लेख बहुतही उपयोगी है। पटना औ विहारके प्राचिन दर्शनीय स्थलोंके चित्र बहुत है। इस विशेषांकका अलग् मूल्य सिर्फ १) और ग्राहकोंको ०॥≈ में मिलता है। साप्ताहिकका वार्षिक मूल्य सिर्फ दो रुपया मय पोस्टेज है। हिन्दीके हरएक पाठकोंको उचित है कि ऐसे सस्ते और महत्वपूर्ण पत्रका

ग्राहक अवश्य होजावें। पता-मैनेजर 'पाटलिपुत्र' बांकीपुर (मुरादपुर)

"जैनहितैषी"—नये वर्ष (भा० १२ अं. १ जनवरी) से 'जैनहितैषी' का रूपरंग बदल गया है। रोयल ८ पेईजी साईझ ६० पृष्ठ और वार्षिक मूल्य ३) कर दिया है। टाईटल पृष्ठका चित्र बड़ा ही भावपूर्ण और जैन समाजकी शोचनीय दशा-को दर्शानेवाला है। 'अप्रतिष्ठित प्रतिमा पूज्य है या नहीं' इस विषयका पं. उदयलाल कास-लीवालका लेख विचारणीय है और 'जैनोंकी वर्तमान दशाका चित्र' इस विषयका श्रीयुत वाडीलाल मोतीलाल शाहका लेख यद्यपि अच्छा है तौ भी इसमें एक रीतिसे विधवा-विवाह करनेका विचार दर्शाया है वह ~~ठीक नहीं है। आजकल श्रीयुत वाडीलाल मोतीलालजी तौ विधवाविवाह होने-के बारेमें अपने 'जैनहितेच्छु' (गुजराती)में बहुत लेख लिख रहे हैं यहां तककी आप उसका धर्मसे कुछ संबंध नहिं मानते और लौकिकसे ही उसका संबंध बतलाते हैं। प्रेमीजी लिखते हैं कि—'हितैषी' के सभी विषयोंमें हमारी सम्मति है ऐसा नहीं समझना चाहिए परंतु जैनधर्मविरुद्ध लेखोंको तो स्थान ही नहीं देना चाहिए। धर्मविरुद्ध विचारोंको अपने 'जैनहितैषी' नाम धारक पत्रमें प्रकट होने देना यही वह ठीक है? यह विशेषांक ७२ पृष्ठका है और २–३ संयुक्त अंक भी प्रकट हो गया है। मिलनेका पता-जैनग्रंथ-रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग—बम्बई।

धनंजय-नाममाला-प्रकाशक पं. मो-तीलाल जैन, अधिष्ठाता हीरालाल जैन विद्यालय देहली। मूल्य ०)–। इसमें महाकवि धनं-जयकी नाममालाके २०५ मूल श्लोक और अनेकार्थ नाममाला भी है। विद्यार्थियोंको उपयोगी है।

सुबोध रत्नशतकम्—प्रकाशक राजवैद्य शीतलप्रसाद जैन–देहली। इसमें माणिक्यमुनि-विचारित हितशिक्षाके १०० संस्कृत श्लोक हैं। विनामूल्य मिलता है।

जैन उपदेशी गायनः—प्रकाशक–पं. मूलचंद गुप्त. मधुवन (पो. पारसनाथ, हजा-रीबाग)। मूल्य ०)≈। इसमें अनेक भजनोंका संग्रह है वर्षमें ऐसे १२ भाग आप निकालनेका प्रगट करते हैं। वार्षिक मूल्य २) रखा है। उपहार भी देते हैं।

व्याह निशाजागर्न—प्रकाशक–जैन भगवती आलय बांकेलाल मुजवार–करहल (मैनपुरी)। मूल्य ०)०॥ इसमें ब्याहशादीके अनेक कुरिवाजोंका उपदेशपूर्ण विवेचन भजन रूपमें है।

सच्चे सुखका उपाय—दि. जैन मालवा प्रां. सभा बड़नगरकी यह ५वीं ट्रेक्ट ब्र. शीतलप्रसादजीकी लिखी हुई है जिसके २८ विषयों बहुतही। मननकरने योग्य है। महामंत्री लाला भगवानदासजी (बड़नगर)को लिखनेसे विनामूल्य मिलती है।

धर्मशिक्षा-संपादक और प्रकाशक-पं. भागमल जैन–इन्दौर। यह पुस्तक कक्षा १ डिवीजन हेतु तयार की गई है जिसमें प्रभा-वती सहित ७ पाठ हैं हरएक पाठशालामें मंगवाकरने योग्य है।

दिशाभूल—अनुवादक और प्रकाशक—बाबूलाल मयाशंकर दुबे—राजनांदगांव (यु. पी.) पृष्ठ १६५ और मूल्य ०।≈ । महाकवि भारवके एक संस्कृत उपन्यासका यह अनुवाद है जिसमें अनेक विषयोंका उपदेश उपन्यास रूपमें ही है।

समाजहितकारी—श्री आत्मानंद जैन ट्रेक्ट सोसायटी—अंबाला शहर की यह १२ वीं ट्रेक्ट है जो विनामूल्य मिलती है। विषय पढ़नेयोग्य है ।

जाति प्रबोधक—संपादक और प्रकाशक बाबू दयाचन्द्र गोयलीय बी. ए.—लखनउ । वार्षिक मूल्य १) इस नवीन मासिक पत्रमें जातिसुधारविषयक लेख बहुत जोशीली कलमसे लिखे जाते है । दो अंक प्रकट हो चुके हैं । हरएक अंकमें २० पृष्ठ रहते है परंतु ग्राहकोंको उसकी चार चार नकल देते है जो दूसरे तीन महाशयोंको बंट सकती है यातो चार महाशयों साथ मिलकर ग्राहक हो सकते है। कुछ लाभके लिये नहीं परंतु जातिसेवाके लिये ही यह कार्य बाबू दयाचंद्रजीने शुरू किया है ।

'भारतहितैषी'—संपादक गुलशनराय जैन—देहरादून । वार्षिक मूल्य १॥) । ४८ पृष्ठका यह नवीन त्रिमासिकपत्र भारतीय साहित्य, इतिहास और शिक्षा संबंधी लेखोंसे विभूषित है । जब त्रिमासिक है तो मूल्य भी इससे कुछ कम होना चाहिए ।

मनोरमा—मंडीधनौरा (यु. पी.)से प्रकट होती हुई यह नवीन सचित्र मासिकपत्रिका है जिसके संपादक प्यारेलाल दीक्षित और रामकिशोर गुप्त अलंकारशास्त्री है । छपाई सफाई अच्छी और हरएक अंकमें रंगीन चित्र भी रहता है । पत्रिकाके अनेक लेख पढ़नेयोग्य होते है ।

जैनसिद्धांतविद्यालय-मुरैनाका रिपोर्ट—स्या. वा. न्या. पं. गोपालदासजी बरैय्याद्वारा स्थापित इस विद्यालयका यह पंचम वार्षिक रिपोर्ट है । बड़े हर्षके साथ लिखना पड़ता है कि इस विद्यालयने अल्प समयमें दि. जैनियोंकी सभी संस्थाओंसे बहुत कुछ कार्य करके दिखाया है । विद्यालयसे अनेक पंडित, उपदेशक और अध्यापक तैयार हो चुके है । विद्यालयके साथ बोर्डिंग, पुस्तकालय, लायब्रेरी, साप्ताहिक सभा आदिकी भी योजना है । ७१ विद्यार्थी लाभ लेते हैं । ध्रुवफंड ज्यादे नहीं है इस लिये इस विद्यालयको हरएक शुभाशुभ प्रसंगपर कुछ न कुछ सहायता भेजते रहना चाहिए ।

समाज बंधनाची आवश्यकता—प्रकाशक—आण्णप्पा नानप्पा लेंगडे—शहापुर (बेलगाम) कि. ०)०॥ 'दिगंबर जैन'ना खास अंकमां प्रगट थयेल आ मराठी लेखने पुस्तक रूपे प्रगट कर्यो छे.

હિંદુ અનાથાશ્રમ—નડિઆદ-આ સંસ્થાનો આ ૨૦૦ પૃષ્ટનો સચિત્ર રિપોર્ટ છે જે જોતાં જણાયછે કે સ્થાયી ફંડ ન હોવા છતાં આ સંસ્થા કેટલું બધું મહાભારત કાર્ય ઉપાડી રહી છે. માત્ર કાર્ડ લખવાથી આ રિપોર્ટ મફત મળે છે.

'વિવેચક' ખાસ અંક—લાઠરસ (નાંદોદ) થી પ્રકટ થતા માસિકનો આ ખાસ અંક (ત્રણ અંક સંયુક્ત !) છે, જેમાં ૩૩ ચિત્રો અને ૨૭ વિષયોના લેખ છે. પ્રયાસ ઉત્તમ છે, તેમ લેખો ઉપયોગી છે છતાં પણ જો

भारत जैन महामंडल।

इस सभाके दो मुख्य उद्देश हैं—

(१) जैन जातिकी उन्नति और पारिस्पारिक प्रेम तथा मेल।

(२) जैनधर्मका प्रचार।

संक्षेप में यह कहा जासक्ता है कि धार्म्मिक मतभेदपर तर्कवितर्क करनेका कार्य्य इस मंडलके उद्देश में नहीं है। यह तर्कवितर्क प्रायः भिन्न२ समुदायके पारिस्परिक द्वेष और संकुचित विचारके कारण होते हैं। सत्यता के निर्णय के लिये नहीं। इनसे मंडलको कभी कोई सम्बन्ध नहीं है—

मंडलका उद्देश यह है कि जैन जातिकी इस समयकी अवस्थाको किसप्रकार उन्नतिपर पंहुचावें। उसका यह विचार है कि यह जब हो सक्ताहै जबकि उसके व्यापारकी उन्नति हो। आर्थिक अवस्था संभले—बुरे रस्म और रिवाज दूर हों और हमारे धर्मके सामान्य सिद्धान्त भलीभांत विस्तारसे प्रगट किये जावें।

यह सब काम अति गहन हैं और यह चाहते हैं कि कुल जैन जातिमें पारिस्परिक सहानुभूति और ऐक्यता हो—बुरे रिवाजोंको हटाना, आर्थिक दशाको उन्नति देना, शिक्षादि के प्रश्न, दरिद्रता हटाना उद्योगिक—व्यापारिक उन्नति, नातिजाति विभाग, स्त्रियोंकी स्थिति आदि प्रश्नोंका समाधान और इन सबसे अधिक आवश्यकीय यह कि अपने तत्वज्ञानका रहस्य, अपने न्याय शास्त्र तथा अध्यात्मज्ञान को दुनियापर प्रगट करे—यह सब ऐसी बातें हैं कि जिनपर हरएक जैनीका ध्यान होना चाहिये।

इस उन्नतिके समयमें धर्मके नियम जो साईन्सके अनुकूल हैं और इस समयके तत्वज्ञातोंके विचारोंके अनुसार हैं—केवल जैनधर्मके सिद्धान्त हैं। इस धर्मके सोतेसे एक बूंदके लिये पज्छमी दुनिया हाथ फैला रही है। क्या उनको प्यासे मारना हमारा धार्मिक सिद्धान्त आज्ञा दे सक्ता है? अतः जैन जातिके शुभचिन्तको! साहस करके तत्पर हो जाओ। मैं दिगम्बर हूं, मैं श्वेताम्बर हूं, मैं स्थानकवासी हूं यह विचार अन्य अवसरके लिये रहने दो। अब आवश्यक्ता है उन कामोंके करनेकी जिनका ऊपर ध्यान है। यदि जैनधर्मका कुछ श्रद्धान है तो बतलाओ, आप क्या कार्य्य कर सकते हैं? उसीका भार आपको दिया जावे, आप जिस प्रकारकी उपरोक्त कार्य्यमें सहायता पहुंचा सके हैं पहुंचानेका यत्न करें, फिर देखिये दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होती है। हमारी जाति और हमारा धर्म उस शिखर पर शीघ्र पहुंच जाय जहां कि हमारे तीर्थंकरोंका तारा चमकता था। देखें, कौन २ आगाड़ीमें रहते हैं।

चेतनदास, मंत्री, भारतजैनमहामंडल
हरीपपुर (अवध)

 इस वर्षके ग्राहकोंको ७ पुस्तकें उपहारमें मिलेंगी। 

॥ श्रीवीतरागाय नम. ॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रगट थतुं मासिक

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

युत सुरैये गिरिशेश्वचिरै, दिगंबरजैन मिद सुपत्र ।
प्रभो ! महावीर ! ! तव प्रभावात्, समुत्तमामुन्नतिमातनोतु ॥

वर्ष ९ मुं.	वीर संवत २४४२. वैशाख. विक्रम सं. १९७०	अंक ७ मो.



आ अंकमां आपेला समाचारोथी वाचकोने जणाशे के **गजपंथा कोन्फरंस.** आपणी मुंबाई दिगंबर जैन प्रांतिक कोन्फरन्सनी नौवमी बेठक गया मासमां श्री गजपंथानी सिद्धक्षेत्र उपर सफळतापूर्वक थई गई छे. जो के आ समये जनसंख्या ओछी हती, तोपण दरेक काम सफळतापूर्वक थयु छे अने भारजा करता कोन्फरन्सनां जनरलफंडने पण ठीक मदद मळी छे. हवे आ कोन्फरन्समां जे १४ ठरावो थया छे ते पैकी त्रण ठरावो घणाज जरूरी अने महत्वना थया छे ते बाबत थोडीक सूचनाओ करवी योग्य लेखाशे. जयपुरनी जेलमां विना कारणे ने वर्ष थया सडता समाजहितैषी पं. अर्जुनलाल शेठी बी. ए.ना छुटकारा माटेनो जे ठराव करवा भारतजैनमहामंडळ निष्फल निवडयु हतु ते ठराव घणोज सफळतापूर्वक आ कोन्फरंसे कर्यो छे अने नवा वाइसरॉय पासे डेप्युटेशन लई जवानो ठराव थई तेमां बाबू अजितप्रसादजी एम. ए. एल. एल. बी., शेठ हीराचंद अमीचंद शाह सोलापुर अने श्रीयुत जयकुमार देवीदास चवरे वकिल बी. ए. एल. एल. बी.ए जवा स्वीकार्यु छे ए ओछा आनंदनी वात नथी, तो हवे बाबू अजितप्रसादजीए ए बाबत वॉइसरॉय साथे पत्रव्यवहार चलावी डेप्युटेशनने आकारे मळवानी परवानगी मेळवी बीजा चार पांच गृहस्थोने एमां सामेल करी आ डेप्युटेशन घणीज त्वराए लई जवानी जरूर छे. आज सुधी कोई आगळ पडीने जनार तैयार थतु नहोतु पण हवे आ त्रण भाईओए स्वीकारता करी छे एटले एमां चार पांच गृहस्थो जोडाता हवे वार लागशे नहिज. मात्र प्रयास करवानीज जरूर छे जो आपणे आशा राखीए के बाबू अजितप्रसादजी हवे आ काम तावीदे उपाडी लेशे, बीजो महत्वनो ठराव कोन्फरन्स

पाक्षिक पत्र "जैनमित्र" ने आवता कार्तक मासथी अठवाडिकरूपे करवानो थयो छे. समयानुकूल लेखो अने नवा समाचारो आपनार एवा नियमित अठवाडिकपत्रनी आपणी कोममां जे खोट छे ते आ 'जैनमित्र' अठवाडिक थवाथी पुरी पडी शकशेज. हवे एना प्रकाशक तरीके अमारी निमणुंक थयेली होवाथी तथा सुरतमां छपाई सुरतमांथी प्रकट थवानो ठराव थवाथी 'जैनमित्र' नी ऑफिस कार्तक मासथी सुरत आवशे अने ए पत्र सुरतथीज प्रकट थशे, पण कागळ वगेरेनी पुष्कळ मोंघवारीना आवा कटोकटीना प्रसंगमां जो ग्राहकसंख्या संतोषजनक न होय तो अठवाडिकनो खर्च निभाववो मुश्केल थई पडे, माटे अमो सर्वे बंधुओने सूचना करीए छीए के सर्वेए बनती कोशीशे 'जैनमित्र' नी ग्राहकसंख्या वधारवी जोईए. अठवाडिक थतां पोस्टेज साथे वार्षिक मूल्य मात्र रु. ३)ज लेवाशे, माटे दरेक भाईओ तुज रकममां घेरबेठां आपणी कोममां बनता बनावो जाणवानो लाभ मळे ते गुमाववो जोईए नहिं. वळी आ अठवाडिकने लगती जे जे नवीन सूचनाओ जे कोई भाई लखी जणावशे ते उपर पण पूर्ण ध्यान आपवामां आवशे. जैन महल्लनो ठराव विधवा-विवाहना आंदोलनने अटकाववानो छे. हालमां "जैनोदय" "जैन तत्त्वप्रकाशक" अने "जैनहितेच्छु" पत्रोमां विधवाविवाहने उत्तेजन आपनारा जे लेखो प्रकट थवा लाग्या छे ते जैनधर्मथी अत्यंत विरुद्ध छे अने एवा लेखो मंदिरमां न रखाय ते माटे सिफारीश आदर थवानी जरूर छे. जैन धर्म विरुद्धनी हिलचालने मूळमांथी दाबी देवानी अत्यंत ताकीद जरूर छे नहि तो भोळा अने अजाण भाईओ तेथी दोरवाई जाय, तो जैन कोमने घणांज अनिष्ट परीणामो भोगववां पडशे.

ए तो नक्कीज छे के निमित्त वगर कंई पण कार्य थई शकतुं नथी पणतेनुं श्रुतपंचमीपर्व निमित्त आवे ते करवाने दरेकनुं मन अवश्य दोराय छे, ते प्रमाणे जिनवाणी माताना एटले प्राचीन ग्रंथोनी सारसंभाळ करवानो शुभ दिवस श्री श्रुतपंचमीपर्व आवता ज्येष्ठ सुद ५ ने दिने आवी पहोंच्यो छे, जे दिवसे दरेक दहेरासरमांना शास्त्रोने साफसुफ करी तेने ऊंचे आसने बिराजमान करी सरस्वति पूजा करवानी छे तथा जे जे शास्त्रभंडारोनुं सूचीपत्र न थयुं होय त्यांना भाईओनी फरज छे के एक सूचीपत्र तैयार करी राखवुं जोईए तथा अव्यवस्थित ग्रंथोने आगना जैनसिद्धांतभवनमां मोकली आपवा जोईए. वळी आ श्रुतपंचमीने जाहेर पर्व तरिके पाळी ए दिने एकेक सभा थई श्रुतपंचमीपर्वनुं माहात्म्य सर्वे भाईओना मन उपर ठसावी आपणां प्राचीन शास्त्रोना उद्धार करवानां यथे तेटलां कार्यो करवां जोईए.

ચોખલાના પંચે કરેલા ઠરાવો

ઓરણ્ પ્રાંતિજના ૪૨ ગામના દશાહુમડ ભાઈઓનું ચોખલાનું પંચ ગયા માસમાં આસુવામાં મળ્યું હતું. તેમાં થયેલા ઠરાવો આ અંકમાં પ્રગટ કર્યા છે તેમાં ચીનવિવા-હમાં સુધારો કરવાના ઠરાવો તો ઠીક થયા છે પણ કન્યાની સગાઈ ફરી કરવા સંબંધી ના બે ઠરાવો થયા છે તે એ જ્ઞાતિની

ઉન્નતિને આડે આવનારા છે. એ તો જાણીતું છે કે એ જ્ઞાતિ કેળવણી લેવામાં અને ધર્મ જ્ઞાનમાં બહુજ પછાત છે તેનું મૂળ કારણ નાની ઉમરે સગાઇ અને લગ્ન કરી દેવાથી છોકરાઓને પુરતી કેળવણી ન મળવાનુંજ છે. પહેલો ઠરાવ વર કન્યા વચ્ચે ત્રણ વર્ષનો તફાવત રાખવાનો થયોછે જેમાં પણ સુધારો થઇ ઓછામાં ઓછો ૭ વર્ષનો તફાવત રાખવાની જરૂર છે તથા બીજો ત્રીજો ચોથો અને પાંચમો ઠરાવ એકદમ તાકીદે વર કન્યાની સગાઇઓ કરી દેવાને લગતો છે જે વાંચી અમોને અજાયબી ઉપજેછે કે એમાં કેટલી ઉમર સુધીનાં વરકન્યાની સગાઇ કરવી તે જણાવેલું ન હોવાથી એક વર્ષની છોકરી અને ચાર વર્ષના છોકરાની સગાઇ પણ કરી શકાવાનીજ ! વળી એક વર્ષમાં અમુક સંજોગો વચ્ચે સગાઇ ન કરી દે તો દંડ કરવાનો ઠરાવ થયોછે તે થવાની જરૂર અમે તો ધારતા નથી. સગાઇ કરી દેવા સંબંધી ફરજ્યાત ઠરાવ કરવો એ કોઇપણ રીતે યોગ્ય નથી, પણ જ્ઞાતિની ઉન્નતિ અર્થે અને જ્ઞાતિના બાળકો અને બાળકીઓને કેળવણી આપી શકાય તે માટે તો એવો ઠરાવ થવાની જરૂરછે કે કન્યાની ઉમર ઓછામાં ઓછી દશ વર્ષની થયાં વગર સગાઇ કરવી નહિ અને વરકન્યા વચ્ચે ૭ વર્ષનો તફાવત રાખવાનો ઠરાવ થવો જોઇએ તેમજ કન્યાનાં લગ્ન પણ ૧૩-૧૪ વર્ષની ઉમર પહેલાં નજ કરવાં જોઇએ, જેથી ૭ વર્ષનો તફાવત રાખવાથી લગ્ન વખતે વરની ઉમર લગભગ ૨૦ વર્ષની થશે, જેજ સાધારણ રીતે લગ્નલાયક ઉમર ગણી શકાય. આપણે આશા રાખીશું કે ચોખલાના પંચના અગ્રેસરો આ બાબત પૂર્ણ વિચાર કરશે અને હવે પછી જ્યારે પણ પંચ મળે ત્યારે સગાઇ કરવા સંબંધીના જે ઠરાવો થયા છે તેમાં ઘટતા સુધારાઓ કરવા અવશ્ય લક્ષમાં લેશેજ. વળી આ પંચમાં સલાહશાંતિથી સર્વે કાર્ય થવા માટે તથા લગ્ન અને મરણ સમયના કેટલાક હાનિકારક રિવાજો અટકાવવા જે ઠરાવો કર્યા છે તે માટે તેમજ સગાઇની સાકર વેંચવાને બદલે ૯) લેખે ઉઘરાવી રૂ. ૭૦૦) એકઠા કરી તેનો ઉપયોગ જીર્ણોદ્ધારના કાર્યમાં વાપરવાનો ઠરાવ કરવા માટે આ ભાઇઓને અમો ધન્યવાદ આપીએ છીએ.

❧　❧　❧

श्वेतांवर जैन कोन्फरंसः

दिगंवरी भाईओ करतां आपणा श्वेतांवरी-भाईओमां धर्मोत्साह केटलो वधो छे ते गया मासमां मुंबाईमां मळेली श्वेतांवर जैन कोन्फरंसना कार्यथी आपणने जणाशेज. आ कोन्फरंसमां आशरे लाख रुप्यानुं फंड छे, वळी वर्षे चार आना लेखे 'सुकृत भंडार फंड'ने नामे नाणां उघरावाय छे तथा कोन्फरंस समये टिकीटो राखवा उपरांत जनरल फंडमां पण हजारो रुप्या भराय छे, जेथी कोन्फरंसना सर्वे खातांओ केटली बधी सफळतापूर्वक आपणा श्वेतांवरी भाईओ चलावी रहा छे जे जाणी आपणी महासभाए तथा प्रांतिक सभाए नीचुं जोवा जेवुंज छे केमके आपणे दरेक बाबतमां घणाज पछात छीए. केळवणी अने व्यापार संबंधी जे जे ठरावो आ कोन्फरंसे कर्या छे तेनुं अनुकरण आपणी सभाओए करवुं जोईए तथा कोई एवा प्रयासो थवा जोईए के जेथी आपणी सभाओमां लाख पचास हजारनुं फंड थई केळवणीनां कार्यो वधारी शकाय. आपणी कोन्फरंस अनेक ठरावो तो करे छे, पण नाणांनी सगवड वगर ते केवी रीते अमलमां लावी शके? माटे आपणी कोन्फरंसे पण श्वेतांवरीभाईओनी माफक 'सुकृत भंडार फंड' जेवी एकाद स्कीम उभी करवी जोईए जेथी दर वर्षे सारी रकम एकठी करी शकाय. जो प्रयास थाय, तो आपणा भाईओ दर वर्षे माणसदीठ मात्र चार आना आपवाने कोई ना पाडशे नहि अने तेथी जायुकनी सारी आवक मेळवी शकाशे.



દશાહુમડના ચોખલાના પંચમાં ઠરાવો—ચોખલાના ૪૨ ગામોનું પંચ અનુવા મુકામે ફાગણ વદ ૧૦ થી સાત દિવસ સુધી ભેગું થયું હતું, જેમાં ૭૦૦ ની સંખ્યા હાજર હતી જેમાંથી પાંચ ઘેરથી એક એગ ગણી ૧૭૧ નું પંચ નીમવામાં આવેલું જેણે નીચેના ઠરાવો કર્યા છે-(૧) વર કન્યા વચ્ચે ત્રણ વર્ષનો તફાવત રાખવો અને એનો ભંગ કરનાર વર કન્યાના બાપ પાસે જુદો જુદો રૂ. ૫૧) દંડ લેવો. (૨) જે ઘેર છોકરાની સગાઇ થાય ..રે ત્યાં કન્યા હોય તો ૧૨ માસમાં ઉતારી દેવી ને તેમ ન કરે તો પ્રથમ વરસે રૂ. ૨૦) અને બીજા વરસે રૂ. ૧૫) અને ત્રીજા વરસથી રૂ. ૧૦) (દંડ !) ચાલુ આપે ! ! ! (૩) સગાઇ કર્યા વગરની કન્યાની સગાઇ ૧૧॥ વરસની અંદર કરી દેવી ! ! ! ને તેમ ન વર્તે તો રૂ. ૧૦૧) આપે ! (૪) અનુવામાં જે વરની સગાઇ થાય તે ઘરમાં કન્યા હોય તો તેની સગાઇ ૧૨ માસમાં કરી દેવી ને તેમ ન કરે તો રૂ. ૧૦૧) આપે ! (૫) જેને ઘેર ૧૧॥ વર્ષ ઉપરની કન્યા છે તે ૭ માસમાં ન ઉતારે તો રૂ. ૧૦૧) આપે ! (૬) કન્યા પરણાવતી વખતે લગ્ન ચોરી તે ૭ ટંક રાખવી તે ઉપરાંત કન્યાના બાપને જીર છે તેમાં ૪ ટંક ગત્યાં અને ૨ દાળભાત્રી. લગ્ન પાછી વાળવી નહિ ને તેમ કરે તો ચોખલાના પંચમાં ઠેર ૧૧ ના ખાસજનું હરાવું કરે. (૭) ખાટલામાં ભગીઆની આરણી ૧ તથા તોડીઓ જોડ એક રૂપાનો મોકલવો. (૮) ત્રમંનામાં કાંઇ હેમનું, કંઠીવાની ઓરણી, હેમની વાંસડી ૧, હેમનું કડું ૧, રૂપાનાં કલ્લાં જો. ૧, ઘાઘરી ૧ તથા કાપડું ૧ એ મુજબ મોકલે. (૯) પલ્લામાં હેમગદી. ૪૦) ના દાગીના વસંત સુધી ખરા તોલથી આપે ને ૬-૭-૮-૯ કલમમાં વધઘટ કરે તો રૂ. ૫) ગામના દહેરાસરને આપે. (૧૦) કન્યા માટે પાનેતરને બદલે રેશમી ગાળો લાવે ને તેમ ન વર્તે તે રૂ. ૧૧ ગામને દહેરે આપે. ૧૧) મરણ પાછળ રાવણાં ઘરધણી માસ ૧ની અંદર એકા મુદતે તેડાવે તેજ મુદતે આવે ને તેમાં પ્રથમના એક ટંકવાળા એક ટંક અને બાકીના સર્વે ૩ ટંક જમવા રહે. નીકળતી વખતે લાડવા આપવા નહિ. આ ઠરાવ તોડે તે રૂ. ૧૧ ગામને દહેરે આપે. (૧૨) દિકરી જમાઇનો સાથરો (કાણુ-રાવણું) નાંખવો નહિ. (૧૩) વરસી ઉપર બાઇનાં પીયર સિવાય કાગળ લખવો નહિ ને વરસ પછી મોં વાળવા જવું આવવું નહિ. (૧૪) નવા પરણે ત્યાંથી કાછળીનો સુડલો (ચૂડો) પહેરવો નહિ. (૧૫) જેને ત્યાં રાવણું આવે તે ઉતરાં ઘરમાં જઇનેજ હાથ વાળે. આનો ભંગ કરે તે ગામને દેહરે રૂ. ૧૧ આપે ને દેહરું ન હોય તે સભાના દહેરાસરે મોકલી આપે.

૧૭૧ ની પંચે કરેલ ઉપલા ઠરાવો સર્વે પંચે કબૂલ કર્યા અને આ પ્રસંગે ૯૨ વેની-શાળ થયા હતા. દરેક વેનીશાળદીઠ રૂ. ૧) અનુવાને મંદિરે અપાયો તથા કેશર તથા મસાલા વગેરેની આશરે રૂ. ૫૦૦)ની ઉપજ અનુવાના મંદિરને થઇ હતી. વળી બ્ર. પાર્શ્વસાગરજીને કુંથલગીરીના કુલભૂષણ વિ-દ્યાલય માટે રૂ. ૩૬૦) ભરાવ્યા હતા તેમજ વેનીશાળ પછી સાકેર વેંચવામાં આવતી, જે બંધ કરી રૂ. ૯) લેખે રોકડા ઉપરાવતા એમાં આશરે રૂ. ૭૦૦) ની ઉપજ થઇ હતી. તેમજ રાયખડના મંદિરની ટીપ માટે રૂ. ૨૧૭)

थयेला पणु ते विचार मांडी वाळवाथी ते नाणुं अमदावादना मंदिरमां जीर्णोद्धारमां वापरवाने ए टीप चालु राखवी वगेरे ठरावो करी एक वर्ष उपर फरी १७१ नी पंच मेळववानो विचार करी पंच वीखेरायु हतुं.

विवाहमें दान-पलवलनिवासी लाला देवकरनदास सर्राफके लडकेकी शादी फिरोजपुरझिरकामें फाल्गुन मासमें हुई जिसमें फिजूल खर्च कुछ भी न करके रु. १५२।) मन्दिर, पलवल पाठशाला, ब्रह्मचर्याश्रम, महाविद्यालय आदिमें दिये गये थे। हमारे श्रीमानों क्या इसका अनुकरण नहीं करेंगे?

केशलोच और जैनकुमारसभाका वार्षिकोत्सव—झालरापाटन केम्पकी इस सभाका उत्सव १२ से १८ मार्चतक रथोत्सवपूर्वक हुआ था जिसमें कुंवर दिग्विजयसिंहजी, पं. मंगलसेनजी, श्रीमती कंकुबाई, श्रीमती रामदेवीबाई आदिके अनेक व्याख्यान हुए थे और सभाका उत्सव कुंवर दिग्विजयसिंहजीके सभापतित्वमें हुआ था जिसमें महामंत्री बाबू दौलतरामजीको 'समाजसेवक'का पद दिया गया जिन्होंने इसी मौकेपर रु. २०००)के लागतका अपना मकान सभाको दान दे दिया। ता. १८को मुनि चंद्रसागरजीका केशलोच हुआ था। इस उत्सवके समय रु. १९६) ऋषभब्रह्मचर्याश्रम, ५४५) श्राविकाश्रम बम्बई, ३५) श्राविकाश्रम मुरादाबाद, ३१)इन्दौर श्राविकाश्रम, १४) खींनीवाडा सभा, और ७) महासभाको सहायता मिली थी।

सिरौंजमां जैन बालकुमारसभा स्थापित हुई है जिसमें हर गुरुवारको सभा होकर व्याख्यानादि होते हैं परंतु यहांकी पंचमें दो पट्टी होनेसे धर्मकार्योंमें बड़ी बाधा पहुंचती है। जैन सं. ३०० होनेपर भी पाठशालामें बहुत ही कम लडके आते हैं और सभामें भी बहुत ही कम भाई आते हैं। सिरौंजके भाईओंको उचित है कि फूट महारानीका मुंह काला करके ऐक्यता और धर्मरुचिसे धर्मकार्योंको करें।

धर्मकी अतिशयप्रभावना-सिरौंजनिवासी शीलकल्यान लिखते हैं कि मैं चैत्र शुक्ल २ को अतिशय क्षेत्र श्री थोबनजी गया था कि जहां सं. ९००के २३ मंदिर हैं। यहाँ रात्रिको इकाइकी ऐसा शब्द हुआ जो वचनातीत है। हमलोग पांच महाशय मंदिरके नजीक गये। वहांका गानबाजोंकी ध्वनि सुनकर जो आनंद हुआ वह लेखनीसे नहीं बनता। प्रभातको देखा तो सारे पर्वतपर केशरकी वर्षा हुई है तथा पर्वतपर कूवा था वह स्वयमेव ३॥ हाथ जलपूर हो गया। यह बड़ा प्रभाव हुवा। हम सबने मिलकर ग्यासह पथलेकी निसरणीपर अभिषेक किया था। भाईयोंको यहांका दर्शन कर पुण्योपार्जन करना चाहिये।

'जैनमार्तंड' मासिकके लिये सूचना—हाथरसकी जैनबालहितैषिणीसभाने 'जैन मार्तंड' नामक मासिकपत्र

निकालनेका निश्चय किया है और २५० ग्राहकोंकी स्वीकृति होनेपर शुरु होनेवाला है। वार्षिक मूल्य डेढ़ रु. है। पत्रव्यवहारका पता–मिश्रीलाल सोगानी सम्पादक, "जैनमार्तंड"–हाथरस सिटी।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठोत्सव—श्रवणबेल्गुलमें जी. पी. धरनैय्या द्वारा श्रीमत् चारुकीर्तिजी पंडिताचार्यवर्यके हस्तसे ता. १९ मेको पंचकल्याणकप्रतिष्ठामहोत्सव होनेवाला है। ता. ७से ता. १९ मे तक सब विधि होगी।

आगरामें सभा और पाठशाला—आगरा धुलियागंजमें १२ वर्ष हुए पाठशाला स्थापित हुई थी और लौकिक धार्मिक दोनों प्रकारकी शिक्षा दी जाती थी परंतु द्रव्यकी कमीसे जबसे सिर्फ धार्मिक शिक्षाका प्रबंध किया गया था तबसे बहुत ही कम विद्यार्थी लाभ लेते थे। अब इस पाठशालाकी उन्नतिके लिये फाल्गुन शुक्र १९को सभा होकर एक कमीटि चुनी गई और "जैनधर्मसंरक्षणी सभा" नामक सभा स्थापित हुई जिसकी बैठक प्रति पूर्णमासीको होती है। इस पाठशालामें द्रव्यकी कमी है जिसको पुरी करनेके लिये हम आगरेके भाईयोंको सूचना करते हैं।

मुनि चंद्रकीर्तिका परलोकगमन—सचित्र खास अंकमें श्रीमान् मुनि चंद्रकीर्तिजी गुरुमहाराजका चित्र है जिनका ज्यादे परीचय तो हमें नहीं मिला परंतु आपका स्वर्गवास सं. १९६३में हुआ था ऐसा हमें मालूम हुआ है। यदि कोई भाईको मालूम होवे तो विशेष परीचय हमें लिख भेजे।

कंथारियानी जैन लायब्रेरीने मुनि (श्वे.) नानचंदजीए १०९ पुस्तको भेट आप्यां छे.

इटावामें जैनतत्त्वप्रकाशिनी सभाका सप्तम वार्षिकोत्सव ता. १४से १७ अप्रेल तक रथयात्रा, नगरकीर्तन, उपदेश और शंकासमाधान रूपमें हुआ था जिसका विशेष हाल मिलनेपर आगे प्रकट किया जायगा।

समेदशिखरजी केसः—श्वेतांबरी भाईयोंने हकके बारेमें जो दावा दिगंबरियों पर किया है। उसका केस ता. २१ मार्चसे हजारीबागकी कोर्टमें चल रहा है। श्वेतांबरीके गवाह पूर्ण होचुके और दिगंबरियोंके गवाह लिये जा रहे हैं।

करहलमें ता. २८ मार्चसे ता. २ अप्रेल तक जैन विद्यालयमें एक जलसा हुआ था जिसमें ६००–७०० जैन और अजैन भाईयों उपस्थित थे। इस मेलेमें एक शिक्षोदय नाटक भी दिखलाई गई थी और विद्यालयकी परीक्षा भी हुई थी। नतीजा बहुत अच्छा आया है। करहलके भाईओंको इस विद्यालयको बड़ा कर विद्यालय' नाम सार्थक करना चाहिए।

औषधियां विनामूल्य—निम्नलिखित पतेपर लिखनेसे सब प्रकारके रोगोंकी औष-

धियां विनामूल्य मिलती हैं! "दद्रुनाशनी" (दादकी) और चंद्रप्रभावर्ती (नेत्रकी) दवा तो अवश्य मंगाईए–पता–चिकित्सक-रत्न सवाईसिंघई बाबूलाल जैन वैद्य, आ. सर्वहितैषी औषधालय c/o ऋ. ब्रह्मचर्याश्रम–हस्तिनापुर (मेरठ) ।

પાદરામાં પાઠશાળા—પાદરામાં માહ માસમાં "ચંદ્રપ્રભુ જૈન પાઠશાળા"ની સ્થાપના ભ. સુરેંદ્રકીર્તિના પ્રમુખપદે થઇ હતી, જેમાં કેટલાંક વ્યાખ્યાનો પણ થયાં હતાં. પાઠશાળાના સ્થાયી ફંડમાં રૂા. ૭૦૫) ભરાયાં છે, જેમાં રૂ. ૧૨૫) તલકચંદ નથુજી, ૧૦૧) હરીલાલ જીવનદાસ, ૧૦૧) ગરબડદાસ હરખચંદ, ૩૧) જેઠાલાલ કાળીદાસના તથા બીજી પરચુરણ રકમો ૧) સુધીની છે. વળી ભ. સુરેંદ્રકીર્તિએ બે માસનો ખર્ચ તથા શા. નાનચંદ પૂંજાભાઇએ પહેલે નંબરે આવનારને ૪) ઇનામ માટે આપ્યા છે. પાદરાના ભાઇઓએ મોટું ફંડ કરી આ પાઠશાળાને સ્થાયીરૂપે કરી જોઇએ.

पास हुए–इस साल मथुरा महाविद्यालयसे तीन विद्यार्थी गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज बनारसकी प्रथम परीक्षामें बैठे थे वे तीनों ही पास हुए हैं।

विवाहके मौकेपर साहित्यसभाकी स्थापना—झालरापाटनमें फाल्गुन मासमें श्रीमान् लूणकरणजीकी पोतीका विवाह था उस वक्त इन्दौरसे रा. ब. सेठ कस्तूरचंदजी और बम्बईसे वाडीलाल मोतीलाल शाह भी पधारे थे। यहां सेठ विनोदीराम बालचंद्रजीके पुत्रों-सेठ माणिकचंदजी, सेठ लालचंदजी, सेठ नेमीचन्दजी, सेठ भवरलालजी बड़े विद्याप्रेमी हैं इसलिये इन सब महाशयोंने मिलकर इसी वक्त '**राजपूताना हिन्दी साहित्य सभा**' की स्थापना की जिसमें रु. ५००१) रा. ब. सेठ कस्तूरचंदजी, २०००) वाडीलाल मोतीलाल शाह, ११०१) सेठ माणेकचंदजी श्रेष्ठी, १२०२) सेठों लालचंदजी, भवरलालजी और नेमीचंदजी, ७०१) लुणकरणजी पांडया आदि रकमें मिलकर अनुमान रु. ११०००)का फंड हुआ है। इस संस्थाके द्वारा हिन्दीके उत्तमोत्तम ग्रन्थोंकी रचना कराई जायगी और बहुत ही अल्प मूल्यमें सर्वसाधारणको इसका लाभ पहुंचाया जायगा। प्रकट होनेवाली पुस्तकें किसी भी मतवालेपर आक्षेपवाली न होकर सर्वमान्य और लाभकारी होगी। जो हुआ सो ठीक ही है परंतु यदि इस संस्थाके साथ '**जैन**' नाम डालकर हिन्दीजैनसाहित्यकी ही सेवाका कार्य किया जाता तो कितना अच्छा होता?

झालरापाटन शहरमें बड़ा भारी सरस्वति भवन खुलनेकी भी तैयारियें हो रही हैं। ४०००) की लागतका मकान बन रहा है। भवनके फंडमें अनुमान रु. १००००) भरे गये हैं, इसके उत्पादक और अधिष्ठाता श्रीमान् त्यागी ऐलक पन्नालालजी महाराज हैं। पत्रव्यवहारका पता–प्यारचंद डूंगया, मंत्री दि. जैन सरस्वति भवन–झालरापाटन शहर।

૧૬ જણે રાત્રે અન્નત્યાગ અને આઠે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. રૂ. ૨) ઉપદેશકફંડમાં આવ્યા.

દેલવાડા—એ સભા કરી. જેથી ૧૭ જણે રાત્રે અન્નત્યાગ અને સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો તેમજ અષ્ટદ્રવ્યથી પૂજન કરવાનો પ્રબંધ કરાવ્યો. રૂ. ૪।। ઉપદેશકફંડમાં મળ્યા.

ઝહેર સુરીતિ પ્રચાર અને સ્વાધ્યાય પ્રેમ ઉપર ભાષણો આપ્યા, જેથી કેટલીક બ્હેનોએ ફટાણાં ગીતો ગાવાનો ત્યાગ કર્યો, રાત્રે શાસ્ત્રસભા કરવાનો પ્રબંધ થયો તથા સાત ભાઇઓએ સ્વાધ્યાય કરવાનો તથા કેટલીક બ્હેનોએ શાસ્ત્રશ્રવણનો નિયમ લીધો. અષ્ટદ્રવ્યથી પૂજન કરવાનો પણ પ્રબંધ થયો તેમજ રૂ. ૩) ઉપદેશકફંડમાં મળ્યા.

નરસીપુર—અત્રે પણ પંચમાં ફૂટ છે. આનંદભાઇના પ્રયાસથી એક જાહેર સભા થઇ. બે જણે સ્વાધ્યાયનો અને ચાર મહીના અષ્ટદ્રવ્યથી પૂજન કરવાનું સ્વીકાર્યું. બાકીના જૈન ભાઇઓ તેમ કરાવવા છતાં કોઇ આવ્યુંજ નહિ. રૂ. ૧) ઉપદેશકફંડમાં મળ્યો.

કરમસદ—એ સભા કરી ઉન્નતિ અને સમ્યગ્દર્શન પર ભાષણો કર્યાં, જેથી શા. ખીમચંદ હીરાભાએ એક વર્ષ સુધી ઓનરરી તરીકે બાળકબાળકીઓને ધર્મશિક્ષણ આપવા સ્વીકાર્યું. બે બ્હેનોએ રાત્રિભોજનત્યાગ અને પાંચે એક વર્ષ સુધી અષ્ટદ્રવ્યથી પૂજન કરવાનું સ્વીકાર્યું.

રૂ. ૧૦।। પ્રાંતિકસભાના ફંડમાં મળ્યા.

બાકરોળ—અત્રે ચૈત્યાલય સ્થાપવાની જરૂર છે. ભાઇ મોતીલાલ નીકળદાસના પ્રયાસથી એક સભા કરી જેથી પંચે રાત્રિભોજનનો ત્યાગ કર્યો તેમજ રૂ. ૩) ઉપદેશકફંડમાં આવ્યા.

વડાસણ—અત્રે ચૈત્યાલય નથી. રાત્રે સભા કરી, જેથી ૮ ભાઇઓએ સ્વાધ્યાયની પ્રતિજ્ઞા કરી તથા બે જણે કાંદે અભક્ષ્ય પદાર્થ ખાવાનો ત્યાગ કર્યો. રૂ. ૩।। ઉપદેશકફંડમાં મળ્યા.

બોરસદ—સ્વાધ્યાય અને અભક્ષ્યત્યાગ પર વિવેચન કર્યું. જેથી ૧૦ જણે રાત્રિભોજનત્યાગ અને ૬ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. રૂ. ૬।। ઉપદેશકફંડમાં મળ્યા.

મુંબાઇ—હીરાબાગમાં ગુજરાતના યાત્રાળુઓ આવેલા હતા તેમને મેળવી સભાના હોલમાં એક સભા કરી જેથી કેટલાકે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો તથા બાળલગ્ન અટકાવવા સ્વીકાર્યું.

ગજપંથાજી—પ્રાંતિક સભાના અધિવેશન માટે ગોઠવણો કરવાને મહામંત્રી તથા શેઠ ખુશાલચંદજી સાથે આવ્યો. અત્રે પણ એક શાસ્ત્રસભા કરી.

यहांसे मैं पारसोड़ा आया और एक शास्त्रसभा तथा दूसरी व्याख्यानसभा की पर अनायास एक मुखिया भाईकी मृत्यु हो जानेसे शोकसागरमें निमग्न होना पड़ा और कुछ सफलता नहीं हुई।

कोपरगांव—यहां भी किसी मुखियाकी श्रीमतीका देहान्त हुवा पाया, जिससे सभा आदि नहीं हो सकी। लेकिन तीन भाइयोंने प्रा. सभाके जल्सेमें प्रतीनिधिके रूपमें आनेकी स्वीकारता दी।

कोकमठाणमें एक शास्त्रसभा हुई। एक भाईने स्वाध्याय करना स्वीकारा और प्रा. सभामें शामिल होनेको सेठ चुन्नीलालजीने प्रतिनिधित्व मंजूर किया।

सम्वत्सरकी सभामें स्वाध्याय विषय पर विवेचन किया तो ४ भाइयोंने स्वाध्याय

करनेकी प्रतिज्ञा की। शा० चांदूलालजी पहाड़याको गजपंथाशिखरकी सभामें शामिल होनेको प्रतिनिधि बनवाया।

नायडुंगरी—एक शास्त्रसभा की। तीन भाइयोंने स्वाध्याय करना व दो श्राविकाओंने कुदेवपूजनका त्याग किया। तीन भाई यहांसे भी प्रतिनिधि बनाये। श्रीमती नानूबाईका धर्मोत्साह अच्छा है।

भुसावल—सेठ रतनलालजीके सभापतित्वमें एक व्याख्यानसभा की जिससे तीन भाइयोंने स्वाध्याय करना स्वीकार किया।

मलकापुर—प्लेगकी बीमारीके भयसे कोई लोग वस्तीमें नहीं पाये जिससे सभा नहीं हो सकी।

धूलियाके सेठ गुलाबचंद हीरालालजीके सभापतित्वमें दो व्याख्यानसभायें कीं। जिसमें जातीय सभायें ही जैनियोंकी उन्नति कर सक्ती हैं इस विषयपर विवेचन किया जिससे चार भाइयोंने प्रा. सभाके १४वें जलसेमें प्रतिनिधि रूपसे शामिल होना स्वीकार किया। तथा सभापतिकी ओरसे ११) विद्यालय खातेमें प्रदान हुए।

कन्नड़में एक शास्त्रसभा और दूसरी व्याख्यान सभा की। यहांसे भी ५ भाइयोंको प्रतिनिधि बनाया। यहांके स्त्रीसमाजमें कुदेवपूजाका बड़ा ही प्रचार है। भाई मोतीलालजीसे एक रु. विद्यालय खातेमें आया।

इतनूर—जिनपूजन व स्वाध्याय विषयपर विवेचन किया जिससे दो भाईयोंने स्वाध्याय करनेकी प्रतिज्ञा की तथा प्रान्तिक सभामें शामिल होनेका प्रभाव डाला। १) फंडमें और १) विद्यालय खातेमें आया। यहांके मंदिरमें पंचायतीको अष्ट द्रव्यसे पूजन करनेका वारा बनाना चाहिये।

कसावखेडाकी पंचायतीका धर्मोत्साह प्रशंसनीय है। सेठ धन्नालालजीको प्रतिनिधि बनाया और एक शास्त्रसभा की जिसमें विशेषकर कुदेवपूजन त्यागपर विवेचन किया। यहांसे—

गजपंथाशिखर आया और प्रान्तिक सभाके चौदहवें वार्षिक अधिवेशनकी व्यवस्थाके कार्योंमें शामिल हुवा।

विशेष—महाराष्ट्र प्रान्तके जैन स्त्री समाजमें कुदेव पूजाका मिथ्या प्रचार खूब बढ़ता जा रहा है। इसका मूल कारण यही है कि पुरुषगण अपनी प्यारी पत्नीको सच्चे देव और धर्मका लक्षण कभी नहीं बतलाते। इस लिये प्रायः बड़े २ घरानोंकी स्त्रियोंमें ढोंगियों (कुगुरूओं)ने इतना लालच भर रक्खा है कि शीतलादेवी, हनूमान, काली, दुर्गा आदिकी उपासना करनेसे माताओंके सन्तान फलती है और महादेव गणेश, पपिल, बड़ आदिके नीचे ब्राह्मण-भोजन कराने और सेकड़ों रूपयोंके दान (कुदान) करनेसे सन्तानकी रक्षा होती है।

कुदेवोंको ही सौ पचास रुपये देकर दो चार लड़के ले आते सो ऐसा होता नहीं है इससे मालूम होता है कि सद्गुणी और हृष्टपुष्ट पतिपत्निके संयोग होनेपर ही उत्तमोत्तम बालबच्चे हो सक्ते हैं। प्यारे शेठगणो! विषयमें अन्ध होकर वीर्यको मत बिगाड़ो। इस चंचल मनको शास्त्रस्वाध्यायके पेंचसे कसदो और सेठानीजीको भी सांझ सवेरे सच्चे देव, धर्म, गुरुका स्वरूप और रामचन्द्र, हनूमान, लवणांकुश, प्रद्युम्न, सीता, मनोरमा और कैकई आदि मातावोंके चरित्र सुनाया करो। जिससे आप दोनोंके हृदयोंमें उन वीर सपूतोंका आदर्श पड़े। और आपके भी ऐसी सद्गुणी सन्तानका जन्म होवे!

जातिसेवक—

ठाकोरदास भगवानदास

मंत्री, उपदेशकविभाग-मुंबाई।

अंजनगिरि तीर्थकी शोध जीर्णोद्धारकी जरूर।

गजपंथाजी सिद्धक्षेत्रनी पासे १५ माईल उपर अंजनगिरि उर्फे अंजनेरी नामे तीर्थक्षेत्र मालम पडवानी हकिकत संबंधी सुजानगढना यात्राळुओए जे येनी हकिकत जे अमारा उपर मोकलेली ते नीचे मुजब छे:—

महाशय वर!

आपसे निवेदन करता हूं कि हम लाडनु व सुजानगढके ५२ यात्री श्री गजपंथाजी सिद्धक्षेत्रकी यात्रा करनेकूं गये थे वहांपर पूजारीके कहनेसे पांच आदमी अंजनगिरी पहाड देखनेकूं गये। गजपंथाजीसे अंजनगिरी पहाड १५ मील करीब है, वहां जाते वहांके रहनेवाले आदमियोंसे मालूम हुआ कि इसी पहाडके ऊपर हनुमानजीका जन्म हुआ है। पहाडके नीचे अंदाज १५ मंदिरजी टूटेफूटे हुए बहुत प्राचीन है जिसमें २-३ मंदिरजी तो थोडा रुपया खर्च करनेसे भी मरम्मत होसकते है। मंदिरोंमें प्रतिमाजी तो देखनेमें नहीं आई लेकिन दरवाजे ऊपर खोदी हुई प्रतिमा बहुत देखनेमें आती है। एक मंदिरजीमें शिलालेख खुदा हुआ है जिसमें बहुत लेख लिखा हुआ है। हमलोक बांचनेके वास्ते बहुत कोशिस किया लेकिन पढ न सके फक्त संवत् १०३७ लिखा हुआ पढ सके। यह हुआ पहाडके नीचेका बात। फिर

वहांका एक आदमी लेकर पहाडके ऊपर गये। पहाड ऊपर जानेका रस्ता बहुत ठीक है। ऊपर जाकर हम लोकोंने एक गुफाको देखा। उस गुफाके भीतर पहाडकी दिवालमें प्रतिमाजी खोदी हुई हैं। कितनीएक प्रतिमाजी खंडित हो चुकी है। दो चार प्रतिमाजी अंगोपांगसहित विराजमान है। वहांपर दर्शन करके फिर पहाड ऊपर जानेसे एक बडा तलाव देखनेमें आया। उस तलावको वहाके रहनेवाले 'मानसरोवर' कहते हैं उस तलावके पास चार बंगला अंग्रेज लोगोंका बना हुआ है। वहांकी आव हवा अच्छी देखकर उन लोगोंने बंगला बनाये हैं वहींपर बंगलेके पास फिर एक गुफा देखनेमें आई। गुफामें हमलोग गये। मंदिरका चिन्ह देखनेमें आता है लेकिन प्रतिमा वहां नहीं है। उसी गुफामें हनुमानजीका जन्म हुआ वहांके लोक ऐसा कहते हैं। इस तरहका हाल अंजनगिरी पहाडका हमलोक ५ आदमी फागुण वदी १३को देखकर आये है। वहांकी जगह व पहाड देखनेसे बहुत प्राचीनता मालूम होती है। कोई वख्त वहांपर जैनधर्मका बहुत प्रचार था, लेकिन समयके फेरसे इस वख्त वहांपर कुछ भी देखनेमें नहीं आता है। अब हम लोगोंका कहना प्रान्तिकसभाको यही है कि प्रान्तिकसभाका अधिवेशन चैत्र महिनेमें गजपंथाजीमें होनेवाला है उस अधिवेशनमें बहुत धनवान भाइयोंका व पंडितोंका आना होगा उस वख्त सब भाई अंजनगिरी पहाड जा करके पहाडका निरीक्षण करके जैसा योग्य समझें बन्दोबस्त करना चाहिये। विशेषु किमधिकम्।

सं. १९७२ सालका फागुण सुदी १५

दस्तखत धन्नालाल सरावगी।

मु० सुजानगढ।

શ્રી ગજપંથાજીપર પ્રાંતિક સભાનું અધિવેશન થયેલું તે વખતે અમો શ્રી ગજપંથાજી ગયેલા અને ત્યાંથી આવતી વખતે એટલે તા. ૧૨-૪-૧૬ની રોજે હું અને મારા ન્હાનાભાઇ મી. માણેકચંદ શ્રી અંજનગીરી પહાડ જોવા ગયેલા હતા. સુજાનગઢવાળા યાત્રીએ ઉપરના કાગળમાં લખેલી હકીકત બરાબર છે, પણ નીચેના મંદીરજીમાં કોઈ શીલાલેખ જોવામાં નહીં આવ્યો તથા પહાડની ગુફામાં જે મંદીર છે તેમાં ૨-૪ પ્રતિમાજી અખંડીત છે એમ સુજાનગઢવાલા લખે છે પણ એકાદ બીજી પ્રતિમાજ અખંડીત છે એમ અમારા જોવામાં આવ્યું. પહાડની નીચેના મંદીરો જીર્ણ થઈ ગયેલા તેમ તુટાફુટા છે. એમાંથી ૧-૨ મંદીરો સારાં રીપેર જો થાય તોજ કામમાં આવી શકે તેમ છે. રીપેરને માટે મારા ધારવાપ્રમાણે ઓછામાં ઓછા રૂ. ૫૦૦)નો ખરચ કરવો પડશે. તેથી ઓછા ખરચે રીપેર થઈ શકે તેમ નથી"

નિવેદક–

હીરાચંદ અમીચંદ શાહ.

મંત્રી, ગજપંથાજી કમીટિ–સોલાપુર.

તા. ક. પહાડની ગુફામાં જે મંદીર છે તેમાં જવામાટે રસ્તો નથી—પહાડની દીવાલ ઉપર ચઢી અમો ગયેલા હતા, પણ તેમ જવું બહુજ જોખમભરેલું છે.

विधवाविवाह निषेध।



गतांकसे आगे और भी निम्नलिखित विद्वानों और श्रीमानोंने इस निंद्य प्रथाको अत्यंत हानिकारक बताया है—

जैनधर्मभूषण ब्र० शीतलप्रसादजीने 'गृहस्थधर्म'में विधवाओंका कर्तव्य लिखा है—

"जब स्त्रीका पति देहान्त कर जावे तब उसको विधवा अवस्थामें रहकर अपना जीवन श्राविकाके व्रतोंके पालनेमें विताना चाहिये इत्यादि।"

पं. श्रीलालजी अलीगढ़निवासीने वीर सं. २४२४ में खुरजाके श्री जिनबिम्ब प्रतिष्ठोत्सव पर आम सभामें जो विधवाविवाहखंडन विषय पर व्याख्यान दिया था वह "जैनपताका"में प्रगट किया गयाथा, उसमें आपने हिन्दुओंके 'मनुस्मृति' आदि धर्मशास्त्रोंसे आर्यसमाजियोंको अच्छी तरह दिखलायाथा कि दयानंदने अपनी धूर्ततासे अर्थका अनर्थ किया है। आपके धर्मशास्त्रोंमें विधवाविवाहकी विधि नहीं किन्तु निषेध है इसके लिये हिन्दू धर्मशास्त्रोंके अनेक प्रमाण दिये हैं उनमेंसे दो एक यहां लिखे जाते हैं।

काम तु क्षपयेद्देहं पुष्प मूल फलैः शुभैः
न तु नामापि गृह्णीयात् पत्यौ प्रेते परस्य तु ॥
॥५॥१५७॥ मनु०।

अर्थात्—पतिके मरण होने पर स्त्री पवित्र पुष्प फल मूल आदि अल्पाहार करके शरीरको क्षीण करे परन्तु अन्य पुरुषका कदापि नाम न ले। कहिये जहां अन्य पतिका नाम लेना भी पाप है वहां अनेक पति रख सक्ती है ऐसा मिथ्या दोष लगाना धूर्तता न हो तो और क्या है? जिस विधवाको स्पष्ट आज्ञा शास्त्र दे रहा है कि संतानके लोभसे जो स्त्री अन्य पुरुषकी इच्छा करेगी वह इस लोकमें निंद्य और परलोक महा पातककी भागी होगी—इत्यादि

देखा, हिन्दू धर्मशास्त्र भी इस प्रथाको अत्यंत निंद्य और धर्मविरुद्ध लिखते हैं फिर "जैनहितैषी"का हिन्दू धर्मशास्त्रोंमें एक स्त्री अनेक पति रख सक्ती है ऐसा लिखना मिथ्या नहीं है तो और क्या है?

सिरसांवा नि० जुगलकिसोरजी और मिरजापुर नि० भाई तिलोकचंदजी दौलतरामजीने जो पूर्व "जैनपत्रिका" लाहोरके विधवाविवाहपोषक लेखोंका युक्तिपूर्वक खडन कर इस प्रथाको अत्यंत निंद्य और हानिकारक बताया है। उक्त महाशयोंके दो लेख सन् १९०० ई० के "जैनमित्र" अंक ३ रे में छप चुके हैं जिन्हें अवलोकन कर 'जैनहितैषी' और 'जैनतत्वप्रकाशक' के सम्पादकोंको अपना अन्यथा श्रद्धान दूर करना चाहिये।

"सरस्वती" मासिकपत्रिकामें कई जगह हिन्दू स्त्रियोंके पानिकृत (श्रीमनपर्ष)

की प्रशंसा और विलायती स्त्रियोंकी स्वतंत्रता व उनके **पुनर्विवाहकी** प्रथाकी खूब **निन्दा** की गई है। इसी प्रकार और भी कई हिन्दू पत्रोंने इस प्रथाकी खूब धूल उड़ाई है। श्रीयुत् उम्मेदराम लल्लूभाई देशाईने जो विलायत में वहांकी स्त्रियोंके सन्मुख १५-१६ वर्ष हुए जब वहांके पातिव्रत (सतीत्व) धर्मकी प्रशंसा करते हुए जोर देकर कहा कि हमारी हिन्दू स्त्रियाँ विलायत की स्त्रियोंसे ८० लाख गुनी अच्छी है-उसमें आपने **विलायती स्त्रियोंकी पुनर्विवाहसे दुर्दशा** बतलाकर इस कुप्रथाको बहुत हानिकारक व निंद्य बतलाया है-यह व्याख्यान "वेंकटेश्वर" में पूर्व छपचुका है और हालही में बाबू सूरजमल हरदानिवासीने उस व्याख्यानको ट्रेक्ट रूपमें प्रकाशित किया है।

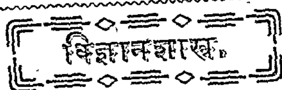
हमारे पास अनेक विद्वानों और प्रतिष्ठित पुरुषों के पत्र आरहे हैं उन्होंने विधवाविवाहको बहुत निंद्य और हानिकारक लिखा है और "जैनहितैषी" व "जैनतत्वप्रकाशक" के सम्पादकोंकी भूल बतलाई है-जैसे श्रीमान् दा. वी. रा. व. शेठ हुकमचंदजी इन्दोर, शेठ हीराचंदजी नेमचंदजी ऑ. म. सोलापुर, पं. धन्नालालजी, सभापति, खंडेलवाल महासभा, पं. खूबचंदजी, सम्पादक 'सत्यवादी' बम्बई; पं. लालारामजी शास्त्री इन्दोर, पं. प्यारेलालजी श्रीलालजी अलीगढ़, शेठ नेमचंदजी मुन्शीलालजी हाथरस; शेठ मूलचंदजी किशनदासजी कापड़िया सम्पादक "दिगम्बर जैन" सूरत, मास्टर दरयावसिंहजी सोधिया, पं. पन्नालालजी गोधा अधिष्ठाता उदासीनाश्रम--इन्दोर, शेठी जवरचंदजी गौतमपुरा, पं. रघुनाथदासजी सरनऊ, पं. पन्नालालजी बाकलीवाल महामंत्री जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी सं० कलकत्ता, पं. सुन्दरलालजी बैनाड़ा झालरापाटन, लाला जम्बूप्रशादजी रईस महामंत्री भारतवर्षीय दि० जैन महासभा, बाबू भगवानदीनजी हस्तिनापुर, पं. पीताम्बरदासजी उपदेशक बम्बई सभा, पं हीरालालजी एटा, मुन्शी ज्योतीप्रशादजी स० "जैनप्रदीप" देवबंद, मुन्शी मूलचंदजी वकील स० महामंत्री महासभा। लाला फुलजारीलालजी रईस करहल, बाबूरामजी शंकरलालजी इटावा, पार्श्वदासजी काव्यतीर्थजी अध्यापक जैन पाठशाला हाथरस, बाबू सूरजमलजी सम्पादक 'जैन प्रभात', पं. दीपचंदजी सु० सु० जैन बो० इलाहाबाद इत्यादि।

समाजसेवक—

लाला भगवानदास

महामंत्री दि. जैन मालवा प्रां. सभा

बडनगर।



(લેખક-શા. નાનચંદ પૂંજાભાઇ બી. એ. વડોદરા.)

(૫)

બેરોમીટર નામના યંત્રથી હવાનું દબાણ મપાય છે. ગુજરાતીમાં એને વાયુ-

રચના. માપક યંત્ર નામ આપી શકાય. આ યંત્રની રચના બહુજ સરળ છે, આંગળ જેટલી પહોળી એક કાચની વાળેલી નળી હોય છે. વળેલો ભાગ એકાદ આગળ લાંબો હોય છે અને મોટો છેડો ૩૩ તસુ લાંબો રાખવામાં આવે છે. મોટી નળીનું મોં બંધ કરેલું હોય છે જ્યારે નાનો છેડો ખુલ્લો રાખવામાં આવે છે. મોટી નળીમાં પારો ભરવામાં આવે છે તે ઉપલા મથાળાથી ચાર પાંચ આગળ ઓછો હોય છે. નાના છેડામાં બે ત્રણ આંગળ ઓછો રાખવામાં આવે છે, આવી રીતે પારાથી ભરેલી કાચની વાંકી નળીને બેરોમીટર નામ આપવામાં આવે છે. તેના ઉપર લાકડાનું પર કરી ઘડીઆળનું રૂપ પણ આપવામાં આવે છે. સુગમતાની ખાતર તેનાં ઘણાં રૂ[illegible] બનાવવામાં આવે છે. એનેરોઇડ બેરોમીટરની કીંમત આશરે રૂ. ૨૦) છે.

બેરોમીટરના મુખ્ય બે ઉપયોગ છે—૧. પર્વતની ઉંચાઇ કાઢવામાં કામ લાગે

ઉપયોગ. છે અને દરેક અંશે હવાની ગરમી લેવામાં માલુમ પડે છે, પણ મુખ્ય ઉપયોગ હવાની સ્થિતિ જાણવાનો છે.

હવા જ્યારે ભારે થાય છે, ત્યારે નાનો છેડો જે ખુલ્લો [illegible] છે તેમાંના પારા ઉપર હવાનું દબાણ વિશેષ થાય છે એટલે મોટી નળીમાં પારો ઉંચો ચઢે છે અને જ્યારે હવા હલકી થાય છે ત્યારે મોટી નળીમાંનો પારો ઉપરથી નીચે ઉતરે છે. મોટી નળીમાંના પારાની ઉંચાઈ એકંદરે ત્રીશ ઇંચ હોય છે. મોટી નળીનાં મથાળેથી ૩૧ થી ૨૯ સુધીના ઇંચના આંકડા છાપેલા હોય છે. જ્યારે હવા તદન ભેજ વગરની એટલે સુકી થાય છે (જેમ ઉનાળામાં) ત્યારે હવા દબાણ વધારે કરે છે. જેમ જેમ હવા સૂકી તેમ તેમ દબાણ વિશેષ થાય છે. એટલે પારાનું મથાળું કોરા દહાડામાં (Fine wheatehr) જે હંમેશાં ૩૦. ૩૩ ઇંચ જેટલે રહે છે તે દબાણ વિશેષ થવાથી ઉંચે ચઢે છે એટલે હવા હંમેશ કરતાં વધારે શુષ્ક છે એમ બતાવે છે.

હવામાં જ્યારે ભેજ વધારે થાય છે ત્યારે તે હલકી બને છે કારણકે વરાળનાં ઝીણાં બિંદુઓને અધર ઝીલી રાખવામાં હવાનું દબાણ કમી થઇ જાય છે. દબાણ કમી થવાથી મોટી નળીમાંના પારાનું મથાળું નીચે ઉતરવા માંડશે અને ૨૯½ જેટલે આવે તો સાધારણ વરસાદ આવશે એમ બતાવે છે અને જ્યારે ૨૯¼ જેટલે આવે ત્યારે વધારે વરસાદ આવશે એમ બતાવે છે. જ્યારે ૨૯ ઇંચ સુધી આવે ત્યારે ગાજવીજ તોફાન સાથે વરસાદ તૂટી પડશે એમ બતાવે છે. આમાં યાદ રાખવાનું છે કે પારાનું ચઢવું ઉતરવું તે અમુક જગ્યાની સમુદ્રની સપાટીથી ઉંચાઇ, દિશા, અને ગરમી વીગેરેના ઉપર પણ આધાર રાખે છે.

હિંદુસ્થાનમાં આવાં બેરોમીટર તો દવાખાનાં, વેધશાળા, (Observatory), વિશ્વવિદ્યાલય (College) અને મોટા મહાસાગરમાં ફરતી આગબોટ ઉપર રાખવામાં આવે છે, પણ વિલાયતમાં તો ઘેરઘેર હોય છે એમ કહીએ તો ચાલે. ત્યાં રાખવાનું મુખ્ય કારણ એ છે કે ઋતુ ચક્રિક્રમ નિયમીત નથી. જે વખત કહાડે વરસાદ હોય ને કેટલાક ત્યાં વરસાદનાં

તોફાન પણ ઘણાં થાય છે અને જે દિવસે ઉઘાડ આપે (Fine day) તે દિવસ તો ઘણો આનંદનો મનાય. આમ વરસાદની રૂતુ અનિયમીત હોવાથી ત્યાં ઘણા જણને બેરોમીટરનો ઉપયોગ કરવાની ફરજ પડે છે.

પણ આપણા દેશમાં તો રૂતુ નિયમીત હોવાથી અને વરસાદનાં તોફાન વારંવાર નહિં થવાથી આપણને તેવાં મુસાફરી કરનારાને વિશેષ લાભકર્તા થઇ પડે ખરૂં. આ યંત્ર રાખવાની વિશેષ જરૂર જણાતી નથી, પણ એટલું તો ખરૂં કે હવાની અંદર એકદમ ફેરફાર થાય તો વરસાદ થશે કે કેમ તે કહી શકાય ખરૂં! કચ્છ, ગોબી અને સેહરાના રણમાં મુસાફરી કરનારને વિશેષ લાભકર્તા થઇ પડે ખરૂં. આ યંત્રની મદદથી યુરોપ ખંડમાં લાખો માણસોની જીંદગી તોફાનમાંથી બચવા પામી છે અને લાખો રૂપીઆનો માલ નૂકસાનીમાંથી બચી જાય છે.

પાછળ આપણે વાંચી ગયા કે જેમ જેમ ઉપર જઇએ તેમ તેમ હવા પાતળી થતી જાય છે, માટે જો બેરોમીટરને આપણે કોઇ પર્વત પર લઇ જઇએ તો હવા પાતળી હોવાથી દબાણ ઓછું થાય છે તેથી પારો નીચે ઉતરવા માંડશે. જેમ જેમ ઉંચે જઇશું તેમ તેમ પારો નીચે વધારે ઉતરશે તે ઉપરથી પર્વતની ઉંચાઇનું અનુમાન નીકળી શકે છે.

सामायिकपाठ आवृत्ति बीजी.

શ્રી મહાચંદ્રજીકૃત સામાયિકપાઠ ગુજરાતી અર્થ અને મિચ્છામિ દુક્કડં સહિત વારંવાર માંગણી થવાથી ફરીથી છપાવ્યો છે. કિં. માત્ર એક આનો. આ સામાયિકપાઠ દરેક શ્રાવકે સહેલાઇથી મુખપાઠ કરવાલાયક તથા પાઠશાળાઓમાં ચલાવવાલાયક તેમજ ઇનામમાં પણ વેંચવાલાયક છે.

મેનેજર દિ. જૈન પુસ્તકાલય-સુરત.

गजपंथाजीमां
कोन्फरंसनी
चौदमी बेठक.

જણાવવા મુજબ મુંબાઇ દિ. જૈન પ્રાં. કોન્ફરંસની ચૌદમી બેઠક સિદ્ધક્ષેત્ર શ્રી ગજપંથાજીમાં ચૈત્ર સુદ ૫ થી ૮ સુધી ભારે ઉત્સાહથી સફળતાપૂર્વક મળી હતી જે પ્રસંગે મેમ્બરો ડેલીગેટો અને પ્રેક્ષકો મળી આશરે ૬૦૦ સ્ત્રી પુરૂષોએ જુદા જુદા સ્થળોથી હાજરી આપી હતી. કોન્ફરંસના પ્રમુખ ચૈત્ર સુદ ૪ની સવારે નાસિક (ગજપંથાજી) જઇ પહોંચ્યા હતા જ્યાં સ્ટેશન પર તથા શહેરમાં ધામધુમથી સ્વાગત થયું હતું. ગજપંથાજીમાં સર્વને ઉતરવા વગેરેની સર્વ ગોઠવણ થયેલી હતી તેમ ૨૫ વોલંટિઅરો પણ હાજર હતા. ચોથની રાત્રે શાસ્ત્રસભામાં બ્ર. શીતલપ્રસાદજીએ શાસ્ત્ર વાંચવા પછી પં. પીતામ્બરદાસજી તથા મુલચંદ કસનદાસ કાપડીઆએ કોન્ફરંસ મેળવવાનાં કારણો અને તેથી થતા ફાયદાઓ વિષે વિવેચન કર્યું હતું. ચૈત્ર સુદ ૫ની બપોરે કોન્ફરંસની પ્રથમ બેઠક થનાર હતી પણ તે દિને નિયમ મુજબ સભાસદોનો કોરમ ન થવાથી કોનફરંસ બીજા દિવસ ઉપર મુલત્વી રખાઇ હતી અને એ દિને ત્રણ વાગતે સભામંડપમાં એક વ્યાખ્યાનસભા શેઠ માણેકચંદ મોતીચંદ (આળંદ) ના પ્રમુખપણા નીચે થઇ હતી, જેમાં બ્ર શીતલપ્રસાદજી, શા. હીરાચંદ સખારામ કોઠારી અને શ્રીયુત શીવજી દેવશીના આપણું કર્તવ્ય અને આત્મિક ઉન્નતિ ઉપર ભાષણો થયાં હતાં. તેમજ રાત્રે શાસ્ત્ર સભા અને ભજન થઇ હતી.

ચૈત્ર સુદ ૬ ની બપોરે બે વાગતે કોન્ફ-રસની પ્રથમ બેઠકનું કાર્ય શરૂ થતાં પ્રથમ જીનદાસ વિદ્યાર્થીએ મંગલાચરણ કરવા પછી આવિકાશ્રમની બે બાળકીઓએ સ્તુતિ ગાવા પછી **સ્વાગતકમીટિના** પ્રમુખ મુંબાઇ-નિવાસી શેઠ **નવલચંદ હીરાચંદ ઝવેરીનું ભાષણ** દોશી ચંદુલાલ જેચંદે વાંચી સંભ-ળાવ્યું હતું જેનો **સારાંશ** નીચે મુજબ છે–

પ્રથમ પોતાની લઘુતા દર્શાવી સર્વેને આવકાર આપવા પછી પોતાના મરહુમ મુરબ્બી બાઇ શ્રી માણેકચંદભાઇને પગલે ચાલવાની ઇચ્છા દર્શાવી એક વર્ષના ગાળા પછી સભાની બેઠક થવાનાં કારણો જણાવવા બાદ ગજપંથાજી તીર્થની પ્રાચીનતા સંબંધી વિવેચન કરી આઠ વર્ષ ઉપર અત્રેજ થઇ ગયેલા અધિવેશનની યાદ આપી હતી. બાદ કોન્ફરંસ, કોન્ફરંસથી થયેલા ફાયદા, ધાર્મિક સુધારા, સામાજિક સુધારા, સંપ, બાલવિવાહ અને બાલ લગ્ન, સ્ત્રીકેળવણી અને મહીલા પરિષદ. જૈનવિધિથી લગ્ન, ભોજન વ્યવહાર ત્યાં કન્યા વ્યવહાર અને વ્યાપાર ઉદ્યોગ વિગે વિવેચન કરતાં જણાવ્યું કે વિદ્યા વધારવાને, ધર્મની પ્રભાવના વધાર-વાને, વિદ્યાસપાર અને જાતિનો વ્યાપાર તથા હુન્નર ઉદ્યોગ આદિમાં ચડતી કરવાને આવી કોન્ફરંસો મેળવી તેમાં એ બાબત વિચારો કરવાની જરૂર છે. આજ સુધીમાં આ કોન્ફરંસથી થયેલા ફાયદાઓ પૈકી મુંબાઇ, અમદાવાદ, રતલામ, સોલાપુર, કોલ્હા-પુર, જબલપુર વગેરે સ્થળે સ્થપાયલી બોર્ડિંગો તથા કાશી, મોરેના વગેરે સ્થળે સ્થપાયલા વિદ્યાલયોથી અનેક વિદ્વાનો ઉત્પન્ન થયા છે તથા અનેક વિદ્યાર્થીઓને કેળવણી મળવાનાં ઉત્તમ સાધનો થયાં છે તેમ જુદાજુદા ગામોના માણસો એક બીજાથી પરીચયમાં આવ્યા છે તે આ કોન્ફરંસનોજ પ્રતાપ છે. ધાર્મિક **સુધારા** માટે સંસ્કૃત પાઠશાળાઓ દરેક સ્થળે થવાની જરૂર છે તથા દરેક ભાષામાં આપણા શાસ્ત્રોનાં ભાષાંતરો થઇ તે અલ્પ મૂલ્યે કે મફત વેંચાવા જોઇએ તેમજ દેશના દરેક ભાગમાં અવારનવાર ઉપદેશકો ફેરવવા જોઇએ તેમજ નવાં મંદીરો ન બાંધતાં જુના મંદિરોનોજ જીર્ણોદ્ધાર કરવો જોઇએ. પૂર્વે આચાર્યો–ભટ્ટારકો તીર્થોની સંભાળ રાખતા હતા પરંતુ તેઓ પોતાનું કર્તવ્ય ચુકવાથી ભવિષ્યમાં **ભટ્ટારકો વિદ્વાન અને ધર્મજ્ઞાતા હોય તેવાનેજ** આચાર્યપદ આપવું જોઇએ. આ માટે અગત્યની સુચના એ છે કે આચાર્ય પદ આપવાનો પ્રસંગ આવે ત્યારે એ પદ લેવા ઇચ્છનારને આ કોન્ફરંસના અથવા પ્રતિષ્ઠિત પંડિતોની કમીટિમાં પાસ કર્યા બાદ ૩૦–૪૦ વર્ષની ઉમર ઉપરના વિદ્વાનને સર્વસંમ-તિથી આચાર્યપદ આપવું અને તેવા આચાર્યનેજ માન આપવું જોઇએ. **સામાજિક સુધારામાં** કેળવણી એ મોટો ભાગ ભજવે છે અને એજ જીંદગીનું પ્રથમ કર્તવ્ય ગણી બોર્ડિંગોદ્વારા વિદ્યાર્થીઓને કેળવણી આપવી જોઇએ કેમકે બોર્ડિંગોજ કેળવણી લેવાનું સરતું સાધન છે. તે ઉપરાંત વિદ્યાર્થીઓની આસપાસગત સુધારવામાં અને અભ્યાસ વધારવામાં તથા ધર્મનું જ્ઞાન લેવામાં ખરૂં ઉપયોગી ખાતું છે. આવી બોર-ડિંગો સ્થાપવા માટે જેટલું ધન ખર્ચાય તેટલું ઓછુંજ છે. બોર્ડિંગોનો લાભ શહેરવાળા જેટલો ગામડાવાળા લેતા નથી માટે આ તરફ-ના ભાઇઓએ મારી ભલામણ છે કે પોતાના કુમળા બાળકો કે જેમના ઉપરજ ભવિષ્યનો આધાર છે તેને કેળવવા માટે આવી બોર્ડિં-ગોનો લાભ અવશ્ય આપો. દરેક સભામાં સંપ વિગે વાતો થયાંજ કરે છે, પણ હજુ કુસંપ રૂપી બીજનું જડામૂળ ગયું નથી એ શોચનીય છે. હાલમાં શીખરજી, મક્ષીજી, અંતરીક્ષજી વગેરે તીર્થો ઉપર શ્વેતાંબર દિગં-

બંનેના ઝઘડા ચાલુંજ રહ્યા છે. અગ્રેસરો જેમ સારા કાર્યના માનને લાયક છે તેમ આવા ઝઘડાઓ માટે તેઓ દોષને પાત્ર છે. ભવિષ્યમાં આ સ્થિતિ કાયમ રહેશે તો દેશ રસાતળ થઈ ધર્મનો લોપ થશે અને જૈનધર્મ માત્ર સ્વપ્નવતરહેશે.મારેકહેવું જોઇએ ઘણા વર્ષથી મારા કુટુંબે માત્ર ધર્મ લાગણી ખાતાર આવા કજીઆઓમાં આગેવાનીભાગ લીધો છે અને જ્યારે જ્યારે પ્રસંગ આવ્યા ત્યારે દિગંબર શ્વેતાંબર ભાઇ વચ્ચે કજીયો પતાવવા પ્રયત્નો કર્યા છે પણ કેટલીક વખતે શ્વેતાંબર ભાઇઓના દુરાગ્રહથી કજીયાઓનો અંત લાવવાને નિષ્ફળ નીવડયા છીએ. મારા મર્હુમ ભાઇ માણેકચંદભાઇ તથા ભાણેજ ભાઇ ચુનીલાલ ઝવેરચંદ આવી ખટપટો કરતાં કરતાં સ્વર્ગે સીધાવ્યા છતાં પણ હજુ આ કજીયાઓનો અંત આવ્યો નથી જે જોઇ મને દીલગીરી થાય છે અને સૂચના કરૂં છું કે બંને ફીરકાની વગવાળી કમીટી નીમાઇ આપણા તીર્થોની હદ નક્કી થાય તોજ આપણી આબાદી થાય. આવા ઝગડાઓ નાતમાં, જાતમાં, પંચમાં; ગામમાં, ધર્મમાં કે જ્યાં ખૂણેખાંચરે હોય ત્યાંથી તેનો નાશ કરો. કુસંપરૂપી બીજ બાળી નાંખવાથીજ જૈન ધર્મનો વિજય ડંકો આખી દુનીયામાં વાગી શકશે. આપણી અવનતિ અને વસ્તી ઘટવાનું મુખ્ય કારણ બાળલગ્નજ છે. કન્યા કે વરનો વિવાહ નાની ઉમરમાં કરવાથી તેનામાં કાંઇ ઇંદ્રીની ખોડ જણાતી નથી, બંને ગુણમાં મળતાં આવતા નથી, તેમની કેળવણી અટકી પડે છે. માબાપને કરકરીયાવર કરવામાંજ બધો વખત જતો રહે છે. વગેરે અનેક હાનિઓ છે તો તે અટકાવવા કન્યાનો વિવાહ (સગાઇ) દશવર્ષ પહેલાંજ કરવો જોઇએ તેમજ વરને ૧૬ કે ૧૮ વરસ પહેલાં વિવાહની ગાંઠથી નજ જોડવો જોઇએ એટલે કે વર કન્યા વચ્ચે ૪ થી ૮ વર્ષનો તફાવત હોવોજ જોઇયે. ઘરડા પાછળના વરા, તેમજ લગ્ન. સીમંત વગેરે પ્રસંગે થતા વરાઓમાં હદ ઉપરાંત થતા ખરચો અટકાવી કેળવણી અને ઉદ્યોગ ધંધા તરફ પોતાના ધનનો ઉપયોગ કરવો જોઇએ. માતા કેળવાયલી હશે તોજ તે પોતાના પુત્ર પુત્રીને સારી રીતે કેળવી શકશે. માટે **સ્ત્રીકેળવણીની** ખાસ અગત્ય છે. તે માટે મહિલા પરિષદો ભરાવી જોઇએ તથા સ્થળેસ્થળે કન્યા પાઠશાળાઓ પણ ખુલવી જોઇએ. આવી સંસ્થા મુંબાઇ તથા ઇંદોરના શ્રાવિકાશ્રમો છે, જેના સ્થાપકોના આપણે આભારી છીએ. લગ્ન એ ધાર્મિક ક્રિયા છે તો એ ધાર્મિક ક્રિયા ધર્મશાસ્ત્ર અનુસારેજ થવા માટે **દરેક લગ્ન જૈન વિધિજ થવા જોઇએ.** હાલના સમયમાં તાર, ટપાલ રેલ્વેના સાધનથી દુરના ગામો અને શહેરો સાથે જોઇએ તેવો સંબંધ જોડી શકાય છે. નાતોના નાના નાના ટુકડાઓ પડી જવાથી વરને યોગ્ય કન્યા અને કન્યાને યોગ્ય વર મળતો નથી, જેથી કજોડા થાયછે તેમજ કેટલાકને વાંઢા રહેવું પડેછે તેમજ કેટલાકને સામટા રૂપ્યા ખર્ચી શ્વેતાંબરી કે વેષ્ણવમાંથી કન્યાઓ લાવવી પડેછે તો આ સઘળા સંકટો દૂર કરવા દિગંબર જૈનોમાં નાતની ભિન્નતા વિના લગ્ન થવા દેવાં જોઇએ એટલે **ભોજન વ્યવહાર ત્યાં કન્યા વ્યવહાર** થવાની જરૂર છે આપણે વૈસ્ય (વ્યાપારી) હોવા છતાં આપણું કાર્ય ભૂલી ગયા છીએ અને વ્યાપારમાં પાછળ પડયા છીએ તો મોજશોખને મુકી ફાલતુ ખરચો કમી કરી જીંદગીની જરૂરીઆતની વસ્તુઓ દેશમાં બનાવવા માટે કારખાનાઓ ઉઘાડો તથા દેશમાં બનતા માલને ઉત્તેજન આપો તથા તેના જાણકાર થવા માટે સ્કોલરશીપો સ્થાપી વિદ્યાર્થીઓને પરદેશમાં હુન્નર શીખવા મોકલો વિગેરે કહી સર્વેનો ઉપકાર માન્યો હતો.

એ પછી મી૦ જયકુમાર દેવીદાસ ચવરે વકીલ (અકોલા)ની દરખાસ્ત તથા શેઠ હીરાચંદ અમીચંદ શાહ (સોલાપુર) અને શેઠ શ્યામલાલ મોહનલાલ ચાંદવડના ટેકાથી કોન્ફરંસનું **પ્રમુખસ્થાન** જ્યારે હર્ષનાદ વચ્ચે આળંદ નિવાસી પ્રસિદ્ધ વ્યાપારી **શેઠ માણેકચંદ મોતીચંદને** આપવામાં આવ્યું હતું બાદ શ્રાવિકાશ્રમની બાળાઓએ પ્રમુખના સ્વાગતનું ગાયન ગાયા પછી પ્રમુખે પોતાનું ભાષણ **મરાઠી** ભાષામાં વાંચી સંભળાવ્યું હતું જેનો સારાંશ નીચે મુજબ છે—

પ્રમુખના ભાષણનો સારાંશ.

બંધુઓ અને બ્હેનો ! મારી યોગ્યતા ન હોવા છતાં આવું ભારે માન મને આપવા માટે હું આપનો આભારી છું. યુરોપમાં જે મહાભારત લડાઈ ચાલી રહેલી છે અને અતોનાક દ્રવ્ય અને મનુષ્ય સંહાર થયો છે તેનો તાકીદે અંત આવી તેમાં આપણા ન્યાયી બ્રીટીશ રાજ્યનો વિજય થાઓ એવી મારી શ્રી જિનેશ્વર પ્રત્યે પ્રાર્થના છે. આ કોન્ફરંસના મુખ્ય સ્થાપક અને અગ્રગણ્ય નેતા દાનવીર જૈનકુલભૂષણ શેઠ માણેકચંદજીના વિયોગથી આપણી કોમને મોટો ધોકો પહોંચ્યો છે. આ શેઠે પોતાનું તનમન ધન અર્પણ કરી દિ. જૈનકોમ ઉપર જે ઉપકાર કર્યો છે તે કદીપણ ભુલાય તેમ નથી. લગભગ ૧૨ લાખ રૂપિયાના દાન ઉપરાંત મરણ અગાઉ ધર્માદા કાર્યો માટે બે લાખ રૂપિયાની મીલકત ટ્રસ્ટ કરી ગયા છે. જેમનો જીવન ગ્રાગારોએ અનંત ધડો લેવાલાયક છે. આ શેઠના સ્મારકમાટે માણેકચંદ જૈન ગ્રંથમાળા સ્થપાઇ છે તેને સર્વેએ ઉત્તેજન આપવું જોઇએ.

કોન્ફરંસની નવ વર્ષની કારકીર્દી દરમ્યાન વ્યવહારિક અને ધાર્મિક કેળવણી લેવાનાં અનેક સ્થાનો બોર્ડિંગો-પાઠશાળાઓ થયાં છે તેમાંથી અનેક વિદ્વાનો ઉત્પન્ન થયા છે તથા ઘણાઓ કેળવણીમાં આગળ વધ્યા છે. વળી પચીસ ત્રીસ વર્ષની અંદર અનેક પુસ્તકો છપાઇ બહાર પડવાથી પુસ્તકો ન મળવાની અડચણ દૂર થઇ છે. આ કાર્યોમાં મુંબાઇનું જૈન ગ્રંથ રત્નાકર કાર્યાલય, જૈનગ્રંથ પ્રચારક સંસ્થા, કલકત્તા સરસ્વતીભવન આરા, જૈન બુક ડીપો સોલાપુર, 'દિગંબરજૈન' સુરત વગેરેએ જે કાર્ય કર્યું છે તે તારીફ કરવા લાયક છે. નાના ઉપરાંત સિદ્ધાંતના ગ્રંથો પણ તૈયાર મળવા લાગ્યા છે એ ઓછા આનંદની વાત નથી. જૈન ગ્રંથોનો અંગ્રેજી ભાષામાં અનુવાદ કરવાનું જે કાર્ય કુમાર દેવેંદ્રપ્રસાદજી, બાબૂ જુગમંદરલાલ જૈની બેરીસ્ટર, બાબૂ અજીતપ્રસાદજી એમ. એ. વગેરે કરી રહેલા છે તે અત્યંત આવકારદાયક છે અને એનાજ રૂપે ઇંગ્લાંડમાં મહાવીર બ્રધરહુડ નામે સંસ્થા સ્થપાઈ તેમાં કેટલાક યુરોપીયનો પણ સભાસદ થયા છે અને તેમણે જૈનધર્મ સ્વીકાર્યો છે. કોન્ફરંસના મુખ્ય ખાતાંઓ પૈકી 'જૈનમિત્ર' પરીક્ષાલય અને ઉપદેશકફંડે સારું કાર્ય બજાવ્યું છે પણ એ ત્રણે ખાતાં વધારવા માટે સર્વેએ લક્ષ આપવું જોઇએ. વસ્તીપત્રક પરથી જણાય છે કે આપણી વસ્તી ઘટતી જાય છે તો આપણે તેનાં કારણો તપાસવાં જોઇએ, આનું એક કારણ ઉપદેશને અભાવે અનેક જૈનો પરધર્મમાં ભેળાઇ જવાનું પણ છે. ખુલ્ના સતારા, અહમદનગર વગેરે સ્થળોના કાસાર જૈનો ધર્મથી વિમુખ થયેલા છે અને પોતાને હિંદુજ જણાવે છે તો તેને સુધારવાને ઉપદેશકો મોકલવા જોઇએ અને ફરી લાગણીની યોજના કરી લેવી જોઇએ.

મુડબિદ્રીમાં ધવલ જયધવલ ગ્રંથોની એક પ્રત થઈ છે. તેની વધુ પ્રતો કરાવી મોટા મોટા શહેરોમાં તે રાખવી જોઇએ. સમાજ ઉન્નતિ માટે હાલનો સમય અનુકૂળ છે.

આપણે જો શરૂઆત કરીએ તો કેળવણીના કાર્યમાં દયાળુ બ્રીટીશ સરકાર પણ મદદ કરે છે. અનેક સ્થળે થતી જીવહિંસા બંધ કરવા માટે મુંબાઇની જીવદયા પ્રચારક મંડળી, ધુળીયાની પ્રાણીરક્ષક સંસ્થા વગેરેએ જે કાર્ય બજાવ્યું છે તે ધન્યવાદને પાત્ર છે. અમદાવાદમાં દેશભક્ત મી. ગાંધીએ જે સત્યાગ્રહાશ્રમ સ્થાપ્યું છે તેમાં પાંચ અણુવ્રતનું પાલન કરાય છે. એ ખુશી થવા જેવું છે. કોન્ફરંસે બીજું અગત્યનું કાર્ય એ કરવાનું છે કે મુંબાઇ ઇલાકામાં દિ. જૈનોમાં કેળવણી લેનારા વિદ્યાર્થીઓની નોંધ થવી જોઇએ તથા જ્યાં જ્યાં કેળવણી ન અપાતી હોય ત્યાં ત્યાં માબાપોને સમજાવવા જોઇએ. દરેક સ્થળે ઉપદેશક સભાઓ સ્થપાવી જોઇએ અને મહીને પંદરદિને સભા થઇ ધાર્મિક અને સામાજિક વ્યાખ્યાનો થવાં જોઇએ. કેટલીક બોર્ડિંગોમાં ધર્મશિક્ષણની બરાબર વ્યવસ્થા નથી તે ત્યાં કરવી જોઇએ. સ્ત્રીશિક્ષણના અભાવેજ બાળવિવાહનો પ્રચાર વધી ગયો છે. ચાર ચાર પાંચ પાંચ વર્ષના છોકરાઓનાં વિવાહ કરવાનો પ્રચાર સેતવાળ, પંચમ અને ચતુર્થ જૈનોમાં થઇ ગયો છે તે અટકાવવાં જોઇએ. બાળવિવાહ, વૃદ્ધવિવાહ, કન્યાવિક્રય અને લગ્નાદિકના લાખલુટ ખરચો વગેરે અનિષ્ટ રિવાજો કેળવણીનો પ્રચાર કરવાથી નાબૂદ થઇ શકશે વગેરે વગેરે.

પ્રમુખના ભાષણ બાદ કોન્ફરંસના મહામંત્રી બાબૂ માણેકચંદજી જૈનાડાએ બે વર્ષનો રિપોર્ટ વાંચી સંભળાવ્યો હતો અને સભાના મુખ્ય અંગો **'જૈનમિત્ર' પરિક્ષાલય** અને **ઉપદેશકવિભાગને** વધુ ઉત્તેજન આપવા સૌને આગ્રહ કર્યો હતો. બાદ શ્રવણબેલગોળા નિવાસી ચંદય્યાએ ચોખાના દાણા ઉપર ૨૦-૨૫ અક્ષર લખેલા, પતરાના નાના ટુકડા ઉપર તથા નાડાછડી ઉપર લખેલા અત્યંત બારીક અક્ષરોનું કામ બતાવ્યું હતું જે જોઇ સર્વે અજાયબ થયા હતા અને આ દિગંબરી બંધુને આવી ઉત્તમ કારીગીરી માટે ધન્યવાદ આપ્યો હતો. એ પછી ૩૫ મેમ્બરોની સબજેક્ટ કમીટી નીમાયા પછી વખત હોવાથી શ્રી. શીવજી દેવશીનો ભજનરૂપે ઉપદેશ તથા ન્યાયાચાર્ય પં. માણેકચંદજી (મોરેના)એ **'જૈન ધર્મની ઉત્તમતા'** ઉપર શાસ્ત્રીય દલીલોથી ભરપૂર એવું ઉત્તમ વ્યાખ્યાન આપ્યું હતું. આ પ્રસંગે કોન્ફરંસમાં **લખનૌરના પારસી પ્રીસ્ટ** મીનોચ્હેર શાપુરજી બહેરામજી રાવ (કારણસર નાસિક આવેલા હતા. ત્યાંથી શ્રી. મગનભાઇની સૂચનાથી) પધારેલા હતા, તેમણે પં. માણેકચંદજીના ભાષણની તારીફ કરી કેટલોક ખુલાસો કરતાં જણાવ્યું જૈન ધર્મના 'અહિંસા ધર્મ'ના સિદ્ધાંતને હું માન આપતો આવ્યો છુંજ. મેં ૩૦ વર્ષ થયાં માંસદારૂનો ત્યાગ કર્યો છે અને પારસી તથા મુસલમાનોમાં માંસદારૂ નહિજ વાપરવાનો ઉપદેશ કરૂં છું, જેથી ઘણાને મેં માંસદારૂ છોડાવ્યો છે. **પારસી તથા મુસલમાનના ધર્મશાસ્ત્રોમાં હિંસા નહિ કરવાનું ફરમાન છેજ** વગેરે ખુલાસાથી સર્વેને આનંદ થયો હતો. અને સભાનું કાર્ય ૭ વાગતે પૂર્ણ થયું હતું.

એ રાત્રે શાસ્ત્ર સભા પછી ૯ થી ૨॥ વાગતા સુધી સબજેક્ટ કમીટી મળી હતી અને કેટલીક રસાકસી પછી ૧૪ ઠરાવો નક્કી કરવામાં આવ્યા હતા, જેમાંના ત્રણ ચાર અતિ મહત્વના હતા.

महिला परिषद्.

બીજ (ચૈત્ર સુદ ૬)ની રાત્રે કોન્ફરંસના મંડપમાં ભારતવર્ષીય દિગંબર જૈન મહિલા પરીષદની છઠ્ઠી વાર્ષિક બેઠક મળી હતી, જેમાં આશરે ૩૦૦ સ્ત્રીઓ હાજર હતી. પ્રમુખસ્થાન આણંદના શ્રીમતી સૌ૦ સખુબાઇએ

ગવાયું હતું. બાળકીઓએ સ્વાગતનું ગાયન ગાયા પછી પ્રમુખે પોતાનું ભાષણ વાંચી સંભળાવવા પછી શ્રાવિકાશ્રમની બે શ્રાવિકાઓ ગરગટે અને કારકાબાઇએ રાગી અને વૈરાગીનો સંસ્કૃત સંવાદ કર્યો હતો. બાદ જૈન મહિલારત્ન શ્રીમતી મગનબાઇએ પરીષદનો રિપોર્ટ વાંચ્યા પછી પારસી પ્રીસ્ટ મી. મીનોચહેર રાવે સ્ત્રીને પતિ તરફના કર્તવ્ય વિષે વિવેચન કર્યું હતું. બાદ લખનોર નિવાસી શ્રી. પારવતીબાઇના મૃત્યુ બદલની દિલગીરીનો પ્રથમ ઠરાવ તથા પુના સેવાસદનવાળા જનુતાઇ બહેની દરખાસ્ત અને કારકાબાઇની ટેકાથી પ્રોફેસર કર્વેએ પુનામાં સ્ત્રીઓની યુનીવરસીટી ખોલવા માટે તેનો ધન્યવાદ માનનારો અને તેમાં જૈન સ્ત્રીઓને સામેલ કરી ધર્મ શિક્ષણ આપવાની સૂચના કરનારો બીજો ઠરાવ થયા પછી ૧૦ વાગતે પ્રથમ બેઠક વિસર્જન થઇ હતી.

कोन्फरंसनी बीजी बेठक.

બીજી બેઠક સુદ ૭ ની બપોરે બે વાગતે શરૂ થતાં મંગલાચરણ થયા પછી નીચેના ઠરાવો સર્વાનુમતે પસાર થયા હતા–

ठराव पहेलो—आ कोन्फरंस हालनी महाभारत लडाईनो लाकांदे शांतिनी साथे ब्रीटीश राज्यनो सन्मानपूर्वक विजय इच्छे छे अने ठरावे छे के आ ठरावनी नकल मुंबाई सरकारने मोकलवी. प्रमुख तरफथी.

ठराव बीजो—आ कोन्फरंसना मुख्य स्थापक अने स्थायी प्रमुख दानवीर जैनकुलभूषण शेठ माणेकचंद हीराचंद झवेरी जे. पी. ना असमय वियोग थवाथी आ सभा पोतानो अंतःकरणपूर्वक शोक प्रकट करे छे अने आ शेठना अमुल्य जीवननुं अनुकरण करवाने बीजा श्रीमानोने प्रेरणा करे छे. दरखास्त—ब्र. शीतलप्रसादजी.—टेको जयकुमार देवीदास चवरे वकील, ओनरेबल रायबहादुर लाला सुलतानसिंहजी दिल्ली अने मूलचंद किसनदास कापडिया—सूरत.

આ ઠરાવમાં ઓ. રા. બા. લાલા સુલતાનસીંહજીએ ખાસ જણાવ્યું કે શેઠ માણેકચંદજી કેળવણીના ઘણાજ પ્રેમી હતા. કોલેજમાં ભણવાવાળા વિદ્યાર્થીઓ તરફ એમનું ખાસ લક્ષ હતું અને તેઓમાં ધાર્મિક જ્ઞાન છે કે નહિ તેની વારેઘડીએ પૂછપરછ કરતા હતા. જ્યારે હું વિદ્યાર્થી અવસ્થામાં હતો ત્યારે મને પણ સ્વાધ્યાય કરવાની પ્રેરણા કરી હતી. એમના વિદ્યાપ્રેમની તારીફ કરવાને હું સમર્થ નથી. એમના પ્રતાપથીજ લાહોર અને અલાહબાદની બોર્ડિંગો ખુલી શકી છે, જેથી સેંકડો યુવકો જૈનધર્મથી વિમુખ થતા બચી ગયા છે. ૧૫–૨૦ વર્ષ પહેલાં તીર્થોની બુરી દશા હતી જે સુધારવાનું અને તીર્થક્ષેત્ર કમીટી સ્થાપવાનું માન શેઠ માણેકચંદજીનેજ ઘટે છે વગેરે. વળી મુળચંદ કસનદાસ કાપડીઆએ શેઠ માણેકચંદજીના ગુણોનું અનુકરણ કરવા વિષે બોલતાં એ શેઠ મરતાં બે વર્ષ અગાઉ જે બે લાખનું ટ્રસ્ટ કરી મુક્યું હતું તેનો દાખલો લઇ પોતાની હયાતિમાં પુણ્યદાન કરવાનો અન્ય શ્રીમાનોને આગ્રહ કર્યો હતો.

ठराव त्रीजो—आ सभा ठराव करे छे के सं. २४४० अने २४४१नो सभानो रिपोर्ट मंजुर करवामां आवे, पण आंकडाओ

जमे बाजु १)॥ नो वधारो आवे छे ते फेर काढवा चांदमलजी अजमेरा अने अमृतलाल शर्माने नीमे छे. दरखास्त—शेठ हीराचंद अमीचंद शाह सोलापुर. टेको—पं. पन्नालालजी कासलीवाल.

ठराव ४थो—काशीमां हिंदु विश्वविद्यालयनी स्थापना करवा माटे आ कोन्फरंस हर्ष प्रकट करे छे अने पूर्ण आशा राखे छे के आ विद्यालयनी मेनेजींग कमीटी प्राचीन जैनाचार्योना रचेला साहित्यो—न्याय, व्याकरण, तत्वज्ञान वगेरेना ग्रंथोने अभ्यासक्रममां अवश्य दाखल करशे अने जैन विद्यार्थीओने पवित्र जैनधर्मनी केळवणी साथे व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त कराववामां दरेक प्रकारनी सगवड करावी आपशे तथा ठरावे छे के आ ठरावनी नकल पं. मदनमोहन मालवीया अने डॉ. सुंदरलालजीने मोकलवी. दरखास्त—प्रमुख तरफथी.

આ ઠરાવ પ્રસંગે ઓ. શ. બ. લાલા સુલતાનસિંહજીએ જણાવ્યું કે હું એ વિદ્યાલયની કમીટીનો એક મેમ્બર છું. મેં પણ એમાં રૂ. १००००) ભર્યા છે તેમ ઇટોરના શેઠીએ પણ રૂ. १५०००) મંદિર માટે ભર્યા છે તેમ બીજા જૈનોએ પણ મદદો આપી છે તો જૈનોની કુલે કેટલી મદદ મળી છે તે માલુમ પડવું જોઇએ. એ માટે હું સ્પષ્ટ કરી એ આંકડો મેળવીશ. એમાં જૈનો માટે મંદિર પહેલાં બોર્ડીંગ બનવાની ખાસ જરૂર છે. એ સંબંધી મારાથી બનશે તેટલું કરવા હું તૈયાર છું વગેરે.

ठराव ५मो—त्रे वर्ष थयां पं. अर्जुनलालजी शेठी. बी. ए. विनातपासे जैपुरनी जेलमां दुःख भोगवी रहेला छे तथा अनेक अरजीओ करवा छतां कंईपण उत्तर मळतो नथी जेथी आ सभा ठराव करे छे के नामदार वॉयसरोय लोर्ड चेम्सफर्डनी सेवामां निवेदनपत्र तथा एक डेप्युटेशन मोकलवामां आवे, जेमां बाबू अजित प्रसादजी एम. ए. एल. एल. बी. वकील (लखनौर), शेठ हीराचंद अमीचंद शाह (सोलापुर) तथा श्रीयुत् जयकुमार देवीदास चवरे वकील (अकोला)ने अधिकार आपवामां आवे के तेओ बीजाओने पण सामेल करीने एनो प्रबंध करे, अने तेना मंत्री तरीके बाबू अजितप्रसादजीने नीमे छे. दरखास्त प्रमुख तरफथी.

ठराव ६ ठो—मुडबीद्रीमां धवल जयधवल अने महाधवलना सिद्धांत ग्रंथोनी एकेक प्रत थईने जीर्णोद्धार थयो छे. हवे ए ग्रंथोनी बधु प्रतो ज्यां योग्य लागे त्यां आपवाथी घणो लाभ थाय, जेथी मुडबीद्रीना पट्टाचार्य अने मुकतेसर पंचने नकल करवा देवानी परवानगी आपवाने आ सभा अरज करे छे अने आ ठरावनी नकल तार अने पत्रद्वारा मोकलवानुं ठरावे छे. दरखास्त—शेठ हीराचंद नेमचंद ऑ. मेजीस्ट्रेट सोलापुर. टेको—ब्र. शीतलप्रसादजी अने चवरे वकील अकोला.

આ ઠરાવ પ્રસંગે શેઠ હીરાચંદ નેમચંદજીએ આ ગ્રંથોનો ઇતિહાસ સંભળાવતાં જણાવ્યું હતું કે સં. ૧૯૪૧માં આ ગ્રંથનો પત્તો લાગવાથી હું અહમદનગર જઇને ત્યાં ગયેલો અને તે પછી શેઠ માણેકચંદજી સાથે મળી ફંડ કરી આ અમૂલ્ય ગ્રંથોનો ઉદ્ધાર કરાવ્યો છે.

ठराव ७ मो—हालनी जैन कोम विशेषे करीने व्यापारी होवा छतां पण हाल एनी आर्थिक दशा दिनप्रतिदिन हीन थई रहेली छे जेना सुधारा माटे आ कोन्फरंस ठरावे छे के जैनोमां विज्ञान हुन्नर अने उद्योगनी खीलवणीनी वृद्धि करवामां आवे तथा ते माटे योग्य विद्यार्थीओनी स्कोलरशीपनो बंदोबस्त करावीने वडोदराना कळाभवन वगेरेमां मोकलवामां आवे. दरखास्त-चवरे वकील-अकोला. टेको—कोठारी हीराचंद सखाराम—आळंद.

ठराव ८मो—जैन वांचकोनी अत्यंत उत्कंठा जोईने आ कोन्फरंस ठराव करे छे के कोन्फरंसना पाक्षिक पत्र "जैनमित्र"ने वीर सं. २४४३ थी (सं. १९७३ना कार्तकथी) अठवाडिक रूपे प्रकट करवामां आवे अने सुरत निवासी मूलचंद कसनदास कापडियाने तेना प्रकाशक नीमवामां आवे अने आ सभा योग्य समजे छे के ए महाशयना "जैन विजय" प्रेस—सुरतमां ए पत्र छपाईने त्यांथी (सुरतथी) ज प्रकट करवामां आवे अने तेनुं पोस्टेज साथे वार्षिक मूल्य रु. ३) राखवामां आवे. मेम्बरो पासे ३)ने बदले रु. ३॥ लेवामां आवे एटले मेम्बरफीमांथी २) 'जैनमित्र' खाते अपाय. दरखास्त—पं. कस्तूरचंदजी उपदेशक वडनगर, टेको—हीराचंद सखाराम कोठारी—आळंद.

ठराव ९मो—कोन्फरंसनुं उपदेशक खातुं, परीक्षालय खातुं, प्रबंध खातुं वगेरे कार्योमां नाणांनी अत्यंत आवश्यता होवाथी आ सभा ठरावे छे के एना साधारण खातामां सर्व भाईओ मदद करे. दरखास्त—बाबू माणेकचंदजी बैनाडा महामंत्री, टेको पं. धन्नालालजी, पं. कस्तूरचंदजी अने मूलचंद कसनदास कापडिया सुरत.

આ ઠરાવ ઉપર અસરકારક વિવેચન થવાથી તેજ વખતે સભાના જનરલ ફંડમાં આશરે રૂ. ૧૫૦૦) ભરાયા હતા, જેમાંની મુખ્ય રકમો અને નામો નીચે મુજબ છે—૪૦૦) શેઠ માણેકચંદ મોતીચંદ આળંદ (પ્રમુખ). ૧૦૧) શેઠ રોડમલ મેઘરાજ સુસારી, ૧૦૧) શેઠ હીરાચંદ નેમચંદ દોશી (સોલાપુર), ૧૦૧) શેઠ નવલચંદ હીરાચંદ ઝવેરી મુંબાઇ, ૧૦૧) રા. બા. સે. લાલા સુલતાનસિંહજી દિલ્હી (લાઇફ મેમ્બર તરીકે), ૧૦૧) ફુલચંદજી ચુનીલાલજી ઝવેરી (લાઇફ મેમ્બર તરીકે), ૧૦૦) બીલાજી ગાંડુચાંદજી બડવાણી (લાઇફ મેમ્બર તરીકે), ૫૧) શેઠ ધનરાજજી કાસલીવાલ, ૫૧) શેઠ નીમચંદ અમીચંદ સોલાપુર, ૩૧) બીરચંદ હીરાચંદ આંદર, ૨૫) શેઠ નાનાસા મન્નુસા બાળાપુર. ૨૫) દામોદર ખુશાલદાસ નાંદગાંવ, ૨૫) શેઠ સખારામ નેમીચંદ અકલોજ, ૨૧) શેઠ. નવલચંદજી બારામતી, ૧૫) નગીનદાસ ધુ.

પોતમદાસ કરમસદ, ૧૧) શેઠ શામલાલજી બરાનપુર. ૧૧) તોતારામ નારાણા મુંબાઇ, ૧૧) ગુલાબચંદ પાનાચંદ વલસંગ, ૧૧) અમોલખ રેવચંદ મુટેલી, ૧૧) મુલચંદ કસનદાસ કાપડિયા–સુરત, ૧૧) મી. ચવરે વકીલ અકોલા, ૧૧) ગેંદાલાલજી અંજડ, ૧૧) શેઠ ભાગચંદજી સોનજી તથા મોહનલાલજી પીપલગાંવ, તલકચંદ કુબેરદાસ બીલોડા, છોટાલાલ પાર્શ્વનાથ ડુંગરી, મોતીચંદ સાં. બીલોડા, દશરથશા ધરણગાંવ, મધુકચંદ નાનચંદ બીલોડા, વેણીચંદ પાનાચંદ વાંકાનેર, કુંજીલાલ ખાન્નુજ, શીવદાસજી બરાનપુર, પુરણલાલ નેરી, લાલાસા વીઠાસા માલેગાંવ, ગેસરભાઇ બડવાહા, શા.) જીવનદાસ દયાલજી ભાવનગર, રામકૃષ્ણ છગતપુરી, અમ્રતલાલ ધામી ભાવનગર, ગુલાબચંદ ટાકલી, રાયચંદ બાઉ મુંબાઇ, અને છગનીરામ વીરગાંવ, એ દરેકે રૂ. ૫) ભર્યા હતા તથા એ ઉપરાંત પાંચ રૂ. થી ઓછી રકમો ભરાઇ હતી. તથા પ્રમુખે ૧૦૧) માણેકચંદ ગ્રંથમાળામાં ભર્યા હતા.

વળી આ પ્રસંગે મુલચંદ કસનદાસ કાપડીઆએ 'અંજનગીરી' નામે નવા જણાયેલા તીર્થનો સુજનગઢના યાત્રીઓનો આવેલો પત્ર વાંચી સંભળાવ્યો હતો.

ठराव १० मो–आ कोन्फरंस ठरावे छे के पोतपोताना गाममां भणवालायक केटला विद्यार्थीओ छे अने तेमां केटला प्राथमिक केळवणी ले छे अने केटला नहि तेनी संख्या दर वर्षे काढीने सभाना मंत्री उपर मोकलवी अने केलवणी न लेवाना शा शा कारणो छे ते पण मंत्रीने जणाववुं. तथा बालको प्राथमिक केळवणी ले एवो दरेक महाशये प्रयत्न करवो जोईए. **दरखास्त–आणाप्पा मूळे-वकील. टेको–मोहनलाल हीचंद दोशी अने ब्र. शीतलप्रसादजी.**

આટલા ઠરાવો થયા પછી શ્રીયુત શીવજી દેવશીનો ભજનરૂપે ઉપદેશ થયા પછી સાંજે ૬ વાગતે બીજી બેઠક પુરી થઇ હતી.

त्रीजा दिवसनी बेठक.

ચૈત્ર સુદ ૧૧નીજ રાત્રે ૯ વાગતા પછી ત્રીજી બેઠક શરૂ થતાં નીચેના ઠરાવો થયા હતા.

ठराव ११मो—आ कोन्फरंस ठरावे छे के स्त्रीओमां धार्मिक तथा व्यवहारिक केळवणीनो प्रचार करवा माटे जैन कोमे प्रयत्न करवो जोईए. **दरखास्त**–तलकचंद वेणीचंद फलटण. टेको–केवलचंद खुशालचंद पहाडा, हीराचंद कोठारी, जिनदास विद्यार्थी, ब्र. शीतलप्रसादजी अने अम्रतलाल धामी–भावनगर.

ठराव १२मो—जैन कोममां हानिकारक रिवाजो अने व्यर्थव्यय निवारणनुं कार्य बहुज शिथिलताथी चाली रहेलुं छे माटे आ कोन्फरंस ठरावे छे के जैन कोममांथी अनिष्ट रिवाजोनो नाश करवामां आवे. **दरखास्त**–पं. पीताम्बरदासजी उपदेशक. टेको–फूलचंद माणेकचंद आळंद, अने श्री. शीवजीभाई देवशी.

ठराव १३मो—'जैनतत्वप्रकाशक' अने 'जैनहितैषी' पत्रोमां जे विधवाविवाहना मंडननुं आंदोलन शरु थयेलुं छे ते

कार्य जैनधर्मथी अत्यंत विरुद्ध छे जेथी आ सभा ए दुष्कृत्यनो निषेध करे छे अने पत्र-संपादको तथा विद्वानोने प्रेरणा करे छे के तेओ एनी विरुद्धमां लेखो प्रकट करे. दरखास्त-पं. पीताम्बरदासजी उपदेशक. टेको-न्यायाचार्य पं. माणेकचंदजी मोरेना, पं. कस्तूरचंदजी उपदेशक वडनगर, पं. धन्नालालजी अने ब्र. शीतलप्रसादजी.

ठराव १४ मो—आ ठराव परीक्षालय तथा मेनेजींग कमीटीना. मेम्बरोनी फेरबदली संबंधीनो हतो.

એ પછી શ્રવણબેલગુલવાળા વિજયચંદ્રપ્પાએ પ્રમુખનું નામ પતરાના નાના કટકાપર અત્યંત બારીક અક્ષરે લખી તે ભેટ આપ્યું હતું, જે પછી એ મહાશયને પ્રમુખની સહીથી અભિનંદનપત્ર આપવાનો ઠરાવ થયો હતો, જે પછી પ્રમુખે પોતાનું છેવટનું ભાષણ કરી બધા ઠરાવોપર ટુંક વિવેચન કરી તે અમલમાં લાવવાની સર્વેને સૂચના કરી હતી. બાદ મૂલચંદ કસનદાસ કાપડીઆએ પ્રમુખનો, પ્રેક્ષકોનો, સ્વાગતકમીટીનો, પોલીસનો, વોલંટીઅરો વગેરેનો આભાર માન્યો હતો તથા કોન્ફરંસની આવતી બેઠક જો કોઇ સ્થળેથી આમંત્રણ ન મળે તો સભાને ખરચે સિદ્ધક્ષેત્ર શ્રી કુંથલગીરી ઉપર ભરવાની સૂચના કરી હતી. બાદ પ્રમુખને હારતોરા આપ્યા બાદ રાત્રે ૧૨॥ વાગે કોન્ફરંસ વિસર્જન થઇ હતી.

महिलापरिषद्नी बेठको.

એજ દિને એટલે ચૈત્ર સુદ ૭ની બપોરે અને રાત્રે મહિલા પરિષદની બેઠકો થઇ હતી. જેમાં નીચેના ઠરાવો વગેરે કાર્યો થયાં હતાં.

ठराव ३ जो—जैन कोममां योग्य जैन अध्यापिकाओनी घणीज खोट छे जेथी कन्याशाळाओ खोलवामां घणीज अंतराय आवेछे. आ खोट पुरी पाडवाने आ परिषद् जैन विधवाओने प्रेरणा करे छे के तेओ श्राविकाश्रममां दाखल थई विद्यानो लाभ ले जेथी तेमनुं जीवन सुखमयी अने परोपकारी थाय. दरखास्त. श्रीमती **गरगट्टे** टेको—**भीमाबाई**

ठराव ४ थो—आ परिषद ठराव करे छे के जैन कोममांथी बालविवाह, वृद्ध-विवाह, कन्याविक्रय वगेरे कुरिवाजो बंध कराववा माटे स्त्री समाजे पूर्ण प्रयत्न करवो जोइए तथा एवो **नियम** करवो जोइए के कन्याओनी सगाई दश वर्षनी उमर पहेलां नज करवी अने लग्न (विवाह) १८ वर्षनी उमर पहेलां छोकराना अने १३ वर्षनी उमर पहेलां छोकरीनां नज करवां.दरखास्त-श्रीमती **कुंकुबाई** सोलापुर टेको-**कमळाबाई**, श्राविकाश्रम—मुंबाई.

ठराव ५ मो—आ परिषद श्रीमती बेसरबाई बडवाहनिवासीनो विद्याना प्रचार माटे उत्साह अने हालमांज स्त्री शिक्षा माटे करेली रु. २५०००)नी सखावत माटे तेमने "**दानशीला**" नी पदवी आपे छे. दरखास्त **सुशीलाबाई** टेको—**जटावबाई** मुंबाई.

ठराव ६ ठो—आ परिषद्ना स्थायी

प्रमुखा स्व. पारवतीबाईजी स्वर्गवास थवाथी तेमनी जग्याए श्रीमती कंकुबाई सोलापुर-निवासीने स्थायी प्रमुखा तरीके नीमे छे. दरखास्त–सुशीलाबाई दिल्ही. टेको–सुंदरबाई–धुळीआ.

ઉપલા ઠરાવો થવા ઉપરાંત શ્રાવિકાશ્રમની બે બ્હેનો ભીમા તથા લંકાએ 'વિદ્યા' ઉપર મરાઠી સંવાદ ભજવ્યો હતો તથા શ્રીયુત **શીવજી દેવશીએ** 'પરોપકાર' ઉપર અસરકારક ભાષણ કરવાથી આશરે રૂ. ૩૦૦) **શ્રાવિકાશ્રમ** (મુંબાઇ)ની મદદ તરીકે મલ્યા હતા, જેમાંની મુખ્ય રકમો નીચે મુજબ છે–૧૦૧) સૌ. સખુબાઇ સોલાપુર, ૩૧) સૌ. સુંદરબાઇ ધુળીયા, ૨૫) સૌ. પત્ની શેઠ હીરાચંદ અમીચંદ સોલાપુર, ૧૧) શ્રી. જડાવબાઇ મુંબાઇ, ૨૫) સૌ. પરસનબાઈ મુંબાઇ, ૧૧) સુસારીવાળાનાં સૌ. પત્ની, ૭) ચંપાબાઇ મુંબાઇ, ૨૫) સુશીલાબાઇ દિલ્હી વગેરે. વળી રાત્રે મળેલી ત્રીજી બેઠકમાં ફુલબાઈ, ચતુરબાઇ, કસ્તુરબાઇ અને ચંચળબાઇના બાળ વિવાહ નિષેધ અને સ્ત્રી કેળવણી ઉપર જુદાં જુદાં ભાષણો થયાં હતાં તથા એક પાંચ વર્ષની છોકરીએ સ્તુતિ કરવા પછી મહિલા પરિષદની છઠ્ઠી બેઠક વિસર્જન થઇ હતી.

ચૈત્ર સુદ ૮ ને દીને સવારે સર્વેએ ગજપંથાજી પહાડની યાત્રા મોટી સંખ્યામાં કરી હતી તથા સાંજે જલયાત્રાનો વરઘોડો ધામધૂમથી નીકળી ગામને પાદરે ૧૦૮ કળશથી અભિષેક થયો હતો જે સમયે રૂ. ૨૨૫)ની ઉપજ થઇ હતી તેમજ ભંડાર ખાતે આશરે રૂ. ૩૦૦)ની ઉપજ થઇ હતી.

વિશેષમાં કોન્ફરંસના પ્રમુખ શેઠ માણેકચંદ મોતીચંદે **વોલંટિઅરોની** સેવાના બદલામાં તેમને મેડલો કરાવી આપવાને રૂ. ૩૦) આપવા જણાવ્યું હતું તથા પહાડ ઉપરથી ઉતરતાં ડાબા હાથપર બે નવા કુંડો અમારા જોવામાં આવ્યા છે જેમાં પણ પાણી ભરાયલુંજ રહે છે. વળી ગયા અંકમાં આ કુંથલગીરી તીર્થનો ઇતિહાસ પ્રકટ કરેલો છે તે મુજબ નીચેના મંદિરની પાછળ પ્રાચીન પથ્થરનું બનેલું ન તો કોઇ મંદિર જોવામાં આવ્યું તેમજ ૩ હાથ ઉંચી ૪ અર્દ્ધ પદ્માસન અને ૩॥ હાથ ઉંચી ૭ કાયોત્સર્ગ પ્રતિમા પણ જણાઇ નથી, પણ માત્ર એક નંદિશ્વરની અને એક કાયોત્સર્ગ એમ બેજ ખંડિત પ્રતિમાઓ મેદાનમાં છુટી પડેલી જોવામાં આવતી હતી તેમજ મંદિરમાં બધી પ્રતિમાઓ તો ૧૯૪૩માં શેઠ રાવજી નાનચંદવાળા તરફની પ્રતિષ્ઠા થયેલી છે જ્યારે આશરે ૩ ઇંચ ઉંચી એક ધાતુની પ્રતિમા **અર્દ્ધપદ્માસને** જોવામાં આવી છે, જેના ઉપરનો લેખ ઘસાઇ ગયેલો છે તેમજ ધર્મશાળાના પાછલા ઓરડામાં આશરે ત્રણ ફુટ ઉંચી પાર્શ્વનાથ તીર્થંકરની શ્યામ પ્રતિમા પ્રતિષ્ઠા કર્યા વગરની (નવી) ગોઠવી મુકેલી છે. પહાડ ઉપર ચઢવાનાં પગથીયાં તો બરાબર ૩૨૫ જ છે.

વળી આ પ્રસંગે ખંડેલવાલ દિ. જૈન પંચ મહાસભાની મેનેજીંગ કમીટીની બેઠકો પં. ધન્નાલાલજીના પ્રમુખપદે સુદ ૬ અને ૮ ને દિને થઇ હતી જેમા નાયદુંગરીના ઝઘડાઓનો નીકાલ કરવાને નીમાયલી કમીટીનો કોરમ ૪નો રાખવાનો, એક મેમ્બરતી ફેરબદલી કરવાનો, આવતી વાર્ષિક બેઠક કાર્તક સુદ ૧૫ ઉપર **કચનેરજી** તીર્થમાં કરવાનો તથા બાબૂ માણેકચંદજી બેનાડાને સહાયક મંત્રી તરીકે નીમવાનો એમ મળી ૪ ઠરાવો થયા હતા.

એકંદરે જોતાં ગજપંથાજીમાં મળેલી આ કોન્ફરંસનું કાર્ય ઉત્સાહશાંતિપૂર્વક અને સફળતાથી પાર પડ્યું હતું.

छट्ठी महिला परिषद (गजपंथाना) प्रमुख सौ. सकुकाईनुं भाषण.

आ भाषण मराठी भाषामां अपायुं हतुं जेनो गुजराती सार नीचे मुजब छे:—

प्रिय व्हेनो अने माताओ ! मने आजे जे मान आपवामां आव्युं छे तेने हुं योग्य नथी केमके मारा करतां आपणी समाजमां विद्वान व्हेनो होवा छतां मने जे कार्य सोंप्युं छे ते मान्य करुं छुं, जेथी आपने विशेष लाभ थाय एवो उपदेश आपवानी मारी शक्ति नथी, तोपण आपणी कोमनी जे अवनत दशा थयेली छे ते बदल आपणे केवा केवा सुधारा करवा जोईए ते संबंधी हुं मारा अल्प विचारो आपनी समक्ष रजु करुं छुं ते उपर विचार करी जोइता सुधाराओ करवा आपणे व्हेनो विचार करीए. व्हेनो,:—

सर्व जीव सुखनी इच्छा करे छे, ते प्रमाणे स्त्रीवर्गने पण तेवी इच्छा थाय ते स्वाभाविक छे. सुख बे प्रकारनुं छे. ऐहिक अने पारलौकिक. ऐहिक सुखमां पुष्कळ संपत्ति, सारी शरीर प्रकृति, सारां बाळको, उत्तम धर्म विगेरेने गणवामां आवे छे. पारलौकिक सुखनो अर्थ एवो करवामां आवे छे के आ स्त्री अवतारनो नाश करी उत्तम अवतार धारण करी ते अवतारद्वारा शनैशनैः वधारी, आत्मिक बळ वधारवुं तथा ते प्रमाणे संसारमांथी मुक्त थई परमात्म स्वरूप धारण करवुं. आ बीजनी बाबा (?) दुरुस्त करवा माटे आपनी ज्ञानशक्ति वधारवानी सौथी जरुर छे. आपणे ज्ञानवान न होवाथी आपणे हाथे केटलाक अनर्थो थवा पामे छे. आपणे आपणां छोकरा छोकरीओने नानी वयमां परणावी दईए छीए. आपणी छोकरीओने आपणे केळवणी आपता नथी, तेथी तेमने धर्मनी कंईपण माहीति मळती नथी. आपणां छोकराओनुं रक्षण केवी रीते करवुं तेनुं ज्ञान नहीं होवाथी नानां छोकराओनुं मरणप्रमाण वधारे आवे छे. आहारशुद्धि पाछळ पण ध्यान आपवुं जोईए. पाणीमां जीवजंतु नहीं आवे तथा तेनुं रक्षण थाय ते माटे पाणी गाळीने पीवुं जोईए. अनाज पण स्वच्छ लेवुं जोईए तथा तेनेदळाववामां सावधता राखवी जोईए. तेमज दुध, घी वगेरेने सारी हालतमां राखवां जोईए तथा सारां होय त्यां सुधीज खावामां तेनो उपयोग करवो जोईए. आहारशुद्धि पाछळ बराबर ध्यान आपवामां आवे तो आपणे घणा रोगोमांथी बची शकीए. आपणने गृहशिक्षण मळतुं नथी. गृहशिक्षण बे प्रकारनुं छे. घरनी अंदरनी टापटीप, आहार पाणीनी व्यवस्था, बाळकोनी मावजत वीगेरे बाबतो पहेला प्रकारमां आवी जाय छे. बीजा प्रकारमां सासु ससरानी आज्ञा पाळवी, विनय पाळवो, नणंद वीगेरे सगांओ साथे हळीमळी रहेवुं तथा पतिसेवामां लीन रहेवुं वीगेरे बाबतोनो समावेश करवामां आव्यो छे. आवी जातनुं गृहशिक्षण आपणने मळतुं नथी तेथी स्त्रीसमाजनी अवनति थई छे. तेवीज रीते स्त्रीओने धार्मिक शिक्षण आपवामां आवेलुं नहीं होवाथी खोटा धर्मोनो अंगीकार करवामां आवे छे तेथी जैनधर्मीओ अन्यधर्मी थवा लाग्या छे. धर्मनुं स्वरूप जाणी

जागतां नहीं होवाथी स्त्रीओ तरफथी शीळनुं पाळन बराबर थतुं नथी. जेओनो पति हैयात होय तेमणे पतिव्रताधर्म पाळवो जोईए एटले के पतिनी सेवामां हमेश हाजर रहेवुं जोईए अने पतिनी सारी प्रवृत्तिमां तेने उत्तेजन आपी मदद करवी जोईए. आपणुं शील सारुं होय तो आपणने कायमनुं सुख मळे छे, शीळ सारुं राखवा माटे हिंसा, लबाडी, चोरी, कुशील, लोभ वीगेरेनो त्याग करवो जोईए. घरनां बधां माणसो साथे पण हळीमळीने रहेवुं जोईए. परधन हरण करवानी इच्छा पण थवी जोईए नहीं. पति सीवाय बीजा पुरुषोने भाई समान गणवा जोईए. आपणी स्त्रीओमां व्रतो करवानो रिवाज छे पण श्रावकोने पहेलां पांच अणुव्रतो करवां जोईए ते आपणे पाळता नथी. अपवास जेवां सख्त व्रत कर्यां पहेलां श्रावकोनां व्रतो पहेलां करवां जोईए. पांच अणुव्रत पाळवानो प्रयत्न करवाथी आपणुं शीळ सुधरशे तथा क्रोध, मान, माया, लोभ, इर्षा, मत्सर विगेरे विकारो कमी थशे तथा आ लोकमां तथा परलोकमां आपणने सुख मळशे. आपणी छोकरीओने धर्मशिक्षण तथा गृहशिक्षण आप्याथी आपणे तेना उपर केटलो बधो उपकार करीशुं.

आपणा परमपूज्य पहेला तीर्थंकर श्री आदिनाथ महाराजे आपणां बाळकोने शिक्षण आपवाने वखते जे उपदेश कर्यो, हतो ते आपणे सर्वेए मान्य करीने शिक्षण वधारवानो प्रयत्न करवो ए सर्वेनुं कर्तव्य छे. एक स्त्रीनो पति मरण पामतां सासरियांनो मोटो आधार तुटी जवा समान बने छे, पण विधवा स्त्रीओनी बराबर संभाळ लेवामां नहीं आव्याथी तेमनी स्थीति घणी शोचनीय थइ पडी छे. विधवाओने धर्मशिक्षण तथा व्यवहारिक शिक्षण आपवा माटे ठेकाणे ठेकाणे विधवाश्रमो स्थापवानी जरूर छे. श्रीमती मगनबाई तथा इंदोरवाळा सौभाग्यवंती कंचनबाईए, श्राविकाश्रम स्थापन करीने समाज उपर घणो मोटो उपकार कर्यो छे. आवां आश्रमोमां विधवाओने राखी तेमने शिक्षण आपवुं ए सर्वेनुं कर्तव्य छे. आवां आश्रमोमां शिक्षण मेळवीने बहार पडेली स्त्रीओ समाजने घणी उपयोगी थई पडे छे एम हुं मानुं छुं अने मारुं अल्प भाषण आप व्हेनोए शांतिथी सांभळ्युं ते माटे आपनो उपकार मानुं छुं.

महावीरजयंती उत्सव.

આ વર્ષે ચૈત્ર સુદ ૧૩ને દિને નીચેના સ્થળોએ મહાવીરજયંતી ઉત્સવ ઉજવાયાના સમાચાર અમોને મલ્યા છે—

સુરત-અત્રે આ ઉત્સવ જૈન હિતવર્ધક મંડળ તરફથી હરીપરા જૈન બંધુ મંડળના આશ્રય હેઠળ હરીપરામાં શીતળનાથજીના દેહેરાની સામેના વિશાળ અપાસરામાં રાત્રે ૮॥ થી ૧૦॥ સુધી અત્રેના નગરશેઠ બાબુભાઇ ગુલાબભાઇના પ્રમુખપદે બારે ઠાઠમાઠ અને ઉત્સાહથી ઉજવાયો હતો, જેમાં ત્રણે ફિરકાના આશરે ૧૦૦૦ સ્ત્રી પુરુષો હાજર હતા જેમાં ઘણા પ્રતિષ્ઠિત જૈનોએ પણ હાજરી આપી હતી. પ્રથમ ગાયનો થયા પછી મૂળચંદ કસનદાસ કાપડિયાએ મહાવીર જયંતીનો ઉદ્દેશ અને આવશ્યક્તા પર વિવેચન કરવા પછી શા. રંગીલદાસ ચુનીલાલ, માસ્તર ગીરધરલાલ ડુંગરશી, શા. રતનચંદ ખીમચંદ કાપડીઆ, મણીભાઇ બહેરભાઇ વ્યાસ, સાકેરચંદ મગનલાલ જરીવાલા, માસ્તર વનમાળીદાસ અંદરજી તથા સુખલાલે મહાવીરપ્રભુના ઉત્તમ ચરિત્ર ઉપરથી લેવાના બોધ સંબંધી જુદા જુદા વિષયો ઉપર વ્યાખ્યાનો કર્યાં હતાં તથા મૂળચંદ કસનદાસ કાપડીયાએ જૈન હિતવર્ધક મંડળનો એક વર્ષનો રિપોર્ટ રજુ કરી આ જયંતી દર વર્ષે ઉજવવા સંબંધી વિવેચન કરતાં સગરામપરાના મહાવીર જૈન સમાજ તરફથી આવતી જયંતી સગરામપરે ઉજવવાનું આમંત્રણ થયું હતું. બાદ પ્રમુખસાહેબનું વિવેચન થવા પછી ઊગરલાલ દીપચંદ તરફથી પતાસાની પ્રભાવના, છગનલાલ ઉત્તમચંદ સરૈયા તરફથી પ્રભુની દશ દશાનાં ચિત્રો, રતનચંદ કાપડિયા તરફથી અમૃતના ઘુંટડાના હેંડબીલો તથા મૂલચંદ કસનદાસ કાપડિયા તરફથી પ્રાતઃસ્મરણ મંગલપાઠ, કળીયુગની કુળદેવી, શું ઇશ્વર જગતકર્તા છે આ પુસ્તકો પ્રભાવના તરીકે વેંચાવા બાદ હાર-તોરા અપાઇ આ ઉત્સવ વિસર્જન થયો હતો.

બોરસદ—શા. સોમચંદ જેચંદ જણાવે છે કે આ ઉત્સવ મંદિરમાં પૂજન, અભિષેક, ભજન ગાનતાન સાથે ઉત્સાહથી ઉજવાયો હતો.

વડોદરા—શા. માણેકલાલ નાનચંદ જણાવે છે કે આ ઉત્સવને દીને મંદિરને વાવટા તોરણો વગેરેથી શણગારી ગાનતાનથી પૂજન અભિષેક થયાં હતાં તથા રાત્રે સભા ભરાઇ મહાવીરસ્વામીનું ચરિત્ર વંચાયું હતું જે વખતે શા. કેશવલાલ ત્રીભોવનદાસ તરફથી 'મહાવીર ચરિત્ર'નાં પુસ્તકો ભેટ વેંચાયાં હતાં. આ વર્ષે ઉત્સાહ સારો હતો.

બોધેગાંવ—બળવંત બાપુરાવ ક્ષીરસાગર જણાવે છે કે આ ઉત્સવને દિને જૈનોએ પોતાના આંગણાંને તથા મંદિરને વાવટાતોરણોથી સુશોભિત કર્યાં હતાં તેમ સવારે મહાવીરપૂજન અભિષેક થઇ બપોરે મોટા ઠાઠથી વરઘોડો કાઢવામાં આવ્યો હતો. રાત્રે મંદિરજીમાં રોશની કરી મહાવીરચરિત્ર વંચાયા પછી ૧ વાગતા સુધી ગાયન ભજનો થયાં હતાં તથા પતાસાંની પ્રભાવના વેંચાઇ હતી.

મહુવા—(કાઠિયાવાડ):— શેઠ નરસીદાસ ઓઝા જણાવે છે કે આ ઉત્સવને દિને તપગચ્છ તથા લોંકાગચ્છના બાઇઓએ મળી એકત્ર રીતે આ જયંતી ઉજવી હતી અને એક સભા ભારે ઉત્સાહથી થઇ તેમાં ગોરજી રૂપચંદજી, ઓધવજી રામજી વગેરેનાં વિવેચનો થયાં હતાં.

પોરબંદર—બખાઇ પ્રભુશંકર જણાવે છે કે આ ઉત્સવ જૈનહિતવર્ધકસભા તરફથી ઉજવાયો

હતો અને દશાશ્રીમાળી હોલમાં મોટી સભા ભરાઇ સવજીસ્વામીએ જાહેર વ્યાખ્યાન આપ્યું હતું, જેમાં ત્રણે ફિરકાના ભાઇઓ હાજર હતા તેમજ સંઘ તરફથી કચોરીની લ્હાણી વેંચવામાં આવી હતી.

ઓરાણ—શેઠ લલ્લુભાઇ રાયચંદ જણાવે છે કે આ ઉત્સવ અભિષેકપૂર્વક ધામધુમથી ઉજવાયો હતો. દરેક ઘેર મિષ્ટ ભોજન થયું હતું. પૂજન અભિષેક થઇ રાત્રે સભા ભરાઇ હતી તથા બોલીમાં ૩૦)ની ઉપજ હતી તથા એ દિને પાખી પાળવામાં આવી હતી અને પતાસાંની પ્રભાવના વેંચાઇ હતી.

અમદાવાદ—શેઠ પ્રે. મો. બોર્ડિંગમાં આ ઉત્સવ પૂજનઅભિષેકપૂર્વક થઇ રાત્રે ૮થી ૧૨ સુધી શા. ચીમનલાલ જેસંગભાઇના-પ્રમુખપણા નીચે સભા ભરવામાં આવી હતી જેમાં માસ્તર ગંગાશંકર તથા વિદ્યાર્થીઓનાં મહાવીરના ચરિત્રપરથી લેવાના બોધ સંબંધી વિવેચનો થયાં હતાં તથા પ્રમુખે રૂ. ૫) એ દિને વિદ્યાર્થીનો ઉત્સાહ વધારવા ખર્ચ કર્યો હતો તમજ વિદ્યાર્થીઓએ ગાયન ભજન કરવા ઉપરાંત કેટલાક ડાયલોગો ભજવી બતાવી આનંદમાં વધારો કર્યો હતો.

કુંધારીયા—નાનચંદ જૈન લાયબ્રેરીના વ્યવસ્થાપક જણાવે છે કે આ ઉત્સવને દિને વ્યાપાર રોજગાર બંધ કરી પાખી પાળવામાં આવી હતી તથા આખો દિવસ સર્વેએ ધર્મ-ધ્યાનમાં વીતાડયો હતો.

ઝહેર—ગાંધી લલ્લુભાઇ જણાવે છે આ ઉત્સવ સારા ઉત્સાહથી પળાઈ પૂજન, અભિષેક, મિષ્ટભોજન વગેરે થયું હતું.

सोलापुर—दोशी हिराचंद मलुकचंद (काका) जणावे छे के अत्रे गौतम नेमचंद जैन व्यायामशाळामां आ उत्सव भारे उत्साहथी उजवायो हतो जेमां प्रथम बपोरे ३ थी ४ कसरतना खेलो, ४ थी ५ महावीर चरित्र ऊपर विद्यार्थीओनां तथा रावजी नेमचंद वकीलनां व्याख्यानो थयां हतां तथा सांजे ५ थी ७ अल्पाहार थई पानसोपारी अपाई हती.

नातेपुता—एस. पी. रणदीवे जणावे छे के आ उत्सव भारे आनंदथी पळायो हतो. महावीर प्रभुना जन्मनो चोकस टाईम कयो छे ते प्रकट थवानी जरूर छे.

झालरापाटन केम्प—जैनकुमार-सभाके मंत्री दौलतरामजी लिखते है कि यहां महावीरजयंतीउत्सव बड़ी धूमधामसे मनाया गया। शिखरमहात्म्यकी पूजन होकर महावीरस्वामीका जीवनचरित्र पढ़ा गया। पश्चात् कलशाभिषेक होकर रात्रिको आमसभा भी की गई थी।

नागपुर—हीरालालजी सेठी लिखते है कि इधर जुनी शुकरवारीके मंदिरमें महावीरस्वामीके जन्म दिनका उत्सव बड़े थाटवाटसे गाजेवाजेसे किया गया था। महावीरका चरित्र वांचकर जन्मसमय पर जय जय ध्वनि होकर पुष्पवृष्टि करदी गई और सब नरनारी वेदीकी तीन प्रदक्षिणा करके भगवानको मंदिरजीके बगीचेमें गाजेबाजेसे पांडुकशिलापर सब मंडलसहित ले गये और पांडुक शिलापर विराजमान करके कलशाभिषेक होकर गाजेवाजेसे भजन गाते गाते और जय ध्वनि करते करते मंदिरजीमें आकर भगवानको सिंहासनपर विराजन किये और फिर पूजनविधान थाट-वाटसे हुआ और भजन कीर्तन होकर सब भाई अपने २ घरपर पधारे। ऐसा वड़ा उत्सव इधर पहलीवारही हुआ है।

આ પ્રમાણે મુંબાઇ, ભાવનગર, ઇદોર, આગ્રા વગેરે અનેક સ્થળોએ આ ઉત્સવ ઉજવાયાના સમાચાર જાણવામાં આવ્યા છે.

 इस वर्षके ग्राहकोंको ७ पुस्तकें उपहारमें मिलेंगी। 

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रगट थतुं मासिक

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBR JAIN.

युत सुलेखै र्विविधैश्चिनै, दिगंबरजैन मिद सुपराम् ।
प्रभो ! महावीर ! ! तव प्रभावात्, समुत्तमासुन्नतिमातनोतु ॥

वर्ष ९ मु. || वीर संवत २४४२ ज्येष्ठ. विक्रम स. १९७२ || अंक ८ मो.



विधवाविवाह निषेध

ए तो निर्विवाद छे के जैन धर्म विरुद्ध थती हिलचालोने जैन कोम तथा खास करी कोन्फरन्सोए अटकाववा प्रयत्न करवो जोईए ते प्रमाणे मुंबाई प्रांतिक सभाए गतवर्षनी बेठक वखते 'जैन हितैषी' अने 'जैन तत्त्वप्रकाशक'मां विधवाविवाह करवाने लगती हिलचालना लेखो प्रकट थवा माटे तेनो निषेध करवानो ठराव कर्यो छे तेना माटे थोडु कर्युं नथी. अमारे कहवु पडश के दिगंबर जैनोमां श्रीयुत नाथुराम प्रेमीनी अने स्थानकवासीमां श्रीयुत वाडीलाल मोतीलालनी कलम (लेखनशैली) वखणाय छे पण तेओएज जैन धर्म विरुद्ध वर्तावनो आ सवाल पोताना 'जैन हितैषी' अने 'जैन हितेच्छु' पत्रोमां चर्चवा माटेथी आ पत्रो तरफ लोकोनी लागणी उश्केराय ए स्वाभाविक छे अने एना छाटा 'जातिप्रबोधक' अने 'जैनतत्वप्रकाशक' ने पण लाग्या छे श्रीयुत नाथुरामजी लखे छे के 'जैन हितैषी' ना प्रकट थता दरेक लेखमा मारी संमति छे एम समजवुं नहि ते तो जाणे ठीक, पण जैन धर्म विरुद्ध वर्तावनी हिलचालवाळा लेखो 'जैन हितैषी' नाम धारक पत्रमा स्थानक केम आपी शकाय? वळी 'जैन हितैषी' ना छेल्ला अंकमा पण विधवाविवाहनी पुष्टिना बे त्रण लेखो प्रकट थया छे जे खुल्लुं जणावे छे के नाथुरामजी प्रेमी जैन कोममा सोचोथी विधवाविवाह (नातरा!) करवा देवानी तरफेणमा छे एटले के धर्म विरुद्ध वर्तन करवु ए एक जातनी चोरी छे तो तेनी चोरी करवाने छुट आपवी ए केटलु आश्चर्यजनक छे?

अमेसरोनुं कर्तव्य

दरेक सभा अने कोन्फरन्समां बाळलग्न, कन्या विक्रय, वृद्ध विवाह, वेश्या नृत्य, आतशबाजी, फुलवाडी अने लग्न प्रसंगना लग्न करवो अटकाववा माटे अनेक ठरावो थया करे छे अने जेने अग्रेसरो खास करी पोताना भाग-

पगमां टेको आपे छे तथा आवा रिवाजो जैन कोममांथी नाबूद करवाने शिखामण आपे छे त्यारे अजब जेवुं तो ए छे के एवा घणा भाषण करनारा अग्रेसरो जणाय छे के जेओ पोतेज ए ठरावोने पाळता नथी अने देखादेखी, मानवडाई के स्वार्थ खातर पोते करेला भाषणनो के ठरावनो पोतेज भंग करे छे तो बीजाओ पर ते ठरावनी असर केवी रीते थाय? मोटाओनुं अनुकरणज नानाओ करे छे माटे अग्रेसरोए पोतेज पोताना पगमां पहेलो कुहाडो मारीने समाज हितनुं दरेक कार्य आगळ पडीने करवुं जोईए तोज तेनो अमल आखी कोममां थइ शकशे, बाकी तो थयेला ठरावो कागळना पानांसरज रहेशे.

शेठीजीना कुटुंबपर दया करो.

समाजहितैषी पं. अर्जुनलालजी शेठीनो छुटकारो हजु थयो नथी जेथी त्यांसुधी आ बंधुनो छुटकारो न थाय त्यांसुधी एमना पत्नी अने बाळबच्चांनुं पालनपोषण करवानो भार जैन कोम उपरज छे. ए बाबत अगाउ पेट थयुं हतुं जेमां हवे शाखी शीलक नथी अने आगळ बंध थइ छे माटे दरेक जैन बंधुनी फरज छे के आरततां पडेला आ कुटुंब उपर कंइने कंइ मदद मोकलवी जोइए. स्वनामनिवासी बाबू अजीतप्रसादजी मारफते आ कुटुंबना निर्वाहनो प्रबंध थाय छे माटे मदद करनारे लखनोर अथवा तो श्रीमती गुलाबबाई C/o शेठ नर्मसुखदास, नजीकनानाबी नां चांदपोळ दरवाजा-मथाई जेपुर (रजपुताना), आ सरनामे मदद मोकलवी.

समेदशिखरजीका मामला.

समाजमें हजारों कार्य ऐसे पड़े हैं कि जो विना रुपयोंके नष्टप्रायः हो रहे हैं। समाजमें जैन साहित्य प्रचारादि विद्याप्रचार आदि अनेक धर्मोन्नतिके कार्योंमें ऐसा कोई फंड नहीं है कि जिससे उनके कार्य सफलतापूर्वक चल सके, परन्तु आपुसके झघडे इन तीर्थोंमें ऐसे चल रहे हैं कि जिनमें लाखों रु. नष्टप्रायः हो गये हैं। श्री तारंगाजी, श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथ, श्री सम्मेदशिखरजीके समाचार विदित ही होंगे। श्री सम्मेदशिखरजी तीर्थपर पूजनवाला मामला कि जिसमें श्वेताम्बरी लोगोंने दावा किया है कि दिगम्बरी पदादपर दिगम्बरी रीतिको छोडकर श्वे. रीतिसे तीर्थंकर भगवानके चरणपादुकाओंकी पूजा करें और अपने दिगम्बरत्वको छोडकर श्वेताम्बरत्व धारण करें! अभी यही मुकद्दमा ता. २०-३-१६से हजारीबागमें चल रहा है जिसमें अभी मुद्दई श्वेताम्बरियोंकी गवाही भी पूरी नहीं हुई है और दोनों तरफसे ५०-५० हजार रुपयाका स्वाहा हो गया!! अलावा उसके और भी कईएक दीवानी फोजदारी मामला चलते हैं कि जिनका जिकर भी नहीं है। अभी हालमें १ मामला मामूली नाले और टेकरीकी जमीनका था जो ता. ५ मई १९१६को पटना हाईकोर्टमें फेसला हुआ है जिसमें दिगम्बरी जीते हैं। इस मामलेमें भी कई हजार रुपया बरबाद हुए और जमीनकी कीमत १००) रु. भी नहीं होगी। इस तरह समाजके लाखों रुपया व्यर्थ लडाई झगडोंमें बरबाद हो रहे हैं। समाजके शुभचि-

वोंको और खासकर श्वेताम्बरी भाइयोंको ध्यान देना चाहिये, कारण जितने मुकद्दमें वर्तमानमें चल रहे हैं और पहले हुए हैं उनमें श्वेताम्बरी भाई ही मुद्दई रूपमें दृष्टि पड़ते हैं और जब श्वे. भाई मामला दायर करें तो दिगम्बरी लोगोंको भी अपने हक्की रक्षा करनी पड़ती है। क्या जैन मतमें रंडीबाजी, जुवाबाजी चोरीबाजी आदिका त्याग कराया गया है। तो मुकद्दमाबाजीका त्याग नहीं कराया गया?, आचार्यगण नहीं जानते थे वरना मुकद्दमेंबाजीका खंडन इस सब बाजियोंसे और भी जोरसोरसे कराया जाता।

अभी ही मंगा लीजिए।

वर्षभरके लिये आपको–

पवित्र काश्मीरी केशर–

की जितनी आवश्यकता हो उतनी अभी ही मंगा लिजिए क्योंकि सब ठिकाने पर १॥) डेढ़ रुपया तोला विकती है परंतु हमने पहिलेसे थोकबंद माल मंगा लिया है इसलिये हम रु. १।) सवा रुपया तोलाके हिसावसे भेज देवेंगे। यह केशर विक जानेपर इस भावसे नहीं मिलेगी इसलिये शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर, दि. जैन पुस्तकालय-सूरत.



કર્તવ્ય કૌમુદી:- લેખક શતાવધાની સ્થા. મુનિ રત્નચંદ્રજી અને પ્રકાશક—ચુનીલાલ વર્ધમાન શાહ (સારંગપુર, તળીયાની પોળ અમદાવાદ) પૃ. ૪૨૫ પાકું પુઠું અને કિં. માત્ર આઠજ આના. આ પુસ્તકની આ બીજી આવૃત્તિ છે જે એની ઉપયોગીતા સાબીત કરે છે. એમાં દરેક સ્ત્રી અને પુરૂષનું જન્મથી મૃત્યુ સુધીનું શું શું કર્તવ્ય છે તેપર ૨૩૩ સંસ્કૃત શ્લોકો મુનિશ્રીએ રચેલા છે તેનો ભાવાર્થ અને લંબાણ વિવેચન પ્રકાશકે કરેલું છે, જેમાંનો બોધ એટલો બધો ઉત્તમ છે કે આ પુસ્તક વાંચીને તે પ્રમાણે વર્તનાર એક ઉત્તમોત્તમ સુખી જીંદગી ગાળી શકે. આવા મોટા ગ્રંથની કિંમત ઘણીજ ઓછી છે માટે આ ગ્રંથ મંગાવવા અમો દરેક બંધુ અને બ્હેનને આગ્રહ કરીએ છીએ. પ્રકાશક પાસેથી મળી શકે છે.

आदिपुराण ग्रन्थ–हमारे पाठक जानते ही हैं कि श्री आदिपुराण ग्रन्थ इन्दौरसे पं. लालाराम जैन द्वारा तैयार होकर तैयार हुवे पृष्ठ ग्राहकोंको भेजे जाते हैं जिसमें १०२८ पृष्ठ प्रकट हो चुके थे और दूसरे ३९६ पृष्ठ हमें मिले हैं जिससे १४२४ पृष्ठ आ चुके हैं। अब चारसौं पांचसौं पृष्ठमें यह ग्रन्थ पूर्ण हो जायगा। हरएक मंदिरमें इस ग्रन्थकी एकर प्रत अवश्य होना ही चाहिए इसलिये जहां२ के भाईयोंने यह ग्रन्थ नहीं मंगाया है अब तो अवश्य मंगा लेना चाहिए। पूर्ण ग्रन्थका मूल्य १६) रु. है। मंगानेका पता–पं. लालाराम जैन, शीतलामाता–इन्दौर सीटि।

સતી આદર્શ [illegible] ગો—પ્રકાશક-દેવચંદ દામજી શેઠ, સંપાદક 'જૈન'-ભાવનગર. ઉત્તમ છપાઇ, પૃ. ૨૨૫ અને મૂલ્ય રૂ. ૧-૮-૦. 'જૈન' પત્રની આ ૧૯૧૬ની ભેટ છે, જેમાં પ્રકાશકે બ્રાહ્મી, સુંદરી, રાજેમતી, ચંદનબાળા, દ્રૌપદી, કૌશલ્યા, સુલસા, સુભદ્રા, દમયંતી, મૃગાવતી, પદ્માવતી વગેરે ૧૬ ઉત્તમ આદર્શ સ્ત્રીઓનાં જીવનચરિત્રો નવીન શૈલીથી લખ્યાં છે તેમજ રાજેમતી અને રહનેમી; દ્રૌપદી સ્વયંવર, સૈરંધ્રી અને કિચક, રામ અને સીતા તથા દમયંતી અને નળ એ પાંચ ફોટાઓ પણ મુકેલા છે. એકંદરે આ પુસ્તક ઘણુંજ ઉપયોગી પ્રકટ થયું છે અને આવો દળદાર ગ્રંથ પોતાના સાપ્તાહિક 'જૈન' પત્રના ગ્રાહકોને ભેટ આપવામાં શ્રી. દેવચંદભાઇએ જે સાહસ ખેડ્યું છે, તે ધન્યવાદને પાત્ર છે. આ ગ્રંથ છુટક પણ પ્રકાશક પાસેથી મળી શકશે.

श्री महापुराणामृत–लेखक–रावजी नेमचंद शाह वकील–सोलापुर अने प्रकाशक शेठ नाथारंगजी गांधी सोलापुर. पृष्ठ ३५० अने किं. मात्र रु. १) मराठी भाषाना आ ग्रन्थमां आदिपुराण याने महापुराण ग्रंथ जे २५) नी किंमते मळे छे तेना बधा विषयोनो सारांश लेवामां आवेलो छे. ग्रंथकर्ता श्री जिनसेनाचार्य अने गुणभद्राचार्य तथा तेना समकालिन आचार्योनो परिचय पण आपेलो छे. प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेवनुं आ चरित्र दरेके वांचवालायक होवाथी अने अल्प मूल्ये मळतुं होवाथी मराठी भाषा जाणनार दरेक बंधुए आ ग्रंथ अवश्य मंगाववो जोईए. लेखक पासेथी मळी शकशे.

શ્રી સિદ્ધાચળનુ સચિત્ર વર્તમાન વર્ણન:—પ્રકાશક-આણંદચંદ બહેચરદાસ, જૈન-બુકસેલર-પાલીતાણા. પૃ. ૧૫૦ અને મૂલ્ય માત્ર આઠ આના. શ્વેતાંબરી ભાઈઓમાં શ્રી શેત્રુંજય તીર્થ યાને શ્રી સિદ્ધાચળ તીર્થનું મહત્વ અને માન્યતા ઘણી મોટી છે. આ તીર્થમાં સંખ્યાબંધ અને જોવા લાયક મંદિરો છે. જેનું આ પુસ્તકમાં સવિસ્તર અને સચિત્ર વર્ણન ભારે શ્રમ લઇને તૈયાર કરવામાં આવેલું છે, જેમાં પ્રથમ પાલીતાણા શહેરનો ઇતિહાસ, તેમાં આવેલાં દહેરાંઓ અને ૩૭ ધર્મશાળાઓની વીગત તથા ત્યાં આવેલી અનેક સંસ્થાઓનો હેવાલ આપી શ્રી શેત્રુંજય પહાડ ઉપર આવેલા ૮૬૩ દહેરાંઓનો વર્ણન સાથે ઇતિહાસ આપેલો છે તેમજ નવ ટુંકોના નવ ફોટાઓ પણ આપેલા છે. એમાં દિગંબરી મંદિર અને ધર્મશાળાની વીગત દર્શાવવી રહી ગઈ છે જે બીજી આવૃત્તિમાં સુધારવા ખાસ આગ્રહ કરીએ છીએ. પ્રકાશક પાસેથી તથા દિગંબર જૈન પુસ્તકાલય-સુરતથી આ પુસ્તક મળી શકશે.

संस्कृतप्रवेशिनी प्रथम भाग-संपादक–व्याकरणशास्त्री पं. श्रीलाल जैन काव्यतीर्थ और प्रकाशक–पं. पन्नालाल बाकलीवाल, महामंत्री, श्री भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था (नं. ९ विश्वकोश लेन बाग बाजार–कलकत्ता) पृष्ठ २०० और मूल्य सिर्फ एक रुपया। संस्कृत पढनेके लिये मार्गोपदेशिका आदि जितनी पुस्तकें प्रकट हो चुकी हैं उन सबसे यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। पुस्तककी रचनाशैली ऐसी है कि रोम

प्रकार यंत्र ध्यानसे पढ़नेसे विनागुरुके चार छह महीनेमें संस्कृत समझनेका ज्ञान प्राप्त हो जायगा। इसमें सब प्रकारकी समज हिन्दी भाषामें दी गई है। हरएक जैन विद्यालय और पाठशालामें अब इस ग्रन्थको ही प्रवेश कर देना चाहिए। संपादक जैन होनेसे कई पाठोंमें जैनधर्म संबंधी वाक्यों भी रखे हैं। संस्कृत पढ़नेवाले भाईयोंको अवश्य मंगाना चाहिए। छपाई सफाई अच्छी है और मूल्य भी कम है। प्रकाशकसे मिल सकती है।

न्यायदीपिका (मूल)-प्रकाशक पं. पन्नालाल बाकलीवाल जैन और मिलनेका पता-मैनेजर जैन मित्रमंडली बाग बाजार-कलकत्ता। श्री धर्मभूषण यति विरचित यह न्यायदीपिका नामक न्यायका ग्रन्थ मूल संस्कृत भाषामें प्रकट किया गया है जो न्याय पढ़नेवाले विद्यार्थियोंके लिये उपयोगी है।

हर्षचरित् भाषा-प्रकाशक, मनोरम कार्यालय-मंडी धनौरा (यु. पी.). पृ. ७९ और मूल्य आठ आना. श्री बाणभट्ट कृत संस्कृत हर्षचरित्का यह हिन्दी भाषानुवाद है जो हरएकको पढ़ने योग्य है। ओ. पं. मदनमोहन मालवियजीको फोटो सहित यह पुस्तक अर्पण की गई है। 'मनोरमा' हिंदी मासिकके ग्राहकोंको तो चार आनामें मिलती है।

દંપતી ધર્મ—તંત્રી ભીખાભાઇ છોટાલાલ ચૌધરી-અમદાવાદ. વર્ષ ૧. અં. ૧. વાર્ષિક મૂલ્ય કંઇ નહિ, પણ માત્ર પોસ્ટેજ ખર્ચના વર્ષે ચાર આના છે. માત્ર જાહેર ... સ્થિતિ ... ઉપર આધાર રાખી મફત બહાર પડતું આ પ્રથમ માસિક જ છે જે દરેકે મંગાવવું જોઈએ. લેખો પણ ઉપયોગી જણાય છે.-

ઑલ ઇંડિયા એડવરટાઇઝર અને કળાધર—વર્ષ ૧. અં. ૨. વાર્ષિક ફી રૂ. ૨) પ્રકાશક—ગીરધરલાલ અંબારામ ત્રિવેદી,-અમદાવાદ. આ નવીન માસિકમાં જાહેરખબરો અને તેથી થતા અનેક ફાયદાઓ સંબંધી તથા દરેક વ્યાપાર ઉદ્યોગ કેવી રીતે વધારી શકાય તે સંબંધી ઉપયોગી લેખો ચર્ચાય છે.

ચિત્રમયજગત—ચિત્રશાળા પ્રેસ-પુના તરફથી મરાઠી, હિંદી અને ગુજરાતી એ ત્રણે ભાષામાં 'ચિત્રમયજગત' નામે સચિત્ર માસિક મોટી સાઇઝમાં વિલાયતની સ્ટાઇલ ઉપર પ્રકટ થાય છે તેમાંનો આ ગુજરાતી ચિત્રમય જગતનો બીજા વર્ષનો પ્રથમ ખાસ અંક છે, જેમાં બે રંગીન અને કટાઇ, જાણીતા પુરૂષો વગેરેનાં ૫૦ નાનાં મોટાં ચિત્રો છે. કુલ્લે ૧૯ લેખોમાં સ્વરાજ્ય અને સામ્રાજ્યનો લેખ ઘણોજ ઉત્તમ અને દરેકે અવશ્ય વાંચવાલાયક છે. ગુજરાતી ભાષામાં આવી ઢબ પર પ્રકટ થતું આ એકજ માસિક છે. દરેક અંક ૪૦-૫૦ ચિત્રોવાળોજ પ્રકટ થાય છે. વાર્ષિક મૂલ્ય રૂ. ૩॥ છે. તેમ એક અંકની કિં. આઠ આના છે.

नवजीवन-यह सचित्र मासिक-पत्रिका इन्दौरसे प्रकट होती है जिसका यह चैत्र मासका अंक है इसमें २२ उपयोगी विषयों और ५ चित्रों हैं। टाइटल पृष्ठ रंगीन और मनोहर है। पृ. सं. ६४ और वार्षिक मूल्य ३) है।

संतानपालन:-प्रकाशक, वैद्य शंकरलाल हरीशंकर मुरादाबाद। पृ. ३६ और मूल्य चार आना। इसमें डो. लुई कुहनी कृत रीयरींग ओफ चिल्ड्रन नामका ग्रंथका भाषानुवाद है। संतानपालनके नियम बहुत अच्छे दर्शाये हैं।



श्री समेदशिखरजीना बे केसनो फेसलो दिगंबरीनी तरफेणमां:— श्री समेदशिखरजी उपर पूजन करवा वगेरेना हक संबंधी जे दावो श्वेतांबरी भाईओ तरफथी मंडायलो छे ते तो हझारीबागनी कोर्टमां ता. १० मी मार्चथी चालू छे (जेमां महीने रु. १००००) नो खर्च दिगंबरी तरफथी अने श्वेतांबरी तरफथी एथी पण भारे खर्च थइ रह्यो छे अने तेमां हजु मात्र श्वेतांबरीना साक्षीओ पण पुरा लेवाया नथी!!! पण लगभग ३ वर्ष उपर मधुवनमां वीसपंथी उपरैली जुनी कोठीनी उत्तर बाजुए एक जमीननी टुकडा (आशरे रु. १०० नी कीमतना) उपर मकान बांधवा संबंधी श्वेतांबरी भाईओ तरफथी अटकाव करवामां आवेलो तेने लगतो केस चालतो हतो, जेनो चुकादो नीचली कोर्टमां दिगंबरीनी विरुद्धमां आवेलो जेथी हाईकोर्टने अपील करवामां आवी हती, जेमां दिगंबरी तरफथी मी. हसन इमाम अने मी. के. पी. जेसवाल वकीलो अने श्वेतांबरी तरफथी मी. प्यू. बेरीस्टर रोकायला हता, जेनो चुकादो ता. ५ मीए पटना हाईकोर्टमां चीफ जस्टीस अने जस्टीस ज्वालाप्रसादे एवी रीते आप्यो छे के इकरारनामानी रुए श्वे. ने नवावो उठाववानो तथा अन्य नाना मोटा हक पालगंजना राजा तरफथी सने १८७८मां प्राप्त थया हता ते इकरारनामामां कंई मुदत नथी, तेथी ते हिंदु कायदाना कायमपणा प्रमाणे नथी, जेथी अमलमां आवे तेम नथी जेथी दिगंबरीनी अपील कोर्टना खर्च साथे मंजुर करवामां आवे छे. वळी त्रण वर्ष थयां वीसपंथी कोठीनी पश्चिम बाजुए एक जमीनना टूकडा उपर कंगलाशाळा माटे मकान बांधवा सामे पण श्वे. तरफथी अटकाव नंखायलो तेने लगतो केस पण चालतो हतो जेनो चुकादो पण आ साथे दिगंबरीनी तरफेणमां थई गयो छे. *आ मुजब आ बे नजीवा केसमां हझारो* रुप्या खर्चाइ गया छे अने हजु आ चुकादा सामे श्वेतांबरी भाईओ छेक प्रीवी काउन्सीलमां अपील करनार छे एम संभळाय छे!!

लग्न प्रसंगे सभा अने दान— ओराणुमां गत मासमां शा. छगनलाल देवचंदनी २ पुत्रीओना लग्नो बालोखवाळा लल्लुभाइ अने न्हेरीदासने त्यां जैन विधिथी थयेलां ते प्रसंगे शा. लल्लुभाइ रायचंदना प्रमुखपदे सभा थइ लग्न प्रसंगे कंइ पणु रकम विद्यादानमां काढवा विषे विवेचनो थतां बन्ने वर पक्ष तरफथी रा. ३०) पुस्तकालयमां कबाट माटे, ३०) पाठशाळामां, १०) पुस्तको माटे, ५) पुजा सामग्रीना मळी रु. ७५) भरया हता तथा पतासांनी प्रभावना थइ हती तेम बीजा पण रु. २०) भराया हता.

विवाहमें २५६) का दान—चांदवडमें सेठ श्यामलाल मोहनलालके लघु भ्राता तुलसीरामजीके पुत्रका विवाह गत मासमें जैन पद्धतिसे होकर रु. १५१) सोनगढ जैन मंदिर, २१) चांदवड जैन मंदिर, ५) खंडेलवाल पंच सभा, २५) जैनसिद्धांत विद्यालय मोरेना, ११) स्या. महाविद्यालय

काशी; ११) ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम, २८) "सत्यवादी" को उपहारके लिये यह सब मिलकर २९६) का दान किया गया था। हमारे अन्य खंडेलवालभाई भी इस दानका अब आगे अनुकरण करेंगे ऐसी हमें उम्मेद है।

हाथरसमें गत ता. २६–२८ को बड़ा भारी रथोत्सव और त्यागी पन्नालालजीका केशलोच होनेवाला था।

मृत्यु समय २५०)का दान–प्रांतिक सभा खीचीवाड़ाके सभापति रामलालजीकी धर्मपत्नीका स्वर्गवास वैसाख सुद ३ को समाधिमरणपूर्वक हुआ और २५०) का दान किया गया है जिसका उपयोग विद्यादानमें ही हो ऐसा हम चाहते है।

कुशलगढ़में गत मासमें एक विवाहके समय पं. हजारीलालजीके प्रयाससे "श्री सद्गुण प्रचारक दिगंबर जैन मंडल" की स्थापना हुई है।

बम्बईमें नवीन उत्साह–बम्बईमें सेठ सुखानंदजीके विशेष परिश्रमसे मारवाडी पंचायतीका नवीन मंदिर बना है उसमें उक्त सेठजीके सुपुत्र मोतीलालजीके आग्रहसे प्रत्येक अष्टमी और चतुर्दशीको रात्रिको ८ से १२ बजे तक नृत्य, भजन आदि हारमोनियम सहित होते हैं जिससे बड़ा भारी आनंद रहता है। आशा है कि मोतीलालजीका यह उत्साह स्थिर रहैगा जिससे बम्बई जैसे विख्यात नगरमें प्रभावना अंगकी वृद्धि होती रहें।

अंबालामें महावीरजयंतिके मौकेपर आत्मानंद जैन समाकी तरफसे बड़ी भारी सभा हुई थी जिसमें पं. हंसराज शास्त्रीने "आदर्शजीवन" पर उत्तम व्याख्यान दिया था जिस वख्त सेक्रेटरी लाला चिरंजीलालजीने कहा कि हंसराजजी शास्त्रीने '**स्वामी दयानंद और जैनधर्म**' नामक उत्तम पुस्तक लिखकर प्रकट की है।जिसके लिये मैं उनको सुनहरी तमगा (मेडल) देनेका वादा करता हुं।

छिवरुगढ़में जैनियोंके ३० घर होते हुए भी मंदिर न था परंतु अब नवीन मंदिर होकर उसमें ढकवाखानेके मंदिरकी प्रतिमाएं विराजमान की गई हैं और वैसाख सुद १२ को एक सभा भी कई थी जिसमें श्री घोलालालजीने उत्तम व्याख्यान दिया था।

पाठशालाकी स्थापना–श्री कचनेरजीमें पार्श्वनाथ दि. जैन पाठशालाकी स्थापना मिती वैसाख सुद १२ को खंडेलवालकुलभूषण पं. धन्नालालजी कासलीवालके करकमलोंसे हुई थी।

ब्रह्मचारी ग्रहस्थी बने–जिनदास नारायण चवडे लिखते हैं कि ब्र. शीतलप्रसादजीके हस्तें काशीमें खैरजानिवासी चिंतामन बनसीने ब्रह्मचर्य दीक्षा ली थी और ४ माससे वर्धामें रहते थे जहाँके भाईओंने ब्रह्मचारी जानकर उनको पींछी कमंडलु दिया था परंतु नागपुर जानेपर उन्होंने ग्रहस्थी आरंभ कर दी है, बूट स्टोकींग कोट वगैरेह पहनते हैं और विवाह करनेकी इच्छा रखते है इसलिये ऐसे वेशधारियोंसे श्रावकोंको सावधान रहना चाहिए!

ધાર્મિક પરીક્ષા—શે[illegible]ામાં ગતવર્ષે સમગાળા પ્રસંગે ધાર્મિક પરીક્ષા બ. સુરેંદ્રકીતિજીને હાથે લેવાઇ હતી તે મુજબ આવતા સમગાળા પ્રસંગે એટલે સં. ૧૯૭૩ના વૈશાખ

पेसी सोना महोरो बहार लावतो. हतो ते सोना महोरो कुमारपाळ राजाए लई लीधी त्यारे ते उंदर धननी ममताथी मरण पाम्यो माटे बाह्य धनमां कंइ सुख भासतुं नथी. खरुं सुख तो आत्मामां रहेलुं छे. मरती वखते धननी ममता जो रहे तो उंदर सर्प विगेरेना अवतार लेवा पडे छे माटे अनादी-काल अज्ञान दशामां राखनारां दुःखदायी धन थकी कशुं सुख थतुं नथी, उलटुं तेथी पापनी वृद्धि थाय छे अने पाप कर्मे करी जीव चोर्याशी लाख जीवयोनिमां भटकेछे. अने चार गतिमां अनेक प्रकारनां दुःख पामे छे. धनने सारुं प्रथम त्रस तथा स्थावर जीवोनी हिंसा थायछे, असत्य वचन बोलवुं पडेछे, चोरी करवी पडेछे; क्रोध, मान, माया अने लोभरुप चार कषाय छे ते धनथकी वृद्धि पामे छे. अने अंते आर्तध्यान तथा रौद्रध्यान ध्याई नर्क तथा तिर्यंचनी गतिमां जवुं पडेछे. कोई माणस करोडाधिपती होय पण जो ते मांदो थाय तो सोनाना, मोतीना तथा हीराना ढगला उपर सुवाडवाथी पण तेनुं दुःख मटतुं नथी. तेवा मांदा माणसने उलटुं मरती वखते ते धननी चिंता थाय छे, अने दुःख थाय छे. एवा मांदा पडेला करोडाधिपतिने सारुं सारुं अमृत सरखुं भोजन पण भावतुं नथी. अने तेना थकी सुख थतुं नथी. धननी वृद्धि थकी धनमद उत्पन्न थाय छे अने हुं मोटो हुं मारा जेवो कोई नथी, एम पापना विचारो वारंवार थया करे छे. धनथकी व्यभिचार करवानी इच्छा थाय छे वीगेरे अनेक दुःखनुं स्थान बाह्य धन छे. धन कदापि होय अने पुत्र न होय तो विचारो धनवान् चितासमुद्रमां बुडी मरे छे. कदापि छोकरां होय, पण धन न होय, तोपण दुःखज थाय छे माटे ए असार पदार्थ थकी सुख कदि थतुं नथी. जो घणुं धन होय अने पुत्र जो खराब पाके किंवा कोइ सगुं मरी जाय, तोपण बिचारा धन-वानने तो दुःखनुं दुःखज रहे छे. चक्रवर्ति राजा होय या करोडाधिपती कोइ होय तो-पण आ अज्ञान दशाथी मानेलुं बाह्य धन तेनी साथे जतुं नथी. आ प्रत्यक्ष देखातु शरीर पण साथे जतुं नथी तो बीजी कइ वस्तु जइ शके ? त्यारे हे सुज्ञो ! विचारो के धन थकी जे सुख थाय छे, ते संध्या राग समान जाणवुं. नित्य सुख तो आत्माना गुणो थकी थाय छे. लक्ष्मी हाथीना कान जेवी चंचळ छे. विजळीना चमकारानी पेठे नाशवंत छे. कोइनी साथे लक्ष्मी कदि गइ नथी अने जवानी पण नथी. पुद्गल द्रव्य जे जडरुप छे, नाशवंत छे, तेने पंडित पुरुषो धन मानता नथी, पण खरुं धन तो आत्मामां रहेलुं छे, तेनी जो इच्छा होय तो बाह्यधननो त्याग करो ! तेना उपरथी ममता उतारो, तो आत्मानुं धन पामवाने

योग्य थशो. ए आत्मामां रहेलुं धन कदापि काळे नाश पामतुं नथी अने तेथी अद्भुत सुख थाय छे. आत्मानुं सुख अनंत छे, तेने केवली भगवान् साक्षात् जाणी शके छे. सारुं सारुं खावाथी सुख मानवुं ते पण शुक्तिमां रुपानी भ्रांतिनी पेठे जाणवुं. भोग भोगववामां अवश्य रोगनो भय रहेलो होय छे, घणुं खावाथी अजीर्ण थाय छे अने वखते मरण पण थाय छे. कदापि नियमसर भोजन करवामां आवे, तो पण अंते ए भोजनरूप जड वस्तुथकी आत्मानुं तात्विक सुख अनुभवातुं नथी. आत्मज्ञानीओ जे आत्मसुख पामे छे, ते सुखनी आगळ लेश मात्र पण पौद्गलिक सुख हिसाबमां नथी. स्त्री संभोगथी पण सुख नथी, कारणके स्त्रीनुं शरीर जेवुं बहारथी देखाय छे तेवुं अंदर नथी. स्त्रीना द्वारथी सदा अशुचिवरन थाय छे. सात धातु थकी शरीर बन्युं छे. दुर्गंधमय छे ते थकी सुख कंई छेज नहीं. कामनो रस भोगवतां सुधी मधुर लागे छे अने सारा भोजननो रस जमतां सुधी मीठो लागे छे, पण आत्मस्वरूपनो रस छे ते सदाकाळ अमृत समान सुखाकारी थाय छे. आत्मस्वरुप जाणवाथी मनमां उत्पन्न थती संकल्प विकल्पनी श्रेणी नाश पामे छे अने निर्विकल्प दशानी प्राप्ति थाय छे, माटे खरूं सुख तो आत्माना स्वरूपनुं ज्ञान थवाथी थाय छे एम जाणी आत्माना सुखनुं संशोधन करवुंज उचित छे.

જ્ઞાતિઓમાં કજીઆ થવાનાં કારણો

અને તે દૂર કરવાના ઉપાયો



(અમદાવાદ બોર્ડિંગના વિદ્યાર્થીનો ઇનામી નિબંધ)

જ્ઞાતિ વ્યક્તિઓની બને છે. વ્યક્તિઓમાં સ્ત્રી, પુરૂષ વગેરેનો સમાવેશ થાય છે. એ બંનેના સંયોગથી પ્રજોત્પત્તિ થાય છે. છોકરાંનાં સ્ત્રી પુરૂષ માબાપ કહેવાય છે. છોકરાંમાં ભાઇ બ્હેન વગેરેનો સમાવેશ થાય છે. મા બાપ અને છોકરાંવડે કુટુંબ થાય છે. ઘણીવાર સગા ભાઇઓની પ્રજા એક કુટુંબમાં ગણાય છે, અને કેટલીકવાર પિત્રાઇઓના સમુદાયને પણ કુટુંબની સંજ્ઞા આપવામાં આવે છે. એકજ જાતના ઘણા કુટુંબના જથ્થાને આપણે નાત કહીએ છીએ. કેટલીક જ્ઞાતિઓમાં તડોના સમુદાયથી નાતો બને છે.

આપણે આપણી જ્ઞાતિઓની હાલની સ્થિતિ તરફ નજર ફેરવીશું, તો આપણને માલમ પડશે કે દરેક જ્ઞાતિમાં કુસંપનો સડો જોવામાં આવે છે. આ કુસંપ થવાનાં મૂળ કારણો ક્યાં છે તે જાણવું આવશ્યક છે. કુસંપ અજ્ઞાનતા, ઈર્ષા અને વહેમ વગેરેના પ્રચારને લઇને થાય છે. અજ્ઞાનતાનું વાદળું એટલું બધું છવાઇ રહ્યું છે કે આપણી જ્ઞાતિઓના ઘણાખરાં સ્ત્રી પુરૂષો તેમની આંતરિક તથા બાહ્ય સ્થિતિ કેવી છે, તે સ્થિતિ કેમ બદલાતી જાય છે અને તે બદલાતી સ્થિતિ પ્રમાણે અનુસરવા શા પ્રયત્નો કરવા, તેની તેઓ બીલકુલ દરકાર લેતાં નથી. ઘણીએ કરીને જ્ઞાતિઓમાં તડ પડે છે. એકજ વ્યક્તિની તકરાર તડ જેવું મોટું સ્વરૂપ ધારણ કરે છે. તડને

લઇને બોલવા ચાલવાનો વ્યવહાર બંધ પડે છે. કેટલીકવાર નાતિલાઓ એવા મમતપર આવે છે કે એક ફાંટાવાળા બીજા ફાંટા-તડ સાથેનો સંબંધ તોડી નાંખે છે, એટલે જમવા જમાડવાનો વ્યવહાર પણ રાખતા નથી એટલુંજ નહિ પણ બેટી વ્યવહાર પણ રાખતા નથી. કોઇવાર **આવા તડથી છેક નાનીનાત થાય છે અને તેથી કન્યા આપવા લેવામાં મહા વિપત્તિ ભોગવવી** પડે છે. કન્યાની અછતને લઇને થોડી મુદતમાં નાતનો વિનાશ થાય છે. વળી નાતના આગેવાનોની હઠ અને સ્વાર્થ વડે કે મતભેદ પડવાથી આવા બનાવ બને છે. આગેવાનો કોઇ કોઇ વખત એવો તો જુલમ વરસાવે છે કે નાતની દરેક વ્યક્તિને તેમની આજ્ઞાને અવલંબીને ચાલવું પડે છે. તેનાથી પોતાના વિચારો દર્શાવાતા નથી અને મુંગે મોંએ ખરું કે ખોટું સમજ્યા વગર આગેવાનોની ઇચ્છાનો અમલ કરવો પડે છે. જો જુલમ વિરોધ કરવામાં આવે છે તો નાતનાં તડ પડે છે. આ એક સ્વતંત્રતાની નિશાની છે. આ સ્વતંત્રતા વાસ્તવિક રીતે સારી નથી. આવી રીતે મેળવેલી સ્વતંત્રતા માઠાં ફળ લાવે છે. બીજી બાજુએ આપણે જોઇએ છીએ કે જ્ઞાનરૂપી અમૃતને લઇને બીજી જ્ઞાતિઓ સુધારા તરફ વળતી જાય છે અને જેટલા સુધારા કરીને પોતાનું શ્રેય કરે છે, ત્યારે આપણી જ્ઞાતિઓના શેઠીઆઓ અને આગેવાનો પોતાના બાપદાદાના ઉતરી આવેલા રિવાજને વળગી રહી, અર્વાચીન સમયને અનુસરતા સુધારાને અનુમોદન નહિ આપી, જ્ઞાતિના લાભ અને હિતને નુકશાન પહોંચાડે એ કેટલું વખોડવા જેવું છે? વળી દુનીઆમાં કહેવાતી મોટી મોટી પ્રજાઓ સુધારાના શિખરે પહોંચેલી છે અને વારંવાર નવા સુધારાઓ કરતી જાય છે, ત્યારે આપણી **જ્ઞાતિઓ અજ્ઞાન, અને કુધારારૂપી અંધકારમાં છવાઇ રહી** જાણે કે તેઓની હયાતી છે કે નહિ તેવો ભાસ આપે છે. સમયને અનુસરી આપણે સુધારા કરતા નથી તેથી આપણે કજીઆનું ઘર ઘાલી બેસીએ છીએ. જો નાતમાં બે તડ હોય અને બંને તડમાંથી કોઇ એક તડના માણસે જો નજીવો ગુનો કર્યો હોય તો બીજા તડવાળા જ્ઞાતિબંધુઓ તેને નાતબહાર મુકવા ઉભા થાય છે, આ વખતે જબરો પક્ષાપક્ષ થાય છે અને છેવટે લાકડીઓથી મારામારી થાય છે. જો કોઇ માણસને વિશેષ વાગે છે તો તેનું પરિણામ ડાંકતરના ખીસાં ભરાવવામાં આવે છે. આથી બમણું નુકશાન થાય છે, (૧) હમેશને વાસ્તે કજીઆનું બી રોપાય છે (૨) પૈસાની ખુવારી થાય છે. ભાઇઓ! તમે શા માટે તમારા પૈસાનો આવી રીતે દુરૂપયોગ કરો છો? આથી ઉલટું જે સંસ્થાઓ તમારાં પુત્ર અને પુત્રીઓને કેળવે છે, તથા તેમને અમૃત રૂપી જ્ઞાનનું પયપાન કરાવે છે તથા તેમની ભવિષ્યની જીંદગી સારી અને સરળ રીતે ગાળવાને જ્ઞાન આપે છે, તથા તેમને ગૃહસ્થાશ્રમમાં આદર્શરૂપ માબાપ બનાવે છે તેવી સંસ્થાઓને મદદ આપવા તમારો ઉદાર હાથ લંબાવો. વળી આપણી જ્ઞાતિઓનો કારભાર હાલ જુની પદ્ધતિએ ચાલે છે. કોઇ મુકરર જગ્યાએ સુધારા કરવાના નામે (બહાને) પંચ એકઠું થાય છે, પંચમાં નાના યા મોટા સર્વે સરખો ભાગ લઇ શકે છે, મારા સાંભળવા મુજબ હું જાણું છું કે યોગ્ય સુધારા કરવાને બદલે પંચ ખરેખર મિષ્ટાનાદિ ખરચો ઉડાવે છે. આખો દિવસ આપણા ભાઇઓ ઉંઘમાં ગાળે છે અને પાછી રાતે બાર વાગે પંચ એકઠું થાય છે. વળી જો કોઇ આગેવાન આવવા બાકી રહ્યા હોય તો તેમને

પાંચ કે ૭ તેડાં મોકલવામાં આવે છે, એટલામાં એક કે બે વાગ્યાનો સુમાર થાય છે. પછી સુધારાનો અમુક વિષય મૂકવામાં આવે છે, પણ જો આપણા ડાહ્યાડમરા આગેવાનોનું મન માને નહિ તો તે વિષયને કોરે મૂકવામાં આવે છે. પછી બીજો વિષય પકડવામાં આવે છે. ચારે ખુણામાંથી પટેલીઆઓ બુમોનો વરસાદ વરસાવી દે છે. ઘોંઘાટને લઇને કોઇનું વિવેચન પુરેપુરૂં સંભળાતું નથી. વળી જો વિષયમાં તડને લઇને બે મત પડે છે તો ઝપાઝપી થાય છે. સુધારો કરવા જતાં કુધારો થાય છે. પૈસાનું પાણી થાય છે અને કુસંપનું મોટું પોત પ્રકાશે છે માટે આ બાબતમાં સુધારો થવાની જરૂર છે. વળી હાલના આગેવાનો પહેલાંના આગેવાનો જેવા ઉદાર અને મોટા મનના જણાતા નથી. કોઇ કોઇવાર અન્યાયથી દંડ લેવાય છે અને તેનો ઉપયોગ જમણવારરૂપી બુરા રિવાજમાં થાય છે. આ બધા કારણો જ્ઞાતિઓમાં કજીઓ ઉત્પન્ન કરે છે. જે જ્ઞાતિઓમાં આવા તડાએ વાસ કર્યો છે તે જ્ઞાતિઓ 'સંપ ત્યાં જંપ' આ કહેવતનો મર્મ શું સમજી શકે? સંપનાં ફળ મીઠાં છે અને ખુશકારક છે.

જ્ઞાતિ સુધારવાના કેટલાક અનુભવી ઉપાય.

કેળવણી, રાજ્ય અને ધર્મની ઉથલપાથલ એ સંસારની સ્થિતિ સારાને કે નરસાને માટે ફેરવનાર મહા યંત્રો છે. ઉપર જણાવ્યા મુજબ આપણે જોઇ શકીએ છીએ કે જ્ઞાતિને સારા પાયા ઉપર લાવવાને કેળવણીની પ્રથમ જરૂર છે. જે જ્ઞાતિમાં કેળવાયલો સમુહ વિશેષ હોય છે, તેને સારી સ્થિતિએ ચઢતાં વાર લાગતી નથી. આપણી જ્ઞાતિઓમાં કેળવણીનો પ્રચાર સહેજસાજ છે, કંઇ કંઇ કેળવણીનો પ્રકાશ નજરે પડે છે. કેટલાકને પોતાની માતૃભાષાનું પૂર્ણ જ્ઞાન નથી. આવી સ્થિતિમાં જો આપણે કેળવણીનો ફેલાવો કરવાને બનતો પ્રયાસ ના લઇએ તો આપણી કોમો અજ્ઞાનતામાંજ ડુબી જાય. વિલાયત, જાપાન અને અમેરિકાની પ્રજાઓ તથા હિંદુસ્તાનમાં બંગાળી તથા ગુજરાતમાં નાગર પ્રજા કેળવણીમાં આગળ પડતી છે. તે પ્રજાઓએ કેળવણીનેજ પોતાનો ખોરાક બનાવ્યો છે. તેઓ હરનિશ કેળવણી ફેલાવામાંજ મચી રહ્યા છે અને તેમાંજ આનંદ લેછે. કેળવણીને લઇનેજ તેઓ દુનીઆની સમગ્ર પ્રજાઓમાં અગ્રપદ ભોગવે છે, માટે ભાઇઓ! જો આપણે એવું માન, આવકાર અને ઉચ્ચ પદ મેળવવાં હોય તો સૌથી પહેલાં કેળવાવું જોઇએ. વળી આપણી જ્ઞાતિઓમાં સ્ત્રી કેળવણીનું તો મીંડુ છે. લોકોમાં સ્ત્રી કેળવણી માટે ખોટો મત છે. કેટલાક ધારે છે કે સ્ત્રી કેળવણી લેવાથી ખરાબ રસ્તે દોરાય છે, પણ મારા બંધુઓ વિચાર કરતા નથી કે બીનકેળવણીને લઇને કેટલી બધી સ્ત્રીઓ કુચાલવાળી બને છે. કેળવાયલી સ્ત્રી સેંકડે એક કે બેજ ખરાબ રસ્તે દોરાશે, પણ જેઓ બીન કેળવાયલી છે અને જેઓ પોતાનો શીલવ્રતપણાનો ખોટો ફાંકો રાખે છે તેઓ સેંકડે પંચીશ માલમ પડશે. પ્રાચીન કાળમાં સ્ત્રીઓ વિદ્વાન, ચતુર અને સદ્‌ગુણસંપન્ન હતી. કેટલીક સ્ત્રીઓએ મોટા મોટા ગ્રંથો બનાવ્યા છે. કેટલીક સ્ત્રીઓએ રાજકારભાર ચલાવેલો છે તથા કેટલીક સ્ત્રીઓએ **આર્જીકા** બની પોતાના જ્ઞાન અને અનુભવનો સ્વાદ દેશમાં બધે ફરી ફરી પોતાના દેશી બંધુઓ તથા બ્હેનોને ચખાડયો છે. વળી દત્ત સાહેબ પ્રાચીન કાળની સ્ત્રીઓ વિષે નીચે પ્રમાણે કહે છે ''સ્ત્રીઓનો ગુપ્ત વાસ પ્રાચીન આર્યાવર્તમાં કેવળ અજાણ્યો હતો. હિંદુસ્થાનના ઉદય કાળથી હિંદુ સ્ત્રીઓ માનવંત દશા ભોગવતી. તેમના કબજામાં દોલત રહેતી;

અને તેમને વારસો મળતો; તેઓ ધાર્મિક કાર્યમાં ભાગ લેતી; તેઓ રાજ–પ્રસંગે મોટી સભાઓમાં આવતી; પ્રસિદ્ધ રસ્તાઓ ઉપર હંમેશાં પોતાના જરૂરી વખતે જતી; તેઓ ઘણી વખત તે સમયની વિદ્યામાં નામ મેળવતી, અને રાજ-નીતિ તથા રાજ–કાર્યમાં તેમને યોગ્ય સત્તા હતી. અને અગરજોકે યુરોપની અર્વાચીન સ્ત્રીઓની માફક તેઓ પુરૂષોના મંડળમાં અતિ છૂટથી ભળતી નહિ, તોપણ અત્યંત ગુપ્ત વાસ અને બંધન રાખતી નહી. આ રિવાજ મુસલમાની સામ્રાજ્યના વખત સુધી હીંદુસ્તાનમાં અજાણ્યા હતા."

બંધુઓ, ઉપરના લખાણથી પ્રાચીન કાળની સ્ત્રીઓનો આપણને કંઈક ઇતિહાસ મળે છે. હાલ ન્યાયી, પ્રતાપી અને પરોપકારી અંગ્રેજી રાજ્યે લોકોને કેળવણી આપવાની યોજના શરૂ કરી છે. પ્રથમ કરતાં કેળવણી ઓછા ખરચે અને ઓછી મહેનતથી મેળવી શકાય છે. વળી વડોદરાના શ્રીમંત સરકાર ગાયકવાડે તેમના રાજ્યમાં કેળવણી ફેલાય એવા કાયદા તથા સાધનો આપેલાં છે છતાં આપણામાંના ઘણા તે રાજ્યોના આશરા નીચે રહેતા મનુષ્યો આવો અનુપમ લાભ લેતા નથી. નેપોલીઅન જેવા યુરોપને ધ્રુજાવનાર સરદારે કહ્યું છે કેઃ—

કહે નેપોલીઅન દેશને, કરવા આબાદાન,
સરસ રીત તો એજ છે, દો માતાને જ્ઞાન.

માટે પ્રથમ આપણી માતાઓને કેળવવી જોઇએ. હાલ આખા હિંદુસ્તાનમાં સ્ત્રી કેળવણી વિષે હીલચાલ ચાલી રહેલી છે. જ્યાં ત્યાં શ્રાવિકાશ્રમ, વિધવાશ્રમ, વનિતાવિશ્રામાદિ સંસ્થાઓ જોવામાં આવે છે. વળી આપણી કોમને વાસ્તે પણ મુંબઇમાં શ્રાવિકાશ્રમ, સુરતમાં ફુલકોર કન્યાશાળા, ઇડરમાં શ્રાવિકાશ્રમ તથા કેટલેક ઠેકાણે પાઠશાળાઓ ખોલવામાં આવી છે, પણ દીલગીરી સાથે જણાવવું પડે છે કે તેનો ઉપયોગ કેટલાંક મૂર્ખ માબાપ પોતાની પુત્રીઓને લેવા દેતાં નથી. સ્ત્રીકેળવણીના અભાવને લીધે વહેમનો પ્રચાર છે. સઘળે વૈરક શાસ્ત્ર જોવામાં આવે છે. નજીવી બાબતોમાં સ્ત્રીઓ વહેમ ઘાલી બેસે છે. કોઇ છોકરૂં માંદુ પડે કે તરતજ તેઓ કહે છે કે તેને નજર લાગી છે માટે નજર બાંધો. ખરેખર છોકરૂં આસપાસના સંજોગોને લઇને માંદું પડ્યું હોય છે; તેમ છતાં સ્ત્રીઓ ખરાબ સંજોગોને દુર નહિ કરતાં **નજર બાંધવા તૈયાર થાય છે!** આથી વિશેષ અજ્ઞાનતા અને વહેમ કેવાં હોય! અને જો તે બાળકની પુરેપુરી કાળજીથી સારવાર કરવામાં આવતી નથી તો તે એક બે દિવસ માંદુ રહી મરણને શરણ થાય છે, પણ અજ્ઞાન સ્ત્રીઓ તે માતાના **કે બળીઆકાકાના** કોપથી મરણ પામ્યું એમ કહે છે! યાદ રાખજો કે જ્યાં સુધી આવી અજ્ઞાનતા પ્રચલીત છે ત્યાં સુધી સુધારો થવો અશક્ય છે, માટે ભાઇઓ, **સ્ત્રીઓને કેળવો એટલે આપોઆપ તેમનાં ફરજંદો કેળવાશે.** સ્ત્રીઓને અંગ્રેજી કેળવણી આપવાની કંઈ જરૂર નથી પણ જે કેળવણી તેમને પવિત્ર, ધર્મિષ્ટ, સુશીલ, સદાચરણી અને પતિવ્રતા બનાવે તથા જે કેળવણી તેમનું ઉચ્ચ ચારિત્ર બાંધે તથા જે કેળવણી તેમના સંસારના કાર્યવ્યવહારમાં ઉત્તમ મદદ કરી શકે તથા જે કેળવણી તેમને આદર્શરૂપ માતાઓ અને ગૃહિણીઓ બનાવે તેવી **ધાર્મિક, નૈતિક અને વ્યવહારિક** કેળવણી આપવાની જરૂર છે. આ પ્રકારની કેળવણીનો ફેલાવો કરવાને દરેક ગામમાં પાઠશાળા ખોલવાની જરૂર છે. અને મારી ખાત્રી છે કે આ લેખ વાંચી મારા સુજ્ઞ બંધુઓ આ કાર્ય અનુભવમાં મુકશે.

છોકરાઓને ત્રણ પ્રકારની કેળવણી આપવાની જરૂર છે. (૧) માનસિક કેળવણી (૨) શારીરિક કેળવણી અને (૩) હૃદયની કેળવણી. હાલ અપાતી કેળવણી બહુધા માનસિક છે. **માનસિક કેળવણીનો** મુખ્ય હેતુ મનશક્તિઓને ખીલવવાનો છે, તેથી પ્રથમ લેખન વાંચન શીખવી સામાન્ય જ્ઞાન તથા વિદ્યાનાં મૂળતત્વો શીખવવામાં આવે છે. પછી આગળ જતાં ઉચ્ચ કેળવણી આપવામાં આવે છે. આ પ્રકારની કેળવણીનો જોઇએ તેવા વિસ્તારમાં પ્રચાર જોવામાં આવતો નથી. હાલ આપણી કોમમાં ઘણામાં ઘણા પાંચેક ગ્રેજ્યુએટો જોવામાં આવે છે. આ બતાવી આપે છે કે આપણે કેળવણીના વિષયમાં કેટલો રસ લઇએ છીએ. વેપાર, હુન્નર અને કળાનું તો જ્ઞાન ક્યાંથી હોય! વળી દેશને તારનાર પણ વિદ્યા છે. રાજા સર માધવરાવ કહેતા હતા કે દેશને ઉંચકી ઉંચે લાવનાર વિદ્વાનો એ મોટું ઉચ્ચાસન છે. બાપદાદાના વેપારને વળગી રહેવામાં હવે સાર નથી. દેશની આર્થિક સ્થિતિ બદલાવા સાથે આપણો દેશ તદ્દન નિર્ધન અને નિર્માલ્ય બન્યો છે, બનતો જાય છે અને હજુ વિશેષ બનશે. હિંદુસ્તાનની પ્રજાનો આપણે પણ એક ભાગ છીએ, માટે આપણી આર્થિક સ્થિતિ ઉપર જબરો ફટકો પડ્યો છે, માટે બંધુઓ! ઉંચી કેળવણી લઇ આધુનિક સમયને માન આપી જુદા જુદા ઉદ્યોગ અને હુન્નરકળાઓ તરફ તમારૂં પુરતું ધ્યાન આપો.

શારીરિક કેળવણી તરફ બીલકુલ ધ્યાન અપાતું જોવામાં આવતું નથી. જેના બાપદાદાઓ બાહોશ અને કળાકૌશલ્યવાન હતા તથા જેઓ શરીરે તેજવાન અને બળવાન હતા તેના પુત્રો નિર્બળ, નિસ્તેજ અને નિરુત્સાહી માલમ પડે છે. પહેલાં ગામમાં કે શહેરમાં દરેક મહોલ્લામાં અખાડા અને તાલીમખાનાં હતાં જ્યાં નાના યા મોટા સર્વે સરખો ભાગ લેતા. હાલ તેની નિશાની પણ જોવામાં આવતી નથી. એક વિદ્વાને કહ્યું છે કે **'પહેલું સુખ તે જાતે નર્યા!'** તંદુરસ્તી ઉપર સુખનો આધાર છે અને નાતની હયાતી પણ તેના ઉપર છે, માટે સર્વેએ શારીરિક કેળવણી તરફ પણ પુરતું લક્ષ આપવું.

હૃદયની કેળવણીમાં ધાર્મિક અને નૈતિક કેળવણીનો સમાવેશ થાય છે. આપણી જ્ઞાતિઓમાં ધાર્મિક અને નીતિની કેળવણીની ખીલવણી થઇ નથી. જ્યાં સુધી માબાપ અજ્ઞાન હોય ત્યાં સુધી તેના ફરજંદો આ વિષયનું રહસ્ય ક્યાંથી જાણે? આપણામાંના ઘણા પોતાની ધાર્મિક ફરજો તથા ધર્મના તત્વો બરાબર જાણતા નથી. આપણે ધાર્મિક જ્ઞાન ઉપલકીઉં ધરાવીએ છીએ. જ્યાં સુધી આપણે ખરેખરા સિદ્ધાંતો અને તત્વો જાણીએ નહિ ત્યાં સુધી આપણી ધાર્મિક ફરજો દૃઢ થાય નહી. ધર્મ એ પ્રજાની ચઢતી પડતીનું કારણ છે. ધર્મ સંબંધી જ્ઞાન આપવાની ખરી ફરજ આચાર્યો-ગુરૂઓની છે. પોતાનો પંથ જાળવી રાખવા માટે, અને પોતાના સેવકો પોતાના પંથનું રહસ્ય સમજે, તથા તે પ્રમાણે વર્તે, તેને માટે તેમણે ઇલાજ લેવા જોઇએ પણ **આપણા આચાર્યો (ભટ્ટારકો)**ને નથી પડી તેમના પંથની તથા નથી પડી તેમના સેવકોની! તેમને માત્ર ભાવનાઓ આપી પૈસાથી તર બનાવો એટલે બસ! પછી ધર્મનું અને સેવકનું શું કામ છે! પૈસા પોતાની મરજી મુજબ વાપરે છે. જો કે તેઓ હજારો બલ્કે લાખો રૂપીઆના સ્વામી હોયછે તોપણ તેઓ તેમના અનુયાયીઓને ઉપયોગી સાધનો મેળવવામાં એક પાઇ પણ આપતા નથી. તેઓ ધારે તો મોટી પાઠશાળાઓ અને મહાવિદ્યાલયો ચલાવી

શકે। પણ આવા ગુરૂઓ-ધર્માચાર્યો મળવા મુશ્કેલ છે. વળી તેમની સત્તા પણ પ્રબળ હોય છે. આચાર્યો ખોટું કે ખરૂં સમજાવે તોપણ તેમની આજ્ઞાનું ઉલ્લંઘન થતું નથી. તેમના ઉપર આપણો પૂર્ણ વિશ્વાસ હોય છે માટે એ તો સારે માર્ગે ચાલે અને આપણને સારા માર્ગે ચલાવવા પ્રયત્ન કરે તો આપણે કંઇ સારી અને પવિત્ર જીંદગી ગુજારી શકીએ. વિશેષમાં જો આચાર્યો જ્ઞાતિના કાયદા બાંધવામાં તથા સુધારા કરવામાં મુખ્ય ભાગ લે તો સરસ સુધારા થઇ શકે.

(૨) પંચમાં સુધારા થવાની જરૂર છે. પંચમાં નાનો યા મોટો દરેક માણસ ભાગ લઇ શકે છે એ બંધ કરવાલાયક છે, કારણકે તેથી સુધારા થવાને બદલે કજીઆ ઉત્પન્ન થાય છે. વળી હાલના પંચોમાં ન્યાયી આગેવાનોનો અભાવ છે. તેઓ માત્ર માનના ભુખ્યા હોય છે. પોતાના સ્વાર્થ ખાતર આખી કોમને અંધારામાં ગોથાં ખવરાવે છે. ગયા ચોમાસામાં આપણી એકાદ જ્ઞાતિમાં કેટલાક યોગ્ય સુધારા કરવાને તેનું પંચ એકઠું થવાનું હતું. પંચની કંકોતરીઓ પણ વહેંચાઇ ગઇ હતી, પણ કમનસીબે કેટલાક આગેવાનોની અજ્ઞાનતા અને સ્વાર્થપરાયણતાને લઇને પંચ એકઠું થયું નહી. માટે પંચમાં સમયને અનુસરતા સુધારા કરવા જોઇએ. જો દરેક ગામના અમુક બે ત્રણ મેમ્બરો વસ્તીના પ્રમાણમાં પંચમાં મોકલવામાં આવે અને જો તે મેમ્બરોનો એક પ્રમુખ-નાતનો શેઠ તથા તેને મદદ કરવા બે સેક્રેટરીઓ નીમવામાં આવે તો આ રીતે બનેલું પંચ સારા સુધારા કરી શકે એમ મારી ખાત્રી છે. આવી પદ્ધતિ બીજી ઘણી કોમોએ દાખલ કરી છે અને તેનાં મીઠાં ફળ તેઓ ભોગવે છે. આવી પદ્ધતિથી દરેકનો અવાજ પંચમાં જઇ શકે અને કુસંપને બદલે સંપ વધે છે.

(૩) સાહસ એ પ્રવૃત્તિ માર્ગનો મોટો ગુણ છે. શામળભટે જે અર્થે સાહસને ધિક્કાર્યો છે, તે અર્થે સાહસ શબ્દ અહીં વાપર્યો નથી. સાહસના બે અર્થ હોવાથી ઘણી વખત તે અવગુણનું સ્વરૂપ પકડે છે. આપણે સાહસ સદ્ગુણ પ્રાપ્ત કરવાનો છે. કોઇ મોટું કામ સાહસ વગર થતું નથી. કોલંબસ જેવા કુશળ વહાણવટીએ સાહસથીજ અમેરિકા જેવો વિશાળ અને ફળદ્રુપ ખંડ યુરોપને આપ્યો. વાસ્કોડી ગામા જેવા સાહસિક નાવિકે હિંદુસ્તાનનો દરિઆઇ માર્ગ શોધી કાઢી યુરોપનો વેપાર વધાર્યો. સાહસ વિના આપણા હિંદી વેપારીઓ જંગબાર અને જાવા સુધી પહોંચ્યા ન હોત. સાહસને લઇને પારસી કોમની છેલ્લાં પંદર વરસમાં અભિવૃદ્ધિ થઈ છે. વળી જેનું મન બાગ્યું તેનું સૌ ભાગ્યું માટે જ્યાં સુધી આપણે સાહસિક થઇશું નહિ ત્યાં સુધી ચડતીનું સ્વપ્ન પણ લાવવું દુઃખકર છે.

(૪) હાલના જમાનામાં વિદ્યાનું બળ વિશેષ છે તેથી આ દેશમાં અપાતી કેળવણી પૂર્ણ કર્યા બાદ વિશેષ કેળવણી લેવા વિલાયત અને અમેરિકાદિ દેશોમાં જવાની જરૂર પડે છે. કોઇને બેરીસ્ટરની માનવંત પદવી લેવા વિલાયત જવું હોય તો તેને નાતબહાર (બહિષ્કૃત)મુકવાની ધમકી આપી અટકાવવો જોઇએ નહિ. વળી આપણા રાજકર્તાની ગાદી વિલાયતમાં છે. ત્યાંનું રાજ્યબંધારણ કેવું છે, ત્યાંના રિતરિવાજ કેવા છે તેઓ આબાદી અને ઉન્નતિ શાથી ભોગવે છે વગેરે જાણવાની ખાસ જરૂર છે, માટે આ બાબત તો દરેક વ્યક્તિને લાગુ પડે છે, તેથી જેઓ આવા હેતુથી પરદેશગમન કરતા હોય તો તેમને આપણે ઉત્તેજન આપવું જોઇએ. જે રીતે ફ- ણામનો દેશ કરવાને સમુદ્ર સેવે છે તેજરીતેઅજ્ઞાન

પોતાની જન્મભૂમિને જગત માને દેશાટનથી જ્ઞાન સંપૂર્ણ અને પરિપક્વ થાય છે, આપણામાં જાત્રાનું મહાત્મ્ય શા માટે ગણાય છે? જેવી રીતે જાત્રા અર્થે દેશમાં મુસાફરી કરીએ છીએ તેવીજ રીતે કેળવણી અને અનુભવ મેળવવાને શા માટે જાત્રા-દેશાટન ન કરવું જોઇએ, માટે પરદેશગમન કરનારને બહિષ્કૃત નહિ કરતાં ઉત્તેજન આપવું જોઇએ.

(૫) જો જ્ઞાતિનો દરેક વ્યક્તિ પોતાની ફરજ સમજે તો ઉપર દર્શાવેલા સુધારાઓ સહેલાઇથી થઇ શકે. દરેક બંધુના હૃદયમાં ભાતૃભાવની લાગણીઓની સ્ફુર્તિ થવી જોઇએ. 'સંપ ત્યાં જંપ' એ વાક્યનો અર્થ સમજી તેને કાર્યમાં મુકવા પ્રયત્ન થવો જોઇએ. સંપથી મોટી અને બળવાન શકિત હારી જાય છે. સંપને લઇને પશ્ચિમની પ્રજાઓ બળવાન બની છે, માટે કુસંપને જડમૂળથી ઉખેડવા દરેકે સરખો પ્રયત્ન કરવો જોઇએ.

ઉપર દર્શાવ્યા મુજબ અનુસરવા જ્ઞાતિના દરેક વ્યકિતએ ટેક લેવો જોઇએ કંકાસથી જ્ઞાતિનું બળ નરમ પડે છે, તે ક્ષીણ થતી જાય છે અને અંતે નાશ પામવાનો સમય નજદીક આવતો જાય છે, માટે બન્ધુઓ? અજ્ઞાનતા, વેર, દ્વેષ અને વેહેમરૂપી બળવાન શત્રુઓને ઉચ્ચ કેળવણીરૂપી હથિયારથી નિર્મૂળ કરી અનુપમ સુખ ભોગવવા ચુકશો નહિ. કેળવણીના પ્રચારથી સુધારા આપોઆપ થશે, આપણી આંખો ઉઘડશે, આપણી ભૂલો આપણી દૃષ્ટિએ પડશે અને કેળવણીના પ્રવાહથી આપણે ઉદાર, પ્રેમી અને સાહસિક બનીશું; તથાસ્તુ.

મુળચંદ જહેચરદાસ.
શેઠ પ્રે. મો. દિ. જૈન. બોર્ડીંગ અમદાવાદ.

વિજ્ઞાન શાસ્ત્ર.

(૬)

હવે આપણે અગ્નિનો વિષય લઇશું. અગ્નિનું મુખ્ય મૂળ સૂર્ય છે. સૂર્યની અંદર એટલી બધી ગરમી છે કે ત્યાં ધાતુમાત્ર વરાળ રૂપેજ રહે છે. પૃથ્વીઉપર જે ગરમી આપણે અનુભવીએ છીએ, તે તો અડધી માત્ર છે. બાકીની અડધી વાતાવરણમાં ફેલાઇ જાય છે. કેટલીક વખત ગરમ પાણીના કુંડો, જ્વાળામુખી પર્વતમાંથી નીકળતો ધીગધીગતો લાવા નામનો રસ અને ભડકાદ્વારા એ આ પૃથ્વીમાં સમાઇ ગયેલી ગરમીને પ્રત્યક્ષ જોઇએ છીએ. આ ઉપરાંત બીજાં ઉત્પત્તિનાં સ્થાન જેવાં કે ઘસારો, વીજળી વીગેરે છે. અસલના લોકો ચકમક અને લોઢું ઘસી અગ્નિ ઉત્પન્ન કરતા. હાલ આપણે દીવાસળી ઘસી પેદા કરીએ છીએ.

જૈન આગમમાં પાંચ સ્થાવર પૈકી અગ્નિ એક સ્થાવર જીવ ગણાય છે એટલે કે અગ્નિજ જેની કાયા છે એવા જીવો અગ્નિમાં સમાયલા છે. અત્રે શંકા થાય છે કે જ્યારે દરેક વસ્તુમાં અગ્નિ પેદા થઇ શકે છે, તો અગ્નિ કાયના જીવો આપણે પેદા કરીએ છીએ કે અવ્યક્ત જીવોને માત્ર આપણે વ્યકત કરીએ છીએ. જો વ્યકત કરતા હોઇએ, તો દરેક વસ્તુથી અગ્નિકાયના જીવો છે એમ સાબીત થાય છે. આનો ખુલાસો કોઇ જૈન વિદ્વાન આપશે એમ આશા છે.

પાશ્ચાત્ય વિજ્ઞાનશાસ્ત્ર પ્રમાણે અગ્નિ કોઇ પદાર્થ નથી. ત્યાંના વિદ્વાનોમાં એ સંબધી અનેક જાતની કલ્પનાઓ ઉભી થઇ હતી, પણ હાલ ઘણા કબુલ કરે છે કે અગ્નિથી બીજી વસ્તુના પરમાણુઓમાં ગતિ ઉત્પન્ન થાય છે. આ આંદોલનો ફકત દૃષ્ટિગોચર હોવાથી ભડકારૂપે માલુમ પડે છે. તેના પરિ-

ધુંમ રૂપે પ્રકાશ અને ગરમી બે માલુમ પડે છે. A proof of the great conducting power of metals. ધાતુમાં ગરમી ખેંચી લેવાની શક્તિ ઘણીજ છે. તેની સાબીતિ માટે જો આપણે લોઢાના તળીયા ઉપર ખેંચીને કપડું બાંધીશું અને તેની ઉપર અંગારા મુકી ભડકો કરીશું તો કપડું બળશે નહિં કારણ કે ધાતુ ગરમી ઝટ ખેંચીલે છે. ગંજીફાના પાના ઉપર કલઇનું ચપટું ચાટલું મુકીએ અને તળીએ દીવો સળગાવીએ, તો કલઇ ઓગળશે, પણ કાગળ બળશે નહિં.

કાગળની હાંડી ચઢે નહિં ચુલે એ વાક્ય વિજ્ઞાન શાસ્ત્ર જૂઠું પાડી શકે છે. જો આપણે કાગળની દાબડી અથવા પ્યાલો બનાવી પાણી ભરી તારની જાળી ઉપર મુકી તળીએ દીવો સળગાવીએ, તો કાગળને બીલકુલ આંચ લાગ્યા વગર પાણી ખળખળ ઉકળશે અને તેમાંથી વરાળના ગોટેગોટા પણ નીકળશે !! સંભાળ એટલી રાખવાની કે પ્યાલાની વચ્ચે દીવાની જ્યોત લાગવી જોઇએ.

આપણને દરેક ધાતુ ઠંડી લાગે છે એનું કારણ એ છે કે તેને હાથમાં ઝાલતાં ઠંડી લાગે છે. આરસપાણના પથ્થરની જમીન ઠંડી લાગે છે, તેનું પણ કારણ એજ છે. લાકડાં, ન્હેર, ઉન વીગેરેગરમી ખેંચી શકતાં નથી તેથી તે ઠંડા લાગતાં નથી.

नेता कैसे होने चाहिं।

आजकल चारों ओर उन्नतिकी धूम पड़ रही है, कुछ ही लोगोंके सिवाय प्रायः सभी इन उन्नतियोंके सहायक हैं, समाचार-पत्रोंमें कालमके कालम उन्नति सम्बन्धी लेखोंसे भरे हुवे दृष्टिगत होते हैं, ट्रैक्टोंकी भी भरमार हो रही है, सभावों और व्याख्या-नदातावोंकी संख्या भी अपरिमित बढ़ती जाती है, इस प्रकारकी हलचल होना हमारे मृतःप्राय देशके लिये एक बड़े सौभाग्यकी बात हैं। यदि यथार्थमें कथन करनेकी अपेक्षा कुछ कार्यरूपमें भी परिणत हों। जिस प्रकार नेत्रहीनको नेत्रोंकी आवश्यकता होती है उसी प्रकार देश व जातिके लिये भी नेतावोंकी आवश्यकता होती है, परन्तु नेता बनना सहज बात नहीं है। नेतावोंको द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके पूर्ण ज्ञाता होना चाहिये, साथही साथ धर्मके भी पूर्ण श्रद्धालु और जानकार होना चाहिये, जो किसी बातको गत बातोंके अनुभवसे और भविष्यमें होनेवाले, उस बातके फलको अच्छी तरह जान सके हो, परिपक्व बुद्धि हो, गंभीर हृदय, सहनशील, और यथोचित हों, स्वाधीन हो, धीरवीर हो, श्रेष्ठवर्ण हों. उदार हों, दयालु हों, विषय लोलुपन हों, किसी कुव्यसनमें न फंसे हों, जिनका जीवनका उद्देश ही देश, जाति, किंवा धर्मोत्थान

हों, अपनी बुद्धि और बलपर भरोसा रखनेवाले हों, परन्तु साथ ही दूसरोंको घृणा से देखनेवाले न हों, निंदा करनेवाले न हों, अपनी बात तो कहें, परन्तु औरोंकी बात सुनकर उसपर भी विचार करनेवाले हों, हिलमिलकर काम करनेवाले मिष्ट भाषी और निष्कपट मन हों, निश्चित उद्देशपर दृढ़ हों, अपनी कीर्ति व नाम चाहनेवाले न हों, स्वतंत्र विचारी हों, देशाटन किये हुवे हों, सबको समदृष्टिसे देखनवाले हों, उत्तम वक्ता हों, इत्यादि अनेक गुण युक्त पुरुष ही नेता हो सक्ता है न कि (कुछ भी बोलना सिखा, कि बस कहीं से सुनसुनाकर पुस्तकों व गज़टों से ज्योंका त्यों नकल कर या रटकर किसी प्रकार अपना नाम भी वक्तावों (Speakers) अथवा नेतावों (Reformers) में लिखानेके लिये, ख्याति पानेके लिये, या लोगोंको प्रसन्न करने लिये, इसी ओटमें स्वार्थ साधन या विषयकषायोंकी पुष्टि करनेके लिये किसी भी सभामें खड़े होकर बोलनेवाले, निबंध पढ़ देनेवाले, संस्थावोंमें नाम लिखाकर उनके कार्यकर्त्ता बननेवाले) अपढ़ लोग भी नेता हो सक्ते हैं। नेता होना न तो द्रव्याधीन हैं और न किसी प्राप्तकी हुई उपाधि (पद) के आधीन है। किन्तु वह आत्माकी पवित्रताके आधीन है। नेता प्रत्येक देशमें, प्रत्येक जाति व कुलमें उत्पन्न होते व हो सक्ते हैं। नेतावोंको मान मिले व ना मिले, उनकी कीर्ति हो व न हो परन्तु अकीर्ति और निरादर तो उन्हें पद पद पर सहना पड़ता है, उन्हें भूखे मरना पड़ता है, शीत उष्ण सहना पड़ती है, गाली और मार खाना पड़ती है, अपने नेत्रोंसे अपने प्रिय बंधु बान्धवोंका ताड़न, मारन, बंधनादि वेदना देखना पड़ती है, कभी कभी इच्छाके विरुद्ध अपने ही हाथोंसे अपने पुत्र कलत्रादिके वध करनेका अवसर पहुंचता है, स्वयं भी मृत्युके पाहुने बनना पड़ता है, इत्यादि अनेकों अचिन्त्य विपत्तियां भोगना पड़ती हैं, तब कहीं काठिनतासे नेता बननेका सौभाग्य प्राप्त होता है। नेतागण कथन करनेकी अपेक्षा कार्य करना ही श्रेष्ठ समझते हैं, वे अपने तन, मन, धन, और अपने पवित्र उद्देश्योंकी पूर्ति करनेके लिये बलि कर देते हैं। उन्हें दुःख व सुख, जीवन मरण, घर व वन, स्मशान व कारागार, सम्पत्ति व विपत्ति, योग व वियोग, मित्र व शत्रुके सन्निकट इत्यादि सभी जगह समान आनन्द आता है। विपत्तियां व विघ्न, व परीषहादि उन महात्मावोंका लेश मात्र भी बिगाड़ नहीं कर सक्ते हैं। किन्तु जितने विघ्न बाधाएं उनके पवित्र मार्गमें आते हैं, वे उतने ही अपने उद्देश्योंमें दृढ़ होते जाते हैं। उनको किसीकी सहायताकी आवश्यकता नहीं होती है, किन्तु

वे अपने आप ही अपनी सहायता कर लेते हैं। ऐसे ही महात्मावोंसे कुछ लोकका भला हो सक्ता है, यही नेता कहे जा सक्ते हैं God help them who help themselves-अर्थात् ईश्वर (प्रकृति-nature) उन्हीं को मदद करता है, जो अपने आपकी मदद आप ही कर लेते हैं। क्या संसारमें ऐसे नररत्नोंके लिये भी कुछ असिद्ध रहा जा सक्ता है? नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं। उनके पीछे पीछे तीन लोककी सम्पत्ति हाथ बांधे बांधे फिरती है और वे उसकी ओर दृष्टिपात तक नहीं करते हैं। ठीक है—इस आडंबरकी आवश्यकता उन्हें ही होती है जो अंतरंग शून्य होते हैं, मलिन होते हैं, किन्तु जिनके यह नीच अहम् बुद्धि ही नहीं रही फिर उनको मेरा तेरा क्या? आवश्यकता और कमी किस बातकी? कहा है—

अयं निजः परो वेत्ति गणना लघुचेतसाम्।
उदार चरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बिकम्॥

अर्थात्-अपना और पराया ऐसा मानना ही नीचजनोंकी गणना बढ़ाना है। किन्तु उदार चरितों (बड़े उदार पुरुषों) को तो संसार ही कुटुम्ब है। अहा! यह कैसा विस्तीर्ण और उच्च भाव है। यथार्थमें यही नेतावोंका मूल मंत्र है, जितने नेता हुवे हैं व होंगे, वे सब इसी आदर्शको सामने रखकर हुवे व होंगे।

चाहे वे नेतागण धार्मिक नेता हों या लौकिक परन्तु सभीको अपने स्वार्थका बलिदान करना पड़ता है। देखो अकलंकस्वामीने अपने सहोदर बन्धुकी बलि होते हुवे भी नेत्र नहीं टिमकारे थे, और उस सच्चे साधु निकलंकने धर्मरक्षाके हेतु अपना बलिदान हर्षोन्मुख हो कर दिया था। पंडित टोडरमलजीने अपने धर्म पर दृढ़ रहते हुवे खुशी खुशी गजपदके नीचे प्रवेश किया था। ईशू क्राइष्ट सूली पर चढ़ाया गया था, इत्यादि। परंतु ये लोग किंचित भी पीछे न हटे किन्तु उत्तरोत्तर अपने उद्देश्योंपर दृढ़ होते चले गये, फल यह हुवा कि इन लोगोंने विरोधियों और विरोधोंके बीचमें होकर अपने अपने संप्रदायोंकी रक्षा ही नहीं, किन्तु वृद्धि भी की, और सदाके लिये उनकी जड़ पक्की कर गये ऐसे ऐसे अनेक महा पुरुष अपने अपने समयमें विख्यात हुवे हैं, वर्तमानमें भी कुछ ऐसे महाशय इस दीन हीन देशको पवित्र कर रहे हैं, राज्यमान गोपालकृष्ण गोखलेका हाल ही में हम लोगोंसे चिर वियोग हो गया है। आप अपनी उपमाके तुल्य आप ही अकेले थे, लाला लाजपतराय अब भी हमको लाभ पहुंचा रहे हैं, मान्यवर मोहनचंद करमचंद गांधीके असीम साहस और स्वार्थ त्यागका आदर्श आज हमारा मस्तक ऊंचा कर रहा है, स्वामी सत्यदेव

...रा यथा नाम तथा गुण हो रहे ...माता वसन्त विदेशनी होकर भी अपनी साधुता और हितैषताका परिचय दे रही हैं. मान्यवर मदनमोहन मालवीयके कार्योंसे कौन अनभिज्ञ है, इत्यादि और भी बहुतसे पवित्र हृदय महा पुरुष (कितने तो प्रगट हो चुके हैं और कितने अप्रगट अवस्थामें) स्वदेश और स्वजाति व स्वधर्मकी सेवा कर रहे हैं, यथार्थ में येही नेता कहे जा सक्ते हैं, इन्हीं की ओर हमारी श्रद्धा और भक्ति दौड़ जाती है। हमारी उन जैन जातिके कतिपय श्रीमान और विद्वानोंसे जो कि उन्नतिके मैदानमें आ रहे हैं व आना चाहते हैं, यह प्रार्थना है, कि वे ऊपर बताये हुवे पुरुषोंके मार्गका अनुसरण करें, उन्हें अपना आदर्श बनावें, तभी वे कुछ कर सकेंगे अन्यथा सब ढकोसला मात्र होगा।

आदर्श बनानेसे हमारा यह अभिप्राय नहीं है कि तुम उन्हें प्रत्येक विषयमें गुरू मान बैठो, किन्तु आशय यह है कि जैसे साहस, दृढ़ता और पवित्र हृदयसे वे अपने अपने उद्देश्योंपर स्थिर रहे व रहते हैं, तुम भी उनसे वह साहस, वह दृढ़ता, वह हृदयकी सरलता व पवित्रता इत्यादिका पाठ पढ़ो और जैसे वे अपने पैतृक धर्मपर दृढ़ हैं, तुम भी दृढ़ रहो क्योंकि धर्मको छोड़कर कोई उन्नति नहीं कर सक्ता है न उस पर कोई विश्वास ही लाता है, परंतु धर्म लौकिक और पारलौकिक दो प्रकारका होता है, उसमें पारलौकिक (जो जिसे अच्छा समझता है) व्यक्तिगत है और लौकिक सामाजिक धर्म है। सामाजिक धर्मका अनुसरण करते हुवे नेतावोंको अपने विशेष (पारलौकिक) धर्मको अपने हृदयस्थ रखना पड़ता है और सामाजिक धर्म जो कि सबके लिये सामान्य व्यक्त करना पड़ता है, उसमें सबका मत मिलाना पड़ता है, तभी सफलता होती है, किन्तु जो पारलौकिक धर्मके प्रचारक या नेता हैं, वे लौकिकका विरोध न करके गंभीर भावसे अपने विचार व अनुभव सर्वसाधारणपर प्रगट कर देते हैं और जिसकी इच्छा हो, वह उनका अनुसरण करता है, और जो अनुसरण नहीं करता व विरोध प्रगट करता है उसे यदि अवसर योग्य हो तो नम्र भावसे सुयुक्तियोंद्वारा मीठे वचनोंमें समझाते हैं और यदि वह न माने तो विवाद छोड़कर मध्यस्थ भाव धारण करते हैं, इत्यादि इसप्रकार अपने अपने मार्गके प्रदर्शक पुरुष सरल नीतिद्वारा पवित्र हृदयसे सबके हृदयोंपर विजय प्राप्त करते हैं और नेताके पदको प्राप्त हो सक्ते हैं, तात्पर्य हमारा यह है कि पहिले उद्देश स्थिर करो और पवित्र हृदयसे उसपर दृढ़ हो जावो, विघ्नोंको पुष्पवृष्टि और विघ्नकारियोंको सहायक समझो, बस यही तुम्हारी सफलताका मंत्र है।

समाजसेवक—

दीपचन्द परवार, नरसिंहपुर (C. P.)

वे अपने आप ही अपनी सहायता कर लेते हैं। ऐसे ही महात्मावोंसे कुछ लोकका भला हो सक्ता है, यही नेता कहे जा सक्ते हैं God help them who help themselves-अर्थात् ईश्वर (प्रकृति-nature) उन्हींको मदद करता है, जो अपने आपकी मदद आप ही कर लेते हैं। क्या संसारमें ऐसे नररत्नोंके लिये भी कुछ असिद्ध रहा जा सक्ता है ? नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं। उनके पीछे पीछे तीन लोककी सम्पत्ति हाथ बांधे बांधे फिरती है और वे उसकी ओर दृष्टिपात तक नहीं करते हैं। ठीक है—इस आडंबरकी आवश्यकता उन्हें ही होती है जो अंतरंग शून्य होते हैं. मलिन होते हैं, किन्तु जिनके यह नीच अहम् बुद्धि ही नहीं रही फिर उनको मेरा तेरा क्या ? आवश्यकता और कमी किस बातकी ? कहा है—

अयं निजः परो वेत्ति गणना लघुचेतसाम्।
उदार चरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बिकम्॥

अर्थात्-अपना और पराया ऐसा मानना ही नीचजनोंकी गणना बढ़ाना है। किन्तु उदार चरितों (बड़े उदार पुरुषों) को तो संसार ही कुटुम्ब है। अहा ! यह कैसा विस्तीर्ण और उच्च भाव है। यथार्थमें यही नेतावोंका मूल मंत्र है, जितने नेता हुवे हैं व होंगे, वे सब इसी आदर्शको सामने रखकर हुवे व होंगे।

चाहे वे नेतागण धार्मिक नेता हों या लौकिक परन्तु सभीको अपने स्वार्थका बलिदान करना पड़ता है। देखो अकलंकस्वामीने अपने सहोदर बन्धुकी बलि होते हुवे भी नेत्र नहीं टिमकारे थे, और उस सच्चे साधु निकलंकने धर्मरक्षाके हेतु अपना बलिदान हर्षोन्मुख हो कर दिया था। पंडित टोडरमलजीने अपने धर्म पर दृढ़ रहते हुवे खुशी खुशी गजपदके नीचे प्रवेश किया था। ईशू क्राइष्ट सूली पर चढ़ाया गया था, इत्यादि। परंतु ये लोग किंचित भी पीछे न हटे किन्तु उत्तरोत्तर अपने उद्देश्योंपर दृढ़ होते चले गये, फल यह हुवा कि इन लोगोंने विरोधियों और विरोधोंके बीचमें होकर अपने अपने संप्रदायोंकी रक्षा ही नहीं, किन्तु वृद्धि भी की, और सदाके लिये उनकी जड़ पक्की कर गये ऐसे ऐसे अनेक महा पुरुष अपने अपने समयमें विख्यात हुवे हैं, वर्तमानमें भी कुछ ऐसे महाशय इस दीन हीन देशको पवित्र कर रहे हैं, राज्यमान गोपालकृष्ण गोखलेका हाल ही में हम लोगोंसे चिर वियोग हो गया है। आप अपनी उपमाके तुल्य आप ही अकेले थे, लाला लाजपतराय अब भी हमको लाभ पहुंचा रहे हैं, मान्यवर मोहनचंद करमचंद गांधीके असीम साहस और स्वार्थ त्यागका आदर्श आज हमारा मस्तक ऊंचा कर रहा है, स्वामी सत्यदेव

...था उसके लिये कुछ भी ... नहिं कर सके। यदि इस साधुतय बंगलाके मासिक पत्रोंमें अनेक मन्यारके जिनधर्म संबंधी लेख व महावीर पार्श्वनाथ भगवानके ऐतिहासिक जीवनचरित्र एवं अन्यान्य जैनग्रंथ बंग भाषा व अंगरेजीमें प्रकाशित किये जांय तो विद्वत्प्रधान बंगाल देशमें इस अहिंसामय जैनधर्मका प्रचार होना संभव है। परंतु यह कार्य भी बहु द्रव्य व बहु परिश्रम साध्य है, परिश्रम करनेवाले तो हमलोग यथाशक्ति कटिबद्ध हैं। परंतु द्रव्यका कोई फंड हमारे पास ऐसा नहीं कि शिवाय भाषा ग्रंथ छपानेके उससे और कुछ कर सकैं। हमे इस समय बहुत द्रव्य नहिं चाहिये सिर्फ ३ हजार रुपया चाहिये इन रुपयोंसे क्या क्या करेंगे सो सुनिये—

१। एक हजार रुपयेसे तो हम एक वर्ष तक अच्छे बंगाली विद्वान व संपादकोंसे मिलकर वा अपने पास बिठाकर अनेक प्रकारके जैनधर्मका स्वरूप प्रगट करनेवाले लेख लिखवा २ कर बंगालके 'भारतवर्ष' 'प्रवासी' आदि पत्रोंमें प्रकाशित कराते रहैंगे। इसप्रकार करनेसे प्रायः सबही पत्र संपादक अपने २ पत्रमें जैनधर्म संबंधी लेख छापनेमें प्रवृत्त हो जायंगे क्योंकि यह विषय नवीन है। यहांपर एक "नारायण" मासिक पत्र है यह बौद्ध धर्म संबंधी ऐतिहासिक लेख दो तीन या ४ पेजके लिये प्रतिमास १००) रु. ऐतिहासिक विद्वान् हरप्रसाद शास्त्री सी. आई. ई. को प्रतिमास देकर अपने पत्रकी शोभा बढ़ाते हैं और उसी लेखको नारायणसे उद्धृत करके 'प्रवासी' पत्र छापता है सो ५०) रुपये उसे भी प्रतिमास देना पड़ते हैं। बौद्धधर्म संबंधी पुरातत्त्वको जाननेके लिये ऐसे पियासू हैं। यदि हमारे जैनी ग्रेजूएट महाशय इसप्रकारके ऐतिहासिक लेख लिखनेको तैयार हों तो 'इंडियन रिव्यू' आदि अंगरेजीके प्रसिद्ध पत्रोंमें पैसे देकर छाप सकते हैं परंतु कोई लिखै तब न?

२। एक हजार रुपयोंसे हम पद्मपुराणजीका मनोहर बंगानुवाद कराकर मूल सहित यहांकी बंगीय साहित्य परिषद्की ग्रंथमालामें या "हितवादी" पत्रकी उपहार ग्रंथमालामें लगा दिया जायगा तो वह १०–१५ हजार प्रति छपाकर लागतके मूल्यसे अपने ग्राहकोंको वेचैगा। इस पत्रके ५० हजार ग्राहक हैं।

३। तीसरे एक हजार रुपये खर्च करके हम हरिवंशपुराणका बंगानुवाद कराकर मूलसहित यहांके प्रसिद्ध वसुमती साप्ताहिक पत्रकी उपहार ग्रंथमालामें निकलवा देंगे। इसके भी पचास हजार ग्राहक है इस लिये १०-१५ हजार प्रतिसे कम नहिं छपैगा। हमको सिर्फ अनुवाद कराकर एकदम रेट प्रेसकापी

चिंतवन करे और लालसारहित एक चार भोजन करे। सुपात्रोंको दान देवे, ताम्बूल भक्षण नहीं करै।

इसके सिवाय और भी अनेक ग्रंथोंमें इसका उल्लेख है उनकी अप्राप्तिसे प्रमाण नहीं दे सक्ता, समयपर पुनः लिखूंगा। माघ कृष्ण ५ सं. १९६०. आ. हितैपी जयराव भूपाल नैनार होसूर (वेलगांव)

(नोट) कालदोपसे आजकल प्रायः सब ही शास्त्रिय क्रियाओंका अभाव होता जाता है और इसी कारन जातिमें दिनपर-दिन अन्याय और अधर्मोंका प्रचार बढ़ता जाता है। अन्य जातियोंकी अपेक्षा जैनी भाइयोंमें विधवाओंके आचार विचारोंको देख कर सब ही लोग मुहमें उंगली द-बाते हैं। यह बडी लज्जाकी बात है। अच्छे २ प्रतिष्ठित घरोंमें विधवाओंकी मान मर्यादा और स्वच्छंदता इतनी बढ़ी हुई है कि वे जो चाहे सो करती हैं। कोई उनको रोक-नेवाला नहीं है और शृंगारादि तो करती ही हैं, परन्तु ताम्बूलादि राग भी दूर नहीं होते फिर जिनदिक्षादिकी वार्ता ही कहीं है! ये सुहागिनोंसे शायद ही किसी बातमें पीछे रहती होंगी। हम आशा करते हैं हमारे विचारवान भाई विधवाओंकी उक्त क्रियाओंपर ध्यान देकर उनके प्रचारन करनेमें कुछ प्रयत्नशील होंगे और तत्संबंधी अन्याय और अविचारोंको रोककर सुश उज्वल करे।

कि तीन कार्य करना चाहा है इसके लिये
श हमने गवर्नमेंटी संस्कृत परीक्षालयमें

पंडित गोपालदासजीके लेख पर प्रयत्नशील-बनकर विधवाओंके चलनका सुधार करें तब ही जैनसमाजका हित होगा। उसके उपाय निम्नलिखित है जो महासभाके १४ वे अधिवेशनमें पास हुए -

(१) महा सभा अपने प्रस्ताव नं. ५ को पुनः पुष्ट करके समस्त प्रांतिक व जातिय सभाओंको प्रेरणा करती है कि वे नीचे लिखी कुरीतियोंको दूर करनेका शीघ्र उपाय करें और सफलताका रिपोर्ट महा-सभाको करती रहें।

वेश्यानृत्य १. अश्लील गीत गान २. बालविवाह अर्थात् १५ वर्षसे कम उम्रके लड़के व १२ वर्षसे कम उम्रकी लड़कीका विवाह करना ३. वृद्ध विवाह अर्थात् ४५ वर्षसे अधिक उम्रमें विवाह करना ४. अजैन पद्धतिसे विवाह करना ५. कन्याविक्रय अर्थात् लडकेवालेसे पैसा लेकर लड़की-की शादी करना ६. ऊपर लिखी छ बातोंके मेटनेका समाज प्रयत्न करे तबही समाजका हित होगा व उन्नति होगी व कन्या-ओंको धर्मविद्यासे भूषित करना जिससे छोटी ही उम्रमे धर्मकी वासना उनके हृदयमें प्रवेश कर जावे। यह वृक्षके अंकुरावत् दिन दिन वृद्धिको प्राप्त होकर इस लोक यश सुख व परलोक सुगतिका साधन कर सके। मनुष्य भव उच्च कुल जैनधर्म सुमको

इस धर्मके आदर्श दि ... प्राणी
शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दि... मनुष्य

जन्म व्यतीत करते हैं वे अमृतको पाकर पग धोते हैं। कल्पवृक्षको पाकर उसे ईन्धनमें काममें लानेके सदृश है। समाजको विधवाविवाह इत्यादि खोटी प्रथाओंमें नहीं पड़ना चाहिये। ये प्रथा धर्मविरुद्ध, जाति कुल विरुद्ध है, इसका परिपाक बहुत बुरा होनहार है इति।

रघुनाथदास सरनौ (एटा)

सागरमें कलशोत्सव और बड़ी भारी सफलता।

सागरमें वैसाख सुदी ९ से ८ तक श्रीयुक्त प्रेमी हीरालाल प्यारेलाल किशोरीलाल श्योप्रसादजी मलैया कटरावालोंके यहां श्री नवीन मंदिरजी पर कलशारोहन तथा वेदी प्रतिष्ठा और श्रीयुक्त दलाल हजारीलालजीकी धर्मपत्नी तथा मनसुखलालजीकी ओरसे **सरस्वती भवनकी** स्थापना बड़ी धूमधामसे हुईथी। इस जलसामें त्यागियोंका समूह और पंडित मंडलीका अच्छा समागम हुवाथा जिससे शास्त्रस्वाध्याय और शंकासमाधान बड़े ही प्रेम और वातसल्यतापूर्वक होतेथे। हर्ष इस बातका हैकि इस अवसर पर जितने धर्म सम्बन्धी कार्य हुवे वह सब निर्विघ्न और विशेष प्रेमपूर्वक प्रभावशाली हुवे। इस अवसरपर एक आम सभा तथा श्री **सत्तर्कसुधातरङ्गिणी दि. जै. पाठशालाका** सप्तम वार्षिकोत्सव भी महान समारोहके साथ हुवाथा।

प्रथम दिवस प्रातःकाल श्रीमान् प्रिन्सपाल शास्त्री अम्बादासजी हिन्दू कालेज बनारसका तथा श्रीस्याद्वादमहाविद्यालयके विद्वानोंका स्वागत बड़े ठाटबाटसे होकर सुबह ८ बजेसे नगरकीर्तनकी तैयारी होगई। हाथीपर इन्द्र इन्द्रानी कलशा लेकर सवार हुवे ओर गाजे बाजे सहित हितोपदश देते हुवे बड़े ठाटबाटके साथ जैनधर्मकी प्र-